

❀ श्री बीतसगाय नमः ❀

श्रीयतिवृषभाचार्यविरचिता

# तिलोयपण्णत्ती

( त्रिलोकप्रज्ञप्तिः )

( जैन लोकज्ञान सिद्धान्तविषयक प्राचीन प्राकृत ग्रन्थ )  
प्राचीन कन्नड़ प्रतियों के आधार पर प्रथम बार सम्पादित

[ द्वितीय खण्ड ]

❀

टीकाकर्त्री :

प्रायिका १०५ श्री विशुद्धमती माताजी

❀

सम्पादक :

डॉ. चेतनप्रकाश पाटनी

प्राध्यापक, हिन्दी विभाग

जोधपुर विश्वविद्यालय, जोधपुर

❀

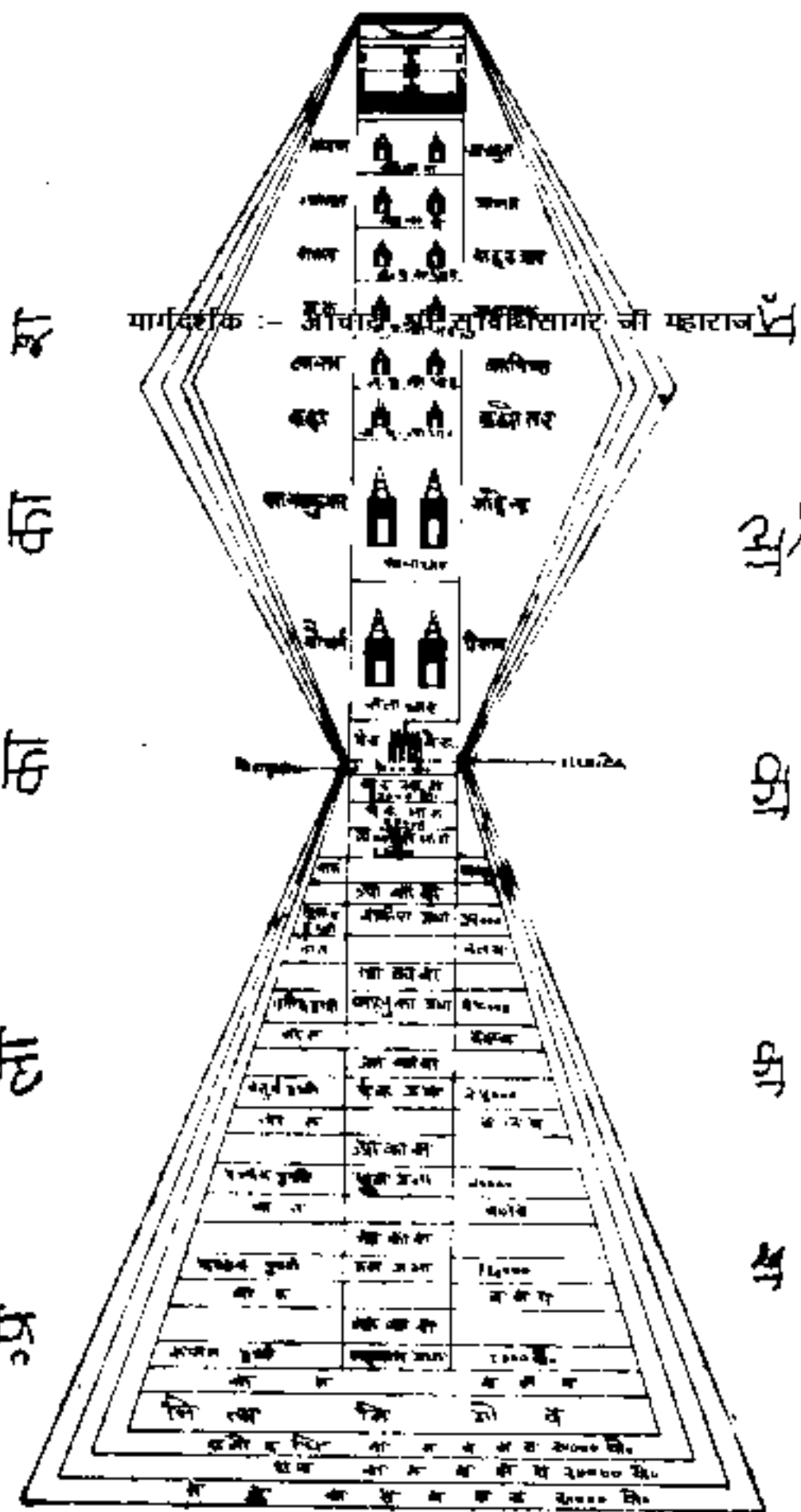
प्रकाशक :

प्रकाशन विभाग, श्री भारतवर्षीय दिगम्बर जैन महासभा

ॐ

त्रि  
लो  
का  
क  
ति

ॐ



# सम्पादकीय

## तिलोपपणसी : द्वितीयखण्ड

(चतुर्थ महाधिकार)

प्राचीन कन्नड़ प्रतियों के आधार पर सम्पादित तिलोपपणसी का यह दूसरा खण्ड जिसमें केवल चतुर्थ अधिकार का गद्य-पद्य भाग है—अगले पाठकों को सौंपते हुए हमें हादिक प्रसन्नता है। तिलोपपणसी लोकविषयक साहित्य की एक अत्यन्त महत्वपूर्ण कृति है जिसमें प्रसंगवश धर्म, संस्कृति व इतिहास पुराण से सम्बन्धित अनेक विषय सम्मिलित हो गये हैं इस ग्रन्थ का दो खण्डों में प्रथम प्रकाशन १९४२ व १९४१ में हुआ था। इसके सम्पादक थे श्री० हीरालाल जैन व श्री० ए० ए० उपाध्ये। पं० वासुदेवजी तिल्लतल्लास्त्री ने प्राकृत गाथाओं का मूलानुगामी हिन्दी अनुवाद किया था। सम्पादक द्वय ने इस समय प्राप्त प्राचीन प्रतियों के आधार पर इसका सुन्दर सम्पादन अपनी तीव्र मेधाशक्ति के बल पर परिश्रमपूर्वक किया था। 'बे कोटि-कोटि बर्बाद के पात्र हैं।

प्रस्तुत संस्करण की आधार प्रति जैनबंदी से प्राप्त लिप्यन्तरित (कन्नड़ में देवनागरी) प्रति है। अन्य सभी प्रतियों के पाठभेद टिप्पण में दिये गये हैं। प्रतियों का परिचय पहले खण्ड की प्रस्तावना में आ चुका है।

परम पूज्य १०५ आषिका श्री विठ्ठलमती माताजी के पुरुषार्थ का ही यह मधुर परिपाक है। गत पाँच वर्षों से पूज्य माताजी इस दुर्लभ ग्रन्थ को सरस बनाते हेतु प्रयत्नशील रही हैं। आपने विस्तृत हिन्दी टीका की है, विषय की चिन्तों के माध्यम से स्पष्ट किया है और अनेकानेक तात्त्विकार्थों के माध्यम से विषय को एकत्र किया है। प्रस्तुत संस्करण में कुछ गद्य भाग सहित कुल ३००६ गाथाएँ हैं (सोलापुर-संस्करण में कुल गाथाएँ २६५१ हैं) ३० चित्र हैं और ४५ तात्त्विकार्थ भी।

सम्पादन की वही विधि अपनाई गई है जो पहले खण्ड में अपनाई गई थी अर्थात् अर्थ की संगति को देखते हुए कुछ पाठ रखना ही ध्येय रहा है फिर भी यह खूबता पूर्वक नहीं कहा जा सकता कि व्यवस्थित पाठ ही ग्रन्थ का शुद्ध और अन्तिम रूप है।

चतुर्थ अधिकार—तिलोपपणसी ग्रन्थ का सबसे बड़ा अधिकार है जिसमें मनुष्यलोक का विस्तृत वर्णन है। इसमें १६ अन्तराधिकार हैं और कुल ३००६ गाथाएँ व थोड़ा गद्य भी। गाथा छन्द के अतिरिक्त आचार्य श्री ने इन्द्रयज्ञा, शोधक, वसन्ततिलका और साहूँस विक्रीकृत छन्द में भी रचना की है पर इनकी संख्या नगण्य है। अधिकार के प्रारम्भ में पद्मप्रभ भगवान को नमस्कार किया है और अन्त में सुपावर्चनाय भगवान को।

सोलाह अन्तराधिकार इस प्रकार हैं—मनुष्य लोक का निर्देश, अम्बूद्वीप, नववत्समुद्र, घातकी खण्ड, कातोदक समुद्र, पुष्करार्थ द्वीप—इन अर्द्ध द्वीप-समुद्रों में स्थित वनपुष्पों के भेद, गंधा, अल्पवह्नि, गुणस्थानादि, प्रापुष्पक परिणाम, योनि, पुत्र-पुत्र सम्पत्तिसंग्रह के कारण और मोक्ष जाने वाले जीवों का प्रमाण। २, ४, और ६ अन्तराधिकारों के अन्तर्गत अपने अपने १६-१६ अन्तराधिकार और भी हैं। अम्बूद्वीप का वर्णन १६ अन्तराधिकारों में, विस्तार से किया गया है लगभग २४२५ गाथाओं में यह वर्णन आया है। समानता के कारण घातकी खण्ड और पुष्करार्थ द्वीप के वर्णन को विस्तृत नहीं किया गया है। चौबीस तीर्थंकरों का वर्णन बहुत विस्तार से (४२६ गाथा से १२६० गाथाओं में) हुआ है। अन्तिम दस अन्तराधिकारों (७ से १६ तक) का वर्णन केवल

३६ गाथाओं में ही था यथा है । विषय को विस्तृत करने और उसे संक्षिप्त करने की रचविता आचार्य श्री को कला प्रशंसनीय है ।

प्रस्तुत लब्ध के कारणसूत्र, पाठांतर, चित्र और तालिका आदि की सूची इसप्रकार है—

### कारण सूत्र

|                    |      |                      |      |
|--------------------|------|----------------------|------|
| आदिम मज्झिम बाहिर  | २६०२ | दुमुलिचिन्मय सूत्रीए | २४६१ |
| इमुपावगुसिव जीवा   | २४०१ | बाहिरसूई वागो        | २४६५ |
| इमुवागं वत्तगुणिदं | २३२५ | भूमीज मुहं सोहिम     | २४३३ |
| " "                | २८६३ | दं दयं इमुहीणं       | १८३  |
| जीवाकदितुमिसा      | १८५  | लवणादीणं दं          | २६०१ |
| जीवामिस्सभाणं      | २६३७ | बाणजुदधं दग्गे       | १८४  |
| जेट्ठमि वावपट्ठे   | १६२  | वासकादी दस गुणिवा    | ६    |
| जेट्ठाए जीवाए      | १६०  | विकलमद्वकदीजो        | ७२   |
| दुमुवागं सूत्रीक   | २४०१ | सूत्रीक विहारजि      | २८०५ |

### प्रस्तुत संस्करण में प्रयुक्त महत्वपूर्ण संकेत

|                             |                  |                   |
|-----------------------------|------------------|-------------------|
| - = श्रीणी                  | व = पहलोपम       | घं = घंगुल        |
| = = प्रतर                   | सा = सानरोपम     | ध = धनुष          |
| = = लोक                     | सू = सूक्ष्मगुल  | सेही = श्रीणीबद्ध |
| १९ = सम्पूर्ण जीवरानि       | प्र = प्रतरांगुल | प्र० = प्रकीर्णक  |
| १९ अ = सम्पूर्ण पुद्गल की   | ध = धनांगुल      | मु = मुहूर्त      |
| परमाणु रानि                 | ज = जगच्छेणी     | दि = दिन          |
| १६ अ स = सम्पूर्ण काल की    | लोम प = लोकप्रतर | मा = माह          |
| समय रानि                    | भू = भूमि        | अ अ = अतन्तानन्त  |
| १६ क अ स = सम्पूर्ण आकाश की | को = कोस         | ( गाथा ५७ )       |
| प्रदेश रानि                 | दं = दंड         |                   |
| ७ = संख्यात                 | से = सेव         |                   |
| दि = असंख्यात               | ह = हस्त         |                   |
| जो = योजन                   |                  |                   |
| ८ = रात्रि                  |                  |                   |

### पाठांतर

| क्रम सं० | गाथा          | गाथा सं० | पृष्ठ सं० |
|----------|---------------|----------|-----------|
| १        | वैलंघरवेवाणं  | २६       | ८         |
| २        | दारोवरिमधराणं | ७६       | २५        |
| ३        | पणुदीसओवणाई   | २२०      | ६५        |
| ४        | वासट्ठि ओवणाई | २२२      | ६५        |



| क्रम सं० | गाथा                | गाथा सं० | पृष्ठ सं० |
|----------|---------------------|----------|-----------|
| ५        | कश्यप कठिमुत्त      | ३६७      | ११२       |
| ६        | धनद घुरिया भागा     | ३६८      | ११२       |
| ७        | पतिदोवमयसमसो        | ५०६      | १४५       |
| ८        | कुमुद-कुमुदंग एवदा  | ५१०      | १४५       |
| ९        | इह कैई आइरिया       | ७२७      | २०६       |
| १०       | एककेवकाणं धो हो     | ७३३      | २०६       |
| ११       | जोयण महियं उदयं     | ७८६      | २३१       |
| १२       | कैतप्पासाय जिदि     | ८०६      | २३८       |
| १३       | अह अह जोगाणाणे      | १३६४     | ४००       |
| १४       | कालप्यमुहा भाणा     | १३६७     | ४०१       |
| १५       | अहवा बीरे तिडे      | १५०६     | ४३७       |
| १६       | बोहस सहस्स सन समय   | १५१०     | ४३७       |
| १७       | बोहस सहस्स सन समय   | १५११     | ४३७       |
| १८       | दोणि सया पणवण्णा    | १५१६     | ४३६       |
| १९       | अहवा धो हो कोसा     | १६६२     | ४८०       |
| २०       | कूडागार महारिह भवणो | १६६३     | ४८०       |
| २१       | एक सहस्स पणवण       | १७२६     | ४८८       |
| २२       | बज्जोवण उण्णेहं     | १८४५     | ५१६       |
| २३       | सोलस कोसुण्णेहं     | १८६०     | ५२५       |
| २४       | वालो पण वण कोसा     | २०००     | ५४८       |
| २५       | एव वलमह कूडो        | २००५     | ५४६       |
| २६       | सोमससम्मा य वामं    | २००६     | ५४६       |
| २७       | वसविदे धू वासो      | २००७     | ५४६       |
| २८       | ताणं व मेव पाणे पंच | २०५३     | ५५६       |
| २९       | तिरिबदुखाल वेदी     | २०५४     | ५५६       |
| ३०       | मेवगिरि पुम्बदविलण  | २१६१     | ५८२       |
| ३१       | ताणं वनदेसेण य      | २१६२     | ५८२       |
| ३२       | एला एतोदायो सोवा    | २३३१     | ६२१       |
| ३३       | एककरस सहस्सगणि      | २४७१     | ६६०       |
| ३४       | तस्सोवदि सिवपण्णे   | २४७२     | ६६१       |
| ३५       | जससिहरे विक्खंभो    | २४७४     | ६६१       |
| ३६       | वण्णिणद सुराण णयरी  | २४८३     | ६६१       |
| ३७       | मोत्तूणं मेवगिरि    | २५८७     | ६८९       |
| ३८       | मेवतलस्स य उं वं    | २६२१     | ७०२       |
| ३९       | एइरिदि पणण विसाब्भो | २८२७     | ७५८       |
| ४०       | मुक्का मेवगिरिदं    | २८३६     | ७६०       |

मार्गदर्शक : ...

## चित्र विवरण

| क्र० सं० | विषय                                                                     | पाना सं०  | पृष्ठ संख्या |
|----------|--------------------------------------------------------------------------|-----------|--------------|
| १        | विजयार्ध पर्वत                                                           | १०९       | ३५           |
| २        | गंगाकुट पर स्थित जनेन्द्र-प्रतिमा                                        | २३२-२३३   | ७०           |
| ३        | कालवृक्ष                                                                 | ३२०-३२३   | १०६          |
| ४        | भोगभूमि में कल्पवृक्ष                                                    | ३४९-३५८   | ११०          |
| ५        | समवसरण                                                                   | ७१८       | २१४          |
| ६        | भूमिखान कोट एवं उसका तीरज द्वार                                          | ७४१-७४८   | २१६          |
| ७        | मानस्तम्भ के एक दिशात्मक कोट, बेदी, भूमियों<br>एवं नाट्यमालाओं का चित्रण | ७४९-७६८   | २२४          |
| ८        | मानस्तम्भ भूमि                                                           | ७६९-७७६   | २२४          |
| ९        | चैत्यवृक्ष भूमि                                                          | ८१५       | २४४          |
| १०       | समवसरणगत बारह कोठे                                                       | ८६५       | २६४          |
| ११       | गन्धकुटी का चित्रण                                                       | ८९६-९०२   | २७७          |
| १२       | अष्ट महाप्रातिहार्य                                                      | ९२४-९३९   | २८४          |
| १३       | भरतक्षेत्र                                                               | ९६४५      | ४७०          |
| १४       | कमल पुष्पस्थित मयनों में जितमन्दिर                                       | १७१५      | ४८४          |
| १५       | हिमवान कुसावत                                                            | १६४६-१७२० | ४८६          |
| १६       | सुमेध पर्वत                                                              | १८०४      | ५०७          |
| १७       | पाशुपतिला                                                                | १८४२-१८५६ | ५१९          |
| १८       | अष्ट मंगल द्रव्य                                                         | १९०४      | ५२८          |
| १९       | शीघ्रमोक्ष की सभा                                                        | १९७५-१९८५ | ५४५          |
| २०       | देवकुल, उत्तरकुल व गजवल                                                  | २०३७-२०८६ | ५६७          |
| २१       | अम्बुवृक्ष                                                               | २२२०      | ५९५          |
| २२       | पूर्वापर विदेहक्षेत्र                                                    | २२२५-२२४२ | ६६६          |
| २३       | विदेह का कच्छ क्षेत्र                                                    | २२४३-२३०४ | ६१६          |
| २४       | अम्बुक्षीप की नदियाँ                                                     | २४१०-२४१५ | ६४१          |
| २५       | ज्येष्ठ (उत्कृष्ट) पाताल                                                 | २४४३      | ६५१          |
| २६       | उत्कृष्ट, मध्यम, अधन्य पाताल                                             | २४४७      | ६५३          |
| २७       | पूणिमा बीर क्षमाबन्धु की पातालों की स्थिति                               | २४६४-२४६५ | ६५६          |
| २८       | मयका समुद्र के द्वीप                                                     | २५१८-२५२२ | ६७२          |
| २९       | कुमानुष                                                                  | २५२४-२५३० | ६७५          |
| ३०       | मातकी अष्ट द्वीप में विजयों का आकार                                      | २५६३      | ६८१          |

## तासिका विवरण

| क्रम सं० | विषय                                                                                              | पृष्ठ सं० | पाना सं०            |
|----------|---------------------------------------------------------------------------------------------------|-----------|---------------------|
| १        | जम्बूद्वीप की जगती तथा उस पर स्थित बेदी एवं बेदी के पार्श्व भागों में स्थित वाक्त्रियों का प्रमाण | ७         | १५-१७, १८-२१, २३-२४ |
| २        | जम्बूद्वीप एवं मध्यम प्रायद्वीपों तथा उनके द्वारों का प्रमाण                                      | ११        | २९-३४               |
| ३        | जम्बूद्वीप की परिधि, क्षेत्रफल तथा द्वारों के अन्तरका प्रमाण                                      | २४        | ४१-४४               |
| ४        | क्षेत्र कुलाचलों के विस्तार आदि का विवरण                                                          | ३३        | ९७, १०४-१०८         |
| ५        | भरतसेन और विजयार्थ के व्यास, जीवा, वक्र, त्रुटिका तथा पार्श्वसूत्र का प्रमाण                      | ३६        | ११६                 |
| ६        | गंगा-मिन्धु नदियों से सम्बन्धित प्रणाली, कुण्ड एवं द्वीप का विस्तार                               | ६८        | २१७-२२६             |
| ७        | आवलि से लक्ष पर्यन्त व्यवहार काल की परिभाषाएँ                                                     | ८४        | २८७-२९५             |
| ८        | संख्या प्रमाण                                                                                     | ८६        | लक्ष भाग            |
| ९        | भोगभूमिज जीवों का संक्षिप्त वर्णन                                                                 | ११३       | ३२४-३८६             |
| १०       | सुषमा-सुषमा आदि तीन कालों में आयु माहानादि की वृद्धि हानि का प्रदर्शन                             | १२६       | ३२४-४९७             |
| ११       | कुलकर्तों के उत्प्रेष, आयु एवं अन्तरकाल आदिका विवरण                                               | १४६       | ४२८-४३०             |
| १२       | चौबीस तीर्थंकरों की प्राप्ति, जन्म विवरण एवं वंशादि का निष्कर्षण                                  | १५८-१५९   | ४१८-४५७             |
| १३       | चौबीस तीर्थंकरों के जन्मान्तर, आयु, कुमारकाल, उत्प्रेष वर्षा राज्यकाल एवं चिह्न निर्देश           | १७४-१७५   | ४६०-६१२             |
| १४       | २४ तीर्थंकरों के वैराग्य का कारण और दीक्षा का सम्पूर्ण विवरण                                      | १६०-१६१   | ६१४-६१८<br>६५०-६७६  |
| १५       | २४ तीर्थंकरों का अष्टावकाल, केवलज्ञान उत्पत्ति के मास एका आदि तथा केवलज्ञानोत्पत्ति का अन्तरकाल   | २०२-२०६   | ६८२-७११             |
| १६       | समवसरणों, सोपानों, भीषियों और वेदियों का प्रमाण                                                   | २१२-२१६   | ७२४-७४०             |
| १७       | भूतिसाल प्रासाद-प्रथम पृथिवी एवं नाट्यकालाब्दीका प्रमाण                                           | २२३       | ७५४-७६५             |
| १८       | पीठों का विस्तार आदि एवं सीढ़ियों का प्रमाण                                                       | २२६       | ७७७-७८२             |
| १९       | मानस्तम्भों का माहृत्य एवं ऊँचाई                                                                  | २३२       | ७८३-७८६             |
| २०       | आतिका आदि लेखों का प्रमाण                                                                         | २४०       | ८०२-८०४             |
| २१       | बेदी, वल्लीभूमि, कोट, पंचवृक्ष, प्रासाद एवं उपवनभूमि का प्रमाण                                    | २४७       | ८०७-८२२             |
| २२       | स्तम्भों, अजदण्डों एवं ध्वजभूमियों का तथा तृतीय कोट का प्रमाण                                     | २५३       | ८२६-८३६             |
| २३       | कल्पवृक्षों, नाट्यकालाब्दों, स्तूपों, कोठों आदि का प्रमाण                                         | २६१       | ८४६-८६३             |

| क्रम सं० | विषय                                                                   | पृष्ठ सं० | पन्ना सं०              |
|----------|------------------------------------------------------------------------|-----------|------------------------|
| २४       | बेसी, पीठ, परिधियाँ एवं मेलला का विस्तार आदि                           | २६६       | ८७३-८८०                |
| २५       | धूसरे एवं तीसरे पीठों का तथा बन्धकुटी का विस्तार आदि                   | २७६       | ८८४-९००                |
| २६       | तीर्थकरों का केवलिकाल, गणेशरों की संख्या एवं नाम                       | २९४       | ९४२-९६९                |
| २७       | ६४ ऋद्धियाँ                                                            | ३२६-३२७   | ९७७-११०२               |
| २८       | साल गणों का पृथक्-पृथक् एवं एकत्र ऋद्धिगणों का प्रमाण                  | ३४५       | ११०४-११७६              |
| २९       | आधिकार्यों आदि की संख्या एवं तीर्थचरों के निर्वाण प्राप्ति निर्देश     | ३५८-५९    | ११७७-१२१९              |
| ३०       | योग निवृत्तिकाल, आसन एवं अनुष्ठान केवली आदिको का प्रमाण                | ३९५       | १२२०-१२४२              |
| ३१       | ऋषिमादि तीर्थकरोंके स्वर्ग और मोक्ष प्राप्त सिद्धियोंकी संख्या         | ३६८       | ११०३-१२४८              |
| ३२       | मुक्तान्तर एवं तीर्थ प्रवर्तनकाल                                       | ३७८       | १२५०-१२८६              |
| ३३       | चक्रवर्तियों की नवनिधियों का परिचय                                     | ४०४       | १३६६-१३९७              |
| ३४       | चक्रवर्तियों के चौदह रत्नों का परिचय                                   | ४०४       | १३६६-१३९७              |
| ३५       | चक्रवर्तियों के वैभव का सामान्य परिचय                                  | ४०६       | १३९१-१४०९              |
| ३६       | चक्रवर्तियों का परिचय                                                  | ४१०       | १२९२-१४२२              |
| ३७       | बलभद्रों का परिचय                                                      | ४१९       | १४२३                   |
| ३८       | भारायणों का परिचय                                                      | ४२०       | १४२४                   |
| ३९       | वर्तमान चौबीसी के प्रसिद्ध पुरुष                                       | ४२४-२५    | १२९८-१३०२<br>१४२६-१४५५ |
| ४०       | रुद्रों का परिचय                                                       | ४३०       | १४५६-१४८०              |
| ४१       | भावी जलाना पुष्य                                                       | ४६०-६१    | १५६१-१६१३              |
| ४२       | पर्वत एवं क्षेत्रों के विस्तार, बाण बीषा धनुष आदि का प्रमाण            | ४०५       | १६४६-१६०२              |
| ४३       | बभार के कूट                                                            | ६२४       | २३३८                   |
| ४४       | जम्बूद्वीप की नदियाँ                                                   | ६४२       | २४१०-२४१५              |
| ४५       | भारती सङ्घ की परिधि एवं उसमें स्थित कुलाक्षरों और क्षेत्रों का विस्तार | ६६९       | २४६७-२६१२              |

### आभार

तिलोत्पण्णती ग्रन्थ की प्रकाशन योजना में हमें अनेक महानुभावों का पुष्कल सहयोग और प्रोत्साहन प्राप्त है। मैं उन सभी का हृदय से आभारी हूँ।

प० पू० आचार्य प० द्धी धर्मसागरजी महाराज एवं आचार्य कर्म श्री भूतसागरजी महाराज के प्राचीन-वर्षन इस ग्रन्थ के प्रकाशन अनुष्ठान में हमारे प्रेरक रहे हैं। मैं आपके घरों में सविनय सादर नमन करता हुआ आपके दीर्घ नीरोग जीवन की कामना करता हूँ।



## तिलोयपण्यत्ती के चतुर्थाधिकार का गणित

लेखक—डॉ० लक्ष्मीधर जैन पूर्वा एम्पोरियम, ६७७ सराका जबलपुर ( ब० प्र० )

गाथा ४/९

व्यास से परिधि निकालने हेतु ॥ का मान अथवा परिधि का मान  $\sqrt{१०}$  लिया गया है और सूत्र है—

$$\text{परिधि} = \sqrt{(\text{व्यास})^2 \times १०} \quad \text{गुनः}$$

$$\text{वृत्त का क्षेत्रफल} = \text{परिधि} \times \frac{\text{व्यास}}{४}$$

क्षेत्रफल के लिए विदफल शब्द का उपयोग हुआ है। इसीप्रकार, लम्ब वस्तु ल रम्भ का क्षेत्रफल = व्यास का क्षेत्रफल  $\times$  (उत्सेध या बाह्यत्व)

गाथा ४/५५-५६

जम्बूद्वीप के विश्वरम्भ से उसकी परिधि निकालने हेतु ॥ का मान  $\sqrt{१०}$  लेकर विवेचन भागे तक परिधि की गणना की गई है। यहाँ  $\sqrt{१०}$  का मान  $\sqrt{(३)^2 + १} = ३ + (\frac{१}{३})$  लिया गया है।

अर्थात्  $\sqrt{N} = \sqrt{(a^2 + x)} = a + \frac{x}{2a}$  माना गया है। यहाँ N अवर्ग घनात्मक पूर्णांक है, a और x घनात्मक पूर्णांक हैं। अथवा  $\sqrt{N} = \sqrt{(b^2 - y)} = b - (\frac{y}{2b})$ ।

है, a और x घनात्मक पूर्णांक हैं। अथवा  $\sqrt{N} = \sqrt{(b^2 - y)} = b - (\frac{y}{2b})$ ।

इस विधि से अन्ततः अवसम्प्राप्तम भिन्न शेष =  $\frac{१०५५५५}{१०५५५५}$  प्राप्त होता है। यह गणना डा० आर० सी० गुप्ता ने की है। \* यहाँ इसे "ख ख पदस्संस्स पुडं" का गुराकार बतलाया गया है। इसका अर्थ विचारणीय है।

गाथा ४/५६-५७

इस गाथा में उपरोक्त विधि से क्षेत्रफल की अन्त्य महत्ता प्रकृषित करने हेतु  $\frac{१०५५५५}{१०५५५५}$  अवसम्प्राप्तम में परमाणुओं की संख्या धन्यकार ने  $\frac{१०५५५५}{१०५५५५}$  ख ख द्वारा निरूपित की है।

गाथा ४/७०

वृत्त में विष्कम्भ ( व्यास ) को  $d$  मानकर, परिधि को  $c$  मानकर, विज्या को  $r$  मानकर, द्वीप की चतुर्थांश परिधि रूप घनुष की जीवा का सूत्र—

$$( \text{वृत्त की चतुर्थांश घनुष की जीवा} )^2 = (d)^2 \times 2 = 2r^2$$

अथवा—

$$( \text{चतुर्थांश परिधि की जीवा} )^2 \times 2 = ( \text{चतुर्थांश परिधि} )^2$$

$$= \left[ 2 \times \frac{d^2}{4} \right] \times 2 = \frac{2d^2}{2} = \frac{4r^2}{4}$$

$$\text{अथवा चतुर्थांश परिधि} = \sqrt{2d^2} = \frac{r}{2}$$

भाजकस के प्रतीकों में यह  $\frac{r}{2}$  है।

गाथा ४/१८०

बाण और विष्कम्भ दिया जाने पर जीवा निकालने हेतु सूत्र-बाण को  $h$  मानकर, विष्कम्भ को  $d$  मानकर, जीवा निकालने का सूत्र निम्नलिखित है—

$$\text{जीवा} = \sqrt{4 \left[ \left( \frac{d}{2} \right)^2 - \left( \frac{d-h}{2} \right)^2 \right]}$$

$$= 4 \sqrt{ \left[ \left( \frac{r}{2} \right)^2 - \left( \frac{r-h}{2} \right)^2 \right]}$$

यहाँ पियेगोरस के साध्य का उपयोग है।

गाथा ४/१८१

बाण और विष्कम्भ दिया जाने पर घनुष का प्रमाण निकालने हेतु सूत्र :

$$\text{घनुष} = \sqrt{2 \left[ (d+h)^2 - (d)^2 \right]}$$

यदि  $h=r$  हो तो घनुष  $= \sqrt{2d^2} = r$  के बराबर होता है।

गाथा ४/१८२ :

जब जीवा और विष्कम्भ ( विस्तार ) दिया गया हो तो बाण निकालने के लिए सूत्र :

$$h = d - \left[ \frac{d^2 - (\text{जीवा})^2}{4} \right]^{1/2}$$

$$= r - \left[ \frac{r^2 - (\text{जीवा})^2}{2} \right]^{1/2}$$

उपर्युक्त सूत्रों से निम्न सम्बन्ध प्राप्त होता है।

( धनुष )<sup>२</sup> = ६ h<sup>२</sup> + ( जीवा )<sup>२</sup> अहाँ ६ बाण है ।

पुनः

४ h<sup>२</sup> + ४ ( जीवा )<sup>२</sup> को ४ ( अर्द्ध धनुष की जीवा )<sup>२</sup> लिखने पर हमें निम्नलिखित सम्बन्ध प्राप्त होता है ।

( धनुष )<sup>२</sup> = २h<sup>२</sup> + ४ ( अर्द्ध धनुष की जीवा )<sup>२</sup>

गाथा ४/२८५-२८६ :

समय, आवलि, उच्छ्वास, प्राण और स्तोक को व्यवहारकाल निर्दिष्ट किया है । पुद्गल-परमाणु का निकट में स्थित आकाशप्रदेश के घटिकमण प्रमाण जो अविभागीकाल है वही 'समय' नाम से प्रसिद्ध है । इकाइयों के बीच निम्नलिखित सम्बन्ध है ।

|              |   |                                                                                                                             |
|--------------|---|-----------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------|
| असंख्यात समय | = | १ आवलि [अधन्य कुत असंख्यात का प्रतीक २ है जो मूल में संदृष्टि रूप आया प्रतीत होता है ।]                                     |
| संख्यात आवलि | = | १ उच्छ्वास [यहाँ क्या संख्यात के लिए १ आया है वह स्पष्ट संदृष्टि से नहीं है क्योंकि सांख्येय की संदृष्टि ७ होना चाहिये । १] |
| ७ उच्छ्वास   | = | १ स्तोक [संदृष्टि घनांगुल का प्रतीक है जो राशि हो सकता है संख्यात यहाँ निर्धारित करती हो ?]                                 |
| ७ स्तोक      | = | १ लव                                                                                                                        |
| ३०३ लव       | = | १ नासी                                                                                                                      |
| २ नासी       | = | १ मुहूर्त [समय कम एक मुहूर्त को भिन्न मुहूर्त कहते हैं ।]                                                                   |
| ३० मुहूर्त   | = | १ दिन                                                                                                                       |
| १५ दिन       | = | १ पक्ष                                                                                                                      |
| २ पक्ष       | = | १ मास                                                                                                                       |
| २ मास        | = | १ ऋतु                                                                                                                       |
| ३ ऋतु        | = | १ ध्यन                                                                                                                      |
| २ ध्यन       | = | १ वर्ष                                                                                                                      |
| ३ वर्ष       | = | १ युग                                                                                                                       |

इसप्रकार अक्षयात्म का मान ( ८४ )<sup>३३</sup> × ( १० )<sup>१०</sup> वर्षों के बराबर होता है । जगते उत्कृष्ट संख्यात तक ले जाने का संकेत है ।

गाथा ४/३१०-३१२ :

इन गाथाओं में संख्या प्रमाण का विस्तार से वर्णन है । संख्येय, असंख्येय और अनन्त को सीमाएँ निर्धारित की गई हैं । इनमें कुछ औपचारिक असंख्येय और अनन्त संख्याएँ हैं । यथा उत्कृष्ट



संख्येय तक श्रुत केवली का विषय होने के कारण, तदनुगामी संख्याएँ असंख्येय कही गई हैं जो उपचार है। असंख्यात लोक प्रमाण स्थिति बन्धाध्यवसायस्थान प्रमाण संख्या का आशय स्थिति-बन्ध के लिए कारणभूत आत्मा के परिणामों की संख्या है। इसीप्रकार इससे भी असंख्येय लोक गुणे प्रमाण अनुभागबन्धाध्यवसायस्थान प्रमाण संख्या का आशय अनुभाद्य बन्ध के लिए कारणभूत आत्मा के परिणामों की संख्या है। इससे भी असंख्येय लोक प्रमाण गुणे, मन, वचन, काय योगों के अविभाग प्रतिच्छेदों (कर्मों के फल देने की शक्ति के अविभागी अंशों) की संख्या का प्रमाण होता है। वीरसेनाचार्य ने षट्क्षण्डागम (पृ० ४, पृ० ३३८, ३३९) में अष्टपुद्गल परिवर्तन काल के अनन्तर के व्यवहार को उपचार निबन्धक बतलाया है।

इसीप्रकार यद्यपि उत्कृष्ट असंख्यातासंख्यात और जघन्य परीतानन्त में केवल १ का अंतर हो जाने से ही "अनन्त" संज्ञा का उपचार हो जाता है। यहाँ अवधिज्ञानो का विषय उत्कृष्ट असंख्यात तक का होता है, इसके पश्चात् का विषय केवलज्ञानी की सीमा में आजाने के कारण 'अनन्त' का उपचार हो जाता है। जब जघन्य अनन्तानन्त की तीन बार वर्गित संवर्गित राशि में अनन्तात्मक राशियाँ निक्षिप्त होती हैं तभी उनकी अनन्त संज्ञा सार्थक होती है, जैसी कि असंख्यारामक राशि निक्षिप्त करने पर संख्येय राशि को असंख्येयता की सार्थकता प्राप्त होती है। वास्तव में व्यय के होते रहने पर भी (सदा ?) अक्षय रहने वाली अक्षय जीव राशि समान और भी राशियाँ हैं—जो क्षय होने वाली पुद्गल परिवर्तन काल जैसी सभी राशियों के प्रतिपक्ष के समान पाई जाती हैं।

ग्रन्थ में इस संबंध में वर्गित संवर्गित, खलाका कुंहादि की प्रक्रियाएँ पूर्ण रूप से वर्णित हैं।

वर्गित संवर्गित की तिलोपपण्यती की प्रक्रिया धवला टीका में दी गयी प्रक्रिया से भिन्न है। अनन्त तथा केवलज्ञान राशि के सम्बन्ध में विवरण महत्त्वपूर्ण है, "इसप्रकार वर्ग करके उत्पन्न सब वर्ग राशियों का पुञ्ज केवलज्ञान-केवलदर्शन के अनन्तर्भागे है, इस कारण वह भाजन है द्रव्य नहीं है।"

गाथा ४/१७८० आदि

समान गोल गरीर-वाला मेरु पर्वत, "समवदृतगुस्त मेरुस्त" में रंभों और शंकु समच्छिन्नकों द्वारा निर्मित किया गया है। इन गाथाओं में मेरु पर्वत के विभिन्न स्थानों पर परिवर्तनशील मान, ऊँचाईयों पर व्यास, बतलाए गये हैं। "सूर्य पथ की तिर्यक्ता की धारणा को मानो मेरु पर्वत की आकृति में लाया गया है" यह आशय लिच्छ एवं शर्मा ने अपने शोध लेख में दिया है। ❀

❀ S. S. Lishk and S. D. Sharma, "Notion of Obliquity of Ecliptic" Implied in the Concept of Mount Meru in Jambudvīpa prajāpti." Jain Journal, Calcutta, 1978, pp. 79.

गाथा ४/१७६३ :

शंकु के समन्वित्विक की पार्श्व रेखा का मान निकालने हेतु जिस सूत्र का उपयोग हुआ है वह यह है ॥

$$\text{पार्श्व भुजा} = \sqrt{\left(\frac{D-d}{2}\right)^2 + (H)^2}$$

जहाँ भूमि D, मुख d, ऊँचाई H दी गयी है ।

गाथा ४/१७६७ :

समसम्य चतुर्भुज को आकृति त्रिभुज संक्षेत्र के समन्वित्विक के मनीक रूप में होती है । उसीप्रकार शंकु के समन्वित्विक को उदयसमतल द्वारा केन्द्रीय अक्ष में से होता हुआ काटा जावे तो क्षेत्र से प्राप्त आकृति भी समसम्य चतुर्भुज होती है ।

यदि बूलिका के सिलर से h योजन नीचे विष्कम्भ x प्राप्त करना हो तो सूत्र यह है :

$$x = b \div \left[ \frac{D-d}{H} \right] + b$$

$$\text{अथवा } x = D - \left[ (H-b) \div \frac{(D-b)}{H} \right]$$

गाथा ४/२०२५ :

इस गाथा में जीवा C और बाध h दिया जाने पर विष्कम्भ D निकालने का सूत्र दिया गया है—

$$D = \frac{c^2}{4h} + h$$

गाथा ४/२३७४ :

इस गाथा में घनुष के आकार के क्षेत्र का सूक्ष्म क्षेत्रफल निकालने का सूत्र दिया है—

$$\text{घनुषाकार क्षेत्र का क्षेत्रफल} = \sqrt{\left(\frac{h}{C}\right)^2 \times 10} = \frac{h}{C} \sqrt{10}$$

इस सूत्र का उल्लेख महावीराचार्य ने "गणित सार संग्रह" में किया है ॥

गाथा ४/२५२५ :

इस गाथा से प्रतीत होता है कि ग्रन्थकार को ज्ञात था कि दो वृत्तों के क्षेत्रफलों का अनुपात उनके विष्कम्भों के वर्गों के अनुपात के सम्य होता है ॥ मान लो छोटे प्रथम वृत्त का विष्कम्भ  $D_1$  तथा क्षेत्रफल  $A_1$  हो और बड़े द्वितीय वृत्त का विष्कम्भ  $D_2$  तथा क्षेत्रफल  $A_2$  हो तो

$$\frac{D_2^2}{D_1^2} = \left( \frac{A_2}{A_1} \right) \text{ अथवा } \frac{D_2^2}{D_1^2} = \frac{A_2}{A_1}$$

॥ देखिये, बम्बूदोष प्रज्ञप्ति, ४/३६ ।

॥ देखिये "गणितसार संग्रह" सोलापुर, १९६३, पृ० ४/७०३ ।

॥ बम्बूदोषप्रज्ञप्ति, १०/५७, वृत्त के सम्बन्ध में समानुपात नियम ९/११-२० में दिये गये हैं ।

गाथा ४/२७६१ :

इस गाथा में वृत्त का क्षेत्रफल निकालने के लिए सूत्र है—

$$\text{वृत्त या समान गोल का क्षेत्रफल} = \sqrt{\frac{(D^2) \times 10}{4}} = \left(\frac{D}{2}\right)^2 \sqrt{10}$$

जिसे आज हम  $\pi r^2$  के रूप में उपयोग में लाते हैं। यहाँ  $D$  व्यास है।

गाथा ४/२७६२ :

वलयकृति वृत्त या वलय के आकार की आकृति का क्षेत्रफल निकालने का सूत्र—

$$\text{मानलो प्रथम वृत्त का विस्तार } D_1 \text{ और दूसरे का } D_2 \text{ हो तो वलयकार क्षेत्र का क्षेत्रफल—}$$

$$= \sqrt{\left[2 D_1 - (D_1 - D_2)^2\right] \times \frac{(D_1 - D_2)^2}{4}} \times 10$$

$$= \sqrt{10} \left[ \frac{D_1^2}{4} - \frac{D_2^2}{4} \right] \text{ जिसे } \pi (r_2^2 - r_1^2) \text{ लिखते हैं।}$$

गाथा ४/२८२६ :

जगन्मोक्षी में सूर्यगुल के प्रथम और तृतीय वर्गगुल का भाग देने पर जो लब्ध प्राये उसमें से १ कम करने पर सामान्य मनुष्य राशि का प्रमाण—

$\frac{\text{जगन्मोक्षी}}{(\text{सूर्यगुल})^{1/2}} = 1$  आता है। यह महत्वपूर्ण बात है, क्योंकि इसमें राशि सिद्धान्त का आधार निहित है।

विशेष टिप्पण :

तिलोपपण्णत्ती चतुर्थ अधिकार में भरत क्षेत्र, हिमवान् पर्वत, हैमवत क्षेत्र, महाहिमवान् पर्वत, हरिवर्ष क्षेत्र, निषध क्षेत्र और विदेह क्षेत्र के सम्बन्ध में विभिन्न माप दिये गये हैं। इनके क्षेत्रफल सम्बन्धी मापों में दिये हुए सूत्र के अनुसार भरत क्षेत्र, निषध क्षेत्र एवं विदेह क्षेत्र का क्षेत्रफल गाथा २३७५, २३७६, २३७७ में दिये गये प्रमाणाँ के समान प्राप्त हो जाता है। किन्तु हिमवान् पर्वत, हैमवत क्षेत्र, महा हिमवान् पर्वत एवं हरिवर्ष क्षेत्र के क्षेत्रफल तिलोपपण्णत्ती (भाग १, १६४३ में नहीं दिये गये हैं। यहाँ प्रकृत में सूक्ष्म क्षेत्रफल से अभिप्राय है।

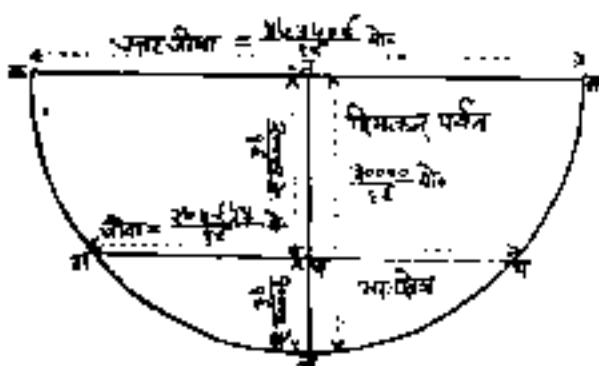
तथापि पूज्य विशुद्धमती आर्यिका भासाजी के प्रयासों से हिमवान् पर्वत, हैमवत क्षेत्र, महा-हिमवान् पर्वत (त्रुटिपूर्ण) एवं हरिवर्ष क्षेत्र के सूक्ष्म क्षेत्रफल उल्लिखित करने वाली गाथाएँ कन्नड़ प्रति से प्राप्त हुई हैं। इनमें से कथित सूत्रानुसार हरिवर्ष, निषध एवं विदेह के क्षेत्रफलों के प्रमाण गणनानुसार पूर्णतः सचवा लगभग मिल जाते हैं किन्तु हिमवान् पर्वत एवं हैमवत क्षेत्र, के क्षेत्रफलों के मान नहीं मिल सके हैं।

इन सभी क्षेत्रों और पर्वतों के क्षेत्रफलों की गणना हेतु मूलभूत सूत्र गाथा २३७४, चतुर्थ प्रधिकार में इसप्रकार दिया गया है : "बाण के चतुर्थ भाग से गुणित जीवा का जो बां हो उसको दश से गुणित कर प्राप्त गुणनफल का वर्गमूल निकालने पर धनुष के आकार वाले क्षेत्र का सूक्ष्म क्षेत्रफल जाना जाता है।"

$$\text{अर्थात्, घनुषाकार क्षेत्र का क्षेत्रफल} = \sqrt{\left(\frac{\text{बाण} \times \frac{1}{4} \times \text{जीवा}\right)^2 \times 10}$$

I इस सूत्रानुसार सर्वप्रथम हिमवान् पर्वत का क्षेत्रफल निकालने के लिए दो घनुषाकार क्षेत्रफल निकालते हैं जिनका अन्तर उक्त क्षेत्रफल होता है। इसप्रकार—

$$\text{हिमवान् पर्वत का क्षेत्रफल} = (\text{हिमवान् पर्वत का क्षेत्रफल} + \text{भरत क्षेत्र का क्षेत्रफल})$$



—( भरत का क्षेत्रफल ) होता है जो धनुष के रूप में उपलब्ध होते हैं।

यहाँ हिमवान् पर्वत क ग च ख है, भरत क्षेत्र ग च घ है।

हिमवान् पर्वत के क्षेत्रफल को प्राप्त करने हेतु पूर्ण घनुषाकार क्षेत्र क ग च घ ख पर विचार करते हैं जिसका बाण  $३००००० + ३००००० =$

$६०००००$  योजन प्राप्त होता है। इसमें भरत क्षेत्र का विस्तार और हिमवान् क्षेत्र का विस्तार सम्मिलित किया गया है।

इसप्रकार हिमवान् पर्वत का क्षेत्रफल—

$$= \sqrt{\left(\frac{६०००००}{१६} \times \frac{1}{4} \times \frac{४७३७०६}{१६}\right)^2 \times 10}$$

$$= \sqrt{\left(\frac{६०००००}{१६} \times \frac{1}{4} \times \frac{२७४६५४}{१६}\right)^2 \times 10}$$

इसको गणक मशीन द्वारा उक्त की गणना करने पर, जबकि  $\sqrt{10} = ३.१६२२७७६६$  लिया गया है तब—

$$\text{क्षेत्रफल} = \frac{११२३४६६५४१०}{३६१} - \frac{२१७३७०२२२६}{३६१}$$



दूसरे प्रकार से हल करने पर—

२२६५७०८६१३३३३ वर्ग योजन प्राप्त होता है। कलक यावा नष्टपूर्ण होने से यहाँ कचन नहीं दिया गया है।

IV हविष्य का क्षेत्रफल—

$$= \sqrt{(1000000 \times \frac{1}{2} \times 7380112)}^2 \times 10$$

$$= \sqrt{(1000000 \times \frac{1}{2} \times 7383112)}^2 \times 10$$

$$= (1000000 \times \frac{1}{2} \times 7383112) \times \sqrt{10}$$

$$= 616638566.71 \text{ वर्ग योजन प्राप्त होता है।}$$

दूसरे प्रकार से हल करने पर ६१६६३८५६६३७१६ वर्ग योजन प्राप्त होता है।

V इसीप्रकार,

निषध पर्वत का क्षेत्रफल—

$$= \sqrt{(1000000 \times \frac{1}{2} \times 7383112)}^2 \times 10$$

$$= \sqrt{(1000000 \times \frac{1}{2} \times 7380112)}^2 \times 10$$

$$= (10) \times \sqrt{10} [ 112700464 - 43422216 ]$$

अथवा दूसरे प्रकार से,

$$\text{क्षेत्रफल} = 341 \times \sqrt{47544077823861640000000000}$$

$$= 14148220133333 \text{ वर्ग योजन प्राप्त होता है।}$$

VI पुनः, इसीप्रकार

विदेह क्षेत्र का क्षेत्रफल—

$$= \sqrt{(1000000 \times \frac{1}{2} \times 1000000)}^2 \times 10$$

$$= \sqrt{(1000000 \times \frac{1}{2} \times 6414842)}^2 \times 10$$

$$= (10) \times \sqrt{10} [ 100000000 - 112700464 ]$$

$$= (10) \times \sqrt{10} [ 87624142 ] \text{ वर्ग योजन होता है।}$$

धमना, दूसरे प्रकार से

क्षेत्रफल =  $(10)^2 \sqrt{10} \sqrt{25561} = 126000.164$  वर्ग योजन प्राप्त होता है, जिसमें कोई त्रुटि संभव है, क्योंकि उपर्युक्त को हल करने पर  $25561 \times 25561 = 653363321$  वर्ग योजन प्राप्त हुआ है जिसमें कुछ त्रुटि हो सकती है, क्योंकि गणानुसार यह मान  $25561 \times 25561 = 653363321$  प्राप्त होना चाहिये। इसे पाठकगण हल कर संशोधित फल निकालने का प्रयास करेंगे, ऐसी भावना है। उपर्युक्त गणना में श्री जन्मकुमारजी दोशी, उदयपुर ने सहयोग दिया है जिसके हम आभारी हैं।

उपर्युक्त क्षेत्रफलों के गणना फलों से गाथाओं में दिये गये मानों के सम्बन्ध में मिसान विषयक संवाद प्रो० डॉ० चार० सी० गुप्ता, यूनेस्को के भारतीय गणित इतिहास के प्रतिनिधि, मेसरा (रांची) से भी किया गया। उनके पत्रानुसार जो १० जनवरी १९८५ को प्राप्त हुआ था, उन्हें कोई प्राचीन विधि प्राप्त हुई है जिससे वे हिमवान् का क्षेत्रफल  $25561 \times 25561 = 653363321$  वर्गयोजन निकालने में सफल हो सके हैं। वे इस समस्या को सुलझाने का अभी भी प्रयास कर रहे हैं। स्मरण रहे कि इन क्षेत्रफलों में  $\sqrt{10} = \frac{3}{2}$  लेने पर भी क्षेत्रफल सम्बन्धी उक्त गाथाओं में दिये गये मान प्राप्त नहीं होते हैं। उपर्युक्त गणनाओं से त्रिजोयपण्णसी भाग १, १९४३ की गाथाएँ चतुर्भुज अधिकार, मुख्यतः १६२४, १६२६, १६६८, १६६९, १७१८, १७१९, १७३८, १७४०, १७४१, १७४२, २३७६, १७७५, १७७३ तथा २३७७ एवं कलह प्रति से प्राप्त कुछ गाथाएँ हैं।



# विषयानुक्रम

चउत्थो - महाहिद्यारो

(गाथा १-३००६)

| विषय                                             | गाथा/पृ० सं० | विषय                                     | गाथा/पृ० सं० |
|--------------------------------------------------|--------------|------------------------------------------|--------------|
| मंगसाचरण एवं प्रतिज्ञा                           | १।१          | क्षेत्र एवं कुलाचलों का विस्तार          | १०७।३२       |
| (१) सोलह अक्षिकारों के नाम                       | २।१          | भरतक्षेत्रस्थ विजयार्ध पर्वत की अवस्थिति |              |
| मनुष्य लोक की स्थिति एवं प्रमाण                  | ६।२          | एवं प्रमाण का निरूपण                     | १०८।३४       |
| बाह्य एवं परिधि                                  | ७।२          | दक्षिण और उत्तर भरत का विस्तार           | १८१।५०       |
| क्षेत्रफल                                        | ८।२          | धनुषाकार क्षेत्र में जीवा का प्रमाण      |              |
| गोलक्षेत्र की परिधि एवं क्षेत्रफल                |              | निकालने का विधान                         | १८३।५१       |
| निकालने का विधान                                 | ११।३         | धनुष का प्रमाण निकालने का विधान          | १८४।५१       |
| मनुष्यलोक का घनफल                                | १०।३         | बाण का प्रमाण निकालने का विधान           | १८५।५१       |
| (२) जम्बूद्वीप की अवस्थिति एवं प्रमाण            | ११।४         | विजयार्ध की दक्षिण जीवा का प्रमाण        | १८६।५२       |
| १. अ० द्वी० वर्णन के सोलह अक्षराधिकार            | १२।४         | दक्षिण जीवा के धनुष का प्रमाण            | १८७।५३       |
| जगती की ऊँचाई एवं उसका आकार                      | १५।४         | विजयार्ध की उत्तर जीवा का प्रमाण         | १८८।५३       |
| जगती पर स्थित वेदिका का विस्तार                  | १९।५         | उत्तरजीवा के धनुष का प्रमाण              | १८९।५४       |
| वेदी के दोनों पार्श्वभागों में स्थित अक्षराधिकार | २०।५         | विजयार्ध की भूलिका का प्रमाण             | १९०।५५       |
| यनों में स्थित अक्षरदेवों के नगर                 | २५।८         | पार्श्वभुजा का प्रमाण ज्ञात करने की विधि | १९२।५५       |
| अ० द्वी० के विजयादिक चार द्वार                   | ४२।१३        | विजयार्ध की पार्श्वभुजा का प्रमाण        | १९३।५६       |
| द्वारोपरिस्थ प्रमाद                              | ४६।१३        | भरतक्षेत्र की उत्तरजीवा का प्रमाण        | १९४।५६       |
| गोपुर द्वारस्थ जिनविम्ब                          | ५०।१४        | " के धनुष का प्रमाण                      | १९५।५७       |
| अ० द्वी० की सूक्ष्मपरिधि का प्रमाण               | ५१।१४        | " की भूलिका का प्रमाण                    | १९६।५८       |
| " के क्षेत्रफल का प्रमाण                         | ५६।१७        | " की पार्श्वभुजा का प्रमाण               | १९७।५८       |
| विजयादिक द्वारों का अन्तर प्रमाण                 | ६७।१९        | पद्मद्रु का विस्तार                      | १९८।६०       |
| प्रतान्तर से विजयादि द्वारों का प्रमाण           | ७५।२५        | गंगा नदी का वर्णन                        | २००।६०       |
| " से द्वारों पर स्थित प्रासादों का प्रमाण        | ७६।२५        | उन्मामा-निमामा नदियों का स्वरूप          | २४०।७२       |
| द्वारों के अक्षिपति देवों का निरूपण              | ७७।२५        | सिन्धु नदी का वर्णन                      | २४५।७५       |
| विजयपर्व के नगर का वर्णन                         | ७८।२६        | भरतक्षेत्र के सप्त अक्षर                 | २६९।७८       |
| जगती के अक्षान्तर भाग में स्थित वनखण्ड           | ८१।२८        | द्वयभक्ति का वर्णन                       | २७३।७९       |
| जम्बूद्वीपस्थ सात क्षेत्रों का निरूपण            | ९२।२९        | काल का स्वरूप एवं उसके भेद               | २८०।८०       |
| " कुलाचलों का निरूपण                             | ९६।३०        | व्यावहारिकाल के भेद एवं उनकी स्वरूप      | २८७।८२       |
| क्षेत्रों का स्वरूप                              | १०२।३१       | अवसपिण्णी एवम् उरसपिण्णी कालों का        |              |
| भरतक्षेत्र का विस्तार                            | १०३।३१       | स्वरूप एवं उनकी प्रमाण                   | ३१७।१०१      |
| क्षेत्र एवं कुलाचलों की शमाकाओं का प्रमाण        | १०४।३१       |                                          |              |



| विषय                                                                                | गाथा/पृ० सं० | विषय                                                         | गाथा/पृ० सं० |
|-------------------------------------------------------------------------------------|--------------|--------------------------------------------------------------|--------------|
| सुषमा सुषमा काल का निरूपण                                                           | ६२४।१०४      | सहस्रीक्षित राजकुमारों की संख्या                             | ६३५।१०६      |
| दस प्रकार के कल्पवृक्ष                                                              | ६४६।१०८      | दीक्षा-अवस्था का निर्देश                                     | ६३७।१०८      |
| भोगभूमि में उत्पत्ति के कारण                                                        | ६६६।११४      | तीर्थंकरों की पारणा का काल                                   | ६३८।१०९      |
| भोगभूमि में वर्ष, जन्म, मरण काल एवं<br>/ मरण के कारण                                | ६७६।११५      | पारणा के दिन होने वाले पंचाशत्यर्थ                           | ६३९।११०      |
| भोगभूमिज जीवों का विशेष स्वरूप                                                      | ६८६।११७      | तीर्थंकरों का स्रष्टृत्वकाल                                  | ६४०।१११      |
| सुषमा काल का निरूपण                                                                 | ६९६।११८      | ,, के केवलज्ञान की तिथि, समय,<br>नक्षत्र और स्थान का निर्देश | ६८६।११३      |
| सुषमा काल के कारण का निरूपण                                                         | ७०६।११९      | तीर्थंकरों के केवलज्ञान का अन्तर काल                         | ७१०।११९      |
| भोगभूमिजों में मार्गणा आदि का निरूपण                                                | ७२५।१२३      | केवलज्ञानोत्पत्ति के पश्चात् जारी का<br>उत्सर्गमन            | ७१३।१२०      |
| बौद्ध कुलकरों का निरूपण                                                             | ७२८।१२३      | इन्द्रादिकों को केवलज्ञान का परिज्ञान                        | ७१४।१२०      |
| मालाका पुत्रों की संख्या एवं उनके नाम                                               | ७२७।१२४      | कुक्षर द्वारा समवसरण की रचना                                 | ७१८।१२४      |
| उन्हीं के नाम                                                                       | ७२७।१२४      | समवसरणों के निरूपण में शकतीस<br>अधिकारों का निर्देश          | ७२०।१२४      |
| तीर्थंकरों के अवतरण स्थान                                                           | ७२६।१२५      | सामान्य भूमि                                                 | ७२४।१२४      |
| ,, के जन्म-स्थान, माता-पिता,<br>जन्मतिथि एवं जन्म-नक्षत्रों के नाम                  | ७२६।१२५      | सोपानों का वर्णन                                             | ७२५।१२४      |
| तीर्थंकरों के बंधों का निर्देश                                                      | ७२७।१२६      | समवसरणों का विश्वास                                          | ७२६।१२४      |
| ,, की शक्ति का फल                                                                   | ७२८।१२७      | वीथियों का निरूपण                                            | ७२७।१२४      |
| तीर्थंकरों के जन्मान्तराल का प्रमाण                                                 | ७२९।१२७      | जुलिसालों का वर्णन                                           | ७२८।१२४      |
| शृणुभादि तीर्थंकरों की आयु का प्रमाण                                                | ७२९।१२८      | चैत्यशालाव भूमियों का निरूपण                                 | ७२९।१२४      |
| ,, का कुमारकाल                                                                      | ७३०।१२८      | नाट्यशालाव                                                   | ७३०।१२४      |
| ,, का उत्सेध                                                                        | ७३०।१२८      | मानस्तम्भ                                                    | ७३१।१२४      |
| ,, का शरीरवर्ण                                                                      | ७३१।१२९      | प्रथम वेदी का निरूपण                                         | ७३२।१२४      |
| ,, का राज्यकाल                                                                      | ७३२।१२९      | सातिका क्षेत्र                                               | ७३३।१२४      |
| ,, के चित्त                                                                         | ७३३।१२९      | दूसरी वेदी एवं बस्तीक्षेत्र का विस्तार                       | ७३४।१२४      |
| ,, का राज्यपद                                                                       | ७३४।१२९      | तृतीय बस्ती भूमि                                             | ७३५।१२४      |
| ,, के वैराग्य का कारण                                                               | ७३५।१२९      | द्वितीय कोट (साल)                                            | ७३६।१२४      |
| ,, द्वारा चिन्तित वैराग्य<br>भावना                                                  | ७३६।१२९      | उपवन भूमि                                                    | ७३७।१२४      |
| वैराग्य भावनाके अन्तर्गत नरकवर्तिके दुःख                                            | ७३६।१३०      | चैत्यक्षेत्रों की ऊँचाई एवं त्रिज्याप्रमाण                   | ७३८।१२४      |
| ,, तिर्थंकरों के                                                                    | ७३७।१३०      | मानस्तम्भ                                                    | ७३९।१२४      |
| ,, मनुष्य के                                                                        | ७३८।१३०      | नाट्यशालाव                                                   | ७४०।१२४      |
| ,, देवगति के                                                                        | ७३९।१३०      | तृतीय वेदी                                                   | ७४१।१२४      |
| शृणुभादि तीर्थंकरों के दीक्षा स्थान                                                 | ७४०।१३०      | स्वर्गभूमि                                                   | ७४२।१२४      |
| तीर्थंकरों की दीक्षा तिथि, प्रहर, नक्षत्र, वन और<br>दीक्षा समय के उपवासों का निरूपण | ७४१।१३०      | तीसरा कोट (साल)                                              | ७४३।१२४      |
|                                                                                     |              | कल्पभूमि                                                     | ७४४।१२४      |

| विषय                                   | पाना/पृ० सं० | विषय                                           | पाना/पृ० सं० |
|----------------------------------------|--------------|------------------------------------------------|--------------|
| नाट्यकालाएँ                            | ८४७।२५५      | तीर्थंकरों के ऋषियों की संख्या                 | ११०३।३२८     |
| चतुर्थ वेदी                            | ८४८।२५६      | ,, के सात गण व उनकी पृथक्                      |              |
| अथर्वभूमियाँ                           | ८५०।२५६      | पृथक् संख्या                                   | ११०८।३२८     |
| क्षूप                                  | ८५३।२५७      | तीर्थंकरों की आधिकार्यों का प्रमाण             | ११७७।३४६     |
| चतुर्थ कोट (सात)                       | ८५७।२५८      | प्रमुख आधिकार्यों के नाम                       | ११८१।३४६     |
| श्रीमच्छ्रम भूमि                       | ८६१।२५८      | भावकों की संख्या                               | ११८२।३४६     |
| समवसरण में बाह्य कोठे                  | ८६५।२५९      | आधिकार्यों की संख्या                           | ११८५।३४७     |
| पाँचवी वेदी                            | ८७३।२६४      | प्रथम तीर्थ में देव-देवियों तथा अन्य पशुधर्मों |              |
| प्रथम पीठ                              | ८७५।२६५      | एवं तीर्थों की संख्या                          | ११९५।३५०     |
| द्वितीय पीठ                            | ८८४।२७०      | ऋष्यादि तीर्थंकरों के मुक्त होने की तिथि,      |              |
| तृतीय पीठ                              | ८८३।२७२      | काल, नक्षत्र और सङ्गुक्त जीवों की              |              |
| गन्धकुटी                               | ८८६।२७४      | संख्या का निर्देश                              | ११८६।३५०     |
| अरहन्तों की स्थिति सिंहासन के ऊपर      | ८९०।२७८      | ऋष्यादि तीर्थंकरों का योगनिवृत्तिकाल           | १२२०।३५६     |
| अश्व के दस अतिथय                       | ८९५।२७८      | ,, के मुक्त होने के आसन                        | १२२१।३५६     |
| केवलज्ञान के ग्यारह अतिथय              | ९०८।२७८      | ऋष्यादिकों के तीर्थ में अनुबद्ध केवलियों       |              |
| देवता-प्रेत-अतिथय                      | ९१३।२८०      | की संख्या                                      | १२२३।३५७     |
| अष्ट महाप्रातिहार्य                    | ९२४।२८१      | अनुत्तर विमानों में जाने वालों की संख्या       | १२२६।३५७     |
| समवसरणों में बन्धनास्त जीवों की संख्या | ९३८।२८५      | मुक्ति प्राप्त पतिगणों का प्रमाण               | १२२८।३६१     |
| अवसाहनकाल का अतिथय                     | ९३९।२८५      | मुक्ति प्राप्त निष्यगणों का मुक्तिकाल          | १२४९।३६३     |
| प्रवेश निर्गमन का प्रमाण               | ९४०।२८५      | सौधर्मादिको प्राप्त भिक्षुओं की संख्या         | १२४९।३६४     |
| समवसरण में कौन नहीं जाते ?             | ९४१।२८५      | भाव्यमणों की संख्या                            | १२४९।३६७     |
| समवसरण में रोषादि का अभाव              | ९४२।२८६      | ऋषभनाथ और महावीर का सिद्धिकाल                  | १२५०।३६८     |
| ऋष्यादि तीर्थंकरों के यश               | ९४३।२८६      | तीर्थंकरों के मुक्त होने का अन्तरकाल           | १२५१।३६८     |
| ,, की यक्षिणियाँ                       | ९४६।२८६      | तीर्थ प्रवर्तनकाल                              | १२६१।३७२     |
| ,, का केवली काल                        | ९४२।२८८      | दुष्कर्ममुक्ताकाल का प्रवेश                    | १२८७।३७९     |
| गणेश की संख्या                         | ९७०।२९२      | धर्मतीर्थ की व्युत्पत्ति                       | १२८८।३७९     |
| आद्य गणेश्वर                           | ९७३।२९३      | भरतादिक ऋष्यतियों का निर्देश                   | १२९२।३८०     |
| ऋद्धि सामान्य व बुद्धिऋद्धि के भेद     | ९७७।२९५      | ऋष्यतियों की परोक्षता/प्रत्यक्षता              | १२९५।३८०     |
| बिधिया ऋद्धि के भेद एवं उनका स्वरूप    | १०३३।३०८     | भरतादिक ऋष्यतियों की ऊँचाई                     | १३०३।३८२     |
| क्रिया ऋद्धि के भेद व उनका स्वरूप      | १०४२।३१०     | ,, की आयु                                      | १३०५।३८२     |
| तप ऋद्धि के भेद व उनका स्वरूप          | १०५८।३१४     | ,, का कुमारेकाल                                | १३०८।३८३     |
| बल ऋद्धि के भेद व उनका स्वरूप          | १०७२।३१८     | ,, का पञ्चलीकाल                                | १३११।३८४     |
| शौच ऋद्धि के भेद व उनका स्वरूप         | १०७८।३१९     | चक्ररत्न की उपलब्धि एवं दिशिकाय                | १३१५।३८४     |
| रस ऋद्धि के भेद व उनका स्वरूप          | १०८८।३२१     | चक्रवर्तियों का वैभव                           | १३८१।३८७     |
| श्रेष्ठ ऋद्धि के भेद व उनका स्वरूप     | १०८९।३२४     | ,, के राज्यकाल का प्रमाण                       | १४११।४०७     |

| विषय                                                                       | पाठा/पृ० सं० | विषय                                                                      | पाठा/पृ० सं० |
|----------------------------------------------------------------------------|--------------|---------------------------------------------------------------------------|--------------|
| चतुर्दशियों का संयमकाल                                                     | १४११।४०६     | दुष्प्रकाश का निरूपण                                                      | १४८८।४५४     |
| “ की पर्याप्तान्तर प्राप्ति                                                | १४२२।४०६     | दुष्प्रकाशमा काल का निरूपण                                                | १४९७।४५६     |
| बलदेव, नारायण एवं प्रतिनारायणों का निरूपण                                  | १४२३।४२१     | सुष्प्रकाशमा काल का निरूपण                                                | १५१७।४६२     |
| प्यारह छत्रों का निरूपण                                                    | १४५१।४२१     | सुष्प्रकाश काल का निरूपण                                                  | १५२०।४६३     |
| नौ नारदों का निरूपण                                                        | १४८१।४३०     | सुष्प्रकाशमा काल का निरूपण                                                | १५२४।४६४     |
| चौबीस कामदेव                                                               | १४८५।४३१     | उत्सर्पिणी-व्यसर्पिणी परिवर्तन                                            | १५२८।४६४     |
| १६० महापुरुषों का मोक्षपद निर्देश                                          | १४८५।४३१     | पाँच श्लोकप्रमाणों की विचार्य श्रेष्ठियों में प्रसक्तमानकाल का नियम       | १५२९।४६५     |
| दुष्प्रकाश काल का प्रवेश एवं उसमें आधु मावि का प्रमाण                      | १४८६।४३१     | उत्सर्पिणीकाल के अतिदुष्प्रकाश तीन कालों में जीवोंकी संख्यावृद्धि का क्रम | १५३०।४६५     |
| कौतुमावि अनुबद्ध केवली                                                     | १४८८।४३२     | विकलेन्द्रियों का नाम व कल्पकुलों की उत्पत्ति                             | १५३२।४६५     |
| अस्मिन् केवली आदि का निर्देश                                               | १४९१।४३२     | विकलेन्द्रिय जीवों की उत्पत्ति एवं वृद्धि                                 | १५३४।४६६     |
| चौदह पूर्वधारियों के नाम एवं उनके काम का प्रमाण                            | १४९५।४३३     | दुष्प्रकाशसर्पिणी एवं उसके चित्त                                          | १५३७।४६७     |
| दसपूर्वधारि व उनका काल                                                     | १४९७।४३४     | हिमवान् पर्वत का उत्प्रेष, अवगाह व विस्तार                                | १५४६।४७१     |
| प्यारह अंगधारी एवं उनका काल                                                | १५००।४३४     | “ “ की उत्तर जीवा                                                         | १५४७।४७१     |
| आचार्यधारी एवं उनका काल                                                    | १५०२।४३५     | “ “ के उत्तर में धनुष पृष्ठ                                               | १५४८।४७१     |
| गौतम बख्खर से लोहायें तक का सम्मिलित काल प्रमाण                            | १५०४।४३५     | “ “ की जूलिका                                                             | १५४९।४७१     |
| अतुल्योप नष्ट होने का समय                                                  | १५०५।४३६     | “ “ को पाण्डुरंगुजा                                                       | १५५०।४७२     |
| चातुर्वर्ण्य सच का अस्तित्व काल                                            | १५०६।४३६     | “ “ की देविया, वनप्रण                                                     | १५५१।४७२     |
| नक राजा की उत्पत्ति का समय                                                 | १५०८।४३७     | “ “ के कूटों के नाम                                                       | १५५५।४७३     |
| गुप्तों का और चतुर्भुज का राज्यकाल                                         | १५१६।४३८     | कूटों का विस्तार आदि                                                      | १५५५।४७३     |
| पालक का राज्याभिषेक                                                        | १५१७।४३९     | प्रथम कूटस्थ जिनमयन                                                       | १५५६।४७३     |
| पालक, विजय, मुरखबंधी तथा पुष्पमित्र का राज्यकाल                            | १५१८।४३९     | मेघदूतों पर स्थित अन्तर नम                                                | १५७२।४७६     |
| कुमुमित्र, अग्निमित्र, गन्धर्व, नरवाहन मृत्युबंध और मुत्तबंधियोंका रा. का. | १५१९।४४०     | हिमवान् पर्वतस्थ पद्मप्रह का मर्त्यन पद्मप्रह में स्थित कमल का निरूपण     | १५८०।४७७     |
| कल्की की आयु एवं उसका राज्यकाल                                             | १५२१।४४०     | कमल में स्थित श्रीदेवी का “                                               | १५८४।४८०     |
| कल्की का पट्टबन्ध                                                          | १५२२।४४०     | रोहितास्या नदी का निर्देश                                                 | १७१८।४८५     |
| कल्की एवं उपकल्कियों का समय                                                | १५२८।४४२     | हैमवत क्षेत्र का निरूपण                                                   | १७२१।४८७     |
| अतिदुष्प्रकाश काल का निरूपण                                                | १५५६।४४८     | महाहिमवान् पर्वत का निरूपण                                                | १७४०।४८९     |
| उत्सर्पिणी काल का प्रवेश और भेद                                            | १५७६।४५१     | हरिश्चंद्र का निरूपण                                                      | १७६१।४८५     |
| “ “ का कालमान                                                              | १५७८।४५२     | निगमपर्वत का निरूपण                                                       | १७७३।४८८     |
| “ “ का प्रथमकाल                                                            | १५७९।४५२     | महाविदेह क्षेत्र का वर्णन                                                 | १७७७।४८८     |
|                                                                            |              | मन्दर महामंद का निरूपण                                                    | १८०३।४८९     |

| विषय                                     | पृ. सं.  | विषय                                           | पृ. सं.  |
|------------------------------------------|----------|------------------------------------------------|----------|
| मेरु की छह परिधिवाँ एवं उनका प्रमाण      | १८२५।५१२ | अपर विदेहस्य = गजदन्त                          | २२३९।५९८ |
| सातवीं परिधि में व्यासृज वन              | १८२७।५१२ | पूर्वापर विदेहस्य विभंग नदियाँ                 | २२४१।५९८ |
| मेरु के मूल भागावि की व्याख्यात्मकता     | १८३०।५१३ | कण्डादि क्षेत्रों का विस्तार                   | २२४३।६०० |
| मेरु सम्बन्धी चार वन                     | १८३२।५१३ | कण्डादेन का निरूपण                             | २२४९।६०४ |
| मेरु शिखर का विस्तार एवं परिधि           | १८३३।५१४ | भूचमगिरि                                       | २३१७।६१९ |
| मेरु शिखरस्थ वाष्पुक वन                  | १८३४।५१४ | क्षेत्र क्षेत्रों का संक्षिप्त वर्णन           | २३१९।६१९ |
| वाष्पुक शिला का वर्णन                    | १८४२।५१५ | अपर विदेह का संक्षिप्त वर्णन                   | २३२५।६२० |
| सीमन्त वन का निरूपण                      | १९६१।५३९ | सीमा-सीतोदा के किनारों पर तीर्थ                | २३३२।६२२ |
| मन्दन वन का वर्णन                        | २०१३।५४१ | सोमरु वनार पर्वत                               | २३३४।६२२ |
| महानाल वन का वर्णन                       | २०२६।५४३ | बारह विभंग नदियाँ                              | २३३९।६२४ |
| गजदन्त पर्वतों का वर्णन                  | २०३७।५४५ | देवारण्य वन का निरूपण                          | २३४२।६२४ |
| " " की भीम और बूट                        | २०४५।५४९ | भूतारण्य का निरूपण                             | २३४२।६२७ |
| विष्णुप्रभ गजदन्तों के बूट               | २०७०।५६२ | भीमगिरि का वर्णन                               | २३४४।६२७ |
| गण्डमादन पर्वत के बूट                    | २०८२।५६५ | रघुक क्षेत्र का वर्णन                          | २३६२।६२९ |
| माल्यवान् पर्वत के बूट                   | २०८४।५६५ | रुक्मिणिरि का वर्णन                            | २३६७।६३० |
| सीतोदानदी का वर्णन                       | २०९०।५६७ | हैरण्यवत क्षेत्र का निरूपण                     | २३७७।६३२ |
| यमक पर्वतों का वर्णन                     | २१००।५६९ | शिलारीगिरि का निरूपण                           | २३८२।६३४ |
| यमक पर्वतों के आगे ५ इह                  | २११४।५७२ | ऐरावत क्षेत्र का निरूपण                        | २३९५।६३४ |
| कांचन शैलों का निरूपण                    | २११९।५७३ | अनुवाकार क्षेत्र का क्षेत्रफल निकालने का विधान | २४०१।६३६ |
| महानाल वेदी                              | २१२४।५७४ | भरत क्षेत्र का सूक्ष्म क्षेत्रफल               | २४०२।६३६ |
| विश्वजेन्द्र पर्वतों का वर्णन            | २१२८।५७५ | हिमवान् पर्वत का "                             | २४०३।६३७ |
| सीतोदा नदी पर जिनप्रासाद                 | २१३४।५७६ | हिमवत क्षेत्र का "                             | २४०४।६३७ |
| कुमुदसैल व पलाशगिरि                      | २१३७।५७७ | हरि क्षेत्र का "                               | २४०५।६३८ |
| महानाल वन वेदी                           | २१३९।५७७ | विषय पर्वत का सूक्ष्म क्षेत्रफल                | २४०६।६३८ |
| सीता नदी का वर्णन                        | २१४१।५७८ | विदेह क्षेत्र का " "                           | २४०७।६३८ |
| यमकगिरि एवं इहों का वर्णन                | २१४८।५७९ | नीलान्त ऐरावतक्षेत्र का क्षेत्रफल              | २४०८।६३८ |
| सीतानदी पर जित प्रासाद                   | २१५७।५८१ | जम्बूद्वीप का क्षेत्रफल                        | २४०९।६३८ |
| पयोत्तर एवं नीलगिरि                      | २१५९।५८१ | जम्बूद्वीपस्थ नदियों की संख्या                 | २४१०।६३८ |
| वेवकुल क्षेत्र की स्थिति व सम्बाँधि      | २१६३।५८२ | कुण्डों का प्रमाण                              | २४१६।६४३ |
| मातृसतीकुल के स्थल आदि का वर्णन          | २१७१।५८४ | कुण्डों के तबनों में रहने वाले व्यन्तरदेव      | २४१७।६४३ |
| उत्तरकुल व उसकी सम्बाँधि आदि             | २२१७।५८३ | वेदियों की संख्या व उत्तेधावि                  | २४१८।६४३ |
| जम्बूद्वीप व उसके परिवार वृक्षादि        | २२२०।५९४ | जिनपर्वतों की संख्या                           | २४२२।६४४ |
| पूर्वापर विदेहों में क्षेत्रों का विभाजन | २२२५।५९६ | कुल क्षेत्रादिकों की संख्या                    | २४२४।६४४ |
| विदेहस्य वर्तमान क्षेत्र                 | २२३२।५९७ |                                                |          |
| पूर्व विदेहस्य = गजदन्त                  | २२३६।५९७ |                                                |          |

| विषय                                               | पाना/पृ० सं० | विषय                                        | पाना/पृ० सं० |
|----------------------------------------------------|--------------|---------------------------------------------|--------------|
| (३) लवण समुद्र                                     |              | भारतकीलंब में पर्यंततक क्षेत्र का क्षेत्रफल | २६००।६६३     |
| लवण समुद्र का आकार और विस्तारादि                   | २४२८।६४६     | बादिम, मध्यम और बाह्य सूची                  |              |
| .. में पातालों का निकषण                            | २४३८।६४९     | निकालने का विधान                            | २६०१।६९३     |
| .. के दोनों तटों पर और तिसर पर                     |              | विचलित सूची की परिधि प्राप्त करने           |              |
| स्थित नगरियों का वर्णन                             | २४७५।६६२     | का विधान                                    | २६०२।६९४     |
| पातालों के पार्श्वभागों में स्थित न पर्यंत         | २४८४।६६४     | भारतकी लंब की अत्यन्तर परिधि का             |              |
| लवण समुद्रस्थ सूखेकीपादिकों का निर्वेक             | २४६८।६६७     | प्रमाण                                      | २६०३।६९४     |
| ४८ कुमानुसूचीयों का निकषण                          | २४६४।६७०     | भारतकी लंब की मध्यम परिधि का प्रमाण         | २६०४।६९४     |
| कुमानुसूचि में उत्पन्न मनुष्यों की आकृति           | २४६४।६७३     | .. बाह्य ..                                 | २६०५।६९५     |
| कुमानुसूचीयों में कौन उत्पन्न होते हैं ?           | २४६०।६७८     | भारतादि सब क्षेत्रों का सम्मिलित विस्तार    | २६०६।६९५     |
| लवणसमुद्रस्थ मत्स्यादिकों की अवगाहना               | २४६१।६८१     | भारतकी लम्बाई भरतक्षेत्र का बादि, मध्य      |              |
| लवण समुद्र की जगती                                 | २४६१।६८२     | और बाह्य विस्तार                            | २६०७।६९६     |
| भारतकी लम्बाई क्षेत्र का सूखे क्षेत्रों का विस्तार |              | भारतकी लम्बाई क्षेत्रों का विस्तार          | २६१०।६९७     |
| निकालने की विधि                                    | २४६१।६८२     | पसाह और पुण्डरीकह से नियत नदियों            |              |
| लवणसमुद्र के सूखे क्षेत्रफल का प्रमाण              | २४६३।६८३     | का पर्यंत पर पसन का प्रमाण                  | २६१३।७००     |
| जम्बूद्वीप एवं लवणसमुद्र के सम्मिलित               |              | मन्दर पर्वतों का निकषण                      | २६१५।७००     |
| क्षेत्रफल का प्रमाण                                | २४६४।६८३     | गजदन्तों का वर्णन                           | २६१६।७०४     |
| जम्बूद्वीप प्रमाण लम्बाई निकालने का                |              | कुक्षेत्रों का घनः पृष्ठ                    | २६१७।७०४     |
| विधान                                              | २४६५।६८४     | कुक्षेत्रों की जीवा                         | २६१८।७०५     |
| लवणसमुद्र के जम्बूद्वीप प्रमाण लम्बाई              |              | क्षुद्र विस्तार निकालने का विधान            | २६१९।७०५     |
| का निकषण                                           | २४६६।६८४     | कुक्षेत्रों का क्षुद्र विस्तार              | २६२०।७०६     |
| (४) भारतकी लम्बाई                                  |              | जम्बूद्वीप निकालने का विधान                 | २६२३।७०६     |
| कर्ण के सोलह अन्तराधिकारों के नाम                  | २४६८।६८५     | कुक्षेत्रों का जम्बूद्वीप                   | २६२४।७०६     |
| भारतकी लम्बाई की जगती                              | २४७१।६८५     | .. वक्रबाण                                  | २६२६।७०६     |
| इष्टाकार पर्वतों का निकषण                          | २४७२।६८६     | भारतकी कुल एवं उसके परिवार कुल              | २६२७।७०७     |
| जिनमवन एवं व्यस्तरप्रासादों का माध्य               | २४८०।६८७     | मेरु आदिकों के विस्तार का निकषण             | २६२८।७०७     |
| मेरुपर्वतों का विस्थाप                             | २४८१।६८८     | विजयादिकों का विस्तार निकालने का            |              |
| पर्वत तालाब आदि का प्रमाण                          | २४८२।६८८     | विधान                                       | २६२९।७०९     |
| दोनों टीनों से विजयादिकों का साक्ष्य               | २४८४।६८८     | कच्छा और गन्धमालिनी देश का                  |              |
| विजयार्थ पर्वतदिकों का विस्तार                     | २४८६।६८९     | सूचीमाप                                     | २६२८।७११     |
| बारह कुल पर्वत और बार विजयार्थों                   |              | कच्छा देश की परिधि                          | २६२९।७१२     |
| की स्थिति एवं आकार                                 | २४८८।६८९     | पर्वतराष्ट्र क्षेत्र का प्रमाण              | २६३०।७१२     |
| विजयादिकों के नाम, आकार                            | २४९१।६९०     | विदेह क्षेत्र का आयाम                       | २६३१।७१२     |
| कुल पर्वतों का विस्तार                             | २४९६।६९१     | कच्छा देश की आदिम जम्बाई                    | २६३४।७१३     |
| इष्टाकार पर्वतों का विस्तार                        | २४९६।६९२     | अपने-अपने स्थान में अर्थ विदेह का           |              |
|                                                    |              | विस्तार                                     | २६३५।७१३     |



सामयिक :- आचार्य श्री सुविजितानन्द जी महाराज

| विषय                                           | गाथा/पृ० सं० | विषय                                                    | गाथा/पृ० सं० |
|------------------------------------------------|--------------|---------------------------------------------------------|--------------|
| पञ्चाविकी की तीनों लम्बाई का प्रमाण            | २९२५।७८४     | (९) मनुष्यों में अक्षयवृत्त                             | २९७६।८०३     |
| हिमवान् पर्वत का क्षेत्रफल                     | २९५९।७९६     | (१०) मनुष्यों में गुणव्यापार                            | २९८०।८०२     |
| श्रीवह् पर्वतों से रुद्ध क्षेत्रफल का<br>निकषण | २९६०।७९६     | (११) मनुष्यों की गत्यन्तर प्राप्ति<br>मनुष्यायु का बन्ध | २९८१।८०४     |
| पुष्करार्थ द्वीप का समस्त क्षेत्रफल            | २९६१।७९७     | (१२) मनुष्यों में योगियों का निकषण                      | २९९३।८०५     |
| पर्वत रहित पुष्करार्थ का क्षेत्रफल             | २९६३।७९७     | (१३-१४) मनुष्यों में सुख दुःख का<br>निकषण               | २९९९।८०६     |
| मरुतादि क्षेत्रों का क्षेत्रफल                 | २९६४।७९८     | (१५) सम्पत्ति प्राप्ति के कारण                          | ३०००।८०७     |
| पुष्करार्थ के जम्बूद्वीप प्रमाण लब्ध           | २९६७।७९९     | (१६) युक्त जीवों का प्रमाण                              | ३००३।८०७     |
| मनुष्यों की स्थिति                             | २९६८।७९९     | अधिकारान्त मयल                                          | ३००६।८०८     |
| मरुतादिक क्षेत्र अन्तराधिकार                   | २९६९।८००     |                                                         |              |
| (५) मनुष्यों के मेघ                            | २९७०।८००     |                                                         |              |
| (८) मनुष्यों की संख्या                         | २९७१।८००     |                                                         |              |





जबिवसह-आइरिय-विरहवा

# तिलोयपण्णत्ती

चउत्थो महाहियारो

मङ्गलाचरण एवं प्रतिज्ञा—

इवं उचरि माणुस-लोय-सरुवं बण्णयामि—

लोयालोय-पयासं, पउमप्पह-जिणवरं जमंसिस्ता<sup>१</sup> ।

माणुस-जग-पण्णत्ति, बोधदामो आणुपुब्बीए ॥ १ ॥

इससे आगे मनुष्यलोकके स्वरूपका वर्णन करता हूँ—

वर्णन :—लोकालोकको प्रकाशित करनेवाले पद्यप्रभ जिनेन्द्रको नमस्कार कर अनुक्रममे मनुष्यलोक-प्रशस्ति कहता हूँ ॥ १ ॥

सोलह अधिकारोंके नाम—

णिहसस्स सरुवं, जंजूदीवोत्ति लवणजलही य ।

धावइसंघो बीओ, कालोव-समुद्द-पोक्खरद्धाई ॥ २ ॥

तेसु-ट्टिव-मणुवाणं, मेवा संत्ता य घोव-बहुमसं ।

‘गुणढाण-प्यहुदीणं, संकमणं विविह-भेय-सुवं ॥ ३ ॥

आऊ-बंधन-भावं, ओणि-पमानं सुहं च वुत्तं च ।

सम्मत्त-माहण-हेहू, णिब्बुत्ति-ममचाण परिमाणं ॥ ४ ॥

एवं सोलस संछे, अहियारे एश्च<sup>२</sup> बत्तहस्तामो ।

जिण-मुह-कमल-बिणिग्गय-अर-जग-पण्णत्ति-आमाए ॥ ५ ॥

१. व. एमसिस्ता, क. क. एमसिस्तो । २. द. वुण्णहण । ३. ब. वत्तहस्तामो, क. वत्तहस्तामो ।



**अर्थ :**—निर्देशका स्वरूप, जम्बूद्वीप, लवणसमुद्र, धातकी क्षण्डद्वीप, कालोदसमुद्र, पुष्कराद-  
द्वीप, इन द्वीपोंमें स्थित मनुष्योंके भेद, संख्या, अल्पबहुत्व, गुणस्थानादिकका विविध भेदोंसे युक्त  
संक्रमण, आयु-वृद्धनके निमित्तभूत परिणाम, योनि-प्रमाण, सुख, दुःख, सम्यक्त्व-ग्रहणके कारण  
और मोक्ष जानेवालोंका प्रमाण । इसप्रकार जितेन्द्र भगवान्के मुखरूपी कमलसे निकले हुए नर-जग-  
प्रज्ञप्ति नामक इस चतुर्थ भद्राधिकारमें इन सोलह अधिकारोंका वर्णन किया है ॥ २३६ ॥

**मनुष्यलोककी स्थिति एवं प्रमाण—**

तप्त-आली-बहुमज्ज्हे, विस्ताभ सिदीअ उच्चरिसे भागे ।  
अद्दुद्धो मणुव-जगो, 'जोयण-पणदास-लक्खं'-विक्खंभा ॥६॥

। जो ४५ ल ।

**अर्थ :**—चित्रा पृथिवीके ऊपर तप्तनालीके बहुमध्यभागमें पैंतालीस लाख ( ४५००००० )  
योजन प्रमाण विस्तारवाला अतिगोल मनुष्यलोक है ॥ ६ ॥

**मध्यलोकका बाह्य एवं परिधि—**

जग-मज्ज्भावो उच्चरि, तक्खहलं जोयणाणि इणि-लक्खं ।  
णव चहु-दुग-स-सिय-दुग-चउरेक्केक्क-कमेण तप्परिही ॥७॥

। १ ल । १४२३०२४६ ।

**अर्थ :**—लोकके मध्यभागसे ऊपर उस मनुष्यलोकका बाह्य एक लाख ( १००००० )  
योजन और परिधि क्रमशः नौ, चार, दो, शून्य, तीन, दो, चार और एक अंक ( १४२३०२४६ योजन )  
प्रमाण है ॥ ७ ॥

**नोट :**—परिधि निकालनेका नियम इसी अध्याय की गाथा ६ में दिया गया है ।

**मनुष्यलोकका क्षेत्रफल—**

सुवण-णभ-नायण-पण-दुग-एक्क-स-सिय-सुण्ण-णव-णहा-सुण्णं ।  
सुक्केक्क-जोयणा 'विद्य, संक-कमे मणुव-सोय-क्षेत्रफलं ॥८॥

। १६००६०३०१२५००० ।



जम्बूद्वीपकी अवस्थिति एवं प्रमाण—

मायस-अग-बहुमउभे, विमसावो होवि जंबुदीओ सि ।

एक-ऊज्यण-सर्वसं, विषसंभ-द्रवो सरिस-वट्टो ॥ ११ ॥

संक्षेप :- मनुष्यसेत्रके बहुमध्यभागमें एक लाख बीघा विस्तारसे युक्त, वृत्तके सदृश और विख्यात जम्बूद्वीप है ॥ ११ ॥

जम्बूद्वीपके वर्णनमें सोलह अन्तराधिकारोंका निर्देश—

उत्तरार्धः - जयहो विजयशायी, जयहो विजयशायी तस्मिन् कालमेव च ।

शिवगिरि-हेमवता' महहिमवं हरि-वरिस्त-मिसहृद्दी ॥१२॥

विजयो विदेह-नामो, नीलगिरी रम-वरिस-रम्मिगिरी ।

हेरम्भवदो विजयो, सिंहरी एरावदो सि करिस्तो य ॥१३॥

एवं सोलस-मेवा<sup>३</sup>, जंबूदीधन्मि अंतरहियारा<sup>४</sup> ।

एभिह ताण सरुणं, दोषधामो आणपुववीए ॥१४॥

अर्थ :—जम्बूद्वीपके वर्णनमें जगती ( वेदिका ), विन्यास, भरतक्षेत्र, उस ( भरत ) क्षेत्रमें होनेवाला कालभेद, हिमवान् पर्वत, हैमवतक्षेत्र, महाहिमवान् पर्वत, हरिश्चेत्र, निषधपर्वत, विदेहक्षेत्र, नीलपर्वत, रम्यक्षेत्र, रुक्मिपर्वत, हैरण्यवतक्षेत्र, विश्वरीपर्वत और ऐरावतक्षेत्र इसप्रकार सोलह अन्तराधिकार हैं । अब उनका स्वरूप अनुक्रमसे कहता हूँ ॥ १२-१४ ॥

जगतीकी ऊंचाई एवं उसका आकार—

बेढेदि' तस्स जगदी, अह्' चिय जोयणाणि उत्तुंगा ।

दीप्तं तन्निष्ठं निर्यस्तं, सरिसं होवून वसय-णिहा ॥ १५ ॥

जो ८ ।

**वार्त्तः**—उसकी जगती आठ पंजिन ऊंची है; जो मणिबन्धके समान उस द्वीपको, दस्य  
 अर्थात् कड़के सदृश होकर वेष्टित करती है ॥ १५ ॥

१. द. न. हिमवदा । २. व. एामे । ३. द. न. क. भेवो । ४. व. न. क. अंतरहिपारो । ५. द. बभ्रुं,  
न. क. बभ्रुं । ६. द. न. केनेकि, क. उ. बेटे पि । ७. द. दोवंतमिणियत्तां, न. क. वोव तं मलियत्ता ।

**जगतीका विस्तार—**

मूले भारत-मन्त्रे, अहु स्त्रिय ज्योत्षाणि निहिता ।  
सिहरे चत्वारि कुण्डं, जगदी-रं दक्ष' परिभाजं ॥१६॥

**भाषांतरार्थक :-** आचार्य महोदय को विज्ञापन की सूचनाएं

वार्त्त :- जगतीके विस्तारका प्रमाण स्पष्टरूपसे मूलमें बारह, मध्यमें आठ और शिखरपर चार योजन कहा गया है ॥ १६ ॥

### जगतीकी नींव—

बो कोसा अवगाढा, तेलियमेसा हवेहि वज्जमयी" ।  
मज्जे बहुरथमयी", सिंहरे वेरलिय-वरिपुण्णा ॥१७॥

कोस २ ।

संक्षेपः—सद्यमें बहुरत्नोंसे निर्मित और शिखरपर संक्षेपमणियोंसे परिपूर्ण, वषट्मय जगतीकी गहराई ( नीच ) दो कोस है ॥ १७ ॥

जगतीके मूलमें स्थित गुफाओंका वर्णन—

तीए मूल-नएसे, पुष्पावरदो थ सप्त-सप्त गुहा ।  
 नर-<sup>२</sup>तीरनाहिरामा, अनावि-निहृणा बिचिस्तयरा ॥१८॥

अर्थ :—जगतीके मूल प्रदेशमें पूर्व-पश्चिमकी ओर जो सात-सात गुफाएं हैं, वे उत्कृष्ट तोरणोंसे रमणीक, अनादि-निघन एवं अत्यन्त अद्भुत हैं ॥१८॥

**जम्बूद्वीपकी जगतों पर स्थित वेदिकाका विस्तार—**

जगदी-उपरिम-भागे, बहु-मज्जे कणय-देविषा दिक्खा ।  
वे कोसा उत्सुंगर, बिरियिणा पंच-सय-दंडा ॥१६॥

को २। दंड ५००।

संक्षेपः—जगतीके उपरिम भागके ठीक मध्यमें दिव्य स्वर्णमय वेदिका है। यह दो कोस ऊँची और पाँचसौ ( ५०० ) धनुष प्रमाण चौड़ी है ॥१६॥

१. मरुत्त । २. व. व. क. ज. वज्रमयं । ३. व. व. क. उ. ज. बहुवचनमर्थो । ४. व. क. वीरणाव, व. वीरणाव, व. वीरणाव ।

जगतीका अभ्यन्तर एवं बाह्यादि विस्तार—

जगती-उत्तरिम-द'हे', वेदी-द'बं सु सोधि-अद्-कदो ।

अं सप्तमेक-पात्ते, विस्तरं-अद्-परिमाणं ॥२०॥

अर्थ :—जगतीके उपरिम विस्तारमेंसे वेदीके विस्तारको घटाकर शेषको आधा करनेपर जो प्राप्त होता है वह वेदीके एक पार्श्वभागमें जगतीके विस्तारका प्रमाण है ॥२०॥

वित्तेवाचं :—गाथा १६ में जगतीका उपरिम विस्तार ४ योजन ( ३२००० धनुष ) कहा गया है । इसमेंसे वेदीका विस्तार ( ५०० धनुष ) घटाकर शेषको आधा करनेपर (  $\frac{31500}{2} = 15750$  ) = १५७५० धनुष वेदीके एक पार्श्वभागमें जगतीका विस्तार है ।

पण्णारस-सहस्रानि, सप्त-सयाद् 'धणूनि पण्णासा ।

अभ्यन्तर-विस्तरंभो, बाहिर-वासो वि तन्मेसो' ॥२१॥

दंड १५७५० ।

अर्थ :—जगतीका अभ्यन्तर विस्तार पन्द्रह हजार सातसौ पचास ( १५७५० ) धनुष है और उसका बाह्य विस्तार भी इतना ही है ॥२१॥

वेदीके दोनों पार्श्वभागोंमें स्थित वन-वापियोंका विस्तारादि—

वेदी-दो-पात्तेसुं, उषवण-संदा' हवसि रमजिज्जा ।

वर-वाधीहिं जुसा, विचिस्त-मणि-गियर-परिपुज्जा ॥२२॥

अर्थ :—वेदीके दोनों पार्श्वभागोंमें श्रेष्ठ वापियोंसे युक्त और अद्भुत मणियोंके सजावटोंसे परिपूर्ण रमणीक उपवन खण्ड है ॥२२॥

ओट्टा दो-सय-संदा', विस्तरंभ-जुवा हवेदि मज्झिमया ।

पण्णासकमहिय-सयं, 'अहण्ण-वासी वि सयमेकं ॥२३॥

व २०० । १५० । १०० ।

१. द. द. क. व. उ'दो । २. द. द. क. व. उ. वंजगुणि । ३. द. द. क. व. वासीवित्तमेसा ।

४. द. संको. व. हुंको, व. संको । ५. द. द. क. व. उ. मुण्णिपार । ६. द. द. क. व. उ. दंको ।

७. अ. अयण ।

नाशिका : १

अन्तर्हीपको जगती सया उसपर स्थित वेनो एवं वेनी के पार्श्वभागमें स्थित शाल्वियोंका प्रमाण

गीता : १५-१७, १६-२१ एवं २३-२४

[illegible]

अर्थ :—उत्कृष्ट वावडियोंका दो सौ ( २०० ) धनुष, मध्यमका एकसौ पचास ( १५० )

धनुष और जघन्यका एकसौ ( १०० ) धनुष प्रमाण विस्तार है ॥२३॥

तिविहाओ<sup>१</sup> बायीओ, निय-हं-व-वर्सस-मेसमवगाडा ।

कस्तहार-कमल-कुबलय-<sup>२</sup>कुमुवामोदेहि परिपुष्का ॥२४॥

२० । १५<sup>४</sup> । १० ।

अर्थ :—कंदव ( सफेद कमल ), कमल, नीलकमल एवं कुमुदोंकी सुगन्धसे परिपूर्ण ये तीनों प्रकारकी सुगन्धियाँ अपने-अपने विस्तारके समस्त भाग ( २० धनुष, १५ धनुष और १० धनुष ) प्रमाण गहरी हैं ॥२४॥

यनोंमें स्थित व्यन्तर देवोंके नगर—

पाधार-‘परिउताइ’, वर-गोउर-वार-तोरणाइ’ पि ।

अवमंतरम्मि भागे, वेतर-वयरणि-रम्मणि ॥२५॥

अर्थ :—वेदीके अव्यन्तर भागमें प्राकारसे बेधित एवं उत्तम गोपुरद्वारों तथा तोरणोंसे संयुक्त व्यन्तरदेवोंके रमणीक नगर हैं ॥ २५ ॥

बेलसंघर-बेधाणं, तस्सि गयराणि होंति रम्मणि ।

अवमंतरम्मि भागे, महोरगाणं च वेति परे ॥२६॥

पाठान्तरम् ।

अर्थ :—वेदीके अव्यन्तर भागमें बेलसंघर देवोंके और उससे आगे महोरग देवोंके रमणीक नगर हैं ॥ २६ ॥

व्यन्तर-नगरोंमें स्थित प्रासाद—

गयरेसुं रमणिउवा, पासादा होंति विविह-विष्णासा ।

अवमंतरं-वेतरया, पाणा-वर-रयण-नियरमया ॥२७॥

विपंत-रयण-बीवा, समंततो विविह-धूव-धड-गुत्ता ।

वज्जमय-वर-कवाडा, वेदी-गोउर-कुमार-संकुत्ता ॥२८॥

अर्थ :—नगरोंमें अव्यन्तर भागमें अत्यवृक्षों सहित, अनेक उत्तमोत्तम रत्नसमूहोंसे निर्मित, चारों ओर प्रदीप्त रत्नदीपकोंवाले, विविध धूपघटोंसे युक्त, वज्रमय श्रेष्ठ कपाटोंवाले, वेदी एवं गोपुर-द्वारों सहित विविध रचनाओंवाले रमणीक प्रासाद हैं ॥ २७-२८ ॥

१. क. उ. तिविहाउ । २. क. उ. बायीउ । ३. क. व. उ. कुमुदी । ४. व. २५ ।

५. व. व. क. उ. परिपुष्का । ६. व. व. क. अवमंतर, व. अवमंतर । ७. व. व. क. व. पूषा ।

सबु प्रासादोंका विस्तारादि—

पणहसरि बाबाणि<sup>१</sup>, उस्तुंभा सय-धनुनि बीह-बुवा ।  
पन्नास-बंड-बंडा, होति अहण्णम्मि पासादा ॥२६॥

। बंड ७५ । १०० । ५० ।

भावार्थ :—अब ज्येष्ठ प्रासादोंमें प्रत्येककी ऊँचाई पणहसरी ( ७५ ) धनुष ऊँची, सौ ( १०० ) धनुष लम्बे और पचास ( ५० ) धनुष प्रमाण विस्तारवाले हैं ॥ २६ ॥

इन प्रासादोंके द्वारोंका विस्तारादि—

पासाब-बुवारैसुं, बारस बाबाणि होति उच्छेहो ।  
पत्तेकं छगगासो, अबगाढं तन्हि बसारि ॥३०॥

बंड १२ । ६ । ४ ।

अर्थ :—इन प्रासादोंके द्वारोंमें प्रत्येककी ऊँचाई बारह ( १२ ) धनुष, विस्तार छह ( ६ ) धनुष और अबगाढ़ ( मोटाई ) चार ( ४ ) धनुष प्रमाण है ॥ ३० ॥

पणवीसं बोणि सया, उच्छेहो होदि छेहु-पासादे ।  
दोहं ति-सय-धनुणि<sup>२</sup>, विहस्स सडं च विक्खंभं ॥३१॥

बंड २२५ । ३०० । १५० ।

अर्थ :—ज्येष्ठ प्रासादोंमें प्रत्येककी ऊँचाई दो सौ पच्चीस ( २२५ ) धनुष, लम्बाई तीन सौ ( ३०० ) धनुष और विस्तार लम्बाईसे आधा अर्थात् एक सौ पचास ( १५० ) धनुष प्रमाण है ॥ ३१ ॥

ज्येष्ठ प्रासादोंके द्वारोंका विस्तारादि—

ताण बुवारुच्छेहो<sup>३</sup>, वंडा छत्तीस<sup>४</sup> होदि पत्तेकं ।  
अट्ठारस विक्खंभो, बारस पियमेज अबगाढं ॥३२॥

बंड ३६ । १८ । १२ ।

अर्थ :—ज्येष्ठ प्रासादोंके द्वारोंमें प्रत्येक द्वारकी ऊँचाई नियमसे छत्तीस ( ३६ ) धनुष, विक्कम्भ अठारह ( १८ ) धनुष और अबगाढ़ बारह ( १२ ) धनुष प्रमाण है ॥ ३२ ॥



मध्यम प्रासादोंका विस्तारादि—

सज्जिम-प्रासादार्ण, हुबेवि उबवी दिवहुठ-सय-वह ।  
होणि सय वीहस, पलोक्क एक-सय-वह ॥३३॥

दंड १५० । २०० । १०० ।

अर्थ :—मध्यम प्रासादोंमें प्रत्येककी ऊँचाई डेढ़सौ ( १५० ) धनुष, लम्बाई दोसौ ( २०० ) धनुष और चौड़ाई एक सौ ( १०० ) धनुष प्रमाण है ॥ ३३ ॥

मध्यम प्रासादोंके द्वारोंका विस्तारादि—

खरबीस चावाणि, ताम बुबारेसु होवि उब्बोहो ।  
बारस गहु कसेण, बडा विस्तार-अवगाढा ॥३४॥

दंड २४ । १२ । ८ ।

अर्थ :—इन प्रासादोंमें प्रत्येक द्वारकी ऊँचाई चौबीस धनुष, विस्तार बारह धनुष और अवगाढ़ आठ धनुष प्रमाण है ॥ ३४ ॥

व्यन्तर नगरोंका विशेष वर्णन—

सामान्य-खेत-कवली, गम्भ-सदा-नाट-आसन-गिहाओ ।  
गेहा होति विविता, बेंतर-मयरेसु रम्मयरा ॥३५॥

अर्थ :—व्यन्तरनगरोंमें सामान्यगृह, शैत्यगृह, कदलीगृह, गर्भगृह, मतागृह, नाटकगृह और आसनगृह, ये नानाप्रकारके रम्य गृह होते हैं ॥ ३५ ॥

मेहुण-मंडण-ओला-बंदण-अभितेय-कल्लजार्ण पि ।  
काणाविह-सालाओ चर-रयण-विभिम्मिदा होति ॥३६॥

अर्थ :—( उन नगरोंमें ) उत्तम रत्नोंसे निर्मित मेथुनशाला, मण्डनशाला, ओलाशाला, वन्दनशाला, अभियेकशाला और नृत्यशाला, इसप्रकार नानाप्रकारकी शालाएँ होती हैं ॥ ३६ ॥



प्रासादोंमें अवस्थित आसन—

करि-हरि-सुक-मोराजं, मयूर-वालाजं गरुड-हंसाजं ।

सारिच्छादं तैसु, रश्मेसु आसनाणि वेष्टुंते ॥३७॥

अर्थ :—उन रमणीय प्रासादोंमें हाथी, सिंह, शुक, मयूर, मगर, व्याल, गरुड और हंसके सहस्र ( आकारवाले ) आसन रखे हुए हैं ॥ ३७ ॥

प्रासाद स्थित शय्याएँ—

वह-रयण-विरइहाणि, विविक्त-सयनाणि मण्ड-प्रासादं ।

रेहंति मंविरेसु, वोधास-ठिबोधधानाणि ॥३८॥

अर्थ :—महलोंमें उत्तम रत्नोंसे निमित्त, मृदुल स्पर्शवाली और दोनों पार्श्वभागोंमें तकियोंसे युक्त विविध शय्याएँ शोभायमान हैं ॥ ३८ ॥

व्यन्तर देवोंका स्वरूप—

प्राप्त्यर्थं ध्वं विविक्त-सयनाणि, मण्ड-प्रासादं सुगन्धमय-निश्वाससा ।

वह-विविह-भूतनधरा, रश्मि-मंडल-सरित-मण्ड-सिरा ॥३९॥

रोग-जरा-परिहीणा, प्रत्येकं दस-धनुषि उत्सुंगा ।

वेतर-वेधा तैसु, सुहेण कीर्तिं सज्जंदा ॥४०॥

अर्थ :—स्वर्ण सहस्र निलेप, निरंतर कान्तिके धारक, सुगन्धमय निश्वाससे युक्त, उत्तमोत्तम विविध आभूषणोंको धारण करनेवाले, सूर्यमण्डलके समान अष्ट मुकुट धारण करनेवाले, रोग एवं जरासे रहित और प्रत्येक दस धनुष ऊँचे व्यन्तर वेध उन नगरोंमें सुखपूर्वक स्वच्छन्द क्रीड़ा करते हैं ॥ ३९-४० ॥

व्यन्तर नगर अकृत्रिम हैं—

जिनमंविह-जुतादं, विविक्त-विष्णास-भवन-पुष्पादं ।

सर्वं अकृत्रिमाह, वेतर-ध्वराणि रेहंति ॥४१॥

अर्थ :—जिनमन्दिरोसे संयुक्त और विविध रचनावाले भवनोंसे परिपूर्ण वे अकृत्रिम व्यन्तर-नगर सदैव शोभायमान रहते हैं ॥ ४१ ॥

अम्बूद्वीपके विजयादिक चार द्वारोंका निरूपण—

विजयंत-वेजयंत, <sup>१</sup>अवंत-अवररजियं च नामेहि ।

चत्तारि दुबाराहं, अंबूद्वीपे चउ-विसासुं ॥४२॥

अर्थः—अम्बूद्वीपकी चारों दिशाओंमें विजयन्त ( विजय ), वेजयन्त, जयन्त और अपराजित नामवाले चार द्वार हैं ॥ ४२ ॥

पुष्प-विसाए विजयं, दक्षिण-प्राप्ताए बहुजयंतग्नि ।

अवर-विसाए जयंतं, <sup>२</sup>अवरान्जितमज्जामाए ॥४३॥

अर्थः—विजयद्वार पूर्व दिशामें, वेजयन्त दक्षिण दिशामें, जयन्त पश्चिम दिशामें और अपराजित द्वार उत्तर दिशामें है ॥ ४३ ॥

एवाणं दाराणं, परोक्कं अट्ट ज्ञोयणा उदओ ।

<sup>३</sup>उच्छेह्मदं दं, होदि पवेसो वि वास-समो ॥४४॥

८ । ४ । ४ ।

अर्थः—इन द्वारोंमेंसे प्रत्येक द्वारकी ऊँचाई आठ योजन, विस्तार ऊँचाईसे आधा ( चार योजन ) और प्रवेश भी विस्तारके सदृश चार योजन प्रमाण है ॥ ४४ ॥

वर-वज्ज-कबाड-जुवा, णाणाविह-रयण-वाम-रमणिज्जा ।

<sup>४</sup>णिक्का रक्षितज्जते, बेतर-वेवेहि चउबारा ॥४५॥

अर्थः—वज्रमय उत्तम कपाटोंसे संयुक्त और नानाप्रकारके रत्नोंकी मालाओंसे रमणीय ये चारों द्वार व्यन्तर देवीसे सदा रक्षित रहते हैं ॥ ४५ ॥

द्वारों पर स्थित प्रासादोंका निरूपण—

वारोवरिमणसे, परोक्कं होंति दार-प्रासादा ।

सत्तारह-बुज्जि-जुवा, <sup>५</sup>नाणावरमत्तचारणया ॥४६॥

दिप्पंत-रयण-बीजा, विविस्त-वर-सासभंजि-<sup>६</sup>अत्थंभा ।

<sup>७</sup>धुवंत-वय-वडाया, विविहालेक्खेहि<sup>८</sup> रमणिज्जा ॥४७॥

१. द. प्र. अवं च अपराजयं च, क. उ. जयंत च अपराजयं च । २. द. व. उच्छेह्मदु, क. व. उ. उच्छेह्मदं । ३. उ. एिण्ण । ४. द. वरवत्त, व. वरवत्त । ५. द. क. व. व. अत्थंभा, व. उ. अत्थंभा । ६. द. व. क. व. उ. धुवंत । ७. घ. व. भेदेहि ।

संभंत-रयण-माणा, समंतवोविविह-धूव-यव-जुता ।

वेवच्छराहि भरिवा, पटुं सुप्र-पहुवि-कय-सोहा ॥४८॥

अर्थ :—प्रत्येक द्वारके उपरिम भागमें सत्तरह भूमियोंसे संयुक्त, अनेकानेक उत्तम वरामदोंसे सुशोभित, प्रदीप्त रत्नदीपकोंसे युक्त, नानाप्रकारकी उत्तम पुत्तलिकाओंसे अंकित स्तम्भों-वाले सहलहाती ध्वजा-पताकाओंसे समन्वित, विविध आलेखोंसे रमणीय, सटकती हुई रत्नमालाओंसे संयुक्त, सब ओर विविध धूप घटोंसे युक्त, देवों एवं अप्सराओंसे परिपूर्ण और पट्टांशुक ( रेशमी-वस्त्र ) आदिसे शोभायमान द्वार प्रासाद हैं ॥ ४८-४९ ॥

उच्छेह-वास-पहुविसु, दारकभवणाण केतिया संका ।

तप्परिमाण-यववण-उवाएतो संपहि पणहु ॥४९॥

अर्थ :—द्वार-भवनोंकी ऊँचाई तथा विस्तार आदिका जितना प्रमाण है, उस प्रमाणके प्ररूपणका उपदेश इस समय नष्ट हो चुका है ॥ ४९ ॥

गोपुरद्वारों पर जिनबिम्ब—

सीहासन-छत्तसय-भामदल-चामरादि-रमणिज्जा ।

रयणमया जिन-पडिमा, गोउर-दारेसु रेहंति ॥५०॥

अर्थ :—गोपुर-द्वारोंपर सिंहासन, तीन छत्र, सामण्डल और चामरादिसे रमणीय रत्नमय जिन प्रतिमाएँ शोभायमान हैं ॥ ५० ॥

जम्बूद्वीपकी सूक्ष्म परिधिका प्रमाण—

तत्तिस् वीधे परिही, लक्खणि तिणि सौलस-सहस्सा ।

जोयण-सयाणि बोणि य, सत्तावीसादि-रित्ताणि ॥५१॥

ओ ३१६२२७ ।

पावूणं जोयणयं, अट्टावीसुत्तरं सयं बंदा ।

किक्कू-हत्थो एत्थि हु, हवेदि एक्का विहत्थी य ॥५२॥

ओ ३ । वं १२८ । ० । ० । १ ।

१. व. अमंतरयणमाणुसमंतादो, व. क. अ. अमंतरयणमाणुसमंतादो, य. अमंतरयणमाणु सभंतादो विविहवपुडुसो । २. व. व. क. अ. य. दोवच्छराहि । ३. व. क. क. अ. भरिवा । ४. व. य. सोल, व. क. सल । ५. व. छत्ति कुवेदीधं कोविह्वीहं । क. व. एत्थि हवेदी एक्को विह्वीहं । ग. एत्थि हवेदी एक्की विह्वीहं ।

पादद्वाने सुष्णं, अंगुलमेकं तथा जवा पंच ।  
एकको जूवो 'एकका त्रिकं' कम्मविल्लीन छम्मासं ॥५३॥

पा० । अं १ । ज ५ । जू १ । त्रि. १ । ३ क वा ६

सुष्णं जहण्ण-भोगविल्लिए मणिभरुस्स-भोगभूमोए ।  
सत्त च्छिय बासणा, पंचुत्तम-भोग-खोणीए ॥५४॥

० । ७ । ५ ।

एकको तह रहरेणू, तसरेणू तिण्णि णसिय तुद्धरेणू ।  
दो 'त्रि य सञ्जासज्जा, ओसञ्जासज्जिया' वि तिण्णि पुह ॥५५॥

१ । ३ । ० । २ । ३ ।

परमाणू य 'अचंतानंतता संखा हवेवि णियमेण ।  
बोच्छामि सप्पमाणं, 'किस्संवदि विट्ठिपादावो ॥५६॥

अर्थ :—जम्बूद्वीपकी ( सूक्ष्म ) परिधि तीनलाख, सोलह हजार दोसौ सत्ताईस योजन, पादून एक योजन ( तीन कोस ), एकसौ अट्ठाईस धनुष, किल्लू और हाथके स्थानमें शून्य, एक वितस्ति, पादके स्थानमें शून्य, एक अंगुल, पांच जो, एक यूक, एक तीस, कर्मभूमिके छह बाल, जवन्य भोगभूमिके बालोंके स्थानमें शून्य, मध्यम भोगभूमिके सात बालाग्र, उत्तम भोगभूमिके पांच बालाग्र, एक रहरेणू, तीन तसरेणू, तुद्धरेणूके स्थानमें शून्य, दो सप्पासज्ज, तीन अवसप्पासज्ज और अनन्तानन्त परमाणु प्रमाण है । दृष्टिवाद अङ्गसे उसका जितना प्रमाण निकलता है, वह अब कहता है ॥ ५१-५६ ॥

विशेषार्थ :—जम्बूद्वीपका व्यास एक लाख योजन है । इसी अधिकारकी भाषा ६ के नियमानुसार  $\sqrt{१ \text{ लाख} \times १ \text{ लाख} \times १०} =$  परिधि । अर्थात्  $\sqrt{१००००० \times १००००० \times १०} = \sqrt{१०००००००००००} =$  परिधि । इसका वर्गमूल निकालनेपर ३१६२२७ योजन प्राप्त हुए और ३१६२२७ यो० अवशेष रहे । इनके कोस एवं धनुष आदि बनानेके लिए अंशमें क्रमशः कोस तथा धनुष आदिका गुणा कर हरका भाग देते जाना चाहिए । यथा— $\sqrt{१०००००००००००} =$

३१६२२७ योजन ।  $\frac{४८४४७१ \times (४ \text{ कोस})}{६३२४५४} = ३ \text{ कोस} । \frac{४०५२२ \times (२०० \text{ धनु})}{६३२४५४} = १२८ \text{ धनुष}$

$\frac{१८६६३६ \times (८ \text{ स०})}{६३२४५४} = २ \text{ सप्तासन्न और } \frac{२५४५८० \times (८ \times \text{धनु०})}{६३२४५४} =$

३ अवसप्तासन्न प्राप्त हुए । अर्थात् जम्बूद्वीपकी परिधि ३१६२२७ योजन, ३ कोस, १२८ धनुष, ० किष्कू, ० हाथ, १ वितस्ति, ० पाद, १ अंगुल, ५ जौ, १ जू, १ लीख, ६ कर्मभूमिके बाल, ० ज० भो० के बाल, ७ म० भो० के बाल, ५ उत्तम भो० के बाल, १ रघरेणु, ३ त्रसरेणु, ० नुटरेणु, २ सप्तासन्न, ३ अवसप्तासन्न और १३३३३३ लेश प्रमाण है । यह शेष अंश अनन्तानन्त परमाणुओंके स्थानीय है ।

तेजोस सहस्राणि, 'केष्णि सयानि च तेरसं अंशः ।

हारो एकं सखं, पंच सहस्राणि चउ सयानि चवं ॥५७॥

१३३३३३ अंश और गुणितानन्त की संख्या  
१३३३३३। छ ख

अर्थ :—तेरह हजार दोसो तेरह अंश और एक लाख पांच हजार चारसो नौ हार है ॥ ५७ ॥

नोट :—संदृष्टिका छ ख अनन्तानन्तका सूचक है ।

उपर्युक्त अंशका गुणकार—

एवस्संसस्स पुढं, गुणगारो होदि तस्स परिमाणं ।

आज अचंत्तानंतं, परिभास-कमेण उत्पण्णं ॥५८॥

अर्थ :—इस अंशका पृथक् गुणकार होता है । उसका परिमाण परिभाषा क्रमसे उत्पन्न अनन्तानन्त ( संख्या प्रमाण ) जानो ॥ ५८ ॥

विशेषार्थ :—जम्बूद्वीपकी सूक्ष्मपरिधिका प्रमाण योजन, कोस, धनुष आदिमें निकाल लेनेके बाद ( गाथा ५७ के अनुसार ) १३३३३३ अंश अवशेष बचते हैं । इनका गुणकार अनन्तानन्त है । अर्थात् इस अवशिष्ट अंशमें अनन्तानन्त परमाणुओंका गुणा करके पश्चात् परिभाषा क्रमके अनुसार योजन, कोस, धनुष, रिक्कू एवं हाथ आदि से लेकर अवसप्तासन्न पर्यन्त प्रमाण निकाल

लेने के बाद अवशिष्ट (  $३१६१३३३$  ) राशि अनन्तानन्त परमाणुओं के स्थानीय मानी गई है। यदि मूल राशि अनन्तानन्त परमाणु स्वरूप न मानी जाय तो अवशिष्ट अंश को अनन्तानन्त स्वरूप नहीं कहा जा सकता। इसीलिए गाथा में "एदस्संसस्स पुढं गुणगारा ..... अणंतानंतं" ..... कहा गया है।

जम्बूद्वीपके क्षेत्रफलका प्रमाण—

~~अंक-कमे~~ ~~जोयणया,~~ ~~जम्बूद्वीपस्स~~ ~~सेसफलं~~ ॥५६॥

अंक-कमे जोयणया, जम्बूद्वीपस्स सेसफलं ॥५६॥

। ७६०५६६४१५० ।

अर्थ:—शून्य, पांच, एक, चार, नौ, छह, पांच, शून्य, नौ और सात, अंकोंको क्रमसे रखनेपर जितनी संख्या हो उतने योजन प्रमाण जम्बूद्वीपका क्षेत्रफल निकलता है ॥५६॥

विशेषार्थ:—“विकल्मभ-चउन्नागप्पहदा सा होदि सेसफलं” गा० ६ अधिकार ४। अर्थात् परिधिको व्यासके चतुर्धासे गुणा करने पर वृत्तक्षेत्रका क्षेत्रफल निकल आता है।

जम्बूद्वीपका व्यास १ लाख योजन और परिधि  $३१६२२७६६३३३३३$  योजन प्रमाण है। अतः गाथा ६ के अनुसार  $३१६२२७६६३३३३३ \times ०.०००० = ७६०५६७५०००$  योजन अर्थात्  $७६०५६६४१५०$  योजन जम्बूद्वीपका क्षेत्रफल हुआ। इस गाथामें केवल  $७६०५६६४१५०$  योजन दर्शाये गये हैं शेष योजनों के कोस एवं धनुष आदि आगे दर्शाये जा रहे हैं।

एक्को कोसो दंडा, सहस्समेवकं हवेदि पंच-सया ।

सेवणाए सहिवा, किक्क-हत्थेसु<sup>१</sup> सुण्णाहं ॥६०॥

को १ । द० १५५३ । ० । ० ।

एक्का होदि बिहत्थो, सुण्णं<sup>२</sup> पादस्मि अंगुलं एक्कं ।

जज्ज-एक्क-सिय जूवा, तिक्खिजाओ तिज्जि जाइव्वा ॥६१॥

१ । ० । १ । ६ । ३ । ३ । १ ।





**अर्थः**—अड़तालीस हजार चार सौ पचपन अंश और एक लाख पांच हजार चारसौ नौ हार है ॥६५॥

**विशेषार्थः**—जम्बूद्वीपकी परिधि को व्यास से गुणित कर योजन, कोस, धनुष ..... सन्नासम्न और धवसन्नासम्न पर्यन्त क्षेत्रफल निकाल लेनेके बाद ४५६६५३ राशि अवशेष रहती है जो अनन्तानन्त परमाणुओंके स्थानीय है ।

यामिज्जहोस ... आध्यात्मी सीं ह्युदिदितामसं जीं म्हात्ताज

उपयुक्त अंशका गुणकार—

एवस्ससस्स पुवं, गुणगारो होवि तस्स परिमाणं ।

एत्थ अणंतारणं, परिभास-कमेण उप्यणं ॥६६॥

**अर्थः**—इस अंशका पृथक् गुणकार होता है । उसका परिमाण परिभाषा क्रमसे उत्पन्न यह अनन्तानन्त प्रमाण है ॥६६॥

**विशेषार्थः**—जम्बूद्वीपके सूक्ष्म क्षेत्रफलका प्रमाण योजन, कोस, धनुष आदि में निकाल लेने के बाद ( गा० ६४ के अनुसार ) ४५६६५३ अंश अवशिष्ट रहते हैं । इनका गुणकार अनन्तानन्त है । ( श्रेष्ठ विशेषार्थ गाथा ५८ के विशेषार्थ सहस्र ही है । )

विजयादिक द्वारोंका अन्तर प्रमाण—

सोसस-ओयण-हीणे, जंबूवीवस्स परिहि-मज्झस्मि ।

हारंतर-परिमाणं, चउ-भजिरे होवि अं लद्धं ॥६७॥

**अर्थः**—जम्बूद्वीपकी परिधिके प्रमाणमेंसे सोलह योजन कम करके जेवमें चारका भाग देनेपर जो लब्ध आवे वह द्वारोंके अन्तरालका प्रमाण है ॥६७॥

जगवी-बाहिर-भागे<sup>१</sup>, दारणं होवि अंतर-पमाणं ।

उज्जसीदि-सहस्साणि, बावण्णा ओयणाणि अदिरेगा<sup>२</sup> ॥६८॥

७६०५२ ।

सप्त सहस्त्राणि ध्वज, पञ्च-सयानि च ह्येति बत्तीसं ।

तिष्णि-भित्तय 'पञ्चानि, तिष्णि जवा किञ्चिद्विरिस्ता' ॥६६॥

घ ७५३२ । अं ३ । जो ३ ।

अर्थः—जगतीके बाह्य-भागमें द्वारोंके अन्तरालका प्रमाण उन्पासी हजार बावन ( ७६०५२ ) योजनसे अधिक है । ( इस अधिकका प्रमाण ) मूल हज्जार, पाँचसौ, बत्तीस ( ७५३२ ) धनुष, तीन अंगुल और कुछ अधिक तीन जो है ॥६६—६९॥

विशेषार्थः—(गाथा ५१ से ५६ पर्यन्त) जम्बूद्वीपकी परिधि ३१६२२७ योजन, ३ कोस, १२८ धनुष आदि कही गई है । इसमेंसे १६ योजन [ जगतीमें चार द्वार हैं और प्रत्येक द्वार चार योजन चौड़ा है ( गा० ४४ ), अतः १६ यो० ] घटाकर चारका भाग देने पर जगतीके बाह्य भागमें द्वारोंके अन्तरालका प्रमाण प्राप्त होता है । यथा— $\frac{316227 - 16}{4} = 79042$  योजन, ३ योजन अवशेष ।  $\frac{3 \text{ यो०} \times (४ \text{ को०}) + ३}{४} = ३ \text{ कोस, अवशेष } ३ \text{ कोस} । \frac{(३ \times २००० \text{ ध०}) + १२८}{४} = १५३२ \text{ धनुष}$  अर्थात् ३ कोस १५३२ धनुष या ७५३२ धनुष, ० रिक्कू, ० हाथ, ० वितस्ति, ० पाद, ३ अंगुल, ३ जो, २ जू, २ लीक, ३ कर्मभूमिके बाल, ४ अ० भो० के बाल, १ य० भो० का बाल, ७ उ० भो० के बाल, २ रक्षरेणु, २ वस०, ६ शूटरेणु, ० सन्नासत्र एवं ४३ अवसन्नासत्र आदि द्वारोंके अन्तरालमें अधिकका प्रमाण है ।

जगतीके अभ्यन्तरभागमें जम्बूद्वीपकी परिधि—

जगती-अभ्यन्तरए, परिही लक्ष्माणि तिष्णि जेययाया ।

सोत्तस<sup>१</sup>-सहस्स-इमि<sup>२</sup>-सय-जादण्णा ह्येति किञ्चूणा ॥७०॥

३१६१५२ ।

अर्थः—जगतीके अभ्यन्तर भागमें जम्बूद्वीपकी परिधि तीन लाख सोलह हजार एकसौ बावन ( ३१६१५२ ) योजनसे कुछ कम है ॥७०॥

विशेषार्थः—गाथा १६ में जगतीका मूल विस्तार १२ योजन कहा गया है । जो दोनों ओरका (  $१२ \times २ =$  ) २४ योजन हुआ । इन्हें एक लाख व्यासमेंसे घटा देनेपर ६६६७६ यो० प्राप्त हुए ।

१. द. पंचाणि । २. क. उ अविरिस्ता, ज. अधिरिस्ता, य. अविरिस्ता । ३. क. लोस, य. लोसइ ।

अर्थात् यह जगती का अभ्यन्तर व्यास कृष्ण । इसकी सूक्ष्म परिधि निकालने पर—३१६१५१ योजन, ३ कोस, ९७० धनुष, १ रिक्कू, १ हाथ, ० वि०, १ पाद और २३३३३३३ अंगुल प्राप्त होते हैं, इसीलिए गाथामें परिधिका प्रमाण कुछ कम ३१६१५२ योजन कहा गया है ।

अभ्यन्तर-भागमें द्वारोंके अन्तरालका प्रमाण उन्वासी हजार बीतीस

जगती-अभ्यन्तर, द्वारार्ण होवि अन्तर-वमाण ।

उणसीवि-सहस्राणि, चउतीस जोयजाणि किचूण ॥७१॥

७६०३४ ।

अर्थ :—जगतीके अभ्यन्तर-भागमें द्वारोंके अन्तरालका प्रमाण उन्वासी हजार बीतीस ( ७६०३४ ) योजनसे कुछ कम है ॥७१॥

विशेषार्थ :—जम्बूद्वीपकी जगतीके अभ्यन्तर भागमें परिधिका प्रमाण कुछ कम ३१६१५२ योजन अर्थात् ३१६१५१ योजन, ३ कोस, ९७० ध०, १ रिक्कू, १ हाथ, ० वि०, १ पाद और २३३३३३३ अंगुल कहा गया है । द्वारोंका विस्तार ४-४ योजन है, अतः अभ्यन्तर परिधिके प्रमाणमेंसे १६ यो० घटाकर चारका भाग देने पर कुछ कम ७६०३४ योजन अर्थात् ७६०३३ यो०, ३ कोस, १७४२ धनुष, १ रिक्कू, ० हाथ, १ वि०, ० पाद और ५३३३३३३ अंगुल प्रत्येक द्वारके अन्तरालका प्रमाण है ।

जीवाके वर्ग एवं धनुषके वर्गका प्रमाण—

विष्कम्भ-कदीओ, बिगुणा बट्टे दिसंतरे दोवे ।

जीवा-वगो धनु-गुण-चउ-भजिबे होवि 'धनु-करणो ॥७२॥

अर्थ :—विष्कम्भके आधेके वर्गका दुगुना, वृत्ताकार द्वीपकी चतुर्थांश परिधिरूप धनुषकी जीवाका वर्ग होता है । इस वर्गको पाँचसे गुणाकर चारका भाग देनेपर धनुषका वर्ग होता है ॥७२॥

विशेषार्थ :—जम्बूद्वीपकी जगतीकी चारों दिशाओंमें एक-एक द्वार है । एक द्वारसे दूसरे द्वार तकका क्षेत्र धनुषाकार है, क्योंकि पूर्व या पश्चिम द्वारसे दक्षिण एवं उत्तर द्वार पर्यन्त जगतीका जो आकार है वह धनुष सदृश है और अभ्यन्तर भागमें एक द्वारसे दूसरे द्वार पर्यन्तके क्षेत्रका आकार धनुषकी डोरी अर्थात् जीवा सदृश है ।

जम्बूद्वीपका विष्कम्भ १००००० योजन प्रमाण है, इसके अर्धभागके वर्गका दुगुना करने पर जो लब्ध प्राप्त होता है, वही द्वीपकी अनुयास परिधिरूप जीवाके वर्गका प्रमाण है तथा इस वर्गका वर्गमूल जीवाका प्रमाण है। जीवाके वर्गको पाँचसे गुणितकर चारका भाग देनेपर धनुषका वर्ग और इसका वर्गमूल धनुषका प्रमाण है।

जीवा और धनुषका यह प्रमाण ही द्वारोंके अन्तरालका प्रमाण है जो गाथा ७३-७४ में दर्शाया जाएगा।

जीवाके वर्गका एवं जीवाका प्रमाण—

$( १००००० = ५०००० )^2 \times २ = ५०००००००००$  जीवाका वर्ग।  $\sqrt{५००००००००००} = ७०७१०$  योजन, २ कोस, १४२४ धनुष, १ रिक्तू, १ हाथ, १ वि०, १ पाद और ३६६६६ अंगुल जीवा का प्रमाण है।

धनुषका वर्ग और धनुषका प्रमाण—

$५०००००००००० \div २ = २५००००००००$  धनुषके वर्गका प्रमाण।  $\sqrt{२५०००००००००} = ७०७१६$  योजन, ३ कोस एवं १४२४ धनुष अथवा ७०७१६ योजन और ७४३२४ धनुष, धनुषका प्रमाण है।

नोट :- गाथा ७४ का विशेषार्थ दृश्य है।

विजयादिक द्वारोंके सीधे अन्तरालका प्रमाण—

सत्तरि-सहस्र-जोमण, सप्त-सया दस-बुबो य अदिरिस्तो :

जगदी-अबमंतराए, वाराणं रिखु-सरख-चिख्यालं' ॥७३॥

जो ७०७१० ।

अर्थ :- जगतीके अन्तरभागमें द्वारोंका ऋजु स्वरूप अर्थात् सीधा अन्तराल सत्तर हजार, सातसी दस योजनोंसे कुछ अधिक है ॥७३॥

विशेषार्थ :- यहाँ ७०७१० योजनसे कुछ अधिकका प्रमाण २ कोस, १४२४ धनुष, १ रिक्तू, १ हाथ, १ वि०, १ पाद और ३६६६६ अंगुल है।

उपसीबि-सहस्ताबि, छप्पणा ओयबाबि बंदाई ।

सस-सहस्ता पण-सय-बसीसा होति किचूणा' ॥७४॥

जो ७९०५६ । दं ७५३२ ।

सर्गः—विजयादि द्वारोंका अन्तराल उन्नासी हजार, छप्पन योजन और सात हजार पाँचसौ बत्तीस धनुष है जो कुछ कम है ॥७४॥

विशेषार्थः—जम्बूद्वीपकी परिधि के ३ भागका प्रमाण ही द्वारोंके अन्तरालका प्रमाण है । जो ७९०५६ योजन, ३ कोस १५३२४३६६ धनुष है । अर्थात् द्वारोंका अन्तराल ७९०५६ योजन, ७५३२ धनुष, रिक्कू ०, हाथ ०, बि० ०, पाद १, अंगुल १ और जो ४३५३६ प्रमाण प्राप्त हो रहा है । किन्तु गाथा में 'किचूणा' पद दिया है, जन्मि अन्तरालका प्रमाण ७९०५६ यो० ७५३२ धनुषसे कुछ अधिक प्राप्त हो रहा है । अतएव "किचूणा" शब्दसे यह बोध लिया जाये कि गाथा में दिया हुआ माप यथार्थ मापसे कुछ कम है ।

[ तालिका अगले पृष्ठ पर देखिये ]

तालिका : ३

## जम्बूद्वीपकी परिधि, क्षेत्रफल तथा द्वारोंके अन्तरका प्रमाण

| क्र० | प्रमाण (माप)    | जम्बूद्वीपकी<br>सूक्ष्म परिधि<br>मा० ३१-३६ | जम्बूद्वीपका<br>सूक्ष्म क्षेत्रफल<br>मा० ३९-६४ | वास्तवभागमें<br>क्षेत्रफल<br>द्वारोंका अंतर<br>मा० ६८-६९ | जगतीके<br>अध्यन्तर<br>भागमें जम्बू-<br>द्वीपकी परिधि<br>मा० ७० | अध्यन्तर<br>भागमें द्वारों<br>का अन्तराल<br>मा० ७१ | जीवाका<br>प्रमाण<br>अथवा<br>द्वारोंका<br>सीमा अन्तर<br>मा० ७२-७६ | जमुषका<br>प्रमाण<br>अथवा<br>द्वारोंका<br>अन्तराल<br>मा० ७७-७४ |
|------|-----------------|--------------------------------------------|------------------------------------------------|----------------------------------------------------------|----------------------------------------------------------------|----------------------------------------------------|------------------------------------------------------------------|---------------------------------------------------------------|
| १    | मोजल            | ३१६२२७                                     | ७९०५६६४-                                       | ७९०५२                                                    | ३१६१५१                                                         | ७६०६३                                              | ७०७१०                                                            | ७९०६६                                                         |
| २    | कोल             | ३                                          | १                                              | ३                                                        | ३                                                              | ३                                                  | २                                                                | ३                                                             |
| ३    | जमुष            | १२८                                        | १५५३                                           | १२३२                                                     | ६७०                                                            | १७४२                                               | १४२४                                                             | १५६२                                                          |
| ४    | रिक्कू          | ०                                          | ०                                              | "                                                        | १                                                              | १                                                  | १                                                                | ०                                                             |
| ५    | हाथ             | "                                          | "                                              | ०                                                        | १                                                              | ०                                                  | १                                                                | ०                                                             |
| ६    | बिगस्त          | १                                          | १                                              | ०                                                        | ०                                                              | १                                                  | १                                                                | ०                                                             |
| ७    | पाद             | ०                                          | ०                                              | ०                                                        | १                                                              | "                                                  | १                                                                | १                                                             |
| ८    | अंगुल           | १                                          | १                                              | ३                                                        | २                                                              | ५                                                  | ३                                                                | १                                                             |
| ९    | औ               | ५                                          | ६                                              | ३                                                        | ०                                                              | ०                                                  | ४                                                                | ४                                                             |
| १०   | जु              | १                                          | ३                                              | २                                                        | १                                                              | ०                                                  | ७                                                                | २                                                             |
| ११   | मील             | १                                          | ३                                              | २                                                        | ३                                                              | २                                                  | ७                                                                | ३                                                             |
| १२   | कर्मभू-के बालाघ | ६                                          | २                                              | ६                                                        | ६                                                              | ७                                                  | ४                                                                | ६                                                             |
| १३   | अ० के बालाघ     | ०                                          | ७                                              | ४                                                        | ४                                                              | ५                                                  | २                                                                | ७                                                             |
| १४   | म० के बालाघ     | ७                                          | ३                                              | १                                                        | ४                                                              | १                                                  | ३                                                                | १                                                             |
| १५   | ज० के० बा०      | ५                                          | ७                                              | ७                                                        | ७                                                              | १                                                  | ५                                                                | ७                                                             |
| १६   | रथीजु           | १                                          | ४                                              | २                                                        | ५                                                              | ७                                                  | २                                                                | ४                                                             |
| १७   | नमरेजु          | ३                                          | २                                              | २                                                        | १                                                              | ३                                                  | १                                                                | ५                                                             |
| १८   | जुटरेजु         | ०                                          | ३                                              | ६                                                        | ४                                                              | ६                                                  | २                                                                | ४                                                             |
| १९   | सभासक           | २                                          | ७                                              | ०                                                        | ०                                                              | ०                                                  | १                                                                | ४                                                             |
| २०   | अवतजा०          | ३                                          | १                                              | ४३                                                       | २                                                              | ०                                                  | ३                                                                | ७                                                             |
| २१   | सेव             | १०५३१३                                     | १०५५५५                                         | ×                                                        | १३००३६                                                         | १३३६३३                                             | १५३३                                                             | १३३३                                                          |

मतान्तरसे विजयादि द्वारोंका प्रमाण—

विजयादि द्वारानं, पंच-सया जोयनाणि बिस्थारो ।

पत्तेकं उच्छेहो, सप्त सयानि च पञ्चासा ॥७५॥

जो ५०० । ७५० ।

अर्थ :—विजयादिक द्वारोंमेंसे प्रत्येकका विस्तार पाँचसौ ( ५०० ) योजन और ऊँचाई सातसौ पचास ( ७५० ) योजन प्रमाण है ॥७५॥

नोट :—इसी अधिकारकी गाथा ४४ में विजयादिक द्वारोंमेंसे प्रत्येकका विस्तार चार योजन प्रमाण और ऊँचाई ८ योजन प्रमाण कही गयी है ।

मतान्तरसे द्वारोंपर स्थित प्रासादोंका प्रमाण—

द्वारोपरिम-घराणं, दूबो दो जोयनाणि पत्तेकं ।

उच्छेहो चत्वारि, केई एवं परुबेति ॥७६॥

जो २ । ४ ।

पाठान्तरम् ।

अर्थ :—द्वारोंपर स्थित प्रासादों ( घरों ) में से प्रत्येकका विस्तार दो योजन और ऊँचाई चार योजन प्रमाण है, ऐसा भी कितने ही आचार्य प्ररूपण करते हैं ॥७६॥

पाठान्तर ।

नोट :—इसी अधिकारकी गा० २६ से ३४ पर्यन्त प्रासादोंके विस्तार आदिका प्रमाण इससे भिन्न कहा गया है ।

द्वारोंके अधिपति देवोंका निरूपण—

एवेसि दारानं, अहिबइ-वेवा<sup>१</sup> हवति<sup>२</sup> बेंतरया ।

जं नामा ते दारा, तं नामा ते वि<sup>३</sup>बिक्खावा ॥७७॥

अर्थ :—इन द्वारोंके अधिपति देव व्यन्तर होते हैं । जिन नामोंके वे द्वार हैं उनके अधिपति व्यन्तरदेव भी उन्हीं नामोंसे प्रसिद्ध होते हैं ॥७७॥

१. क. उ. व्यकवति, ग. पकवति, घ. परुबति । २. द. व. क. ज. य. उ. वेथी । ३. द. व. क. ज. य. उ. बितरया । ४. द. रिक्खावे, क. उ. रक्खावे, ग. ज. रक्खादी ।



द्वाराधिपति देवोंकी आयु आदिका निर्देश—

एक-पत्निदोषमाऊ, दस-दंड-समान-तुंग-वर<sup>१</sup>-देहा ।

दिव्यामल-मण्ड-धरा, सहिदा<sup>२</sup> 'देवी - सहस्तेहि<sup>३</sup> ॥७८॥

अर्थ :—ये देव एक पत्न्योपम आयुवाले; दस-धनुष प्रमाण उन्नत, उत्तम शरीरवाले; दिव्य निर्मल सुकुटके धारण करने वाले और हजारों देवियों सहित होते हैं ॥७८॥

विजयदेवके नगरका वर्णन—

वारस्त उवरि-वेसे, विजयस्त पुरं हवेवि<sup>४</sup> 'गयणम्हि ।

'वारस - सहस्स - जोयण - दोहं<sup>५</sup> तस्सद्ध - बिणलंभं<sup>६</sup> ॥७९॥

१२००० । ६००० ।

अर्थ :—द्वारके उपरिम भागपर आकाशमें आरह हजार ( १२००० ) योजन लम्बा और इससे आधे ( ६००० योजन ) विस्तार वाला विजयदेवका नगर है ॥७९॥

तटवेदीका निरूपण—

वड-गोउर-संजुता, तद्ध-वेदी तम्मि होदि कणयमहं ।

'वरियहासय-चारु, वारोवरि जिण-धरेहि<sup>७</sup> 'रम्मयरा ॥८०॥

अर्थ :—उस विजयपुरमें चार गोपुरोंसे संयुक्त सुवर्णमयी तटवेदी है जो मागी एवं मृद्वानिकाओंसे सुन्दर है और द्वारोंपर स्थित जिन भवनोंसे रमणीय है ॥८०॥

विजयपुरम्मि बिचिस्ता, पासादा बिबिह-रयण-कणयमया ।

समचउरस्ता<sup>८</sup> वीहा, अभेय - संठाण - सोहिस्ता ॥८१॥

अर्थ :—विजयपुरमें अनेक प्रकारके रत्नों और स्वर्णसे निर्मित, समचौरस, विशाल तथा अनेक आकारोंमें सुशोभित अद्भुत प्रासाद हैं ॥८१॥

१. व. व. क. व. य. उ. सरदेहा । २. द. क. ज. उ. देवि । ३. व. व. उ. रमणम्मि, अ. रायरम्मि । ४. द. व. उ. वार सहस्स । ५. व. क. अ. य. उ. उद । ६. द. परिमहासय, क. उ. चरियहासय । ७. द. क. ज. उ. रमकारी ।

कुर्वेवु-संख-ववला, मरगय-ववला सुववण-संकासा ।  
वर-पडमराम-सरिता, विविस्त-ववन्तरा पडरा ॥८२॥

'ओसवण - मंत - मूसण - अभिसेउव्वसि' - मेहुणावीणं ।  
सासाओ विसासाओ, रयण-मईओ विराजंति ॥८३॥

अर्थ :—वे प्रासाद कुन्दपुष्प, चन्द्रमा एवं शंख सहस्र ध्वज, मरकतमणि जैसे ( हस्ति )  
वर्णवाले, स्वर्णके सहस्र ( पीले ), उत्तम पद्मराम मणियोंके सहस्र ( लाल ) एवं बहुतसे अन्य विचित्र  
वर्णों वाले हैं । उनमें अलङ्काराला, मन्त्रशाला, आभूषणशाला, अभिषेकशाला, उत्पत्तिशाला एवं  
भैरुनशाला आदिक रत्नमयी विद्याल भालाएँ शोभायमान हैं ॥८२-८३॥

ते पासावा सखे, विविस्त-वणसंड-मंडणा रम्मा ।  
विप्वंत-रयण-दीवा, वर-मूढ-वडेहि संजुत्ता ॥८४॥  
ससहु-णव-वसाविय-विविस्त-मूमोहि-मूसिवा विउत्ता ।  
'धुव्वंत-यय-वडाया, अकट्टिमा सुदुठु सोहंति ॥८५॥

अर्थ :—वे सब अकृत्रिम भवन विचित्र वन-खण्डोंसे मुशोभित, रमणीय प्रदीप्त रत्नदीपोंसे  
युक्त, श्रेष्ठ मूषपटोंसे संयुक्त; सात, आठ, नौ और दस हत्यादि विचित्र भूमियोंसे विभूषित; विद्याल  
फहराली हुई ध्वजा-पताकाओं सहित विशिष्टतासे शोभायमान हैं ॥८४-८५॥

पास-रस-ववण-वर-भणि-गंधोहि 'बहुविहेहि कर-सरिता ।  
उज्जल-विविस्त-बहुविह' - सयमासण - विवह - संपुण्णा ॥८६॥

अर्थ :—अनेक प्रकारके स्पर्श, रस, वर्ण, उत्तमध्वनि एवं गन्धने जिनको समान कर दिया  
है । अर्थात् इनकी अपेक्षा जो समान है ऐसे वे भवन नाना प्रकारकी उज्ज्वल एवं अद्भुत शब्दों  
एवं आसनोंके समूहसे परिपूर्ण हैं ॥८६॥

१. व. योगसं, क. ज. व. उ. ओसवण, व. पुठनव । २. व. उव्वसि । ३. व. जुत्ततर परवाया ।  
उ. व. पुठत्तर परवाया, क. ज. विसंतरपरवाया, य. विसंतरपरवाया । ४. क. विवेहि, व. विवेहि, घ. विवेहि,  
च. विवेहि । ५. क. विव, ग. य. उ. विव ।

‘एवास्मि गयरवरे, बहुविह-परिवार-परिवर्गो गिण्ण’ ।

देवी-जुत्तो भुंजति, उच्चभोग-सुहाड विजयपुरो’ ॥८७॥

अर्थ :—इस श्रेष्ठ नगरमें अपने अनेक प्रकारके परिवारसे घिरा हुआ विजयदेव अपनी देवियों सहित सदा उच्चभोग सुखोंको भोगता है ॥८७॥

बिन्नेषार्थ :—भोग और उपभोगके भेदसे भोग दो प्रकारके होते हैं । जो पदार्थ एक बार भोगनेमें आते हैं उन्हें भोग कहते हैं, जैसे भोज्य-पदार्थ और जो बार-बार भोगनेमें आते हैं उन्हें उपभोग कहते हैं, जैसे शय्या आदि । देव पर्यायमें उपभोग ही होते हैं क्योंकि उनके फवलाहार आवि नहीं होता ।

अन्य देवोंके नगर—

एवं अबसेसाणं, वेवारणं पुरवराणि रम्मानि ।

द्वारोच्चरिभ-पदेसे’, जहम्मि जिनभवन-असाणि ॥८८॥

अर्थ :—इसीप्रकार अन्य द्वारोंके ऊपरके प्रदेशमें धर्मात् ऊपर आकाशमें जिनभवनोति युक्त अवशिष्ट देवोंके रमणीय उत्तम नगर हैं ॥८८॥

जगतीके मध्यन्तर-भागमें स्थित वनखण्डोंका वर्णन—

जगवीए अबभंसरभालो’ वे-कोस-वास-संजुसा ।

भूमिसले वनसंढा’, वर-‘तक-गियरा बिराजंति ॥८९॥

अर्थ :—जगतीके मध्यन्तरभागमें पृथिवीतलपर दो कोस विस्तारसे युक्त और उत्तम वृक्षोंके समूहोंसे परिपूर्ण वनसमूह शोभायमान हैं ॥८९॥

तं उज्जाणं सोयल-छायं वर-सुरहि-कुसुम-परिपुष्णं’ ।

दिव्यामोद-सुगंधं, सुर-सेयर-मिहुण-मण-हरणं ॥९०॥

अर्थ :—शीतल छायासे युक्त, उत्तम सुगन्धित पुष्पोंसे परिपूर्ण और दिव्य सुगन्धसे सुगन्धित वह उद्यान देवों और विद्याधर-युगलोंके मनोंको हरण करने जाता है ॥९०॥

१. द. व. क. ज. य. उ. एवेसि । २. द. परिभदा । ३. द. क. ज. य. उ. विजयपुरी ।

४. द. व. क. ज. उ. पदेसे । य. पदेसो । ५. द. व. क. ज. य. उ. भावो । ६. द. व. क. ज. य. संको ।

७. द. सुगु, व. उगु । ८. द. क. ज. उ. परिपुष्णा, द. परिपुष्णा ।

वन-वेदिकाका प्रमाण—

बे कोसा उच्चिद्धा, उज्ज्वल-वणस्स वेदिया दिक्का ।  
पंस-सय-चाव-दंवा, कंसण-बर-रयण-णियरमई ॥६१॥

॥ जगदी समसा ॥

अर्थः—स्वर्ण एवं उत्तमोत्तम रत्नोंके समूहसे निर्मित उद्यान वनकी दिव्य वेदिका दो कोस ऊँची और पाँचसौ चतुष प्रमाण चौड़ी है ॥६१॥

जगतीका वर्णन अत्यन्त हुआ अत्यन्त श्री सुविशिष्टागत श्री अद्य

जम्बूद्वीपस्थ सात क्षेत्रोंका निरूपण—

तस्सि जंबूदीवे, सत्त-स्सिय होंति जणपवा पवरा ।  
'एवाण विज्जाले, खम्भुल-सेला विराजंते ॥६२॥

अर्थः—उस जम्बूद्वीपमें सात प्रकारके श्रेष्ठ जनपद हैं और इन जनपदोंके अन्तरालमें छह कुलाचल शोभायमान हैं ॥६२॥

वसिष्ठ-विसाए भरहो, हेमवतो हरि-विदेह-रम्मणि ।  
हेरण्यवरेराव - वरिसा कुल - पव्वर्तारिवा ॥६३॥

अर्थः—दक्षिण दिशासे लेकर भरत, हैमवत, हरि, विदेह, रम्यक, हैरण्यवत और ऐरावत क्षेत्र कुलपर्वतोंसे विभक्त हैं ॥६३॥

कप्पतद-धवल-सुत्ता, वर-उज्ज्वल-चासरेहि 'चावतरा ।  
वर-कु'ड-कु'डलेहि, विचिस-रुवेहि रमणिज्जा ॥६४॥  
वर-वेदी-कडिसुत्ता, बहुरयणुज्जल-गिरिइ मज्ज-वरा ।  
सरि-जल-पवाह-हारा, सेल-गरिवा विराजंति ॥६५॥

अर्थः—कल्पवृक्ष रूपी धवल छत्र एवं उत्तम उपवनरूपी चैवरोंसे अत्यन्त मनोहर, अद्भुत सुन्दरतावाले श्रेष्ठ कुण्डरूपी कुण्डलोंसे रमणीय, अनेक प्रकारके रत्नोंसे उज्ज्वल कुलपर्वतरूपी मुकुट,

उत्तम वैदीरूपी कटिसूत्र तथा नदियोंके जलप्रवाहरूपी हारको धारण करनेवाले भरतक्षेत्रादि राजा सुशोभित हैं ॥६४-६५॥

जम्बूद्वीपस्थ कुलाचलोका निरूपण—

हिमवन्त-महाहिमवन्त - निषध-नील-रुक्मी-शिशवी-कुलपर्वत  
मूलोदरि-समवासा, पुष्पावर-जसहि<sup>१</sup> संलग्ना ॥६६॥

एते हेमञ्जुष-तवणिज्जय - वेदलिय - रज्ज्व-हेममया ।  
एक-दु-खउ-खउ-दुग-इति-जोयण-सय-उदय-संजुदा कमसो ॥६७॥

१०० । २०० । ४०० । ४०० । २०० । १०० ।

वर्णः—हिमवान्, महाहिमवान्, निषध, नील, रुक्मी और शिशवी कुलपर्वत मूलमें एवं ऊपर समान विस्तारसे युक्त हैं तथा पूर्वापर समुद्रोंसे संलग्न हैं । ये छहों कुल पर्वत क्रमशः सुवर्ण, चांदी, तपनीय, वैभूर्यमणि, रजत और स्वर्णके सहस्र वर्णवाले तथा एकसौ, दोसौ, चारसौ, चारसौ, दोसौ और एकसौ योजन प्रमाण ऊँचाई वाले हैं ॥६६-६७॥

कुलाचलरूपी राजाके विशेषण—

‘वर-वह-सिद्धावस्था, ‘सरि-चामर-चिक्कमाजया परिधौ ।  
कप्यतद-वार<sup>२</sup> - बिधा, वसुमह<sup>३</sup> - सिंहासनारूढा ॥६८॥  
वर-वेदी-कटिसुता, विविद्रुज्जल-रघण-कूड-मउदधरा ।  
लंबिव - निजभरहारा, चंचल - तद - कुंठलाभरणा ॥६९॥  
गोउर - तिरीट - रम्भा, पायार - सुगंध-कुसुम-वामणा ।  
सुरपुर-कष्ठाभरणा, ‘वण-राजि-बिचिस्त-वत्थ-कयसोहा ॥७०॥  
‘तोरण-कंकण - जुता, ‘वज्र-पणासो-फुरंत<sup>४</sup> - केकरा ।  
जिणवर - भंडिर - तिलया, मूधर - राया विरायंति ॥७१॥

१. द. व. लीसदि । २. व. उ. जलदेहि । ३. द. व. उ. वरदा इतिवा रत्ता । व. ज. क. वरदा हरिदा रत्ता । ४. द. व. क. व. उ. सवि । ५. द. व. क. व. उ. वाचविधा, व. चारविधा । ६. द. व. क. व. उ. वसुहमहो । ७. व. उ. वरराजि । ८. द. व. क. व. प. उ. पारिण । ९. व. वज्रपणासी, य. वज्रपणासा । १०. द. क. व. य. उ. पुरंत ।

**अर्थः**—उत्तम ब्रह्मरूपी सफेद स्रजसे विभूषित; चारों ओर नदीरूपी धामरोसे दीव्यमान, कल्पवृक्षरूपी सुन्दर चिह्नों सहित, पृथिवीरूपी सिंहासनपर विराजमान, उत्तम बेदीरूपी कटिसूत्रसे युक्त, विविध प्रकारके उज्ज्वल रत्नोंके कूटरूपी मुकुटको धारण करने वाले निर्भररूपी सटकते हुए हारसे शोभायमान, चंचल वृक्षरूपी कुण्डलोसे भूषित, गोपुररूप किरीटसे सुन्दर, कोटररूपी सुगन्धित फूलोंकी मालासे अग्रभागमें सुशोभित, सुरपुररूपी कण्ठाभरणसे अभिराम, वनपंक्तिरूप विचित्र वस्त्रोंसे शोभायमान, तोरणरूपी कंकणसे युक्त, वज्र-प्रणालीरूपी स्फुरायमान केयूरों सहित और जिनालयरूप तिलकसे मनोहर, कुलाचलरूपी राजा अत्यन्त सुशोभित हैं ॥१०२-१०३॥

क्षेत्रोंका स्वरूप—

पुष्पावरवो दीहा, सस वि खेत्ता अनादि-विष्णासा ।

कुलभारि-कय-प्रजावा, विस्तिष्णा वसिष्ठजुत्तरवो ॥१०२॥

**अर्थः**—(भरतादि) सातों ही क्षेत्र पूर्व-पश्चिम लम्बे, अनादि-रचना युक्त (अनादि-मिथन), कुलाचलोसे सीमित और वक्षिण-उत्तरमें विस्तीर्ण हैं ॥१०२॥

भरतक्षेत्रका विस्तार—

गउदी-जुद-सव-भजिदे, जंजूबीधस्त वास-परिमाणे ।

जं सयं सं हवं, भरहृक्खेत्तम्मि पावळं ॥१०३॥

**अर्थः**—जम्बूद्वीपके विस्तार प्रमाणमें एकसौ नब्बेका भाग देनेपर जो लब्ध प्राप्त हो उतना भरतक्षेत्रका विस्तार समझना चाहिए ॥१०३॥

क्षेत्र एवं कुलाचलोंकी जलाकाश्रोंका प्रमाण—

भरहृम्मि होदि 'एक्का, तसो बुगुणा य खुत्त-हिमबंते' ।

एवं बुगुणा' बुगुणा, होदि 'सत्ताया विवेहंतं ॥१०४॥

। १ । २ । ४ । ८ । १६ । ३२ । ६४ ।

अस्य' स चिदेहासो, 'नीले नीला तु रम्भगो' होषि ।

एवं अशुद्धाजो, एरावत - सेत - परियंत ॥१०५॥

। ३२ । १६ । ८ । ४ । २ । १ ।

वर्णः—भरतक्षेत्रमें एक शलाका है, सूर्यहिमवान्की हससे दूनी है, इसीप्रकार विदेह क्षेत्र पर्यन्त दूनी-दूनी शलाकाएँ हैं। विदेह से अर्धशलाकाएँ नील पर्वतमें और नीलसे अर्धशलाकाएँ रम्यक क्षेत्रमें हैं। इसीप्रकार ऐरावत क्षेत्र पर्यन्त उत्तरोत्तर अर्ध-अर्ध शलाकाएँ होती गई हैं ॥१०४-१०५॥

वरिसाखीण <sup>३</sup>ससाया, मिलिदे णउदोए अहियमेवक-सयं ।

एता जूती<sup>५</sup> हारस्त मासिवा<sup>६</sup> आणपुखीए ॥१०६॥

उदाहरण :- दोषाधिकोच्ची शालाकायां मिस्रकर कृत्वा ( १, २, ४, ५, १६, ३२, ६४, ३२, १६, ८, ४, २, १ = ) एकसौ नब्बे होती हैं । इसप्रकार अनुक्रमसे यह हार ( भाजक ) की युक्ति बतलाई गई है ॥१०६॥

क्षेत्र एवं कुलान्यसोंका विस्तार—

भाग-भजिवम्ह त्वद्धं, पञ्च-सद्य-दृष्टव्योस-जोयणार्णि<sup>१</sup> पि ।

\*शुचिष्ठय कलाभो कङ्कितो, भरहकसेसम्भि विवसंभो ॥१०७॥

॥ ५३६ ॥

‘वरिसाद् वृग्गुण वङ्गो, अहोदो वृग्गुणिवो परो वरिसो ।

आय विवेकं होवि न, ततो अद्वय-हाणौ ॥१०८॥

१०४२<sup>१२</sup><sub>१६</sub> | २१०४<sup>४</sup><sub>१६</sub> | ४२१०<sup>१०</sup><sub>१६</sub> | ८४२१<sup>१</sup><sub>१६</sub> | १६८४२<sup>२</sup><sub>१६</sub> | ३३६८४<sup>४</sup><sub>१६</sub> |

|         |        |         |        |        |         |
|---------|--------|---------|--------|--------|---------|
| १६८४२ २ | ८४२१ १ | ४२१० १० | २१०४ ४ | १०४२१२ | ४२१० १० |
|---------|--------|---------|--------|--------|---------|

॥ एवं विष्णुनामोऽस्य ॥

१. क. ब. उ. शोको । २. क. ज. घ. उ. रम्मको । ३. ब. उ. जनाया, क. य. दिनाया ।

४. य. ज्ञा। ५. क. न. घ. उ. भासिदी। ६. ६. ओषणुणु। ७. व. ब. क. न. उ. कश्चिह।

८. स. ब. अ. य. त. बरिसाहु हुगुणबन्दी माथीहो । क. बरिसाहु हुगुणबन्दी माथीहो ।

अर्थ:—जम्बूद्वीपके विस्तार ( १००००० यो० ) में एकसौ पन्धेका भाग देनेपर पाँचसौ छत्तीस योजन और छह कला ( ५२६१ $\frac{१}{२}$  यो० ) प्रमाण भरतखेत्रका विस्तार कहा गया है। वर्ष ( क्षेत्र ) से दूना पर्वत और पर्वतसे दूना आयेका वर्ष ( क्षेत्र )। इसप्रकार विदेहक्षेत्र पर्यन्त क्रमशः दूनी-दूनी वृद्धि होती गई है। इसके पश्चात् क्रमशः क्षेत्रसे पर्वत और पर्वतसे आगेके क्षेत्रका विस्तार आधा-आधा होता गया है। ११०७-१०८१।

तालिका : ४

१। इसप्रकार विन्यास समाप्त हुआ ॥

क्षेत्र—कुलाचलोंके विस्तार आदिका विवरण  
( गा० ६७ और १०४-१०८ )

| क्रमांक | नाम        | क्षेत्र/पर्वत | १६०<br>ललाकार | वर्ग   | अंश       |           | विस्तार              |                            |
|---------|------------|---------------|---------------|--------|-----------|-----------|----------------------|----------------------------|
|         |            |               |               |        | योगों में | मीलों में | योगों में            | मीलों में                  |
| १       | भरत        | क्षेत्र       | १             | ×      | ×         | ×         | ५२६१ $\frac{१}{२}$   | २१०५२६१ $\frac{१}{२}$      |
| २       | हिमवान्    | पर्वत         | २             | स्वर्ण | १००       | ४०००००    | १०५२३ $\frac{३}{४}$  | ४२१०५२६१ $\frac{१}{२}$     |
| ३       | ह्रस्ववत्  | क्षेत्र       | ४             | ×      | ×         | ×         | २१०५२ $\frac{१}{२}$  | ८४२१०५२३ $\frac{३}{४}$     |
| ४       | महाहिमवान् | पर्वत         | ८             | चाँदी  | २००       | ८०००००    | ४२१०५ $\frac{१}{२}$  | १६८४२१०५२३ $\frac{३}{४}$   |
| ५       | हरि        | क्षेत्र       | १६            | ×      | ×         | ×         | ८४२१० $\frac{१}{२}$  | ३३६८४२१०५ $\frac{१}{२}$    |
| ६       | निमग्न     | पर्वत         | ३२            | तपनीय  | ४००       | १६०००००   | १६८४२३ $\frac{३}{४}$ | ६७३६८४२१०५ $\frac{१}{२}$   |
| ७       | विदेह      | क्षेत्र       | ६४            | ×      | ×         | ×         | ३३६८४२ $\frac{१}{२}$ | १३४७३६८४२१०५ $\frac{१}{२}$ |
| ८       | नील        | पर्वत         | १२८           | बहुमं  | ४००       | १६०००००   | १६८४२३ $\frac{३}{४}$ | ६७३६८४२१०५ $\frac{१}{२}$   |
| ९       | रम्यवत्    | क्षेत्र       | २५६           | ×      | ×         | ×         | ८४२१० $\frac{१}{२}$  | ३३६८४२१०५ $\frac{१}{२}$    |
| १०      | रुक्मि     | पर्वत         | ५१२           | रजत    | २००       | ८०००००    | ४२१०५ $\frac{१}{२}$  | १६८४२१०५२३ $\frac{३}{४}$   |
| ११      | हिरण्यवत्  | क्षेत्र       | १०२४          | ×      | ×         | ×         | २१०५२ $\frac{१}{२}$  | ८४२१०५२३ $\frac{३}{४}$     |
| १२      | शिखरी      | पर्वत         | २०४८          | स्वर्ण | १००       | ४०००००    | १०५२३ $\frac{३}{४}$  | ४२१०५२६१ $\frac{१}{२}$     |
| १३      | पैरावत्    | क्षेत्र       | ४०९६          | ×      | ×         | ×         | ५२६१ $\frac{१}{२}$   | २१०५२६१३ $\frac{१}{२}$     |



भरतक्षेत्रस्थ विजयार्धपर्वतकी अवस्थिति एवं प्रमाण—

मार्गदर्शिका ... अत्रोत्तरार्धे श्रीं शुद्धिविजयात्मकं श्रीं यद्वास्तवम्

भरतुक्खिन्वि-बहुमवभे, विजयदो गाम भूवरो तुंगो ।

रजदमओ 'बट्टे'वि ह, जाणावर-रयण-रमणिज्जो ॥१०६॥

पणुबीस-जोयणुवओ, 'वुसो तद्वुगुण-भूल-विक्खंभो ।

उदय-तुरिसंस-गाढो, जत्तणिहि-पुट्टो ति-सेदि-मओ ॥११०॥

२५ । ५० । २५ ।

अर्थः—भरतक्षेत्रके बहुमध्यभागमें नानाप्रकारके उत्तम रत्नोंसे रमणीय रजतमय विजयार्ध नामक उन्नत पर्वत विद्यमान है । यह पर्वत पच्चीस ( २५ ) योजन ऊँचा, इससे दूने अर्थात् पचास ( ५० ) योजन प्रमाण भूलमें विस्तार युक्त, ऊँचाईके चतुर्ष भाग प्रमाण ( ६३ यो० ) नीच सहित, पूर्वापर समुद्रको स्पर्श करने वाला और तीन श्रेणियोंमें विभक्त कहा गया है ॥१०६-११०॥

विजयार्धका अवशिष्ट वर्णन—

दस-जोयणाणि उधरि, गंतूणं तस्स वोसु पासेसु ।

विज्जाहराण सेट्ठी, एक्केक्का जोयणाणि दस धंवा ॥१११॥

१० ।

अर्थः—दस योजन ऊपर जाकर उस पर्वतके दोनों पार्श्वभागोंमें दस योजन विस्तार वाली विद्याधरोंकी एक-एक श्रेणी है ॥१११॥

विजयद्वयायामेवं, हवंति विज्जाहराण सेट्ठीओ ।

एक्केक्का 'तववेट्ठी, जाणाविह-सोरजेहि कयसोहा ॥११२॥

अर्थः—विजयार्धके आयाम-प्रमाण विद्याधरोंकी श्रेणियाँ हैं तथा वहाँ नानाप्रकारके तोरणोंसे शोभायमान एक-एक तट वेदिका है ॥११२॥

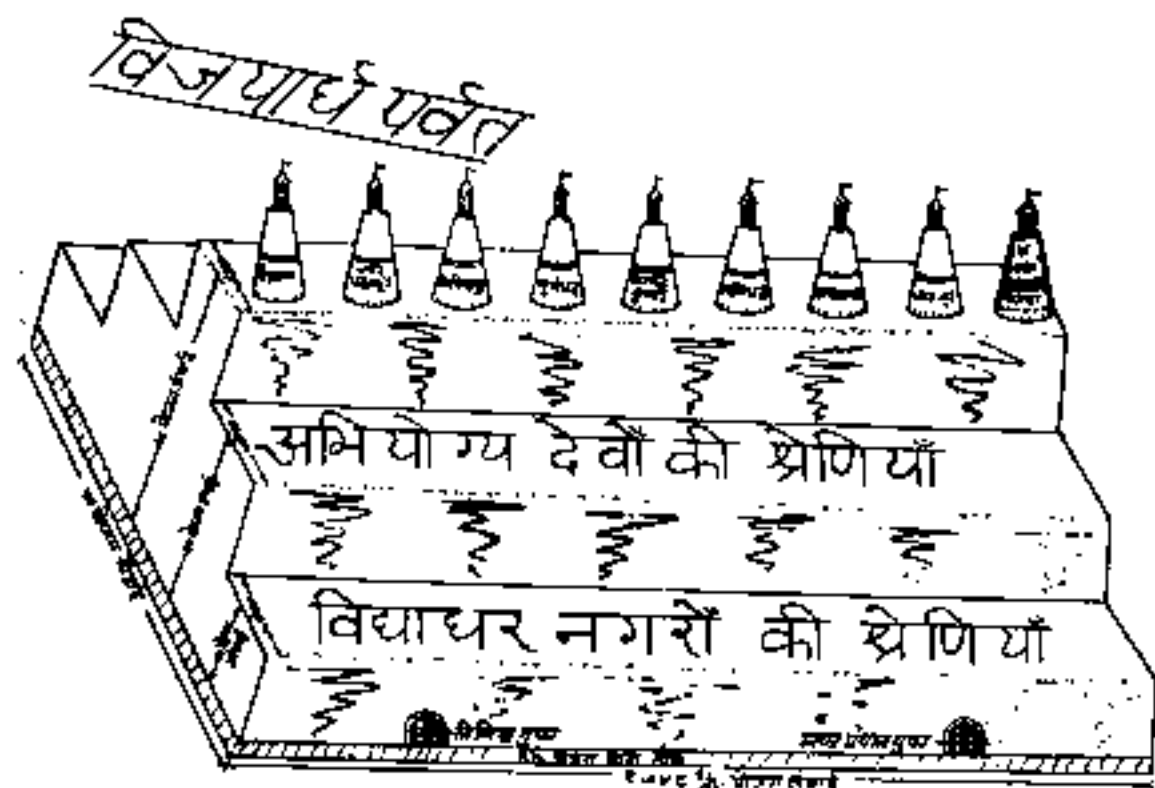
वार्त्तवर्त्तक :- आचार्य श्री सुविजितानगर जी महाराज

दक्षिण-विश-सेडीए, पञ्चास पुराणि पुष्पधर-विशम्भ ।

उत्तर - सेडीए तह, 'अयराणि सद्दि वेदु'ति ॥११३॥

२५०।उ६०।

अर्थ :- पूर्वसे पश्चिम दिशाकी ओर दक्षिण दिशाकी धोलीमें पञ्चास नगर और उत्तर दिशाकी धोलीमें साठ नगर स्थित हैं ॥११३॥



विशेषार्थ :- यह विजयार्ध पर्वत पूर्व-पश्चिम लम्बा है । इसकी कुल ऊँचाई २५ योजन है । इसके दक्षिण दिशा स्थित तट पर विद्याधरोंके ५० नगर और उत्तर दिशागत तट पर ६० नगर स्थित हैं ।

परिचयः :- उपरोक्त स्त्री मुद्रितिलोपण्यत्तो स्त्री यस्यात्  
विजयार्धकी दक्षिण श्रेणी स्थित नगरियोंके नाम—

तन्नामा किणामिद, किणरगीवाह सह य नरगोवं ।  
बहुकेतु - पुण्डरीका, सीहध्वज सेवकेतुहं ॥११४॥

७

गरुडध्वज सिरिध्वज - सिरिधर - लोहगंगा<sup>१</sup> अरिजयकं ।  
<sup>२</sup>बहरगल-बहरगला, विमोक्षिया जयपुरी य सगङ्गमुही ॥११५॥

१०

<sup>३</sup>चतुर्मुह-चतुर्मुह-अरजकलयाणि विरजकल-नाम-विस्तारं ।  
ततो रहगुजर - मेहलग - हेमपुरावरजियया ॥११६॥

८

नामेण कामपुष्पं, गयनचरी विजयचरिय-सुवक्त्रपुरी ।  
तह संजयंत-जयरी, जयंत-विजय<sup>४</sup>-वद्वयंतं च ॥११७॥

८

हेमंकर - चंदाभा, सुराभ - पुस्तमापुराहं<sup>५</sup> पि ।  
विच - महाकूडाहं, सुवक्त्रकूडो तिकूडो य ॥११८॥

८

बह्विस्त -<sup>६</sup>मेहकूडा, ततो बह्वक्त्रकूड - सूरपुरा ।  
चंदं निष्कृज्जोयं, विमुहो सह निष्कृज्जोहिनी सुमुही ॥११९॥

। ११ । ५० ।

अर्थ :-—उन नगरियोंके नाम—<sup>१</sup>किनामित, <sup>२</sup>किणरगील, <sup>३</sup>नरगील, <sup>४</sup>बहुकेतु, <sup>५</sup>पुण्डरीक,  
<sup>६</sup>सिहध्वज, <sup>७</sup>सेवकेतु, <sup>८</sup>गरुडध्वज, <sup>९</sup>श्रीप्रभ, <sup>१०</sup>श्रीधर, <sup>११</sup>लोहगंगा, <sup>१२</sup>अरिजय, <sup>१३</sup>वद्वयंत,

१. द. व. क. ज. य. उ. लोयावला । २. द. व. क. ज. उ. बहरगल बहरगला, क. बहरगल ।  
३. द. व. उ. चतुर्मुह, क. चंदमह, य. य. चतुर्मुह । ४. क. ज. य. उ. विजय । ५. द. व. क. ज. य. उ.  
मुवाह । ६. द. व. क. ज. य. उ. हेमकूडा ।

१० वल्गाडय, ११ विमोचिता, १२ जयपुरी, १३ शकटमुखी, १४ चतुर्मुख, १५ शङ्खमुख, १६ सरजस्का, १७ विरजस्का, १८ रघनूपुर, १९ मेखलापुर, २० क्षेमपुर, २१ अपराजित, २२ काममुख्य, २३ गगनचरी, २४ विजयचरी, २५ शुक्रपुरी, २६ संजयंत नगरी, २७ जयंत, २८ विजय, २९ अजयंत, ३० क्षेमद्वार, ३१ चन्द्राभ, ३२ सूर्याभ, ३३ पुरोत्तम, ३४ चित्रकूट, ३५ महाकूट, ३६ सुवर्णकूट, ३७ त्रिकूट, ३८ विचित्रकूट, ३९ मेघकूट, ४० वैश्रवणकूट, ४१ सूर्यपुर, ४२ चन्द्र, ४३ नित्योद्योत, ४४ विमुखी, ४५ नित्यवाहिनी और ४६ सुमुखी, ये पचास नगरियां दक्षिण थेणो में हैं ॥११४-११६॥

ਅਨੁਸਾਰ : ਅੰਤਰ ਅਤੇ ਬਾਹਰ ਦੋ ਦਿਸ਼ਾਵਾਂ ਵੱਲ ਆਪਣੇ ਆਪਣੇ

एवाओ गधरीओ, पण्णासा वविसणा य सेढोए ।

विजयकुटायामेभं, विरचित पंतोए शिवसंति ॥१२०॥

अर्थ:—दक्षिण थेरणी में ये ( उपर्युक्त ) पचास नगरियाँ हैं, जो विजयाघट की सम्भाई में पंक्तिबद्ध स्थित हैं ॥१२०॥

विजयाष्टमी की उत्तरश्रेणीगत नगरियोंके नाम—

<sup>१</sup>अज्जुण-अरुणो-कट्ठासास'-वारुणोओ य विज्जुपह-णामा ।

किलकिल-बुडामणियं, सतिपह-बंसाल-पुष्कबलाइं ॥१३१॥

94

पामेज हंसगवभं, बलाहक-सिखंकराद् सरिसउधं' ।

अथरं सिधर्मविर-असमकला-असमई ति नामा न ॥१२२॥

5

सिद्धस्यपुरं सत्सुख्यं च नामेण केदुमालो ति ।

सुरविक्रमं तह गगणचंद्रं पुरुषसौमं च ॥१२३॥

3

तस्यो विसोक्यं षोडशोक्त - अलकाह-तिलक - नामं च ।

अम्बरतिलकं मन्दर-कुसुमा कन्दं च गमयन्वल्लभयं ॥१२४॥

5

दिव्यतिलयं च भूमी, तिलयं गंधर्वपुर हरं ततो ।

मुक्ताहर - जडमिस - शार्ङ्ग 'तहगिजात - महाजाला ॥१२५॥

७

शार्ङ्गेण सिरिणिकेहं, जयावहं सिरिनिवास-मणिवज्ज ।

'भद्रस्सख - अर्जजय - माहिवा विजय - जयरं च ॥१२६॥

शार्ङ्गेण सिरिणिकेहं : ... जयावहं श्री सुविजितराजः श्री महासख

तह य सुमंघिणि-<sup>१</sup>वेरद्वारा-गोक्षीरफेणमक्कोभा ।

गिरिसिहर-धरणि-धारिणि-दुग्गाहं बुद्धरं सुवंसजयं ॥१२७॥

१०

रयणामर-रयमपुरा, उत्तर-सेहीअ सट्ठि जयरोओ ।

विजयज्जायामेअं, विरजिह - पंतीए जिबसंति ॥१२८॥

६० ।

अर्थः—<sup>१</sup>अर्जुनी, <sup>२</sup>अरुणी, <sup>३</sup>कंलास, <sup>४</sup>वारुणी, <sup>५</sup>विद्युत्प्रभ, <sup>६</sup>किलकिल, <sup>७</sup>बूडामणि, <sup>८</sup>सप्तप्रभ, <sup>९</sup>मंजाल, <sup>१०</sup>पुष्पचूल, <sup>११</sup>हंसगर्भ, <sup>१२</sup>बलाहक, <sup>१३</sup>शिवंकर, <sup>१४</sup>श्रीसेध, <sup>१५</sup>चमर, <sup>१६</sup>सिव-मन्दिर, <sup>१७</sup>वसुमत्का, <sup>१८</sup>वसुमती, <sup>१९</sup>सिद्धार्थपुर, <sup>२०</sup>शत्रुञ्जय, <sup>२१</sup>केतुभाल, <sup>२२</sup>सुरपतिकान्त, <sup>२३</sup>गगन-मन्दन, <sup>२४</sup>अशोक, <sup>२५</sup>विशोक, <sup>२६</sup>वीरशोक, <sup>२७</sup>अलका, <sup>२८</sup>तिलक, <sup>२९</sup>अम्बरतिलक, <sup>३०</sup>मन्दर, <sup>३१</sup>कुमुद, <sup>३२</sup>कुन्द, <sup>३३</sup>गगनवस्त्रभ, <sup>३४</sup>दिव्यतिलक, <sup>३५</sup>भूमितिलक, <sup>३६</sup>गन्धर्वपुर, <sup>३७</sup>मुक्ताहर, <sup>३८</sup>नैमिष, <sup>३९</sup>अग्निज्वाल, <sup>४०</sup>महाज्वाल, <sup>४१</sup>श्रीनिकेतन, <sup>४२</sup>जयावह, <sup>४३</sup>श्रीनिवास, <sup>४४</sup>मणिबद्ध, <sup>४५</sup>भद्रास्त्र, <sup>४६</sup>घनञ्जय, <sup>४७</sup>माहेन्द्र, <sup>४८</sup>विजयनगर, <sup>४९</sup>सुगन्धिनी, <sup>५०</sup>वज्राब्जतर, <sup>५१</sup>गोक्षीरफेन,

१. द. व. क. ज. घ. ङ. तह धणि । २. क. ज. ङ. भद्र ।

३. द. व. वेरंतदराणं.....

ज. घ. .., गोक्षीरमक्कोभा ।

उ. .., संकोभा ।

क. .., संकोभा ।

“अश्लोभ, “गिरिनिखर, “धरणी, “धारिणी, “दुर्ग, “दुर्बंद, “मुदर्शन, “रत्नाकर और “रत्नपुर ये साठ नगरियाँ उत्तरश्रेणीमें हैं, जो विजयादंकी सम्बाईमें पंक्तिबद्ध स्थित हैं ॥१२१-१२५॥

विद्याधर-नगरोंका विस्तृत वर्णन—

विजयाहर-जयरवरा, अणाई-निहणा सहावणिप्पणा ।  
णाणाबिह-रयणमया, गोउर-पायार-तोरणादि-जुवा ॥१२६॥

अर्थ :—अनेक प्रकारके रत्नोंसे निर्मित गोपुर, प्राकार (परकोटा) और तोरणादिके युक्त विद्याधरोंके ये श्रेष्ठ नगर अनादिनिघ्न और स्वभाव सिद्ध हैं ॥१२६॥

उज्ज्वल-वण-समिद्धा, पोक्खरणी-कूप-विण्णिया-सहिद्धा ।  
धुब्धंत<sup>१</sup>-अय-बड्ढाया, पासावा ते च रयणमया ॥१२७॥

अर्थ :—रत्नमय प्रासाद वाले ये नगर उज्ज्वल-वनोंसे संयुक्त हैं और गुष्करिणी, कूप एवं दीर्घिकाओं तथा फहराती हुई ध्वजा-पताकाओंसे सुशोभित हैं ॥१२७॥

णाणाबिह-जिणगेहा, विजयाहर-पुर वरेसु रमणिज्जा ।  
वर - रयण - कंचणमया, ठाण - द्वाणेषु सोहंसि ॥१२८॥

अर्थ :—उन श्रेष्ठ विद्याधर नगरोंमें स्थान-स्थान पर रमणीय, उत्तमरत्नमय और स्वर्ण-मय नानाप्रकारके जिनमन्दिर शोभायमान हैं ॥१२८॥

वरणसंड-वत्थ-सोहा, वेवो-कडिसुत्तएहि कंतिल्ला ।  
तोरण-कंकण<sup>२</sup>-जुत्ता, विजयाहर-राय-भरण-मउडहरा<sup>३</sup> ॥१२९॥

मणिगिह-कंठाभरणा, चलंत-हिडोस - कुंडलेहि जुवा ।  
जिणवर - मंदिर - तिलया, जयर-जरीवा विरायंति ॥१३०॥

**अर्थः**—वन्-खण्डरूपी वस्त्रसे सुशोभित, वेदिकारूप कटिभूषणसे कान्तिमान्, तोरणरूपी फंकणसे युक्त, विद्याधरोंके रात्रभवन रूप मुकुटोंको धारण करने वाले, मणिपट्टरूप कंठामरणसे विभूषित, चञ्चल हिडोलेरूप कुण्डलोंसे युक्त और जिनेन्द्रमन्दिररूपी तिलकसे संयुक्त विद्याधरनगररूपी राजा अत्यन्त शोभायमान है ॥१३२-१३३॥

**‘कुस्तिल-कमल-वर्णेहि, बाघी-एवएहि भंडिया बिजला ।**

**पुर-बाहिर - भूभागा, उडवाण - वर्णेहि रेहंति ॥१३४॥**

**अर्थः**—नगरके बाहरी विशाल प्रदेश प्रकुलित कमल वर्णों, बाघी-समूहों तथा उद्यान-वनोंसे संहित होते हुए शोभायमान है ॥१३४॥

**कलहार-कमल-कुवलय - कुमुदुजल-जलप्रवाह-पकहत्या ।**

**दिग्ग-सहाया बिजला, सेसु पुरेसु बिरायंति ॥१३५॥**

**अर्थः**—उन नगरोंमें कलहार, कमल, कुवलय और कुमुदोंसे उज्ज्वल, जलप्रवाहसे परिपूर्ण अनेक दिग्ग साहाय शोभायमान है ॥१३५॥

**सालि-जमनाल-तुबरी-तिल-जम-गोबुध्न - भास-पहुबीहि ।**

**सस्सेहि भरिबाहि, पुराइ सोहंति सुमीहि ॥१३६॥**

**अर्थः**—शालि, यवनाल ( जुवार ), तूवर, तिल, जौ, गेहूँ और उडव इत्यादिक सभस्त उत्तम धान्योंसे परिपूर्ण भूमियों द्वारा वे नगर शोभाको प्राप्त होते हैं ॥१३६॥

**बहुबिम्ब-गाम-सहिबा, दिग्ग - महापट्टणेहि रमबिज्जा ।**

**कम्बड - वीणमुहेहि, संवाह - मडंबएहि परिपुज्जा ॥१३७॥**

**रमणाण आयरेहि, बिहसिया पउमराय - पट्टदीप ।**

**दिग्ग-जयरेहि पुज्जा, धण - धण - समिद्धि - रस्सेहि ॥१३८॥**

**अर्थः**—वे विद्याधरपुर बहुतसे दिग्ग ग्रामों सहित, दिग्ग महापट्टनोंसे रमणीय; कंबट, वीणमुख, संवाह, मडंब और नगरोंसे परिपूर्ण; पद्मरागादिक रत्नोंकी खानोंसे विभूषित तथा धन-धान्यकी समृद्धिसे रमणीय हैं ॥१३७-१३८॥

१. द. व. क. ज. य. उ. पुच्छिद । २. क. ज. क. उ. वषहरणा । ३. य. बिरायंति । ४. द. व.

सुहणेहि । ५. य. क. ज. य. उ. ब्यापारहि । ६. क. ज. य. उ. बिभूषितो । ७. द. व. क. ज. य. उ.

पंथमराय । ८. द. व. क. ज. य. उ. एयरेहि ।

विद्याधरोंका वर्णन—

‘देवकुमार-सरिच्छा, बहुविह-विज्जाहि संजुदा पवरा ।

विज्जाहुरा मणस्सा, छक्कम्म-जुवा हवन्ति सदा ॥१३६॥

मार्गदर्शक :- ‘आरतार्थ और सुविचारणार्थ को ध्यान में

अर्थ :—उन नगरोंमें रहनेवाले उत्तम विद्याधर मनुष्य देवकुमारोंके सहस्र अनेक प्रकारकी विद्याओंसे संयुक्त होते हैं और सदा छह कर्मोंसे सहित हैं ॥१३६॥

विशेषार्थ :—वे विद्याधर मनुष्य देवपूजा, गुरु-उपासना, स्वाध्याय, संयम तप और दान इन छह कर्मोंसे युक्त होते हैं तथा अनेक विद्याओंके अधिपति होकर अपनी विद्याधर संज्ञाको साधक करते हैं ।

अच्छर-सरिच्छ-जुवा, अहिणव-सावण-दीप्ति रमणिज्जा ।

विज्जाहुर - वणिताओ, बहुविह - विज्जा - समिद्धाओ ॥१४०॥

अर्थ :—विद्याधरोंकी वनिताएँ अप्सराओंके सहस्र रूपवती, नवीन सावण्य युक्त, दीप्तिसे रमणीय और अनेक प्रकारकी विद्याओंसे समृद्ध होती हैं ॥१४०॥

कुल-जाई-विज्जाओ, साहिय - विज्जा अण्य-मेयाओ ।

विज्जाहुर-पुरिस - पुरंधियाण<sup>१</sup> वर-सोक्ख - जणणीओ ॥१४१॥

अर्थ :—अनेक प्रकारकी कुल-विद्याएँ, जाति-विद्याएँ और साधित-विद्याएँ विद्याधर पुरुषों एवं पुरंधियों ( विद्याधरियों ) को उत्तम सुख देनेवाली होती हैं ॥१४१॥

विद्याधरकी श्रेणियोंका एवं उनपर निवास करनेवाले देवोंका वर्णन—

रम्मुज्जाणेहि जुवा, होंति ह विज्जाहुराण सेवीओ ।

जिणभण - सुसिवाओ, को सबकइ वणिहु<sup>२</sup> समयं ॥१४२॥

अर्थ :—विद्याधरोंकी श्रेणियाँ रमणीय उद्यानोंसे युक्त हैं और जिनमन्त्रोंसे सूचित हैं । इनका सम्पूर्ण वर्णन करनेमें कौन समर्थ हो सकता है ? ॥१४२॥



वस-जोयणाणि तसो, उच्चरि गत्तुण होसु पासेसु' ।  
अभियोगामर - सेही, वस - जोयन - बिस्वरा' होदि ॥१४३॥

अर्थ :—विद्याधर श्रेणियोंसे आगे दस योजन ऊपर जाकर विजयार्थके दोनों पार्श्वभागोंमें दस योजन विस्तार वाली अभियोग्य देवोंकी श्रेणी है ॥१४३॥

वरकप्प-रुक्ख-रम्मा, फलिदेहि उच्चवनेहि परिपुष्णा ।  
बाबी - तडाग - पडरा, वर-अच्छरि-कीडणेहि जुवा ॥१४४॥

मणिमय - मंदिर - बहुला, परिष्ठा-पायार-परिधरिया ॥१४५॥

अर्थ :—यह श्रेणी उत्कृष्ट कल्पवृक्षोंसे रमणीय, फलित उपवनोसे परिपूर्ण, अनेक बापियों एवं तालाबों सहित, उत्तम मन्दिरोंकी क्रीडाओंसे युक्त, स्वर्णमय वेदी सहित, चार गोपुरोंसे सुन्दर, बहुत चित्रोंसे अलंकृत और अनेक मणिमय भवनोंसे युक्त है तथा परिष्ठा एवं प्राकारसे वेष्टित है ॥१४४-१४५॥

सोहम्म-सुरिदस्स य, वाह्व-देवा ह्वंति 'वेतरया ।  
वक्खण - उत्तर - पासेसु तिण वर-विष्ण-रुक्खरा ॥१४६॥

अर्थ :—इस श्रेणीके वक्खण-उत्तर पार्श्वभागमें सौधर्मैन्द्रके वाहनदेव-अन्तर होते हैं, जो उत्तम दिव्यरूपके धारक होते हैं ॥१४६॥

विजयार्थके शिखरका वर्णन —

अभिओग-पुराहिंसो, गत्तुण पंच-जोयणाणि तसो ।  
वस-जोयन-बिस्वण्णं, वेयड्ढगिरिस्स वर - सिहरं ॥१४७॥

तिवसिदचाव-सरिस्सं, विसाल-वर-वेबियाहि परिधरियं ।  
बहुतोरनदार-जुवा, विविस्स-रयणेहि' रमक्खिजा ॥१४८॥

अर्थः—अभियोगपुरीसे पाँच योजन ऊपर जाकर दस योजन विस्तारवाला वैताङ्गपर्वतका उत्तम शिखर है जो त्रिदशोन्मेषात् अर्थात् इन्द्रधनुषके सदृश है, विशाल एवं उत्तम वेदिकाओंसे वेष्टित है, अनेक तोरणद्वारोंसे संयुक्त है और विचित्र रत्नोंसे रमणीय है ॥१४७-१४८॥

शिखरके ऊपर स्थित नव-कूटोंका वर्णन—

तत्प-समभूमि-भागो, 'फुरंत-वर-रयण-किरण-गियरम्मि ।

खेहुंते णव कूडा, कंचण - मणि - मंडिया दिव्या ॥१४९॥

अर्थः—वहाँ पर स्फुरायमान उत्तम रत्नोंके किरण-समूहोंसे युक्त समभूमि भागमें स्वर्ण एवं मोतियोंसे मण्डित दिव्य नौ कूट स्थित हैं ॥१४९॥

नामेष सिद्धकूडो, पुष्प - विसंतो तवो भरह-कूडो ।

'खंड्यवाव - णामो, तुरिमो तह माणिभट्टो ति ॥१५०॥

विजयवटकुमारो पुष्पभट्ट-तिमिस्स-गुहा-विहाणा य ।

उत्तर - भरहो कूडो, पच्छिम - घंतस्मि वेसमणा ॥१५१॥

अर्थः—पूर्व दिशाके अन्तमें सिद्धकूट, इसके पश्चात् भरतकूट, खण्डप्रपात, (चतुर्थ) मणिभट्ट, विजयवटकुमार, पूर्णभट्ट, तिमिस्सगुह, उत्तर भरतकूट और पश्चिम दिशाके अन्तमें वैश्रवण, नामक ये नौ कूट हैं ॥१५०-१५१॥

कूटोंके विस्तार आदिका वर्णन—

कूडाणं उच्छेहो, पुह पुह खण्जोयणानि इगि-कोसं ।

तेसियमेसं गियमा, हवेवि भूतस्मि विक्खंसो ॥१५२॥

जो ६ को १ । जो ६ को १<sup>१</sup> ।

अर्थः—इन कूटोंकी ऊँचाई पृथक्-पृथक् छह योजन और एक कोस है तथा नियमसे इतना ही मूलमें विस्तार भी है ॥१५२॥

१. व. अ. य. पुरत, व. क. अ. पुरत । २. व. क. अ. य. उ. खंय्य । ३. व. क. अ. य. उ. तिमिस्सं । ४. व. व. क. अ. य. उ. विहाणा । ५. क. अ. य. उ. विक्खंसा । ६. व. क. अ. य. उ. ( जो ४ ) को १<sup>१</sup> । जो ३ । को १ ।

**विशेषार्थः**—प्रत्येक कूटकी ऊँचाई ६ योजन १ कोस और मूल विस्तार भी ६ योजन एक कोस प्रमाण है ।

तस्सद्धं विश्धारो, पल्लेकं होदि कूट-सिहरग्ग्हि<sup>१</sup> ।

मूल-सिहराण इदं, मेलिय बल्लिबग्ग्हि<sup>२</sup> मज्झस्स ॥१५३॥

जो ३ । को ३ । जो ४ । को ५ ।

**अर्थः**—प्रत्येक कूटका विस्तार शिखर पर इससे बराबरा अर्थात् तीन योजन और आधा कोस है । मूल और शिखरके विस्तारको मिलाकर भाधा करने पर जो प्रमाण प्राप्त हो उतना उक्त प्रत्येक कूटके मध्यका विस्तार है ॥१५३॥

**विशेषार्थः**—प्रत्येक कूटकी ऊँचाई  $६\frac{१}{२}$  योजन और विस्तार भी  $६\frac{१}{२}$  योजन है । शिखरके ऊपर विस्तार  $३\frac{१}{२}$  योजन है । कूटका मध्य विस्तार  $( ६\frac{१}{२} + ३\frac{१}{२} ) \div २$  अर्थात्  $\frac{१०}{२} = ५$  योजन अथवा ४ योजन और  $२\frac{१}{२}$  या  $\frac{५}{२}$  कोस है ।

कूटस्थित जिनभवनका वर्णन—

आविम-कूडे<sup>३</sup> चेट्ठदि, जिण्णिइ-भवनं विस्सिस्स - धयमालं ।

वर - कंचण - रयणमयं<sup>४</sup>, तोरण - कुलं विमानं च ॥१५४॥

**अर्थः**—प्रथम कूटपर विस्मिन्न ध्वजा-समूहोंसे शोभायमान जिनैन्द्रभवन तथा उत्तम स्वर्ण और रत्नोंसे निर्मित तोरणोंसे युक्त विमान स्थित हैं ॥१५४॥

दीहत्तमेवक-कोसो, विक्कंभो होदि कोस-इत्त-मेत्तं<sup>५</sup> ।

गाउव-ति-चरणभागो, उज्जेहो जिण - जिकेवस्स ॥१५५॥

को १ । ३ । ३ ।

**अर्थः**—जिनभवनकी लम्बाई एक कोस, चौड़ाई आधा कोस और ऊँचाई गव्यूतिके तीन चौथाई भाग (  $\frac{३}{४}$  कोस ) प्रमाण है ॥१५५॥

१. द. व. क. ख. घ. ङ सिहराणि । २. व. कुली । ३. द. जिण्णि । ४. व. व. क. ख. उ. मया । घ. मया । ५. क. ख. घ. उ. दीहत्त । ६. द. उ. तमेत्त ।

कंचन - गायारस्तय - परियरिओ गोउरेहि संकुतो ।  
 वर-वज्र-नील - विद्रुम<sup>१</sup> - मरगय - वेचलिय - परिणामो ॥१५६॥  
<sup>१</sup>संबत - रयन - बामो, गारजा-कुसुमोपहार-कयसोहो ।  
 गोसीस - मलयचंदन - कालागरु<sup>२</sup> - धूव - गंधद्वो ॥१५७॥  
 वर-वज्र-कमाड-जुवो, बहुषह-बोरीह सोहिवो बिउलो ।  
 वर - माणधंभ - सहिवो, जिनिव - गेहो निरबमाणो ॥१५८॥

अर्थ :- स्वर्णसय तीन प्रकारोंसे वेष्टित, गोपुरोंसे संयुक्त; उत्तम वज्र, नील, विद्रुम, मरकत और वैडूर्य-मणिओंसे निर्मित, तटकती हुई रत्नमाताओंसे युक्त, नाना प्रकारके फूलोंके उपहारसे शोभायमान, गोशीर्ष, मलयचन्दन, कालागरु और धूपकी गन्धसे व्याप्त; उत्कृष्ट वज्रकपाटोंसे संयुक्त बहुतप्रकारके द्वारोंसे सुशोभित, विशाल और उत्तम मानस्तम्भों सहित वह जिनेन्द्रमवन अनुपम है ॥१५६-१५८॥

भिगार - कलस - दप्यण - चामर - घंटावदल - बहुवोहि ।  
 पूजा - दम्बेहि तयो, विचित्र - वर - वत्थ<sup>३</sup> - सोहिस्तो ॥१५९॥  
 पुष्पाय - नाय - चंपय - असोय-बजलावि-दल्ल-पुष्पोंहि ।  
 उज्जानोंहि सोहवि, विविहोहि जिनिव - पासावो ॥१६०॥

अर्थ :- वह जिनेन्द्र-प्रासाद भारी, कलश, दर्पण, चामर, घंटा और आनपत्र ( छत्र ) इत्यादिसे, पूजाद्रव्योंसे, विचित्र एवं उत्तम वस्त्रोंसे सुशोभित तथा पुष्पाय, नाग, चम्पक, अलोक और बकुलादिक वृक्षोंसे परिपूर्ण विविध उद्यानोंसे शोभायमान है ॥१५९-१६०॥

सच्छ - जल - पूरिवोहि, 'कमलुप्पलसंड - मंडणचराहि' ।  
 पोक्खरणीहि रम्भो, मणिमय - सोवाण<sup>४</sup> - 'मासाहि' ॥१६१॥

१. द. संकुतो । २. द. क. ज. म. उ. विद्रुम । ३. क. उ. संबत । ४. ज. य. कालागुरु ।  
 ५. द. व. क. ज. य. बल्लसेहि, उ. वरसेहि । ६. क. उ. कमलुप्पल । ७. द. क. ज. व. उ. मंडण चराहि ।  
 ८. द. व. क. ज. य. उ. सोहाण । ९. द. क. ज. य. उ. मासाहि ।

अर्थ :—वह जिनमयन स्वच्छ जलसे परिपूर्ण, कमल और नीलकमलोंके समूहसे अलंकृत भूमिभागोंसे युक्त और माणभय सापान पास्त्यास आभायमान पुष्करिणीयोंसे रमणीय है ॥१६१॥

तस्मिन् जिणिद - पडिमा, अट्ट - महामंगलेहि संयुज्जा ।

सिंहासनादि-सहिवा, आमर-कर-आग-अवस-मिट्ठण-जुवा ॥१६२॥

अर्थ :—उस जिनेन्द्र मन्दिरमें अष्टमहामंगलद्रव्योंसे परिपूर्ण, सिंहासनादिक सहित और हाथमें आमरोंको लिए हुए नाग यक्षोंके युगलसे संयुक्त जिनेन्द्र प्रतिमा विराजमान है ॥१६२॥

भिगार - कसस-वप्पण - दोयण-वय-खत्त-चमर-मुपइट्ठा ।

इय अट्ट - मंगसाहि, पसेवकं अट्ट - अहिमसयं ॥१६३॥

अर्थ :—भारी, कसस, दर्पण, व्यजन (पंखा), ध्वजा, छत्र, चमर और सुप्रसिद्ध (ठोना), इन आठ मंगलद्रव्योंमेंसे प्रत्येक वहाँ एकसौ आठ-एकसौ आठ हैं ॥१६३॥

किसीए अणिज्जइ, जिणिद - पडिमाए 'सासव-ठिहीए ।

'जा हरइ सयल - कुरियं, सुमरण - मेत्तेण भव्वाणं ॥१६४॥

अर्थ :—जो स्मरण मात्रसे ही भव्य जीवोंके सम्पूर्ण पापोंको नष्ट करती है, ऐसी पापदत रूपसे स्थित उस जिनेन्द्र प्रतिमाका कितना वर्णन किया जाय ? ॥१६४॥

वृत्तं (इन्द्रवज्रा) :—

एवं हि एवं पडिमं जिणस्स, तस्य द्विवं 'भत्ति-पसत्थ-चित्ता ।

आयंति केहिं विविज्जट्ट-कम्मा, ते मोक्ष-माणंदकरं लहंते ॥१६५॥

अर्थ :—उस जिन-मन्दिरमें स्थित जिनेन्द्र भगवान्की इसप्रकारकी सुन्दर मूर्तिका जो भी कोई ( भव्य जीव ) प्रसन्न चित्त होकर भक्तिपूर्वक ध्यान करते हैं, वे कर्मोंको नष्ट कर आनन्दकारी मोक्षको प्राप्त करते हैं ॥१६५॥

एसा जिनिवप्यडिभा जगणं, भाणं कुञ्जतान-बहुप्पयारं ।  
भावाणुसारेण अनंत-सोवत्तं, निस्सेयत्तं अम्भुदयं च देवि ॥१६६॥

अर्थ :—यह जिनेन्द्र प्रतिमा अनेक प्रकारसे उसका ध्यान करनेवाले भव्य जीवोंको उनके भावोंके अनुसार अम्भुदय एवं अनन्तसुख स्वरूप मोक्ष प्रदान करती है ॥१६६॥

कूटोंपर स्थित व्यन्तरदेवोंके प्रासादोंका वर्णन—

भरहादिसु कूबेसु, अट्टसु वेत्तर-सुराण पासादा ।  
धर - रयण - कंचणमया, वेदी-गोचर-सुधार-कय-सोहा ॥१६७॥  
उज्ज्वाणोहि जुसा, मणिमय - सयणासणेहि परिपुष्णा ।  
धरुत्त - धय - वहाया, बहुबिह - वग्गा विराजन्ति ॥१६८॥

अर्थ :—भरहादिक आठ कूटोंपर व्यन्तरदेवोंके उत्तम रत्नों और स्वर्णसे निर्मित, वेदी तथा गोपुरद्वारोंसे शोभायमान, उद्यानोंसे युक्त, मणिमय शय्याओं और आसनोंसे परिपूर्ण एवं नाचती हुई ध्वजा-पताकाओंसे सुशोभित अनेक वर्णवाले प्रासाद विराजमान हैं ॥१६७-१६८॥

बहुवेव - देवि - सहिवा, वेत्तर - वेवाण होंति पासादा ।  
जिणवर - भवण - ववणिगव - पासाद-सरिच्छ-रुंदावो ॥१६९॥

को १ । को २ । को ३ ।

अर्थ :—व्यन्तरदेवोंके ये प्रासाद बहुतसे देव-देवियों सहित हैं । जिन-भवनोंके वर्णनमें प्रासादोंके विस्तारादिका जो प्रमाण बतलाया जा चुका है, उसीके सदृश इनका भी विस्तारादिक जानना चाहिए । अर्थात् ये प्रासाद एक कोस लम्बे, आधा कोस चौड़े और तीन ( ३ ) कोस ऊंचे हैं ॥१६९॥

कूटोके अहिर्वह्नि देवोके नाम, कूटपरी वेंताडपकुमार देव और उत्तरभरत

भरहे कूडे भरहो, 'खंडपवाहम्मि नट्टमास - सुरो' ।

'कूडम्मि माणिभद्रे, अहिर्वह्नि-देवो अ माणभदो सि ॥१७०॥

वेयड्डकुमार - सुरो, वेयड्डकुमार - नाम - कूडम्मि ।

वेट्टेवि पुण्णभदो, 'अहिणाहो पुण्णभदम्मि ॥१७१॥

तिमित्तगुहम्मि य कूडे, देवो जामेज बसवि कवमालो ।

उत्तरभरहे कूडे, अहिर्वह्नि - देवो भरह-जामो ॥१७२॥

कूडम्मि य वेसमणो, वेसमणो नाम अहिर्वह्नि देवो ।

बस - वणु - वेहुण्णेहो, सम्मे ते एक - पल्लाऊ ॥१७३॥

अर्थ :—भरतकूटपर भरत नामक देव, खण्डप्रपात कूटपर नृत्यमाल देव और माणिभद्र कूटपर माणिभद्र नामक अधिपति देव है । वेंताडपकुमार नामक कूटपर वेंताडपकुमार देव और पूर्णभद्र कूटपर पूर्णभद्र नामक अधिपति देव स्थित है । तिमिस्रगुह कूटपर कृतमाल नामक देव और उत्तरभरत कूटपर भरत नामक अधिपति देव रहता है । वेंअवरा कूटपर वेसवरण नामक अधिनायक देव है । ये सब देव दस धनुष ऊँचे शरीरके धारक हैं और एक पल्लोपम आयुवाले हैं ॥१७०-१७३॥

विजयार्थ स्थित वनखण्ड, वन-वेदी एवं व्यन्तर देवोंके नगरोंका वर्णन—

वे-नाउव विस्सिण्णा, वोसु वि पासेसु गिरि-समायामा ।

वेयड्डम्मि गिरिदे, वणसंठा होंति सुमितसे' ॥१७४॥

अर्थ :—वेंताडप पर्वतके भूमितलपर दोनों पार्श्वभागोंमें दो गव्यूति ( दो कोस ) विस्तीर्ण और पर्वतके बराबर सम्ये वनखण्ड हैं ॥१७४॥





अधराए<sup>१</sup> तिमिसगुहा, खंडपवादा<sup>२</sup> बिस्ताए पुष्पाए ।

वर-बज्ज-कवाड<sup>३</sup>-अवा, अवादि - गिहणाओ<sup>४</sup> सोहुति ॥१७६॥

अर्थ :—पश्चिम दिशामें तिमिसगुफा और पूव दिशामें खंडप्रपात गुफा है । उत्तम वक्षमय कपाटोसि युक्त ये दोनों अनादि-निश्चय गुफाएँ क्षोभायमान हैं ॥१७६॥

जमल-कवाडा<sup>५</sup> बिस्वा, होति हु छज्जोयणाणि<sup>६</sup> कित्थिक्का ।

अट्ठुच्छेहा<sup>७</sup> वोमु बि, गुहासु<sup>८</sup> धाराण<sup>९</sup> पत्तेवकं ॥१८०॥

६ । ८ ।

अर्थ :—दोनों ही गुफाओंमें द्वारोंके दिव्य युगत कपाटोंमेंसे प्रत्येक कपाट छह योजन विस्तीर्ण और आठ योजन ऊँचा है ॥१८०॥

दक्षिण और उत्तर भरतका विस्तार—

पण्णास - जोयणाणि, वेयइह - णमस्स मूल - बिस्वारो ।

तं भरहाओ<sup>१</sup> सोधिय, सेसड<sup>२</sup> वक्खिणय<sup>३</sup> तु ॥१८१॥

कुसपा अट्ठसीसं, तिण्णि कलाओ य वक्खिणयम्मि ।

तस्स सरिच्छ - पमाणो, उत्तर - भरहो हि<sup>४</sup> नियमेण ॥१८२॥

२३ = १, ११ ।

अर्थ :—विजयार्ध पर्वतका विस्तार मूलमें पचास योजन है । इसी भरतक्षेत्रके विस्तारमेंसे कम करके शेषका आधा करनेपर दक्षिण ( अर्ध ) भरतका विस्तार निकल जाता है । वह दक्षिण भरतका विस्तार दोसौ अड़तीस योजन और एक योजनके उन्नीस भागोंमेंसे तीन भाग प्रमाण है । नियमसे इसीके सहस्र विस्तारवाला उत्तर भरत भी है ॥१८१-१८२॥

१. व. व. क. ज. उ. अधराए, य अधरा । २. व. व. क. ज. उ. खंडपवादा, य. खंड पादावा ।

३. व. व. क. ज. उ. कवाडादि, य. कवाडादि । ४. ज. य. उ. गिहणादि । ५. व. अट्ठेवय सिद्धाओ ।

६. अट्ठेवय सिद्धाओ । ७. अट्ठेवय सिद्धाओ । ८. अट्ठेवय सिद्धाओ । ९. अट्ठेवय सिद्धाओ ।

१०. व. व. क. ज. य. उ. धाराणि । ११. व. व. क. ज. य. उ. सोधिय । १२. क. ज. उ. दि ।

**विशेषार्थः**—भरतक्षेत्रका विस्तार  $५२६\frac{१}{४}$  यो० है और विजयाधंका मूलमें विस्तार ५० योजन है, अतः  $( ५२६\frac{१}{४} - ५० ) \div २ = २३८\frac{१}{४}$  योजन दक्षिण भरतका और  $२३८\frac{१}{४}$  योजन ही उत्तर भरतका विस्तार है ।

**धनुषाकार क्षेत्रमें जीवाका प्रमाण निकालनेका विधान—**

**संघट्ट' इसु-हीणं, अग्निय भ्रवणिऊज संघ-बल-वगने ।**

**सेसं चउगुण - मूलं, जीवाए होवि परिमाणं ॥१८३॥**

**अर्थः**—बाणसे रहित अर्ध-विस्तारका वर्ग करके उसे विस्तारके अर्ध भागके वर्गमेंसे घटा देनेपर अवशिष्ट राशिको चारसे गुणा करके प्राप्त राशिका वर्गमूल निकालने पर जीवाका प्रमाण प्राप्त होता है ॥१८३॥

**धनुषका प्रमाण निकालनेका विधान—**

**बाण-कुद-संघ-वगने', संघ-कवी सोधिदूण दुगुण करे ।**

**जं सट्ट' तं होवि हु, करणी वावस्स परिमाणं ॥१८४॥**

**अर्थः**—बाणसे युक्त व्यासके वर्गमेंसे व्यासके वर्गको घटाकर शेषको दुगुना करनेपर जो राशि प्राप्त हो वह धनुषका वर्ग होता है और उसका वर्गमूल धनुषका प्रमाण होता है ॥१८४॥

**बाणका प्रमाण निकालनेका विधान—**

**जीव-कवी-सुरिमंसा, 'वासट्ट - कवीए सोधिदूण पवं ।**

**संघट्टम्मि बिहीजे, 'सट्ट' बाणस्स परिमाणं ॥१८५॥**

**अर्थः**—जीवाके वर्गके चतुर्थ भागको अर्ध विस्तारके वर्गमेंसे घटाकर शेषका वर्गमूल निकालने पर जो प्राप्त हो उसे विस्तारके अर्ध भागमेंसे कम कर देनेपर अवशिष्ट रही राशि प्रमाण ही बाणका प्रमाण होता है ॥१८५॥

**विशेषार्थः**—यथा—जम्बूद्वीपका व्यास एक लाख योजन और विजयाधंकी दक्षिण जीवा  $१८३३४$  या  $१७४८६\frac{१}{४}$  योजन है ।



वर्षाण जीवाके धनुषका प्रमाण—

तन्जीवाए' साधं, जस य सहस्साणि जोजया होंति ।

सप्त - सया छासठ्ठी, एकक - कला किंवि 'अधिरैवका ॥१०७॥

[ १०७११, १ ]

अर्थ:—उसी जीवाका धनुष नौ हजार सातसौ छत्सठ योजन और एक योजनके उन्नीस भागोंमेंसे कुछ अधिक एक भाग ( १०७११ $\frac{१}{१६}$  योजन ) है ॥१०७॥

विशेषार्थ:—गाथा १०४ के नियमानुसार—

$$\begin{aligned} \text{धनुषका प्रमाण} &= \left[ \left\{ \left( १००००० + २३ = \frac{३}{१६} \right)^२ - ( १००००० )^२ \right\} \times २ \right]^{\frac{१}{२}} \\ &= \left[ \left\{ \left( १००२३ = \frac{३}{१६} \right)^२ - ( १००००० )^२ \right\} \times २ \right]^{\frac{१}{२}} \\ &= \left[ \left\{ \left( \frac{३६२७२१४४७४६२४}{३६१} \right) - \left( \frac{१००००००००००}{१} \right) \right\} \times २ \right]^{\frac{१}{२}} \\ &= \left( \frac{१७२१४४७४६२४}{३६१} \right) \times २ \right]^{\frac{१}{२}} \\ &= \left[ \frac{३४४३०९४१२४०}{३६१} \right]^{\frac{१}{२}} = \frac{१८४४४४}{१६} \text{ या } १०७११\frac{१}{१६} \text{ योजन विशेषार्थके दक्षिण} \end{aligned}$$

धनुषका प्रमाण है । संदृष्टिमें विशेषार्थके दक्षिण धनुषका प्रमाण १०७११ $\frac{१}{१६}$  योजन दर्शाया गया है, किन्तु गाथा में कुछ अधिक रहे कहा गया है । क्योंकि वर्गमूल निकाल लेनेके बाद १०७११ $\frac{१}{१६}$  योजन अवशेष बचते हैं । इनके कोस आदि बनाने पर अधिकका प्रमाण ३ कोस और ३२१ $\frac{१}{१६}$  धनुष प्राप्त होता है ।

विजयार्थकी उत्तर जीवाका प्रमाण—

वीसुत्तर-सप्त-सया, दस य सहस्साणि जोजया होंति ।

एककारस - कल - अहिया, राजवाचस - उत्तरे जीवा ॥१०८॥

[ १०७२० । ११ ' ।

अर्थ :—विजयार्धके उत्तरमें जीवाका प्रमाण दस हजार सातसौ बीस योजन और एक योजनके सत्तीस भागोंमेंसे ग्यारह भाग है ॥१८८॥

विशेषार्थ :—विजयार्धके बाणका प्रमाण  $( २३८४\frac{३}{४} + ५० ) = २८८४\frac{३}{४}$  या  $२३९३$  योजन है । इसे जम्बूद्वीपके वृत्त-विष्कम्भ मेंसे घटा देनेपर  $१८३३\frac{३}{४}$  योजन अवशेष रहे । इसको बाणके बीगुने प्रमाण  $( १३३ \times ६ )$  से गुणित करने पर—  $\frac{४९४६००६७५००}{३६९}$  योजन प्राप्त होते हैं । यह विजयार्धकी जीवाकृति का प्रमाण है । इसके वर्गमूल  $( १८३३\frac{३}{४} )$  को अपने ही भागहारका भाग देनेसे  $१०७२०३\frac{३}{४}$  योजन विजयार्धकी उत्तर जीवाका प्रमाण प्राप्त होता है ।

उत्तर-जीवाके धनुषका प्रमाण—

एदाए जीवाए, भणुपुट्टं वस - सहस्स - सस - सया ।

तेबाल - जोयणाइं, पण्णरस - कलाओ 'अदिरेओ ॥१८९॥

१०७४३ । ११ ।

अर्थ :—इस जीवाका धनुःपृष्ठ दस हजार सातसौ सत्तालीस योजन और एक योजनके सत्तीस भागोंमेंसे पन्द्रह भाग अधिक है ॥१८९॥

विशेषार्थ :—व्यास १ साल यो० और बाण  $२८८४\frac{३}{४}$  या  $२३९३$  यो० ।

$$\text{धनुःपृष्ठ} = [ २ \{ १००००० + २८८\frac{३}{४} \}^२ - (१०००००)^२ ]^{\frac{१}{२}}$$

$$= [ २ \{ ( १००२८८\frac{३}{४} )^२ - १०००००००००० \} ]^{\frac{१}{२}}$$

$$= [ २ \{ \frac{३६३०८३४९७५६२५}{३६९} - \frac{१०००००००००००}{१} \} ]^{\frac{१}{२}}$$

$$= [ २ \times \frac{२०८३४६७५६२५}{३६९} ]^{\frac{१}{२}}$$

$$= \sqrt{\frac{४१६६९३५१२५०}{३६९}}$$

$$= \frac{२०४१३२}{१२} \text{ अर्थात् } १०७४३\frac{३}{४} \text{ योजन उत्तर जीवाके अर्थात् विजयार्धके उत्तर धनुषका प्रमाण प्राप्त हुआ ।}$$

प्रमाण प्राप्त हुआ ।

चूलिकाका प्रमाण ज्ञात करनेकी विधि—

जेठ्ठाए जीनाए, मऊके सोहस जघन्य जीव ज ।  
सेस - वलं चूलीघो, हवेदि वस्से य सेले य ॥१६०॥

अर्थ :—उत्कृष्ट जीवामेंसे जघन्य जीवको घटाकर शेषका अर्थ करने पर क्षेत्र और पर्वतमें चूलिकाका प्रमाण आता है ॥१६०॥

विजयार्धकी चूलिकाका प्रमाण—

चत्तारि सयाणि तथा, पञ्चसीधी - जोयबेहि जुस्तानि ।  
सप्तसीसद्ध - कला, परिमाणं चूलियाए इमं ॥१६१॥

४८५ । ३१ ।

अर्थ :—उस विजयार्धकी चूलिकाका प्रमाण चारसौ पचासी योजन और एक योजनके उन्नीस भागोंमेंसे सैंतीसके आधे अर्थात् साढ़े अठारह भाग ( ४८५.३१ योजन ) है ॥१६१॥

विशेषार्थ :—गाथा १६० के नियमानुसार—

विजयार्धकी उत्तर ( उत्कृष्ट ) जीवका प्रमाण  $१०७२०\frac{१}{२}$  अर्थात्  $१०३६६\frac{१}{२}$  योजन और दक्षिण ( जघन्य ) जीवका प्रमाण  $६७४८६\frac{१}{२}$  या  $१८५११\frac{१}{२}$  योजन है । अतः—

$$\left[ \left( \frac{२०३६६१}{१९} - \frac{१८५१११}{१९} \right) \times \frac{१}{२} \right] = \frac{१८४६७}{१९} \times \frac{१}{२} = \frac{१८४६७}{३८}$$
 या ४८५.३१ योजन विजयार्ध की चूलिकाका प्रमाण है ।

पार्श्वभुजाका प्रमाण ज्ञात करनेकी विधि—

जेठ्ठम्मि चावपुट्ठे, सोहेअ कणिट्ठ-चावपुट्ठं पि ।  
सेस - वलं पस्स - भुजा, हवेदि वरिसम्मि सेले य ॥१६२॥

**अर्थ :**—उत्कृष्ट चाप-पृष्ठमेंसे सधु चाप-पृष्ठ घटाकर शेषको आधा करने पर क्षेत्र भीरु पर्वतमें पार्श्वभुजाका प्रमाण निकलता है ॥१६२॥

विजयार्धकी पार्श्व-भुजाका प्रमाण—

चत्वारि सयानि तद्वा, अठसीवी - जोयबोहि कुत्ताणि ।

यानि चत्वारि सयानि तद्वा, अठसीवी - जोयबोहि कुत्ताणि ॥१६३॥

४८८ । ३३ ।

॥ वेपह्वा समत्ता ॥

**अर्थ :**—विजयार्धके पूर्व-पश्चिममें पार्श्वभुजाका प्रमाण चारसी अठसी योजन और एक योजनके उन्नीस भागोंमेंसे तैंतीसके आधे अर्थात् साढ़े सोलह भाग है ॥१६३॥

**विशेषार्थ :**—विजयार्धके उत्तरका चाप  $१०७४३\frac{१}{२}$  अर्थात्  $१०७४\frac{१}{२}$  योजन और विजयार्धके दक्षिणका चाप  $१७६६\frac{१}{२}$  अर्थात्  $१७६६\frac{१}{२}$  योजन है । इन्हें परस्पर घटाकर अर्ध करनेपर  $( \frac{१०७४३२}{१६} - \frac{१७६६४}{१६} = \frac{१८५७७}{१६} ) \times \frac{१}{२} = \frac{१८५७७}{३२}$  अर्थात्  $४८८\frac{३३}{३२}$  योजन विजयार्धके पूर्व-पश्चिममें पार्श्व भुजाका प्रमाण है ।

॥ विजयार्धका वर्णन समाप्त हुआ ॥

भरतक्षेत्रकी उत्तर-जोवाका प्रमाण—

चोहस - सहस्र - जोयण - चउस्सया एकससरी-कुत्ता ।

'पंच - कसाओ एसा, जीवा भरहस्स उत्तरे' भागे ॥१६४॥

। १४४७१ । ५६ ।

**अर्थ :**—भरतक्षेत्रके उत्तर-भागमें यह जीवा चौदह हजार चार सौ इकहत्तर योजन और एक योजनके उन्नीस भागोंमेंसे पाँच भाग प्रमाण है ॥१६४॥

**विशेषार्थ :**—जम्बूद्वीपका विस्तार १ लाख यो० । बाएँ ५२६२२ योजन है ।

$$\text{जीवा} = [ ४ \{ ( \frac{१०००००}{२} )^२ - ( \frac{१०००००}{२} - \frac{१००००}{१६} )^२ \} ]^{\frac{१}{२}}$$

$$= [ ४ \{ ( \frac{५०००००}{२} )^२ - ( \frac{४९०००००}{२} )^२ \} ]^{\frac{१}{२}}$$

मार्गदर्शक :- आचार्य श्री सुप्रसन्नलाल जी महाराज

$$= [ ४ \{ \frac{२५०००००००००}{१} - \frac{२४०१०००००००००}{३६१} \} ]^{\frac{१}{२}}$$

$$= [ ४ \times \frac{१८६०००००००००}{३६१} ]^{\frac{१}{२}}$$

$$= \sqrt{\frac{७४६००००००००००}{३६१}} = \frac{२७४६५४}{१६} \text{ अर्थात् } १७४७१\frac{१४}{१६} \text{ योजन भरतक्षेत्रकी उत्तर-}$$

जीवाका प्रमाण है ।

भरत क्षेत्रके धनुषका प्रमाण—

भरहस्त चाबपुच्छं, पञ्च-सयम्भहिम-चउदस-सहस्ता ।

अश्वीस जोयणाहं, हवन्ति एककारस कलाजो ॥१६५॥

१४५२८ । ११ ।

अर्थ:—भरतक्षेत्रका धनुषका चौवह हजार पांच सौ अट्ठाईस योजन और एक योजनके उन्नीस भागोंमेंसे चारह भाग प्रमाण है ॥१६५॥

वित्तोपाय:—व्यास १ लाख यो० । बाण ५२६५६ योजन ।

$$\text{धनुःपृष्ठ} = [ २ \{ ( \frac{१०००००}{१} + ५२६\frac{६}{१६} )^२ - ( १००००० )^२ \} ]^{\frac{१}{२}}$$

$$= [ २ \{ ( १००५२६\frac{६}{१६} )^२ - ( १००००० )^२ \} ]^{\frac{१}{२}}$$

$$= [ २ \{ ( \frac{१६१०००००}{१६} )^२ - ( १००००० )^२ \} ]^{\frac{१}{२}}$$

$$= [ \{ २ ( \frac{३६४८१०००००००००}{३६१} - \frac{३६१०००००००००००}{१} ) \} ]^{\frac{१}{२}}$$

$$= [ २ \times \frac{३८१००००००००००}{३६१} ]^{\frac{१}{२}}$$



$$= \sqrt{\frac{66200000000}{361}} = \frac{2560 \times 3}{16} \text{ अर्थात् } 480 \times 3 \text{ योजन भरतक्षेत्रके घनपृष्ठ}$$

का प्रमाण है ।

भरतक्षेत्रकी चूलिकाका प्रमाण—

यामिहोक्तः — अथर्ववेदोक्तं तु यामिहोक्तं तद्वैदिकं  
 लोयवत् - सप्तल्लोयवत्, अथ - सप्त, पंचहस्तरी - अर्जुन ।  
 तेरस - अथ - कलाश्री, भरह - खिरी - चूलिका एसा ॥१६६॥

$$1562.5$$

अर्थः—यह भरतक्षेत्रकी चूलिका एक हजार आठ सौ पंचहस्तर योजन और एक योजनके उत्तरोत्तर भागोंमेंसे तेरहके भागे अर्थात् साढ़े छह भाग प्रमाण ( १५६२.५ यो० ) है ॥१६६॥

विशेषार्थः—[ ( भरतक्षेत्रकी उत्कृष्ट जीवा ३९५१.५५ — ३९५१.११ सप्त जीवा ) × ३ ] = ३९५१.११ × ३ = १५६२.५३ योजन भरतक्षेत्रकी चूलिकाका प्रमाण है ।

भरतक्षेत्रकी पार्श्वभुजाका प्रमाण—

एक - सहस्रह - सप्त, बाजठवी ज्योत्स्नाणि भागा वि ।  
 पण्णारसह एसा, भरहखेसस पक्ष - भुजा ॥१६७॥

$$1562.5$$

अर्थः—भरतक्षेत्रकी पार्श्वभुजा एक हजार आठसौ बानवें योजन और एक योजनके उत्तरोत्तर भागोंमेंसे पन्द्रहके भागे अर्थात् साढ़े सात भाग ( १५६२.५ यो० ) प्रमाण है ॥१६७॥

विशेषार्थः—( भरतक्षेत्रका उत्कृष्ट भुज ३९५१.५५ — ३९५१.११ सप्त भुज ) × ३ = ३९५१.११ × ३ = १५६२.५३ योजन भरतक्षेत्रकी पार्श्वभुजाका प्रमाण है ।

[ तालिका नं० ५ अगले पृष्ठ पर देखिये ]

ताम्रिका : ५

भरतकोश और विजयार्थ व्यास, जीवा, धनुष, शूद्रिका तथा पार्श्वसुजाता प्रभारां

[illegible]

## पथ-द्रहका विस्तार—

हिमवन्तावल - सक्के, पउम-इहो पुब्ब - पच्छिमायामो ।

एण - समय - जोयरण - इहो, तव्वुगुणावाम - संयुज्जो ॥१६८॥

५०० । १००० ।

अर्थ :— हिमवान् पर्वतके मध्यमें पूर्व-पश्चिम लम्बा पथसरोवर है । जो पाँच सौ योजन विस्तार और इससे दुगुने आयामसे सम्पन्न है । अर्थात् ५०० योजन चौड़ा और १००० योजन लम्बा है ॥१६८॥

वस - जोयणावामहो, चउ - जोयणसेविज्जहि, संयुज्जो - योजनसंयुक्त  
तस्सि पुब्ब - बिताए, जिग्गच्छदि जिम्मगा गंगा ॥१६९॥

अर्थ :— यह द्रह दस योजन गहरा और चार तोरण एवं वेदिकाओंसे संयुक्त है । इसकी पूर्व दिशासे गंगा नदी निकलती है ॥१६९॥

## उद्गम स्थानमें गंगाका विस्तार—

छज्जोयणेक्क-कोसा, जिग्गद-ठाणम्मि होदि 'वित्थारी ।

गंगा - 'सरंगिणीए, 'उच्छेहो कोस - बल - मेस्सो ॥२००॥

जो ६ । को १ । को २ ।

अर्थ :— उद्गम स्थानमें गंगानदीका विस्तार छह योजन, एक कोस ( ६३ यो० ) और ऊँचाई आधा ( ३ ) कोस प्रमाण है ॥२००॥

## तोरणका विस्तार—

गंगा - णईए जिग्गम, ठाणे चिट्ठेदि तोरणो दिव्वो ।

चउ - जोयणाणि तुंगो, दिव्वड्ड - कोसादिरिस्सो य ॥२०१॥

६ । ३ ।

अर्थ :—गंगा नदीके निर्गम स्थानमें नौ योजन और डेढ़ कोस प्रयात् १३ योजन ऊँचा दिव्य तोरण है ॥२०१॥

तोरण-स्थित जिनप्रतिमाएँ—

धामर - धंटा - किंकिणि-धंभ-मालासएहि<sup>१</sup> कयसोहा ।

भिगार - कलस - दम्पण - पूजण - दळेहि रमणिज्जा ॥२०२॥

रयणमय-धंभ-ओज्जिद-विचित्र-वर-सालभंजिया<sup>२</sup> - रम्मा ।

अज्जिदणीस - मरगाय - कक्केयण - पडमराय - जुदा ॥२०३॥

सत्तिकंत - सूरकंत - प्पमुह<sup>३</sup> - मयूखेहि नासिय-तमोघा ।

संबंत<sup>४</sup> - कणयदामा<sup>५</sup>, अणादि - निहणा<sup>६</sup> अणुबभाणा ॥२०४॥

धत्त-तयादि-सहिवा, वर रयणमईओ फुरिख-किरणोघा ।

सुर-खेयर-महिवाओ, जिण-पडिमा तोरणवरि जिवसंति ॥२०५॥

अर्थ :—इस तोरणपर धामर, धंटा, किंकिणी ( क्षुद्र घण्टिका ) और सैकड़ों वन्दन-मालाओंसे शोभायमान; भारी, कलश, दंपण तथा पूजा-दण्डोंसे रमणीय; रत्नमय स्तम्भोंपर नियोजित विचित्र और उत्तम पुस्तलिकाओंसे सुन्दर; वज्र, इन्द्रनील, मरकत, कर्कत एवं पद्मराग मणियोंसे युक्त; चन्द्रकान्त, सूर्यकान्त प्रमुख मणियोंकी किरणोंसे अंधकार समूहको नष्ट करनेवाली; धटकती हुई स्वर्णमालाओंसे सुशोभित, अनादि-निधन, अनुपम, छत्र-वयादि सहित, उत्तम रत्नमय, प्रकाशमान किरणोंके समूहसे युक्त और देखों एवं विद्याधरोंसे पूजित जिनप्रतिमाएँ विराजमान हैं ॥२०२-२०५॥

प्रासाद एवं दिवकन्या देवियाँ—

तम्हि सम-भूमि-भागे, पासावा विविह-रयण-कथयमपा ।

वज्ज - कवाडेहि जुदा, वड - तोरण - वेदिया - फुत्ता ॥२०६॥

१. घ. ब. क. ब. य. उ. मालासहेह । २. घ. ब. क. उ. सालभंजियारम्भो । ३. घ. ब. क. ब. य. उ. मईसेहि । ४. घ. ब. क. ज. उ. संबट । ५. क. ज. य. उ. कणयदामो । ६. क. ज. य. उ. अणुबभाणो ।

अर्थः—यहाँ समभूमिभागमें विविधरत्नों एवं स्वर्णसे निर्मित वज्रमय कपाटों तथा चार तोरण एवं वेदिकासे युक्त प्रासाद हैं ॥२०६॥

एषेषु मंदिरेषु, ह्येति विसा - कण्ठ्याओ देवीओ ।

बहु - परिवाराणुगता, चिरवम - लावण्य - रुचाओ ॥२०७॥

अर्थः—इन प्रासादोंमें बहुत परिवारसे युक्त और अनुपम लावण्य-रूपको प्राप्त दिक्कन्या देवियाँ ( रहतीं ) हैं ॥२०७॥

कमलाकार कूट आदिका वर्णन—

पञ्चम - बहामु विसाए, पुष्पाए थोव - भूमिसेत्तम्मि ।

गंगा - गर्वण मण्णे, उभासवि पञ्चम - चिहो कूडो ॥२०८॥

अर्थः—पञ्चमहसे पूर्व दिशामें थोड़ीसी भूमिपर गंगा नदीके बीचमें कमलके सप्रभा कूट प्रकाशमान हैं ॥२०८॥

विद्यसिय - कमलाधारो, रस्सो वेत्तलिय-जाल-संजुत्तो ।

तस्स बला 'अहरत्ता, पत्तेवर्क कोस - दलमेत्त' ॥२०९॥

अर्थः—खिले हुए कमलके आकारवाला यह रमणीय कूट वेदूर्य ( मणि ) की नाससे संयुक्त है । उसके पत्ते अत्यन्त जाल हैं । उनमेंसे प्रत्येकका विस्तार अर्ध ( १/२ ) कोस प्रमाण है ॥२०९॥

सप्तिसा वु उबारि उडओ, एककं कोसं ह्वेवि एवत्त ।

वो कोसा वित्थारो, चामीयर - केसरेंहि संजुत्तो ॥२१०॥

अर्थः—पानीसे ऊपर इसकी ऊँचाई एक कोस तथा विस्तार दो कोस है । यह कमल स्वर्ण-मय परागसे संयुक्त है ॥२१०॥

हणि - कोसोवय - उडो, रयणमई तस्स कण्ठिया होवि ।

तोए उबारि चेदुवि, पासाओ मणिमओ विम्बो ॥२११॥

अर्थ :—उस कमलाकार कूटकी रत्नमय-काणिका एक कोस ऊँची और इतने ही ( एक कोस ) विस्तारसे युक्त है । उसके ऊपर महिमय दिव्य भवन स्थित है ॥२११॥

तप्पासादे<sup>१</sup> विवसहि, वेंतरदेवी बसेसि विवसावा<sup>२</sup> ।

<sup>१</sup>एक - पतिविवसहि, ... <sup>२</sup>एक - पतिविवसहि, ... ॥२१२॥

अर्थ :—उस भवनमें बसा ( इस ) नामसे प्रसिद्ध, एक पत्योपम आयुवाली और बहुत परिवारसे युक्त अन्तर देवी निवास करती है ॥२१२॥

गंगा नदीका वर्णन—

एवं पञ्च - बहावो, पञ्च - सया जोषणाणि गंतूणं ।

गंगा-कूटमपत्ता<sup>३</sup>, जोषण - अद्धेण दक्षिणावसिया ॥२१३॥

अर्थ :— इस प्रकार गङ्गा नदी पञ्चदशसे पाँचसी योजन आगे जाकर और गंगाकूट तक न पहुँचकर उससे अर्ध योजन पहिले ही दक्षिण की ओर मुड़ जाती है ॥२१३॥

चुल्ल - हिमवंत - रुंवे, अदि-रुंवे<sup>४</sup> सोषिदूण अद्धकवे ।

दक्षिण - भागे पठवह - उबरिम्मि हवेदि णइ - बीहं ॥२१४॥

अर्थ :—सुप्र हिमवान्के विस्तारमेंसे नदीके विस्तारको घटाकर अवशिष्टको आधा करने पर दक्षिण भागमें पर्वतके ऊपर नदीकी लम्बाईका प्रमाण प्राप्त होता है ॥२१४॥

विशेषार्थ :—हिमवान् पर्वतका विस्तार १०५२३३ योजन है और नदीका विस्तार ६३ योजन है । पर्वतके विस्तारमेंसे नदीका विस्तार घटाने पर ( ३०५०० — ६३ ) = ३०४३७ योजन अवशेष रहे । इनको आधा करनेपर ( ३०४३७ ) = १५२१८ योजन हिमवान् पर्वतके ऊपर दक्षिण-भागमें गंगा नदीकी लम्बाईका प्रमाण प्राप्त होता है ।

पञ्च - सया तेबीसं, अद्दुहवा<sup>५</sup> ऊणत्तीस - साणा य ।

दक्षिणतो आगच्छिप, गंगा गिरि - अग्निमयं पत्ता ॥२१५॥

१५२३।३३।८।<sup>६</sup>

१. व. व. क. ज. उ. तप्पासादा । २. द. व. क. ज. उ. विवसादे । ३. व. एक ।

४. द. व. क. ज. उ. मपत्तो । ५. द. व. वंस्साचिदूण । ६. द. अद्दुहवा, व. क. ज. व. उ. अद्दुहवा ।

७. व. ३३ ।

अर्थ :—पाँचसी तेईस योजन और आठसे गुणित ( उन्नीस ) अर्थात् एकसी बावनसे

उनसीस भाग  $(\frac{1052 \frac{12}{16} - 6 \frac{1}{4}}{2} = 523 \frac{28}{162} \text{ योजन})$  प्रमाण दक्षिणसे आकर गङ्गा नदी पर्वतके तटपर स्थित जिह्निकाको प्राप्त होती है ॥२१४॥

हिमवन्त-अंत-मणिमय-नर-कुंड-मुहम्मि बसह - रुक्मि ।

पविसिय निबड्ड 'धारा, दस-जोयन-विस्थरा थ ससि-भवला ॥२१६॥

अर्थ :—हिमवान् पर्वतके अन्तमें वृषभाकार मणिमय उत्तम कुंडके मुखमें प्रवेशकर गंगस्त्री चन्द्रमाके समान भवत और दस योजन विस्तारवाली धारा नीचे गिरती है ॥२१६॥

छज्जोयमेवक - कोसा, पवासियाए हवेवि विक्खंमो<sup>१</sup> ।

'आयामो वे कोसा, तेलियमेस'<sup>२</sup> च बहुलसं ॥२१७॥

॥ ६ । को १ । को २ । को २ ॥

अर्थ :— उस प्रणालीका विस्तार छह योजन और एक कोस ( ६३ योजन ), तम्हारी दो कोस और बाहुल्य भी इतना ( दो कोस ) ही है ॥२१७॥

• 'सिंग-मुह-कण्ण-जोहा-लोयन-मुवाविएहि' गो-सरिसो ।

बसहो त्ति तेण भण्णइ, रयणमई जीहिया तत्थ ॥२१८॥

अर्थ :— वह प्रणाली सींग, मुख, कान, जिह्वा, लोचन ( नेत्र ) और भृकुटि आदिकसे गौके सदृश है, इसीलिए उस रत्नमय जृम्भिकाको "वृषभ" कहते हैं ॥२१८॥

पणुवीस<sup>३</sup> जोयणार्णि, हिमवन्ते तत्थ 'अंतरेदूण'<sup>४</sup> ।

दस - जोयन - विस्थारे, गंगा - 'कुंडम्मि निबड्डवे गंगा ॥२१९॥

अर्थ :— वहाँ पर गंगा नदी हिमवान् पर्वतको पच्चीस योजन छोड़कर दस योजन विस्तार वाले गङ्गाकुण्डमें गिरती है ॥२१९॥

१. क. ज. द. य. उ. धारा । २. क. ज. य. उ. विक्खंमा । ३. क. ज. य. उ. पायामा ।

४. ब. क. उ. तेलियमेस । ५. ज. य. सिंह । ६. द. ब. क. ज. य. उ. भूवाविएहि गसरिसो । ७. ब. पणु-

वीस । ८. क. ज. य. उ. अंतरेदूणा । ९. द. ब. क. ज. य. उ. कुंडम्मि ।

पञ्चवीस - जोयणाई, धाराए<sup>१</sup> मुहम्मि होवि<sup>२</sup> विस्संभो ।

<sup>३</sup>सग्गायणि - कत्तारो, एवं नियमा पक्खेवि ॥२२०॥

। २५ ।

पाठान्तर ।

अर्थ :—धाराके मुखमें गंगा नदी का विस्तार पञ्चोस योजन है । सग्गायणीके कर्ता इस ( प्रकार ) नियमसे निरूपण करते हैं ॥२२०॥

सम्पादक . . . . . श्री मुद्रिणीयमान श्री महा

पाठान्तर ।

गंगाकुण्डका विस्तार आदि—

जोयण - सट्ठी - रुवं, समवट्टं<sup>४</sup> अस्थि तस्य वर-कुंडं ।

दस - जोयण - उण्ण्वेहं<sup>५</sup>, मणिमय - सोढाण-सोहिल्लं ॥२२१॥

। ६० । १० ।

अर्थ :—वहाँ पर साठ योजन विस्तार वाला, समवृत्त ( गोल ), दस-योजन गहरा और मणिमय सीढ़ियोंसे शोभायमान उत्तम कुण्ड है ॥२२१॥

वासट्ठि जोयणाई, दो कोसा होवि कुंड - विस्वारो ।

सग्गायणि - कत्तारो, एवं नियमा निरुवेवि ॥२२२॥

। ६२ । को २ ।

पाठान्तर ।

अर्थ :—उस कुण्डका विस्तार वासठ योजन और दो कोस ( ६२३ यो० ) है, सग्गायणीके कर्ता इस ( प्रकार ) नियमसे निरूपण करते हैं ॥२२२॥

पाठान्तर ।

१. क. धाराए, म. व. उ. धाराय । २. क. ज. व. उ. विस्संभा । ३. द. सग्गाणि कत्तायण-  
वणिमय मा । ४. संगावाणे कत्तारो । ५. क. ज. उ. सग्गाणिकत्तायण । ६. द. क. ज. व. उ. उण्ण्वेवं ।



अर्थः—उसके ऊपर अष्टौकुण्डोपरिस्तराकर जो यहारण

चउ-तोरण-वेदि-जुवो, सो कुंडो तस्स होवि बहुमज्जे ।  
दोवो रयण-विचियो, चउ-तोरण-वेदियाहि कयसोहो\* ॥२२३॥

अर्थ :—वह कुण्ड चार तोरण और वेदिकासे युक्त है । उसके बहुमध्यभागमें रत्नोंसे विचित्र और चार तोरण एवं वेदिकासे शोभायमान एक द्वीप है ॥२२३॥

वस-जोयण-उच्छेहो, सो जल-मज्झमि अट्ट-विरयारो\* ।  
जल-उर्वारि दो कोसो, तम्मज्जे होवि वज्जमय-सेसो\* ॥२२४॥

[ १० । ८ । को २ ।

अर्थ :—वह द्वीप जलके मध्यमें दस योजन ऊँचा और आठ योजन विस्तार वाला तथा जलके ऊपर दो कोस ( ऊँचा ) है । इसके बीचमें एक वज्रमय शूल स्थित है ॥२२४॥

शूल एवं उसके ऊपर स्थित प्रासादका वर्णन—

मूले मज्जे उर्वारि, चउ-बुग-एक्का कमेण विट्ठियणो\* ।  
दस-जोयण-उच्छेहो, चउ-तोरण-वेदियाहि कयसोहो\* ॥२२५॥

[ ४ । २ । १ । १० ।

अर्थ :—उस ( शूल ) का विस्तार मूलमें चार योजन, मध्यमें दो योजन और ऊपर एक योजन है । वह दस योजन ऊँचा और चार तोरण एवं वेदिकासे शोभायमान है ॥२२५॥

तप्पव्वहस्स उर्वारि, बहुमज्जे होवि दिव्व - पासादो\* ।  
वर - रयण - कंथममो, गंगाकुंडोति नामेण ॥२२६॥

अर्थ :—उस पर्वतके ऊपर बहुमध्यभागमें उत्तम रत्नों एवं स्वर्णसे निर्मित और गङ्गाकूट नामसे प्रसिद्ध एक दिव्य प्रासाद है ॥२२६॥

चउ - तोरणेहि जुलो, वर-वेदी-परिगदो\* विचिसयसो ।  
बहुविह - जंत\* - सहस्सो, सो पासादो गिहवमाणो ॥२२७॥

१. क. ज. व. सोहो । २. क. ज. व. उ. विरयारा । ३. क. ज. व. उ. सेसो । ४. क. व. य. उ. विट्ठियणो । ५. क. ज. उ. सोहो । ६. क. ज. व. उ. पासादा । ७. द. व. क. ज. व. उ. परिगदो । ८. क. ज. व. उ. जंत ।

गणना : २२८-२२९ ] [ ६७ ]

अर्थ :—वह प्रासाद चार तीरणोंसे युक्त, उत्तम वेदीसे वेष्टित, अतिविचित्र, बहुत प्रकारके हजारों यंत्रों सहित और अनुपम है ॥२२७॥

मूले मङ्गले उर्वारि, ति-कु-एक-सहस्र-वंश-विष्टारो ।  
वोष्णि - सहस्रोत्तुंगो, सो वीसदि कूट - संकासो ॥२२८॥

। ३००० । २००० । १००० । २००० ।

अर्थ :—वह प्रासाद मूलमें तीन ( ३००० ) हजार, मध्यमें दो ( २००० ) हजार और ऊपर एक ( १००० ) हजार धनुष प्रमाण विस्तार युक्त है तथा दो ( २००० ) हजार धनुष प्रमाण ऊँचा होता हुआ कूट सदृश दिखता है ॥२२८॥

तस्सम्भंतर - शंखो, पञ्चासम्भृति - सप्त - सप्त-वंश ।  
चालीस - चाव - वासं, असीवि - उष्यं च तद्धारं ॥२२९॥

७५० । ४० । ८० ।

अर्थ :—उसका अभ्यन्तर विस्तार सातसौ पचास ( ७५० ) धनुष है तथा द्वार चालीस धनुष विस्तारवाला एवं अस्सी धनुष ऊँचा है ॥२२९॥

[ तालिका ६ अगले पृष्ठ पर देखिये ]

तद्विष्णुः ५

~~सामयिक :- आचार्य श्री सुबोधिसागर~~

गङ्गा-सिन्धु नदियोंसे सम्बन्धित प्रजाती, कुण्ड एवं द्वीप प्रायिके विस्तार प्रायिके तालिका—

ग्रा० २३५-२२६

[illegible]

मणि-सोरण-रमणिकुण्डं, वर-वण्ण-कण्ण-कुण्ड-सोहित्तं ।

णाणाविह - रयणपत्ता - जिण्णुज्जोयं विराज्जे वारं ॥२३०॥

संस्कृत :- उत्तम उत्तम रमणीय सोहणीय, उत्तम वण्णमय दो कपाटोंसे शोभायमान और अनेक प्रकारके रत्नोंकी प्रभासे नित्य प्रकाशमान होता हुआ सुशोभित है ॥२३०॥

वर-वेदि-परिक्लिप्ते, चउ-गोउर-भंडितम्मि वासावे ।

रम्मुज्जाणे<sup>१</sup> तस्सि<sup>२</sup>, गंगादेवी सयं वसइ ॥२३१॥

अर्थ :- उत्तम वेदीसे वेष्टित, चार गोपुरोंसे सुशोभित तथा रमणीय उद्यानसे युक्त उस भवनमें स्वयं गङ्गादेवी रहती है ॥२३१॥

गंगाकूट पर स्थित जिनेन्द्र प्रतिमाका स्वरूप—

अवणोवरि कडम्मि य, जिज्जिह-पडिमाओ<sup>३</sup> सासव-ठिदीओ<sup>४</sup> ।

वेहु<sup>५</sup> ति किरण - मंजस - उज्जोइद - सयस - आसाओ<sup>६</sup> ॥२३२॥

अर्थ :- उस भवनके ऊपर कूटपर किरण-समूहसे सम्पूर्ण दिशाओंको प्रकाशित करनेवाली और शाश्वत स्थितिवाली अर्थात् अकृत्रिम जिनेन्द्र प्रतिमाएँ स्थित हैं ॥२३२॥

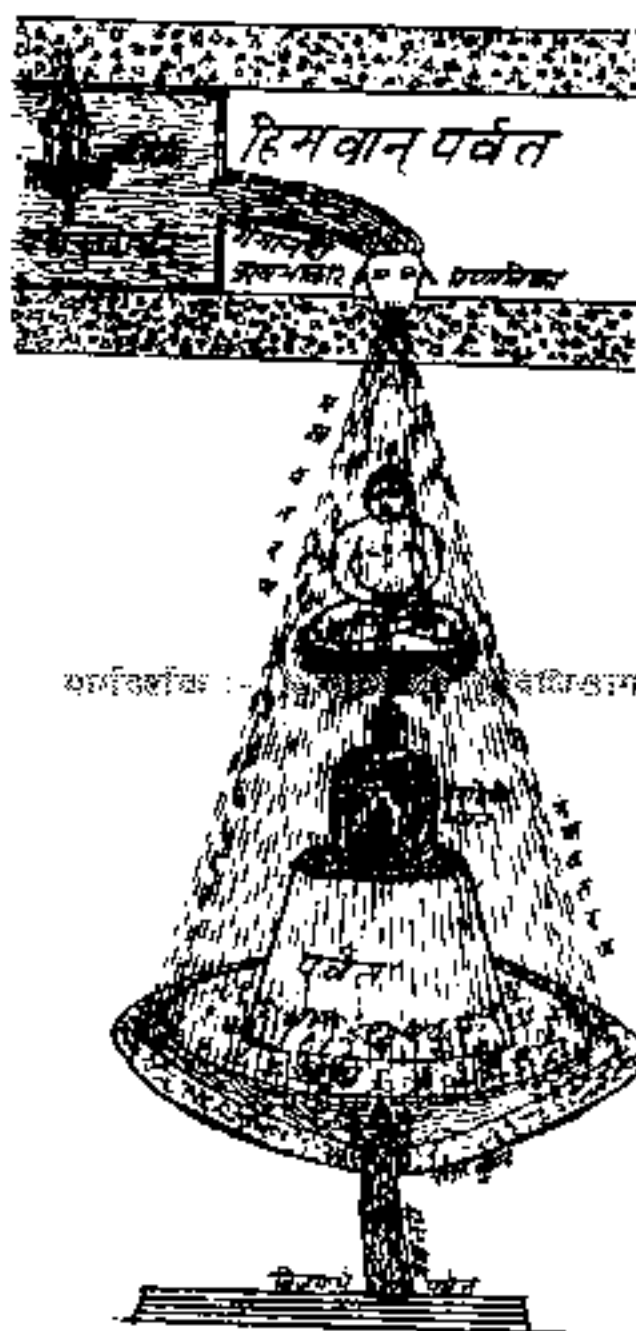
आवि-जिणप्पडिमाओ, ताओ जडा-मउउ-सेहुरित्ताओ<sup>७</sup> ।

पडिमोवरिम्मि गंगा, 'अभिस्सि<sup>८</sup> - मणा व सा पडवि ॥२३३॥

अर्थ :- आदि जिनेन्द्रको ये प्रतिमाएँ जटा-भुकुटरूप सेखर सहित हैं । इन प्रतिमाओंपर वह गंगानदी मानो भनमें अभिवेककी भावना रखती हुई (ही) गिरती है ॥२३३॥

[ चित्र अगले पृष्ठ पर देखिये ]

१. द. मंदरम्मि । २. क. ख. ग. ड. रम्मुज्जाणं । ३. क. ज. य. त. तासं । ४. व. व. क. त. पडिमाओ । ५. द. क. ज. विदीओ, व. उ. रवोउ । ६. व. वसओ, क. व. स. उ. दिसओ । ७. द. तोओकव मउउ पातेहु रित्ताओ । ८. क. व. ज. उ. तोउज्जव मउउ पातेहु रित्ताओ । ९. व. क. ज. व. अभिस्सि<sup>८</sup>मणप्पसा, क. उ. अभिस्सि<sup>८</sup>मणप्पसा ।



‘पुष्पि-पञ्चज-पीठा’, कमलोदर-सरित-वष्ण-वर-वेहा ।

पद्म-जिण्ण-प्रदिसाओ, भजति ये ताण वेति जिम्माणं ॥२३४॥

अर्थ :—आदि जिनेन्द्रकी वे प्रतिमाएँ खिले हुए कमलासनपर विराजमान हैं और कमलके उदर ( मध्यभाग ) सहस्र वर्णवाले उत्तम शरीरसे युक्त हैं । जो ( भव्य जीव ) इनकी उपासना करते हैं उन्हें वे निर्वाण प्रदान करती हैं ॥२३४॥

गङ्गानदीका अक्षरोंग वर्णन -  
यामिस्त्वोऽयं गङ्गायाः श्री सुविमलसामरं श्री भूमावतः

कुण्डस्त दक्षिणेण, तोरण - वारेण 'णिग्गदा' गंगा ।

भूमि - विभागे 'वक्का, होइए' गवा य रज्जवगिरि ॥२३५॥

अर्थ :—गङ्गानदी इस ( गंगा ) कुण्डके दक्षिण तोरणद्वारसे निकसती हुई और भूमि-प्रदेशमें मुड़ती हुई रजतगिरि ( विजयार्ध ) को प्राप्त हुई है ॥२३५॥

रम्मासारा<sup>१</sup> गंगा, संकुसिद्धरां<sup>२</sup> पि वूरवो<sup>३</sup> एसा ।

विजयड्डगिरि-गुहाए, 'पविसवि' 'स्विदो - जिसे भुजंगी ॥२३६॥

अर्थ :—यह रम्माकार गङ्गानदी दूरसे ही संकुचित होती हुई विजयार्ध पर्वतकी गुफामें इसप्रकार प्रवेश करती है जैसे भुजंगी ( सर्पिणी ) क्षितिबिज (बाँधी) में ( प्रवेश करती है ) ॥२३६॥

गंगा - तरंगिणीए, 'उभयत्तड - वेदियाण वण - संडा ।

अत्तुट्ट - सखेणं, 'संपत्ता रज्ज - सेलंतं ॥२३७॥

अर्थ :—गङ्गानदीकी दोनों ही तट-वेदियों पर स्थित वन-खण्ड अखण्डरूपसे रजत ( विजयार्ध ) पर्वत तक चले गये हैं ॥२३७॥

वर - वज्ज - कवाडाणं, संवरण - पवेसणाइ भोत्तूण ।

सेस - गुह्कभंतरये, गंगा - तड - वेदि - वण - संडा ॥२३८॥

अर्थ :—उत्तम वज्रमय कपाटीके संवरण और प्रवेशभागको छोड़कर गङ्गातटवेदी सम्बन्धी शेष वन खण्ड गुफाके भीतर हैं ॥२३८॥

१ य. शिखरा । २ क. ज. य. उ. वक्को । ३ व. उ. रम्मायाए, क. ज. य. रम्मायारा ।

४ क. ज. य. उ. दूरिदी । ५ व. व. क. ज. उ. परिवदि । ६ व. व. क. ज. य. उ. भेदाभिसेभुमविद् ।

७ व. क. ज. य. उ. उभयंतर । ८ व. व. क. ज. उ. संपत्ति, व. संपत्त ।

रुप्यगिरिस्स<sup>१</sup> गृहाए, नमण - पवेसम्मि होवि वित्तारो ।  
मंगातरंगिणीए, अहु<sup>२</sup> चिय जोयणाणि पुढं ॥२३६॥

अर्थ :—रुप्याचल ( विजयार्ध ) की गुफामें प्रवेश करनेके स्थानपर गङ्गानदीका विस्तार बाठ योजन प्रमाण हो जाता है ॥२३६॥

उन्मग्ना-निमग्ना नदियोंका स्वरूप—

विजयङ्गगिरि - गृहाए<sup>३</sup>, संगंतुणं ओयणाणि पणुवीसं<sup>४</sup> ।  
पुम्मावराणदाओ<sup>५</sup>, उम्मग्ग - निमग्ग - सरिआओ ॥२४०॥

अर्थ :—विजयार्ध पर्वतकी गुफामें प्रवेश करनेके स्थानपर उन्मग्गु और निमग्गु नामके दो नदियां पूर्व-पश्चिमसे आई हुई हैं ॥२४०॥

जिय-जलप्रवाह-पडिदं, दब्बं<sup>६</sup> गहवं पि नेवि उवरित्तं<sup>७</sup> ।  
जम्हा तम्हा भण्णइ, उम्मग्गा बाहिणी एसा ॥२४१॥

अर्थ :—क्योंकि यह नदी अपने जलप्रवाहमें गिरे हुए भारीसे भारी द्रव्यको भी ऊपरी तटपर ले जाती है, इसलिए यह नदी 'उन्मग्ना' कही जाती है ॥२४१॥

जिय-जल-भर-उवरि<sup>८</sup>-गहं, दब्बं सहुगं पि नेवि हेहुम्मि ।  
जेणं तेणं भण्णइ, एसा सरिया निमग्ग सि ॥२४२॥

अर्थ :—क्योंकि यह अपने जलप्रवाहके ऊपर आई हुई हलकीसे हलकी वस्तुको भी नीचे ले जाती है, इसीलिए यह नदी 'निमग्ना' कही जाती है ॥२४२॥

१. ज. व. गिरि । २. द. क. ज. य. गृहाए नदूए । ३. ज. क. य. पणुवीस, ज. पुणुवीस ।

४. ज. पुम्मावरा एदाओ, क. पुम्मावराण दाओ । ५. व. ज. सरियाओ । ६. क. गहवं पि रोद उवरिमि ।

७. गहवं पि नेदि उवरिमि । ८. गुरुवम्मि नेदि उवरिमि । ९. गहवं पिसो उवरिमि ।

३. ज. य. जवाह-पडिद ।

सेल - गुहा - कु'डारां, मणि - तोरणद्वार निस्सरंतीषो ।

बद्ध<sup>१</sup> - रयज-<sup>२</sup>निर्मित-संकम-बहुवीज<sup>३</sup> विस्त्रिणा ॥२४३॥

बण - वेदो - परितस्ता, पसेकं दोष्णि जोयणायामा ।

वर - रयजमया गंगा - कईए पवहम्मि पविसंति ॥२४४॥

अर्थ :—( ये दोनों नदियाँ ) पर्वतीय गुफा-कुण्डोंके मणिमय तोरण द्वारोंसे निकलती हुई बद्ध ( स्थपति ) रत्नसे निर्मित संकम ( एक प्रकारके पुल ) आदिसे विभक्त, वन-वेदोंसे वेष्टित, प्रत्येक ( नदी ) दो योजन प्रमाण आधाय सहित और उत्कृष्ट रत्नोंसे युक्त होती हुई गंगालदीके प्रवाहमें प्रवेश करती है ॥२४३-२४४॥

गंगाका विजयार्धसे निकलकर समुद्रप्रवेश आदि—

पञ्चास - जोयणाहं, अहिपं गंतुण पठवय - गुहाए ।

दक्षिण - दिस - वारेजं, सुभिवा भोगीव - जिग्गदा गंगा ॥२४५॥

अर्थ :—गङ्गानदी पचास योजन अधिक जाकर पर्वतकी गुफाके दक्षिण दिशाके द्वारसे कोधित हुए सर्पके सहस्र निकलती है ॥२४५॥

निस्सरित्ठणं एसा, दक्षिण-भरहम्मि<sup>४</sup> रण्य-सेतावो ।

उणवीसअहिय - सयं, अताच्छवि जोयणा अहिवा ॥२४६॥

। ११६ । ३८ ।

अर्थ :—यह नदी विजयार्ध पर्वतसे निकलकर एकसौ उन्नीस योजनोसे कुछ अधिक दक्षिण-भरतमें आती है ॥२४६॥

विशेषार्थ :—भरतक्षेत्रका प्रमाण  $५२६\frac{१}{२}$  योजन है । इसमेंसे ५० योजन विजयार्धका व्यास घटा देनेपर  $( ५२६\frac{१}{२} - ५० ) = ४७६\frac{१}{२}$  योजन अवशेष रहे । इसको आधा करनेपर  $( ४७६\frac{१}{२} \div २ ) = २३८\frac{१}{४}$  योजन दक्षिण भरतक्षेत्रका प्रमाण प्राप्त होता है । गङ्गानदी विजयार्धकी गुफासे निकलकर दक्षिण भरतके अर्धभाग पर्यन्त आई है अतः  $( २३८\frac{१}{४} \div २ ) = ११९\frac{१}{८}$  योजन आकर ही पूर्व दिशामें मुड़ जाती है ।

१. ब. बत्त ( बद्ध ) घ. क. ज. घ. बद्ध । २. क. ख. घ. उ. विभिन्नता । ३. व. सुभिवा ।

४. द. क. ज. य. एसा । ५. द. ब. क. ख. य. उ. बंद ।



आगंतुष्व 'निर्वन्ते, पुष्प' - मुहे 'मागहम्मि तित्थयेरे ।

बोद्धस - सहस्स - सरिया - परिवारा पवित्तये 'उवहि ॥२४७॥

अर्थः—इस प्रकार गङ्गामदी दक्षिण ~~अक्षरों के अनुसार और पूर्व में जो~~ मुक्त कर दी गई है।  
प्रमाण परिवार नदियोंसे युक्त होती हुई अन्ततः मागस तीर्थपर समुद्रमें प्रवेश करती है ॥२४७॥

गंगा - महाजबीए, अङ्गाइण्णेषु मेण्ण - संडेसु ।

कु'अज-सरि' - परिवारा, हुवन्ति न हु 'अज्ज-संडम्मि ॥२४८॥

अर्थः—कुण्डोंसे उत्पन्न हुई गङ्गा महामदीकी ( ये ) परिवार नदियाँ आई ध्वेजसंघोंमें  
हो हैं, आर्यसंघमें नहीं हैं ॥२४८॥

वासट्ठि ओयणाइ, वोण्णि य कोसाणि वित्थरा गंगा ।

पण कोसा 'गाइत्त', उवहि - पवेसप्पदेसम्मि ॥२४९॥

अर्थः—समुद्र-प्रवेशके प्रवेशमें गङ्गाका विस्तार वासठ-योजन दो-कोस ( ६२½ यो० )  
और गहराई पंच कोस हो जाती है ॥२४९॥

तोरणोंका सविस्तार वर्णन—

बीव-अगदीअ वासे, गह-बिल' - वदणम्मि तोरणं विव्वं ।

विबिहु-वर-रयण-सखिवं, संभट्ठिय-सालभंजिया-रिणवहुं ॥२५०॥

अर्थः—द्वीपकी वेदीके पास नदीबिस्के भुसपर अनेक प्रकारके उत्तमोत्तम रत्नोंसे अलंकृत  
और सम्भोंपर स्थित पुत्तलिकासमूहसे युक्त दिव्य तोरण है ॥२५०॥

संभाणं उच्छेहो, तेणजवी ओयणाणि तिथ कोसा ।

एवाण अंतरात्तं, वासट्ठो ओयणा 'बुवे कोसा ॥२५१॥

। यो ६३ । को ३ । ६२ । को २ ।

१. व. व. क. व. व. उ. एवन्तो । २. व. व. क. व. व. पुष्पमही । ३. य. व. मागमम्मि ।  
४. व. उवहि । ५. य. व. सरिह । ६. क. व. व. उ. वण्ण । ७. व. आयाइत्त । ८. व. व. उ. एह-विजवह-  
हम्मि । ९. एह-विजवह-हम्मि । १०. व. कुदेकोसो । क. कुदे कोसा, व. य. कुदे कोसे, व. पुरे कोसो, व.  
पुरे कोसा ।

अर्थ :—साम्भोजी ऊँचाई तेरानव योजन और तीन कोस ( ६३ ई यो० ) तथा इनका पन्तरास बासठ योजन और दो कोस ( ६२ ई यो० ) है ॥२५१॥

सुतसयादि-सहिदा', जिखिब-पडिमाओ 'तोरबुधरिम्मि ।

वेदुंति तेसदाओ, सुतरण-वेदुंति तेसदाओ ॥२५२॥

अर्थ :—तोरण पर तीन छत्रादि ( छत्र, भामण्डल और सिंहासन आदि ) सहित तथा स्मरण भावसे ही पापोंका हरण करनेवाली त्रिनेत्र प्रतिमाएँ शाश्वतरूपमें स्थित हैं ॥२५२॥

बर-तोरणस्स उबारि, पासादा होंति रणण-करायमया ।

'चउ - तोरण - वेदि - बुदी, बज्ज-कवाबुज्जल-बुवारा ॥२५३॥

अर्थ :—उत्कृष्ट तोरणके ऊपर चार तोरणों एवं वेदीसे युक्त तथा वज्रमय कपाटोंसे उज्ज्वल द्वार वाले रत्नमय और स्वर्णमय भवन हैं ॥२५३॥

एवेसु मंदिरेसु', वेसोओ दिक्कुमारि - राणाओ ।

राणाबिह - परिवारा, बेंतरियाओ 'विराधंति ॥२५४॥

अर्थ :—इन भवनोंमें नानाप्रकारके परिवारसे युक्त दिक्कुमारी नामक अन्तरदेवियाँ विराजमान हैं ॥२५४॥

सिन्धु नदीका वर्णन—

पउम - 'बहाओ पच्छिम-दारेणं सिस्सरेदि सिन्धु-रावी ।

तदुठाण-वास-'गहो, तोरण-पहुवीसु' सुरणइ-सरिष्सा ॥२५५॥

अर्थ :—सिन्धु नदी पश्चिम-दारेण के पश्चिम द्वारसे निकलती है, इसके स्थानके विस्तार एवं अवगाह ( गहराई ) तथा तोरण आदिका कथन गङ्गा-नदीके सहस्र है ॥२५५॥

१. द. क. ज. प. उ. सहिषो । २. ब. उ. तोरबुधरिम्मि । ३. द. ब. क. ज. प. उ. राणाओ । ४. द. ब. उ. चोतोरण । ५. ज. व. विराधंति । ६. प. व. पहुसु, व. दहाओ । ७. द. ब. रावी, क. ब. व. उ. रावी । ८. द. ब. पहुवीसुरादि - सरिष्सा, क. ज. प. उ. पहुवी - सुरादि - सरिष्सा ।

गंसुन बोवसुनि<sup>१</sup>, बिहू - म<sup>२</sup>अ<sup>३</sup>हो<sup>४</sup>बि<sup>५</sup>हू<sup>६</sup> कू<sup>७</sup>डो<sup>८</sup> ।  
बिलसिय - कमलस्यारो, रम्मो बैरलिय - एणस - जुडो ॥२५६॥

अर्थ :—थोड़ी दूर चलकर सिन्धु नदीके मध्यमें विकसित कमलके आकाररूप, रमणीय और वैदूर्यमणिमय नालसे युक्त एक उत्तम कूट ( कमल ) है ॥२५६॥

तस्स बला<sup>१</sup> अइरता<sup>२</sup>, शोह-जुवा<sup>३</sup> होति कोस-बल-मेस<sup>४</sup> ।  
‘जन्हेहो सलिसाहो, उवरि - पएसम्मि इगि-कोसो’ ॥२५७॥

अर्थ :—जलके उपरिम भागमें इस कूटकी ऊंचाई एक कोस है । इसके पत्ते अत्यन्त लाल हैं एवं प्रत्येक पत्ता अर्ध कोस प्रमाण लम्बाईसे युक्त है ॥२५७॥

वे कोसा ‘विस्मिण्णो, ‘तेत्तिय-मेसोदण संपुण्णो ।  
वियसंत - पडम - कुसुमोवमाण - संठण-सोहिल्लो’ ॥२५८॥

अर्थ :—( उपयुक्त ) कमलाकार कूट दो कोस विस्तीर्ण है एवं इतनी ही ( दो कोस ) ऊंचाईसे परिपूर्ण यह कूट विकसित कमल-पुष्प सदृश आकारसे शोभायमान है ॥२५८॥

इगि-कोसोदय<sup>१</sup> - वंवा, रयणमई<sup>२</sup> ‘कण्णिया य अविरम्मा ।  
तोए उवरि विज्जिस्सो, पासाहो होबि रमणिको ॥२५९॥

अर्थ :—उस कूटकी कर्णिका एक कोस ऊंची, एक कोस चौड़ी तथा रमणीय एवं रत्नमयी है । उसके ऊपर अद्भुत एवं अति रमणीय प्रासाद है ॥२५९॥

वर-रयण-कण्णममो, कुरंत-किरणोव-वासिय<sup>१</sup> तमोघो ।  
सो उसुंगसोरण - बुवार-सुंवेर<sup>२</sup> - सुद्ध - सोहिल्लो ॥२६०॥

१. य. वूपी । २. व. व. क. ज. य. उ. तणा । ३. व. ज. क. व. उ. अइरिटा । ४. क. ज. य. उ. जुडो । ५. व. क. ज. य. उ. जन्हेहा । ६. व. क. उ. कोसा । ७. य. प. कोस । ८. क. व. य. उ. विस्मिण्णो । ९. व. क. ज. उ. तत्तिय, य. तत्तिय । १०. ज. य. सोहिल्लो । ११. व. व. क. उ. कण्णिया य अविरम्मा, य. कण्णिया य अविरम्मा, व. कण्णिया य अविरम्मा । १२. व. पुंणसिबंतं, व. क. ज. उ. पणसिबंतं, य. पुणसिबंतं । १३. व. व. व. सुंवार, क. उ. वंवर, ज. सुवरा ।

अर्थ :—उत्तम रत्नों एवं स्वर्णसे निर्मित, प्रकाशमान किरणोंसे युक्त तथा अंशकार समूहको तृष्ट करने वाला यह प्रासाद उन्नत तोरणद्वारोंके सौन्दर्यसे भले प्रकार शोभायमान है ॥२६०॥

तस्मिं णिलए णिवसइ, लब्धना णामेष 'वैतरा - देवी ।

एकक - पल्लिवमाळ', गिरधम - लावण - परिपुष्पा ॥२६१॥

अर्थ :—उस भवनमें एक पश्योपम आशुवालो और अनुपम लावण्यसे परिपूर्ण तवणा नामकी ध्यन्तरदेवी रहती है ॥२६१॥

पञ्चम - दहावो पणुसय - भैत्ताइ जोयणाइ गतूण ।

सिधू - कूडमपथा', दु - कोसमेसेण वक्खिणावसिदा' ॥२६२॥

उभम-सह-वेदि-सहिदा, उववण-संडेहि सुदुदु सोहिहला ।

गंग व्व पडइ सिधू, विजयवो सिधू - कूड-उवरिस्मि ॥२६३॥

अर्थ :—पञ्चद्रहसे पाँचसौ योजन प्रमाण आगे जाकर, सिन्धुकूटको प्राप्त न होती हुई और उससे दो कोस पहिले ही दक्षिणकी ओर मुड़ती हुई, दोनों तटोंपर स्थित वेदिका सहित तथा उपवन सण्डोंसे भले प्रकार शोभायमान सिन्धु नदी गङ्गा नदीके समान जिल्हिकासे सिन्धुकूटके ऊपर गिरती है ॥२६२-२६३॥

कूड' 'वीवो 'सेसो, भवणं भवणस्स उवरिम् कूडं ।

तस्मिं जिणपडिमाओ, सण्वं पुण्वं व वसण्वं ॥२६४॥

अर्थ :—कूट, द्वीप, पर्वत, भवन, भवनके ऊपर कूट और उसके ऊपर जिनप्रतिमाएँ इन सबका कथन पहिलेके समान ही करना चाहिए ॥२६४॥

णवरि विसेसो एसो, सिधूकूडम्मि सिधुदेवि स्मि ।

बहुपरिवारेहि बुदा, उवसुंजदि विविह-सोक्खाणि' ॥२६५॥

अर्थ :—विशेषता केवल यह है कि सिन्धुकूटपर बहुत परिवार सहित सिन्धुदेवी विविध सुखोंका उपभोग करती है ॥२६५॥

गंगान्दी व सिधू, विजयवूड - गुहाज उत्तर - बुवारे ।

एविसिय वेदी - बुवा, वक्खिण - वारेण विस्सरवि ॥२६६॥

अर्थ :—गङ्गा नदीके सहस्र सिन्धु नदी भी विजयार्धकी गुफाके उत्तर द्वारसे प्रवेशकर वेदी सहित दक्षिण द्वारसे निकलती है ॥२६६॥

दक्षिण-भरहस्स<sup>१</sup>, पश्चिम पश्चिम-प्रभास-सिन्धु<sup>२</sup> ।

बोहस - सहस्र - सरिषा, परिवारा धनिसए उर्वाहि ॥२६७॥

अर्थ :—पश्चात् दक्षिण भरतके अर्धभागको प्राप्त कर चौदह हजार परिवार-नवियों सहित पश्चिम ( विषा स्थित ) प्रभास तीर्थपर समुद्र में प्रवेश करती है ॥२६७॥

तोरण - उच्छेहावी<sup>३</sup>, गंगाए बणिवा जहा पुष्प<sup>४</sup> ।

तस्सन्वा सिन्धूए, वसन्वा विजय - कुडीहि ॥२६८॥

अर्थ :—जिस प्रकार पहले गङ्गानदीके वर्णनमें तोरणोंकी ऊँचाई आदिका विवेचन किया जा चुका है, उसीप्रकार बुद्धिमानोंको उन सबका कथन यहाँ भी कर लेना चाहिए ॥२६८॥

भरतक्षेत्रके खण्ड विभाग—

गंगा - सिन्धु - नर्दाहि<sup>५</sup>, वेयड्ड - नगोण<sup>६</sup> भरहस्सन्मि ।

सस्सन्वा संजाव, तान विभागं पक्खेमो ॥२६९॥

अर्थ :—गंगा एवं सिन्धु नदी और विजयार्ध पर्वतसे भरतक्षेत्रके जो छह खण्ड हुए हैं, अब उनके विभागोंका प्ररूपण करता है ॥२६९॥

उत्तर-दक्षिण-भरह<sup>७</sup>, 'संजाणि तिन्नि होंति पत्तेकं ।

दक्षिण-तिय-संजेसु, अस्सा - संजो ति 'मज्झिम्भो ॥२७०॥

अर्थ :—उत्तर और दक्षिण भरतक्षेत्रमें प्रत्येक क्षेत्रके तीन-तीन खण्ड हैं । दक्षिण-भरतके तीन-खण्डोंमें मध्यवर्ती खण्ड आर्यखण्ड है ॥२७०॥

१. द. व. य. उत्तेहावी । २. द. व. वसन्वा, क. व. व. उ. वसन्वा । ३. द. व. क. व. व. उ. नर्दाहि । ४. द. एवे । ५. द. व. क. व. व. उ. नगोण । ६. य. व. संजाण । ७. द. व. क. व. उ. मज्झिम्भ ।

सेसा वि पंच खंडा, नामेनं ह्येति 'मेखलखंड' स्ति ।  
जसर - तिय - खंडेसु<sup>१</sup>, मज्झिम - खंडस्स बहु-मज्झे ॥२७१॥  
चवकीण भाज-मधणो, जाजा-वक्कहुर-णाम-संखणो<sup>२</sup> ।  
मूलोवरि - मज्झेसु<sup>३</sup>, रयणसओ होवि बसहगिरी ॥२७२॥

अर्थ :—ये पंचांही खण्ड मेल्लेखण्ड नामसे प्रसिद्ध हैं । उत्तर-मरुतके तीन खण्डोंमें मध्यवर्ती खण्डके बहुमध्यभागमें चवकतियोंके मानका मर्दन करनेवाला, नाना चक्रवर्तियोंके नामसे अंकित ( आच्छादित ), मूल, मध्य एवं शिखरमें सर्वत्र रत्नमय वृषभगिरि है ॥२७१-२७२॥

वृषभगिरिका वर्णन—

ओयण - सय - मुत्तिहो, पणुदीसं ओयणाणि अक्काहो ।  
एक्क<sup>४</sup> - सय - मूल-हंओ<sup>५</sup>, पणत्तरि मज्झ - वित्थारो ॥२७३॥

। १०० । २५ । १०० । ७५ ।

अर्थ :—यह पर्वत सौ ( १०० ) योजन ऊंचा, पच्चीस ( २५ ) योजन प्रमाण नींबवाला, मूलमें सौ ( १०० ) योजन और मध्यमें एकहत्तर ( ७५ ) योजन विस्तारवाला है ॥२७३॥

पण्णास - ओयणाहं, 'वित्थारो' होवि तस्स सिंहरम्मि ।  
मूलोवरि - मज्झेसु<sup>६</sup>, वेहुते वेवि - वण - संडा ॥२७४॥

अर्थ :—वृषभगिरिका विस्तार शिखरपर पचास योजन प्रमाण है । इसके मूलमें, मध्यमें और ऊपर वेदियाँ एवं वनखण्ड स्थित हैं ॥२७४॥

चउ-तोरणेहि<sup>७</sup> 'कुत्ता, 'पोक्करिणी-वावि-कूब-परिपुण्णा ।  
वीज्जदधीस - मरगय - कक्केयण - पजमरापमया ॥२७५॥  
ह्येति हु वर - पासावा, विचित्त-विण्णास-ममहराधारा ।  
विप्यंत - रयण - बीणा, बसह - गिरिवस्स सिंहरम्मि ॥२७६॥  
वर-रयण-कंजमया, जिजमक्का विविह-सुंदराधारा ।  
वेहुते वण्णजाओ, पुब्बं पिब ह्येति लब्धाओ ॥२७७॥

१. व. मेखलखंडस्मि । २. द. न. संखणु । ३. द. एक्कस्सय । ४. क. व. उ. ५५ ।

५. ज. वित्थार । ६. व. व. क. व. य. उ. कुत्तो । ७. व. क. व. य. उ. पोक्करणी ।

**अर्थः**—वृषभगिरोन्मूके शिखर पर चार तोरणों सहित, पुष्करिणियों, दामद्वियों एवं कूपोंसे परिपूर्ण; वज्र, इन्द्रनील, मरकत, कर्कतच और पद्मराग मणिबिण्णोंसे निमित्त; विचित्र रत्नमाओंसे मनोहर आकृतिको धारण करने वाले और देदीप्यमान रत्न-दीपकोंसे युक्त उत्तम भवन हैं तथा उत्तम रत्नों एवं स्वर्णसे निमित्त विविध सुन्दर आकारोंवाले जिनभवन स्थित हैं। इनका (अन्य) सब वर्णन पूर्व वर्णित प्रासादों एवं जिनभवनोंके सदृश है ॥२७५-२७७॥

**गिरि - उर्वरिण - पासावे, बसहो जामेण चैतरो देवो ।**

**बिबिह-परिवार-सहिवो, उबभुजवि बिबिह-सोफसाइं ॥२७८॥**

**अर्थः**—वृषभनाभिकी अतिरुद्धिसे चैतरोके उपरिभू भवनमें अपने विविध परिवार सहित अनेक प्रकारके सुखोंका उपभोग करता है ॥२७८॥

**एक - पलिहोवभाऊ, - दस-बाव-पमाण-वेह-उब्जेहो ।**

**पिमुहण्णो' दीहभुजो, एसो सण्णंग - सोहिस्सो ॥२७९॥**

। एकवहं गदं ।

**अर्थः**—यह देव एक पत्न्योपम आयु सहित, दस वनुष प्रमाण शरीर की ऊँचाई वाला है। विस्तृत-वक्षःस्थल और लम्बी भुजाओंवाला यह देव सर्वाङ्ग सुन्दर है ॥२७९॥

। अहं सण्णोंका वर्णन समाप्त हुआ ।

कालका स्वरूप एवं उसके भेद

**तस्स भज्जा - खंजे, जाणा - मेवेहि संखुदो कालो ।**

**बहुह तस्स सकुब्बं, बोण्णमो आणुपुब्बोए ॥२८०॥**

**अर्थः**—उस घायंसखण्डमें नाना भेदोंसे संयुक्त कालका प्रवर्तन होता है, उसके स्वरूपको भनुष्मसे कहता है ॥२८०॥

**कास-रस-गंध-वण्णेहि<sup>१</sup> विरहिदो अणुत्ताह-मुज-सुतो ।**

**बहुएण - लवणज - कसिमं, काल - सकुब्बं इमं होदि ॥२८१॥**

१. द. वसुब्बो, व. क. उ. बहुवब्बो, म. व. वसुब्बो । २. व. व. क. व. य. उ. विहसुब्बो ।

३. व. व. क. व. य. उ. वण्णोवदि ।

अर्थः—स्पर्श, रस, गन्ध और वर्ण रहित, अगुरुलघुगुण सहित और वर्तमानकाल युक्त ऐसा कालका स्वरूप है ॥२८१॥

कालस्तु वो विद्यप्सा, मुक्तामुक्ता हवन्ति एवेतुं ।

मुक्ताधार - असेनं, अमुक्ता - कालो पवट्टेवि ॥२८२॥

अर्थः—कालके मुख्य ( निश्चय ) और अमुख्य ( व्यवहार ) इस प्रकार दो भेद हैं । इनमेंसे मुख्य कालके आश्रयसे अमुख्य ( व्यवहार ) कालकी प्रवृत्ति होती है ॥२८२॥

जीवाणां पुमालाणं, हवन्ति परिवट्टणाइ विविहाइं ।

एवाणं पञ्चाया, वट्टन्ते मुक्ता - काल - आधारं ॥२८३॥

अर्थः—जीवों और पुद्गलोंमें विविध परिवर्तन हुआ करते हैं । इनकी पर्यायें मुख्य-कालके आश्रयसे प्रवर्तती हैं ॥२८३॥

सम्भाण पयत्थाणं, विममा परिणाम - पणुदि-विस्तीओ ।

वाहिरंतरंग - हेतू' हि, सम्भवेवेसु वट्टन्ति ॥२८४॥

अर्थः—सर्व पदार्थोंके समस्त भेदोंमें नियमसे बाह्य और अभ्यन्तर निमित्तोंके द्वारा परिणामादिक ( परिणाम, क्रिया, परत्वापरत्व ) वृत्तिमां प्रवर्तती है ॥२८४॥

वाहिर-हेतू' कहिओ, निच्छय-कालो त्ति सम्भवरिस्तीहि ।

अवभंतरं निमित्तं, जिय जिय वज्जेसु वेट्ठेवि ॥२८५॥

अर्थः—सर्वज्ञदेवने निश्चय कालको सर्व पदार्थोंके प्रवर्तनेका बाह्य निमित्त कहा है । अभ्यन्तर निमित्त ( स्वयं ) अपने-अपने द्रव्योंमें स्थित है ॥२८५॥

कालस्ताणू-भिण्णा, 'अण्णोण - पवेसणेण परिहीणा ।

पुह पुह सोयायासे, वेट्ठन्ते 'संचण्ण विणा ॥२८६॥

अर्थः—अन्योन्य-प्रवेशसे रहित कालके भिन्न-भिन्न अणु संघयके विना लोकाकाशमें पृथक्-पृथक् स्थित हैं ॥२८६॥



**व्यवहारकालके भेद एवं उनका स्वरूप—**

समयावलि - उत्सासा, पाजा पोवा य आरबिया 'मेवा ।

बज्रहार - कास - नामा, निदिहा बीयरएहि ॥२८७॥

अर्थ:—समय, आवृत्ति, उच्छ्वास, प्रीति एवं स्तोक इत्यादिक भेद बीतराग भगवानक द्वारा व्यवहार कालके नामसे निषिद्ध किये गये हैं ॥२८७॥

परमाणुस्य गिय-ट्रिव-गयण-यष्टेसस्सद्विक्रमस्य<sup>१</sup>-मेतो ।

જો નાસો અભિભાગો, હોવિ પુષ્પ સમય - નામો સો ॥૨૬૬॥

अर्थ:- पुद्गल-परमाणुका निकटमें स्थित आकाश-प्रदेवाके अतिक्रमण-प्रमाण जो अविभागी काल है, वही 'समय' नामसे प्रसिद्ध है ॥२८८॥

होति ह्यसंख्य-समया, आबलि-शायो' तत्रैव उत्सासो ।

संसेक्यावलि-भिषहो, सो जियम<sup>४</sup> पाणो ति बिस्साको ॥२६॥

॥ ३० ॥

अर्थ :—असंख्यात समयोंकी आवृत्ति और संख्यात अवधियोंके समूहरूप उच्छ्वास होता है। यही उच्छ्वास काल 'प्राण' नामसे प्रसिद्ध है ॥२८६॥

सप्तुत्सासो योषो, सप्तयुक्ता<sup>५</sup> लज्जिणि गारुडो ।

सप्तसरि - दलित - सभा, गान्धी जे गान्धिया ग्रहसं च ॥२६०॥

|   |   |    |   |   |   |
|---|---|----|---|---|---|
| १ | १ | ७७ | १ | १ | ७ |
| ७ | ७ | २  | २ |   |   |

अर्थ:—सात उच्छ्वासोंकर एक स्तोक एवं सात स्तोत्रोंका एक सब जानना चाहिए। सत्तरके आधे ( ३८½ ) लक्षोंकी एक नाली और दो नालियोंका एक भुक्त होता है ॥२६०॥

७ उच्छ्रं = १ स्तोक । ७ स्तोक = १ लव । ३८३ लव = १ नाली । २ नाली = १ भारत ।

१. द. व. क. ज. य. उ. मेवो । २. द. व. विषकमेणतो, क. ज. य. उ. दिक्कमेणतो । ३. अ. य. एणाहो । ४. द. व. क. ज. उ. चिय-धेणो ति, य. विमणुखोति । ५. द. सत्तस्सोवायमावसिंति, द. सत्तस्सो-  
वायमिति, क. मत्तस्सोवोत्तथो ति, उ. सत्तस्सोवायमणिण्ण बम्भो । ज. य. सत्तस्सोवा मवोति एतादब्बा ।  
६. द. व. क. ज. य. उ. मया । ७. द. व. क. उ. । ८. । ९. । १०. । ११. ज. य. । १२. । १३. । १४. ।

समऊनेवक - मुहुत्तं, भिण्णमुहुत्तं मुहुत्तया तीसं ।

द्वियसो पण्णरसेहि, द्वियसेहि एक - पण्णो<sup>१</sup> हु ॥२६१॥

समऊनेवक :- समऊनेवक की सुविधित्तियारो की सुविधित्तियारो

अर्थ :- समय कम एक मुहुत्तको भिन्नमुहुत्त कहते हैं । तीस मुहुत्तका एक दिन और पन्द्रह दिनोंका एक पक्ष होता है ॥२६१॥

दो पक्षसेहि मासो, मास - कुणेन उडू उडुत्तिवयं ।

अयणं अयण - कुणेन, वरिसो पंच - वण्णरेहि जुगं ॥२६२॥

अर्थ :- दो पक्षोंका एक मास, दो मासोंकी एक ऋतु, तीन ऋतुओंका एक अयन, दो अयनोंका एक वर्ष और पांच वर्षोंका एक युग होता है ॥२६२॥

माघादी<sup>२</sup> होंति उडू, सिसिर-वसंता निदाघ-वाउसया ।

सरओ हेमंता वि य, गामाहं ताण जाणिज्जं ॥२६३॥

अर्थ :- माघ माससे प्रारम्भ कर जो ऋतुएं<sup>३</sup> होती हैं उनके नाम सिसिर, वसन्त, निदाघ ( शीष्म ), प्रावृष ( वर्षा ), शरद् और हेमन्त, इस प्रकार जानने चाहिए ॥२६३॥

<sup>४</sup>वेण्णि जुगा दस वरिसा, ते दस-गुणिदा हवेवि वास-सवं ।

<sup>५</sup>एवस्सि दस - गुणिदे, वास - सहस्सं विद्याणेहि ॥२६४॥

अर्थ :- दो युगोंके दस वर्ष होते हैं; इन दस वर्षोंको दससे गुणा करने पर गत ( सौ ) वर्ष और सत्तवर्षको दससे गुणा करने पर सहस्र ( हजार ) वर्ष जानना चाहिए ॥२६४॥

दस वास-सहस्साणि, वास - सहस्सम्मि दस-हवे<sup>६</sup> होंति ।

<sup>७</sup>तेहि दस - गुणिदेहि, सक्खं गामेण जादब्बं ॥२६५॥

अर्थ :- सहस्र वर्षोंको दससे गुणा करनेपर दस-सहस्रवर्ष और इनको भी दससे गुणा करने पर सप्त ( लाख ) वर्ष जानने चाहिए ॥२६५॥

१. द. व. क. व. य. उ. पण्णो । २. क. उ. माघादी । ३. क. वेणि, ज. य. वेण्णि, उ. वेण्णि ।

४. व. एवस्सि, क. य. एवस्सि । ५. ज. य. हव । ६. व. य. विहि ।

तालिका : ७

## आवलीसे लख पर्यन्त व्यवहार कालकी परिभाषाएँ

१. घसंख्यात समय = १ आवली ।
२. संख्यात आवली ( या ३३३३ सेकेण्ड ) = १ उच्छ्वास ।
३. ७ उच्छ्वास ( या ५१६६ सेकेण्ड ) = १ स्तोक ।
४. ७ स्तोक ( या ३७३३ सेकेण्ड ) = १ लव ।
५. ३८६ लव ( या २४ मिनट ) = १ नासी ।
६. २ नासी ( या ४८ मिनट ) = १ मुहूर्त ।
७. [ १ मुहूर्त — १ समय = मिश्रमुहूर्त ]
८. ३० मुहूर्त ( या २४ घण्टा ) = १ दिनरात ।
९. १५ दिन = १ पक्ष ।
१०. २ पक्ष = १ मास ।
११. २ मास = १ ऋतु ।
१२. ३ ऋतु = १ अयन ( ६ मास ) ।
१३. २ अयन = १ वर्ष ।
१४. ५ वर्ष = १ युग ।
१५. २ युग = दस वर्ष ।
१६. १० × १० वर्ष = शत वर्ष
१७. शत × १० = सहस्र वर्ष
१८. सहस्र × १० = दस सहस्र वर्ष ।
१९. १० सहस्र × १० = लख वर्ष ।

पूर्वाङ्गसे अक्षलारभ पर्यन्त कालांशोंका प्रमाण -

चुलसीदि - हवं लक्षं, पुष्पं तस्स वग परिमाणं ।

पुष्पं सत्तरि कोटी, लक्ष्मा छप्पण तह सहस्रानि ॥२६६॥

अर्थ :—एक लाख वर्षको चौरासीसे गुणा करनेपर एक 'पूर्वाङ्ग' और इसका वर्ग करनेपर प्राप्त हुए ७०५६०००००००००० को 'पूर्वका' प्रमाण जानना चाहिए ॥२६६॥

विशेषार्थ :—(१) १००००० वर्ष  $\times$  ८४ = ८४००००० वर्षका एक पूर्वाङ्ग । (२) ८४ लाख  $\times$  ८४ लाख = ७०५६०००००००००० वर्षका एक पूर्व ।

पुण्यं चउसीदि - हवं, पण्यंगं होदि तं पि गुणिवन्धं ।

चउसीदी - लखेहि, पावका पण्य परिमाणं ॥२६७॥

संस्कृतार्थः :- अत्रार्थः श्री लखेहिपावका श्री पण्यपरिमाणं

अर्थ :—पूर्वको चौरासीसे गुणा करनेपर एक 'पूर्वाङ्ग' होता है और इस पूर्वाङ्गको चौरासी लाखसे गुणा करनेपर एक 'पर्वका' प्रमाण कहा गया है ॥२६७॥

(३) एक पूर्व  $\times$  ८४ = ५६२७०४  $\times$  १० शून्य प्रमाण वर्षका एक पूर्वाङ्ग ।

(४) एक पूर्वाङ्ग  $\times$  ८४ लाख = ५६७८७१३६  $\times$  १५ शून्य प्रमाण वर्षका एक पर्व ।

पण्यं चउसीदि - हवं, पावंगं होदि तं पि गुणिवन्धं ।

चउसीदी - लखेहि, पावस्स' पमाणमुद्दिह' ॥२६८॥

अर्थ :—पर्वको चौरासीसे गुणा करनेपर एक 'नयुताङ्ग' होता है और इसको चौरासी लाखसे गुणा करनेपर एक 'नयुत' का प्रमाण कहा गया है ॥२६८॥

विशेषार्थ :—(५) एक पर्व  $\times$  ८४ = ४१८२११६४२४  $\times$  १५ शून्य प्रमाण वर्ष का एक नयुताङ्ग । (६) एक नयुताङ्ग  $\times$  ८४ लाख = ३५१२६८०३१६१६  $\times$  २० शून्य प्रमाण वर्षका एक नयुत ।

पाववं चउसीदि - हवं, कुमुदंगं होदि तं पि गुणिवन्धं ।

चउसीदि - लख - वासेहि' कुमुदं नाम समुद्दिह' ॥२६९॥

अर्थ :—चौरासीसे गुणित नयुत-प्रमाण एक 'कुमुदाङ्ग' होता है । इसको चौरासी लाख वर्षसे गुणा करनेपर 'कुमुद' नाम कहा गया है ॥२६९॥

विशेषार्थ :—(७) एक नयुत  $\times$  ८४ = २६५०६०३४६५५७४४  $\times$  २५ शून्य प्रमाण वर्षका एक कुमुदाङ्ग । (८) एक कुमुदाङ्ग  $\times$  ८४ लाख = २४७८७५८६११०८२४६६  $\times$  २५ शून्य प्रमाण वर्षका एक कुमुद ।

कुमुदं चउसीदि हवं, पउमंगं होवि तं पि गुणिवब्बं ।

चउसीदि - सक्खवासे, पउमं नामं समुदिट्ठं ॥३००॥

अर्थ :—चौरासीसे गुणित कुमुद-प्रमाण एक 'पपाङ्ग' होता है । इसको चौरासी लाख वर्षोंसे गुणा करनेपर 'पपा' नाम कहा गया है ॥३००॥

विशेषार्थ :—(९) एक कुमुद  $\times ८४ = २०८२१५७४८५३०६२६६४ \times २५$  शून्य प्रमाण

एक पपाङ्ग । (१०) एक पपाङ्ग  $\times ८४$  लाख =  $१७४६०१२२८७६५६८०६१७७६ \times ३०$  शून्य प्रमाण वर्षोंका एक पपा ।

पउमं चउसीदि - हवं, नलिनंगं होवि तं पि गुणिवब्बं ।

चउसीदि - सक्खवासे, नलिनं नामं बियाणाहि ॥३०१॥

अर्थ :—चौरासीसे गुणित पपा-प्रमाण एक 'नलिनाङ्ग' होता है । इसको चौरासी लाख वर्षोंसे गुणा करनेपर 'नलिन' नाम जानना चाहिए ॥३०१॥

विशेषार्थ :—(११) एक पपा  $\times ८४ = १४६६१७०३२१६३४२३६७०६१८४ \times ३०$  शून्य प्रमाण वर्षोंका एक नलिनाङ्ग । (१२) एक नलिनाङ्ग  $\times ८४$  लाख =  $१२३४१०३०७०१७२७६१३-५५७१४५६ \times ३५$  शून्य प्रमाण वर्षोंका एक नलिन ।

नलिनं चउसीदि - गुणं, कमलंगं नाम तं पि गुणिवब्बं ।

चउसीदी - सक्खेहि, कमलं नामेण निदिट्ठं ॥३०२॥

अर्थ :—चौरासीसे गुणित नलिन प्रमाण एक 'कमलाङ्ग' होता है । इसको चौरासीलाखसे गुणा करने पर 'कमल' नामसे कहा गया है ॥३०२॥

विशेषार्थ :—(१३) एक नलिन  $\times ८४ = १०३६६४६५७८६४५११६५३८८००२३०४ \times ३५$  शून्य प्रमाण वर्षोंका एक कमलाङ्ग । (१४) एक कमलाङ्ग  $\times ८४$  लाख =  $८७०७८३१२६३१३-६००४१२५६२१६३५३६ \times ४०$  शून्य अर्थात् ६७ अंक प्रमाण वर्षोंका एक कमल ।

कमलं चउसीदि - गुणं, तुडिबंगं होवि तं पि गुणिवब्बं ।

चउसीदी - सक्खेहि, तुडिबं नामेण नादब्बं ॥३०३॥

अर्थ :—कमलसे चौरासी-गुणा 'वृद्धिताङ्ग' होता है । इसको चौरासी-लाखसे गुणा करने-पर 'वृद्धित' नाम समझना चाहिए ॥३०३॥

विशेषार्थ :—(१५) एक कमल  $\times ८४ = ७३१४५७८२६१०३६७६३४६५७७४४२५७०२४$   
 $\times ४०$  शून्य प्रमाण वर्षोंका एक वृद्धिताङ्ग । (१६) एक वृद्धिताङ्ग  $\times ८४$  लाख =  $६१४४२४५७३६-$   
 $२७०८८१३११२५०३१७५६००१६ \times ४५$  शून्य अर्थात् ७६ अंक प्रमाण वर्षोंका एक वृद्धित ।

तुडिबं चउसोबि-हृदं, 'अटटाङ्गं' होबि तं पि गुणिवम्बं ।

चउसोबी - लक्खेहि, अटटं एगमेण णिहिट्टुं ॥३०४॥

अर्थ :—चौरासीसे गुणित वृद्धित-प्रमाण एक 'अटटाङ्ग' होता है । इसके चौरासीलाखसे गुणित होने पर अटट ( इस ) नामसे कहा गया है ॥३०४॥

विशेषार्थ :—(१७) एक वृद्धित  $\times ८४ = ५१६११६६४२०६८७५४०३०१४५०४३४७७-$   
 $५६१३४४ \times ४५$  शून्य अर्थात् ७६ अंक प्रमाण वर्षोंका एक अटटाङ्ग । (१८) एक अटटाङ्ग  $\times ८४$  लाख =  
 $४३३५३७६७६३६२६५३३५२२१८३६३२११५१५२८६६ \times ५०$  शून्य प्रमाण वर्षोंका एक अटट ।

अटटं चउसोबि - गुणं अममंगं होबि तं पि गुणिवम्बं ।

चउसोबी - लक्खेहि, अममं एगमेण णिहिट्टुं ॥३०५॥

अर्थ :—चौरासीसे गुणित अटट-प्रमाण एक 'अममंग' होता है । इसको चौरासीलाखसे गुणा करने पर 'अमम' नामसे निर्विष्ट किया गया है ॥३०५॥

विशेषार्थ :—( १९ ) एक अटट  $\times ८४ = ३६४१७१६०२६६४८८०८४३६७०३४२६७७-$   
 $७६७२८४३२६४ \times ५०$  शून्य प्रमाण वर्षोंका एक अममंग । ( २० ) एक अममंग  $\times ८४$  लाख =  
 $३०५६०४३६८२३८४६६०८६८३०८७८४६३२४५१८८३४१७६ \times ५५$  शून्य प्रमाण वर्षोंका एक अमम ।

अममं चउसोबि - गुणं, 'हाहंगं' होबि तं पि गुणिवम्बं ।

चउसोबी - लक्खेहि, हाहा नामं<sup>३</sup> समुहिट्टुं ॥३०६॥

अर्थ :—चीरासीसे गुणित 'अमम' प्रमाण एक हाहांग होता है। इसको चीरासी लाखसे गुणा करनेपर 'हाहा' नामसे कहा गया है ॥३०६॥

विशेषार्थ :—(२१) एक अमम  $\times ८४ = २५६६५६६६४५२०३३६६२३२६३७६३७६३४-३२५६५८२०७०७८४ \times ५५$  शून्य प्रमाण वर्षोंका एक हाहांग । (२२) एक हाहांग  $\times ८४$  लाख =  $२१५८४६१४३३६७०८५५३५५६६७८६७८६४८३३८०४८६३६४५८५६ \times ६०$  शून्य प्रमाण वर्षोंका एक हाहा ।

हाहा-चउसीवि - गुणं, हूहंगं हवेदि तं पि गुणिवण्णं ।

अउसीवी - सबसेहि, हूह - एवमस्स परिमाणं ॥३०७॥

अर्थ :—हाहाको चीरासीसे गुणित करनेपर एक हाहांग होता है। इसको चीरासीलाखसे गुणा करने पर 'हूह' नामक कालका प्रमाण होता है ॥३०७॥

विशेषार्थ :—(२३) एक हाहा  $\times ८४ = १८१३१०७६०४५३५५१८४६८७६१००६००६-४६०३६६११०६१४५१६०४ \times ६०$  शून्य प्रमाण वर्षोंका एक हूहांग । (२४) एक हूहांग  $\times ८४$  लाख =  $१५२३०१०३८७८०८८८३५३८६५६२४७५६५४२६७३२७३३१६८१६५६६३६ \times ६५$  शून्य प्रमाण वर्षोंका एक हूह ।

हूह चउसीवि - गुणं, एवमं - सर्वं हवेदि गुणिवण्णं ।

अउसीवी - सबसेहि, परिमाणमिणं - सदा : नामे' ॥३०८॥

अर्थ :—चीरासीसे गुणित हूहका एक 'लतांग' होता है। इसको चीरासीलाखसे गुणा करनेपर 'लता' नामक प्रमाण उत्पन्न होता है ॥३०८॥

विशेषार्थ :—(२५) एक हूह  $\times ८४ = १२७९३२८७२५७६०२६१८५२७२५७६७६५४६-५८४५५४६५८६१२८४६३४६२४ \times ६५$  शून्य अर्थात् ११४ अंक प्रमाण वर्षोंका एक लतांग । (२६) एक लतांग  $\times ८४$  लाख =  $१०७४६३६१२६६३८६१६६५६२८६४५०८२१६५१०२६१६५२३४७६०६३-०८४१६ \times ७०$  शून्य अर्थात् १२१ अंक प्रमाण वर्षोंका एक लता ।

चउसीवि - हव - सदाए, 'महालवंगं हवेदि गुणिवण्णं ।

अउसीवी - सबसेहि, महालवा - नाममुहिदु' ॥३०९॥

अर्थ :—चौरासीसे गुणित लता-प्रमाण एक 'महालतांग' होता है । इसको चौरासीलाखसे गुणा करनेपर 'महालता' नाम कहा गया है ॥३०९॥

विशेषार्थ :—(२७) एक लता  $\times$  ८४ = ६०२६६४३४८८ = ६६४४०७६३२८३३०१८६६०१-  
८६८६१६७८७६७२४३८१६०६६४४  $\times$  ७० शून्य प्रमाण वर्षोंका एक महालतांग । (२८) एक  
महालतांग  $\times$  ८४ लाख = ७५८२६३२५३०७३०१०२४११५७९७३५६६६७५६९६४०६२१८६६६८-  
४८०८०१८३२६६  $\times$  ७५ शून्य प्रमाण वर्षोंका एक महालता ।

चउसीवि-लखल-गुणिदा, महालतादो हवेवि 'सिरिकप्यं' ।

चउसीवि - लखल - गुणिदं, त हस्थपहेलिवं नाम ॥३१०॥

अर्थ :—चौरासीलाखसे गुणित महालता-प्रमाण एक 'श्रीकल्प' होता है । इसको चौरासी-  
लाखसे गुणा करनेपर 'हस्तप्रहेलित' नामक प्रमाण उत्पन्न होता है ॥३१०॥

विशेषार्थ :—(२९) एक महालता  $\times$  ८४ लाख = ६३६९४११३२५८१३२८६०२५७२६-  
६७७६८७६५८४५१२२३६३२१५२३८७३३६६६६४  $\times$  ८० शून्य प्रमाण वर्षोंका एक श्रीकल्प  
होता है । (३०) एक श्रीकल्प  $\times$  ८४ लाख = ५३५०३०५५१३६८३१६०२६१६१०६६१५०६७४८५-  
१३८४२२८१०३००८००५३७७३३३६५७६  $\times$  ८५ शून्य प्रमाण वर्षोंका एक हस्तप्रहेलित होता है ।

हस्थपहेलिव - नामं, गुणिदं चउसीवि - लखल - बासेहि ।

अवलप्य<sup>१</sup> - नामधेओ, कालं 'कालाणुवेदि - निदिह<sup>२</sup>' ॥३११॥

अर्थ :—चौरासी लाख वर्षोंसे गुणित हस्तप्रहेलित-प्रमाण एक 'अवलसात्म' नामका काल  
होता है, ऐसा कालाणुओंके जातकार अर्थात् सर्वभूदेवने निदिष्ट किया है ॥३११॥

विशेषार्थ :—(३१) एक हस्तप्रहेलित  $\times$  ८४ लाख = ४४६४२५६६३१४६३८५४६१६७-  
५२६५५६६८१८८७५१६२७५१६०६५२६७२४५१६६६०२७२३८४  $\times$  ९० शून्य प्रमाण वर्षोंका एक  
अवलसात्म नामका कालांश होता है ।

एकसीस - हाणे, चउसीवि पुह पुह हुवेहु<sup>३</sup> ।

अण्णोअ<sup>४</sup> - हुवे लद्ध<sup>५</sup>, अवलप्यं होवि 'अउवि-अण्णं' ॥३१२॥

८४ । ३१ । ६० ।

१. ज. घ. गुणिदं । २. घ सिरिकपं, ब. क. ज. उ. सिरिकपं । ३. घ. अवलप्यं नाम धयो । ज.  
घ. अवलप्यनामधेओ । ४. घ. कालाउ हवेदि, ब. कालाणु हवेदि । ५. घ. ब. घ. लिदिह । ६. घ. एअसी ।



**अर्थः**—पृथक्-पृथक् दशतीस ( ३१ ) स्थानोंमें चौरासी ( ८४ ) को रखकर और उनका परस्पर गुणा करके आगे नब्बे शून्य रखनेपर 'अचलात्म' का प्रमाण प्राप्त होता है ॥३१२॥

**विलोचार्थः**— ८४<sup>३१</sup> × ६० शून्य = अचलात्म नामक कासावा । अर्थात् १५० अंक प्रमाण वर्षोंका एक अवसारम होता है ।

एवं 'एसो कासो, संखेज्जो वच्छराण गणणए ।  
उक्कस्सं संखेज्जं, 'जामं तावं 'पक्खेओ ॥३१३॥

**अर्थः**— इसप्रकार वर्षोंकी गणना द्वारा जहाँ तक उत्कृष्ट संख्यात प्राप्त हो वहाँ तक इस संख्यात कालको ले जाना चाहिए अर्थात् ग्रहण करना चाहिए ॥३१३॥

**वयम्** **विलोचार्थः**— अत्यन्त लघु विधिद्वारा भी गृह्यमाण

एत्थ उक्कस्स-संखेज्जयं-जाम-जिमिस्स' जम्बूदीप-विस्तारं सहस्स-  
ओपण उब्बेधं - प्रमाणं च चत्वारि - सरावया' कावका ।  
सलागा पडिसलागा महासलागा एवे तिणि वि अवट्ठिवा'  
चउत्थो 'अणवट्ठिदो । एवे सव्वे पण्णाए ठविदा ।

**अर्थः**—यही उत्कृष्ट संख्यात आनेके निमित्त जम्बूदीप सट्ठा ( एक लाख योजन ) विस्तारवाले और एक हजार योजन प्रमाण गहरे चार गड्ढे करने चाहिए । इनमें शलाका, प्रति-शलाका एवं महाशलाका ये तीन गड्ढे अवस्थित तथा चौथा गड्ढा अनवस्थित है । ये सब गड्ढे बुद्धिसे स्थापित किए गए हैं ।

एत्थ चउत्थ-सरावय-अण्वंतरे बुवे सरिसवे त्थुदे सं जहण्णं संखेज्जयं जामं ।  
एवं पक्खम-विद्यम्पं । तिणि सरिसवे 'क्खुद्धे' अण्वहण्णमणुक्कस्स-संखेज्जयं । एवं सरावय'<sup>१</sup>  
पुण्णे'<sup>२</sup> एवमुच्चरि मज्झिम-विद्यम्पं ।

१. व. एवं सो । २. द. व. क. ज. य. उ. जावत्तसोमं । ३. व. पक्खत्त उ. प. पक्खेओ ।  
४. क. ज. य. उ. संखेज्जयं । ५. व. द. क. ज. य. उ. उब्बेधं । ६. द. व. क. ज. ए. उ. सरावय ।  
७. क. क. व. उ. अणवट्ठिदो । ८. क. ज. य. उ. अणवट्ठिवा । ९. द. व. त्थुदे । १०. द. क. ज. य. उ.  
सरावयो । ११. द. व. क. ज. य. उ. पुण्णो ।

अर्थ :—इनमेंसे चौथे ( अनवस्था नामक ) कुण्डके भीतर सरसोंके दो दाने डालनेपर वह जघन्य संख्यात होता है । संख्यातका यह प्रथम विकल्प है । तीन सरसों डालने पर प्रजघन्यानुकूल ( मध्यम ) संख्यात होता है । इसीप्रकार एक-एक सरसों डालने पर उस ( अनवस्था ) कुण्डके पूर्ण होने तक ( यह ) तीनसे ऊपर सब मध्यम संख्यातके विकल्प होते हैं ।

पुनरो भरिद'-सराबया देओ वा वाणओ वा हत्ये घेतूण दोवे समुद्दे एक्केक्कं सरिसवं देउ' । सो णिट्ठिदो तवकाले सलाय - अबभंतरे एग-सरिसओ च्छुद्धो । जम्हि सलाया 'सम्भत्ता तम्हि सराबयो' वद्धो वेयव्वो ।

अर्थ :—पुनः सरसोंसे ( पूर्ण ) भरे हुए इस कुण्डमेंसे देव अथवा दानव हाथमें ( सरसों ) ग्रहणकर क्रमशः ( एक-एक ) द्वीप और समुद्रमें एक-एक सरसों देता जाय; इसप्रकार जब वह ( अनवस्था ) कुण्ड समाप्त ( खाली ) हो जाय, तब ( उस समय ) शलाका कुण्डके भीतर एक सरसों डाला जाय । जहाँ ( जिस द्वीप या समुद्र ) पर प्रथम कुण्डकी शलाका समाप्त हुई हो उस द्वीप या समुद्रकी सूचीप्रमाण उस अनवस्था कुण्डको तका दें ।

यहाँसे पुनः आरम्भ करेंगे सुविनिश्चित और यथावत् ।

तं भरिदूण हत्ये घेतूण दोवे समुद्दे णिट्ठिदव्वा' । जम्हि णिट्ठिवं तम्हि सरावयं वद्धा-वेयव्वं । सलाय-सराबए दोण्णि 'सरिसवे च्छुद्धे' ।

अर्थ :—पुनः उस ( तबौन बनाये हुए अनवस्था कुण्ड ) की सरसोंमें भरकर पहलेके ही सदृश ( उन्हें ) हाथमें ग्रहण कर क्रमशः आगे ( आगे ) के द्वीप और समुद्रमें एक-एक सरसों डालकर उन्हें पूरा कर दे । जिस द्वीप या समुद्रमें इस कुण्डके सरसों पूर्ण हो जावें उसकी सूची-व्याप्त बराबर पुनः ( तबौन ) अनवस्थाकुण्डकी बढ़ावे और शलाका कुण्डोंमें एक दूसरा सरसों डाल दें ।

विशेष :—[ इसीप्रकार बढ़ते हुए व्याप्तके साथ हजार योजन गहराईवाले उत्तनेवार अनवस्था कुण्ड बन जाएँ, जितने कि प्रथम अनवस्था कुण्डमें सरसों थे, तब एक बार शलाका कुण्ड भरेगा । एक बार शलाका कुण्ड भरेगा तब एक सरसों प्रतिशलाका कुण्डमें डालकर शलाका कुण्ड खाली कर दिया जायगा तथा जिस द्वीप या समुद्रकी सूची व्याप्त सदृश अनवस्था कुण्ड बने उससे आगेके द्वीप-समुद्रोंमें एक-एक दाना डालते हुए जहाँ सरसों पुनः समाप्त हो जाए वहाँसे लेकर जम्बू-

१. ज. ब. भरदि । २. व. ब. क. उ. देव, घ. य. देह । ३. द. बुधा, व. स्पृष्टो । ४. घ. क. ज. य. उ. सम्भत्ता । ५. द. व. क. ज. य. उ. सराबव बदारेमंतु । ६. क. ब. णिट्ठिवव्वा । ७. द. व. य. सरिदवव्वे ।

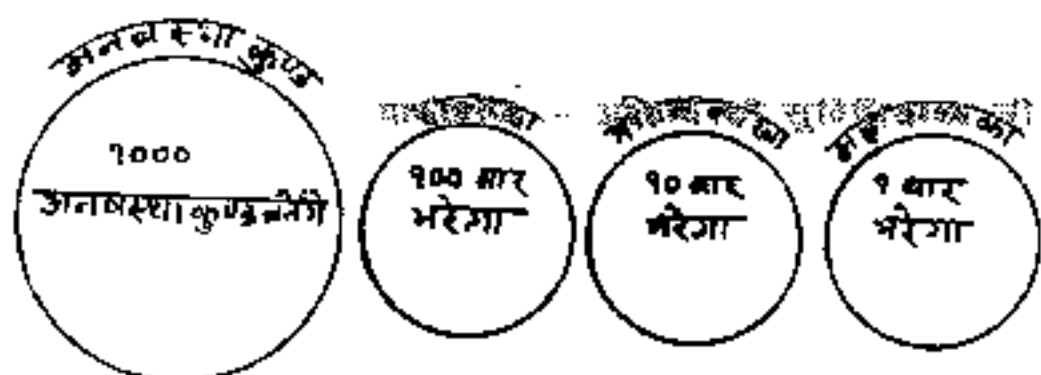
द्वीप पर्यन्त नवीन अनवस्था कुण्ड बनाकर भरा जाएगा तब एक दाना शलाका कुण्डमें डाला जाएगा । पुनः उस नवीन अनवस्था कुण्डके सरसों ग्रहणकर आगे-आगेके द्वीप समुद्रोंमें एक-एक दाना डालते हुए जहाँ सरसों समाप्त हो जाय, उतने व्यास वाला अनवस्था कुण्ड जब भरा जायगा तब शलाका कुण्डमें एक दाना और डाला जाएगा । इसप्रकार करते हुए जब पुनः नवीन-नवीन ( वृद्धिगत ) व्यासको लिए हुए प्रथम अनवस्था कुण्डकी सरसोंके प्रमाण बराबर नवीन अनवस्था कुण्ड बन चुकेंगे तब शलाकाकुण्ड भरेगा और दूसरा दाना प्रतिशलाका कुण्डमें डाला जाएगा ।

इसप्रकार बढ़ते हुए क्रमसे जितने सरसों प्रथम अनवस्था कुण्डमें थे, उनके वर्ग प्रमाण जब अनवस्था कुण्ड बन चुकेंगे तब शलाकाकुण्ड उतने ही सरसों प्रमाण बार भरेगा तब एक बार प्रति-शलाका कुण्ड भरेगा और एक दाना महाशलाका कुण्डमें डाला जाएगा । इसप्रकार क्रमशः वृद्धिगत होनेवाला अनवस्थाकुण्ड जब प्रथम अनवस्थाकुण्ड की सरसोंके घन प्रमाण बार बन चुकेंगे तब प्रथम अनवस्था कुण्डकी सरसोंके वर्ग प्रमाण बार शलाका कुण्ड भरे जायेंगे, तब प्रथम अनवस्था कुण्डकी सरसों प्रमाण बार प्रतिशलाका कुण्ड भरेंगे और तब एक बार महाशलाका कुण्ड भरेगा ।

बानसी ।—प्रथम अनवस्थाकुण्ड सरसोंके १० दानोंसे भरा था, अतः बढ़ते हुए व्यासके साथ १० अनवस्था कुण्डोंके घन जाने पर एक बार शलाका कुण्ड भरेगा तब एक दाना प्रतिशलाका-कुण्डमें डाला जाएगा । इसीप्रकार वृद्धिगत व्यासके साथ १० के वर्ग (  $10 \times 10$  ) = १०० अनवस्था-कुण्ड घन जानेपर १० बार शलाका कुण्ड भरेगा तब एक बार प्रतिशलाका कुण्ड भरेगा और तब एक दाना महाशलाका कुण्डमें डाला जाएगा ।

इसीप्रकार बढ़ते हुए व्यासके साथ १० के घन (  $10 \times 10 \times 10$  ) = १००० अनवस्था कुण्ड घन जाने पर १० के वर्ग (  $10 \times 10$  ) = १०० बार शलाका कुण्ड भरेगा तब १० बार प्रति-शलाका कुण्ड भरेगा और तब एक बार महाशलाकाकुण्ड भरेगा । ]

यथा—



एवं सलाय-सरावया 'पुण्या, पंडिसलाय-सरावया 'पुण्या, महासलाय-सरावया पुण्या । जह वीय-समुद्दे तिष्णि' सरावया पुण्या तस्संखेज्ज-वीय-समुद्-वित्थरेण सहस्स-ओयणागाहेण' (सरावये) सरिसव भरिवे तं उक्कस्स - संखेज्जयं अदिच्छित्तुं' जहण्ण-परित्तासंखेज्जयं गंतूण जहण्ण-असंखेज्जयं पडिवं । तवो' एगखवमवधीदे जाइमुक्कस्स-संखेज्जयं । जम्हि जम्हि संखेज्जयं' मग्गिज्जवि तम्हि तम्हि अजहण्णमणुक्कस्संखेज्जयं वेत्तव्यं । तं कस्स वित्तो ? चोदस्स-पुब्बिस्स ।

अर्थ :- इसप्रकार बालाकाकुण्ड पूर्ण हो गये, प्रतिबालाका कुण्ड पूर्ण हो गये और महा-बालाका कुण्ड पूर्ण हो गया । जिस द्वीप या समुद्रमें ये तीनों कुण्ड भर जाएँ उतने संख्यात द्वीप-समुद्रोंके विस्तार स्वरूप और एक हजार योजन गहरे गड्ढेको सरसोंसे भर देने पर उत्कृष्ट संख्यातका अधिक्रमण कर अघन्यपरीतासंख्यात जाकर अघन्य असंख्यात प्राप्त होता है । उसमेंसे एक रूप कम कर देनेपर उत्कृष्ट संख्यातका प्रमाण होता है । जहाँ-जहाँ संख्यात खोजना हो वहाँ वहाँ अजघन्यानु-त्कृष्ट (मध्यम) संख्यात ग्रहण करना चाहिए । यह किसका विषय है ? यह चौदह पूर्वके आता श्रुतकेवलीका विषय है ।

१. द. ब. क. ज. य. उ. पुण्या । २. क. ज. य. उ. तिष्णि सरावया पुण्या, जह वीय-समुद्दे संखेज्ज-वीय-समुद्-वित्थरेण .... । ३. क. ज. य. उ. नवेण । ४. द. अदिच्छित्तुं । ५. क. ज. य. उ. तथा । ६. द. क. ज. य. संखेज्जयं वेत्तव्यं ।

भाष्यवर्णिक :- अत्रार्थः अत्र तु विविधासंख्याः अपि भवन्ति ।

उक्कस्स-संख-मवसो, इति-समय-जुवे 'जहण्णयमसंख' ।

ततो असंख - कासो, उक्कस्स - असंख - समयंतं ॥३१४॥

वार्त्ता :- उत्कृष्ट संख्यातमें एक समय मिलानेपर जघन्य असंख्यात होता है । इसके भागे उत्कृष्ट असंख्यात प्राप्त होने तक असंख्यात काल है ॥३१४॥

'जं तं असंखेज्जयं तं तिविहु, परितासंखेज्जयं, जुत्तासंखेज्जयं, असंखेज्जा-संखेज्जयं चेवि । जं तं परितासंखेज्जयं तं तिविहुं, जहण्ण - परितासंखेज्जयं, अजहण्ण-मणुक्कस्स-परितासंखेज्जयं, उक्कस्स-परितासंखेज्जयं चेवि । अं तं जुत्तासंखेज्जयं तं तिविहुं, जहण्ण-जुत्तासंखेज्जयं, अजहण्णमणुक्कस्स-जुत्तासंखेज्जयं, उक्कस्स-जुत्तासंखेज्जयं चेवि । जं तं असंखेज्जासंखेज्जयं तं तिविहुं', जहण्ण-असंखेज्जासंखेज्जयं, अजहण्णमणुक्कस्स-असंखेज्जासंखेज्जयं, उक्कस्स-असंखेज्जासंखेज्जयं चेवि ।

वार्त्ता :- जो यह असंख्यात है वह तीन प्रकार है—परीतासंख्यात, युक्तासंख्यात और असंख्यातासंख्यात । जो यह परीतासंख्यात है वह तीन प्रकारका है—जघन्य-परीतासंख्यात, अजघन्या-नुत्कृष्ट-परीतासंख्यात और उत्कृष्ट-परीतासंख्यात । जो यह युक्तासंख्यात है वह भी तीन प्रकार है—जघन्ययुक्तासंख्यात, अजघन्यानुत्कृष्ट-युक्तासंख्यात और उत्कृष्ट-युक्तासंख्यात । जो यह असंख्याता-संख्यात है, वह भी तीन प्रकार है—जघन्य असंख्यातासंख्यात, अजघन्यानुत्कृष्ट असंख्यातासंख्यात और उत्कृष्ट असंख्यातासंख्यात ।

जं तं जहण्ण-परितासंखेज्जयं तं विरसेदूण' एक्केक्कस्स क्वस्स जहण्ण परितासंखेज्जयं 'बाहूण अण्णोण्णअस्थे कवे उक्कस्स-परितासंखेज्जयं 'अविच्छेदूण जहण्ण-जुत्तासंखेज्जयं गंतूण' पठिदं । तवो एगइवे प्रवणीवे जावं उक्कस्स-परितासंखेज्जयं ।

जम्हि जम्हि आबसिया 'एक्कज्जं तम्हि तम्हि जहण्णजुत्तासंखेज्जयं चेसव्वं ॥

१. द. स. अण्णोण्णमसंख, ब. क. ज. प. उ. छ. जहण्णमसंख । २. क. ज. य. उ. सं. तं । ३. ब. उ. विविध । ४. द. विरसेदूण । ५. क. उ. बोदूण । ६. व. अविच्छेदूण, ब. उ. अविच्छेदूण, क. अविच्छेदूण, ज. अविच्छेदूण । ७. ब. क. उ. पठिदसाथे, अ. पविस्तादा । ८. द. ब. क. ज. उ. अविद्याकण ।

अर्थ :—जहाँ जहाँ जघन्य-मुक्तासंख्यात है उसका विरलन कर एक-एक अंक पर ( वही ) जघन्यपरीतासंख्यात देय देकर परस्पर गुणा करनेसे उत्कृष्ट परीतासंख्यातका उत्लंघनकर जघन्य-युक्तासंख्यात प्राप्त होता है । ( जो आवली मद्रुष है । ) अर्थात् आवलीके समय जघन्य-युक्तासंख्यात प्रमाण है ) ।

जहाँ-जहाँ एक आवलीका अधिकार हो वहाँ-वहाँ जघन्य-युक्तासंख्यात ग्रहण करना चाहिए ।

अं तं अहण्य-युक्तासंख्येज्जयं तं सयं वगिदो उक्कस्स-जुत्तासंख्येज्जयं 'अविच्छिन्नं अहण्यमसंख्येज्जासंख्येज्जयं गंतूण पडिदं । तदो एग-रुक्क-अवणोदे जावं उक्कस्स-जुत्तासंख्येज्जयं ।

अर्थ :—जो यह जघन्य-युक्तासंख्यात है, उसका एक बार वर्ग करने पर उत्कृष्ट-युक्तासंख्यातका उत्लंघनकर जघन्य-असंख्यातासंख्यात प्राप्त होता है । इसमेंसे एक अंक कम कर देनेसे उत्कृष्ट-युक्तासंख्यात प्राप्त होता है ।

तदा अहण्यमसंख्येज्जासंख्येज्जयं वोप्पडि-रासिं कावूण एग-रासिं-सत्ताय 'एमानं ठविय एग-रासिं विरलेदूण' एक्केक्कस्स 'रुक्कस्स एग-युंज-एमानं' वावूण अण्णोण्णभत्थं करिय सत्ताय-रासिदो एग-रुक्क 'अवणोदयं । पुणो वि उप्पण्णरासिं विरलेदूण एक्केक्कस्स रुक्कस्स तमेव उप्पण्णरासिं वावूण अण्णोण्णभत्थं' कावूण सत्ताय-रासिदो 'एगरुक्कमसंख्येज्जयं । एदेव कमेव सत्ताय-रासी णिट्ठिवा ।

अर्थ :—इसके बाद जघन्य-असंख्यातासंख्यातको दो प्रतिराशियां कर उनमेंसे एक राशिको शलाका प्रमाण स्थापित करके और एक राशिका विरलन करके एक-एक अंकके प्रति एक-एक पुञ्ज-प्रमाण देकर परस्पर गुणा करके शलाका राशिमेंसे एक अंक कम कर देना चाहिए । इसप्रकार जो राशि उत्पन्न हो उसको पुनः विरलित कर एक-एक अंकके प्रति उसी उत्पन्न राशिको देय देकर और परस्पर गुणा करके शलाका राशिमेंसे एक अंक और कम कर देना चाहिए । इसी क्रमसे शलाका राशि समाप्त हो गई ।

१. क. उ. अधिच्छिदूण ज. अधिच्छेदूण । २. द. सत्तायसमाण, य. उ. सत्तायसणाम, क. ज. सत्तायसमाण । ३. व. विरलेदूण । ४. क. ज. य. उ. एक्केक्कं उक्कस्स । ५. क. ज. य. उ. समानं । ६. क. ज. उ. अवणोदयं । ७. द. व. क. ज. उ. अवणोदयमंतपपो । ८. द. व. एवक्क ।

शिष्टिय-सवर्णतर-राशि पुण्यद्विरासि कावूण एय-पुंजं सलायं ठविय एयपुंजं  
विरसिबूण 'एयकोकस्स' स्वस्स उत्पण्ण-रासि वावूण । अण्णोण्णभत्त्वं कावूण सलाय-  
रासिओ एयकं अवणोवण्णं । एवेण सरुवेण विदिय-सलाय-पुंजं समसं ।

अर्थ :—उस राशिकी समाप्तिके अनन्तर उत्पन्न हुई राशिकी दो प्रतिराशियाँ करें । उनमेंसे एक पुंज शलाका रूपसे स्थापित कर और एक पुंजका विरलन कर, एक-एक अंकके प्रति उत्पन्न ( हुई ) राशिकी देय देकर परस्पर गुणा करनेके पश्चात् शलाका राशिमेंसे एक अंक कम करना चाहिए । इस प्रक्रियासे द्वितीय शलाका राशि समाप्त हो गई ।

समसकाले उत्पण्ण-रासि दुप्पट्टि-रासि कावूण एयपुंजं सलायं ठविय एयपुंजं  
विरसिबूण 'एयकोकस्स' स्वस्स उत्पण्ण-रासि वावूण अण्णोण्णभत्त्वं कावूण सलाय-  
रासिओ 'एयकं' अवणोवण्णं । एवेण कमेण तविय-पुंजं निद्वियं ।

अर्थ :—( द्वितीय शलाका राशिके ) समाप्ति कालमें उत्पन्न राशिकी दो प्रतिराशियाँ करें । उनमेंसे एक पुंज शलाका रूप स्थापित करें और एक पुंजको विरलित कर एक-एक अंकके प्रति उत्पन्न राशिकी देय देकर परस्पर गुणा करनेके पश्चात् शलाका-राशिमेंसे एक अंक कम कर देना चाहिए । इस क्रमसे तृतीय पुंज समाप्त हो गया ।

एवं कवे' उक्कस्स-असंखेज्जासंखेज्जयं ण पावदि । धम्मघम्म लोणागास'  
एयजीव-यवेसा । चत्तारि वि लोणागास-मेत्ता, पत्तेण-सरीर-बावर-परिद्विया' एवे दो वि  
किञ्चुण साधरोधमं विरसीवूण विमंगवावूण अण्णोण्णभत्त्वं कवे रासि-वभाणं होवि ।  
सुप्पेवे' असंखेज्जरासीधो पुण्णित्त-रासिस्स उवरि पण्णित्तविबूण पुण्णं ण तिण्णिचार-  
वणिग्ग-संबणिग्गे कवे उक्कस्स-असंखेज्जासंखेज्जयं' ण उत्पज्जवि ।

अर्थ :—ऐसा करनेपर भी उत्कृष्ट-असंख्यातासंख्यात प्राप्त नहीं होता । (असंख्यात प्रदेशी)  
(१) धर्मद्रव्य, (२) अधर्मद्रव्य (३) लोकाकाश और (४) एक जीव, इन चारोंके प्रदेश लोकाकाश  
प्रमाण हैं । तथा (५) प्रत्येक शरीर ( अप्रतिष्ठित प्रत्येक वनस्पति स्वरूप यह जीव राशि एक जीवके  
प्रदेशोंसे असंख्यात गुणी है ) और (६) बाहर प्रतिष्ठित, ( प्रतिष्ठित प्रत्येक वनस्पति स्वरूप यह

१. क. ज. उ. एकजीवभक्तकं । २. द. व. एयकपस्स । ३. द. व. क. व. उ. कवे ।

४. क. व. उ. लोणागाता । ५. क. ज. उ. परिद्वियं । ६. द. व. क. व. उ. सक्कि पदे । ७. व. क.

जीवराशि प्रत्येक शरीर बनस्पति जीव राशिसे असंख्यात गुणो है । ) इन दोनों राशियोंका प्रमास कुछ कम सागरोपम राशिका विरलनकर और उसीको देव देकर परस्पर गुणा करने पर जो राशि उत्पन्न हो उतना है ( जो क्रमशः असंख्यात-लोक, असंख्यात लोक प्रमाण है ) । इन छहों असंख्यात-राशियोंको पूर्व ( तीन बार वर्गितसंवर्गित प्रक्रियासे ) उत्पन्न राशिमें मिलाकर पूर्वके सदृश पुनः तीन बार वर्गित-संवर्गित करनेपर भी उत्कृष्ट-असंख्यातासंख्यात उत्पन्न नहीं होता ।

तदा त्रिविधं - ठाणाणि, त्रिविधं जम्भवसाय - ठाणाणि, कसायोदय - ठाणाणि, अनुभाग-अंधजम्भवसाय-ठाणाणि, जोगावभाषाद्विच्छेदाणि, उत्सापिणी-अवसापिणीसमयाणि च । एवाणि पक्षिविदूषण पुच्छं च बगिजसंवर्गितं कवे तदा उक्कस्स-असंखेज्जासंखेज्जयं अदिच्छिदूषण जहण्ण - परिस्तान्तयं गंतूण पडिबं । तवो एगखं अवप्पिजे जावं उक्कस्स-असंखेज्जासंखेज्जयं । जम्हि जम्हि असंखेज्जासंखेज्जयं 'मगिज्जदि तम्हि तम्हि अजहण्ण-मणुक्कस्स-असंखेज्जासंखेज्जयं घेत्थं । तं कस्स विसओ ? ओहिणाणिस्स ।

अर्थ :—तब फिर उस राशिमें स्थितिवन्धस्थान, स्थितिवन्धाध्यवसायस्थान, कथायोदय-स्थान, अनुभाग-वन्धाध्यवसायस्थान, योगोंके अविभागप्रतिच्छेद और उत्सापिणी-अवसापिणी कालके समय, इन ( छह ) राशियोंको मिलाकर पूर्व सदृश ही वर्गित-संवर्गित करने पर उत्कृष्ट-असंख्याता-संख्यातका अतिक्रमण कर जघन्य-परीतानन्त प्राप्त होता है । इसमेंसे एक अंक कम कर देनेपर उत्कृष्ट-असंख्यातासंख्यात होता है । जहाँ-जहाँ असंख्यातासंख्यातकी खोज करना हो वहाँ-वहाँ अजघन्या-नुत्कृष्ट असंख्यातासंख्यात की ग्रहण करना चाहिए । यह किसका विषय है ? यह अवधि-ज्ञानोका विषय है ।

उक्कस्स - असंखेज्जे, अवराणंतो हवेदि रुव - जुवे<sup>१</sup> ।

तसो चड्ढदि 'कालो, केवलणाणस्स परियंतं ॥३१५॥

अर्थ :—उत्कृष्ट असंख्यात ( असंख्यातासंख्यात ) में एक अंक मिला देनेपर जघन्य अनन्त होता है । उसके आगे केवलज्ञान पर्यन्त काल वृद्धिगत होता जाता है ॥३१५॥

जं तं अणंतं तं त्रिविहं, परिस्तान्तयं, जुस्तान्तयं, अणंतारणंतयं वेदि । 'जं तं परिस्तान्तयं तं त्रिविहं, जहण्ण-परिस्तान्तयं, अजहण्णमणुक्कस्स-परिस्तान्तयं, उक्कस्स-

१. अ. जोगपलिच्छेदाणि । २. द. ब. उ. बगिज्जदि । ३. अ. य. जुवो । ४. क. अ. य. उ.



परित्यागंतयं चेदि । जं तं जुस्ताणंतयं तं तिविहं, अहृण्यमणुषकस्स-  
जुता-अंतयं, अहृण्यमणुषकस्स-अणंतयं चेदि । जं तं अणंतयं तं तिविहं अहृण्यमणंतयं,  
अहृण्यमणुषकस्स-अणंतयं, अहृण्यमणंतयं चेदि ।

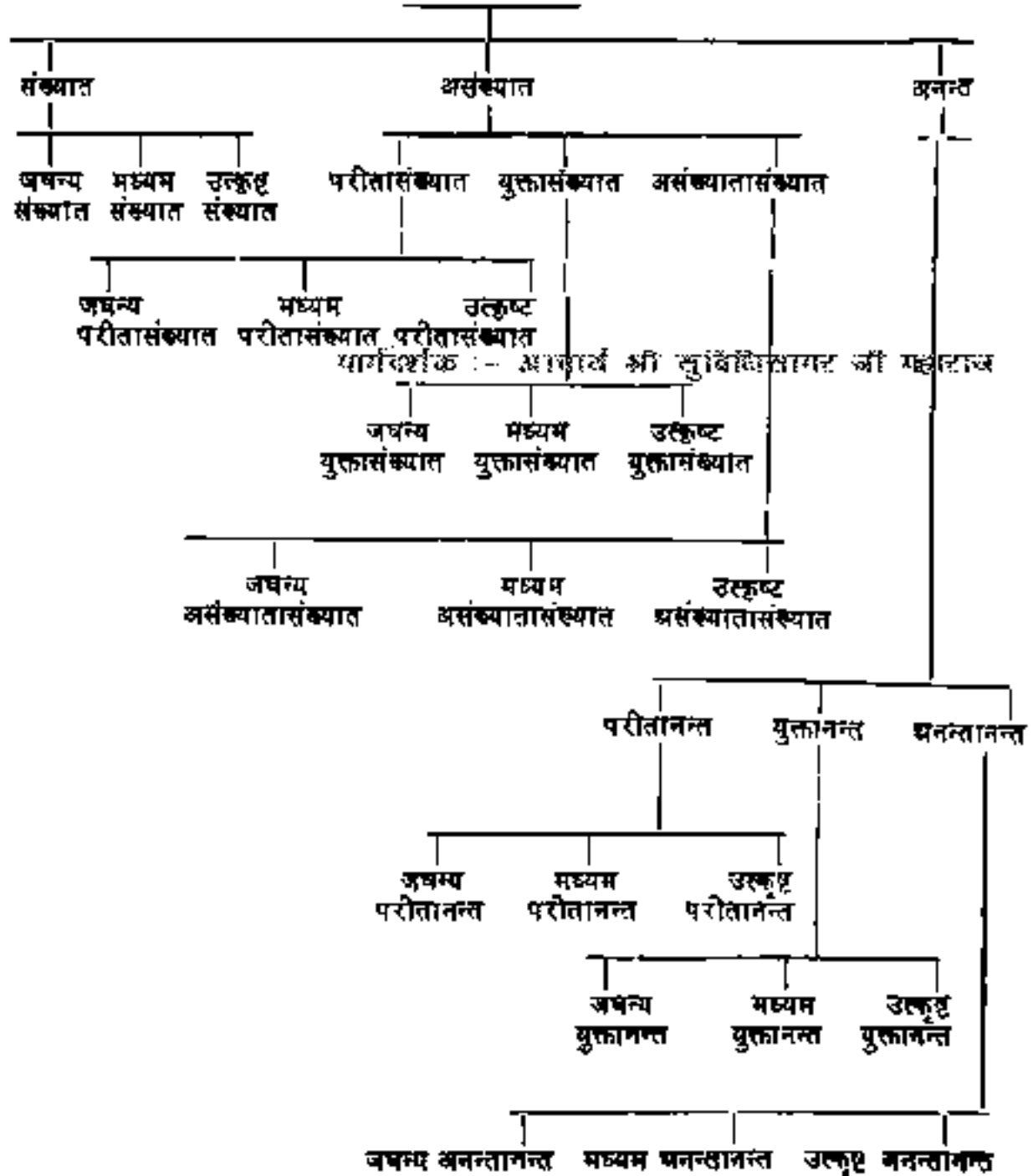
अर्थ :—जो यह अनन्त है वह तीन प्रकार है—परीतानन्त, युक्तानन्त और अनन्तानन्त ।  
इनमेंसे जो परीतानन्त है वह तीन प्रकार है—अधन्य परीतानन्त, अधन्यानुत्कृष्ट परीतानन्त और  
उत्कृष्ट परीतानन्त । इसीप्रकार युक्तानन्त भी तीन प्रकार है—अधन्य युक्तानन्त, अधन्यानुत्कृष्ट  
युक्तानन्त और उत्कृष्ट युक्तानन्त । अनन्तानन्त भी तीन प्रकार है—अधन्य अनन्तानन्त, अधन्यानुत्कृष्ट  
अनन्तानन्त और उत्कृष्ट अनन्तानन्त ।

विशेषार्थ :—संख्यात, असंख्यात और अनन्तके भेद प्रभेदोंकी तालिका—

[ तालिका अगले पृष्ठ पर देखिये ]

तालिका : ८

**संख्या प्रमाण**



जं तं जहण्ण-परितान्तयं तं विरसेदूण एक्केकस्स रुवस्स जहण्ण-परितान्तयं वादूण अण्णोण्णभत्थे कवे उक्कस्स-परितान्तयं अविच्छिदूण जहण्ण-जुत्तान्तयं गंतूण पडिदं । एकविओ अमग्ग-सिद्धिय-रासी । तवो एग-रुवे अघणीवे जावं उक्कस्स-परितान्तयं । तवो जहण्ण-जुत्तान्तयं सइ वग्गिदं उक्कस्स-जुत्तान्तयं अविच्छिदूण जहण्णमन्ता-रुत्तयं गंतूण पडिदं । तवो एग-रुवे अघणीवे जावं उक्कस्स-जुत्तान्तयं । तवो जहण्णम-न्तान्तयं पुब्बं व तिण्णिवार वग्गिद-संवग्गिद कवे उक्कस्स-अन्तान्तयं ण पाववि ।

अर्थ :—यह जो जघन्य-परीतान्त है, उसका विरतन कर और एक-एक अंकके प्रति जघन्य-परीतान्त ( ही ) देय देकर परस्पर गुणा करनेपर उत्कृष्ट-परीतान्तका उत्लघन कर जघन्य-युक्तान्त प्राप्त होता है । इतनी ही अभव्यराशि है ( जघन्य युक्तान्त की जितनी संख्या है उतनी संख्या प्रमाण ही अभव्य राशि है ) । इस जघन्य युक्तान्तमेंसे एक अंक कम करने पर उत्कृष्ट-परीतान्त होता है । तत्पश्चात् जघन्ययुक्तान्तका एक बार वर्ग करनेपर उत्कृष्टयुक्तान्तको लाघकर जघन्य-अनन्तान्त प्राप्त होता है । इसमेंसे एक ही अंक कम करने पर उत्कृष्टयुक्तान्तकी प्राप्ति होती है । पश्चात् जघन्य-अनन्तान्त रूप राशि को तीन बार वर्गित-संवर्गित करनेपर ( भी ) उत्कृष्ट-अनन्तान्त प्राप्त नहीं होता ।

सिद्धा निगोद-जीवा, वणप्फदि कासो य पोगसा सेव ।

सध्वमलोगागासं, छप्पेदे जंत - वक्खेवा ॥३१६॥

अर्थ :—सिद्ध ( जो सम्पूर्ण जीव राशिके अनन्तवें भाग प्रमाण हैं ), निगोद जीव ( जो सिद्धराशिसे अनन्तगुणी और पृथिवीकाय आदि चार स्वावर, प्रत्येक वनस्पति एवं वन इन तीन राशियोंसे रहित संसार राशि प्रमाण हैं ), वनस्पति ( प्रत्येक वनस्पति सहित निगोद वनस्पति ), पुद्गल ( जो जीव राशिसे अनन्तगुणी हैं ), काल ( जो पुद्गलसे अनन्तगुणी हैं ऐसे कासके समय ) और अलोकाकावा ( जो काल द्रव्यसे अनन्तगुणी हैं ) ये छह अनन्त प्रयोग हैं ॥३१६॥

साणि पक्खिदूण पुब्बं व तिण्णिवारे वग्गिद - संवग्गिदं कवे, तवो उक्कस्स-अन्तान्तयं ण पाववि । तवो अम्मट्ठियं अधम्मट्ठियं अणुल्लहगुणं अण्णतान्तं पक्खिविदूण पुब्बं व तिण्णिवारे वग्गिद - संवग्गिदं कवे उक्कस्स - अण्णतान्तयं ण उप्पज्जदि । तवो

केवलज्ञान-केवलदर्शनस्स अणंता - भागा तस्सुवर्णि 'पक्खिस्स' उवकस्स-अणंताभंतयं  
उप्यण्णं ।

अर्थात् तं भाजनं नित्यं तं द्रव्यं एवं भणितो । एवं वर्णित उप्यण-संख्य-वर्ण-  
रासीणं पुंजं केवलज्ञान-केवलदर्शनस्स अणंतिमभागं होदि तेण कारणेण अर्थात् तं भाजनं  
नित्यं तं द्रव्यं । जम्हि जम्हि अणंताभंतयं 'मग्गिज्जदि तम्हि तम्हि अज्जहण्णमणुवकस्स-  
अणंताभंतयं धेत्तव्वं । तं कस्स विसमो ? केवलज्ञानिस्स ।

अर्थः—इन छहों राशियोंको मिलाकर पूर्वके सहस्र तीन बार वर्णित-संवर्णित करनेपर  
उत्कृष्ट अनन्तानन्त प्राप्त नहीं होता, वनः इस राशियोंमें, धर्म और अधर्म द्रव्योंमें स्थित अनन्तानन्त  
अणुगुणधुगुण ( के अविभागीप्रतिच्छेदों ) को मिलाकर पूर्वके सहस्र तीन बार वर्णित-संवर्णित करना  
चाहिए । इसके पश्चात् भी जब उत्कृष्ट अनन्तानन्त उत्पन्न नहीं होता, तब केवलज्ञान अथवा केवल-  
दर्शनके अनन्त बहुभागको ( अर्थात् केवलज्ञानके अविभागी प्रतिच्छेदोंमेंसे उपर्युक्त महाराशि घटा देने-  
पर जो अवशेष रहे वह ) उसी राशि में मिला देनेपर ( केवलज्ञानके अविभागीप्रतिच्छेदोंके प्रमाण  
स्वरूप ) उत्कृष्ट अनन्तानन्त प्राप्त होता है । यथा—

मानसो :—उपर्युक्त सम्पूर्ण प्रक्रियासे उत्पन्न होने वाली राशि १०० है, जो मध्यम  
अनन्तानन्त स्वरूप है, इसे उत्कृष्ट अनन्तानन्त स्वरूप १००० में से घटा देनेपर ( १०००—१०० ) =  
९०० शेष रहे, इस शेष ( ९०० ) को १०० में जोड़कर ( ९०० + १०० ) = १००० स्वरूप उत्कृष्ट  
अनन्तानन्तका प्रमाण प्राप्त हो जाता है । उस पूर्वोक्त राशिमें मिलाने पर उत्कृष्ट अनन्तानन्त उत्पन्न  
हुआ ( संख्या प्रमाण में इससे बड़ा और कोई प्रमाण नहीं है ) ।

वह भाजन है द्रव्य नहीं है, इस प्रकार कहा गया है, क्योंकि इस प्रकार वर्णसे उत्पन्न सर्ववर्ण  
राशियोंका पुण्य केवलज्ञान-केवलदर्शनके अनन्तवें भाग है, इसी कारणसे वह भाजन है, द्रव्य नहीं  
है । जहाँ-अहाँ अनन्तानन्तका ग्रहण करना हो वहाँ-वहाँ अजघन्यानुत्कृष्ट-अनन्तानन्तका ग्रहण करना  
चाहिए । यह किसका विषय है ? यह केवलज्ञानीका विषय है ।

अवसप्पिणी एवं उत्सप्पिणी कालोंका स्वरूप एवं उनका प्रमाण—

भरहवसेसम्मि इमे, अज्जा-खंडम्मि काल-परिभागा<sup>१</sup> ।

अवसप्पिणि -<sup>२</sup>उत्सप्पिणि - पञ्जाया होण्णि होति पुंजं ॥३१७॥

१. व. व. क. ज. उ. पक्खिस्सो । २. व. व. क. ष. उ. मग्गिज्जदि । ३. द. पक्खिमा ।

अर्थ :—भरतयोगके आर्यखण्डमें ये कालके विभाग हैं । यहाँ पृथक्-पृथक् अवसर्पिणी और उत्सर्पिणी रूप दोनों ही कालको पर्यायों होतो हैं ॥३१७॥

गर-तिरियाणं जाऊ, 'उच्छेह-विभूवि-पहुवि' सञ्च ।  
अवसर्पिणिह हायदि, उत्सर्पिणिषासु बड्ढेवि ॥३१८॥

अर्थ :—अवसर्पिणी कालमें मनुष्य एवं तिर्यञ्चोंकी आयु, गरोरकी ऊँचाई एवं विभूति आदि सब ही घटते रहते हैं तथा उत्सर्पिणी कालमें बढ़ते रहते हैं ॥३१८॥

अद्धारपल्ल-सायर - उवमा बस होति<sup>१</sup> कोडिकोडीओ ।  
अवसर्पिणि - परिमाणं, उत्सर्पिण्युत्सर्पिणी<sup>२</sup> कालो ॥३१९॥

अर्थ :—अद्धापल्लोसे निर्मित दस कोड़ाकोड़ी सागरोपम-प्रमाण अवसर्पिणी और इतना ही उत्सर्पिणी काल भी है ॥३१९॥

दोणि वि मिलिदे कप्पं, छमेदा होति तत्थ पच्चेकं ।  
सुसमसुसमं च सुसमं, तइअज्यं<sup>३</sup> सुसमदुस्समयं ॥३२०॥

दुस्समसुसमं दुस्सममविदुस्समयं च तेसु पडमम्मि ।  
अत्तारि - सायरोवम - कोडीकोडीओ परिमाणं ॥३२१॥

सुसमम्मि तिणिज्ज अत्तहो-उवमाणं होति कोडिकोडीओ ।  
दोणि तवियम्मि तुरिमे, बाबाल-सहस्स-विरहिओ एक्को ॥३२२॥

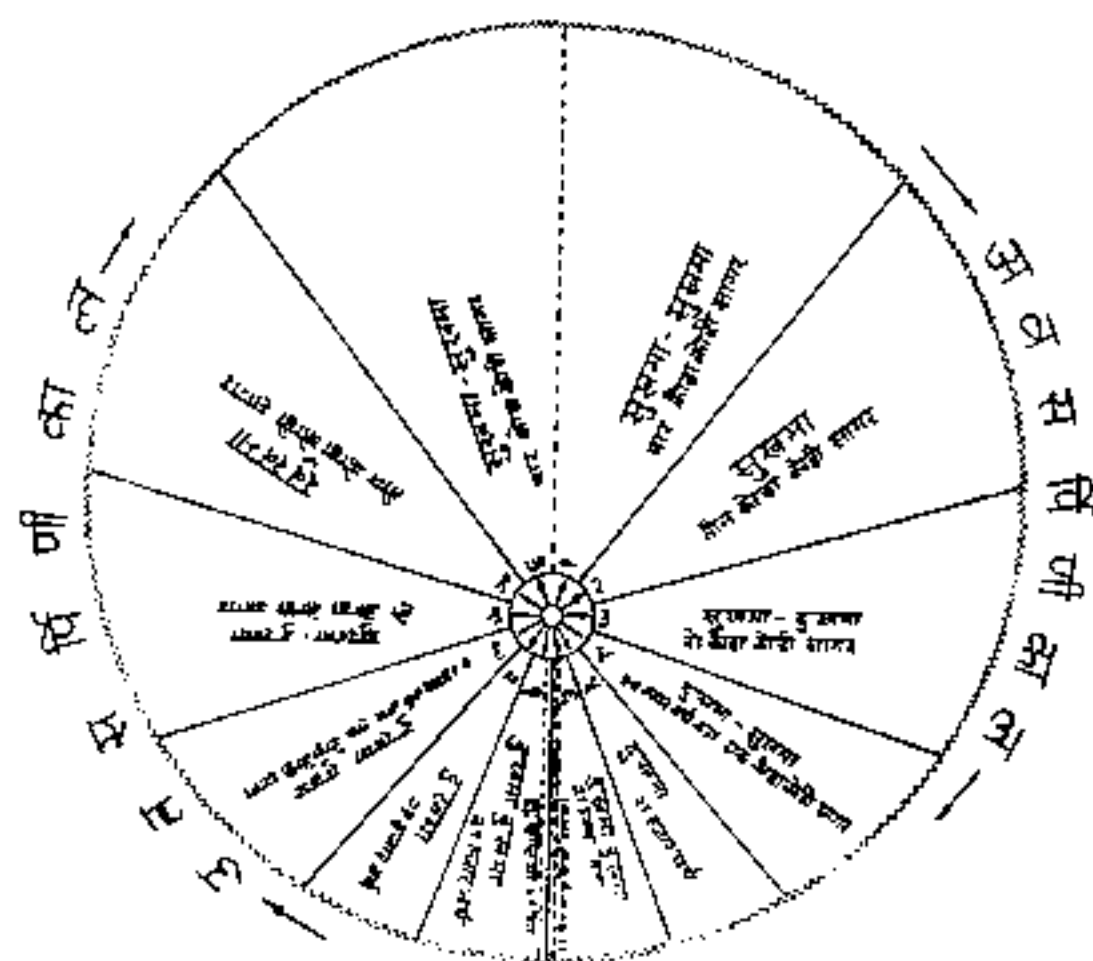
इगिओस-सहस्साणि, वासाणि<sup>४</sup> दुस्समम्मि परिमाणं ।  
अविदुस्समम्मि कासे, सेतियमेत्तं<sup>५</sup> मि एादब्बं ॥३२३॥

अर्थ :—इन दोनोंको मिलानेपर दोस कोड़ाकोड़ी सागरोपम प्रमाणका एक कल्पकाल होता है । अवसर्पिणी और उत्सर्पिणीमेंसे प्रत्येक के छह-छह भेद होते हैं—सुधमासुधमा, सुधमा, सुधमा-दुष्यमा, दुष्यमासुधमा, दुष्यमा और अतिदुष्यमा । इन छहों कालोंमेंसे प्रथम सुधमासुधमा चार

१ द. उच्छेह । २ द. हृति. प. होदि । ३ द. सुसमदुस्समयं । ४ द. व. क. ज. उ.

दुस्सहम्मि, थ. पुत्तयम्मि ।

कोड़ाकोड़ी सागर प्रमाण, सुधमा तीन कोड़ाकोड़ी सागर प्रमाण, तीसरर दो कोड़ाकोड़ी सागर प्रमाण, चौथा बयासीस हजार वर्ष कम एक कोड़ाकोड़ी सागर प्रमाण, पाँचवां दुधमा काल इक्कीस हजार वर्ष प्रमाण और षष्ठिदुधमा काल भी इतने ही ( इक्कीस हजार ) वर्ष प्रमाण जानना चाहिए ॥३२०-३२३॥



पंच मेरू संवन्धी  
पाँच भरत और पाँच रेशवत क्षेत्रों में  
अवसर्पिणी व उत्सर्पिणी काल चक्र

सुपमासुषमा कालका निरूपण—

सुसमससमस्मि 'काले', 'सुसी रज-धूम-जलण-जिम-रहिवा' ।  
कडिय 'अवमसिला - विच्छिन्नादि - काडोवसग-परिचला ॥३२४॥

जिम्मल-वप्पण-सरिसा', जिबिद - बब्बेहि बिरहिवा तीए ।  
सिरावा हवेदि 'विज्वा, तणु-भण-णयणाण सुह-जलणी ॥३२५॥

अर्थ :—सुषमासुषमा कालमें भूमि रज, धूम, दाह और हिमसे रहित साफ-सुथरी, ओलावृष्टि तथा विच्छिन्न आदि कीड़ोंके उपसर्गसे रहित निर्मल वर्षणके समान, निन्द्यपदार्थोंसे रहित दिव्य-बालुकामय होती है जो तन-मन और नेत्रोंको सुख उत्पन्न करती है ॥३२४-३२५॥

विष्फुरिद-वंच-वप्पणा, सहाव-मउवा य मधुर-रस-जुसा ।  
चउ-अंगुल-परिमाणा', तुण' पि जाएवि सुरहि-गंधब्दा' ॥३२६॥

अर्थ :—उस पृथिवी पर पाँच प्रकारके वनोंसे स्फुरायमान, स्वभावसे मृदुल, मधुर रससे युक्त, सुगन्धसे परिपूर्ण और चार अंगुल प्रमाण ऊँचे तृण उत्पन्न होते हैं ॥३२६॥

तीए 'गुच्छा गुम्मा, कुसुमंकुर-फल-पवास-परिपुण्णा ।  
'बहओ विचित्त - वण्णा, वस्स - समूहा समुत्तुंगा ॥३२७॥

अर्थ :—उस कालमें पृथिवी पर गुच्छा, मुल्म ( भाखी ), पुष्प, अंकुर, फल एवं नवीन पत्तोंसे परिपूर्ण, विचित्र वर्णवाले और ऊँचे वृक्षोंके बहुतेरे समूह होते हैं ॥३२७॥

कल्हार-कमल-कुबलय-कुमुदज्जल-जल-पवाह-पवहत्था' ।  
पोक्खरणी - वावोओ, मअरादि' - विवक्खिया होंति ॥३२८॥

अर्थ :—कल्हार ( सफेद कमल ), कमल, कुबलय और कुमुद ( कमलपुष्पों ) एवं उज्ज्वल जल-प्रवाहसे परिपूर्ण तथा मकरादि जल-जन्तुओंसे रहित पुष्करिणी और वापिकाएँ होती हैं ॥३२८॥

१. व. काल, उ. काली । २. द. व. क. ज. उ. भूमि । ३. द. व. क. ज. उ. सम्राट् ।

४. व. उ. सरसा । ५. द. व. क. ज. य. उ. दब्बा । ६. क. ज. द. य. उ. परिमाण । ७. क. य. उ. ज.

द. व. वरुणं ति । ८. क. य. उ. मण्ड । ९. व. ज. व. गच्छा । १०. द. क. क. ज. य. उ. पवहत्थो ।

११. द. व. क. ज. य. उ. मअरादि :

पोकसरणी-पहुबीजं, चउ-तड-सूमीसु रयण-सोबाणा<sup>१</sup> ।

तेसु<sup>२</sup> वर - वासावा<sup>३</sup>, सयणासण - जिहह - परिपुज्जा ॥३२६॥

अर्थ :—( इन ) पुष्करिणी आदिककी चारों तट-भूमियोंमें रत्नोंकी सीढ़ियां होनी हैं ।  
उनमें शय्या एवं आसनोंके समूहोंसे परिपूर्ण उत्तम भवन हैं ॥३२६॥

निस्सेस-वाहि-गासण-अभिदोबम<sup>४</sup>-विमल-सलिल-परिपुज्जा ।

रेहति विग्घिमाओ, जल - कीडण - विध्व - शब्ब - जुदा ॥३२७॥

अर्थ :—सम्पूर्ण व्याधियोंकी नष्ट करनेवाले धर्मलोपम निर्मल जलसे परिपूर्ण और जल-  
झोड़ाके निमित्तभूत दिव्य द्रव्योंसे संयुक्त दीर्घिकाएं ( वापिकाएं ) शोभायमान होती हैं ॥३२७॥

अइमुसुवारा भवणा, सयणासण-सरोवरी<sup>५</sup> सुपुससंखाओ सुविदितामट<sup>६</sup> जी<sup>७</sup> ॥  
बिबिधित<sup>८</sup> भसंते, निरुदमं भोगसूमीए ॥३२८॥

अर्थ :—भोगभूमिमें ( भोगभूमियोंके ) अत्यन्त रमणीय भवन और उत्तम प्रासाद अनेक  
प्रकारकी शय्याओं एवं अनुपम आसनोंसे सुन्दर प्रतिभासित होते हैं ॥३२८॥

धरनिधरा उलुंगा<sup>९</sup>, कंखण-वर-रयण-जियर-परिणामा ।

गाणाविह - कप्पहुम<sup>१०</sup> - संपुज्जा विग्घिमाहि - जुदा ॥३२९॥

अर्थ :—( वहाँ पर ) स्वर्ण एवं उत्तम रत्न समूहोंके परिणाम रूप, नाना प्रकारके कल्प-  
वृक्षोंसे परिपूर्ण तथा दीर्घिकादिक ( सरोवरों ) से संयुक्त उन्नत पर्वत हैं ॥३२९॥

धरणी बि पंचवणा, तमु-भज-शायजाण जंदनं कुणइ ।

वाजिजवलीस-भरगय-मुस्ताहस-पउमराय-फलित-जुदा ॥३३०॥

अर्थ :—पंचवर्ण वाली और होरा, इन्द्रनील, मरकत, मुक्ताफल, पधराग तथा स्फटिक मणियों  
संयुक्त वहाँ की पृथिवी भी तन, मन, एवं नयनों की आनन्द देती है ॥३३०॥

१. व. क. उ. सोबाणी । २. द. व. क. ज. उ. वर वासावी, व. वर वासावी । ३. व. व. क. व.  
उ. उ. अविदावम । ४. द. व. भासंती, क. व. प. उ. पभासंती । ५. द. व. उलंवा । ६. द. व. क. व.  
उ. कप्पहुमा । ७. व. व. क. अ. उ. पउमरायपणिइ ।



एवराओ बाहिणीओ, हो-तड-सोहंत-रयण-सोवाणा' ।

अमय-बर-खोर-पुण्या, मणिमय सिकदादि सोहंति ॥३३४॥

अर्थ :—( वही ) उभय तटोंपर शोभायमान रत्नमय सीढ़ियोंसे संयुक्त और अमृत सदृश उत्तम खोर ( जल ) से परिपूर्ण अष्ट मंदिरों मणिमय बालुका से शोभायमान होती हैं ॥३३४॥

संस-विषीसिय-मक्कुण-भोमच्छो-वंस-मसय-किमि-यहुबो ।

विषीसियिया न होति हु, नियमेणं पडम-कात्थम्मि ॥३३५॥

अर्थ :—प्रथम ( सुषमसुयमा ) कालमें नियमसे संख, चींटी, खटमल, गोमक्षिका, डाँस, मच्छर और कृमि आदिक विकलेन्द्रिय जीव नहीं होते ॥३३५॥

नत्थि असण्णो जीवो, नत्थि तहा सामि-मिण्ण भेदो' य ।

कसह - महाबुद्धावी, ईसा - रोगावि न हु होति ॥३३६॥

अर्थ :—इस कालमें असंज्ञी जीव नहीं होते, स्वामी और भृत्यका भेद भी नहीं होता, कसह एवं भीषण युद्ध आदि तथा ईर्ष्या और रोग आदि भी नहीं होते हैं ॥३३६॥

रत्ति - विणाणं भेवो, तिमिरावव-सोद-वेदरणा-णिवा ।

परदार - रवी परधन - खोरी' या नत्थि नियमेण ॥३३७॥

अर्थ :—प्रथम कालमें नियमसे रात-दिनका भेद, अन्धकार, गर्मी एवं शीतली वेदना, निन्दा, परस्त्री रमण और परधन हरण नहीं होता ॥३३७॥

अमलाजमल-पसूदा, वर-बोजण-समलणोहि परिपुण्या ।

खवर - पमाणाहारं, अट्टम - भसोसु भुंजंति ॥३३८॥

अर्थ :—इस कालमें युगल-युगलरूपसे उत्पन्न हुए ( स्त्री-पुरुष ) उत्तम व्यञ्जनों ( तिल-मस आदि ) और चिह्नों ( संस-पक्ष आदि ) से परिपूर्ण होते हुए अष्टम भक्तमें ( चौथे दिन बेरके बराबर आहार ग्रहण करते हैं ॥३३८॥

तस्मिन् काले छ 'विद्यय', चाव-सहस्राणि' देह-उत्सेहो ।

तिष्ठिण पलिबोधमाहुं, आऊणि शराराण आरोहं ॥३३६॥

अर्थ :- अन्तर्गत और सुविजितगर्त की प्रशंसा

अर्थ :- इस कालमें पुरुष और स्त्रियों के शरीर की ऊँचाई छह-हजार धनुष एवं आयु तीस पक्ष्य प्रमाण होती है ॥३३६॥

पुट्टोए होंति अट्टो, छपण्णा समहिवा य बोष्णि सया ।

सुसमसुसमभिन् काले, शराण आरोह पसेवकं ॥३४०॥

अर्थ :- सुपमासुपमा कालमें पुरुष और स्त्रियोंमेंसे प्रत्येकके पृष्ठ भागमें दो सौ छपन हड्डियाँ होती हैं ॥३४०॥

भिष्णिणव-जील-केसा, शिरवम-सावण्य-कव-परिपूणा ।

सुह - सायर - मउभगया, नीलुप्पल्ल-सुरहि-गिस्सासा ॥३४१॥

अर्थ :- ( इस कालमें मनुष्य ) भिन्न इन्द्रनीलमणि अर्थात् खण्डित इन्द्रनीलमणि जैसे बीजसे गहरी नीली (काली) होती है उसके सदृश गहरे काले केशवाले, अनुपम सावण्यरूपसे परिपूर्ण सुखसागर में निभन्न और नीलकमल सदृश सुगन्धित निवास से युक्त होते हैं ॥३४१॥

सम्भोगमूभि-जावा, शव-गाग-सहस्र-सरिस-अल-जुसा ।

आरुण - पाणि - पादा, शवचंपय - कुसुम - गंधद्व्या ॥३४२॥

महव - अऊअव - जुसा, संवकसाया सुसील - संपण्णा ।

आविम - संहणण - जुवा, समवउरस्संग - संठाणा ॥३४३॥

वास-रवी सम-तेया, कवसाहारा वि विगव-पोहारा ।

ते कुगल - धम्म - जुसा, परिवारा गत्थि तवकाले ॥३४४॥

गाम-अयरवि सव्वं, एा होवि ते होंति दिव्व-कप्पतरु ।

शिय - जिय - मण - संकप्पिद-अत्थणि वेति कुगलारं ॥३४५॥

**अर्थ :—** उस भोगभूमिमें उत्पन्न हुए मनुष्य नौ हजार हाथियों के बलके सदृश बलसे युक्त, किंचित् सास हाथ-पैर वाले, नव-वर्षकके फूलोंकी सुगन्धसे व्याप्त, मार्दव एवं प्रार्जव (गुणों) से सयुक्त, मन्दकषायी, सुशील (गुण से) सम्पूर्ण, आदि (वर्षवृषभनाराज) संहतन से युक्त, समचतुरस्र-शरीर-संस्थानवाले, उदित होते हुए सूर्य सदृश तेजस्वी, कवलाहार करते हुए भी मल-भूषणसे रहित और युगलधर्म युक्त होते हैं। इस कालमें नर-नारीके अतिरिक्त अन्य परिवार नहीं होता। ग्राम एवं नगरादि सब नहीं होते, मर्य दिव्य कल्पवृक्ष होते हैं, जो युगल को अपनी-अपनी मन इच्छित (संकल्पित) वस्तुएं दिया करते हैं ॥३४२-३४५॥

दस प्रकारके कल्पवृक्ष—

पाणंग - तूरियंगा, भूषण - वस्त्रंग - भोजनंग य ।

आलय - दीविय - भायण - मासा-तेजंग-आदि-कल्पतरू ॥३४६॥

**अर्थ :—**( भोगभूमिमें ) पानाङ्ग, तूर्याङ्ग, भूषणाङ्ग, वस्त्राङ्ग, भोजनाङ्ग, आलयाङ्ग, दीपाङ्ग, भाषणाङ्ग, मासाङ्ग और तेजाङ्ग आदि कल्पवृक्ष होते हैं ॥३४६॥

पाणं महुर - सुसादं, छ-रसेहि जुवं पसत्थ - मइसीवं ।

बत्तीस - मेव - जुहां, पाणंगा वेति तुट्ठि - पुट्ठियरं ॥३४७॥

**अर्थ :—**( इनमेंसे ) पानाङ्ग जातिके कल्पवृक्ष ( भोगभूमिजोंको ) मधुर, सुस्वादु, छद रससे युक्त, प्रवास्त, अतिशीतल तथा तुष्टि और पुष्टिकारक बत्तीस प्रकारके पेय (द्रव्य) दिया करते हैं ॥३४७॥

तूरंगा वर - बोणा, पडुपडह - मुईंग - भल्लरी - संज्ञा ।

दुंदुभि - भंभा - भेरी - काहल-पमुहाइ वेति वज्जाइ ॥३४८॥

**अर्थ :—**तूर्याङ्ग जातिके कल्पवृक्ष उत्तम बीणा, पट्ट पटह, मृदङ्ग, मालर, शंख, दुन्दुभि, भग्ना, भेरी और काहल इत्यादि भिन्न-भिन्न प्रकारके बाजे ( वादित ) देते हैं ॥३४८॥

तरओ वि भूषणंगा, कंकण - कटिसुत्त - हार - केयूरा ।

मंजोर - कडय - कुंडल - तिरोड - मज्जादियं वेति ॥३४९॥

**अर्थ :—**भूषणाङ्ग जातिके कल्पवृक्ष कंकण, कटिसूत्र, हार, केयूर, मंजोर, कटक, कुण्डल, किरीट और मुकुट इत्यादि आभूषण प्रदान करते हैं ॥३४९॥

वत्संगा जित्तं 'पटचीण-सुधर-सुधम-बहुवि-वत्स्याणि ।

मण - जयणार्णवकरं, गाणा - वत्स्यादि ते वेति ॥३५०॥

अर्थ :- वस्त्राङ्ग जातिके कल्पवृक्ष नित्य चीनपट (सूती वस्त्र) एवं उत्तम क्षीम (रेशमी) आदि वस्त्र तथा मन और नेत्रोंको आनन्दित करने वाले नाना प्रकारके अन्य वस्त्र देने हैं ॥३५०॥

सोलस - विहमाहारं, सोलसमेयाणि वैज्याणि पि ।

चोदसविह - सुपादं, खज्जाणि विगुणचउवर्णं ॥३५१॥

सायाणं च पयारे, तेसट्टी - संजुवाणि ति - तयारिण ।

रस - मेदा तेसट्टी, वेति कुड भोयवंग - दुमा ॥३५२॥

अर्थ :- भोजनाङ्ग जातिके कल्पवृक्ष सोलह प्रकारका आहार, सोलह प्रकारके व्यञ्जन, चौदह प्रकारके सूप ( दाल आदि ) चउवनके दुगुने ( १०८ ) प्रकारके खाद्य पदार्थ, तीनसौ तिरैसठ प्रकारके स्वाद्य पदार्थ एवं तिरैसठ प्रकारके रस भेद पूषक्-पूषक् दिया करते हैं ॥३५१-३५२॥

सत्थिय - गंदावत्तं, पमुहा जे के वि दिव्व - पासादा ।

सोलस - मेदा रम्मा, वेति हु ते आलयंग - दुमा ॥३५३॥

अर्थ :- मालयाङ्ग जातिके कल्पवृक्ष, स्वस्तिक एवं मन्दावत्त आदि सोलह प्रकारके रमणीय दिव्य भवन दिया करते हैं ॥३५३॥

दीवंग-दुमा 'साहा - पवाल - फल - कुसुममंकुराधीहि ।

दीवा इव पज्जसिवा, पासादे वेति उज्जोव ॥३५४॥

अर्थ :- दोषाङ्ग जातिके कल्पवृक्ष प्रासादोंमें साहा, प्रवाल, फल, फूल और अंकुरादिके द्वारा जसते हुए दीपकोंके सदृश प्रकाश देने हैं ॥३५४॥

भायणमंगा कंचण - बहुरयण - विणिस्सियाह थासाहं ।

भिगार - कलस - गगगरि - चाप्पर पीदावियं वेति ॥३५५॥

अर्थ :- भाजनाङ्ग जातिके कल्पवृक्ष स्वर्ण एवं बहुत प्रकारके रत्नोंसे निमित्त घाल, भारी, कलश, गगगर, चाप्पर और आसनादिक प्रदान करते हैं ॥३५५॥

बल्ली-तरु-गुच्छ-लघुभक्षण<sup>१</sup> सोलस - सहस्र - भेदाणि ।

मालंग - दुमा<sup>२</sup> वेति हु, कुसुमानं विविह<sup>३</sup> - मालाओ ॥३५६॥

अर्थ :—मालाङ्ग जातिके कल्पवृक्ष बल्ली, तरु, गुच्छों और लघुभक्षणों से उत्पन्न हुए सोलह हजार भेद रूप पुष्पोंकी विविधता से भरे होते हैं ॥३५६॥

तेजंगा सज्जंविज-दिणयर-कोडोण किरण-संकासा ।

एणक्कस - चंव - सूर - प्पहुवीणं कंति - संहरणा<sup>४</sup> ॥३५७॥

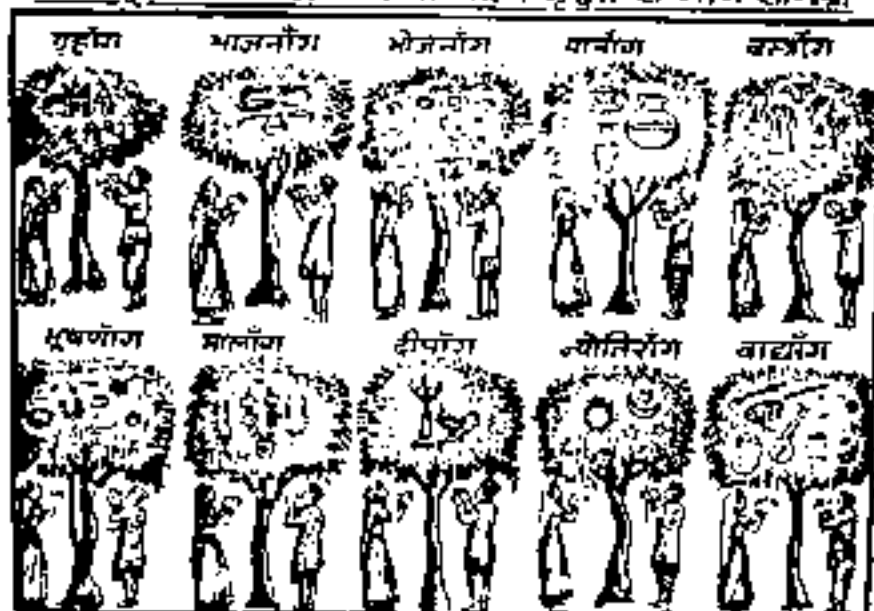
अर्थ :—तेजाङ्ग जातिके कल्पवृक्ष सज्जंदिणके करोड़ों सूर्योंकी किरणोंके सहस्र होते हुए सक्षत्र, चन्द्र और सूर्यादिककी कान्तिका संहरण करते हैं ॥३५७॥

ते सज्जे कल्पवुमा, ए<sup>५</sup> णक्कप्पदी णो वेतरा देवा ।

णक्करि पुदवि - सहवा, पुक्कल - फलं वेति जीवाणं ॥३५८॥

अर्थ :—वे सज्जे कल्पवृक्ष न तो वनस्पति ही हैं और न कोई व्यन्तर देव हैं । किन्तु पृथिवी रूप होते हुए वे वृक्ष जीवोंको उनके पुष्प ( कर्म ) का फल देते हैं ॥३५८॥

भोग भूमि में दस प्रकार के कल्प वृक्षों से भोग सामग्री



१. द. व. लघुभक्षण, क. न. य. उ. लघुभक्षण । २. द. व. क. ज. य. उ. संहरण । ३. द. क.

ज. कल्पवृक्षों से वेतरा, उ. कल्पवृक्ष । ४. द. व. क. ज. य. उ. एकरा ।

गीव - रसेसु<sup>१</sup> मोसुं, रुवे चण्डसु<sup>२</sup> सुसोरहे घाणं ।  
जीहा विविह - रसेसु<sup>३</sup>, फासे फासिवियं रमइ ॥३५६॥

अर्थ:—भोगभूमियोंकी श्रोत्र-इन्द्रिय गीतोंकी ध्वनिमें, चक्षु रूपमें, घ्राण सुन्दर सोरभमें, जिह्वा विविध प्रकारके रसोंमें और स्पर्शन इन्द्रिय स्पर्शमें रमण करती है ॥३५६॥

इय अण्कोण्णासत्ता, ते जुगला वर शिरंतरे भोगे<sup>४</sup> ।  
सुलभे बि ञ सत्तिस्ति, इंदिय - विसएसु पावति ॥३६०॥

अर्थ:—इसप्रकार परस्पर आसक्त हुए वे युगल (नर-नारी) उत्तम भोग-सामग्रीके निरन्तर सुलभ होने पर भी इन्द्रिय-विषयोंमें तृप्त नहीं हो पाते ॥३६०॥

जुगलाणि अणंतगुणं, भोगं चकहर-भोग-लाहाको<sup>५</sup> ।  
भुंजति जाव<sup>६</sup> आठं, कदलीघादेण रहिदाशि ॥३६१॥

अर्थ:—भोगभूमियोंके वे युगल कदलीघात-मरणासे रहित होते हुए आयु-पर्यन्त चक्रवर्तीके भोग-लाभको अपेक्षा अनन्तगुण भोग भोगते हैं ॥३६१॥

कप्पहुम - विष्ण - कत्तु<sup>७</sup>, घेत्तूण विकुम्बणाए बहुवेहे ।  
कावूणं ते जुगला, अणेय - भोगाई<sup>८</sup> भुंजति ॥३६२॥

अर्थ:—वे युगल, कल्पवृक्षों द्वारा दी गई वस्तुओंको ग्रहण करके और विक्त्रिया द्वारा बहुत प्रकारके शरीर बना कर अनेक भोग भोगते हैं ॥३६२॥

पुरिसा वर - मउड<sup>९</sup>-धरा, देविदावो बि सुंवरायारा ।  
अण्णर - सरिसा इत्थो, मणि-कुंडल-मंडिय-कपोला ॥३६३॥

अर्थ:—(वहाँ पर) उत्तम मुकुटको धारण करने वाले पुरुष इन्द्रसे भी अधिक सुन्दरकाकार होते हैं और मणिमय कुण्डलोंसे विभूषित कपोलों वाली स्त्रियाँ अप्सराओंके सदृश होती हैं ॥३६३॥

१. व. व. क. ज. य. उ. मासे । २. द. व. क. ज. उ. भोगवाहाको, व. भागवाहाको । ३. द. व. जाव, क. ज. य. उ. जात । ४. क. भोगा, ज. भोगा । ५. द. व. क. ज. व. मोहवरा ।

मउहं कुंडल - हारा, मेहल - पासंब - बम्हसुलाई ।  
अंगद - कडय - प्यहूरी, होंति सहाजेस आभरणा ॥३६४॥

अर्थ :—भोगभूमिजोंके मुकुट, कुण्डल, हार, मेखला, प्रालम्ब, ब्रह्मसूत्र, अंगद और कटक  
इत्यादिक आभूषण स्वभावसे ही कृपा करते हैं ॥३६४॥

कुंडल - मंगव<sup>१</sup> - हारा, मउहं केयूर - पट्ट - कडयाई<sup>२</sup> ।  
पासंब - सुत - जेडर - बो-मुही-मेहलासि-कुरियाओ<sup>३</sup> ॥३६५॥  
‘मेवेज्ज कण्णपूरा, पुरिसाणं होंति सोलसाभरणा ।  
चोदस इत्थोआणं, कुरिया - करवाल - हीणाहं ॥३६६॥

अर्थ :—भोगभूमिमें ‘कुण्डल, ‘अङ्गद, ‘हार, ‘मुकुट, ‘केयूर, ‘पट्ट, (भालपट्ट), ‘कटक,  
‘प्रालम्ब, ‘सूत्र (ब्रह्मसूत्र), ‘नूपुर, ‘दो मुद्रिकाएँ, ‘मेखला, ‘असि (करवाल), ‘छुरी,  
‘श्रैवेयक और ‘कर्णपूर, ये सोलह आभरण पुरुषवर्ग के होते हैं । इनमेंसे छुरी एवं करवालसे  
रहित शेष चौदह आभरण महिलावर्गके होते हैं ॥३६५-३६६॥

‘कडय-कडि-सुत - जेडर - तिरीड-पासंब-सुत-मुहीओ ।  
हारो कुंडल - मउहडहार - बूडामणी बि मेवेज्जा ॥३६७॥  
अंगद - कुरिया लभा, पुरिसाणं होंति सोलसाभरणा ।  
चोदस इत्थोअ तहा, कुरिया - लगेहि परिहीणा ॥३६८॥

पाठान्तर ॥

अर्थ :—‘कडा, ‘कटिसूत्र, ‘नूपुर, ‘किरीट, ‘प्रालम्ब, ‘सूत्र, ‘मुद्रिका, ‘हार, ‘कुण्डल,  
‘‘मुकुट, ‘अर्घहार, ‘बूडामणि, ‘श्रैवेय, ‘अंगद, ‘छुरी और ‘तलवार ये सोलह आभरण  
पुरुषोंके तथा छुरी और तलवारसे रहित शेष चौदह आभरण स्त्रियों के होते हैं ॥३६७-३६८॥

पाठान्तर ।

१. क. अ. उ. मंगल, म. मंडल । २. द. ब. क. ज. ड. उ. कुकुरियाओ । ३. ब. मेवेज्जा ।

४. द. ब. क. ज. प. ड. कडिय ।

| क्र० | नाम            | संभव                                                                         | गाथा नं०         |
|------|----------------|------------------------------------------------------------------------------|------------------|
| १    | भूमि           | स्वच्छ, साफ, कीड़ों आदिसे रहित, निर्मल, दर्पण सदृश, पंच वर्णकी ।             | ३२४-<br>३२५      |
| २    | वृण (घास)      | पांच वर्णकी मृदुल, मधुर, सुगन्धित और चार अंगुल प्रमाण ।                      | ३२६              |
| ३    | वाषिकाएँ       | जल जन्तु रहित और सर्व व्याधियोंको नष्ट करने वाले अमृतोपम निर्मल जलसे युक्त । | ३२८ से<br>३३०    |
| ४    | प्रासाद        | अनेक प्रकारकी मृदुल शय्याओं और अनुपम आसनोंसे युक्त ।                         | ३३१              |
| ५    | पर्वत          | स्वर्ण एवं रत्नोंके परिपूर्ण-तथा सर्ववृक्षोंसे युक्त और उन्नत ।              | ३३२              |
| ६    | नदियाँ         | उभय तटों पर रत्नमय सीढ़ियोंसे संयुक्त और अमृत सदृश उत्तम जलसे सहित ।         | ३३४              |
| ७    | जीव            | विकलत्रय एवं असंजी जीवोंका तथा रोग, कलह और ईर्ष्या आदिका अभाव ।              | ३३५<br>३३६       |
| ८    | काल            | रात-दिनके भेद, अन्धकार गर्मी-मर्दी की बाधा और पापोंसे रहित ।                 | ३३७              |
| ९    | उत्पत्ति       | युगल उत्पत्ति होती है । अन्य परिवार एवं शम नगरादि से रहित होते हैं ।         | ३३८ और<br>३४४-४५ |
| १०   | कल             | एक पुरुषमें नौ हजार हाथियोंके बराबर ।                                        | ३४२              |
| ११   | शरीर           | प्रशस्त ३२ लक्षण युक्त । कवलाहार करते हुए भी निहार से रहित ।                 | ३४४              |
| १२   | कल्पवृक्ष      | १० प्रकार के ।                                                               | ३४६              |
| १३   | पेय पदार्थ     | ३२ प्रकार के ।                                                               | ३४७              |
| १४   | वादित्र        | नाना प्रकार के ।                                                             | ३४८              |
| १५   | आहार           | १६ प्रकारका । (१६) व्यङ्जन-१७ प्रकारके । (१८) दाल-१४ प्रकारकी ।              | ३४९              |
| १६   | आद्य पदार्थ    | १०८ प्रकार के ।                                                              | ३५१              |
| २०   | स्वाद्य पदार्थ | ३६३ प्रकारके । (२१) रस-६३ प्रकार के ।                                        | ३५२              |
| २२   | भवन            | स्वस्तिक एवं नन्दावर्त आदि १६ प्रकारके ।                                     | ३५३              |
| २३   | फूल मालाएँ     | १६००० प्रकार की ।                                                            | ३५६              |
| २४   | भोग            | चक्रवर्तीके भोगसे अनन्तगुणे ।                                                | ३६१              |
| २५   | भोग साधन       | विक्रिया द्वारा अनेक प्रकारके शरीर बनाते हैं ।                               | ३६२              |
| २६   | आभूषण          | पुरुषके १६ प्रकारके और स्त्री के १४ प्रकारके ।                               | ३६६              |
| २७   | कला-गुण        | ६४ कलाओंसे युक्त ।                                                           | ३८६              |
| २८   | संहनन          | वज्रवृषभनाराय ।                                                              | ३४३              |
| २९   | संस्नान        | समचतुरस्र शरीर ।                                                             | ३४३              |
| ३०   | मरण            | कदली घात रहित ।                                                              |                  |
| ३१   | मरणाका कारण    | पुरुषका स्त्रीक और स्त्रीके जघमाई ।                                          | ३८१              |



भोगभूमिमें उत्पत्तिके कारण

भोगमहीए सध्वे, जायंते मिच्छ - भाव - संजुता ।  
 भंघ - कसाया मधुसा, पेमुष्णासूय - वंज - परिहीणा ॥३६६॥  
 चञ्जिव - संसाराहा, महु - मज्जोदुंबरेहि <sup>१</sup>परिचिता ।  
<sup>२</sup>सञ्च-भुवा मव-रहिदा, चोरिय-परवार-परिहीणा ॥३७०॥  
 गुणधर-गुणेषु <sup>३</sup>रसा, जिण-पूजं जे कुशंति परवसवो ।  
 उववास - तणु - सरीरा, अज्जव - पट्टवोहि संपन्ना ॥३७१॥  
 आहार-बाण-चिरदा, जवीसु वर-बिबिह-भोग-भुत्तेसु ।  
 निमलतर - संजमेसु य, विमुक्क - गंधेसु भसीए ॥३७२॥

अर्थ :—भोगभूमिमें वे सब जीव उत्पन्न होते हैं जो मिथ्यात्वभावसे युक्त होते हुए भी मन्द-  
 कषायी हैं, पैशून्य, असूयादि एवं दम्भसे रहित हैं, मांसहारिक त्यागी हैं, मधु, मद्य तथा उदुम्बर फलोंके  
 भी त्यागी हैं, सत्यवादी हैं, अभिमानसे रहित हैं, चोरी एवं परस्त्रीके त्यागी हैं, गुणियोंके भुक्तियोंमें  
 अनुरक्त हैं, ( भक्तिके ) भावीन होकर जिनपूजा करते हैं, उपवाससे शरीरको कृश करने वाले हैं,  
 मार्जवादि ( गुणों ) से सम्पन्न हैं; तथा उत्तम एवं विविध योगोंसे युक्त, अल्पन्त निर्मल संयमके धारक  
 और परिग्रहसे रहित यतियोंको भक्तिके आहारवान देनेमें तत्पर रहते हैं ॥३६६-३७२॥

पुच्छं बद्ध - जराऊ, पच्छा तिथय - पाव - मूलम्मि ।  
 पाविष - खाइय - सम्मा, जायंते केइ भोगभूमीए ॥३७३॥

अर्थ :—पूर्वमें मनुष्य आयु बोधकर पश्चात् तीर्थकरके पादमूलमें क्षायिक सम्यक्त्व प्राप्त  
 करने वाले कितने ही सम्यग्दृष्टि पुरुष भी भोगभूमिमें उत्पन्न होते हैं ॥३७३॥

एवं मिच्छाबिद्धी, गिगंथायं जवीन <sup>४</sup>दाजाइ ।  
 हाइण पुज्ज - पाके, भोगमही केइ जायंति ॥३७४॥

१. द. उ. परिचिता । २. द. व. क. ज. म. उ. तत्त्व । ३. द. व. क. ज. य. उ. रसी ।

४. द. व. व. दीराइ ।

अर्थ :—इसप्रकार कितने ही मिथ्यादृष्टि मनुष्य नियन्त्रयतिथोंको दानादि देकर पुण्योदय भाने पर भोगभूमि में उत्पन्न होते हैं ॥३७४॥

आहारभय - दाणं विविहसह-पोष्योद-दाणं च ।

पत्त - वितेसे दाणूण भोगभूमि में जायंति ॥३७५॥

अर्थ :—( कितने ही मनुष्य ) पात्र-विशेषों को आहारदान, अभयदान, विविध औषधियाँ एवं ज्ञानके उपकरण स्वरूप शास्त्र आदिका दान देकर भोगभूमि में उत्पन्न होते हैं ॥३७५॥

दाणूण केह दाणं, पत्त - वितेसेसु के वि वाणाणं ।

अणुमोदणेण तिरिया, भोगभूमि में जायंति ॥३७६॥

अर्थ :—कोई पात्र विशेषोंको दान देकर और कोई दानोंकी अनुमोदना करनेसे तिर्यक् भी भोगभूमि में उत्पन्न होते हैं ॥३७६॥

गहिणूणं जिज्जलिगं, संजम-सम्मत्त-माय-परिचत्ता ।

मायाधार - पयट्ठा, चारित्तं जासयंति जे पावा ॥३७७॥

दाणूण कुल्लिगीणं, गान्धा - वाणाणि जे गरा मूढा ।

तस्सेस - धरा केई, भोगभूमि में हवन्ति ते तिरिया ॥३७८॥

अर्थ :—जो पापी जिज्जलिग ग्रहण कर संजम एवं सम्मत्तको छोड़ देते हैं और पयट्ठा मायाधार में प्रवृत्त होकर चारित्र्य को ( भी ) नष्ट कर देते हैं, तथा जो कोई मूर्ख मनुष्य कुल्लिगीणोंको नाना प्रकारके दान देते हैं या उन ( कुल्लिग ) भेषोंको धारण करते हैं, वे भोगभूमि में तिर्यक् होते हैं ॥३७७-३७८॥

भोगभूमि में गर्भ, जन्म एवं मरण काल तथा मरणके कारण—

भोगज-जर-तिरियाणं, गन्ध-भास-पमाण-आज-अवसेसे ।

ताणं हवन्ति गन्धा, ए सेस - कासम्मि कइ या वि ॥३७९॥

‘पुण्यस्मि य शबभासे, सु-सयणे सोविऊण जुगलाइं ।  
गर्भमादीं अंगुलेसु, निक्कलसु मरति तत्काल ॥३८०॥

अर्थ :—भोगभूमिज मनुष्य और तिर्यंचोंकी नौ मास आयु अवशेष रहने पर ही उनके गर्भ रहता है, शेष कालमें किसीके भी गर्भ नहीं रहता । नव-मास पूर्ण हो जाने पर युगल ( नर-नारी ) सु-शय्या पर सोकर गर्भसे युगलके निकलने पर तत्काल ही मरण को प्राप्त हो जाते हैं ॥३७९-३८०॥

स्त्रिकेण मरदि पुरिसो, जिभारंमेण कामिणी दोहं ।  
‘सारव - मेघ च तणू, आमूलाओ विसीएदि ॥३८१॥

अर्थ :—पुरुष छीकसे और स्त्री जँभाई शानसे मृत्युको प्राप्त होते हैं । दोनोंके शरीर शरत्कालीन मेघके समान आमूल विसीन हो जाते हैं ॥३८१॥

भोगभूमिजों की आगति—

भाबण - बेतर - जोइस-सुरेसु जायंति मिच्छ-भाव-जुदा ।  
सोहम्म - दुगे भोगज - णर - तिरिया सम्म-भाव-जुदा ॥३८२॥

अर्थ :—( मृत्युके बाद ) भोगभूमिज मिथ्यादृष्टि मनुष्य-तिर्यंच भवतवासी, व्यन्तर और ज्योतिषी देवोंमें तथा सम्यग्दृष्टि मनुष्य-तिर्यंच सौधर्म युगल पर्यन्त उत्पन्न होते हैं ॥३८२॥

जन्मके पश्चात् भोगभूमिज जीवों का वृद्धिक्रम—

जाबान भोगभूवे, सयणोवरि बालयाण सुत्ताणं ।  
णिय - अंगुट्टय - लिहणे, गच्छंते तिण्णि विवसाणि ॥३८३॥  
‘बइसरण-अस्थिर-गमणं, धिर-गमण-कसा-गुणेण पत्तेकं ।  
‘ताहण्णेणं सम्मत्त - गहण - भाउण तदिजाइं ॥३८४॥

अर्थ :—भोगभूमिमें उत्पन्न हुए बालकोंके शय्यापर सोते हुए अपना अंगूठा चुलनेमें तीक्ष्ण दिग व्यतीत होते हैं, पश्चात् उपवेशन ( बैठने ), अस्थिर-गमन, स्थिर-गमन, कला गुणोंकी प्राप्ति,

तारुण्य प्राप्ति एवं सम्यक्त्व ग्रहणकी योग्यता, इनमेंसे क्रमशः प्रत्येक भवस्थानमें उनके तीन-तीन दिन व्यतीत होते हैं ॥३८३-३८४॥

सम्यक्त्व ग्रहण के कारण—

जाति - भरणेण केई, केई पडिबोहणेण वेवाणं ।

भारणमुणि - पहुवीणं, सम्मत्तं ताथ गेहंति ॥३८५॥

अर्थ :—( भोगभूमिज ) कोई जीव जाति-स्मरणसे, कोई देवोंके प्रतिबोधसे और कोई भारणमुनि आदिकके सद्युपदेशसे सम्यक्त्व ग्रहण करते हैं ॥३८५॥

भोगभूमिज जीवोंका विशेष स्वरूप—

वेणी-वेण-सरिच्छा, वत्तीस-वसत्य-सवस्सजेहि जुवा ।

कोमल - वेहा - मिहुणा<sup>१</sup>, सम्मच्चउरस्संग - संठाणा<sup>२</sup> ॥३८६॥

घातुमयंगा वि तहा, छेत्तुं भेत्तुं च ते किर<sup>३</sup> ण सक्का ।

असुणि - बिहीणसावो, मुत्त - पुरीसासवो जस्सि ॥३८७॥

अर्थ :—भोगभूमिज नर-नारी, देव-देवियोंके सदृश वत्तीस प्रशस्त लक्षणों सहित, सुकुमार, वेह-रूप-वैभववाले और समचतुरस्र-संस्थान संयुक्त होते हैं । उनका-शरीर घातुमय होते हुए भी श्लेष्मा-भेदा नहीं जा सकता । अधुचित्तसे रहित होनेके कारण उनके शरीरसे मूत्र तथा विशाका आश्रव नहीं होता ॥३८६-३८७॥

ताण अगलाण वेहा, अबभं गुप्पट्टणं जण-बिहीणा ।

मुह-वंत-णयण-धोवण-<sup>४</sup>णह-कट्टण-चिरहिदा वि रेहंति ॥३८८॥

अर्थ :—उन युगल नर-नारियोंके शरीर, तैल-भर्दत, उबटन और अञ्जनसे तथा मुख, दाँत एवं नेत्रोंके बोलने तथा नाखूनोंके काटनेसे रहित होते हुए भी शोभायमान होते हैं ॥३८८॥

अक्खर-आलेक्खेत्तुं, गणिदे गण्ठव - सिप्प - <sup>५</sup>पहुवीसु<sup>५</sup> ।

ते चउसट्ठि - कल्हासुं होति सहावेण जिउक्खयरा ॥३८९॥

अर्थ :—वे अक्षर, चित्र, गणित, गन्धर्व और शिल्प इत्यादि चौंसठ-कलाओंमें स्वभावसे ही अतिशय निपुण होते हैं ॥३८९॥

१. व. क. ज. य. उ. विहुणा । २. व. व. क. ज. उ. संठाणं । ३. व. क. ज. य. उ. किर ण सक्का । ४. व. व. क. ज. उ. एय-कट्टण । ५. व. क. ज. य. उ. पहुवीसु ।

ते सखे वर - जुगला, अम्होण्णुप्पण - पेम्प - संभुदा<sup>१</sup> ।

जम्हा तम्हा तेसुं, सावय - वव - संजमो जलिय ॥३६०॥

अर्थ :— वे सब उत्तम युगल पारस्परिक प्रेममें अत्यन्त मुग्ध रहा करते हैं, इसलिए उनके आश्रयकोचित अत-संयम नहीं होते ॥३६०॥

कोइल - मङ्गरासावा, किन्नर - कंठा ह्वंति ते जुगला ।

कुल - जावि - भेद - होणा, सुहसणा वत्त - वारिहा ॥३६१॥

अर्थ :— वे नर-नारी युगल, कोयल सदृश मधुर-भाषी, किन्नर सदृश कण्ठ वाले, कुल एवं जाति भेदसे रहित, सुखमें आसक्त और वारिद्र्य रहित होते हैं ॥३६१॥

भोगभूमिज तिर्यञ्चोका वर्णन—

तिरिया भोगसिबीए, जुगला जुगला ह्वंति वर-वण्णा ।

सरला भेदकसाया, जावाविह - जादि - संभुता<sup>२</sup> ॥३६२॥

मार्गदर्शकः :— प्रत्यक्षः स्त्री लुपिष्ठितमता ली म्हाता

अर्थ :— भोगभूमिमें उत्तम वर्ण-विशिष्ट, सरल, मन्द-कषायी और नाना प्रकारकी जातियों वाले तिर्यञ्च जीव युगल-युगल रूपसे होते हैं ॥३६२॥

गो-केसरि-करि-मयरा-सूवर-सारंग - रोक्क-महित-वया ।

वावर-गवय-तरच्छा, वग्घ -<sup>३</sup>सिगालच्छ-भरुसा य ॥३६३॥

कुक्कुड - कोइल - कोर, पारावध - रायहंस - कारंडा ।

वक-कोक-कोच-<sup>४</sup>किजक - पट्टवीओ होंति अण्णे बि ॥३६४॥

अर्थ :— ( भोगभूमिमें ) गाय, सिंह, हाथी, मगर, शूकर, सारङ्ग, रोक्क ( शृङ्ग ), मेघ, वृक ( भेड़िया ), वन्दर, गवय, तेंदुआ, व्याघ्र, शृगाल, रीछ, भालू, मुर्गा, कोयल, तोता, कबूतर, राजहंस, कारंड, वगुला, कोक ( चकवा ) कौब एवं किजक तथा और भी तिर्यञ्च होते हैं ॥३६३-३६४॥

जह मणुवाणं भोगा, सह तिरियाणं ह्वंति एवाणं ।

जिय - जिय - ओगसेणं, फल - कंड - तण्णकुरावीणि ॥३६५॥

१. व. व. क. ज. च. मंगुदा; य. मंगुण। २. व. उ. संभुता। ३. व. उ. सिगालच्छ, क सिगालस।

४. व. क. य. उ. किजक, य. अ. किजक, य. कंडण।

अर्थ :—वहाँ जिस प्रकार मनुष्योंके भोग होते हैं उसीप्रकार इन तिर्यञ्चोंके भी अपनी-अपनी योग्यतानुसार फल, कन्द, तृण और अंकुरादिके भोग होते हैं ॥३६४॥

सन्धादौ भूमिचरा, वायस - पटुवी य खेयरा तिरिया ।

मंसाहारेण विणा, भुंजंते सुरतकथा महुर - फलं ॥३६५॥

अर्थ :—वहाँ व्याघ्रादिक भूमिचर और काक आदि नभचर तिर्यञ्च, मांसाहारके बिना कल्पवृक्षोंके महुर फल भोगते हैं ॥३६५॥

हरिणादि-तन्मचरा तह, भोगमहोए तणाणि विव्वाणि ।

भुंजंति जृषल - जुगला, उदय-विनेस-प्यहा सखे ॥३६७॥

अर्थ :—भोगभूमिमें उदयकालीन सूर्यके सहस्र प्रभा वाले समस्त हरिणादिक तृण-जोवी पशुओंके युगल दिव्य तृणोंका भोजन करते हैं ॥३६७॥

सुषमासुषमा काल ( के यर्णन ) का उपसंहार—

कालम्मि सुसमसुसमे, चउ-कोडाकोडि-उवहि-उवमम्मि ।

पठमादो होयंते, उच्छेहाऊ - बलहि - तेआइं ॥३६८॥

अर्थ :—चार कोड़ाकोड़ी सागरोपम ( प्रमाण ) सुषमासुषमा कालमें पहिलेसे शरीरको ऊँचाई, आयु, बल, कृद्धि एवं तेज आदि होन-होन होते जाते हैं ॥३६८॥

सुषमा कालका निरूपण—

उच्छेह-पटुदि खीणे, सुसमो नामेण पविसदे कालो ।

तस्स पमाणं सायर - उवमाणं तिष्णि कोडिकोडीओ ॥३६९॥

अर्थ :—इस प्रकार उत्सेध-आदि क्षीण होनेपर सुषमा नामका द्वितीय काल प्रविष्ट होता है । उसका प्रमाण तीन कोड़ाकोड़ी सागरोपम है ॥३६९॥

मनुष्योंकी आयु, उत्सेध एवं कान्ति—

सुसमस्ताविम्म १गरणुच्छेहो अउ - सहत्स - चावाणि ।

दो पत्स - पमाणाऊ, संपुण्णमियंक - सरिस - पहा ॥४००॥

[ ४००० । प २ ।

**अर्थ** :—सुषमा कालके प्रारम्भमें मनुष्योंके शरीरका उत्सेह चार हजार (४०००) अनुव, आयु दो पत्य प्रमाण और प्रभा ( शरीरकी कान्ति ) पूर्णचन्द्र सदृश होती है ॥४००॥

पृष्ठभागकी हृद्दियोंका प्रमाण—

अट्टाचीसूत्तर - समयद्वी पुट्टीए होंति एवान् ।

अक्खर-सरिसा इत्थी, तिबस-<sup>सर्वोत्तम</sup> सारिक्खी<sup>अव्यक्त</sup> केरि<sup>अव्यक्त</sup> होंति ॥४०१॥

**अर्थ** :—इनके पृष्ठभागमें एकसौ अट्टाईस हृद्दियाँ होती हैं । ( उस समय ) स्त्रियाँ अक्सराओं सदृश और पुरुष देवों सदृश होते हैं ॥४०१॥

संस्थान एवं आहार—

तस्सि कासे मणुषा, अक्ख-प्फल-सरिसममिबमाहार<sup>१</sup> ।

पुंजंति छट्ठ - भस्से, समचउरस्संग - संठाणा ॥४०२॥

**अर्थ** :—उस कालमें, मनुष्य समचतुरस्र-संस्थानसे युक्त होते हुए वृष्टमक्त ( तीसरे दिन ) अक्ष ( बहेड़ा ) फल बराबर अमृतमय आहार करते हैं ॥४०२॥

उत्पन्न होनेके बाद वृद्धिक्रम—

तस्सि संजादधं, मणोवदि वासयाण सुत्ताण ।

शिय - अंगुट्ठिय - लिहणे<sup>२</sup>, पंच<sup>३</sup> विणाणि पक्कन्ति ॥४०३॥

**अर्थ** :—उस कालमें उत्पन्न हुए बालकोंके लघ्यापर सीते हुए अपना अंगूठा चूसनेमें पाँच दिन व्यतीत होते हैं ॥४०३॥

बहसण-अस्थिर-गमणं, थिर-गमण-कला-गुणेण पत्तेक्कं ।

‘त्तरणेण<sup>४</sup> सम्मत्त - गहण-जोग्गेण<sup>५</sup> जंति’ पंच - विणा ॥४०४॥

**अर्थ** :—पश्चात् उपवेशन, अस्थिरगमन, स्थिरगमन, कलागुण प्राप्ति, तारुण्य और सम्यक्त्व ग्रहणकी योग्यता, इनमेंसे कमशः प्रत्येक अवस्थामें उन बालकोंके पाँच-पाँच दिन जाते हैं ॥४०४॥

१. अ. उ. सरिसा । २. द. मविदमाहार । ३. द. म. विनीहणे । ४. द. म. विस्सोपेव

पक्कन्ति, क. उ. विस्सोपेव पक्कन्ति । ५. विस्सोपेव पक्कन्ति । ६. द. तक्खोणं, क. क. उ. ताक्खेण ।

१. द. द. क. व. व. उ. जोग-जुति ।

प्रवेशो कथन—

एस्तिय - मेस - वितेसं, मोस्तूर्ण सेस-वण्णण-ययारा ।

सुसमसुसमम्मि काले, जे भणिदा' एत्थ वत्तम्भा ॥४०५॥

अर्थ :—उपर्युक्त इतनी मात्र विशेषताको छोड़कर शेष वर्णनके प्रकार जो सुषमसुषमा कालमें कहे गये हैं, उन्हें यहाँ भी कहना चाहिए ॥४०५॥

दूसरे कालका प्रमाण आदि—

कासम्मि सुसमणामे, तिय-कोडीकोडि-उबहि-उबमम्मि ।

पडमावो हीयंते, उच्छेहाऊ - वलद्धि - तेजादी ॥४०६॥

अर्थ :—तीन कोड़ाकोड़ी सागरोपम-प्रमाण सुषमा नामक कालमें पहिले से ही उत्प्रेष, आयु, वस, ऋद्धि और तेज आदि उत्तरोत्तर हीन-हीन होते आते हैं ॥४०६॥

सुषमादुषमा कालका निरूपण—

उच्छेह-पट्टवि-सोणे, पबिसेवि हु सुसमदुस्समो कालो ।

तस्स पमाणं सायर - उच्चमाणं वोन्हि कोडिकोडोओ ॥४०७॥

अर्थ :—उत्प्रेषादिक क्षीण होने पर सुषमदुषमा काल प्रवेश करता है । उस कालका प्रमाण दो कोड़ाकोड़ी सागरोपम है ॥४०७॥

तवकात्ताविम्मि 'गराजुच्छेहो दो सहस्स - भावाणि ।

एवक - पल्लिवमाऊ, पिअंगु - सारिच्छ - वण्ण-यरा ॥४०८॥

। दं २००० । प १ ।

अर्थ :—उस कालके प्रारम्भमें मनुष्योंकी ऊँचाई दो हजार ( २००० ) अनुष, आमु एक पल्ल प्रमाण और वर्ष पिअंगु फल सटण होता है ॥४०८॥

चउसहो पुहोए, एराण - एराण होंति अहो वि ।

अच्छर - सरिसा रामा, अवर - समानो गरो होदि ॥४०९॥



**अर्थ** :—उस कालमें स्त्री-पुरुषोंके पृष्ठभागमें चौंसठ हड्डियाँ होती हैं, तथा नारियाँ अन्तराओं सहस्र और पुरुष देवों सहस्र होते हैं ॥४०६॥

तत्काले ते मणुषा, आभसक - पमानममिय - आहारं ।

धु'अंति विषंतारिया, समचउरस्संग - संठाया ॥४१०॥

**अर्थ** :—उस कालमें समचतुरस्रस्थानसे युक्त वे मनुष्य एक दिनके अन्तरसे अन्नके बराबर अमृतमय आहार ग्रहण करते हैं ॥४१०॥

तस्सि संआवाणं, सयणोवरि बालयाण सुत्ताणं ।

णिय - 'अंगुट्टय - लिहणे, सस' विणहणि पावचंनि ॥४११॥

**अर्थ** :—उस कालमें उत्पन्न हुए बालकोंके शय्यापर सोते हुए अपना अंगूठा घूसनेमें सात दिन व्यतीत होते हैं ॥४११॥

बइसण-अरिधर-गमणं, धिर-गमण-कला-गुणेण पत्तेककं ।

तरुणेणं सम्मत्तं, गह्वणं ओणेण सस - विणं ॥४१२॥

**अर्थ** :—पश्चात् उपवेशन, अस्विरगमन, स्थिरगमन, कलागुणप्राप्ति, तारुण्य और सम्यक्त्व-ग्रहणकी योग्यतासे प्रत्येक अवस्थामें क्रमशः सात-सात दिन जाते हैं ॥४१२॥

एस्सिय - सेस - विसेसं, सोलूणं सेस-वण्णाण-वघारा ।

कालम्मि सुसम - एणमे, जे' भणिषा एत्थ वत्तव्वा ॥४१३॥

**अर्थ** :—इतनी मात्र विशेषताको छोड़कर शेष वर्णनके प्रकार जो सुचना नामक दूसरे कालमें कह आए हैं, वे ही यहाँ पर कहने चाहिए ॥४१३॥

भोगजिदोए न होंति तु, ओरारिप्पहृदि-विबिह-बाधाओ ।

असि - पट्टवि - छल्लकम्मा, सीवावप-बाद-वरिसाणि ॥४१४॥

**अर्थ** :—भोगभूमिमें चोर एवं शत्रु आदि की विविध बाधाएँ, असि आदिक छल्ल-कर्म तथा शीत, मातप, वात ( प्रचण्ड वायु ) एवं वर्षा नहीं होती ॥४१४॥

भोगभूमिजोंमें मार्गंखा आदिका निरूपण—

गुणजीवा पञ्जसी, पाणा सञ्जा य समाजा कमसो ।

उन्नजोमो कहिवव्वा, भोगसिधी - संभवाण जह-जोगं ॥४१५॥

अर्थ :—भोगभूमिज जीवोंके यमायोग्य गुणस्थान, जीवसमास, पर्याप्ति, प्राण, संज्ञा, मार्गंखा और उपयोगका कथन क्रमशः करना चाहिए ॥४१५॥

भोगदुवाणं अबरे, दो गुणठाणं विरम्मि चउ - संखा ।

मिच्छाहट्टो सासण - सम्मा मिस्साविरद - सम्मा ॥४१६॥

अर्थ :—भोगभूमिज जीवोंके जघन्यसे अर्थात् अपर्याप्त अवस्थामें मिथ्यात्व और सासादन ये दो गुणस्थान होते हैं, तथा उत्कृष्टतासे अर्थात् पर्याप्त अवस्थामें मिथ्याहट्टि, सासादनसम्पत्त्व, मित्र और अविरतसम्पदहट्टि ये चार गुणस्थान होते हैं ॥४१६॥

ताण अपक्खवत्ताणावरणोदय - सहिद सख जीवाणं ।

विसयाणंद - जुवाणं, गाणाविह - राग - पउराणं ॥४१७॥

केसविरहादि उबरि, वस - गुणठाणाण - हेवु - नूदाओ ।

जासो विसोहियाओ, कइया न ताओ जायंते ॥४१८॥

अर्थ :—अप्रत्याख्यानावरण-कषायोदय सहित दीर्घ रागवाले वे सभी जीव विषयोंके प्रानन्दसे युक्त होते हैं । वेनाविरतसे लेकर दसवें गुणस्थान पर्यन्तकी कारणभूत उत्पन्न हुई विधुद्धि वही किसी भी जीवके नहीं पाई जाती है ॥४१७-४१८॥

जीव - समासा वोप्पि य, निव्वत्तिव-पुष्णपुष्ण-भेवेणं ।

पञ्जसो छम्भेया, तेलिय - वेत्ता अपञ्जसो ॥४१९॥

अर्थ :—इन जीवोंके निर्वृत्त्यपर्याप्त और पर्याप्तके भेदसे दो जीवसमास, छहों पर्याप्तियाँ और इतनी ही अपर्याप्तियाँ होती हैं ॥४१९॥

अक्का 'मण-वच-काया, उस्सासाळ हवति वस पाणा ।

'पक्कसे इवरस्सि, मण - वच - उस्सास - परिहीणा ॥४२०॥

पर्याप्तार्थक :- मणपाणं मणिं पुरिद्विदिग्धस्यस्य मणिं पक्कसस्य

अर्थ :- उनके पर्याप्त अवस्थामें पाँचों इन्द्रियाँ, मन, वचन, काय, स्वासोच्छ्वास एवं आयु मे वस प्राण तथा इतर अर्थात् अपर्याप्त अवस्थामें मन, वचन और स्वासोच्छ्वाससे रहित शेष सात प्राण होते हैं ॥४२०॥

चउ-सण्णा शर-तिरिया, सयसा तस-काय भोग-एक्करसं ।

चउ-मण-चउ-वयणाहं, 'ओराल-हुगं व कम्म - इयं ॥४२१॥

पुरिसिस्सी-वेद-बुद्धा, सयस - कसाएहि संजुवा रिण्णं ।

छण्णाज - बुद्धा ताहं, मदि ओहीणाण - सुव - भाणे ॥४२२॥

मदि - सुव - अण्णाणाहं, विभंगणाणं असंजवा सम्भे ।

तिहंसणा य ताहं, जवसु - अजवसूणि ओहि-वंसरायं ॥४२३॥

भोगपुण्णए<sup>१</sup> मिच्छे, सासण - सम्भे य असुह-तिथ-सेत्तं ।

काऊ कहण्ण सम्भे, मिच्छ - चउक्के सुह - तियं पुण्णे<sup>२</sup> ॥४२४॥

भक्काभक्का सुस्सम्मचा<sup>३</sup> उवसमिय - लइय - सम्मत्ता ।

तह वेदय - सम्मत्तं, सासण - मिस्ता य मिच्छा य ॥४२५॥

सण्णो जीवा होंति वु, शोणिय य आहारिणो अणाहार ।

सायार - अणायारा, उवजोगा होंति जियसेण ॥४२६॥

अर्थ :- भोगभूमिज जीव आहार, भय, मधुन एवं परिग्रह इन चार संज्ञाओं से; मनुष्य और तिर्यञ्च गतिसे; सकल अर्थात् पंचेन्द्रिय जातिसे; तस कायसे; चारों मनोयोग, चारों वचनयोग दो औदारिक ( औदारिक, औदारिक मित्र ) तथा कामण इन ग्यारह योगीसे; पुरुषवेद और स्त्री

१. द. भणु । २. व. व. क. ज. य उ. पक्कसी । ३. व. क. उ. उरस । ४. व. व. क. ज. व. उ. पुण्ण । ५. व. उ. पुण्णे । ६. व. वेवसमिय ।

गाथा : ४२७ ]

चतुर्थो महाहियारो

[ १२५ ]

वेदसे; नित्य सम्पूर्ण कथायोंसे; मति, श्रुत, अवधि, मति अज्ञान, श्रुताज्ञान एवं विभंगज्ञान, इन छह ज्ञानोंसे; सर्व धसंयम; चक्षु, भ्रूक्षु और भ्रूवि इन तीन दर्शनोंसे संयुक्त होते हैं। अपर्याप्त अवस्थामें मिथ्यात्व एवं सासादन गुणस्थानोंमें कृष्ण, नील, कापोत इन तीन अशुभ लेखाओंसे और चतुर्थ गुणस्थानमें कापोत लेखाके जवन्त अंशों से तथा पर्याप्त अवस्थामें मिथ्यात्वादि चारों गुणस्थानोंमें तीनों शुभ लेखाओंसे युक्त; अभ्यत्व तथा अभ्यत्वसे; औपक्षमिक, क्षायिक, वेदक, मिश्र, सासादन और मिथ्यात्व इन छहों सम्यक्त्वोंसे संयुक्त होते हैं। संज्ञी; आहारक और अनाहारक होते हैं तथा नियमसे साकार (ज्ञान) और निराकार (दर्शन) उपयोग वाले होते हैं ॥४२१-४२६॥

मह - कसायेन जुवा, उदयागव-सस्थ-पर्याडि-संजुता ।

विदिह - विनोदास्तता, जर - तिरिया भोगजा होंति ॥४२७॥

अर्थ :- भोगभूमिज मनुष्य और तिर्यच मन्दकषायसे युक्त, उदयमें भासी हुई पुण्य-प्रकृतियोंसे संयुक्त तथा अनेक प्रकारके विनोदोंमें आसक्त रहते हैं ॥४२७॥

[ तालिका १० अगले पृष्ठ पर देखिये ]

सुषमा-सुषमा आदि तीन कास्त्रोंमें आयु, आहारविकी बुद्धि-हातिका प्रबर्तन

| क्र० | विषय                                         | सुषमासुषमा                           | सुषमा                               | सुषमा-सुषमा                         |
|------|----------------------------------------------|--------------------------------------|-------------------------------------|-------------------------------------|
| १    | भूमि-रचना                                    | उत्तम भोगभूमि                        | मध्यम भोगभूमि                       | अधम्य भोगभूमि                       |
| २    | काल-प्रमाण                                   | ४ कोड़ाकोड़ी सागर                    | ३ कोड़ाकोड़ी सागर                   | २ कोड़ाकोड़ी सागर                   |
| ३    | वायु—उत्कृष्ट<br>जघम्य                       | ३ पत्थ<br>२ पत्थ                     | २ पत्थ<br>१ पत्थ                    | १ पत्थ<br>१ समय + १ पूर्वकोटि       |
| ४    | आहार प्रमाण                                  | वेर प्रमाण                           | बहेडा प्रमाण                        | आवला प्रमाण                         |
| ५    | प्रवगाहना—उत्कृष्ट<br>जघम्य                  | ६००० धनुष<br>४००० धनुष               | ४००० धनुष<br>२००० धनुष              | २००० धनुष<br>४०० धनुष               |
| ६    | आहार-अन्तराल                                 | ३ दिन बाद                            | २ दिन बाद                           | १ दिन बाद                           |
| ७    | कवला है किन्तु निहारका                       | अभाव                                 | अभाव                                | अभाव                                |
| ८    | उत्तानशयन अंगुठा बूस                         | ३ दिन पर्यन्त                        | ५ दिन पर्यन्त                       | ७ दिन पर्यन्त                       |
| ९    | उपवेशन ( बैठना )                             | ३ दिन पर्यन्त                        | ५ दिन पर्यन्त                       | ७ दिन पर्यन्त                       |
| १०   | अस्थिर गमन                                   | ३ दिन पर्यन्त                        | ५ दिन पर्यन्त                       | ७ दिन पर्यन्त                       |
| ११   | स्थिर गमन                                    | ३ दिन पर्यन्त                        | ५ दिन पर्यन्त                       | ७ दिन पर्यन्त                       |
| १२   | कला पुण प्राप्ति                             | ३ दिन पर्यन्त                        | ५ दिन पर्यन्त                       | ७ दिन पर्यन्त                       |
| १३   | तारुण्य प्राप्ति                             | ३ दिन पर्यन्त                        | ५ दिन पर्यन्त                       | ७ दिन पर्यन्त                       |
| १४   | सम्यक्त्व-योग्यता                            | ३ दिन पर्यन्त                        | ५ दिन पर्यन्त                       | ७ दिन पर्यन्त                       |
| १५   | शरीर पृष्ठभागकी हड्डियाँ                     | २५६                                  | १२८                                 | ६४                                  |
| १६   | अंशम                                         | अभाव                                 | अभाव                                | अभाव                                |
| १७   | गुणस्वाग्न्यप्रप्राप्तिमें<br>पर्याप्तमें    | मिथ्यात्व-सासादन<br>पहले से चार तक   | मिथ्यात्व-सासादन<br>पहले से चार तक  | मिथ्यात्व-सासादन<br>पहले से चार तक  |
| १८   | शरीर की कान्ति                               | सूर्य प्रभा सदृश                     | पूर्ण चन्द्रप्रभा सदृश              | प्रियंगु फल सदृश                    |
| १९   | मरणके बाद शरीर                               | मेघवत् विलीन                         | मेघवत् विलीन                        | मेघवत् विलीन                        |
| २०   | मरण बाद गति—<br>मिथ्यादृष्टि<br>सम्यग्दृष्टि | भवनत्रिक में<br>दूसरे स्वर्ग पर्यन्त | भवनत्रिकमें<br>दूसरे स्वर्ग पर्यन्त | भवनत्रिकमें<br>दूसरे स्वर्ग पर्यन्त |

प्रतिश्रुति नामक प्रथम कुलकरका निरूपण—

पत्तिबोवमद्रुमंसे, किं<sup>१</sup>दू<sup>२</sup>सवि<sup>३</sup>काल<sup>४</sup>अ<sup>५</sup>स<sup>६</sup>स<sup>७</sup>  
पठमो कुलकर-पुरिसो, उप्पज्जवि पडिसुदी सुवण्ण-णिहो ॥४२८॥

५ ।

अर्थ :—तृतीय कालके कुछ कम एक पत्थोपमके आठवें भाग प्रमाण ( काल ) अवशेष रहने पर सुवर्ण सदृश प्रभासे युक्त प्रतिश्रुति नामक प्रथम कुलकर पुरुष उत्पन्न होता है ॥४२८॥

एक-सहस्रं अडसय-सहिवं चावाणि तस्स उज्जेहो ।  
पत्सस्स वसमभागो, आऊ वेवी 'सयंपहा'णाम ॥४२९॥

१ दं १५०० १५ १० १२

अर्थ :—उसके शरीरका उत्सेध एक हजार आठ सौ वनुप, आयु पत्थके दसवें भाग प्रमाण और स्वयंप्रभा नामकी देवी यो ॥४२९॥

जम-गज-घट-णिहानं<sup>१</sup>, चंदाइच्चाण मंडसाणि तदा ।  
आसाठ - पुष्पिमाए, इट्ठमं भोगभूमिजा सखे ॥४३०॥  
'आकस्मिकभविधोरं', उप्पाइ 'जाइमोदमिदि' मत्ता ।  
पज्जाउत्ता पकंथं, पत्ता पवणेण पव्ह - रुवसो मय ॥४३१॥

अर्थ :—उस समय समस्त भोगभूमिज आषाढ़ मासकी पूर्णिमामें आकाशरूपी हाथीके घण्टे सहस्र पन्द्र और सूर्यके मण्डलोंको देखकर व्याकुल होते हुए 'यह कोई आकस्मिक महा भयानक उत्पात हुआ है, ऐसा समझकर वायुसे आहत वृक्षके सदृश प्रकम्पनको प्राप्त हुए ॥४३०-४३१॥

'पडिसुव-णामो कुलकर-पुरिसो एवाण 'वेइ अभय-गिरं ।  
तेजंगा<sup>१</sup> कालवसा, संजाइ मंवे - किरणीया ॥४३२॥

१. द. व. क. अ. इ. उ. सयंपहा । २. द. १५ १० । ३. द. व. क. अ. प. उ. भाण ।

४. क. व. य. उ. आकस्मिकभविधोरं । ५. द. व. क. अ. प. उ. जाइमोदमिदि । ६. व. मडिसुवि ।

७. क. अ. य. उ. दयि । ८. अ. व. तेजंगार ।

तत्प्रकारेण 'एणिह, ससहर-रविमंडलानि गयन्मि ।

पयडाणि जस्थि सुम्हं, एवाण दिसाए भय - हेह' ॥४३३॥

अर्थ :—तब प्रतिश्रुति नामक कुलकर पुरुषने उनको निर्भय करने वाली वालीसे बतलाया कि कालवश अब तेजांग जातिके कल्पवृक्षोंके किरण-समूह मन्द पड़ गये हैं, इस कारण इस समय आकाशमें चन्द्र और सूर्यके मण्डल प्रगट हुए हैं । इनकी ओरसे तुम लोगोंको भयका कोई कारण नहीं है ॥४३२-४३३॥

एण्णं चिय 'एवाणं, उदयस्थमणानि होंति आयासे ।

पडिहइ - किरणाण' पुठं तेयंगदुमाण तेएहि ॥४३४॥

अर्थ :—आकाशमें यद्यपि इनका उदय और अस्त नित्य ही होता रहा है, परन्तु तेजांग जातिके कल्पवृक्षोंके तेजसे इनकी किरणोंके प्रतिहत होनेसे ( अब तक ) वे प्रगट नहीं दिखते थे ॥४३४॥

जंझुदीये मेरुं, कुब्जंति पवाहिणं तरणि - चंदा ।

रत्ति - विणाण विभागं, 'कुब्जमाणा किरण - ससीए ॥४३५॥

अर्थ :—ये सूर्य एवं चन्द्रमा अपनी किरणशक्तिसे दिन-रातरूप विभाग करते हुए जम्बू-द्वीपमें मेरुपर्वतकी प्रदक्षिणा किया करते हैं ॥४३५॥

सोऊण तस्स वयणं, संजावा जिग्गया तदा सण्णे ।

अज्जंति वसण - कमसे', जुजंति बहुविह - पयारेहि ॥४३६॥

अर्थ :—इस प्रकार उन ( प्रतिश्रुति ) के वचन सुनकर वे सब नर-नारी निर्भय होकर बहुत प्रकारसे उनके चरणकमलोंकी पूजा और स्तुति करते हैं ॥४३६॥

१. व. व. क. ज. घ. ङ. एणिह । २. व. व. उ. मणवेहो, क. ज. घ. मणवेहो । ३. व. व. क.

एवाणि । ४. व. व. क. ज. घ. ङ. किरणाणि । ५. व. क. उ. कुब्जमाणा । ६. द. कमसी ।





तेन तमं वित्परिदं, ताराणं मंडलं पि गद्यतले ।

तुम्हाणः गतिं किञ्चि वि, एवाण हिसाए भय - हेतू ॥४४२॥

अर्थ :—तब भग्मति नामक कुलकर उन भयभीत हुए भोगभूमियोंको निर्भय करने वाली वालीसे कहते हैं कि अब कालवश तेजाङ्ग कल्पवृक्षोंके कारण समूह सर्वथा नष्ट हो चुके हैं । इस कारण आकाश प्रदेशमें इस समय अन्धकार और ( साथ ही ) ताराओंका समूह भी फैल गया है । तुम लोगोंको इनकी ओरसे कुछ भी भयका कारण नहीं है ॥४४१-४४२॥

अतिथ सदा अंधारं, ताराओ तेयंग - तद - गर्भोहि ।

पडिहव-किरणा पुळ्वं, कास-वसेनज्ज धावडा आवा ॥४४३॥

अर्थ :—अन्धकार और तारागण तो सदा ही रहते हैं, किन्तु पूर्वमें तेजाङ्ग आतिका कल्पवृक्षोंके समूहोंसे वे प्रतिहत-किरण थे, सो आज कालवश प्रगट हो गये हैं ॥४४३॥

अंबूषीवे मेरुं, कुम्भंति पदाहिणं गहा तारा ।

जवत्तदा निउधं ते, तेज - विणासा तमो होवि ॥४४४॥

अर्थ :—वे ग्रह, तारा और नक्षत्र जम्बूद्वीपमें मेरुकी प्रदक्षिणा नित्य किया करते हैं । तेजके विनाशसे ही अंधकार होता है ॥४४४॥

सोऊण तत्स वयणं, संजादा निउभया तदा सण्णे ।

अउचंति चलण - कमसे, धुणंति विविहेहि तुत्तेहि ॥४४५॥

अर्थ :—तब कुसकरके ये वचन सुनकर वे सब निर्भय हो गये और उसके चरण-कमलोंकी पूजा करने लगे तथा अनेक स्तोत्रोंसे स्तुति करने लगे ॥४४५॥

अमरकूर नामक कुसकरका निरूपण—

सम्मदि - सण - पण्णसे, अट्ट-सयावहिद-पल्ल-विण्णोवे ।

खेमं करो सि कुलयर - पुरिसो उप्पज्जवे तदिओ ॥४४६॥

[ १९ ]

१. व. व. क. ख. उ. तुम्हाण । २. द. ज. प. तेयंगतरपत्तेहि, व. क. उ. तेयंगतरपत्तेहि ।  
३. द. ज. क. पावदा । ४. द. व. क. ख. य. उ. विविहेरपत्तेहि । ५. द. ज. क. विण्णोवो । ६. द. क. प.  
परिओ ।

अर्थ :—सन्मति नामक कुसकरके स्वर्ग चले जाने पर आठ सौ से भाजित एक पत्थर कालके पद्मात् क्षेमकूर नामक तीसरा कुसकर पुष्प उत्पन्न हुआ ॥४४६॥

‘अद्भु-सम-बाब-सु’गो, सहस्स - हरिवेषक-एल्ल-परमाळ ।

चाभीयर - सम - बण्णो, तस्स सुणंदा महावेणी ॥४४७॥

। ४००० । १११०० ।

अर्थ :—इस कुसकरके शरीरकी ऊँचाई आठ सौ ( ८०० ) धनुष थी । आयु हजारसे भाजित एक पत्थर प्रमाण और वनं स्वर्ण सदृश था । उसकी महादेवी मुन्यदा थी ॥४४७॥

अद्भु-सम-बाब-सुगो, काल-वसा कूर-भाबमावणा ।

‘तवमयवो भोग - चरा, सव्वे ‘अब्बाउला जावा ॥४४८॥

अर्थ :—आजारी की हरिवेषक-एल्ल-परमाळ

अर्थ :—उस समय कालवश व्याघ्रादिक तिर्यञ्च जीवोंके कूर-परिणामी होनेसे सर्व भोगभूमिज मनुष्य उनके भयसे श्रत्यस्त व्याकुल होगये थे ॥४४८॥

क्षेमकर - नाम<sup>१</sup> मणू, भीवानं<sup>२</sup> देहि विठ्ठ - उववेसं<sup>३</sup> ।

कालस्स विकाराओ, एहे कूरचणं पत्ता ॥४४९॥

ता ‘एण्हि विस्तासं, पापाणं मा करेज्ज कइया<sup>४</sup> वि ।

तासेज्ज ‘कसुस - बण्णा, इय भणिवे जिबभया जावा ॥४५०॥

अर्थ :—तब क्षेमकूर नामक मनु उन भयभीत प्राणियोंकी दिव्य उपदेश देते हैं कि कालके विकारसे ये तिर्यञ्च जीव कूरताको प्राप्त हुए हैं, इसलिए अब इन पापियोंका बिश्वास कदापि मत करो; ये विकृतमुख प्राणी तुम्हें आस दे सकते हैं । उनके ऐसा कहने पर ये भोगभूमिज निर्भयता को प्राप्त हुए ॥४४९-४५०॥

१. द. द. क. ज. उ. मणू । २. द. द. क. ज. य. उ. अवमयदा । ३. द. अवभाउला ।

४. द. क. य. य. उ. रामो । ५. द. द. क. ज. य. उ. अवमयदां देहि । ६. द. क. उ. उववेसं ।

७. क. क. य. य. एण्हि । ८. द. द. क. य. य. उ. कइयावि । ९. द. द. क. य. य. उ. कसुस ।

क्षेमधर नामक मनुका तिरुप्पण—

तम्मणुवे तिबिव-गवै, अट्ट - सहस्सावहरिव - पत्तन्मि ।  
 पंतंरिवे उप्पत्तन्मि, तुरिमो क्षेमधरो' य मणू ॥४५१॥

। प २००० ।

अर्थ :—उस कुलकरका स्वर्गवास होनेपर आठ हजारसे भाजित पत्य-प्रमाण कालके अनन्तर क्षेमधर नामक चतुर्थ मनु उत्पन्न हुआ ॥४५१॥

तत्सुचछेहो बंका, तत्त - सया पंचहसरो - कुत्ता<sup>१</sup> ।  
 सय - कदि - हिवेक्क - पत्सा आव - पमाणे पि एवस्स ॥४५२॥

। दं ७७५ । प १०० ।

अर्थ :—उसके शरीरकी ऊँचाई सात सौ पञ्चहत्तर मनुष्य और आयु सौ के वर्षों (१००००) से भाजित एक पत्य प्रमाण थी ॥४५२॥

सो कंचन-सम-वण्णो, देवी विमला<sup>२</sup> ति तत्त विक्कावा ।  
 तवकाले<sup>३</sup> सीहावी, कूरमया संति मणूव - मंसाई ॥४५३॥

अर्थ :—उसका वर्ण स्वर्ण सहस्र था उसकी देवी 'विमला' नामसे विख्यात थी । उस समय कूरता को प्राप्त हुए सिंहादिक मनुष्योंका मांस खाने लगे थे ॥४५३॥

सीहप्यमुवि - भएण, अदिभीवा भोगभूमिजा ताहे<sup>४</sup> ।  
 उव्वदिसवि मणू ताण, बंकादि सुरक्कणोवावे ॥४५४॥

अर्थ :—तब सिंहादिकके भयसे अत्यन्त भयभीत हुए भोगभूमिजोंको क्षेमधर मनुने उनसे अपनी सुरक्षाके उपायभूत दण्डादिक रखने का उपदेश दिया ॥४५४॥

१. द. ब. क. ज. य. उ. कैमधरा । २. क. क. य. उ. कुत्ता । ३. क. ज. य. उ. विमलं ।

४. द. ब. क. ज. य. उ. विक्कावो । ५. ज. ब. तवकालो । ६. द. ज. य. तावे, ब. क. उ. तावो ।

गाथा : ४५५-४५८ ]

चउत्थो महाहियारो

[ १३३ ]

सोमकूर नामक मनुका मिल्लण —

तम्मजुवे नाक - शबे, सोबी-सहस्ताबहरिब-पल्लम्मि ।  
अंतहिदे<sup>१</sup> पंचमओ, जम्महि सोमंकरो सि मजू ॥४५५॥

५१  
८००००

अर्थ :- इस कुसकरके स्वर्ग जैसे जनेपर अस्सी हजारसे भाजित पल्ल प्रमाण कालके अन्तरसे बाँचवें सोमकूर मनुका जन्म हुआ ॥४५५॥

तस्सुज्जेहो बंडा<sup>२</sup>, पण्णासकभहिय - सल - लय - मेत्ता ।  
सबलेण भजिब - पल्लं, आऊ वण्णो सुबण्ण-निहो ॥४५६॥

१६७५० ५१  
१०००००

अर्थ :- उसके शरीरका उत्सेव सातसौ पचास ( ७५० ) धनुष, शायु एक लाखसे भाजित पल्ल प्रमाण और वर्ण स्वर्ण सदृश था ॥४५६॥

वेकी तस्त पसिद्धा, जामेण मनोहरि सि तवकाले ।  
कण्णतल धप्प - फला, अदिलोहो होदि मज्जुवाणं ॥४५७॥

अर्थ :- उसकी देवी 'मनोहरी' नामसे प्रसिद्ध थी । इस समय कल्पवृक्ष अल्प फल देने लगे थे और मनुष्योंमें सोम बहुत चला था ॥४५७॥

सुरतद - सुद्धा<sup>३</sup> जुगला, मज्जोण्णं ते कुणंति संवारं ।  
सोमंकरेण सोमं, काहूरल निवारिता सव्वे ॥४५८॥

१. ब. द. क. उ. अंतहिदे पंचमवी, ज. तं अंतहिदे पंचमवी । २. द. क. ज. प. उ. देवी ।  
३. द. प. ज. पादिलोहादि । ४. द. क. लदा ।

अर्थ १—कल्पवृक्षोंमें सुख हुए वे युगल परस्पर विवाद करने लगे थे । तब सीमा निर्धारित करके सीमन्तुर द्वारा उन सबका पारस्परिक संबंध रोका गया ॥४५७॥

उपयुक्त पांच कुलकरोंकी दण्ड व्यवस्था—

सिक्खं कुर्वन्ति ताणं, पञ्चसुवि - पट्टवी कुलकरा पंच ।

सिक्खला - कर्म - निमित्तं, दंडं कुर्वन्ति 'हाकारं ॥४५६॥

अर्थ :—प्रतिश्रुति बाध पांच कुलकर उन ( भोगभूमिजों ) को शिक्षा देते हैं और इस शिक्षण कार्यके निमित्त 'हा' इस प्रकारका दण्ड ( विधान ) करते हैं ॥४५६॥

सीमन्धर नामक कुलकरका निरूपण—

तम्मन्धुवे तिबिष - गवे, धड-सक्खावहिष-पत्स-वरिक्कते ।

सीमन्धरो ति छट्ठो, उप्पज्जवि 'कुलकरो पुरित्तो ॥४५७॥

| ५१  
दस

अर्थ :—इस ( सीमन्धर ) कुलकरके स्वर्ग चले जानेपर घाठ साक्षसे भावित पत्स प्रमाण काल बाद सीमन्धर नामक छठा कुलकर पुरुष उत्पन्न होता है ॥४५७॥

तस्सुज्जेहो 'दंडा, पञ्चवीसवहिष - सत्त - सय - भेत्ता ।

वत्त-सक्ख - भणिव - पत्सं, आऊ देवी जसोहरा नाम ॥४५८॥

| दंड ७२५ । प १००३०००

अर्थ :—उसके शरीरका उत्सेख सातसौ पच्चीस धनुष या और धायु दस साक्षसे भावित पत्स प्रमाण थी । इसके 'जसोधरा' नामकी देवी थी ॥४५८॥

तक्कासे कप्पकुमा, पद्धिबिरत्ता जप्प-फल-रत्ता ह्वेत्ति ।

भोग - पुराणं सेसुं, कलहो उप्पज्जवे निज्जं ॥४५९॥

**अर्थ** :—इस कुलकरके समयमें कल्पवृक्ष अत्यन्त विरल और अल्पफल एवं अल्प रस वाले हो जाते हैं, इसलिए भोगभूमिज मनुष्यों के बीच इनके विषयमें नित्य ही कलह उत्पन्न होने लगता है ॥४६२॥

सम्भवकलह - निवारण - हेतुओं ताण कुण्ड सीमाओ ।

सर - गुणधारी विष्णु, सेण य सीमंघरो<sup>१</sup> भणिओ ॥४६३॥

**अर्थ** :—वह कुलकर कलह दूर करनेके निमित्त वृक्षां तथा पौधों ( या फलोंके गुणधों ) आदिकी विष्णु रूप भानकर सीमा नियत करना है अतः वह सीमन्धर कहा गया है ॥४६३॥

विमलवाहन कुलकरका निरूपण—

तम्मन्नुवे सग - गदे, असीदि-सक्खावहरिब-परसम्मि ।

बोलीओ उप्पण्णो, सत्तमओ<sup>२</sup> विमलवाहणो<sup>३</sup> सि मणू ॥४६४॥

प १  
८०००००० ।

**अर्थ** :—सीमन्धर मनुके स्वर्ग चले जानेपर अस्सी लाखसे भाजित पत्थ्र प्रमाण काल बाद विमलवाहन नामक सातवां मनु उत्पन्न हुआ ॥४६४॥

सत्त-सय-चाव - तुंगो, इणि-कोढी-भणिब-परस-परसाऊ ।

कंवाव - सरिच्छ - वण्णो, सुमवी - गामा महावेवी ॥४६५॥

१  
इड ७०० । प १००००००० ।

**अर्थ** :—यह मनु सातसी अनुष-प्रमाण ऊँचा, एक करोड़से भाजित पत्थ्रप्रमाण आयुका धारक और स्वर्ग सदृश वर्णवाला था । इसके सुमति नामकी महादेवी थी ॥४६५॥

तक्कासे भोग - णरा, यमणागमजेहि पीडिदा संता<sup>४</sup> ।

आरोहति करिब - प्पहुदि तस्सोववेसेज<sup>५</sup> ॥४६६॥

१ क. ज. य. उ. सम्भवकलह । २ क. उ. सीमंकर । ३ द. ब. क. ज. य. उ. विमलवाहण ।

४ द. क. उ. य. सत्ता । ५ द. क. ज. य. उ. तस्सोववेसेण ।

अर्थ :—इस समय गमनागमनसे पोड़ाको प्राप्त हुए भोगभूमिज मनुष्य इस मनुष्ये उपदेवासे हाथी आदि पर सवारी करने लगे थे ॥४६६॥

अक्षुष्मान् कुलकरका निरूपण—

ससमए नाक - गधे, अङ्ग-कोडी-भजिद-पल्ल-विच्छेदे ।

उम्पज्जवि अट्टसम्मो, अक्खम्मो कणध - वण्ण - तणू ॥४६७॥

१

। प ८०००००००० ।

अर्थ :—सप्तम कुलकरके स्वर्गस्थ होने पर आठ करोड़से भाजित पल्य-प्रमाण कामके अन्तर स्वर्ग सदृश वर्ण वाले शरीरसे युक्त अक्षुष्मान् नामक आठवां कुलकर उत्पन्न होता है ॥४६७॥

तस्सुच्छेहो बंढा, पणधोस - विहोण - सस - सय-मेसा ।

दस - कोडि - भजिदमेक्कं, पल्लिबोद्धममाउ - परिमाणं ॥४६८॥

१

। इ ६७५ । प १००००००००० ।

अर्थ :—उसके शरीरकी ऊँचाई पञ्चवीस कम सातसौ ( ६७५ ) मनुष्य और मायु दस करोड़से भाजित एक पल्योपम प्रमाण थी ॥४६८॥

देवी धारिणि - नाम्मा, तत्काले भोगभूमि - जुगलार्ण ।

संजणिदे णिय - वासे, इट्ठुण सहस्रभयं होवि ॥४६९॥

अर्थ :—( इस कुलकरके ) धारिणी नामकी देवी थी । इसके समयमें उत्पन्न हुए अपने राज युगलको देखकर भोगभूमिज युगलोंको महाभय उपस्थित होता है ॥४६९॥

एस मणू <sup>३</sup>भीदाणं, ताणं मासेदि विट्ठमुच्चसेसं ।

तुम्हाण सुवा एदे, वेक्खह पुण्णिदु - सुंवरं वदणं ॥४७०॥

अर्थ :—तब यह मनु उन भयभीत युगलोंको दिव्य उपदेवा देता है कि ये तुम्हारे पुत्र-पुत्री हैं, पूर्ण चन्द्र सदृश इनके सुन्दर मुख देखो ॥४७०॥

१. द. ब. क. ज. घ. ङ. उम्पण्णदि । २. ब. क. ज. घ. ङ. सान्निदि । ३. द. ब. क. ज. घ.

ज. मेदाणं । ४. द. ब. क. उ. तुम्हेण, ज. घ. तुम्हेणु ।

तम्मन्नु - उबएसोवो, बालय - बहचाणि बेचिल्लूण पुढं ।

भोग - जरा तबकाले, घाउ - विहीणा बिलीयंसि ॥४७१॥

अर्थ :—इस मनुके उपदेशसे स्पष्ट रूपसे अपने बालकोंके भूख देलकर भोगभूमिज (युगल) तत्काल ही आयुसे रहित होकर विलीन हो जाते थे ॥४७१॥

यशस्वी मनुका निरूपण—

अट्टमए जाक - गवे, असोदि-कोडीहि भजिद-पल्सम्मि ।

बोलीणे उप्पज्जहि, जसस्सि - जामो मन्नु जबमो ॥४७२॥

१

[ प ५००००००००० ।

सर्वगणेशाय नमः । अथर्ववेदोक्तं श्री सुविदितं अथर्ववेदोक्तं श्री सुविदितं

अर्थ :—जाठवें कुलकरके स्वर्ग-गमन पश्चात् अस्सी करोड़से भाजित पत्यके व्यतीत होने पर यशस्वी नामक नवम मनु उत्पन्न हुआ ॥४७२॥

पण्णासाधिय - छस्सय - कोदंड - पमाण - देह - उब्बेहो ।

कंखण - वण्ण - सरीरो, सय - कोडी - भजिद - पल्साऊ ॥४७३॥

१

[ दं ६५० । प १०००००००००० ।

अर्थ :—वह स्वर्ण सद्गण वर्ण वाले शरीरसे युक्त, छह सौ पचास धनुष ऊँचा और ती करोड़से भाजित पत्योपम प्रमाण आयु वाला था ॥४७३॥

जामेण कंतमाला, ह्वेदि देवी इमस्स तबकाले ।

नामकरणञ्जवट्टं, उव्वेसं देवि जुगलानं ॥४७४॥

अर्थ :—इसके कान्तमाला नामकी देवी थी । यह उस समय युगलोंको अपनी सन्तानके नामकरण-उत्सवके लिए उपदेश देता है ॥४७४॥

तद्धूण उव्वेसं, जामाणि कुणति ते वि बालाणं ।

जिबसिय बोधं कालं, 'पक्खीणाऊ बिलीयंसि ॥४७५॥



अर्थ :—इस उपदेशकी पाकट व युगले भविष्यकीक नाम करते ( रखते ) हैं और छोड़े समय रह कर आयु क्षीण होने पर बिलीन हो जाते हैं ॥४७५॥

अभिचन्द्र नामक कुलकरका निरूपण—

‘नवमे सुरलोच - गदे, अहसय - कोडीहि भजिद - पल्लम्मि ।

अंतरिदे उप्पज्जवि, अहिचंढो णाम दसम - मधू ॥४७६॥

१

। १ = ०००००००००० ।

अर्थ :—नवम कुलकरके स्वर्गस्थ होने पर आठ सौ करोड़से भाजित पत्यके अनन्तर अभिचन्द्र नामक दसवां मनु उत्पन्न होता है ॥४७६॥

पणुवोसाधिय - छस्सय - कोवंड - वमाण - वेह - उच्छेहो ।

कोडो - सहस्स - भजिदा पसिबोवममेस - परमाऊ ॥४७७॥

१

। ६ = ६२५ । १ = १००००००००००० ।

अर्थ :—उसके शरीरकी ऊँचाई छह सौ पच्चीस अनुष और आयु एक हजार करोड़से भाजित पत्योपम प्रमाण थी ॥४७७॥

कंछण - समण - वण्णो, वेवी णामेण सिरिमवी तत्स ।

सो वि सिसुणं रोवण - वारण - हेहु कहेवि उववेसं ॥४७८॥

अर्थ :—उसके शरीरका वर्ण स्वर्ण सदृश था । उसके श्रीमती नामकी देवी थी । वह ( कुलकर ) भी शिशुओंका रुदन रोकने हेतु उपदेश देता है ॥४७८॥

रत्तीए ससिदिमं, वरिसिय <sup>१</sup>खेलावणाणि कावूणं ।

ताण <sup>२</sup>वण्णोववेसं, सिक्खावह कुण्ह जवणं मि ॥४७९॥

**अर्थ** :— रात्रिमें चन्द्रमण्डल दिखाकर और खिलावन करके उन्हें वचनोपदेश ( बोलना ) सिखाओ तथा यत्न ( पूर्वक उनका रक्षण ) करो ॥४७६॥

सोऊवं उवएसं, भोगभूमिज्ज मनुष्य शिशुओंके साथ वंसा ही व्यवहार करते  
अच्छिय धोध-बिलाइं, पम्पलीणाऊ बिसोयंति ॥४८०॥

**अर्थ** :— यह उपदेश सुनकर भोगभूमिज्ज मनुष्य शिशुओंके साथ वंसा ही व्यवहार करते हैं। वे ( युगल ) धोड़े दिन रह कर आसुके सीए होने पर बिलीन हो जाते हैं ॥४८०॥

उपर्युक्त पाँच कुलकारोंकी दण्ड व्यवस्था—

'लोहेणाभिहदाणं, सीमंधर - पटुधि - कुलकरा पंच ।  
ताणं सिक्खण-हेदुं, हा - मा - कारं कुचंति 'वडस्थं ॥४८१॥

**अर्थ** :—सीमन्धरादिक पाँच कुलकर सोभसे आक्रान्त उन युगलों के शिक्खण हेतु दण्डके लिये हा ( खेद सूचक ) और मा ( निषेध सूचक ) शब्दोंका उपयोग करते हैं ॥४८१॥\*

चन्द्राभ मनुका निरूपण—

अहिचंदे तिदिच-गदे, वस - 'घच-हव-अट्ट-कोडि-हिह-पल्ले ।  
अंतरिदे चंदाहो, एक्कारसमो हवेदि मणू ॥४८२॥

१  
। प ८००००००००००० ।

**अर्थ** :—अभिचन्द्र कुलकरका स्वर्गारोहण हो जाने पर दसके घन ( १००० ) से गुणित साठ करोड़ ( साठ करोड़ × १००० ) से भाजित पल्ल प्रमाण अन्तरालके पश्चात् चन्द्राभ नामक ग्यारहवीं मनु उत्पन्न होता है ॥४८२॥

अस्सय - 'बहुच्छेहो, वर-चामीयर-सरिच्छ-तणु-वण्णो ।  
वस - कोडि - सहस्सेहि, भाजिव - पल्ल - प्यमाणाऊ ॥४८३॥

१. द. व. क. ज. घ. ङ. सीधेणाभिपदाणं । २. द. वडस्था । ३. मिश्रकोसार भा० ७९८ के आधार पर वेव कुलकरोंके समग्र हा-मा-विकृती व्यवस्था थी । ३. द. व. क. ज. घ. ङ. दसपुणह्व । ४. द. दंहुच्छेहो । ५. द. व. क. ज. घ. ङ. मज्जिदे ।

। दं ६०० । प १०००००००००००० ।

अर्थ :—उसके शरीरको ऊँचाई छह सौ धनुष, शरीरका वर्ण उत्तम स्वर्ण सदृश और आयु दस हजार करोड़ से भाजित पञ्चोपम प्रमाण थी ॥४८३॥

विश्वम-लावण्य-धुवा, तस्स च देवी महाबली-रामा ।  
तत्काले अदिसोदं, होवि तुसारं च अविवाऊ ॥४८४॥

सीबाणित-पासादो, अट्टवृक्षं पाबिदूण भोगणरा ।  
अंदाही - ओदि - गणे, तुसार - छप्पे ण पेक्खंति ॥४८५॥

अवि - ओवाण इमाणं, अंदाहो वेति दिव्य - उज्ज्वलं ।  
भोगाणि-हाणीए, आवी कम्मस्सिदी निमडा ॥४८६॥

अर्थ :—उस ( कुलकर ) के अनुपम लावण्य युक्त प्रभावती नामकी देवी थी । उस कालमें शीत बढ़ गई थी, तुषार छाने लगा था और अति वायु चलने लगी थी । शीतल वायुके स्पर्शसे अत्यन्त दुःख पाकर भोगभूमिज मनुष्य तुषारमें आच्छादित चन्द्रादिक ज्योतिषगणको नहीं देख पाते थे । इस कारण अत्यन्त भयको प्राप्त उन भोगभूमिज पुरुषोंको चन्द्राम कुलकर यह दिव्य उपदेश देता है कि भोगभूमिकी हानि होने पर अब कर्मभूमि निकट आ गई है ॥४८४-४८६॥

कासस्स विकारादो, एस सहाओ पयट्टवे चियमा ।  
णासइ तुसारमेयं, एण्ह मसंड - किरणेहि ॥४८७॥

अर्थ :—कालके विकारसे नियमतः यह स्वभाव प्रवृत्त हुआ है । अब यह तुषार सूर्यकी किरणोंसे नष्ट होगा ॥४८७॥

सोदूण तस्स वयणं, ते सग्गे भोगभूमिजा मल्लभा ।  
रवि -<sup>३</sup>किरणासिइ-सीदा, पुत्त-कसत्तेहि ओयंति ॥४८८॥

अर्थ :—उस ( कुलकर ) के वचन सुनकर वे सब भोगभूमिज मनुष्य सूर्यकी किरणोंसे शीतको नष्ट करते हुए पुत्र-कलत्रके साथ जोषित रहने लगे ॥४८८॥

मरुदेव कुलकरका निरूपण —

चंदाहे सग-गदे, सोदि-सहस्सेहि गुणिव-कोदि-हिबे ।  
पल्ले गयम्मि अम्मइ, मरुदेवो पास बारसमो ॥४८६॥

मार्तण्डिक :- आचार्य जी सुविद्यमानाह जी महाराज  
। प ५०००००००००००० ।

अर्थ :- चन्दाभ कुलकरके स्वर्ग चले जानेके बाद अस्सी हजार करोड़से भाजित पर्य  
व्यतीत होने पर मरुदेव नामक बारहवें कुलकरने जन्म लिया ॥४८६॥

पंच - सया पणत्तरि - सहिवा जावानि तस्स उच्छेहो ।  
इगि-लक्ख-कोडि-भजिबं, पल्लोवममाउ - परिमाणं ॥४८७॥

। द ५७५ । प १०००००००००००० ।

अर्थ :- उसके शरीरकी ऊँचाई पाँचसौ पणत्तर धनुष और आयु एक लाख करोड़से  
भाजित पल्लोपम प्रमाण थी ॥४८७॥

कांछणा - जिहस्स तस्स य, सव्वा जामेण सयुवभा देवी ।  
तक्काले गज्जंता, मेघा वरिसंति सडिबंता ॥४८८॥

अर्थ :- स्वर्ण सदृश प्रभावाले उस कुलकरके 'सत्या' नामकी अनुपम देवी थी । उसके  
समयमें घिजली युक्त मेघ गरजते हुए बरसने लगे थे ॥४८८॥

कहम - पवह - णवोओ, अबिद्ध-पुम्माओ 'ताव वट्ठूणं ।  
अविभोवाण णराणं काल - विभाणं भजेदि' मरुदेवो ॥४८९॥

अर्थ :- उस समय पहले कभी नहीं देखी गयी कीचड़ युक्त जल-प्रवाहवाली नदियोंको  
देख कर अत्यन्त अग्रणीत हुए मनुष्योंको मरुदेव काल-विभाग प्ररूपित करता है ॥४८९॥

कालस्स विकारादो, आसन्ना होवि तुम्ह कम्म-महो ।  
 'भावावीहि गदीणं, उत्तारह भूधरेसु सोबाणे ॥४६३॥

काङ्गण बलह 'तुम्हे, पाउस-कालस्मि-धरह छत्ताई' ।  
 सोङ्गण तस्स वयणं, सम्मे ते भोगभूमि - शरा ॥४६४॥

उत्तरिय वाहिणीमो, आरहङ्गण च तुंग'-सेलेसु' ।  
 वि - विचारिह - वरिसामो, पुत्त - कलसेहि जीवन्ति ॥४६५॥

अर्थ :- कालके विकारसे अब कर्मभूमि तुम्हारे निकट है । अब तुम लोग नदियोंकी नौका आदिसे पार करो, सोड़ियोंसे होकर पहाड़ों पर चलो ( चढ़ो ) और वर्षाकालमें छत्रादि धारण करो । उस कुलकरके वचन सुनकर वे सब भोगभूमिज मनुष्य नदियों को उत्तर कर, उत्तुङ्ग पहाड़ों पर चढ़कर और वर्षाका निवारण करते हुए पक्ष एवं कलत्रके साथ जीवित रहने लगे ॥४६३-४६५॥

प्रसेनजित् कुलकरका निरूपण—

मरुदेवे तिडिव-गदे, अङ्ग-कोडो-सबल-भाजिह-पल्लम्मि ।  
 अंतरिदे उत्पज्जवि, 'पसेणजिण्णाम तेरसमो ॥४६६॥

प ८००००००००००००० ।

अर्थ :- मरुदेवके स्वर्गस्थ हो जाने पर आठ लाख करोड़से भाजित पत्न्य-प्रमाण अन्तरालके पश्चात् प्रसेनजित् नामक तेरहवाँ कुलकर उत्पन्न होता है ॥४६६॥

कामीयर-सम-<sup>१</sup>वण्णो, वस-हव-पहावण्ण-वाव-उज्जेहो ।  
 वस-कोडि - सबल - भाजिह - पल्लिवममेष - परमाङ्ग ॥४६७॥

दं ५५० । प १००००००००००००० ।

१. व. व. एण्णोदीण । २. द. व. क. ज. य. उ. तुम्हो । ३. द. व. क. ज. य. उ. छत्ताहि । ४. व. व. क. ज. य. उ. दुरंगसेलेसु । ५. द. पसेणजिण्णाम । ६. व. व. क. व. उ. वध्या ।

अर्थ :—वह कुलकर स्वर्ण सदृश वर्ण वाला, दससे गुणित पचपन अर्थात् ५५० घनुष प्रमाण ऊँचा और दस लाख करोड़से भाजित पत्योपम प्रमाण आयु वाला था ॥४६७॥

अमितमती लहरी, तवहसे बलि-पटल करियेन<sup>१</sup> ।  
<sup>२</sup>जायंति गुगलवाला, वैकुण्ठ भोला किमेवमिति ॥४६८॥

भय-जुसाण णराणं, पसेणजिभणदि विव-उवदेसं ।  
<sup>३</sup>बलि-पडसापहरणं, कहिदमि कुणंसि ते सब्बे ॥४६९॥

अर्थ :—उसके 'अमितमती' नामक देवी थी । उस समय बलिपटल ( जरायु ) से वैदित गुगल शिशु जन्म लेते हैं । उन्हें देखकर माता-पिता भयभीत होते हैं और यह क्या है ? ऐसा सोचते हैं । इस प्रकार भयसे संयुक्त मनुष्योंको प्रसेनजित् मनु बलि - पटल दूर करनेका दिव्य उपदेश देते हैं । ( उनके ) कथनानुसार वे सब मनुष्य बलि - पटल दूर करने लगे ॥४६८-४६९॥

पेण्हंते बालाणं, मुहाणि<sup>४</sup> वियसल-कमल-सरिसाणि ।  
 कुणंसि पयसोणं, सिसूण रक्खा णरा सब्बे ॥४७०॥

अर्थ :—सब मनुष्य शिशुओंके विकसित कमल सदृश मुखोंको देखने लगे और प्रयत्न-पूर्वक उनका रक्षण करने लगे ॥४७०॥

चौदहवें नाभिराय मनुका निरूपण—

तम्मणु-सिद्धि<sup>५</sup>-पवेसे, कोळि-हवासीदि-सक्ख-हिद-पल्ले ।  
<sup>६</sup>अंतरिदे संभूवो, चोइसमो नाभिराज - भणू ॥४७१॥

१  
 । प ८००००००००००००००० ।

अर्थ :—उस मनुके स्वर्गस्थ होने पर अस्सी लाख करोड़से भाजित पत्य प्रमाण कालके अन्त-शालसे चौदहवें नाभिराय मनु उत्पन्न हुए ॥४७१॥

१. द. ब. क. ज. पडस परियेदा, ज. प. पड परियेदा । २. क. ज. प. उ. जावंती । ३. ब. उ. चित्ति । ४. द. ब. क. ज. प. उ. वसट्ट । ५. द. द. उ. सिद्धि । ६. प. ब. क. ज. अंतरियो ।

पञ्चवीसुत्तर-पण-सय-चाउच्छेहो सुवज्ज-वण-णिहो ।  
इणि-पुब्ब-कोडि-आऊ, मरुदेवी नाम तस्स बहू ॥५०२॥

। दं ५२५ । पुब्ब कोडि १ आउ ।

अर्थ :—वह पाँचसौ पञ्चीस घनुष ऊँचा, स्वर्ण सदृश वर्ण वाला और एक पूर्व कोटि प्रमाण आयुसे युक्त था । उसके मरुदेवी नामकी पत्नी थी ॥५०२॥

तस्सि काले होषि हु, खात्ताणं नाभिणास - मइवीहं ।  
तत्तत्तणोववेसं, कह्वि मणू से पकुम्भन्ति ॥५०३॥

अर्थ :—उस समय बालकोंका नाभिनाल अत्यन्त लम्बा होने लगा था, नाभिराय कुलकर उसे काटनेका उपदेश देते हैं और वे मनुष्य वंसा ही करते हैं ॥५०३॥

कम्पवदुमा पणहु, साहे विविहो सहीणि सस्सणि ।

महुर - रसाइ फलाइ, पेच्छन्ति सहावदो धरिणीसु ॥५०४॥

अर्थ :—उस समय कल्पवृक्ष नष्ट हो गये और पृथिवी पर स्वभावसे ही उत्पन्न हुई अनेक प्रकारकी ओषधियाँ, सस्य ( घान्यादि ) एवं भक्षुर रस युक्त फल दिखाई देने लगे ॥५०४॥

कप्पतरुण विणासे, तिब्ब-भया भोगभूमिजा मणुवा ।  
सखे वि नाहिराजं, सरणं पविसन्ति रक्खेत्ति ॥५०५॥

अर्थ :—कल्पवृक्षोंके नष्ट हो जाने पर तीव्र भयसे युक्त सब ही भोगभूमिज मनुष्य नाभिराय कुलकरकी शरणमें पहुँचे और बोले 'रक्षा करो' ॥५०५॥

करुणाए नाहिराओ, नराण उवविसवि जीवणोवायं ।  
मुज्जह मज्जपदीणं, ओवादीणं फसाइ भक्खणि ॥५०६॥

अर्थ :—नाभिराय करुणा-मूर्खक उन मनुष्योंको प्राजीविकाके उपायका उपदेश देते हैं । ( वे बताते हैं कि ) भक्षण करने योग्य ओषादिक (छिलके वाली) वनस्पतियोंके फल ( केला, श्रीफल आदि ) खाओ ॥५०६॥

सासि-जव-वल्ल-<sup>१</sup>सुबरो-तिस-यास-प्यहुवि-विबिह-वण्णाई ।

<sup>२</sup>उबभुंअह पियह लहा, सुरहि-प्यहुदोअ बुद्धासि ॥५०७॥

अर्थ :—गासि, जो, वल्ल, तूवर, तिस धीर उड़द आदि विविध प्रकारके धान्य काष्ठो धीर गाय आदिका बूध पियो ॥५०७॥

अर्थं अहु उबबेसं, देवि दयालू नराण सयसाणं ।

तं कावूणं <sup>३</sup>सुसिवा, जीबंते तप्पसाएण ॥५०८॥

अर्थ :—(इसके अतिरिक्त) दयालु नाभिराय उन सब मनुष्योंको अन्य भी अनेक प्रकारकी शिक्षा ( सीख ) देते हैं । तदनुसार आचरण करके ये सब मनुष्य, मनु नाभिरायके प्रसादसे सुख-पूर्वक जीवन व्यतीत करने लगे ॥५०८॥

मत्तान्तरसे कुलकरोंकी आयुका निर्धारण—

आयुकावलीक :- आयुकावली और सुविधित्वागत जी मत्तान्तर

पल्लिवेम-वसमंशो, ऊओ ओवेण पविसुविस्साऊ<sup>४</sup> ।

अममं अउअं सुविमं, कमलं नलिनं अ पउम-पउमंगा ॥५०९॥

कुमुव-कुमुवंग-<sup>५</sup>नउवा, नउवंगं पव्व-पुव्व-कोडीओ ।

सेस-मचूर्णं आऊ, कमसो केई <sup>६</sup>निरुबंति ॥५१०॥

पाठान्तरं ॥

अर्थ :—प्रतियुति कुलकरकी आयु कुछ कम पत्थोपमके दसवें भाग प्रमाण थी । इसके आगे शेष तेरह कुलकरोंकी आयु क्रमशः घमभ, अउअ, उठित, कमल, नलिन, पव, पमाऊ, कुमुद, कुमुदाऊ, नयुत, मयुताऊ, पव और पूर्व कोटि प्रमाण थी, ऐसा कोई आचार्य कहते हैं ॥५०९-५१०॥

नोट :—४२८ से ५१० पर्यन्तकी गाथाओंसे सम्बन्धित मूल संहृष्टियोंके अर्थ, देवियोंके नाम और दण्ड व्यवस्था आदिका निदर्शन इसप्रकार है—

१. द. व. क. ज. म. उ. लोबरी ..... विविहवण्णाई । २. द. व. क. ज. म. उ. उबभुंअदि ।  
 ३. द. व. क. ज. म. उ. सुसिवा । ४. क. ज. म. उ. पविसुविस्साऊ । ५. द. व. क. ज. म. उ. एविएण ।  
 ६. व. निरुबंति ।



तालिका : ११

कुलकरोंके उत्सेध, आयु एवं अन्तराल आदिका विवरण गा.पा. ७६८ से ५१०

| क्र.सं. | नाम         | उत्सेध<br>(घनुषोंमें) | आयु-प्रमाण           | मतान्तरसे<br>आयु प्र० | जन्मका<br>अन्तर काल  | देवीके नाम    | दण्ड<br>निर्धारण               |
|---------|-------------|-----------------------|----------------------|-----------------------|----------------------|---------------|--------------------------------|
| १       | प्रतिश्रुति | १८००                  | पत्न्य<br>१०         | कृष्ण कम              | ०                    | स्वयंप्रभा    | हा                             |
| २       | सन्धति      | १३००                  | पत्न्य<br>१००        | अमम                   | पत्न्य<br>८०         | यशस्वती       | हा                             |
| ३       | श्रीमङ्कुर  | ८००                   | पत्न्य<br>१०००       | अड्ड                  | पत्न्य<br>८००        | सुनन्दा       | हा                             |
| ४       | श्रीमन्धर   | ७७५                   | पत्न्य<br>१००००      | वृटित                 | पत्न्य<br>८०००       | विमला         | हा                             |
| ५       | श्रीमङ्कुर  | ७५०                   | पत्न्य<br>१०००००     | कमल                   | पत्न्य<br>८००००      | मनोहरी        | हा                             |
| ६       | श्रीमन्धर   | ७२५                   | पत्न्य<br>दस लाख     | नलिन                  | पत्न्य<br>८ लाख      | यशोधरा        | हा मा                          |
| ७       | विमलवाहन    | ७००                   | पत्न्य<br>१ क०       | पद्म                  | पत्न्य<br>८० लाख     | सुमती         | हा मा                          |
| ८       | चन्द्रधाम   | ६७५                   | पत्न्य<br>१० क०      | पद्माङ्ग              | पत्न्य<br>८ क०       | धारिणी        | हा मा                          |
| ९       | यशस्वी      | ६५०                   | पत्न्य<br>१०० क०     | कुमुद                 | पत्न्य<br>८० क०      | कान्तभासा     | हा मा                          |
| १०      | अमिचन्द्र   | ६२५                   | पत्न्य<br>१००० क०    | कुमुदाङ्ग             | पत्न्य<br>८०० क०     | श्रीमती       | हा मा                          |
| ११      | चन्द्राम    | ६००                   | पत्न्य<br>१० हजार क० | नयुत                  | पत्न्य<br>८००० क०    | प्रभावती      | त्रि.धा. गा. ७६८<br>हा मा धिक् |
| १२      | मरुदेव      | ५७५                   | पत्न्य<br>१ लाख क०   | नयुताङ्ग              | पत्न्य<br>८० हजार क० | सत्या         | " " "                          |
| १३      | प्रसेनजित्  | ५५०                   | पत्न्य<br>१० लाख क०  | पूर्व                 | पत्न्य<br>८ लाख क०   | अमितमती       | " " "                          |
| १४      | नाभिराय     | ५२५                   | पूर्व कोटि वर्ष      | पूर्व कोटि            | पत्न्य<br>८० लाख क०  | मरुदेवी पत्नी | " " "                          |

कुलकरोका विशेष निरूपण—

वार्तिक :- आचार्य जी सुमित्रितामर जी महाराज

एवे चउइस मनुजो, पडिसुब-पहुवी हु बाहिरावता ।

पुष्प-भक्षम्म विवेहे, रायकुमारा महाकुसे 'आवा ॥५११॥

अर्थ :-प्रतिश्रुतिको आवि लेकर नाभिराम-पर्यन्त ये चौदह मनु पूर्व-भवमें विदेह क्षेत्रके अन्तर्गत महाकुलमें राजकुमार थे ॥५११॥

कुससा वानादीसुं, 'संजम-सव-बावधंत-यसाणं ।

जिय-जोग' -अणुहाणा, भहव-अज्जव-गुणेहि संकुता ॥५१२॥

मिच्छस-भावणाए, भोगाउं बंधिऊन' ते सखे ।

'पच्छा साहय-सम्मं, गेहंति जिनिव खलन-मूलम्हि ॥५१३॥

अर्थ :-संयम, तप और ज्ञानसे संयुक्त पात्रोंको वानादिक देनेमें कुशल, अपने योग्य अनुष्ठानसे युक्त तथा मार्ग-आर्जवादि गुणोंसे सम्पन्न थे सब पूर्वमें मिथ्यात्व-भावनासे भोगभूमिकी भावु बाँध कर पश्चात् जिनेन्द्र भगवानके पादमूलमें शायिक सम्पत्त्व ग्रहण करते हैं ॥५१२-५१३॥

जिय-जोग-सुबं 'पडिदा, सोणे आवम्हि ओहिजाण-'जुदा ।

उपपजिदूष भोगे, केह' जरा ओहि-आणेन ॥५१४॥

आदि-भरणेन केह', भोग-मनुस्साण ओवणोवायं ।

भासंति जेण तेणं, मनुजो भणिदा मुणिबेहि ॥५१५॥

अर्थ :-अपने योग्य श्रुतको पढ़कर ( इनमेंसे ) कितने ही राजकुमार आयु-क्षीण हो जाने पर भोगभूमिमें अवधिज्ञान सहित मनुष्य उत्पन्न होकर अवधिज्ञानसे और कितने ही जाति-स्मरणसे भोगभूमिज मनुष्योंको जीवनके उपाय बताते हैं, इसलिये ये मुनीन्द्रों द्वारा 'मनु' कहे गये हैं ॥५१४-५१५॥

आभिराम्यः ... आभिराम्यः श्री सुविधितमः श्री खलराजः

कुल-धारणाद्गु सन्धे, कुलधर-नामेन पुष्प-विकसादा ।

कुल-करणास्मि य कुसला, कुलकर-नामेन-मुपसिद्धा ॥५१६॥

अर्थ :—ये सब कुलोंके धारण करनेसे 'कुलधर' नामसे और कुलोंके करनेमें कुशल होनेसे 'कुलकर' नामसे भी लोकमें प्रसिद्ध हैं ॥५१६॥

शलाका पुरुषोंकी संख्या एवं उनके नाम—

एतो सत्साय-<sup>१</sup>पुरिस्ता, तेसद्गो सयस-<sup>२</sup>भुवण-विकसादा ।

जायंति भरह-सेत्ते, णरसीहा पुष्पा-पाकेण ॥५१७॥

अर्थ :—अब ( नाभिराम्य कुलकरके पश्चात् ) भरतक्षेत्रमें पुण्योदयसे मनुष्योंमें श्रेष्ठ और सम्पूर्ण लोकमें प्रसिद्ध तिरेशठ शलाका-पुरुष उत्पन्न होने लगते हैं ॥५१७॥

तिथ्ययर-चक्र-बल-हरि-यडिसत्तू णाम विस्सुदा कमसो ।

वि - गुणिय - बारस - बारस - पयस्य - णिहि - रंध - संखाए ॥५१८॥

। २४।१२।६।६।६ ।

अर्थ :—ये शलाका पुरुष तीर्थङ्कर, चक्रवर्ती, बलभद्र, नारायण और प्रतिशद् ( प्रति-नारायण ) नामोंसे प्रसिद्ध हैं । इनकी संख्या क्रमशः बारहकी दुगुनी (चौबीस), बारह, नौ (पदाय), नौ ( निधि ) और नौ ( रन्ध्र ) है ॥५१८॥

विशेषार्थ :—प्रत्येक उत्सर्पिणी-भवसर्पिणी कालमें चौबीस तीर्थंकर, बारह चक्रवर्ती, नौ बलभद्र, नौ नारायण और नौ प्रतिनारायण ये ६३ महापुरुष होते हैं । भरतक्षेत्र के इस अवसर्पिणी कालमें भी इतने ही हुए हैं, जिनके नाम आदि इस प्रकार हैं—

वर्तमान कालोन चौबीस तीर्थंकरोंके नाम—

उसह्मजियं च संभवमहिषांदण-सुमह-शाम-धेयं च ।

पठमप्पहं सुपासं, चण्डप्पह-मुप्फवत्त-सोयत्तए ॥५१९॥

सेयंस-वासुपुञ्जे, विमलान्ते य धम्य-संती य ।  
कुंक्षु-अर-मल्लि-सुख्य-गमि-गेमो-वास-बद्धमाणा य ॥५२०॥

पञ्चमह बडबोस-जिणे, तिस्थयरे तस्व भरह-सेसम्मि ।  
भग्वाणं भव-रक्सं, छिवते जाण-परसुहि ॥५२१॥

अर्थ :—भरतसंक्रमे उत्पन्न हुए १ ऋषभ, २ अजित, ३ सम्भव, ४ अभिनन्दन, ५ सुमति, ६ पद्मप्रभ, ७ सुपावर्ब, ८ चन्द्रप्रभ, ९ पुण्यदन्त, १० क्षीतल, ११ श्रेयांस, १२ वासुपूज्य, १३ विमल, १४ अनन्त, १५ धर्म, १६ शान्ति, १७ कुन्ध, १८ अर, १९ मल्लि, २० ( मुनि ) सुवत, २१ नमि, २२ नेमि, २३ पावर्ब और २४ बद्धमान इन चौबीस तीर्थक्षुरोंको नमस्कार करो । ये शानरूपी करकेसे भव्य जीवोंके संसाररूपी वृक्षको छेदते हैं ॥५१६-५२१॥

चक्रवर्तियोंके नाम—

भरहो सगरो मधवो, सनत्कुमारो य संति-कुंक्षु-अरा ।  
तह य 'सुभोमो पउमो, हरिजयसेणा' य बम्हदसो य ॥५२२॥

सुखकंड-पुढवि-मंडल-पसाहणा कित्ति-भरिय-'भुषणयला ।  
एदे बारस जावा, चक्रहृता भरह-सेसम्मि ॥५२३॥

अर्थ :—भरतसंक्रमे १ भरत, २ सगर, ३ मधवा, ४ सनत्कुमार, ५ शान्ति, ६ कुन्ध, ७ अर, ८ सुभोम, ९ पद्म, १० हरिधंश, ११ जयसेन और १२ ब्रह्मदत्त ये बारह चक्रवर्ती छह लक्ष-रूप पृथिवीमंडलको सिद्ध करनेवाले और कीर्तिसे सुवनसलकी मरने वाले उत्पन्न हुए हैं ॥५२२-५२३॥

बलदेवोंके नाम—

बिजयाचला सुधम्मो, सुप्पह-गामो सुबंसणो जंही ।  
तह णंदिमिल-रामा, पउमो जज होति बलदेवा ॥५२४॥

अर्थ :—( भरतसेनमें ) विजय, अचल, सुधर्म, सुप्रभ, सुदर्शन, नन्दी, नन्दिमित्र, राम और पद्म ये नौ वत्सदेव हुए हैं ॥५२४॥

नारायणोंके नाम—

तह य तिविठ्ठ-बुविठ्ठा, सयंभू पुरिसुत्तमो पुरिससीहो ।  
पुं'डरीय'-बल-नारायणा य किण्हो हवंसि जय विष्णू ॥५२५॥

अर्थ :—तथा त्रिपृष्ठ, द्विपृष्ठ, स्वयम्भू, पुरुषोत्तम, पुरुषसिंह, पुण्डरीक, दत्त, नारायण ( लक्ष्मण ) और कृष्ण ये नौ विष्णु ( नारायण ) हैं ॥५२५॥

प्रतिनारायणोंके नाम—

अस्सगोघो तह य जेसं मधुकंठभ तहो तिसुंभी-  
बलि-प्रहरण-रावणा य, जरसंघो जय य पडिससू ॥५२६॥

अर्थ :—अश्वघोष, तारक, मेरक, मधुकंठभ, निसुम्भ, बलि, प्रहरण, रावण और जरासंध, ये नौ प्रतिहस्त ( प्रतिनारायण ) हैं ॥५२६॥

रथोंके नाम—

भीमाबलि-जियससू, रथो 'बहसाणसो य 'सुपइठो ।  
तह अचल पुं'डरीयो, अजियंघर अजियजाभि-वेडासा ॥५२७॥

सकचइसूडो य एवे, एवकारस होति तिस्यवर-काले ।  
रहा रसह-कम्मा, अहम्म-बाबार-संसंगा ॥५२८॥

अर्थ :—तीर्थंकर कालमें भीमाबलि, जितसूत, रथ, विषवानल, सुप्रतिष्ठ, अचल, पुण्डरीक, अजितनन्धर, अजितनाभि, पीठ और सात्यकिसुत ये चारह रथ होते हैं । ये सब अघर्मपूर्ण व्यापारमें संलग्न होकर रौद्रकर्म किया करते हैं ॥५२७-५२८॥

तीर्थं कुरीके अवतरण-स्थान—

सर्वव्यसिद्धि-ठाणा, अवहण्णा उत्तह-धम्म-पहुदि-तिया ।

विजया जवण-अजिया, चंदवह बहुजयंताहु ॥५२६॥

अपराजिताभिहाणा, अर-गमि-मल्लोओ नेमिणाहो य ।

सुमई जयंत-ठाणा, आरण-सुमला य 'सुविहि-सीयलया ॥५३०॥

पुष्कोत्तराभिहाणा, अनंत-सेयंस-बड्ढमाण-जिणा ।

विमसो य 'सहाराणव-पाणव-कम्पा य सुव्वओ पासो ॥५३१॥

पार्श्वोक्तः — अन्तर्गतं श्री सुविहिताय श्री विजयाय

हेट्ठिम-मज्झिम-उक्करिम-नेवेक्कादागदा महासवा ।

संभव-सुपास-पउमा, महसुक्का' वासुपुज्ज-जिणो' ॥५३२॥

अर्थ :—ऋषभ और वर्षादिक ( धर्म, शान्ति, कुन्धु ) तीन तीर्थंकर सर्वार्थसिद्धिसे अवतीर्ण हुए थे; अभिनन्दन और अजितनाथ विजयसे; चन्द्रप्रभ वज्रयन्त्रसे; अर, नमि, मल्लि और नेमिनाथ अपराजित नामक विमानसे; सुमतिनाथ जयन्त विमानसे; पुष्पदन्त और क्षीतलनाथ कमलः धारण युगलसे; अनन्त, सेयांस और वर्धमान जिनेन्द्र पुष्कोत्तर विमानसे; विमल, सतार कल्पसे; ( मुनि ) सुव्रत और पार्वनाथ कमलः आनत एवं प्राणत कल्पसे; सम्भव, सुपावर्ष और वज्रप्रभ महापुरुष कमलः अधोद्वेयक, मध्यद्वेयक और ऊर्ध्वद्वेयकसे, तथा वासुपूज्य जिनेन्द्र महाशुक्र कल्पसे अवतीर्ण हुए थे ॥५२६-५३२॥

ऋषभादि चोवीस तीर्थंकरोंके जन्म स्थान, माता-पिता, जन्मतिथि एवं जन्मनक्षत्रोंके नाम—

जादो हु मन्वभाए, उसहो मरुवेवि-साभिराय्हि ।

वेसासिय-रावमीए, रावससे 'उत्तरासले ॥५३३॥

अर्थ :—ऋषभनाथ तीर्थंकर अयोध्या नगरीमें, मरुदेवी माता एवं नाभिराय पितासे चैत्र-कृष्ण नक्षत्रीको उत्तराषाढा नक्षत्रमें उत्पन्न हुए ॥५३३॥

१. व. व. ज. य. उ. मुहुर । २. व. सहाराणाव, ब. सहाराणदणाएव, द. सहाराणदणाएव ।

३. व. व. क. ज. य. उ. महसुक्के । ४. व. व. क. त. जिणा । ५. द. व. क. ज. य. उ. उत्तरासला ।

माघस्त शुक्ल-पक्षे, रोहिणि-रिक्लम्भि दसमि-विषसम्भि ।  
साकेदे अजिय-जिणो, जादो जियससु-विजयाहि ॥५३४॥

अर्थ :—अजित जिनेन्द्र साकेत नगरीमें, पिता जितक्षत्र एवं माता विजयासे, माघ शुक्ला दसमीके दिन रोहिणी नक्षत्रमें उत्पन्न हुए ॥५३४॥

सावट्टीए संसब्बेणो य जिहारिणा सुसेणाए ।  
मगासिर-मुणिमाए, जेट्ठा-रिक्लम्भि संजावो ॥५३५॥

अर्थ :—सम्भवदेव श्रावस्ती नगरीमें पिता जितारि और माता सुसेणासे मगधिरकी पूर्णिमाके दिन ज्येष्ठा नक्षत्रमें उत्पन्न हुए ॥५३५॥

माघस्त बारसीए, सिवम्भि पक्षे पुण्यसु-रिक्ले ।  
संवर-सिद्धत्याहि, साकेदे संवणो जावो ॥५३६॥

अर्थ :—अभिनन्दनस्वामी साकेतपुरीमें पिता संवर और माता सिद्धायासे माघ शुक्ला द्वादशीको पुनर्वसु नक्षत्रमें उत्पन्न हुए ॥५३६॥

मेघम्पहेण सुमहं, साकेद-पुरम्भि मंगलाए य ।  
सावण-सुक्केयारसि-विषसम्भि मघासु संजमिदो ॥५३७॥

अर्थ :—सुमतिनाथजी साकेतपुरीमें पिता मेघधम और माता मङ्गलासे श्रावण-शुक्ला एकादशीके दिन मघा नक्षत्रमें उत्पन्न हुए ॥५३७॥

अस्ससुव-किण्ह-तेरसि-विजम्भि पउमम्पहो य जित्तसु ।  
वरणेण सुसीमाए, कोसंबी-पुरवरे जावो ॥५३८॥

अर्थ :—पद्मप्रभने कोशाम्बी पुरीमें पिता धरस और माता सुसीमासे मगधोज कृष्ण त्रयोदशीके दिन चित्रा नक्षत्रमें जन्म लिया ॥५३८॥

वाराणसिए 'पुह्वो-सुपइठेहि सुपास-बेधो य ।

वेष्टुसस सुकक-बारसि-बिजम्मि 'जावो बिताहाए ॥५३६॥

अर्थ :—सुपासबंदेव वाराणसी ( बनारस ) नगरीमें पिता सुप्रतिष्ठ और माता पृथिवीसे ज्येष्ठ शुक्ला द्वादशीके दिन विशाला नक्षत्रमें उत्पन्न हुए ॥५३६॥

'बंदपहो बंदपुरे, जावो महसेण-सच्चिदमह 'आहि ।

पुस्तसस किण्ह-एयारसिए अणुराह-नक्षत्ते ॥५४०॥

अर्थ :—चन्द्रप्रभ जिनेन्द्र चन्द्रपुरीमें पिता महासेन और माता लक्ष्मीप्रती ( लक्ष्मणा ) से पौष कृष्ण एकादशीको अनुराधा नक्षत्रमें अवतीर्ण हुए ॥५४०॥

रामा-सुग्रीबेहि, काकंदीए य पुष्पयंत-जिजो ।

मगसिर-पाडिबाए, सिवाए मूलम्मि संजणिबो ॥५४१॥

अर्थ :—पुष्पदन्त जिनेन्द्र काकंदीमें पिता सुग्रीव और माता रामासे मगसिर शुक्ला प्रतिपदाको मूल नक्षत्रमें उत्पन्न हुए ॥५४१॥

माघसस बारसीए, पुन्नासादासु किण्ह-यक्षम्मि ।

सीमल-साभो विहरह-मंदारहि भहिले जावो ॥५४२॥

अर्थ :—श्रीतलनाथ स्वामी महुलपुर ( भद्रिकापुरी ) में पिता विहरह और माता नन्दासे माघके कृष्ण पक्षकी द्वादशीको पूर्वाषाढा नक्षत्रमें उत्पन्न हुए ॥५४२॥

सिंहपुरे सेयंतो, विण्ह-वरिवेण बेणु-देवोए ।

एककारसिए फगुण-सिद्ध-यक्षसे सवण-से जावो ॥५४३॥

अर्थ :—श्रीदासनाथ सिंहपुरीमें पिता विष्णु नरेन्द्र और माता बेणुदेवीसे फाल्गुन शुक्ला एकादशीको श्रवण नक्षत्रमें उत्पन्न हुए ॥५४३॥



घंषाए 'वासुपुञ्जो, वसुपुञ्ज-अरेसरेण विजयाए ।

कलगुण-सुवक-बजहसि-विणम्मि जादो बिसाहासु ॥५४४॥

अर्थ :—वासुपुञ्जजी चम्पापुरीमें पिता वसुपुञ्जराजा और माता विजयासे काल्गुन शुक्ला चतुर्दशीके दिन बिसाहा नक्षत्रमें उत्पन्न हुए ॥५४४॥

कंथिल्लपुरे विमलो, जादो कववम्म-'अयस्सामाहि ।

माघ-सिब-चोइसीए, णवत्तसे पुब्बभइपडे ॥५४५॥

अर्थ :—विमलनाथ कम्पितापुरीमें पिता कववर्मा और माता अयस्यामासे माघशुक्ला चतुर्दशीको पूर्वभाद्रपद नक्षत्रमें उत्पन्न हुए ॥५४५॥

जेहुत्त बारसीए, किण्हाए रेववीसु य अजंतो ।

साकेबपुरे जादो, सम्भजसा-सिहसेणेहि ॥५४६॥

अर्थ :—अनन्तनाथ ज्योध्यापुरीमें पिता सिंहसेन और माता संधययासे ज्येष्ठ-कृष्णा द्वादशीको रेवती नक्षत्रमें भवतीर्ण हुए ॥५४६॥

रयणपुरे वम्म-जिजो, भानु-गरिदेण 'सुववाए य ।

माघ-सिब-तेरसीए, जादो पुत्तम्मि णवत्तसे ॥५४७॥

अर्थ :—धर्मनाथ तीर्थंकर रत्नपुरमें पिता भानु नरेन्द्र और माता सुववासे माघशुक्ला त्रयोदशीको पुष्य नक्षत्रमें उत्पन्न हुए ॥५४७॥

जेहु-सिब-बारसीए, भरणी-रिक्खम्मि संतिजाहो य ।

हत्थिणउरम्मि 'जादो, अइराए बिस्ससेणेण ॥५४८॥

अर्थ :—शान्तिनाथजी हस्तिनापुरमें पिता विश्वसेन और माता ऐरासे ज्येष्ठ-शुक्ला द्वादशी को भरणी नक्षत्रमें उत्पन्न हुए ॥५४८॥

तत्थ च्चिय कुंभु-जिणो, सिरिमह-वेणीसु सूरसेणेन ।

बइसाह-माडिवाए, सिय-पक्खे किच्चियासु संजणिदो ॥५४६॥

अर्थ :—कुन्धुनाथ जिनेन्द्र हस्तिनापुरमें पिता सूर्यसेन और माता श्रीमती देवीसे वंशावृत्त पुत्रता प्रतिपदाको कृतिका-नक्षत्रमें उत्पन्न हुए ॥५४६॥

मगसिर-चोइसीए, सिय-पक्खे रोहिणीसु अर-देवो ।

नागपुरे संजणिदो, मिस्साए सुवस्सिणाव्विण्णैसु ॥५४७॥

अर्थ :—अरनाथजी हस्तिनापुरमें पिता सुदर्शन राजा और माता मित्रासे मगसिर-शुक्ला अश्विनीको रोहिणी नक्षत्रमें अवतीर्ण हुए ॥५४७॥

‘मिहिलाए मल्लि-जिणो, पत्तवोए ‘कुंभमिस्सवीसेहि ।

मगसिर-सुक्क-एक्कादसीए’ ‘अस्सिणीए संजावो ॥५४८॥

अर्थ :—मल्लिनाथजी मिथिलापुरीमें पिता कुम्भ और माता प्रभावतीसे मगसिर शुक्ला एकादशीको अश्विनी नक्षत्रमें उत्पन्न हुए ॥५४८॥

रायणिहे मुणिसुब्बय-देवो पउमा-सुमिस्स-राएहि ।

अस्सकुव-बारसीए, सिय-पक्खे सवण-भे जावो ॥५४९॥

अर्थ :—मुनिसुयतदेव राजपूछमें पिता सुमित्र राजा और माता पद्मासे आसोज-शुक्ला द्वादशीको श्रवण नक्षत्रमें उत्पन्न हुए ॥५४९॥

मिहिला-पुरिए जावो, विजय-वरिदेव वप्पिलाए य ।

अस्सिणि-रिक्खे’ आसाढ’-सुक्क-दसमीए वप्पिसामी ॥५५०॥

अर्थ :—नमिनाथ स्वामी मिथिलापुरीमें पिता विजयनरेन्द्र और माता वप्रिलासे आषाढ शुक्ला दशमीको अश्विनी नक्षत्रमें अवतीर्ण हुए ॥५५०॥

सउरी-पुरम्मि 'जाबो, सिवदेवीए समुद्रविजएण ।

बइसाह-तेरसीए, सिवाए चित्तासु नेमि-जिओ ॥५५४॥

अर्थ :—नेमि जिनेन्द्र क्षीरीपुरमें पिता समुद्रविजय और माता सिवदेवीसे वंशाश्व-शुक्ला त्रयोदशीको चित्रा नक्षत्रमें अवतीर्ण हुए ॥५५४॥

हयसेण-वम्मिसाहि<sup>१</sup>, जाबो<sup>२</sup> पाणारसीए पास-जिओ ।

पुत्तस्स बहुल-एक्कारसिए रिबल्ले विसाहाए ॥५५५॥

अर्थ :—पार्श्वनाथ जिनेन्द्र वाराणसी नगरीमें पिता अश्वसेन और माता वम्मिसा (वामा) से पौष-कृष्णा एकादशीको विशाखा नक्षत्रमें उत्पन्न हुए ॥५५५॥

मार्गशीर्षक - अश्वमेध और मुनिविराटपर्व, जी. १४५२-१४५३  
सिद्धस्थिराय-प्रियकारिणीहि<sup>३</sup> अयरोम्मि 'कुडले वीरो' ।

उत्तरफाल्गुनि-रिबल्ले, चेत्त-सिद तेरसीए उत्पण्णो ॥५५६॥

अर्थ :—वीर जिनेन्द्र कुण्डलपुरमें पिता सिद्धार्थ और माता प्रियकारिणी ( जिज्ञासा ) से वैश्व-शुक्ला त्रयोदशीको उत्तरफाल्गुनी नक्षत्रमें उत्पन्न हुए ॥५५६॥

चौबीस तीर्थङ्करोंके वंशोंका निर्देश—

इंदवज्जा -

धम्मर-कुंघू कुरुवंस-जावा, एणहोग-वंसेसु<sup>४</sup> वि वीर-पासा ।

सो सुव्वदो जावव-वंस-अम्मा, जेमी अ इव्वत्ताकु-कुलम्मि सेसा ॥५५७॥

अर्थ :—जयनाथ, अरनाथ और कुंघुनाथ कुरुवंशमें उत्पन्न हुए । महावीर और पार्श्वनाथ क्रमशः नाथ एवं उग्र वंशमें, मुनिसुव्रत और नेमिनाथ यादव ( हरि ) वंशमें तथा शेष सब तीर्थङ्कर इक्ष्वाकु कुलमें उत्पन्न हुए ॥५५७॥

१. क. ज. उ. जाहा । २. द. ज. य. वम्मिसाहि । ३. क. ज. य. व. जादा । ४. द.

कडली । ५. द. वीरा, ज. व. वीरा । ६. क. क. ज. य. उ. मुनिवीरपासो ।

चौबीस तीर्थङ्करोकी भक्ति करनेका फल—

इदवज्जा—

एवे जिणिदे भरहम्मि खेत्ते, भग्वाण पुण्णेहि कवावतारे ।

काएण वावा मणसा एमंता, सोक्खाइ मोक्खाइ सहंति भग्वा ॥५५८॥

अर्थ :—भग्य-जीवों के पुण्योदयसे भरतक्षेत्रमें अवतीर्ण हुए इन चौबीस तीर्थङ्करोको जो भग्यजीव भक्त-वज्ज-कायसे नमस्कार करते हैं, वे मोक्षसुख पाते हैं ॥५५८॥

घोडक<sup>१</sup>— ( बोधक वृत्तम् )

केवलशाण - <sup>२</sup>वणप्फइ - कवे,

तिस्थयरे चउबीस - जिणिदे<sup>३</sup> ।

जो अहिणंदइ भस्ति - पयसो,

बउभइ तस्स पुरंदर - पट्टो ॥५५९॥

अर्थ :—भक्तिमें प्रवृत्त होकर जो कोई भी केवलज्ञानरूप वनस्पतिके कन्द और तीर्थके प्रवर्तक चौबीस तीर्थङ्करोका अभिनन्दन करता है उसके इन्द्रका पट्ट बँधता है ॥५५९॥

[ तालिका नं० १२ पृष्ठ १५८-१५९ पर देखें ]



|    |            |                |            |            |           |         |       |          |                |               |
|----|------------|----------------|------------|------------|-----------|---------|-------|----------|----------------|---------------|
| १४ | अनन्तनाथ   | पुष्पोत्तर     | अयोध्या    | सिद्धसेन   | सर्वपत्नी | अष्ट    | कृष्ण | दादणी    | रेवणी          | इन्द्राकुबंजी |
| १५ | सर्वनाथ    | सर्वार्थसिद्धि | रत्नपुर    | भानु       | कुत्रता   | माष     | शुक्ल | नयोदनी   | पुष्प          | कुम्बंजी      |
| १६ | मरुतिनाथ   | "              | हस्तिनापुर | विभवसेन    | ऐरा       | ज्येष्ठ | "     | दादणी    | भरणी           | इन्द्राकुबंजी |
| १७ | कुम्भनाथ   | "              | "          | सूर्यसेन   | धोमती     | मैशाख   | "     | प्रतिपदा | कृतिका         | कुम्बंजी      |
| १८ | अरुनाथ     | अपरराजित       | "          | सुदर्शन    | मिषा      | मगसिर   | "     | चतुर्दशी | रोहिणी         | कुम्बंजी      |
| १९ | मणिनाथ     | "              | मिथिला     | कुम्भ      | प्रभाषणी  | "       | "     | एकादशी   | अश्विनी        | इन्द्राकुबंजी |
| २० | सुमिमुक्त  | अनन्य          | राजशुद्ध   | सुमित्र    | पद्म      | आशीर्ष  | "     | द्वादशी  | श्रवण          | यादवबंजी      |
| २१ | नमिनाथ     | अपरराजित       | मिथिला     | विजय       | नमिना     | प्राणव  | "     | दशमी     | पद्मवती        | इन्द्राकुबंजी |
| २२ | मैमिनाथ    | "              | शंतीपुर    | समृद्धविजय | शिवदेवी   | वैशाख   | "     | त्रयोदशी | विशाखा         | यादवबंजी      |
| २३ | पार्वतीनाथ | अशुद्ध         | शारंगपुरी  | अवसेन      | वामा      | वैश     | कृष्ण | एकादशी   | विशाखा         | उपवंजी        |
| २४ | महावीर     | पुष्पोत्तर     | कुम्भपुर   | सिद्धार्थ  | मिमकारिणी | चैत्र   | शुक्ल | नयोदनी   | उत्तराफाल्गुनी | नाथबंजी       |

चौबीस तीर्थक्षुरोंके जन्मान्तरालका प्रमाण—

सुसम-दुसमम्मि जामे, सेसे चउत्तीहि-सक्ख-पुब्बानि ।  
वास-त्तए अक्क-मासे, इमि-पक्खे उसह-उप्पत्ती ॥५६०॥

॥ पुब्ब व ८४ ल । व ३, मा ८, प १ ॥

अर्थ :—सुषमदुषमा नामक कालमें चौरासी लाख पूर्व, तीन वर्ष, आठ माह और एक पक्ष अवशेष रहने पर भगवान् ऋषभदेवका जन्म हुआ ॥५६०॥

पण्णास-कोटि-सक्ख, बारसह-पुब्ब-सक्ख-वास-कुवे ।  
माइम्मि उच्चहि-उच्चमा, उसहुप्पत्तीए अजिय-उप्पत्ती ॥५६१॥

॥ सा ५० को ल । पुब्ब घण १२ ल ॥

अर्थ :—ऋषभदेवकी उत्पत्तिके पश्चात् पचास लाख - करोड़ सागरोपम और बारह लाख वर्षपूर्वोंके व्यतीत हो जाने पर अजितनाथ तीर्थक्षुरका जन्म हुआ ॥५६१॥

अह तीस-कोटि-सक्खे, बारस-ह-पुब्ब-सक्ख-वास-कुवे ।  
मलिहम्मि उच्चहि-उच्चमे, अजियुप्पत्तीए संभक्खुप्पत्ती ॥५६२॥

॥ सा ३० को ल । घण पुब्ब १२ ल ॥

अर्थ :—अजितनाथकी उत्पत्तिके पश्चात् बारह लाख वर्ष पूर्व सहित तीस लाख करोड़ सागरोपमोंके निकल जाने पर सम्भवनाथकी उत्पत्ति हुई ॥५६२॥

दस-पुब्ब-सक्ख-संजुव-सायर-वस-कोटि-सक्ख-वोण्णिए ।  
संभव - उप्पत्तीए, अहिणंदन - देव - उप्पत्ती ॥५६३॥

॥ सा १० को ल । घण पुब्ब १० ल ॥

अर्थ :—सम्भव जिनेन्द्रकी उत्पत्तिके पश्चात् दस-लाख पूर्व सहित दस लाख करोड़ सागरोपमोंके व्यतीत हो जाने पर अमिनन्दननाथका जन्म हुआ ॥५६३॥

दस-पुब्ब-सक्ख-संजुव-सायर-वस-कोटि-सक्ख-पडिलित्ते ।  
वण्डन - उप्पत्तीए, सुमह-जिण्णिवस्स उप्पत्ती ॥५६४॥

। सा ६ को ल । घण पुव्व व १० ल ।

सर्ग :- अभिनन्दन स्वामीकी उत्पत्तिके पश्चात् दस लाख पूर्व सहित नौ लाख करोड़ सागरोपमोंके बीत जाने पर सुमति जिनेन्द्रकी उत्पत्ति हुई ॥५६५॥

दस-पुव्व-जक्ख-समहिण, सायर-कोडो-सहस्स-जबदीए ।

पविससे पवप्पह-जम्मो सुमइस्स जम्मादो ॥५६५॥

। सा ६०००० को । घण पुव्व व १० ल ।

सर्ग :- सुमतिनाथ तीर्थङ्करके जन्मके पश्चात् दस लाख पूर्व सहित मन्ने हजार करोड़ सागरोपमोंके व्यतीत हो जानेपर पद्मप्रभका जन्म हुआ ॥५६५॥

दस-पुव्व-सक्ख-समहिण, सायर-कोडो-सहस्स-जक्खम्मि ।

बोसीणे पवप्पह-संसारीए सुपासस्स ॥५६६॥

। सा ९००० को । घण पुव्व १० ल ।

सर्ग :- पद्मप्रभके जन्मके पश्चात् दस लाख पूर्व सहित नौ हजार करोड़ सागरोपमोंका अतिक्रमण हो जानेपर सुपावर्धनाथका जन्म हुआ ॥५६६॥

दस-पुव्व-जक्ख-संजुव-सायर-जक्ख-कोडि-सय-बिरामम्मि ।

चंवप्पह - उप्पसी, उप्पसीवो सुपासस्स ॥५६७॥

। सा ६०० को । पुव्व १० ल ।

सर्ग :- सुपावर्धनाथकी उत्पत्तिके पश्चात् दस लाख पूर्व सहित नौ सौ सागरोपमोंके बीत जाने पर चन्द्रप्रभ जिनेन्द्रकी उत्पत्ति हुई ॥५६७॥

अड-सक्ख-पुव्व-समहिण-सायर-कोडोण चउवि-विज्जेवे<sup>१</sup> ।

चंवप्पहुप्पसीवो<sup>२</sup>, उप्पसी पुप्फवंतस्स ॥५६८॥



। सा ६० को । धण पुण्य ५ = ल ।

अर्थ :—चन्द्रप्रभकी उत्पत्तिके आठ लाख पूर्व सहित नब्बे करोड़ सागरोपमोंके होनेपर भगवान् पुण्यदत्तकी उत्पत्ति हुई ॥५६६॥

इगि-पुण्य-सक्ख-समहिय-सामर-णव-कोडि-मेस-कासम्मि ।

गलियम्मि पुण्डरंतुप्पसीदो सोयलप्यत्तो ॥५६६॥

। सा ६ को । धण पुण्य १ ल ।

अर्थ :—पुण्यदत्तकी उत्पत्तिके अनन्तर एक लाख पूर्व सहित नौ करोड़ सागरोपमोंके होते जानेपर शीतलनाथका जन्म हुआ ॥५६६॥

इगि-कोडि-पण्ण-सक्खा-सुम्भोस-सहस्स-वास-मेसाए ।

अवभहिएणं जलनिहि-उचमसयेणं विहीणाए ॥५७०॥

बोलोणाए सामर-कोडीए पुण्य-सक्ख-भुत्ताए ।

सोयल-संभूदीदो, सेयंस-जिजस्स संभूदी ॥५७१॥

। सा को १ । पुण्य ५ ल । रिण सागरोपम १०० । व १५०२६००० ।

अर्थ :—शीतलनाथकी उत्पत्तिके पश्चात् नौ सागरोपम और एक करोड़ पचास लाख छब्बीस हजार वर्ष कम एक लाख पूर्व सहित करोड़ सागरोपमोंके प्रतिक्रान्त हो जानेपर श्रेयांस जिनेन्द्र उत्पन्न हुए ॥५७०-५७१॥

बारस-हव-इगि-सक्ख-अवहियाए वास-उवहि-भाजेषु ।

अउवज्जेसु गवेसु, सेयंस-भवावु वासुपुज्ज-भवो ॥५७२॥

। सा ५४ वत्स १२ ल ।

अर्थ :—श्रेयांसनाथकी उत्पत्तिके बाद बारह लाख वर्ष सहित जीवन सागरोपमोंके व्यतीत हो जाने पर वासुपूज्य तीर्थकरका जन्म हुआ ॥५७२॥

तीसोबहीण बिरसे, बारस-हब-बरिस-सबस-अहियार्य ।

बाजेअ वासुपुञ्जुप्पसीवो<sup>१</sup> विमल-उप्पसी ॥५७३॥

। सा ३० वस्स १२ ल ।

अर्थ :—वासुपूज्यकी उत्पत्तिके अनन्तर बारह लाख वर्ष अधिक तीस सागरोपमोंके बीतने-पर विमलनाथकी उत्पत्ति जाननी चाहिए ॥५७३॥

उबहि-उबमाण-जबके, तिय-हब-बह-सबस-वास-अदिरितो<sup>२</sup> ।

बोलीणे विमल-जिणुप्पसीवो<sup>३</sup> अह अजंत-उप्पसी ॥५७४॥

। सा ६ वस्स ३० ल ।

अर्थ :—विमल जिनेन्द्रकी उत्पत्तिके बाद तीस लाख वर्ष अधिक ती सागरोपमोंके व्यतीत हो जानेपर अनन्तनाथ उत्पन्न हुए ॥५७४॥

बीस-हब-वास-सबस-अहिएसुं चउसु उबहि-उबमेसुं ।

बिरसेसु धम्म-जम्मो, अजंत-साधित्त जम्मावो ॥५७५॥

। सा ४ वस्स २० ल ।

अर्थ :—अनन्तनाथ स्वामीके जन्मके पश्चात् बीस लाख वर्ष अधिक चार सागरोपमोंके व्यतीत हो जानेपर धर्मनाथ प्रभुने जन्म लिया ॥५७५॥

उबहि-उबमाण-तिवए, बोलीणे जवय-सबस-वास-बुदे ।

पावोण<sup>४</sup>-यस्स-रहिबो, संति-भवो<sup>५</sup> धम्म-भवदो य ॥५७६॥

सा ६ वस्स घणु ६ ज रिण प ड़े ।

अर्थ :—धर्मनाथकी उत्पत्तिके पश्चात् पौनःपत्य क्रम और ती लाख वर्ष सहित तीन सागरोपमोंके व्यतीत हो जाने पर शान्तिनाथ भगवान्ने जन्म लिया ॥५७६॥

१. द. वासुपुञ्जुप्पसीण ।

२. द. व. क. अ. उ. अदिरितो ।

३. द. जिणुप्पसीवो ।

४. द. पावोण ।

५. द. व. क. अ. व. उ. भवो ।

पल्लवो घोसीणे, पञ्च-वास-सहस्रमाण'-अविरित्ते ।

कुङ्कु-जिणे-संजणणं, जणणादो संति-माहस्स ॥५७७॥

। प ३ घण वस्स ५००० ।

अर्थ :- आन्तिनाथके जन्मके पश्चात् पाँच हजार वर्ष अधिक आधे पल्लवके बीतनेपर कुन्धुनाथ जिनेन्द्र उत्पन्न हुए ॥५७७॥

एककरस-सहस्रसूणिय-कोटि-सहस्रसूण-पल्ल-पादस्मि ।

विरवस्मि अर-जिणिषो, कुङ्कुप्पसीए उप्पण्णो ॥५७८॥

आर्गवर्धन :- आर्गवर्ध की पुनर्विनिर्वाणत की महारत्न

। प ३ रिण वस्स को १००० रिण वस्स ११००० ।

अर्थ :- कुन्धुनाथकी उत्पत्तिके पश्चात् ग्यारह हजार कम एक हजार करोड़ वर्षसे रहित पाव पल्लवके व्यतीत हो जाने पर अर जिनेन्द्र उत्पन्न हुए ॥५७८॥

उत्तसीस-सहस्रसूहिय-कोटि-सहस्रस्मि वस्ससीवस्मि ।

अर-जिण-उप्पसीवो, उप्पसी मल्लि-माहस्स ॥५७९॥

। वस्स को १००० घण व २९००० ।

अर्थ :- अर जिनेन्द्रकी उत्पत्तिके बाद उत्तसीस हजार अधिक एक हजार करोड़ वर्षोंके बीत जाने पर मल्लिनाथकी जन्म हुआ ॥५७९॥

पञ्चवीस-सहस्रसूहिय-वाव-हव-सहस्रवव-वासवोक्खेदे ।

मल्लि-जिणुम्भूदीवो, उम्भूदी सुववय-जिणस्स ॥५८०॥

। वा ५४२५००० ।

अर्थ :- मल्लि-जिनेन्द्रकी उत्पत्तिके पश्चात् पञ्चवीस हजार अधिक भी से पुरित छह ( चीवन ) लाख वर्षोंके बीत जाने पर मुनिसुधत जिनेन्द्रकी उत्पत्ति हुई ॥५८०॥

बीस-सहस्रम्भहिया, छल्लस-पमाण-वासबोच्छेवे ।

मुस्य-उप्पसीबो, उप्पसी नेमि-जिनिबस्स ॥५८१॥

मार्गदर्शक :—आचार्य और सुविदितनाथ जी महाराज  
। वा ६२०००० ।

अर्थ :—मुनिमुत्तनाथकी उत्पत्तिके पश्चात् बीस हजार अधिक छह लाख वर्ष प्रमाण  
काल व्यतीत हो जाने पर नेमि जिनेन्द्रका जन्म हुआ ॥५८१॥

पण-सक्खेसु गवेसुं, पण्य-सहस्राहिएसु वासाणं ।

नेमिणाहुप्पसीबो, उप्पसी नेमि-णाहस्स ॥५८२॥

। वा ५०६००० ।

अर्थ :—नेमिनाथकी उत्पत्तिके पश्चात् नौ हजार अधिक पाँच लाख वर्ष व्यतीत हो जाने  
पर नेमिनाथकी उत्पत्ति हुई ॥५८२॥

पण्णासाहिय-सस्सय-अलसीदि-सहस्र-वस्स-परिअब्बे ।

नेमि-जिणुप्पसीबो, उप्पसी पास-णाहस्स ॥५८३॥

। वा ८४६५० ।

अर्थ :—नेमिनाथ तीर्थंकरकी उत्पत्तिके पश्चात् चौरासी हजार छह सौ पचास वर्षोंके  
व्यतीत हो जाने पर पार्श्वनाथकी उत्पत्ति हुई ॥५८३॥

अट्ठत्तरि-अहियाए, वे-सव-परिमाण-वास-अविरित्ते' ।

पास-जिणुप्पसीबो, उप्पसी बद्धमाणस्स ॥५८४॥

। वा २७८ ।

अर्थ :—भगवान् पार्श्वनाथकी उत्पत्तिके पश्चात् दो सौ अठत्तर वर्ष व्यतीत हो जाने पर  
वर्द्धमान तीर्थंकरका जन्म हुआ ॥५८४॥

हृदयज्जा ( उपजाति )

एवं जिगणं जणयंतरालप्यमाणमार्यवकरं जणस्स ।

कम्मगसाहं<sup>१</sup> विह्वविद्वुण, उग्घाडए मोक्खपुरी-कपाटं ॥५८५॥

॥ उत्पत्तिव्यंतरं समत्तं ॥

अर्थ :—लोगोंकी आनन्दित करने वाली तीर्थक्षेत्रोंके अन्तरालकालका यह प्रमाण उन ( भग्नों ) की कर्मरूपी शर्णलाकी नष्ट करके मोक्षपुरीके कपाटको उद्घाटित करता है ॥५८५॥

॥ उत्पत्तिके अन्तरालकालका कथन समाप्त हुआ ॥

क्षुधभादि तीर्थक्षेत्रोंका आयु प्रमाण—

उसहावि-वससु आऊ, खुलसीदी तह<sup>२</sup> बहत्तरी सट्ठी ।

पण्णास-सास-तीसा, बीस वस-दु-इनि-सक्ख-मुक्खाइ<sup>३</sup> ॥५८६॥

आदिबिणे पुब्ब ८४ त । अजिय पुब्ब ७२ त ।

संभद पुब्ब ६० त । अहिणंदण पुब्ब ५० त ।

सुमद पुब्ब ४० त । पउमप्यह पुब्ब ३० त ।

मुपासणाह पुब्ब २० त । चंदणह पुब्ब १० त ।

पुप्फयंत पुब्ब २ त । सीयस पुब्ब १ त ।

अर्थ :—क्षुधभादिक दस तीर्थक्षेत्रोंकी आयु क्रमशः चौरासी लाख पूर्व, बहत्तर लाख पूर्व, साठ लाख पूर्व, पचास लाख पूर्व, चासीस लाख पूर्व, तीसलाख पूर्व, बीस लाख पूर्व, दस लाख पूर्व, दो लाख पूर्व और एक लाख पूर्व प्रमाण थी ॥५८६॥

ततो य वरिस-सक्खं, खुलसीदी तह<sup>४</sup> बहत्तरी सट्ठी ।

तीस-दस-एक्कमाऊ, सेयंस-प्यहुवि-एक्कस्स ॥५८७॥

१. व. क. ज. घ. ङ. कम्मणिगसाहं । २. ६. विह्वविद्वुण उग्घोअ मोक्खस्स, ३. क. ज. घ ङ. विह्वविद्वुण उग्घाअ-मोक्खस्स । ३. ६. ज. व. विह्वत्तरी । ४. ६. विह्वत्तरी, ज. व. वत्तरी, ७. बहत्तरी ।

सेयस-वरिस ८४ ल । वासुपुज्ज वस्स ७२ ल ।

विमल-वस्स ६० ल । अणस वस्स ३० ल ।

धम्म वस्स १० ल । संति वस्स १ ल ।

अर्थ :— इसके आगे श्रेयांसनाथको आदि लेकर छह तीर्थक्षुरोंकी आयु क्रमशः बीरासी लाख, बहत्तर लाख, साठ लाख, तीस लाख, दस लाख और एक लाख वर्ष प्रमाण थी ॥५८७॥

आदिपुर्वाहक :— अस्मान् की क्षुरेदिनामर की पञ्चसप्त

तसो वरिस-सहस्रा, पणणउवो चवुरसीदि वणवण ।

सोस-वस-एकमाऊ, कुंधु-जिण-पहुवि-एकवस्स ॥५८८॥

कुंधुणाह वरिस ६५००० । अर वरिस ८४००० । मस्ति वरिस ५५००० ।

सुब्बय वरिस ३०००० । गमि वरिस १०००० । जेमिणाह वरिस १००० ।

अर्थ :— इसके आगे कुन्धुनाथको आदि लेकर छह तीर्थक्षुरोंकी आयु क्रमशः पंचानवे हजार, बीरासी हजार, पचपन हजार, तीस हजार, दस हजार और एक हजार वर्षप्रमाण थी ॥५८८॥

वास-सहमेकमाऊ, वास-जिणेवस्स होइ नियमेण ।

सिरि-वड्ढमाण-माऊ, बाहसरि-वस्स-परिमाणो ॥५८९॥

वास-जिणे वस्स १०० । वीर-जिणेवस्स वस्स ७२ ।

। माऊ-समसा ।

अर्थ :— अगवान् पास्वनाथकी आयु नियमसे सौ वर्ष और वर्धमानजिनेन्द्रकी आयु बहत्तर वर्ष प्रमाण थी ॥५८९॥

॥ जिनेन्द्रोंकी आयुका कथन समाप्त हुआ ॥

वृषआदि तीर्थक्षुरोंका कुमारकाल—

पढमे कुमार-कालो, जिण-रिसहे सोस-पुब्ब-सवसाणि ।

अजियादि-अर-जिणत्ते, सण-सण-आजस्स पादेगो ॥५९०॥

उसह पुष्प २० ल । अजिम पुष्प १८ ल । संभव पुष्प १५ ल । ग्रहिणंदण  
पुष्प १२५०००० । सुमह पुष्प १० ल । पउमण्ह पुष्प ७५००००<sup>१</sup> । सुपास  
पुष्प ५ ल । चंदण्ह पुष्प २५०००० । पुष्फयंत पुष्प ३०००० । सोयल  
पुष्प २५००० । सेयंस वस्स २१ ल । वासुपुज्ज वस्स १८ ल । विमल  
वस्स १५ ल । वणंत वस्स ७५०००० । घम्म वस्स २५०००० । संति  
वस्स २५००० । कुंषु वस्स २३७५० । अरणाह वस्स २१००० ।

वर्ष :- प्रथम जिनेन्द्रका कुमारकाल बीस लाख पूर्व और अजितनाथको आदि लेकर  
अर जिनेन्द्र पर्यन्त अपनी-अपनी आयुके चतुर्थभाग प्रमाण कुमार-काल या ॥५६०॥

तत्तो कुमार-कालो, एग<sup>२</sup>-सयं सग-सहस्स-पंच-सया ।  
पञ्चवीस-सयं ति-सयं, तीस तीस च छक्कस्स ॥५६१॥

मल्लिणाह १००<sup>३</sup> । मुणिसुव्वय ७५०० । लमि २५०० । जेमि ३०० ।  
वासणाह ३० । वीरणाह ३० ।

॥ एवं कुमार-कालो समप्तो<sup>४</sup> ॥

वर्ष :- इसके भागे छह तीर्थक्षुरोंका कुमारकाल क्रमशः एक सौ, सात हजार पाँच सौ  
( ७५०० ), पञ्चवीस सौ, तीन सौ, तीस और तीस वर्ष प्रमाण या ॥५६१॥

विशेषार्थ :- गाथामें मल्लिनाथका कुमारकाल १०० वर्ष मात्र कहा गया है । इसका  
वर्ष है कि उन्होंने १०० वर्षकी आयुमें ही दीक्षा ग्रहण कर ली थी । दीक्षाके बाद वे ६ दिन छयस्थ  
अवस्थामें और ५४८६६ वर्ष ११ माह २४ दिन कैबली अवस्थामें रहे । इन सबका योग ( १०० +  
५४८६६ वर्ष ११ माह, २४ दिन = ) ५५००० वर्ष होता है और उनकी आयु भी इतनी ही थी ।

॥ इस प्रकार कुमार-काल समाप्त हुआ ॥

ऋषभादि तीर्थकरोके शरीरका उत्सेध—

पञ्चसय-धनु-प्रमाणो, उत्सह-जिर्बेयस्स होदि उच्छेद्यो ।  
तसो पञ्चासृणा, निघमेण पुष्कवंत-वेरंते ॥५६२॥

उ ५०० । अ ४५० । सं ४०० । अ ३५० । सु ३०० । प २५० ।

सु २०० । चंद १५० । पुष्क १०० ।

अर्थ :—भगवान् ऋषभनाथके शरीरको ऊँचाई पाँचसौ धनुष प्रमाण थी । इसके आगे पुण्ड्रवन्त पर्यन्त जिनेन्द्रोंके शरीरको ऊँचाई नियमसे पचास-पचास धनुष कम होती गई है ॥५६२॥

एसो नाथ अणंतं, दस-दस-कोवंद-मेघ-परिहीणो ।  
तसो नेमि जिणंतं, पण-परण-बावेहि परिहीणो ॥५६३॥

सी ६० । से ८० । बा ७० । वि ६० । अ ५० । घ ४५ । सं ४० ।

कुं ३५ । अर ३० । म २५ । मुध्व २० । ए १५ । णे १० ।

अर्थ :—इसके आगे अनन्तनाथ पर्यन्त दस-दस धनुष और फिर नेमिनाथ पर्यन्त पाँच-पाँच धनुष उत्सेध कम होता गया है ॥५६३॥

जघ हत्था पास-जिणे<sup>१</sup>, सग हत्था बद्धमाज-जाम्भिम ।  
एसो तित्थयरानं, सरीर-वर्णं पक्ष्मेमो ॥५६४॥

पा ह ६ । वीर ह ७ ।

॥ उच्छेद्यो समत्तो<sup>२</sup> ॥

अर्थ :—भगवान् पाण्डवनाथके शरीरका उत्सेध नौ हाथ और वर्धमान स्वामीके शरीरका उत्सेध सात हाथ प्रमाण था । अब तीर्थकुरोंके शरीरके वर्ण ( रंग ) का कथन करता हूँ ॥५६४॥

॥ उत्सेधका कथन समाप्त हुआ ॥



ऋषभादि तीर्थं कुरोंका शरीर-वर्ण—

‘संस्पृह-पुष्पवंता’, कुर्वेयु-तुसार-हार-संकासा ।  
 नीला-सुपास-पासा, सुखय-नेमी सनीर-घण-वक्त्रा ॥५६५॥  
 विह्वल-समाण-वेहा, पञ्चमपह-वासुपुञ्ज-विषणाहा’ ।  
 सेसाण जिघवरानं, काया चामीपरायारा ॥५६६॥

॥ शरीर-वर्णनं\* गर्व ॥

सर्ग :—भगवान् चन्द्रप्रभ और पुष्पदन्त कुन्दपुष्प, चन्द्रमा, वर्क तथा ( मुक्ता ) हार सहस्र  
 धवल वर्णके थे । सुपाश्वर्णनाथ और पाश्वर्णनाथ नीलवर्णके थे । मुनिसुखतनाथ और नेमिनाथ जलयुक्त  
 बादल ( मेघ ) के वर्ण सहस्र अर्थात् श्याम वर्णके तथा पञ्चप्रभ एवं वासुपुञ्ज जिनेन्द्रके शरीर प्रवास  
 सहस्र रक्तवर्णके थे । मेघ ( सोम ) तीर्थं कुरोंके शरीर वर्ण सहस्र ( पीठ ) वर्णके थे ॥५६५-५६६॥

॥ शरीरके वर्णका कथन समाप्त हुआ ॥

ऋषभादि तीर्थं कुरोंका राज्यकाल—

सेसट्टि-पुब्ब-लक्खा, पढम-जिणे रक्ख-काल-परिमाणं ।  
 तेवणा-पुठव-लक्खा, अजिबे पुब्बंग-संसुत्ता ॥५६७॥

। पुब्ब ६३ त । अजि ५३ त पुब्बंग १ ।

सर्ग :—आदि जिनेन्द्रके राज्यकालका प्रमाण तिरैसठ लाख पूर्व और अजित जिनेन्द्रके  
 राज्यकालका प्रमाण एक पूर्वंग सहित तिरैपन लाख पूर्व था ॥५६७॥

अउदाल-यमाणाहं, संभब-सामिस्स पुब्ब-सवत्ताइं ।  
 अउ-पुब्बंग-अवाइं, जिहिहु सव्व-वरिसीहि ॥५६८॥

। पुब्ब ४४ त । पूर्वंग ४ ।



प्रश्न :—सुपाश्वनाथ स्वामीका राज्यकाल बीस पूर्वाब्द सहित चौदह साल पूर्व प्रमाण जानता चाहिये ॥६०२॥

पञ्चास-सहस्राह्रिय-स्रुलबल-पमाण-वरिस-पञ्चासि ।

पुष्पंगा वरुषीसा जंजणपह-विज्ञानविद्वत् ॥५०३॥

। पूर्व ६५००० । पूर्वा २४ ।

समय :—चन्द्रप्रभ जिनेन्द्रके राज्यकालका प्रमाण यह नाह पचास हजार वर्ष पूर्व और चौबीस पूर्वार्द्ध है ॥६०३॥

अष्टवीस-पठ्य-अंगकभहियं सुविहिस्स पठ्य-सकसद्धं ।

सीयल-बेबस्स तहा, कोवलथं पृथ्व-सबलदं ॥६०४॥

। पृष्ठ ५०००० अंग २८ । पृष्ठ ५०००० ।

अर्थ :—मुविधिनाथ ( पुष्पदन्त ) स्वामीका राज्यकाल अट्ठाईस पूर्वाङ्क अधिक अर्ध लाख एवं और भीतलनाथका राज्यकाल मात्र अर्धलाख पुर्वे प्रमाण था ॥६०४॥

सैयंत-जिणैसत्स य, 'बुवात्त-संत्ताणि वात्त-सत्तत्ताणि ।

षष्ठमं त्रिंश पश्चिहिरिया, रज्जुतिरो वातुपुञ्जेन ॥६०५॥

। वस्तुस्थिति ४२ न ।

सप्त :—सप्तवान् श्रेयसांसाधक राज्यकाल न्यासीस लाख वर्ष प्रमाण था । वासुपूज्य जिनेन्द्रने पहिले ही राज्यसदसी छोड दी थी ॥६०५॥

विमलस्य तोस-सकला, अर्धतथास्त-पुं-स-सकला ।

लक्ष्मा पण्यपमज्जा, वासान्नं धम्म-सामित्तं ॥६०६॥

। वासाणि ३० ल । कस्तू १५ ल । वस्त्र ५ ल ।

वर्ष :- विमलनाथका राज्यकाल तीस लाख, अनन्तनाथका पन्नाह लाख और धर्मनाथ स्वामीका पचास लाख वर्ष प्रमाण था ॥६०६॥

सकलस्त पाद-माणं, संति-जिणेशस्त मंडली-सत्तं ।  
तस्त य चककवरत्तो, तत्तियमेत्ताणि वत्ताणि ॥६०७॥

। २५००० । २५००० ।

वर्ष :- शान्तिनाथ जिनेन्द्रका मण्डलेशत्व-काल एक लाखके चतुर्थीण प्रमाण और चक्र-वर्तिस्व-काल भी इतने ही वर्ष प्रमाण था ॥६०७॥

तेवीस सहस्साइं, सग-सय-पाणास मंडली-सत्तं ।  
कुंघु-जिणिदस्त तहा, ताइं चिय चककवट्टित्ते ॥६०८॥

। २३७५० । २३७५० ।

वर्ष :- कुन्धु जिनेन्द्र तीस हजार सातसौ पचास वर्ष तक मण्डलेश और फिर इतने ही वर्ष प्रमाण चक्रवर्ती रहे ॥६०८॥

इगिबीस सहस्साइं, वत्ताइं होंति मंडली-सत्ते ।  
अद-णाभम्मि जिणिवे, ताइं चिय चककवट्टित्ते ॥६०९॥

। २१००० । २१००० ।

वर्ष :- अरनाथ जिनेन्द्रके इक्कीस हजार वर्ष मण्डलेश अवस्थामें और इतने ही वर्ष चक्रवर्तिस्वमें व्यतीत हुए ॥६०९॥

अ हि रज्जं मल्लि-जिणे, पण्णारस-पण-सहस्स-वासाइं ।  
सुब्बय-णमिणाहाणं, णेमिस्सियस्स<sup>१</sup> अ हि रज्जं ॥६१०॥

। मल्लि० । मुणिसुब्बय १५००० । णमि ५००० । णेमि० । पाम० । वीर० ।

[ तालिका नं० १३ पृष्ठ १७४-१७५ पर देखें ]

तालिका : १३

ऋषभनाथ चौबीस तीर्थक्षुरोंके जन्मान्तर, आयु,

| क्रमांक | नाम         | जन्मान्तर - काल                                   | आयु          |
|---------|-------------|---------------------------------------------------|--------------|
|         |             | तृतीयकालमें ८४ सा. पू. ३ व ८३ मा. शेष०            |              |
| १       | ऋषभनाथ      | ५० सा० करोड़ सा० + १२ सा० पूर्व वर्ष              | ८४ लाख पूर्व |
| २       | अजितनाथ     | ३० " " " + १२ " " "                               | ७२ " "       |
| ३       | सम्भवनाथ    | १० " " " + १० " " "                               | ६० " "       |
| ४       | अभिनन्दन०   | ६ " " " + १० " " "                                | ५० " "       |
| ५       | सुमतिनाथ    | ९० हजार क० " + १० " " "                           | ४० " "       |
| ६       | पद्मप्रभ    | ६००० करोड़ " + १० " " "                           | ३० " "       |
| ७       | मुपाख्यनाथ  | ६०० " " + १० " " "                                | २० " "       |
| ८       | चन्द्रप्रभ  | ६० " " + १० " " "                                 | १० " "       |
| ९       | पुष्पदन्त   | ६ " " + १ " " "                                   | २ " "        |
| १०      | शीतलनाथ     | (१को.सा + १सा.पू.) -- (१०० सा. १५०२६०००वर्ष)      | १ " "        |
| ११      | श्रेयांसनाथ | ५४ सागर + १२ लाख वर्ष                             | ८४ लाख वर्ष  |
| १२      | वासुपूज्य   | ३० " + १२ लाख वर्ष                                | ७२ "         |
| १३      | विमलनाथ     | ९ " + १२ " "                                      | ६० "         |
| १४      | अनन्तनाथ    | ४ " + २० " "                                      | ३० "         |
| १५      | धर्मनाथ     | ३ सागर ६ सा. वर्ष — ३ पत्य                        | १० "         |
| १६      | शान्तिनाथ   | ३ पत्य + ५००० वर्ष                                | १ "          |
| १७      | कुन्धुनाथ   | ३ पत्य — ६६६६६६६०००                               | ६५००० वर्ष   |
| १८      | अरनाथ       | १०००००२९००० वर्ष                                  | ८४००० "      |
| १९      | मल्लिनाथ    | ५४२५००० वर्ष                                      | ५५००० "      |
| २०      | मुनिसुव्रत  | ६२०००० वर्ष                                       | ३०००० "      |
| २१      | नमिनाथ      | ५०६००० वर्ष                                       | १०००० "      |
| २२      | नेमिनाथ     | ८४६५० वर्ष                                        | १००० "       |
| २३      | पापवंनाथ    | २७८ वर्ष                                          | १०० "        |
| २४      | महावीर      | चतुर्थकालमें ७५ वर्ष, ८३ शेष रहने पर उत्पन्न हुए। | ७२ "         |

कुमारकाल, उत्सेध, वर्ण, राज्यकाल एवं चिह्न निर्देश—

गाथा : ५६०-६१२

| कुमार - काल  | उत्सेध   | वर्ण       | राज्य - काल                    | चिह्न     |
|--------------|----------|------------|--------------------------------|-----------|
| २० लाख पूर्व | ५०० घनुष | स्वर्ण     | ६३ लाख पूर्व                   | बेल       |
| १८ " "       | ४५० " "  | " "        | ५३ " + १ पूर्वांग              | गज        |
| १५ " "       | ४०० " "  | " "        | ४४ " + ४ " "                   | अश्व      |
| १२३ " "      | ३५० " "  | " "        | ३६३ " + ८ " "                  | बन्दर     |
| १० " "       | ३०० " "  | " "        | २६ " + १० " "                  | शकुवा     |
| ७३ " "       | २५० " "  | रक्त       | २१३ " + १६ " "                 | कमल       |
| ५ " "        | २०० " "  | नील        | १४ " - २० " "                  | नम्हावर्त |
| २३ " "       | १५० " "  | प्रबल      | ६३ " + २४ " "                  | अधेचन्द्र |
| ५०००० " "    | १०० " "  | " "        | ३ " + २८ " "                   | मगर       |
| २५००० " "    | ६० " "   | स्वर्ण     | ५०००० पूर्व                    | स्वस्तिक  |
| २१००००० वर्ष | ८० " "   | " "        | ४२००००० वर्ष                   | गेंडा     |
| १८००००० " "  | ७० " "   | रक्त       | ०                              | भैंसा     |
| १५००००० " "  | ६० " "   | स्वर्ण     | ३०००००० वर्ष                   | लूकर      |
| ७३०००० " "   | ५० " "   | " "        | १५००००० " "                    | सैंही     |
| २५०००० " "   | ४५ " "   | " "        | ५००००० " "                     | वध        |
| २५००० " "    | ४० " "   | " "        | सम्भलेण २५००० वर्ष, चक्र २५००० | हरिण      |
| २३७५० " "    | ३५ " "   | " "        | " २३७५० वर्ष, " २३७५०          | छाग       |
| २१००० " "    | ३० " "   | " "        | " २१००० वर्ष, " २१०००          | मत्स्य    |
| १०० " "      | २५ " "   | " "        | ०                              | कलश       |
| ७५०० " "     | २० " "   | गहिरा नीला | १५००० वर्ष                     | कुर्म     |
| २५०० " "     | १५ " "   | स्वर्ण     | ५००० " "                       | उत्पल     |
| ३०० " "      | १० " "   | गहिरा नीला | ०                              | वाह्व     |
| ३० " "       | ६ हाथ    | नील        | ०                              | सर्प      |
| ३० " "       | ७ हाथ    | स्वर्ण     | ०                              | सिंह      |

अर्थ :-मल्लि जिनेन्द्रने राज्य नहीं किया । मुनिसुवत और नभिनाथका राज्यकाल क्रमशः पन्द्रह हजार और पाँच हजार वर्ष प्रमाण था । नेमिनाथ, पापर्वनाथ और वीर प्रभुने राज्य नहीं किया ॥६१०॥

ऋषभादि चौबीस तीर्थंकरोंके चिह्न —

रिसहावीणं चिह्नं, गोबदि-गय-सुरय-बाणरा कोका ।  
पउमं पंदावत्तं, अद्धससि-मयर-सधियाइं पि ॥६११॥

संखं महिस-बराहा', 'साहो-बज्जाणि हरिण-सुगला' य ।  
तगरकुसुमा य कलसा, कुम्मुप्पस-संख-अहि-सिहा ॥६१२॥

अर्थ :-बैल, गज, अश्व, बन्दर, चकवा, कमल, नन्दावर्त, अर्धचन्द्र, मगर, स्वस्तिक, गेंडा, मँसा, शूकर, सेहो, वज्र, हरिण, साग, तगरकुसुम ( मत्स्य ), कलश, कूर्म, उत्पल (नीलकमल), संख, सर्प और सिंह ये क्रमशः ऋषभादिक चौबीस तीर्थंकरोंके चिह्न हैं ॥६११-६१२॥

नोट :-गाथा ५६० से ६१२ पर्यन्तकी मूलसंहृतियोंके अर्थ तालिका नं० १३ द्वारा स्पष्ट किये गये हैं, जो पृष्ठ १७४-१७५ पर देखें ।

राज्य पद निर्देश —

अर-कुंघु-संति-नामा, तिल्लयरा चक्कवट्टिणो' भूहा ।  
सेसा अनुपम-सुज्जवल-साहिय-रिपु'-मंडला आवा ॥६१३॥

अर्थ :-अरनाथ, कुन्धुनाथ और नान्तिनाथ नामके तीन तीर्थंकर चक्रवर्ती हुए थे । जेप तीर्थंकर अपने अनुपम बाहुबलसे रिपु वर्गको सिद्ध करनेवाले ( माण्डलिक राजा ) हुए ॥६१३॥

चौबीसों तीर्थंकरोंको वैराग्य उत्पत्तिका कारण —

संति-कुग-वासुपुज्जा, सुमह-कुगं 'सुज्जवावि-पंच-जिणा ।  
णिच-पच्छिन्न-अम्मानं, उवओगा' जाव-वेरगा ॥६१४॥

अर्थ :- आन्तिनाथ, कुण्डुनाथ, वासुपूज्य, सुमतिनाथ एवं पद्मप्रभु ये पाँच ( तीर्थंकर ) तथा सुवतादिक ( मुनिमुव्रत, नमिनाथ, नेमिनाथ, पार्श्वनाथ एवं वर्धमान ) पाँच, इस प्रकार कुल दस तीर्थंकर अपने पूर्व ( पिछले ) जन्मोंके स्मरणसे वैराग्यको प्राप्त हुए ॥६१४॥

अजित-जित-धुम्पकन्ता, अणंतदेओ य धम्म-सामो-य ।

बट्ठूण उवकपडणं, संसार-सरोर-भोग-निज्जिण्णा ॥६१५॥

अर्थ :- अजित जित, पुण्डन्त, अनन्तदेव और धर्मनाथ स्वामी ( ये चार तीर्थंकर ) उल्कापात देखकर संसार, शरीर एवं भोगोंसे विरक्त हुए ॥६१५॥

अर-संभव-विमल-जिणा, अरुअ-विणसेण जाव-वेरग्गा ।

सेयंस-मुपास-जिणा, वसंत-वणलब्धि-भासेण ॥६१६॥

अर्थ :- अरनाथ, सम्भवनाथ और विमल जिनेन्द्र मेघ विनाशसे; तथा मगवान् श्रेयांस और सुपादर्थ जिनेन्द्र वसन्तकालीन वन-लक्ष्मिका विनाश देखकर वैराग्यको प्राप्त हुए ॥६१६॥

अंघप्पह-मल्लि-जिणा, अहधुअ-अहुदीहि जाव-वेरग्गा ।

सीयसओ हिम-णासे, उसहो नीलज्जनाए सरणाओ ॥६१७॥

अर्थ :- अन्धप्रभ और मल्लि जिनेन्द्र अध्रूअ ( बिजली ) आदिले शीतलनाथ हिम-नाथसे और श्रवणभेद नीलाञ्जनाके मरणसे वैराग्यको प्राप्त हुए ॥६१७॥

अंघठव-अयर-णासे, अंघणवेओ बि जाव-वेरग्गो ।

इय बाहिर-हेहूहि, जिणा विरागेण चित्तंति ॥६१८॥

अर्थ :- अभिनन्दन स्वामी गन्धर्व नगरका नाश देख विरक्त हुए । इस प्रकार इन बाह्य हेतुओंसे विरक्त होकर वे तीर्थंकर चिन्तवन करते हैं ॥६१८॥

श्रवणादि चौबीस तीर्थंकरों द्वारा चिन्तन की हुई वैराग्य-भावनाके अन्तर्गत मरकगतिके दुःख—

णिरएसु णत्थि सोक्खं, निमेषमेसं<sup>१</sup> पि णारयाण सदा ।

बुद्धाहं<sup>२</sup> वारुणाहं<sup>३</sup>, बट्ठंते पच्चमाणाणं ॥६१९॥



अर्थ :—नरकोंमें पचनेवाले नारकियोंको क्षणमात्र भी सुख नहीं है, वे सदैव दास्य दुःखों का अनुभव करते रहते हैं ॥६१६॥

जं कुण्वि विसय-सुखो<sup>१</sup>, पावं सस्सोवयम्मि निरएसु ।  
तिष्वाओ<sup>२</sup> वेयणाओ, पावंतो विलववि विसव्वतो ॥६१७॥

अर्थ :—विषयोंमें लुब्ध होकर जीव जो कुछ पाप करता है उसका उदय आने पर नरकोंमें तीस वेदनाओंको पाकर विषण्ण ( दुःखी ) हो विलाप करता है ॥६१७॥

सगमेत्ते विसय-सुहं<sup>३</sup>, ओ<sup>४</sup> दुक्खं अहं-असहं ।  
विसहंति घोर-निरए, ताव समो जत्थि निब्बुद्धो ॥६१८॥

अर्थ :—जो जीव क्षणमात्र रहनेवाले विषय सुखके निमित्त असंख्यातकाल तक घोर नरकोंमें दुःख सहन करते हैं उनके सहन निर्वृद्धि और कोई नहीं है ॥६१८॥

‘मंघो निबड्ह कूवे, बहिरो न सुणोदि सामु-उच्चवेसं ।  
वेचछंतो निसुणंतो, निरए जं पडह सं चोअं ॥६१९॥

अर्थ :—यदि अन्धा कुएमें गिरता है और बहिरा सदुपदेव नहीं सुनता तो कोई आश्चर्य नहीं किन्तु जो देखता एवं सुनता हुआ नरकमें पड़ता है, यह आश्चर्य है ॥६१९॥

तिर्यग्गतिके दुःख—

भोत्तूण निमिसमेसं, विसय-सुहं विसम-बुक्ख-बहुलाहं ।  
तिरय-गवोए पावा, वेट्ठंति अन्नंत-कालाहं ॥६२०॥

अर्थ :—पापी जीव क्षणमात्र विषय-सुखको भोगकर विषम एवं अतुर दुःखोंको भोगते हुए अनन्तकाल तक तिर्यग्गतिके रहते हैं ॥६२०॥

१. व. व. क. उ. भुटा, ज. व. लटा । २. क. उ. तिष्वाउ । ३. व. वणमत्तो ।

४. व. व. घंघा ।

गार्ग्यैः ॥ अथर्व ऋषिः ॥ अथर्ववेदः ॥ अथर्ववेदः ॥ अथर्ववेदः ॥  
ताडन-तासन-बधन-बाहुण-संछन-विभेदन<sup>१</sup> दमनं ।

कण्ठक्षेपण-नासा-विषण-मिलसंछनं<sup>२</sup> खेद ॥६२४॥

छेदन-भेदन-वहणं, शिप्पीवण-गालनं क्षुधा तण्हा ।

भस्मण-महण-मलनं, विकसनं सीदमुण्हं च ॥६२५॥

अर्थ :—तिग्रंथगतिमें, ताड़ना, तास देना, बांधना, बोझ लादना, विह्वित (बह्मदिकके आकारसे बलाना) करना, भारना, दमन करना, कानोंका छेदना, नाक वेधना, अण्डकोशको कुचलना (बधिया करना), छेदन, भेदन, दहन, निष्पीडन, गालन, क्षुधा, तृषा, मक्षण, मर्दन, मलन, विकर्तन, पीत और उष्ण (आदि दुःख प्राप्त होते हैं) ॥६२४-६२५॥

एवं अणंत-सुतो, भिच्छ-चतुर्गादि-निगोद-मज्झमि ।

जम्मण-मरण-रहट्टं, अणंत-सुतो<sup>३</sup> परिगहो जं ॥६२६॥

अर्थ :—इस प्रकार अनन्तवार नित्य निगोद और चतुर्गति (इतर) निगोदके मध्य जाकर अनन्तवार जिस अन्त-मरणरूप अरहट्ट (धट्ठियन्न) को प्राप्त किया है (उसके विषयमें विचार करना) ॥६२६॥

मनुष्यगतिके दुःखोंके अन्तर्गत गर्भस्थ बालकका क्रमिक विकास—

पुण्ड्रकद-पाव-गुदगो, मादा-पिबरस्स रस-सुक्काहो ।

आहूण य वस-रसं, अण्णवि<sup>४</sup> कसलस्सरुवेणं ॥६२७॥

कलुसी-कदमि अण्णदि, वस-रसं तलियमि धिर-भूवं ।

परोक्कं मासं धिय, बुद्धुद-धणमूद-मासपेसी य ॥६२८॥

पंच - पुलगाठ<sup>५</sup> - अंगोबंगाह<sup>६</sup> चम्म-रोम-गह-रुव ।

फवणमहूम-मासे, णवमे वसमे य निममणं ॥६२९॥

१. व. ब. क. ज. य. उ. विहेरणं । २. द. क. व. य. भेसिण्णं, ब. ज. वेसिण्णं । ३. द. क. ज. य. परिगहो जं, ब. उ. परिगहो जं । ४. व. कसलस्सरुवेणं । ५. व. व. क. ज. य. उ. कलुसे । ६. व. व. क. ज. य. उ. कलुसे । ७. व. व. क. ज. य. उ. कलुसे । ८. व. व. क. ज. य. उ. कलुसे । ९. व. व. क. ज. य. उ. कलुसे । १०. व. व. क. ज. य. उ. कलुसे । ११. व. व. क. ज. य. उ. कलुसे । १२. व. व. क. ज. य. उ. कलुसे । १३. व. व. क. ज. य. उ. कलुसे । १४. व. व. क. ज. य. उ. कलुसे । १५. व. व. क. ज. य. उ. कलुसे । १६. व. व. क. ज. य. उ. कलुसे । १७. व. व. क. ज. य. उ. कलुसे । १८. व. व. क. ज. य. उ. कलुसे । १९. व. व. क. ज. य. उ. कलुसे । २०. व. व. क. ज. य. उ. कलुसे । २१. व. व. क. ज. य. उ. कलुसे । २२. व. व. क. ज. य. उ. कलुसे । २३. व. व. क. ज. य. उ. कलुसे । २४. व. व. क. ज. य. उ. कलुसे । २५. व. व. क. ज. य. उ. कलुसे । २६. व. व. क. ज. य. उ. कलुसे । २७. व. व. क. ज. य. उ. कलुसे । २८. व. व. क. ज. य. उ. कलुसे । २९. व. व. क. ज. य. उ. कलुसे । ३०. व. व. क. ज. य. उ. कलुसे । ३१. व. व. क. ज. य. उ. कलुसे । ३२. व. व. क. ज. य. उ. कलुसे । ३३. व. व. क. ज. य. उ. कलुसे । ३४. व. व. क. ज. य. उ. कलुसे । ३५. व. व. क. ज. य. उ. कलुसे । ३६. व. व. क. ज. य. उ. कलुसे । ३७. व. व. क. ज. य. उ. कलुसे । ३८. व. व. क. ज. य. उ. कलुसे । ३९. व. व. क. ज. य. उ. कलुसे । ४०. व. व. क. ज. य. उ. कलुसे । ४१. व. व. क. ज. य. उ. कलुसे । ४२. व. व. क. ज. य. उ. कलुसे । ४३. व. व. क. ज. य. उ. कलुसे । ४४. व. व. क. ज. य. उ. कलुसे । ४५. व. व. क. ज. य. उ. कलुसे । ४६. व. व. क. ज. य. उ. कलुसे । ४७. व. व. क. ज. य. उ. कलुसे । ४८. व. व. क. ज. य. उ. कलुसे । ४९. व. व. क. ज. य. उ. कलुसे । ५०. व. व. क. ज. य. उ. कलुसे । ५१. व. व. क. ज. य. उ. कलुसे । ५२. व. व. क. ज. य. उ. कलुसे । ५३. व. व. क. ज. य. उ. कलुसे । ५४. व. व. क. ज. य. उ. कलुसे । ५५. व. व. क. ज. य. उ. कलुसे । ५६. व. व. क. ज. य. उ. कलुसे । ५७. व. व. क. ज. य. उ. कलुसे । ५८. व. व. क. ज. य. उ. कलुसे । ५९. व. व. क. ज. य. उ. कलुसे । ६०. व. व. क. ज. य. उ. कलुसे । ६१. व. व. क. ज. य. उ. कलुसे । ६२. व. व. क. ज. य. उ. कलुसे । ६३. व. व. क. ज. य. उ. कलुसे । ६४. व. व. क. ज. य. उ. कलुसे । ६५. व. व. क. ज. य. उ. कलुसे । ६६. व. व. क. ज. य. उ. कलुसे । ६७. व. व. क. ज. य. उ. कलुसे । ६८. व. व. क. ज. य. उ. कलुसे । ६९. व. व. क. ज. य. उ. कलुसे । ७०. व. व. क. ज. य. उ. कलुसे । ७१. व. व. क. ज. य. उ. कलुसे । ७२. व. व. क. ज. य. उ. कलुसे । ७३. व. व. क. ज. य. उ. कलुसे । ७४. व. व. क. ज. य. उ. कलुसे । ७५. व. व. क. ज. य. उ. कलुसे । ७६. व. व. क. ज. य. उ. कलुसे । ७७. व. व. क. ज. य. उ. कलुसे । ७८. व. व. क. ज. य. उ. कलुसे । ७९. व. व. क. ज. य. उ. कलुसे । ८०. व. व. क. ज. य. उ. कलुसे । ८१. व. व. क. ज. य. उ. कलुसे । ८२. व. व. क. ज. य. उ. कलुसे । ८३. व. व. क. ज. य. उ. कलुसे । ८४. व. व. क. ज. य. उ. कलुसे । ८५. व. व. क. ज. य. उ. कलुसे । ८६. व. व. क. ज. य. उ. कलुसे । ८७. व. व. क. ज. य. उ. कलुसे । ८८. व. व. क. ज. य. उ. कलुसे । ८९. व. व. क. ज. य. उ. कलुसे । ९०. व. व. क. ज. य. उ. कलुसे । ९१. व. व. क. ज. य. उ. कलुसे । ९२. व. व. क. ज. य. उ. कलुसे । ९३. व. व. क. ज. य. उ. कलुसे । ९४. व. व. क. ज. य. उ. कलुसे । ९५. व. व. क. ज. य. उ. कलुसे । ९६. व. व. क. ज. य. उ. कलुसे । ९७. व. व. क. ज. य. उ. कलुसे । ९८. व. व. क. ज. य. उ. कलुसे । ९९. व. व. क. ज. य. उ. कलुसे । १००. व. व. क. ज. य. उ. कलुसे ।

**अर्थ :**—पूर्वकृत महा पापके उदयसे जीव माताके रक्त और पिताके शुक्रसे उत्पन्न होकर दस रात्रि पर्यन्त कललरूप ( कर्दम सदृश गाढ़ी ) पर्यायमें रहता है । पश्चात् दस रात्रि पर्यन्त कलुषी-कृत पर्यायमें और इतनी ही अर्थात् दस रात्रि पर्यन्त स्थिरीभूत ( निष्कण्ठ ) पर्यायमें रहता है । इसके पश्चात् प्रत्येक मासमें क्रमशः बुदबुद, घनभूत ( ठोस ), मांसपेयी, पाँच पुलक ( दो हाथ, दो पैर और एक भिर ), अङ्गोपाङ्ग और चर्म तथा रोम एवं नखोंकी उत्पत्ति होती है । पुनः आठवें मासमें स्पन्दन क्रिया और नौवें या दसवें मासमें निर्गमन ( जन्म ) होता है ॥६३०-६३१॥

योनि का स्वरूप एवं गर्भाशयके दुःख—

असुचो अपेक्षणीयं, दुग्गन्धं मुत्त-सोणिद-बुधारं ।

धोत्तुं पि लज्ज-णिज्जं, पोदट्ठमुहं जम्मन्नुमो से ॥६३०॥

**अर्थ :**—सशुचि, अदमनीय, दुर्गन्धसे युक्त, मूत्र एवं खूनका द्वार तथा जिसका कथन करने में भी लज्जा आती है ऐसा जो उदरका मुख ( योनि ) है वह इस मनुष्यका जन्म स्थान है ॥६३०॥

आमासयस्स हेट्ठा, उवरि पक्कासयस्स गूथम्मि ।

मक्कम्मि वरिय-पडसे, पच्चण्णो वमिक-पिज्जंतो ॥६३१॥

अच्छदि नाव-वस-मासे, गवमे आहरदि सच्च-अंगेसु ।

गूथरसं अहकुणिमं, धोरतरं दुक्ख-संभूयं ॥६३२॥

**अर्थ :**—( यह प्राणी ) गर्भ समयमें आमाशयके नीचे और पक्वाशयके ऊपर मलके बीचों-बीच वस्ति-पटल ( जरायु पटल ) से आच्छादित, वान्ति ( वमन ) को पीता हुआ नौ-दस मास गर्भमें स्थित रहता है और वहाँ सब अङ्गोंमें दुःखसे उत्पन्न अत्यन्त तीव्र दुर्गन्धसे युक्त विष्टा-रसको आहारके रूपमें ग्रहण करता है ॥६३१-६३२॥

मनुष्यपर्यायका कालशेष—

<sup>१</sup>वासत्तणम्मि युदगं, बुक्खं पत्तो अजाण-माणेण ।

जोग्गण-काले मज्जे, इरयी-पासम्मि संतत्तो ॥६३३॥

अर्थ :—यह जीव बालकपनमें भोजनके कारण प्रचुर दुःखकी प्राप्त हुआ तथा यौवन-कालमें स्त्रीके साथ आसक्त रहा ॥६३३॥

वेदेदि<sup>१</sup> विसृज-हेव<sup>२</sup> कलज-पासेहि दुग्धिमोचेहि ।

कोसेण<sup>३</sup> कोसकारो, व<sup>४</sup> दुग्धमो मोह-पासेसु ॥६३४॥

अर्थ :—जिस प्रकार रेशमका कीड़ा रेशमके तन्तु-जालमें अपने आपको ही वेष्टित करता है, उसी प्रकार यह दुर्मति ( जीव ) विषयके निमित्त दुग्धिमोच स्त्रीरूप पाशोंमें अपने आपको मोह-जालमें फँसा लेता है ॥६३४॥

कामातुरस्स गच्छवि, खणमिव संवत्थराणि बहुयाणि ।

‘पाणितस-धरिव-गंछो’, बहुसो चित्तेदि शीण-मुहो<sup>५</sup> ॥६३५॥

अर्थ :—कामातुर जीवके बहुतसे वर्ष एक क्षणके सदृश बीत जाते हैं । वह हस्ततलपर कपोल रखकर दोनमुख होता हुआ बहुत प्रकारसे चिन्ता करता है ॥६३५॥

कामुग्मत्तो पुरिसो, कामिज्जंते जणे<sup>६</sup> अलभमाणे ।

‘घत्तवि मरिवु’ बहुया, मरुप्पयातावि-करणेहि<sup>७</sup> ॥६३६॥

अर्थ :—कामोन्मत्त पुरुष अभीष्ट जन ( स्त्री आदि ) को न प्राप्त कर बहुधा मरु-पयातादि साधनोंसे मरनेकी चेष्टा करता है ॥६३६॥

‘कामप्पुण्णो पुरिसो, तिलोक्कसारं पि अहवि सुव-साहं ।

कुण्ठवि-असंजम-बहुलं, अणंत-संसार-संजणं ॥६३७॥

१. व. व. क. उ. वेदेदि । २. व. व. क. ज. प. उ. हेव । ३. व. क. ज. व. उ. वृद्धमयी । ४. व. दुग्धमयी । ५. व. बलामणि । ६. व. उ. पाणितस । ७. व. क. ज. गंछो । ८. द. व. क. ज. य. उ. मुहो । ९. द. ज. य. जणो व घममाणो, क. जणो व घमममाणो, उ. जणो व घमममाणो, व. जणे व घममणो । १०. द. व. क. ज. उ. पुत्तदि, घ. पुत्तादे । ११. द. व. क. ज. उ. कामं पुण्णो, व. क. ज. य. उ. कामं पुण्णो ।

अर्थ :—कामसे परिपूर्ण पुरुष तीन लोकमें श्रेष्ठ श्रुत-स्वामको भी छोड़ देता है और अनन्त संसारको उत्पन्न करनेवाले प्रचुर भसंयमको ( ग्रहण ) करता है ॥६३७॥

‘उच्चो धीरो वीरो, बहुभाषीओ वि विसय-सुद-मई ।

सेववि निवधं निवधं, सहवि हि बहुमं’ पि अकमाणं ॥६३८॥

अर्थ :—उच्च, धीर, वीर और बहुत माननीय मनुष्य भी विषयोंमें लुब्ध-बुद्धि होकर नीचसे नीचका भी सेवन करता है और अनेक प्रकारके अपमान सहता है ॥६३८॥

बुद्धं दुग्धस-बहुलं, इह लोके दुग्धादि पि परलोके ।

हिद्वि दूरमपारे, संसारे विसय-सुद-मई ॥६३९॥

भाष्यार्थक :—आपका भी सुविधिसामर्य्य भी पहचान

अर्थ :—विषयोंमें आसक्त बुद्धिवाला पुरुष इस लोकमें प्रचुर अपकीर्ति युक्त दुःखको तथा परलोकमें दुर्गतिको प्राप्त कर अपार संसारमें बहुत काल तक परिभ्रमण करता है ॥६३९॥

विसयानिसेहि ‘पुण्यो, अणंत-सोपसारण हेदु सम्मत्तं ।

सम्भारिणो ‘महवि ह, तणं च लज्जं च मज्जावं ॥६४०॥

अर्थ :—विषय-भोगोंसे परिपूर्ण पुरुष अनन्तसुखके कारणभूत सम्यक्त्व, सम्यक्चारित्र्य तथा लज्जा और मर्यादाको तृण सहक छोड़ देता है ॥६४०॥

सीदं उण्हं तण्हं, सुधं च दुस्सेज्ज-भत्त-पंध-सधं ।

सुकुमारको वि कामी, सहवि वहवि भारमवि-गुणं ॥६४१॥

अर्थ :—सुकुमार भी कामी पुरुष छीत, उण्ह, तृषा, सुधा, दुष्टशय्या, खोटा प्राहार और मार्गभ्रमको सहता है तथा अत्यन्त भारी बोझ डोता है ॥६४१॥

अपि च बधो जीवाणं, मेहुण-सज्जाए होवि बहुगाणं ।

तिल-‘णासीए ‘तत्तायस-प्पवेसो व्व जीणीए’ ॥६४२॥

१. द. व. ज. य. उ. उण्वा । २. द. क. ज. य. उ. तण्हा । ३. द. व. क. ज. य. उ. बहुपाणि ।  
४. व. क. उ. पुणो । ५. द. व. ज. य. जावि ह । ६. व. ज. य. खासीए, व. क. उ. वासीए । ७. व. क.  
ज. य. उ. तत्ताय । ८. द. व. क. ज. य. उ. वासीए ।

अर्थ :—तथा, मैयुन संज्ञामे तिनोकी नालीमें तप्त लोहेके प्रवेशके सदृश योनिमें बहुतेसे जीवोंका वध होता है ॥६४३॥

इह लोमे वि महत्सं, दोसं<sup>१</sup> कामस्स वस-गदो पचो ।

काल-गदो वि अभंतं, दुक्खं पावेवि कामंभो ॥६४३॥

अर्थ :—कामके वशीभूत हुआ पुरुष इस लोकमें भी महान् दोषको प्राप्त होता है और कामान्ध होता हुआ मरकर परलोकमें भी अनन्त दुःख पाता है ॥६४३॥

सोणिय-मुक्कप्पाइय<sup>२</sup>-देहो<sup>३</sup> दुक्खाइ गम्भ-जासम्भ ।

सहिबूण बारुणाइ<sup>४</sup>, विट्ठो<sup>५</sup> पावाइ कुक्कइ पुणो ॥६४४॥

अर्थ :—शोणित और मुक्तसे उत्पन्न हुई देहसे युक्त जोव गर्भवासमें महा भयानक दुःख सह कर निर्लेज्ज हुआ फिरसे पाप करता है ॥६४४॥

बाहि-णिहाणं<sup>६</sup> देहो, बहुपोस-सुपोसियो वि सय-वारं<sup>७</sup> ।

अस्थी पवण-पणोत्तिय<sup>८</sup>-पावप-वल-चंचल-सहावो<sup>९</sup> ॥६४५॥

अर्थ :—बहुतेसे पुष्टिकारक पदार्थों द्वारा सैकड़ों बार अन्धो तरह पोषा गया भी व्याधियों का निधानभूत यह शरीर पवनसे प्रेरित वृक्षके पत्ते सदृश चंचल स्वभाव वाला है ॥६४५॥

तारुणं तडि-त्तरसं, विसया-मेरंस विरस-विस्वारा ।

अस्थो अणस्थ-भूलो, अविचारिय-सुंवरं सव्वं ॥६४६॥

अर्थ :—विषयोसे प्रेरित ( यह ) तारुण्य बिजली सदृश नचल है और अर्थ ( इन्द्रिय-विषय ) नीरसता पूर्ण हैं, अनर्थके मूल कारण हैं; इस प्रकार मे सब ( अनर्थके मूल ) मात्र अविचारितरम्य ही हैं ॥६४६॥

१. द. द. क. ज. य. उ. दोसा । २. द. मुक्कप्पाइय, ज. मुक्कप्पाइय, क. य. ज. उ. मुक्कप्पाइय ।

३. द. दोहो, ब. क. ज. य. उ. दाहो । ४. द. क. ख. घ. विट्ठो, ब. उ. विट्ठो । ५. द. ब. क.

उ. णिहाणं । ६. द. द. क. ख. य. उ. वारं । ७. द. ब. क. ज. य. उ. पणोत्तिय ।

८. द. द. क. ज. य. उ. सहावा ।

माता पिता कलसं, पुता कंयू य ईद-जाता य ।

बिहु-पराट्टाह खणो<sup>१</sup>, मणस्स बुसहाइ<sup>२</sup> सस्साइ<sup>३</sup> ॥६४७॥

अर्थ :—माता, पिता, परनी, पुत्र और बन्धुजन इन्द्रजाल सदृश जल-मात्रमें देखते-देखते नष्ट हो जाते हैं ये सब मनके लिये दुस्सह बाल्य हैं ॥६४७॥

देवगतिके दुःख एवं उपसंहार—

पसाए थोवेहि, सोक्खं भावेहि शिक्ख-<sup>४</sup>गरुवाइ<sup>५</sup> ।

बुबसाइ<sup>६</sup> मारुसाइ<sup>७</sup>, वेव-गादीए अणुभवंति ॥६४८॥

अर्थ :—देवगतिके किञ्चित् सुखको प्राप्त हुए ओव उस ( सुख ) के विनाशकी चिन्ता रूप भावसे नित्य ही महान् मानसिक दुःखोंका अनुभव किया करते हैं ॥६४८॥

चइहूण चउ-गादीओ, वारुण-दुब्बार-बुक्ख-साणीयो ।

परमाणद-गिहणं, शिक्खाणं यासु वज्जामो ॥६४९॥

अर्थ :—अतएव वारुण और दुनिवार दुःखोंकी खानिभूत इन चारों गतियोंकी छोड़ कर हम उत्कृष्ट मानन्दके निधान-स्वरूप मोक्षको शीघ्र ही प्राप्त करें ॥६४९॥

अथवादि तीर्थंकरोंके दीक्षा-स्थान—

तम्हा मोक्खस्स कारणं—

वारवदीए<sup>१</sup> जेमो, तेसा तेदीस तेसु तिण्णवरा ।

णिय-णिय-आव-पुरेसु<sup>२</sup>, गिण्हंति जिणिव-दिक्खाइ<sup>३</sup> ॥६५०॥

अर्थ :—इसीलिए मोक्षके निमित्त—

उन चौबीस तीर्थंकरोंमेंसे ( भगवान् ) नेमिनाथ द्वारावली नगरीमें और जेव तेईस तीर्थंकर अपने-अपने जन्म-स्थानोंमें जेनेन्नी-दीक्षा ग्रहण करते हैं ॥६५०॥

१. व. ख. लणी । २. व. ब. क. ज. य. उ. पुतनाइ । ३. व. ब. क. ज. य. उ. नववाहि ।

४. व. वारवदीये ।





अर्थ :—मंगला नक्षत्रके शुक्ला द्वादशीके पूर्वाह्णमें मघा नक्षत्रके रहते सहेतुक वनमें तृतीय उपवासके साथ दीक्षित हुए ॥६५५॥

चेत्तासु किञ्च-तेरसि-अवरण्हे कित्तिपस्स शिवकंसो ।

पउमप्पहो जिणिदो, तविए खवणे मणोहरज्जान्हे ॥६५६॥

अर्थ :—पद्मप्रभ जिनेश्वर कातिक कृष्णा त्रयोदशीके अपराह्णमें चित्रा नक्षत्रके ( उदित ) रहते मनोहर उद्यानमें तृतीय उपवासके साथ दीक्षित हुए ॥६५६॥

सिद्ध-वारसि-पुण्यण्हे, जेट्ठस्स विसाहभम्मि जिय-विषसं ।

गेण्हेवि तविय-खवणे, सुवासदेवो सहेवुणम्मि वणे ॥६५७॥

अर्थ :—सुवासदेवनाथने ज्येष्ठ शुक्ला द्वादशीके पूर्वाह्णमें विशाला नक्षत्रके रहते सहेतुक वनमें तृतीय उपवासके साथ जिन दीक्षा ग्रहण की ॥६५७॥

अणुराहाए पुस्से, बभुत्ते एमारसीए अवरण्हे ।

\*अंधपहो धरइ तव, सव्वत्थ-मणम्मि तविय-उववासे ॥६५८॥

अर्थ :—चन्द्रप्रभने पौष कृष्णा एकादशीके अपराह्णमें अनुराधा नक्षत्रके रहते तृतीय उपवासके साथ सर्वाश्विनमें तप धारण किया ॥६५८॥

अणुराहाए पुस्से, सिद्ध-पण्णेकारसीए अवरण्हे ।

\*पण्णउत्तइ पुण्णवणे, तविए खवणम्मि पुण्णयंत-जिणो\* ॥६५९॥

अर्थ :—पुण्यदन्त तीर्थंकर पौष-शुक्ला एकादशीके अपराह्णमें अनुराधा नक्षत्रके रहते पुण्यवनमें तृतीय उपवासके साथ प्रव्रजित ( दीक्षित ) हुए ॥६५९॥

माघस्स \*किञ्च-वारसि-अवरण्हे मूलभम्मि पण्णउत्ता ।

गहिया सहेवुण-वणे, सीयस-वेवेण तविय-उववासे ॥६६०॥

अर्थ :- वीरलनाथ स्वामीने माघ कृष्ण द्वादशीके अपराह्णमें मूल नक्षत्रके रहते सहेतुक वनमें तृतीय उपवासके साथ प्रव्रज्या ग्रहण की ॥६६०॥

एककारसि-पुण्यरहे, कमगुण-बहुसे मणोहरज्जामे ।  
सवर्णम्मि तविय-खवने, सेयंसो घरह जिण-दिवसं ॥६६१॥

अर्थ :- श्रेयांसदेवने फाल्गुन कृष्ण एकादशीके पूर्वाह्णमें श्रवण नक्षत्रके रहते मनोहर उद्यानमें तृतीय उपवासके साथ जिन दोसा धारण की ॥६६१॥

कमगुण-कमण-चउत्थि-अवरण्हे वासुपुञ्ज-तव-गहणं ।  
रिक्खम्मि बिसाखाए, इणि-उववासे मणोहरज्जामे ॥६६२॥

अर्थ :- वासुपुञ्ज जिनेन्द्रने फाल्गुन कृष्ण द्वादशीके अहोरात्रमें विशाखा नक्षत्रके रहते मनोहर उद्यानमें एक उपवासके साथ तप ग्रहण किया ॥६६२॥

माघस्स सिव-चउत्थी, अवरण्हे तह सहेवुगम्मि वणे ।  
उत्तरभह्मवासुं, बिमलो निक्कमइ तविय-उववासे ॥६६३॥

अर्थ :- विमलनाथ स्वामीने माघ शुक्ल चतुर्थीके अपराह्णमें उत्तर भाद्रपद नक्षत्रके रहते सहेतुक वनमें तृतीय उपवासके साथ दोसा ग्रहण की ॥६६३॥

जेटुस्स बहुल-बारसि, अवरण्हे रेवतीसु खवणतिए ।  
धरिया सहेवुग-वणे, अणंतवेवेण तव-लवण्ठी ॥६६४॥

अर्थ :- अनन्तनाथ स्वामीने ज्येष्ठ कृष्ण द्वादशीके दिन अपराह्णमें रेवती नक्षत्रके रहते सहेतुक वनमें तृतीय उपवासके साथ तपो लक्ष्मी धारण की ॥६६४॥

सिध-तेरसि-अवरण्हे, भह्मवे पुत्सभम्मि खवण-तिए ।  
जमिक्कणं सिद्धाणं, सारि-वणे निक्कमइ धम्मो ॥६६५॥

अर्थ :- धर्मनाथ तीर्थकरने भाद्रपद शुक्ल त्रयोदशीके अपराह्णमें पुष्य नक्षत्रके रहते नासि-वनमें तृतीय उपवासके साथ सिद्धोंको नमस्कार कर जिन दोसा ग्रहण की ॥६६५॥

केतुस्स बहुल-<sup>१</sup>चउपो-अवरण्हे घरणिभम्मि चूद-वणे ।

पडिक्खजि पक्खज्जं, संति-जिणो तदिय-उववासे ॥६६६॥

अर्थ :—शान्तिनाथ जिनेन्द्रने ज्येष्ठ कृष्णा चतुर्थीके अपराह्णमें घरणी नक्षत्रके रहते आम्रवनमें तृतीय उपवासके साथ जिन दीक्षा धारण की ॥६६६॥

बइसाह-सुद्ध-पाडिक्ख-अवरण्हे कित्तियासु लवण-त्तिण् ।

कुंभू सहेत्तुग-वणे, पक्खजिओ धम्ममिळण सिद्धान्<sup>२</sup> ॥६६७॥

अर्थ :—कुन्धुनाथ स्वामी वैशाख शुक्ला प्रतिपदाके अपराह्णमें कृत्तिका नक्षत्रके रहते सहेत्तुक वनमें तृतीय उपवासके साथ जिन दीक्षा धारण की ॥६६७॥

मग्गसिर-सुद्ध-दसमी-अवरण्हे रेवतीसु अर-वेवो ।

तदिय-स्ववभम्मि गेण्हहि, जिणिक्ख-रुवं सहेत्तुगम्मि वणे ॥६६८॥

अर्थ :—धरनाथ तीर्थस्नाने मगसिर शुक्ला दसमीके अपराह्णमें रेवती नक्षत्रके रहते सहेत्तुक वनमें तृतीय उपवासके साथ जिनेन्द्ररूप ग्रहण किया ॥६६८॥

मग्गसिर-सुद्ध-एक्कादसिय अह धस्सिणीसु पुब्बण्हे ।

<sup>३</sup>धरहि तवं सालि-वणे, <sup>४</sup>मल्ली छद्देण मत्तेण ॥६६९॥

अर्थ :—मल्ल जिनेन्द्रने मगसिर शुक्ला एकादशके पूर्वाह्णमें अश्विनी नक्षत्रके रहते सालि वनमें धनु भक्तके साथ तप धारण किया ॥६६९॥

बइसाह-बहुल-दसमी-अवरण्हे लवणभम्मि नील-वणे ।

उववासे तदियम्मि य, सुक्खववेवो<sup>५</sup> महाज्जं धरहि ॥६७०॥

अर्थ :—मुनिमुत्तदेवने वैशाख कृष्णा दसमीके अपराह्णमें श्रवण नक्षत्रके उदय रहते नील-वनमें तृतीय उपवासके साथ महाव्रत धारण किये ॥६७०॥

१. द. व. उ. चोरी, व. व. बोली ।

२. व. उ. सिद्धाना ।

३. द. उ. धरिहि, व. क.

व. व. धरिष ।

४. द. व. क. व. प. उ. मल्लि ।

५. द. व. क. उ. वेवा ।

आसाह-बहुल-वसमी-अवरण्हे अस्सिणीस <sup>१</sup>चेस-वणे ।  
 नामि-णाहो पम्बज्ज, पाडिबज्जदि तीवय-सवणम्मि ॥६७१॥

अर्थ :—नमिनायने आषाढ़ कृष्ण दसमीके अपराह्णमें अस्विनी नक्षत्रके रहते चैत्र-वनमें तृतीय उपवासके साथ बीजा स्वीकार की ॥६७१॥

चेसासु-सुद्ध-छट्ठी-अवरण्हे सावणम्मि जेमि-जिणो ।  
 तविय-सवणम्मि गेण्हि, सहकार-वणम्मि तव-वरणं ॥६७२॥

अर्थ :—नेमिनायने श्रावण शुक्ला छठ्ठीके अपराह्णमें चित्रा नक्षत्रके रहते सहकार वनमें तृतीय उपवासके साथ तप सहण किया ॥६७२॥

भाघस्सिव-एककारसि-पुम्बज्हे गेण्हवे विसाहासु ।  
 पववज्जं पासजिणो, अस्सस-वणम्मि छट्ठ-असेण ॥६७३॥

अर्थ :—पार्श्वनायने भाघ शुक्ला एकादशीके पूर्वाह्णमें विसाखा नक्षत्रके रहते षष्ठ मत्तके साथ अवसत्य वनमें दोषा ग्रहण की ॥६७३॥

मगसिर-बहुल-वसमी-अवरण्हे उत्तरासु <sup>२</sup>णाथ-वणे ।  
 तविय-सवणम्मि गहिणं, महम्मदं बड्ढमाणेण ॥६७४॥

अर्थ :—वर्धमान भगवान्ने मगसिर कृष्ण दसमीके अपराह्णमें उत्तरा फाल्गुनी नक्षत्रके रहते नाथवनमें तृतीय उपवासके साथ महाप्रत ग्रहण किये ॥६७४॥

सह-दीक्षित राजकुमारोंकी संस्था—

<sup>३</sup>पम्बजिदो महिस-जिणो, रायकुमारेहि ति-सय-मेसेहि ।  
 पास-जिणो वि सह चियय, एककोचियय बड्ढमाण-जिणो<sup>४</sup> ॥६७५॥

मस्ति ३०० । पास ३०० । बीर ० ।

[ तालिका नं० १४ पृष्ठ १६०-१६१ पर देखें ]

१. द. व. क. ज. य. उ. चेतवणे । २. द. ज. एावरणे, व. छ. एावरणे, क. एायवणे, घ. एाववणे ।  
 ३. द. व. व. क. उ. पम्बजिदो । ४. व. व. क. ज. उ. जिणे ।

बीबीस तीर्थद्वारेके वराण्यका कारण और बीसता सम्पूर्ण बिबरण— याचर ११४-११८ और १२०-१३६

| क्रमांक | नाम        | वेराण्यका कारण | दीक्षा स्थान | बीसता   |       |            |           |            |           |            | गहरीजाम |
|---------|------------|----------------|--------------|---------|-------|------------|-----------|------------|-----------|------------|---------|
|         |            |                |              | मास     | पक्ष  | तिथि       | काल       | तख्त       | इन        | दीक्षोपवास |         |
| १       | अपभनाथ     | बीसाउनाथ       | मयोदया       | वीर     | कृष्ण | नवमी       | अपरराह    | उत्तराषाढा | सिद्धार्थ | छह मास     | ४०००    |
| २       | अजितनाथ    | उत्काषात       | साकेत        | माघ     | शुक्ल | "          | "         | रोहणी      | सहेतुक    | अष्ट मास   | १०००    |
| ३       | अम्भकनाथ   | मेघनिनाथ       | वाराणसी      | मगसिर   | "     | पूर्णिमा   | "         | ज्येष्ठा   | "         | तृतीय उप०  | १०००    |
| ४       | अभिमानत    | गंधर्वनाथ      | साकेत        | माघ     | "     | द्वादशी    | पूर्वाह्न | पुनर्वसु   | "         | "          | १०००    |
| ५       | सुमतिनाथ   | मानिस्वरण      | "            | वैशाख   | "     | नवमी       | "         | मघा        | "         | "          | १०००    |
| ६       | एकनाथ      | "              | कौसाभरी      | कातिक   | कृष्ण | त्रयोदशी   | अपरराह    | श्रिता     | मनोहर     | "          | १०००    |
| ७       | सुपाद्वनाथ | पठभर           | वनारस        | ज्येष्ठ | शुक्ल | द्वादशी    | पूर्वाह्न | दिशाखा     | सहेतुक    | "          | १०००    |
| ८       | बन्धुप्रभ  | बिजसो          | चन्द्रपुरी   | वीर     | कृष्ण | एकादशी     | अपरराह    | अनुराधा    | सर्वांग   | "          | १०००    |
| ९       | पृथ्वस्त   | उत्काषात       | काकन्दो      | "       | शुक्ल | "          | "         | "          | पृथ्व     | "          | १०००    |
| १०      | वीरतलनाथ   | हिमनाथ         | मदलपुर       | माघ     | कृष्ण | द्वादशी    | "         | शुक्ल      | सहेतुक    | "          | १०००    |
| ११      | श्रेयासनाथ | पठभर           | सिद्धपुरी    | फाल्गुन | "     | एकादशी     | पूर्वाह्न | व्यवरा     | मनोहर     | "          | १०००    |
| १२      | बामुपूज्य  | जातिस्वरण      | बम्पापुरी    | "       | "     | चतुर्विंशो | अपरराह    | दिशाखा     | "         | एक उप०     | ६३६     |
| १३      | विमलनाथ    | मेघनाथ         | कपिला        | माघ     | शुक्ल | चतुर्विंशो | "         | उ० रा०     | सहेतुक    | तृतीय उप०  | १०००    |

मार्गदर्शक :- अज्ञात श्री सुविधिसागर श्री महादेव

|    |           |             |            |         |       |          |           |         |         |           |      |
|----|-----------|-------------|------------|---------|-------|----------|-----------|---------|---------|-----------|------|
| १४ | चलन्तनाथ  | उत्कापात    | अयोध्या    | ज्येष्ठ | कृष्ण | दशमी     | अपराह्ण   | रेवती   | सहस्रक  | तृतीय उप० | १००० |
| १५ | धर्मनाथ   | "           | रजपुर      | आश्विन  | गुरु  | अयोध्या  | "         | पुष्य   | शानि    | "         | १००० |
| १६ | शान्तिनाथ | शान्तिस्मरण | हस्तिनापुर | ज्येष्ठ | कृष्ण | चतुर्दशी | "         | अश्लेषा | शानि    | "         | १००० |
| १७ | कुम्भनाथ  | "           | "          | वेलाह   | शुक्ल | अश्लेषा  | अश्लेषा   | शुक्ल   | शानि    | "         | १००० |
| १८ | धर्मनाथ   | मेघनाथ      | "          | मगसि    | "     | चतुर्दशी | "         | रेवती   | "       | "         | १००० |
| १९ | मस्तिनाथ  | विजयी       | मिथिला     | "       | "     | एकादशी   | पूर्वाह्ण | अश्लेषा | शानि    | चतु मरु   | ३००  |
| २० | मुनिमुखा  | शान्तिस्मरण | राजपुर     | अश्विन  | कृष्ण | दशमी     | अपराह्ण   | अश्लेषा | मीन     | तृतीय उप० | १००० |
| २१ | मन्दिनाथ  | "           | मिथिला     | आषाढ    | "     | चतुर्दशी | "         | अश्लेषा | अश्लेषा | "         | १००० |
| २२ | मेघनाथ    | "           | आराधनी     | आश्विन  | गुरु  | पञ्चमी   | "         | चित्रा  | सहस्रक  | "         | १००० |
| २३ | पद्मनाथ   | "           | आराधनी     | आश्विन  | "     | एकादशी   | पूर्वाह्ण | विशाखा  | अश्लेषा | चतु मरु   | ३००  |
| २४ | महावीर    | "           | कुम्भपुर   | मगसि    | कृष्ण | चतुर्दशी | अपराह्ण   | अश्लेषा | नाथ     | तृतीय उप० | ०    |

अर्थ :—मल्लिनाथ जिनेन्द्र तीन सौ राजकुमारोंके साथ दीक्षित हुए । पार्श्वनाथ भी उतने ही ( तीन सौ ) राजकुमारोंके साथ दीक्षित हुए तथा वर्धमान जिनेन्द्र प्रत्येकसे ही दीक्षित हुए ( उनके साथ किसी की भी दीक्षा नहीं हुई ) ॥६७५॥

वासुपूज्य-स्वामि-संज्ञेहि, वासुपूज्यस्वामी य ।  
उसहो तालसह्यहि, सेसा ग्रह-ग्रह सहस्र-मेतहि ॥६७६॥

वासु ६७६ । उसह ४००० । सेसा पर्यवका १००० ।

अर्थ :—वासुपूज्य स्वामी छह सौ छिहत्तर ( ६७६ ), ऋषभनाथ चार हजार ( ४००० ) और शेष तीर्थंकर पृथक्-पृथक् एक-एक हजार ( १०००-१००० ) राजकुमारोंके साथ दीक्षित हुए ॥६७६॥

दीक्षा-प्रवस्था-निर्देश—

गोमी मरुतो बीरो, कुमार-कालम्मि वासुपूज्यो य ।  
पासो चिय गहिब-सवा, सेस-जिजा रज्ज-वरिसम्मि ॥६७७॥

अर्थ :—भगवान् नेमिनाथ, मल्लिनाथ, महावीर, वासुपूज्य और पार्श्वनाथ इन पाँच तीर्थंकरोंने कुमार-कालमें और शेष तीर्थंकरोंने राज्यके अन्तमें तप ग्रहण किया ॥६७७॥

प्रथम पारणाका निर्देश—

एक-वरिसेण उसहो, उच्छुरसं कुण्ड पारणं अबरे ।  
गो-क्षीरे निप्यण्णं, अण्णं जिहियम्मि दिवसम्मि ॥६७८॥

अर्थ :—भगवान् ऋषभदेवने एक वर्षमें छहुरसकी पारणा की थी और इतर तीर्थंकरोंने दूसरे दिन गो-क्षीरमें निप्यण्न भक्षण ( क्षीर ) की पारणा की थी ॥६७८॥

विशेषार्थ :—भगवान् ऋषभदेवने छह मासके उपवास सहित दीक्षा ग्रहण की थी परन्तु उनकी पारणा एक वर्ष बाद हुई थी । शेष तेईस तीर्थंकरोंमेंसे २० ने तीन उपवास, दो तीर्थंकरोंने दो उपवास और श्री वासुपूज्य स्वामीने एक उपवासके साथ दीक्षा ग्रहण की थी । इन सबकी पारणा दीक्षोपवासोंके दूसरे दिन ही हो गई थी ।

पारणाके दिन होने वाले पञ्चाद्वय—

सम्मान पारण-विणे, निबन्धन घर-रयण-वरिससंवरयो ।

‘पण-घण-हव-बह-लपसां, जैदु’ अवरं सहस्स-भाणं च ॥६७६॥

[ १२५०००००० । १२३००० ।

अर्थ :—पारणाके दिन ( सब दाताओंके यहाँ ) आकाशसे उत्तम रत्नोंकी वर्षा होती है, जिसमें अधिकसे अधिक पाँचके घन ( १२५ ) से गुणित दस लाख ( १२५०००००० ) प्रमाण और कमसे कम इसके हजारवें भाग ( १२५००० ) प्रमाण रत्न बरसते हैं ॥६७६॥

वसि-विसोहि-विसेसोन्नेद-णिमित्तं च रयण-उद्दीप ।

वार्यासि बुद्धिओ, देवा जलदीह अतरिवा ॥६८०॥

अर्थ :—दान-विशुद्धिकी विशेषता प्रकट करनेके निमित्त, देव मेघोंसे प्रन्तर्हित होते हुए रत्नवृष्टि पूर्वक दुन्दुभी ( बाजे ) बजाते हैं । ६८०॥

पसरइ बाणुघोसो, वादि ‘सुगंधो सुसोयलो पवणो ।

विज्ज-कुसुमेहि गयणं, वरिसइ इय पंच-जोञ्जालि’ ॥६८१॥

अर्थ :—उस समय दानका उद्घोष ( जय-जय शब्द ) फैलता है, सुगन्धित एवं शीतल वायु चलती है और आकाशसे दिव्य फूलोंकी वर्षा होती है । इसप्रकार ये पञ्चाद्वय होते हैं ॥६८१॥

तीर्थकूरोके अग्रस्थ कालका प्रमाण—

उसहायोसुं वासा, सहस्स-बारस-चउदसद्वरसा ।

जीस ‘छदुमस्थ-कालो, छच्छिय’ पउमण्यहे मासा ॥६८२॥

[ वासा १००० । १२ । १४ । १८ । २० । मा ६ ।

१. व. व. क. उ पणपणहव, व. ज. य. कणपणहव । २. व. सुयंका, क. व. म. व. सुयंघो ।

३. व. व. क. म. व. न. थोनालि । ४. व. क. उ. छदुमद्व, ज. य. छदुमस्थ । ५. व. क. क. व. व. उ. सुम्बिह ।



अथ : — अष्टमहिकर्मादितीर्थयात्रादिषु श्रुतिस्मृत्युक्त कृत्यान्तरां व्याहृत्य वयं, सोदह वर्षं, अठारह वर्षं और बीस वर्षं प्रमाण तथा पद्मप्रभका मात्र छह मास प्रमाण ही है ॥६८॥

आसाणि णव सथासे, आसा चंदप्यहम्नि तिणिज तवो ।

अवृ-ति-वृ-एषका ति-हृ-द्विगि-सोसस-अउवग-अउकवी वासा ॥६८३॥

सुपास वास ६ । चंद मा ३ । पुष्प वा ४ । सीयल वास ३ । सेयं वा २ ।

वाङ् १ । विमल ३ । जणत २ । धम्म १ । संति १६ । कुंथु ११ । वर १६ ।

अर्थ :—सुषार्वनाथ स्वामीका छथस्थ काल नौ वर्ष, चन्द्रप्रसका तीन मास और इसके आगे क्रमशः चार, तीन, दो, एक, तीन, दो, एक, सोलह, चारका वर्ग ( सोलह ) और फिर चारकी कृति ( सोलह ) वर्ष प्रमाण है ॥६८१॥

मल्लि-जिणे छट्ठिदसा, एकरारस सुब्बवे जिणे मासा ।

अभिजाते णव वासा, दिगाणि सुवपुण नेमि जिणे ॥६८४॥

। मस्ति-दिश ६ । सुब्बद मा ११ । णमि वा ६ । जेमि दि ३६ ।

प्रश्न :- क्षयस्थ कालमें मरित जिनैन्द्रके छह दिन, मुनिमुव्रत जिनैन्द्रके ग्यारह मास, नमिनाथके नौ वर्ष और नेमिनाथके छप्पन दिन भ्यतीत हुए ॥६८४॥

पास्त-जिणें सजुमासा, बारस-बास्ताणि बडदमाण-जिणें ।

एतियमेसे सभए, केवलभाषा<sup>१</sup> न साण उप्यर्ण ॥१८५॥

। पास भास ४ । वीर वासा १२ ।

वर्ष :- पापलं जिनेन्द्रका चार मास और वर्धमान जिनेन्द्रका बारह वर्ष प्रमाण छद्मस्य-  
काल रहा है । इतने समय ( उपर्युक्त छद्मस्य काल ) तक उन तीर्थकरोंको केवलज्ञान नहीं  
हुआ या ॥६८५॥

चौबोसों तीरं कुरोंके केवलज्ञानको त्रिधि, समय, नक्षत्र और स्थानका निर्देश—

**फाल्गुन-किष्कंधेदारसि-पुष्यन्हें पुरिमताल-नक्षत्रम् ।**

**उत्तराश्विने उत्पन्नो ज्येष्ठेऽपराह्णम् केवलज्ञान उत्पन्न ॥६८६॥**

अर्थ :—कृष्णमनाथको फाल्गुन-कृष्णा एकादशोके पूर्वाह्णमें उत्तराषाढा नक्षत्रके उदित रहते पुरिमताल नगरमें केवलज्ञान उत्पन्न हुआ ॥६८६॥

**पुस्तस्त सुक्ल-चोदसि-अवरन्हें रोहिणिम्भ नक्षत्रम् ।**

**अजित-जिने उपपन्नं, अजंतजाणं सहेतुगम्भ वने ॥६८७॥**

अर्थ :—अजित जिनेन्द्रको पौष-शुक्ला चतुर्दशोके अपराह्णमें रोहिणी नक्षत्रके रहते सहेतुक वनमें केवलज्ञान उत्पन्न हुआ ॥६८७॥

**कस्तिय-सुक्लके पंचमि-अवरन्हें मिगसिरम्भ रिक्खम्भ ।**

**संभव-जिक्खस्स जादं, केवलज्ञानं सु तम्भ वने ॥६८८॥**

अर्थ :—सम्भवनाथ जिनेन्द्रको कार्तिक शुक्ला पंचमीके अपराह्णमें मृगशिरा नक्षत्रके रहते सहेतुक वनमें केवलज्ञान उत्पन्न हुआ ॥६८८॥

**पुस्तस्त पुष्णिमाए, रिक्खम्भ पुणक्खसुम्भ अवरन्हें ।**

**उग्र-वने अभिनवण-जिक्खस्स संजाव-सज्जगमं ॥६८९॥**

अर्थ :—अभिनन्दन जिनेन्द्रको पौष ( शुक्ला ) पूर्णिमाके अपराह्णमें पुनर्वसु नक्षत्रके रहते उग्र-वनमें सर्वगत ( केवलज्ञान ) उत्पन्न हुआ ॥६८९॥

**वइसाह-सुक्ल-वसमी, मघाए रिक्खे सहेतुगम्भ वने ।**

**अवरन्हें उपपन्नं, सुमइ-जिने केवलं जाणं ॥६९०॥**

अर्थ :—सुमति जिनेन्द्रको वैशाख-शुक्ला दसमीके अपराह्णमें मघा नक्षत्रके रहते सहेतुक वनमें केवलज्ञान उत्पन्न हुआ ॥६९०॥

**वइसाह-सुक्ल-वसमी, चैत्ता-रिक्खे मणोज्झकाणे ।**

**अवरन्हें उपपन्नं, पउमप्यह-जिणवरिदस्स ॥६९१॥**

अर्थ :—पद्मप्रभ जिनेन्द्रको वैशाख-शुक्ला दसमीके अपराह्णमें बिना नक्षत्रके रहते मनोहर उद्यानमें केवलज्ञान उत्पन्न हुआ ॥६९१॥

फाल्गुण-कार्तिक सप्तमि, बिसाह-रविवर सहकुण्डलि वर ।  
अवरण्हे 'असक्त', सुपास-शाहस संजाव ॥६९२॥

अर्थ :—सुपासनाथको फाल्गुन कृष्णा सप्तमीके अपराह्णमें बिशाखा नक्षत्रके रहते सहकुण्डल वनमें असपत्न ( केवलज्ञान ) उत्पन्न हुआ था ॥६९२॥

तद्विषये अणुराहे, सख्यस्थ-वरों विरासत पश्चिमए ।  
चंद्रपूह-जिरा-शाहे, संजाव सख्यभाव-गह ॥६९३॥

अर्थ :—चन्द्रप्रभ जिनेन्द्रको उसी दिन ( फाल्गुन कृष्णा सप्तमीको ) दिनके पश्चिम भाग ( अपराह्ण ) में अनुराधा नक्षत्रके रहते सर्वार्थ वनमें सम्पूर्ण पदार्थोंको अवगत करने वाला केवलज्ञान उत्पन्न हुआ ॥६९३॥

कलिय-सुके तदिए, अवरण्हे मूल-मे य पुष्कवने ।  
सुविहि-जिणे उप्पण्ण, तिहुवण-संखोभयं जाणं ॥६९४॥

अर्थ :—सुविधि जिनेन्द्रको कार्तिक-शुक्ला तृतीयाके अपराह्णमें मूल नक्षत्रके रहते पुष्प-वनमें तीनों लोकोंको आश्चर्यान्वित करनेवाला केवलज्ञान उत्पन्न हुआ ॥६९४॥

पुससस किण्ह-बोहसि-पुष्पासावे विणसस पश्चिमए ।  
सौमल-जिणसस जाव, अणंतभाणं सहकुण्डलि वने ॥६९५॥

अर्थ :—सौतलनाथ तीर्थंकरको पौष-कृष्णा चतुर्दशीको दिनके पश्चिम भागमें पूर्वाषाढा नक्षत्रके रहते सहकुण्डल वनमें अनन्तज्ञान उत्पन्न हुआ ॥६९५॥

माघसस य अमवासे, पुण्णह्णे सधनभम्मि सेयसे ।  
जावं केवलणाणं, सुविसास-मणोहरअजाणे ॥६९६॥

अर्थ :—श्रेश्ठांस जिनेन्द्रकी माघकी अमावस्याके दिन पूर्वाह्णमें श्रवण नक्षत्रके रहते मनोहर उद्यानमें केवलज्ञान प्राप्त हुआ ॥६९६॥

माघस्त पृष्णिमाए, विशाह-रिषले मणोहरउद्याने ।  
अवरण्हे संजाव, केवलज्ञानं त्वं प्राप्तुपूज्य-जिने ॥६९७॥

अर्थ :—वामपूज्य जिनेन्द्रकी माघ ( शुक्ला ) पूर्णिमाके अपराह्णमें विशाखा नक्षत्रके रहते मनोहर उद्यानमें केवलज्ञान उत्पन्न हुआ ॥६९७॥

पुस्तो सिद्ध-वसमीए, अवरण्हे तह य उचरासाखे ।  
विमल-जिनिदे<sup>१</sup> जादं, अनंतणानं सहेदुगम्मि वणे ॥६९८॥

अर्थ :—विमल जिनेन्द्रकी पौष-शुक्ला दसमीके अपराह्णमें उत्तराषाढा नक्षत्रके रहते सहेतुक वनमें अनन्तज्ञान उत्पन्न हुआ ॥६९८॥

चेत्तस्स य अमवासे, रेवदि-रिषले सहेदुगम्मि वणे ।  
अवरण्हे संजावं, केवलणानं अणत जिने ॥६९९॥

अर्थ :—अनन्त जिनेन्द्रकी चैत्रमासकी अमावस्याके अपराह्णमें रेवती नक्षत्रके रहते सहेतुक वनमें केवलज्ञान उत्पन्न हुआ ॥६९९॥

पुत्तस्स पृष्णिमाए, पुत्ते रिषले सहेदुगम्मि वणे ।  
अवरण्हे संजावं, धम्म-जिनिवस्स<sup>२</sup> तव्वणदं ॥७००॥

अर्थ :—धर्मनाथ जिनेन्द्रकी पौष मासकी पूर्णिमाके दिन अपराह्णमें पुष्य नक्षत्रके रहते सहेतुक वनमें सर्व पदार्थोंको जामने वाला केवलज्ञान उत्पन्न हुआ ॥७००॥

पुत्ते 'सुक्केयारसि-भरणी-रिषले दिणस्स पच्छिमाए ।  
अव-वणे 'संजावं, सत्ति-जिणेसस्स केवलं णाणं ॥७०१॥

अर्थ :- शान्ति जिनेशको पौष शुक्ला एकादशीके दिन दिवसके पश्चिम भागमें भरणी नक्षत्रके रहते आस्रवनमें केवलज्ञान उत्पन्न हुआ ॥७०१॥

चेतस्स सुक्क-तद्विण्णं, कित्तिण-रिक्खे सहेवुगम्मि वणे ।  
अवरण्हे उत्पण्णं, कुण्ड-जिनेस्सस्स केवलं भाणं ॥७०२॥

अर्थ :- कुण्ड जिनेन्द्रको चैत्र-शुक्ला तृतीयाके दिन अपराह्णमें कृतिका नक्षत्रके उदय रहते सहेतुक वनमें केवलज्ञान उत्पन्न हुआ ॥७०२॥

कत्तिण-सुक्के बारसि-रेवहि-रिक्खे सहेवुगम्मि वणे ।  
अवरण्हे उत्पण्णं, केवलभाणं अर-जिणस्स ॥७०३॥

अर्थ :- अरनाथ जिनेन्द्रको कार्तिक-शुक्ला द्वादशीके अपराह्णमें रेवती नक्षत्रके रहते सहेतुक वनमें केवलज्ञान उत्पन्न हुआ ॥७०३॥

फल्गुण-किण्हे बारसि, मत्तिणि-रिक्खे मणोहरज्जाणे ।  
अवरण्हे मत्ति-जिणे, केवलभाणं समुत्पण्णं ॥७०४॥

अर्थ :- मत्तिनाथ जिनेन्द्रको फाल्गुन कृष्णा द्वादशीके अपराह्णमें अश्विनी नक्षत्रके रहते मणोहर उद्यानमें केवलज्ञान उत्पन्न हुआ ॥७०४॥

फल्गुण-किण्हे छट्ठी-मुक्खण्हे सवण-मे य नील-वणे ।  
मुणिसुक्खयस्स जावं, असहाय-परक्कमं भाणं ॥७०५॥

अर्थ :- मुनिभुवत जिनेशको फाल्गुन कृष्णा षष्ठीके पूर्वाह्णमें श्रवण नक्षत्रके रहते नील वनमें असहाय-पराक्रमरूप केवलज्ञान उत्पन्न हुआ ॥७०५॥

वेत्तस्स सुक्क-तद्विण्णं, अत्तिणि-रिक्खे विणस्स पत्तिमण्णं ।  
विस्स-वणे संजावं, अणत्त-भाणं नत्ति-जिणस्स ॥७०६॥

अर्थ :- नमिनाथ जिनेन्द्रको चैत्र-शुक्ला तृतीयाको दिनके पश्चिम भागमें अश्विनी नक्षत्रके रहते विजय वनमें अनन्तज्ञान उत्पन्न हुआ ॥७०६॥

अस्सउज-सुवक-पावबदि-पुवण्ह उज्जवत्त-गार-सिहर ।

चित्ते रिक्खे जावं, जेमिस्स य केवलं जाणं ॥७०७॥

अर्थ :—नेमिनाथको आसोज शुक्ला प्रतिपदाके पूर्वाह्णमें चित्रा नक्षत्रके रहते ऊर्जयन्त-गिरिके शिखर पर केवलज्ञान उत्पन्न हुआ ॥७०७॥

चित्ते बहुल-चउत्थो-बिसाह-रिक्खम्मि पातणाहस्स ।

सवकपुरे पुवण्हे, केवलणार्णं समुत्पण्णं ॥७०८॥

अर्थ :—पार्वनाथको चैत्र कृष्ण चतुर्थीके पूर्वाह्णमें विशाखा नक्षत्रके रहते शक्रपुरमें केवलज्ञान उत्पन्न हुआ ॥७०८॥

बहसाह-सुवक-वसमी, हत्ते रिक्खम्मि वीर-णाहस्स ।

'रिपुकूल-गदी-तीरे, प्रवरण्हे केवलं जाणं ॥७०९॥

अर्थ :—वीरनाथ जिनेन्द्रकी वैशाख शुक्ला दसमीके अपराह्णमें हस्त नक्षत्रके रहते अजु-कूला नदीके किनारे केवलज्ञान उत्पन्न हुआ ॥७०९॥

तीर्थक्षुरोके केवलज्ञानका अन्तरकाल—

जणमंतरेसु पुह पुह, पुम्मिस्सणं<sup>१</sup> कुमार-रज्जसां ।

छहुमत्थस्सा य कालं, अवणिय 'पण्डित्त-तित्थकसाणं'<sup>२</sup> ॥७१०॥

कोमार-रज्ज-छहुमत्थसयमाणम्हि भेलिखे होदि ।

केवलसाणुप्पत्ती - अंतरमाणं<sup>३</sup> जिणिवाणं ॥७११॥

अजि = सा ५० ल को । व ८३११०१२ ।

संभ = सा ३० ल को । जंगारि ३ । वास २ ।

१. व. अजुसुन । २. व. व. क. व. पण्डित्तसायं । ३. व. व. क. ज. य. व. पुम्मिस्सं ।

४. व. व. उ. तित्थकसाणं । ५. व. व. क. ज. य. उ. प्रणतमाणं विणिवाणं ।



केवलज्ञानका स्वामी—

( शास्त्र-संविक्तीकृत वृत्तम् )

'जे संसार-सरीर-भोग-विसए, निश्चये-निश्चाहिणो' ।  
 जे सम्मस्त-बिभूषितवा सविणया, घोरं अरंता तबं ॥  
 जे सउभाय-महद्धि-वद्धिब गवा, भाणं च कम्मंतकं ।  
 ताणं केवलज्ञानमुत्तम-पदं, जाएवि किं कोहुकां ? ॥७१२॥

अर्थ :—जो संसार, शरीर और भोग-विषयोंमें निर्वेद धारण करने वाले हैं, सम्यक्स्वसे विभूषित हैं, विनयसे संयुक्त हैं, घोर तपका आचरण करते हैं, स्वाध्यायसे महान् भूद्धि एवं वृद्धिको प्राप्त हैं और कर्मोंका अन्त करने वाले ध्यानको भी प्राप्त हैं, उनके यदि केवलज्ञानरूप उत्तम पद उत्पन्न होता है तो इसमें क्या आश्चर्य है ? ॥७१२॥

केवलज्ञानोत्पत्तिके पश्चात् शरीरका ऊर्ध्वगमन—

जावे केवलज्ञाने, परमोदासं जिजाण 'सम्भाणं' ।  
 गच्छवि 'उबरि' चाणा, पंच-सहस्सानि वसुहावी ॥७१३॥

अर्थ :—केवलज्ञान उत्पन्न होने पर समस्त तीर्थंकरोंका परमोदारिक शरीर पृथिवीसे पाँच हजार वनुष प्रमाण ऊपर चला जाता है ॥७१३॥

इन्द्रादिकों को केवलज्ञानोत्पत्तिका परिज्ञान—

भुवणसयस्स ताहे', अइसय'-कोजीअ होवि पक्खोही ।  
 सोहम्म-पहुदि-इ'वाणं' आसणाइ' पि कंषंति ॥७१४॥

अर्थ :—उस समय तीनों लोकोंमें अतिशय आश्रय प्रभाव उत्पन्न होता है और तीर्थंकरादिक इन्द्रोंके आसन सम्पाद्यमान होते हैं ॥७१४॥

१. व. जो ।

२. क. ज. व. उ. निश्चाहिणे

३. क. प. उ. सम्भाणं ।

४. व. व.

क. व. प. उ. उबरे ।

५. व. व. क. ज. प. उ. तावी ।

६. व. क. उ. पइया ।

७. व. व.

क. ज. उ. इ'वा आसणाइ' ।



तीर्थक्षेत्रोंका प्रमुख काम, केवलज्ञान उत्पत्तिके मास, पक्ष आदि तथा केवलज्ञानोत्पत्तिकर्योत्तरकाल-गाथा १८२-७११

| क्र.सं. | नाम        | प्रमुख काल | केवलज्ञान उत्पत्तिके |       |            |           |           |            | केवलज्ञानोत्पत्ति चन्द्राव                            |
|---------|------------|------------|----------------------|-------|------------|-----------|-----------|------------|-------------------------------------------------------|
|         |            |            | मास                  | पक्ष  | तिथि       | समय       | संज्ञा    | स्थान      |                                                       |
| १       | आयननाथ     | १००० वर्ष  | कार्तिक              | कृष्ण | एकादशी     | पूर्वाह्न | वसन्तऋतु  | गुह्यस्थान | २० ला. कोटि या. + ८६६०१२ वर्ष                         |
| २       | भक्तिनाथ   | १२ वर्ष    | पौष                  | शुक्ल | चतुर्विंशी | मकराह्न   | रोहिणी    | सहेतुक     | ३० " + ३ पूर्वांग २ " १                               |
| ३       | सम्भ्रमनाथ | १४ "       | कार्तिक              | कृष्ण | श्रमशी     | मकराह्न   | मृग       | "          | १० " + ४ " ४ " १                                      |
| ४       | प्रभिनन्दन | १८ वर्ष    | पौष                  | शुक्ल | अष्टमि     | श्री      | शुक्ल     | गुह्यस्थान | १० " + ४ " २ " १                                      |
| ५       | सुमतिनाथ   | २० "       | मेषाक्ष              | "     | दशमी       | "         | मघा       | सहेतुक     | १० हजार " + ३ पु. ८१००००० वर्ष                        |
| ६       | वसुधाय     | ९ मास      | "                    | "     | "          | "         | चित्रा    | मनोहर      | १००० " + ४ पूर्वांग ८६ वर्ष                           |
| ७       | मुपासनाथ   | ९ वर्ष     | का०                  | कृष्ण | सप्तमी     | "         | विशाखा    | सहेतुक     | १०० " + ३ " ८१००००० " १                               |
| ८       | चन्द्रप्रभ | ३ मास      | "                    | "     | "          | "         | अनुराधा   | सर्वांग    | १० " + ४ " ३६ " १                                     |
| ९       | पुण्यदत्त  | ४ वर्ष     | का०                  | शुक्ल | द्वितीया   | "         | शुल       | पुण्यवन    | १ को. सा. ७४६६६६ पूर्वा, ८६६६६६ पूर्वांग, ८६६६६६ वर्ष |
| १०      | शोचननाथ    | ३ "        | पौष                  | कृष्ण | चतुर्विंशी | "         | पूर्व पा० | सहेतुक     | ८६६६६०० मा०, २४६६६ पूर्वा, ७०४६६६६६६६६६ वर्ष          |
| ११      | शेयांशनाथ  | २ "        | माघ                  | "     | अमावस      | पूर्वाह्न | श्रमशी    | मनोहर      | २४ सायद — ३३००००१ वर्ष १                              |
| १२      | वासुदेव    | १ "        | माघ                  | शुक्ल | पूर्णिमा   | मकराह्न   | विशाखा    | "          | ३० " ३९००००२ " १                                      |
| १३      | विमलनाथ    | ३ "        | पौष                  | "     | दशमी       | मकराह्न   | व० पा०    | सहेतुक     | ६ " ७४६६६६ " १                                        |



तक्कंपेणं इंदा, संखुण्घोसेण भवणवासि-सुरा ।  
पटह-रवेहि वेतर, सीह-णिजादेण ओइसिया ॥७१५॥

घंटाए कयवासी, गाणुप्पसि जिणाण बाहुणं ।  
पणमंसि भसि-कुत्ता, गंतूणं सस वि कमाओ' ॥७१६॥

अर्थ :—आसन कम्पित होनेसे इन्द्र, साहूके उद्घोषसे भवनवासी देव, पटहके शब्दोंसे म्यन्तरदेव, सिंहनादसे ज्योतिषी देव और घंटाके शब्दसे कल्पवासी देव तीर्थंकरोंके केवलज्ञानकी उत्पत्ति जानकर भक्तियुक्त होते हुए उसी दिशामें सात कदम जाकर प्रणाम करते हैं ॥७१५-७१६॥

अहमिंदा ओ देवा, आसन-कंपेण तं वि णावूणं ।  
गंतूण तेशियं चिय, तस्य ठिया ते नमंसि जिणे' ॥७१७॥

अर्थ :—जो अहमिन्द्र देव हैं वे भी आसन कम्पित होनेसे केवलज्ञानकी उत्पत्ति जानकर धीरे उतने हो (७ कदम) आगे जाकर वहां स्थित होते हुए, जिनेन्द्रदेवकी नमस्कार करते हैं ॥७१७॥

कुबेर द्वारा समवसरणकी रचना—

ताहे सक्काणाए, जिणाण सयसाण सनवसरणाणि ।  
विचिकरियाए घणढो, बिरएवि विचिस-रवेहि ॥७१८॥

अर्थ :—उस समय सौधमैन्द्रकी आज्ञासे कुबेर विक्रिया द्वारा सभी तीर्थंकरोंके समवसरणों की अद्भुत रूपमें रचना करता है ॥७१८॥

समवसरणका निरूपण करनेकी प्रतिज्ञा—

उबभातीयं ताणं, को सक्कइ खण्णिदुं सयस-रूपं ।  
एण्ह' सव-मेसमहं, साहेमि अहाणुपुक्खोए ॥७१९॥

अर्थ :—उन समवसरणोंके सम्पूर्ण अनुपम स्वरूपका वर्णन करनेमें कौन समय है ? अब मैं (यतिवृषभाधायं) आनुपूर्वी कमसे उनके स्वरूपका अल्प मात्र (बहुत थोड़ा) कथन करता हूँ ॥७१९॥

समवसरणोंके निरूपणमें इकतीस अधिकारोंका निर्देश—

सामान्यभूमि-प्रमाणं, माणं सोपानाणां विष्णुसो ।

वीथी धूलोत्ताला, चैत्यप्रासाद-भूमिभो ॥७२०॥

६

गृह्यशाला यथा, वेदी स्तूपी य वेदि-वस्ति-स्त्रिदी ।

शाला उषज्ज-वसुहा, गृह्यशाला य वेदि-मय-शोणी ॥७२१॥

११

सालो कल्पमहीभो, गृह्यशाला य वेदि-भवनमही ।

भूहा शाला सिरिमंढव' य शरस-गणान विष्णुसो ॥७२२॥

६

वेदी पठमं विविधं, तविधं पीठं च 'गंधकुटी-माणं ।

इति इगितोसा पुह पुह, अहियारा समवसरणानं ॥७२३॥

५

अर्थ :—१ सामान्य भूमिका प्रमाण, २ सोपानोंका प्रमाण, ३ विष्णुस, ४ वीथी, ५ धूलि-  
शाला, ६ चैत्यप्रासाद-भूमियाँ, ७ नृत्यशाला, ८ मानस्तम्भ, ९ वेदी, १० स्त्रिका, ११ वेदी, १२ स्तूप-  
भूमि, १३ शाला, १४ उषज्जभूमि, १५ नृत्यशाला १६ वेदी, १७ उषज्ज-शोणी, १८ शाला, १९ कल्प-  
भूमि, २० नृत्यशाला, २१ वेदी, २२ भवनमही, २३ स्तूप, २४ शाला २५ श्रीमण्डप, २६ शरद्व  
सभाओंको रचना, २७ वेदी, २८ पीठ, २९ द्वितीय पीठ, ३० तृतीय पीठ और ३१ गंधकुटीका प्रमाण,  
इस प्रकार समवसरणके कथनमें पृथक्-पृथक् ये इकतीस अधिकार हैं ॥७२०-७२३॥

१. इ. न. य. सिरिमंढविवहिरसगणान, ब. सिरिमंढवि य हरिसिगणान । न. सिरिमंढवि य हरिस-  
गणान, क. सिरिमंढवि य हरिसगणान । २. क. उ. पञ्चमदि, द. ज. य. पञ्चमदि ।

सामान्य भूमि, उसका प्रमाण एवं अवसर्पिणीकालके समवसरणोंका प्रमाण—

रश्मिन्दल इव वट्टा, सयसा वि अखण्ड-इन्द्रणीलमई ।

सामण-सिदी बारस, जोयण-मेत्तं मि उसहस्स ॥७२४॥

तत्तो वे - कोसुणो, पसेयं मेमिणाह - वज्जंतं ।

चउमामेण विहीणा, पासस्स य वड्डमानस्स ॥७२५॥

उ जोयण १२ । अजिय ११ । सं ११ । अहिणं ११ । सु १० । प १० ।

मु ६ । च १० । पु ५ । सो १० । से ७ । वा १० । वि ६ । अ १० ।

स ५ । सं १ । कु ४ । अ ३ । म ३ । मु ३ । ए २ । ने ३ । पा ३ । वी १ ।

अर्थ :—सगवान् ऋषभदेवके समवसरणकी सम्पूर्ण सामान्य-भूमि सूर्यमण्डलके सदृश गोल, अखण्ड, इन्द्रनीलमणिमयी तथा बारह योजन प्रमाण विस्तारसे युक्त थी । इसके आगे मेमिणाथ पर्यंत प्रत्येक तीर्थंकरके समवसरणकी सामान्य भूमि दो कोस कम तथा पास्वनाथ एवं वर्धमान तीर्थंकरकी योजनाके चतुर्य भागसे ( ३ यो० ) कम थी ॥७२४-७२५॥

उत्सर्पिणीकाल सम्बन्धी समवसरणोंका प्रमाण—

अवसर्पिणीए एहं, भणिई उत्सर्पिणीए विबरीयं ।

बारस-जोयण-मेत्ता, समल-विदेह-तिस्थ-कषायं ॥७२६॥

१ । २ । ३ । २ । ३ । ३ । ४ । ३ । ५ । ३ । ६ । ३ । ७ । ३ ।

८ । ३ । ९ । ३ । १० । ३ । ११ । ३ । १२ ।

अर्थ :—यह जो सामान्य भूमिका प्रमाण बतलाया गया है, वह अवसर्पिणी कालका है । उत्सर्पिणी कालमें इससे विपरीत है । विदेह क्षेत्रके सभी तीर्थंकरोंके समवसरणकी भूमि बारह योजन प्रमाण ही रहती है ॥७२६॥

मतान्तरसे समवसरणका प्रमाण—

इह केई आहरिया, पण्णारस-कम्मभूमि-आवाणं ।

तिस्थयराणं बारस-जोयण-परिमाण-मिच्छंति ॥७२७॥

। १२ ।

पाठान्तरम्

। सामण-भूमी समता ।

अर्थ :—यहाँ कोई आचार्य पन्द्रह कर्मभूमियोंमें उत्पन्न हुए तीर्थक्षुरोंकी समवसरण-भूमिको चारह योजन प्रमाण मानते हैं ॥७२९॥

पाठान्तर

। सामान्य-भूमिका वर्णन समाप्त हुआ ।

सोपानोंके विस्तार आदिका निर्देश—

सुर-गर-तिरियारोहण-सोबाणा चउविंशसु पत्तेयं ।

बीस-सहस्रा गयणे, कणयमया उड्ड-उड्डम्मि ॥७२८॥

। सोपान २०००० । ४ ।

अर्थ :—देवों, मनुष्यों और तिर्यञ्चोंके चढ़नेके लिए आकाशमें चारों दिशाओंमेंसे प्रत्येक दिशामें ऊपर-ऊपर स्वर्णमय बीस-बीस हजार सीढ़ियाँ होती हैं ॥७२८॥

उसहादी चउबीसं, ओमण एकूण नेमि-यवजंसं ।

चउबीसं भजिदम्भा, बीहं सोबाण जादववा ॥७२९॥

|    |    |    |    |    |    |    |    |    |    |    |    |    |    |    |
|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|
| २४ | २३ | २२ | २१ | २० | १९ | १८ | १७ | १६ | १५ | १४ | १३ | १२ | ११ | १० |
| २४ | २४ | २४ | २४ | २४ | २४ | २४ | २४ | २४ | २४ | २४ | २४ | २४ | २४ | २४ |
| ६  | ८  | ७  | ६  | ५  | ४  | ३  |    |    |    |    |    |    |    |    |
| २४ | २४ | २४ | २४ | २४ | २४ | २४ | २४ |    |    |    |    |    |    |    |

अर्थ :—ऋषभदेवके ( समवसरणमें ) सोपानोंकी लम्बाई २४ से भाजित चौबीस योजन है । पश्चात् नेमिनाथ पर्यन्त ( भाज्य राशियोंसे ) क्रमशः एक-एक योजन कम होती गई है ॥७२९॥

पासम्मि पंच कोसा, चउ बीरे अहुतास-मवहरिवा ।

इगि-हत्थुज्जेहा से, सोबाणा एक-हत्थ-वासा य ॥७३०॥

५ ४ ३ २ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १

॥ सोबाणा<sup>१</sup> समप्ता ॥

**अर्थ** :—भगवान् पार्श्वनाथके समवसरणमें सीढ़ियोंकी लम्बाई अड़तालीससे भाजित पाँच कोस और वीरनाथके अड़तालीससे भाजित चार कोस प्रमाण थी। वे सीढ़ियाँ एक हाथ ऊँची और एक ही हाथ विस्तारवाली थीं ॥७३०॥

। सोपानोंका कथन समाप्त हुआ ।

**समवसरणोंका विन्यास—**

**आर्चिकविधि** :— आचार्य जी सुनिश्चितकर जो मङ्गलान्न

चउ साला वेदीओ, पंच तवतेसु अट्ट भूमीओ ।

सत्त्वभर्ततरभागे, पत्तेकं तिणि पीडाणि ॥७३१॥

। साला ४ । वेदी ५ । भूमि ८ । पीडाणि ३ ।

। विष्णुसो सन्तो ।

**अर्थ** :—चार कोट, पाँच वेदियाँ, इनके बीच आठ भूमियाँ और सर्वत्र प्रत्येकके अन्तर—भागमें तीन पीठ होते हैं ॥७३१॥

। विन्यास समाप्त हुआ ।

**समवसरणस्थ वीथियोंका निरूपण—**

पत्तेकं चउसंका, बीहीओ पदम-पीड-पञ्जंता ।

जिय-जिय-जिण-सोवाणय-बीहसन-सरित-बिस्वारा ॥७३२॥

|    |    |    |    |    |    |    |    |    |    |    |    |    |    |    |    |
|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|
| २४ | २३ | २२ | २१ | २० | १९ | १८ | १७ | १६ | १५ | १४ | १३ | १२ | ११ | १० | ९  |
| २४ | २४ | २४ | २४ | २४ | २४ | २४ | २४ | २४ | २४ | २४ | २४ | २४ | २४ | २४ | २४ |

|    |    |    |    |    |      |    |    |   |
|----|----|----|----|----|------|----|----|---|
| ८  | ७  | ६  | ५  | ४  | [ ३  | ५  | ४  | ] |
| २४ | २४ | २४ | २४ | २४ | [ २४ | ४८ | ४८ | ] |

**अर्थ** :—प्रथम पीठ पर्यन्त प्रत्येकमें अपने-अपने तीर्थ-क्षुरके समवसरणभूमिस्थ सोपानोंकी लम्बाईके बराबर विस्तार वाली चार वीथियाँ होती हैं ॥७३२॥

एकैककानं दो-दो<sup>१</sup>, कोसा बीहीन वं-परिमाणं ।

कमसो हीनं, अप्य न, दो-दो<sup>२</sup> के<sup>३</sup> सि कमसो ॥७३३॥

च सहै न चिय-सोपाथान बीहसणं पि ।

पाठान्तरम् ।

अर्थ :—एक-एक बीधीके विस्तारका परिमाण दो-दो कोस है और बीर जिनेन्द्र तक यह क्रमशः हीन होता गया है, ऐसा अन्य कितने ही आचार्य कहते हैं ॥७३३॥

च शब्दसे अपने-अपने सोपानोंकी दीर्घता भी ( उसी प्रकार दो-दो कोस है और क्रमशः कम होती गई है, ऐसा जानना चाहिए । )

पाठान्तर

पंच-सया बावणा, कोसाणं बीहियाण बीहसं ।

चउत्थीस-हिवा कमसो, तेवीसुणा य जेमि-पउजंतं ॥७३४॥

|     |     |     |     |     |     |     |     |     |
|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|
| ५५२ | ५२६ | ५०६ | ४८३ | ४६० | ४३७ | ४१४ | ३९१ | ३६८ |
| २४  | २४  | २४  | २४  | २४  | २४  | २४  | २४  | २४  |

|     |     |     |     |     |     |     |     |     |
|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|
| ३४५ | ३२२ | २९९ | २७६ | २५३ | २३० | २०७ | १८४ | १६१ |
| २४  | २४  | २४  | २४  | २४  | २४  | २४  | २४  | २४  |

|     |     |    |    |
|-----|-----|----|----|
| १३८ | ११५ | ९२ | ६९ |
| २४  | २४  | २४ | २४ |

अर्थ :—भगवान् ऋषभदेवके समवसरणमें बीधियोंकी लम्बाई चौबीस से अधिक पाँचसौ बावन कोस प्रमाण की और इसके भागे नेमिनाथ पर्यन्त क्रमशः भाज्यराशि (५५२) में से उत्तरोत्तर तेईस कम करके चौबीसका भाग देने पर जो सम्ब आवे उतनी बीधियोंकी दीर्घता होती है ॥७३४॥

पञ्चारसेहि अहियं, कोसाथ सयं च पासणाहम्मि ।

देवम्मि बहुभाणे, बाणउत्ती महुतास-हिवा ॥७३५॥

|     |    |
|-----|----|
| ११५ | ९२ |
| ४८  | ४८ |



अर्थ :—भगवान् पार्श्वनाथके समयसरणमें वीथियोंकी दीर्घता अड़तालीससे भाजित एकसौ पन्द्रह कोस और वर्धमान जिनके अड़तालीससे भाजित वानर्व कोस प्रमाण थी ॥७३५॥

वीही-वो-पासेसु, णिम्मल- फलिहोवसेहि<sup>१</sup> रइवाओ ।

वो वेवीओ वीही-वीहस-समाण-वीहसा ॥७३६॥

|     |     |     |     |     |     |     |     |     |     |     |
|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|
| ५५२ | ५२६ | ५०६ | ४८३ | ४६० | ४३७ | ४१४ | ३९१ | ३६८ | ३४५ | ३२२ |
| २४  | २४  | २४  | २४  | २४  | २४  | २४  | २४  | २४  | २४  | २४  |

|     |     |     |     |     |     |     |     |     |    |    |
|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|----|----|
| २६६ | २७६ | २५३ | २३० | २०७ | १८४ | १६१ | १३८ | ११५ | ९२ | ६९ |
| २४  | २४  | २४  | २४  | २४  | २४  | २४  | २४  | २४  | २४ | २४ |

|     |    |
|-----|----|
| ११५ | ९२ |
| ४८  | ४८ |

अर्थ :—वीथियोंके दोनों पार्श्वभागोंमें वीथियोंकी दीर्घताके सदृश दीर्घतासे युक्त और निर्मल स्फटिक-पाषाणसे रचित दो वेदियाँ होती हैं ॥७३६॥

वेवीण रुं व वंडा, अहुहहिवाणि<sup>२</sup> सुस्सहस्साणि ।

अहुइज्जसएहि, कमेण हीणाणि नेमि-वज्जंती ॥७३७॥

|      |      |      |      |      |      |      |      |
|------|------|------|------|------|------|------|------|
| ६००० | ५७५० | ५५०० | ५२५० | ५००० | ४७५० | ४५०० | ४२५० |
| ८    | ८    | ८    | ८    | ८    | ८    | ८    | ८    |

|      |      |      |      |      |      |      |      |
|------|------|------|------|------|------|------|------|
| ४००० | ३७५० | ३५०० | ३२५० | ३००० | २७५० | २५०० | २२५० |
| ८    | ८    | ८    | ८    | ८    | ८    | ८    | ८    |

|      |      |      |      |      |     |
|------|------|------|------|------|-----|
| २००० | १७५० | १५०० | १२५० | १००० | ७५० |
| ८    | ८    | ८    | ८    | ८    | ८   |

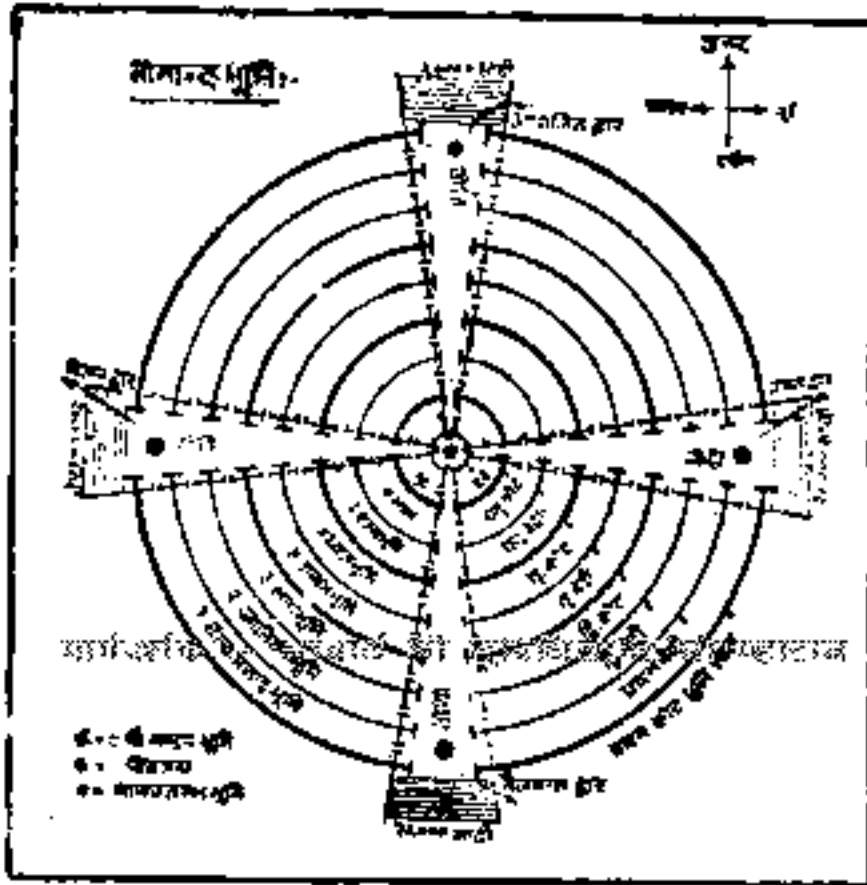
अर्थ :—भगवान् ऋषभदेवके समयसरणमें वेदियोंकी मोटाई छह हजार बन्धुष प्रमाण थी । पुनः इससे आगे भगवान् नेमिनाथ पर्यन्त क्रमशः उत्तरोत्तर अढ़ाई सौ-अढ़ाई सौ कम होते गये हैं । ये सभी राशिमाँ ग्राठ-आठसे भाजित हैं ॥७३७॥



समसदरणों, सोपानों, सीढ़ियों और वेदियोंका प्रमाण

| क्रमक | अथसिंहासी<br>कालके समय<br>का प्रमाण<br>पा. ७२४-७२५ | उत्सवसिंहासी<br>कालके समय<br>का प्रमाण<br>पा. ७२६ | समसदरणोंके सोपानोंकी |                   |                  | सीढ़ियोंकी        |                   | वेदियोंकी         |                   |                  |
|-------|----------------------------------------------------|---------------------------------------------------|----------------------|-------------------|------------------|-------------------|-------------------|-------------------|-------------------|------------------|
|       |                                                    |                                                   | सम्पाई<br>पा. ७२६    | सीढ़ाई<br>पा. ७२७ | ऊँचाई<br>पा. ७२८ | सीढ़ाई<br>पा. ७२९ | सम्पाई<br>पा. ७३० | सम्पाई<br>पा. ७३१ | सीढ़ाई<br>पा. ७३२ | ऊँचाई<br>पा. ७३३ |
| १     | १२ यो०                                             | १ यो०                                             | १ योजन               | १ हा०             | १ हाथ            | ४ अनुग            | ४४ यो०            | ४४ यो०            | ७५० अनुग          | २००० अनुग        |
| २     | ११३ "                                              | १३ "                                              | ३० कोस               | १ "               | १ "              | ३२ "              | ४३३ "             | ४३३ "             | ७१८३ "            | १८०० "           |
| ३     | ११ "                                               | १३ "                                              | ३३ "                 | १ "               | १ "              | ३३ "              | ४३३ "             | ४३३ "             | ६८७३ "            | १६०० "           |
| ४     | १०६ "                                              | ९ "                                               | ३३ "                 | १ "               | १ "              | ३३ "              | ४३३ "             | ४३३ "             | ६४६३ "            | १४०० "           |
| ५     | १० "                                               | २३ "                                              | ३३ "                 | १ "               | १ "              | ३३ "              | ४३३ "             | ४३३ "             | ६२५ "             | १२०० "           |
| ६     | २३ "                                               | ३ "                                               | ३३ "                 | १ "               | १ "              | ३३ "              | ४३३ "             | ४३३ "             | ५२३६ "            | १००० "           |
| ७     | १ "                                                | ३३ "                                              | ३ "                  | १ "               | १ "              | ३ "               | ४३३ "             | ४३३ "             | ४६२३ "            | ८०० "            |
| ८     | ८३ "                                               | ४ "                                               | २३ "                 | १ "               | १ "              | २३ "              | ४३३ "             | ४३३ "             | ४३१३ "            | ६०० "            |
| ९     | ८ "                                                | ४३ "                                              | २३ "                 | १ "               | १ "              | २३ "              | ४३३ "             | ४३३ "             | ४०० "             | ४०० "            |
| १०    | ७३ "                                               | ५ "                                               | २३ "                 | १ "               | १ "              | २३ "              | ३३३ "             | ३३३ "             | ४६८३ "            | ३६० "            |
| ११    | ७ "                                                | ४३ "                                              | २३ "                 | १ "               | १ "              | २३ "              | ३३३ "             | ३३३ "             | ४३७३ "            | ३२० "            |
| १२    | ६३ "                                               | ६ "                                               | २३ "                 | १ "               | १ "              | २३ "              | ३३३ "             | ३३३ "             | ४०६३ "            | २८० "            |

| १३ | १ यो० | ६३ यो० | २ कोश | १ हाथ | १ हाथ | २ धनुष | २३ यो० | २३ यो० | ३७५ धनुष | २४० धनुष |
|----|-------|--------|-------|-------|-------|--------|--------|--------|----------|----------|
| १४ | ५१    | ७      | १३    | १     | १     | १३     | २३३    | २३३    | ३४३३     | २००      |
| १५ | ५     | ७३     | १३    | १     | १     | १३     | २३३    | २३३    | ३१२३     | १००      |
| १६ | ५१    | ८      | १३    | १     | १     | १३     | २३३    | २३३    | २०१३     | १५०      |
| १७ | ५     | ८३     | १३    | १     | १     | १३     | २३३    | २३३    | २०१३     | १५०      |
| १८ | ५३    | ९      | १३    | १     | १     | १३     | २३३    | २३३    | २०१३     | १५०      |
| १९ | ५     | ९३     | १३    | १     | १     | १३     | २३३    | २३३    | २०१३     | १५०      |
| २० | २३    | १०     | १३    | १     | १     | १३     | २३३    | २३३    | २०१३     | १५०      |
| २१ | २     | १०३    | १३    | १     | १     | १३     | २३३    | २३३    | २०१३     | १५०      |
| २२ | १३    | ११     | १३    | १     | १     | १३     | २३३    | २३३    | २०१३     | १५०      |
| २३ | १३    | ११३    | १३    | १     | १     | १३     | २३३    | २३३    | २०१३     | १५०      |
| २४ | १     | १२     | १३    | १     | १     | १३     | २३३    | २३३    | २०१३     | १५०      |



समवसरणिका चित्र

धूलिसालोका सम्पूर्ण वर्णन—

सम्पूर्ण बाहिरए, धूलोत्ताला 'बिसाल-समबद्धा ।  
बिष्कुरिय-यंल-वर्णा, मणुसुत्तर-पञ्चबायारा ॥७४१॥

परियट्टालय-रम्मा, पयल-पद्माया-कलाव-रमणिञ्जा ।  
तिष्ठुषण-विम्हय-जगणी, अउहि कुवारेहि परियरिया ॥७४२॥

**अर्थ** :—मन्के बाहर पाँच-वर्णोंसे स्फुरायमान, विशाल एवं समानभोल, मानुषोत्तर पर्यंतके आकार ( सदृश ) धूलिसाल नामक कोट होता है; जो मार्ग एवं अट्टालिकाओंसे रमणीय, चञ्चल पताकाओंके समूहसे सुन्दर, तीनों लोकोंको विस्मित करने वाला और चार द्वारोंसे युक्त होता है ॥७४१-७४२॥

विजयं ति 'पुष्पद्वारं, दक्षिण-द्वारं च पश्चिम-द्वारं ।

पश्चिम-उत्तर-द्वारा, जयन्त-अपरराजिवा नामा ॥७४३॥

**अर्थ** :—इनमें पूर्व-द्वारका नाम विजय, दक्षिण द्वारका वज्रयन्त, पश्चिम द्वारका जयन्त और उत्तर-द्वारका नाम अपरराजिवा होता है ॥७४३॥

एवे गोपुर-द्वारा, तदणीयमया ति-भूमि-भूषणया ।

सुर-शर-मिथुण-सणाहा, तोरण-शङ्खन्त-मणिमाला ॥७४४॥

**अर्थ** :—ये चारों गोपुर-द्वार सुवर्णसे निर्मित, तीन भूमियोंसे विभूषित, देव एवं मनुष्योंके मिथुनों ( जोड़ों ) से संपुक्त तथा तोरणों पर नाचती ( लटकती ) हुई मणि-मालाओंसे शोभायमान होते हैं ॥७४४॥

एकैक-गोपुराणं, बाहिर-मङ्गलमि द्वारदो पासे ।

बाउसया विविधजा, मङ्गल-निहि-धूव-घट-भरिवा ॥७४५॥

**अर्थ** :—प्रत्येक गोपुरके बाहर और मध्यभागमें द्वारके पार्श्वभागोंमें मङ्गल-द्रव्य, निधि एवं धूप-घटसे युक्त विस्तीर्ण पुतलियाँ होती हैं ॥७४५॥

भिगार-कलस-वप्पहा-चामर-घण्ट-वियण-छत्त-मुपह्वता ।

इय अट्ट मङ्गलाई, अट्टुत्तर-सय-जुदाणि एकैककं ॥७४६॥

**अर्थ** :—झारी, कलश, दर्पण, चामर, छत्र, घण्टा, छत्र एवं सुप्रतिष्ठ, ये आठ मङ्गल-द्रव्य हैं । इनमेंसे प्रत्येक एक-सौ आठ होते हैं ॥७४६॥



धूलीसाला-भोउर-बारसुं चउसु होंति पसेकं ।

वर-रयहा-बंङ-हुत्था, जोइसिया बार-रक्कनया ॥७५२॥

अर्थ :—धूलिसालके चारों गोपुरोंमें से प्रत्येकमें, हाथमें उत्तम रत्नदण्डको लिए हुए ज्योतिष्क देव द्वार-रक्षक होते हैं ॥७५२॥

चउ-भोउर-बारसुं, बाहिर-अभन्तरम्मि भागम्मि ।

सुह-सुंहर-संचारा, सोवाहा विविह-रयणमया ॥७५३॥

अर्थ :—चारों गोपुरद्वारोंके बाह्य और अन्तर भागमें विविध प्रकारके रत्नोंसे निर्मित, सुख-पूर्वक सुन्दर संचार योग्य लीढ़ियां होती हैं ॥७५३॥

धूलीसालाण पुढं, शिथ-जिच-वेहोवय-प्पमाणेणं ।

चउ-गुण्णिदेणं उवओ, सम्भेसु वि समवसरणेसुं ॥७५४॥

२००० । १८०० । १६०० । १४०० । १२०० । १००० । ८०० । ६०० । ४०० ।

३६० । ३२० । २८० । २४० । २०० । १८० । १६० । १४० । १२० । १०० ।

८० । ६० । ४० । हुत्थाणि ३६ । २८ ।

अर्थ :—सब समवसरणोंमें धूलिसालोंकी ऊँचाई अपने-अपने तीर्थकरके शरीरके उत्सेह प्रमाणसे चौगुनी होती है ॥७५४॥

तोरण-उवओ अहिओ, धूलीसालाण उवय-संसाओ ।

तसो य साविरेगो, भोउर-बारसु सयलारं ॥७५५॥

अर्थ :—धूलिसालोंकी ऊँचाईकी संख्यासे तोरणोंकी ऊँचाई अधिक होती है और इनसे भी अधिक समस्त गोपुरोंकी ऊँचाई होती है ॥७५५॥

चउवीसं चैय कोसा, धूलीसालाण भूस-वित्थारा ।

वारस-बग्गेण हिवा, रोमि-जिरुंतं कमेण एवकूला ॥७५६॥



२४ | २३ | २२ | २१ | २० | १९ | १८ | १७ | १६ | १५ | १४ | १३ |  
 १४४ | १४४ | १४४ | १४४ | १४४ | १४४ | १४४ | १४४ | १४४ | १४४ | १४४ | १४४ |

मागंरत्तल्लिक :- उरवारं जी मूलवित्तिसागर जी गहरं  
 १२ | ११ | १० | ९ | ८ | ७ | ६ | ५ | ४ | ३ |  
 १४४ | १४४ | १४४ | १४४ | १४४ | १४४ | १४४ | १४४ | १४४ | १४४ |

अर्थ :- भगवान् ऋषभदेवके समवसरणमें धूलिसालका मूल-विस्तार बारहके वर्गसे भाजित चौबीस हो कोस प्रमाण था । फिर इसके आगे भगवान् नेमिनाथ पर्यन्त (भाज्य राशियों से) क्रमशः एक-एक कम होता गया है ॥७५६॥

अट्ठसीवि-बोसएहि, भजिद्धा दासस्मि पंच कोसा य ।

एकको य बड्डमाणे, 'कोसो बाह्वरो-हरिवो ॥७५७॥

५ | १ |  
 २८८ | ७२ |

अर्थ :- भगवान् पाश्र्वनाथके समवसरणमें धूलिसालका मूल विस्तार दो सौ अठ्ठासीसे भाजित पांच कोस और वर्धमान भगवान्के समवसरणमें उसका विस्तार बह्वरसे भाजित एक कोस प्रमाण था ॥७५७॥

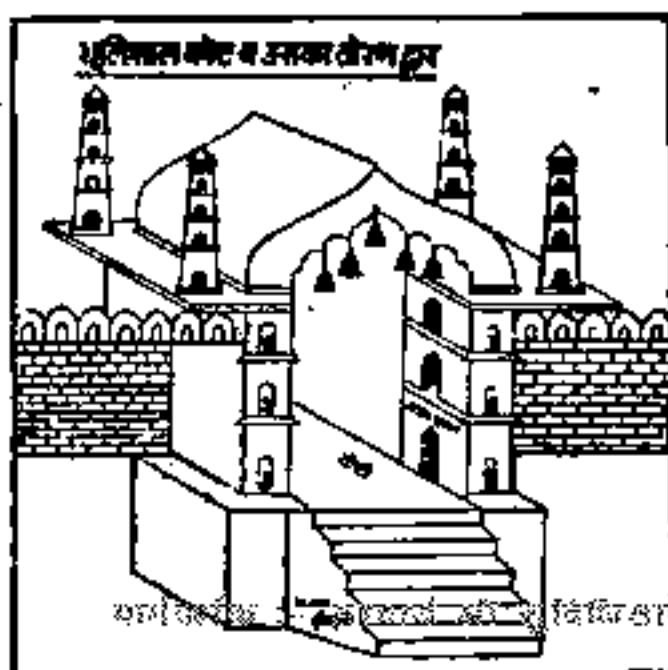
मज्झिम-उवरिम-भागे, धूलिसालाण व'व-उबएसो ।

काल-बसेज पण्हो, 'सरितीपप्पण-विडधो ज्व ॥७५८॥

१ धूलिसाला समसा ।

अर्थ :- धूलिसालोंके मध्य और उपरिम भागके विस्तारका उपदेस कालबससे नदी-तोरोत्पन्न वृक्षके सटण नष्ट हो गया है ॥७५८॥

१ धूलिसालोंका वर्णन समाप्त हुआ ।



धुलिसालकोट एवं उसका तोरणद्वार

चैत्यप्रासाद भूमियोंका निरूपण—

सालभर्भतरभागे, चैत्यप्रासाद-जाम-भूमौओ ।  
'वेडंति समयस-सेत्त', जिमपुर-पासाद-सहिदाओ' ॥७५६॥

अर्थ :—उन धुलिसालोंके अन्धन्तर भागमें जिनपुरसम्बन्धी प्रासादोंसे युक्त चैत्य-प्रासाद नामक भूमियाँ सकलक्षेत्रको वेष्टित करती हैं ॥७५६॥

एकैककं जिम-भवनं, पासादा पंच पंच संतरिवा ।  
विबिह-वन-संड-संड-वर-वावी-कूव-रमणिऊजा ॥७५७॥

अर्थ :—एक-एक जिनभवनके अन्तरालसे पाँच-पाँच प्रासाद हैं, जो विविध वन-समूहोंसे मण्डित और उत्तम वापिकाओं एवं कुओंसे रमणीय होते हैं ॥७५७॥

जिनपुर-पासावाणं, उस्सेहो निय-जिनिह-उवएण ।

बारस-ह्वेण सरिसो, नट्टो वीहस-वास-धववेसो ॥७६१॥

संस्कृतार्थः — अण्वाद्यं श्री सुविधित्तमम् श्री पञ्चरात्रम्

६००० । ५४०० । ४८०० । ४२०० । ३६०० । ३००० । २४०० । १८०० ।

१२०० । १०८० । ९६० । ८४० । ७२० । ६०० । ५४० । ४८० । ४२० ।

३६० । ३०० । २४० । १८० । १२० । ९६ । ८१ ।

अर्थः—जिनपुर और पासावाणकी ऊँचाई अपने-अपने तीर्थक्षुरकी ऊँचाईसे बारह-गुणी होती है । इनकी सम्बाई और विस्तारके प्रमाणका उपदेश नष्ट हो गया है ॥७६१॥

हु-सय-धजसट्टि-ओयणमुसहे 'एककारसोणमणुकमंसो ।

चउवोस-वग-भजिणं, नेमि-जिणं आण पडम-सिद्धि-दंवं ॥७६२॥

२६४ । २५३ । २४२ । २३१ । २२० । २०९ । १९८ । १८७ । १७६ । १६५ । १५४ ।  
५७६ । ५७६ । ५७६ । ५७६ । ५७६ । ५७६ । ५७६ । ५७६ । ५७६ । ५७६ । ५७६ ।

१४३ । १३२ । १२१ । ११० । ९९ । ८८ । ७७ । ६६ । ५५ । ४४ । ३३ ।  
५७६ । ५७६ । ५७६ । ५७६ । ५७६ । ५७६ । ५७६ । ५७६ । ५७६ । ५७६ । ५७६ ।

अर्थः—भगवान् कृष्णदेवके समक्षसरणमें प्रथम पृथिवीका विस्तार बीसोसके वर्य (५७६) से भाजित दो सौ बीसठ योजन था । फिर इससे आगे नेमिनाथ तीर्थक्षुर पर्यन्त भाज्य राक्षसोंसे क्रमशः उत्तरोत्तर ग्यारह-ग्यारह कम होते गये हैं ॥७६२॥

पणवण्णासा कोसा, पास-जिणे अट्टसोद्धि-हु-सय-हिवा ।

बाबोस 'बीरणाहे, बारस-वगोहि पविमसा ॥७६३॥

को । ५५ । ४४ ।  
२८८ । २८८ ।

। वेदिय-पासाद-भूमो सम्मत्ता ।

अर्थ :—पार्ष्वनाथ तीर्थंकरके समवसरणमें प्रथम पृथिवीका विस्तार हो सो भठासोसे भाजित पाईस कोस प्रमाण या ॥७६३॥

। चेत्य-प्रासाद-भूमिका कथन समाप्त हुआ ।

नाट्यशास्त्रांशोंका निरूपण—

आविम-लिबोसु पुह-पुह, बीहीणं बोसु बोसु पातेसु ।  
बीहो भट्टय-साला, बर-कंचण-रयण-णिम्मिबिया ॥७६४॥

। २ । २ ।

अर्थ :—प्रथम पृथिवियोंमें पृषक्-पृषक् बोधियोंके दोनों पार्ष्वभागोंमें उत्तरम स्वर्ण एवं रत्नोंसे निर्मित दो-दो नाट्यशास्त्रायें होती हैं ॥७६४॥

जट्टय-सालाण पुढं, उस्सेहो निय-जिणिव-उवएहि ।  
बारस-हवेहि सरिसो, जट्टा बीहस्त-वास-उवएसा ॥७६५॥

दंडा ६००० । ५४०० । ४८०० । ४२०० । ३६०० । ३००० । २४०० । १८०० । १२०० ।  
१०८० । ९६० । ८४० । ७२० । ६०० । ५४० । ४८० । ४२० । ३६० । ३०० । २४० । १८० ।  
जेमि १२० । पास २७ । बीर २१ ।

अर्थ :—नाट्यशास्त्रांशोंकी ऊंचाई बारहसे गुणित अपने-अपने तोषंकरोंके शरीरकी ऊंचाईके सदृश होती है, तथा इनकी लम्बाई एवं विस्तारका उपदेश नष्ट हो गया है ॥७६५॥

एक्केक्काए जट्टय-सालाए चउ हबट्ट रंगणि ।  
एक्केक्कास्सि रंगे, भावण-कण्णाउ बसीसा ॥७६६॥

गार्यंति जिणिवाणं, विजयं विविहत्थ-विठ्ठ-गीदेहि ।  
अभिणइय अत्तणीओ, सिबंति कुसुमंजलि ताओ ॥७६७॥

वर्णः :—प्रत्येक नाट्यशालामें चारसे गुणित आठ ( ३२ ) रङ्गभूमियाँ और प्रत्येक रङ्गभूमिमें बत्तीस भवनवासो-कन्यायें अभिनयपूर्वक नृत्य करती हुई नानाप्रकारके वर्णोंसे युक्त दिव्य वीतों द्वारा तीर्थक्षुरोंकी विजयके गीत गाती हैं और पुष्पाञ्जलियोंका सेपण करती हैं ॥७६१-७६७॥

‘एक्केवकाए गट्टय-सालाए बोणि बोणि धूब-वडा ।

गाणा-सुगंधि-धूबं, पसरेणं बासिय-विगता ॥७६८॥

। गट्टयसाला समता ।

वर्णः :—प्रत्येक नाट्यशालामें नानाप्रकारकी सुगन्धित धूपोंसे दिङ्-मण्डलको सुवासित करने वाले दो-दो धूप घट रहते हैं ॥७६८॥

सम्यक्कथितः :— आरचार्य जी सुविधित्वायत जी रह

नाट्यशालाओंका वर्णन समाप्त हुआ ।

[ सात्तिका नं० १७ पृष्ठ २२३ पर देखें ]

तालिका : १७

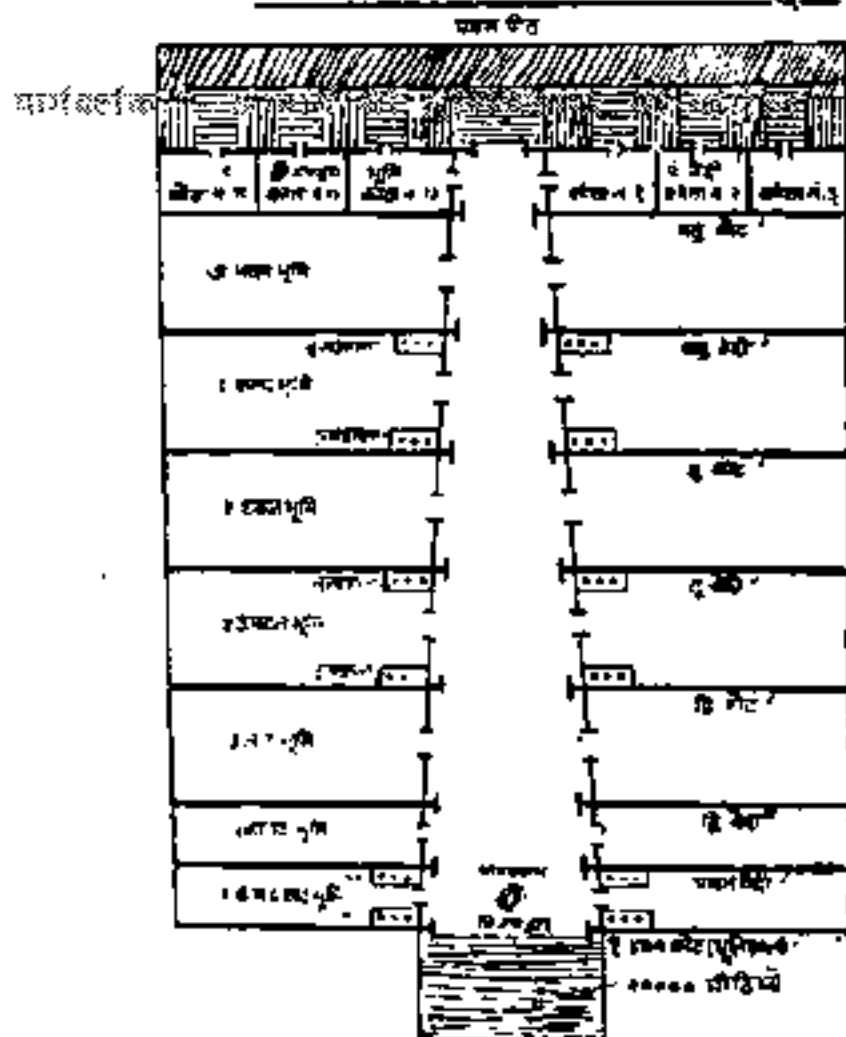
भूलिसाल-प्रासाद-प्रथम-पृथिवी एवं नाट्यशालाओंका प्रमख—

| नं० | भूलिसालोंकी<br>ऊँचाई<br>गाथा ७५४ | भूलिसालोंका<br>भूल बिस्तार<br>गाथा ७५६ | जिनपुर एवं<br>प्रासादोंकी ऊँचाई<br>गाथा ७६१ | प्रथम पृथिवीका<br>विस्तार<br>गाथा ७६२ | नाट्यशालाओंकी<br>ऊँचाई<br>गाथा ७६५ |
|-----|----------------------------------|----------------------------------------|---------------------------------------------|---------------------------------------|------------------------------------|
| १   | २००० धनुष                        | ३३३३ धनुष                              | ६००० धनुष                                   | १३ फीस                                | ६००० धनुष                          |
| २   | १८०० "                           | ३१९४ "                                 | ५४०० "                                      | १३३३ "                                | ५४०० "                             |
| ३   | १६०० "                           | ३०५५ "                                 | ४८०० "                                      | १३३३ "                                | ४८०० "                             |
| ४   | १४०० "                           | २९१३ "                                 | ४२०० "                                      | १३३३ "                                | ४२०० "                             |
| ५   | १२०० "                           | २७७१ "                                 | ३६०० "                                      | १३३३ "                                | ३६०० "                             |
| ६   | १००० "                           | २६३३ "                                 | ३००० "                                      | १३३३ "                                | ३००० "                             |
| ७   | ८०० "                            | २५० "                                  | २४०० "                                      | १३३३ "                                | २४०० "                             |
| ८   | ६०० "                            | २३६३ "                                 | १८०० "                                      | १३३३ "                                | १८०० "                             |
| ९   | ४०० "                            | २२२३ "                                 | १२०० "                                      | १३३३ "                                | १२०० "                             |
| १०  | ३६० "                            | २०८३ "                                 | १०८० "                                      | १३३३ "                                | १०८० "                             |
| ११  | ३२० "                            | १९४३ "                                 | ९६० "                                       | १३३३ "                                | ९६० "                              |
| १२  | २८० "                            | १८०३ "                                 | ८४० "                                       | १३३३ धनुष                             | ८४० "                              |
| १३  | २४० "                            | १६६३ "                                 | ७२० "                                       | १३३३ धनुष                             | ७२० "                              |
| १४  | २०० "                            | १५२३ "                                 | ६०० "                                       | १३३३ धनुष                             | ६०० "                              |
| १५  | १८० "                            | १३८३ "                                 | ५४० "                                       | १३३३ धनुष                             | ५४० "                              |
| १६  | १६० "                            | १२५ "                                  | ४८० "                                       | १३३३ धनुष                             | ४८० "                              |
| १७  | १४० "                            | १११३ "                                 | ४२० "                                       | १३३३ धनुष                             | ४२० "                              |
| १८  | १२० "                            | ९७३ "                                  | ३६० "                                       | १३३३ धनुष                             | ३६० "                              |
| १९  | १०० "                            | ८३३ "                                  | ३०० "                                       | १३३३ धनुष                             | ३०० "                              |
| २०  | ८० "                             | ६९३ "                                  | २४० "                                       | १३३३ धनुष                             | २४० "                              |
| २१  | ६० "                             | ५५३ "                                  | १८० "                                       | १३३३ धनुष                             | १८० "                              |
| २२  | ४० "                             | ४१३ "                                  | १२० "                                       | १३३३ धनुष                             | १२० "                              |
| २३  | ३६ हाथ                           | ३४३३ "                                 | २७ "                                        | ३८१३३ "                               | २७ "                               |
| २४  | २८ हाथ                           | २७३ "                                  | २१ "                                        | ३०५३ "                                | २१ "                               |

## मानस्तम्भ के

एक दिशात्मक कोट, धेवी, भूमिधों एवं नाटयशालाओं आदिका चित्रण—

### एक दिशात्मक सामान्य भूमि



#### मानस्तम्भोंका निरूपण—

निय-निय-पट्टम-सिधीए, बहुमज्जे चउसु बोहि-मज्झमि ।

माणस्थंन-सिधीए, सम-बट्टा विविह-वज्जन-सहाओ ॥७६१॥

अर्थ :—अपनी-अपनी प्रथम पृथिवीके बहुमध्यभागमें धारों वीधियोंके बीचोंबीच समान कोल और विविध वर्णन-योग्य मानस्तम्भ भूमियाँ होती हैं ॥७६१॥

अधमंतरम्मि ताणं, चउ-गोउर-वार-सुंदरा साला ।  
गणवत-धय-बडाया' भणि-किरणुज्जोइय-विगंता' ॥७७०॥

अर्थ :—उनके ( मानस्तम्भ-भूमियोंके ) अन्त्यन्तर भागमें चार गोपुरद्वारोंसे सुन्दर, नाचती हुई झल-पताकाओं सहित और मणियोंकी किरणोंसे दिङ्-मण्डलको प्रकाशित करनेवाले कोट होते हैं ॥७७०॥

ताणं पि मज्झभागे, वण-संडा विविह-विज्ज-तद-भरिया' ।  
कल-कोकिल-कल-कलया, सुर-किण्णर-मिह्वण'-संघण्णा ॥७७१॥

अर्थ :—उनके भी मध्य भागमें विविध विज्ज-वृक्षोंसे संपुक्त, सुन्दर कोमलोंके कल-कल शब्दोंसे मुखरित और सुर एवं किण्णर-युगलोंसे संकीर्ण वन-खण्ड हैं ॥७७१॥

यादविक्रमः : अत्राग्रे श्री सुविदितस्यार जी यथापन्न

तम्मज्जे रम्माइं, पुब्बावि-वितासु लोमपासाणं ।  
सोम-जम-बदन-धनवा, होंति महा-कोइण-पुराइं ॥७७२॥

अर्थ :—उनके मध्यमें पूर्वदिक् दिशाओंमें क्रमशः सोम, यम, वरुण और कुबेर, इन लोक-पासोंके अत्यन्त रमणीय महाक्रीड़ा नगर होते हैं ॥७७२॥

ताणमंतर-भागे, साला चउ-गोउ रावि-परियरिया ।  
ततो वण-वादीओ, कसिंदवरमाणण-सहाओ ॥७७३॥

अर्थ :—उनके अन्त्यन्तरभागमें चार गोपुरादिसे वेष्टित कोट और इसके प्रागे वन-वापिकाएँ होती हैं, जो प्रफुल्लित नीलकमलोंसे बोधायमान होती हैं ॥७७३॥

ताणं मज्जे पिय-जिय-वितासु विज्जाणि कीइण-पुराइं ।  
हुइवहु-जेरिवि-भारुव-ईसाणाणं च लोमपासाणं ॥७७४॥

अर्थ :—उनके बीचमें लोकपालोंके अपनी-अपनी दिशामें तथा आग्नेय, नैऋत्य, वायव्य और ईशान, इन विदिशाओंमें भी विज्ज क्रीडन-पुर होते हैं ॥७७४॥



ताजमहल-भूत-भामे, सासाओ वर-विशाल-वाराणसी ।

तन्मित्रं मे पीडां हि, एषमेवमे' सन्मित्रं मे हि ॥७७५॥

**संक्षेप :-** उनके अभ्यन्तर भागमें उत्तम विशाल द्वारोंसे युक्त कोठ होते हैं और फिर इनके बीचमें पीठ होते हैं। ऐसी संरचना प्रत्येक समकसरणमें होती है ॥७७५॥

**साधनार्थः : -** वेदालम्बनं प्रथमं, यच्च तत्सामिदित्तम् कणयमयम् ।

बुद्धयं तस्स य उव्वरि, तन्नियं बहु-वग्ग-एयणमयं ॥७७६॥

संक्षेपः—इनमेंसे पहला पीठ वैदूर्यमणिमय, उसके ऊपर दूसरा पीठ सुवर्णमय और उसके भी ऊपर तीसरा पीठ बहुत वर्णों के रत्नोंसे निर्मित होता है ॥७७६॥

आदिम-पीदण्डेहो, वंश चन्द्रवीत रुच-तिय-हरिदा ।

उसन्न-जिणिबे कामसो, इन्द्रजः जेनि-पञ्चसं ॥७७७॥

|    |    |    |    |    |    |    |    |    |    |    |    |    |    |    |    |    |
|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|
| २४ | २५ | २६ | २७ | २८ | २९ | ३० | ३१ | ३२ | ३३ | ३४ | ३५ | ३६ | ३७ | ३८ | ३९ | ४० |
|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|

[illegible]

|      |    |    |    |    |    |    |
|------|----|----|----|----|----|----|
| பெண் | பு | பு | பு | பு | பு | பு |
|------|----|----|----|----|----|----|

अर्थ :—भगवान् ऋषभदेवके समवसरणमें प्रथम पीठकी ऊँचाई तीनसे भाजित चौबीस अनुष प्रमाण थी । इसके भागे नैमिनाथ पर्यन्त क्रमशः उत्तरोत्तर भाज्य-राक्षिमेंसे एक-एक अंक कम होता गया है । ॥७७७॥

पासे पंच च्छह्रिदा, त्रिवय-ह्रिदा दोष्णि बहुमान-त्रिणे ।

સેસાણ અઢમાળા.      ચાહિમ-પોત્તસ ઉદયાઓ ॥૭૭૮॥

|   |   |   |   |   |   |   |   |    |    |    |    |    |    |    |    |    |    |    |    |    |    |    |    |    |    |    |    |    |    |    |    |    |    |    |    |    |    |    |    |    |    |    |    |    |    |    |    |    |    |    |    |    |    |    |    |    |    |    |    |    |    |    |    |    |    |    |    |    |    |    |    |    |    |    |    |    |    |    |    |    |    |    |    |    |    |    |    |    |    |    |    |    |    |    |    |    |    |     |     |     |     |     |     |     |     |     |     |     |     |     |     |     |     |     |     |     |     |     |     |     |     |     |     |     |     |     |     |     |     |     |     |     |     |     |     |     |     |     |     |     |     |     |     |     |     |     |     |     |     |     |     |     |     |     |     |     |     |     |     |     |     |     |     |     |     |     |     |     |     |     |     |     |     |     |     |     |     |     |     |     |     |     |     |     |     |     |     |     |     |     |     |     |     |     |     |     |     |     |     |     |     |     |     |     |     |     |     |     |     |     |     |     |     |     |     |     |     |     |     |     |     |     |     |     |     |     |     |     |     |     |     |     |     |     |     |     |     |     |     |     |     |     |     |     |     |     |     |     |     |     |     |     |     |     |     |     |     |     |     |     |     |     |     |     |     |     |     |     |     |     |     |     |     |     |     |     |     |     |     |     |     |     |     |     |     |     |     |     |     |     |     |     |     |     |     |     |     |     |     |     |     |     |     |     |     |     |     |     |     |     |     |     |     |     |     |     |     |     |     |     |     |     |     |     |     |     |     |     |     |     |     |     |     |     |     |     |     |     |     |     |     |     |     |     |     |     |     |     |     |     |     |     |     |     |     |     |     |     |     |     |     |     |     |     |     |     |     |     |     |     |     |     |     |     |     |     |     |     |     |     |     |     |     |     |     |     |     |     |     |     |     |     |     |     |     |     |     |     |     |     |     |     |     |     |     |     |     |     |     |     |     |     |     |     |     |     |     |     |     |     |     |     |     |     |     |     |     |     |     |     |     |     |     |     |     |     |     |     |     |     |     |     |     |     |     |     |     |     |     |     |     |     |     |     |     |     |     |     |     |     |     |     |     |     |     |
|---|---|---|---|---|---|---|---|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|
| 2 | 3 | 4 | 5 | 6 | 7 | 8 | 9 | 10 | 11 | 12 | 13 | 14 | 15 | 16 | 17 | 18 | 19 | 20 | 21 | 22 | 23 | 24 | 25 | 26 | 27 | 28 | 29 | 30 | 31 | 32 | 33 | 34 | 35 | 36 | 37 | 38 | 39 | 40 | 41 | 42 | 43 | 44 | 45 | 46 | 47 | 48 | 49 | 50 | 51 | 52 | 53 | 54 | 55 | 56 | 57 | 58 | 59 | 60 | 61 | 62 | 63 | 64 | 65 | 66 | 67 | 68 | 69 | 70 | 71 | 72 | 73 | 74 | 75 | 76 | 77 | 78 | 79 | 80 | 81 | 82 | 83 | 84 | 85 | 86 | 87 | 88 | 89 | 90 | 91 | 92 | 93 | 94 | 95 | 96 | 97 | 98 | 99 | 100 | 101 | 102 | 103 | 104 | 105 | 106 | 107 | 108 | 109 | 110 | 111 | 112 | 113 | 114 | 115 | 116 | 117 | 118 | 119 | 120 | 121 | 122 | 123 | 124 | 125 | 126 | 127 | 128 | 129 | 130 | 131 | 132 | 133 | 134 | 135 | 136 | 137 | 138 | 139 | 140 | 141 | 142 | 143 | 144 | 145 | 146 | 147 | 148 | 149 | 150 | 151 | 152 | 153 | 154 | 155 | 156 | 157 | 158 | 159 | 160 | 161 | 162 | 163 | 164 | 165 | 166 | 167 | 168 | 169 | 170 | 171 | 172 | 173 | 174 | 175 | 176 | 177 | 178 | 179 | 180 | 181 | 182 | 183 | 184 | 185 | 186 | 187 | 188 | 189 | 190 | 191 | 192 | 193 | 194 | 195 | 196 | 197 | 198 | 199 | 200 | 201 | 202 | 203 | 204 | 205 | 206 | 207 | 208 | 209 | 210 | 211 | 212 | 213 | 214 | 215 | 216 | 217 | 218 | 219 | 220 | 221 | 222 | 223 | 224 | 225 | 226 | 227 | 228 | 229 | 230 | 231 | 232 | 233 | 234 | 235 | 236 | 237 | 238 | 239 | 240 | 241 | 242 | 243 | 244 | 245 | 246 | 247 | 248 | 249 | 250 | 251 | 252 | 253 | 254 | 255 | 256 | 257 | 258 | 259 | 260 | 261 | 262 | 263 | 264 | 265 | 266 | 267 | 268 | 269 | 270 | 271 | 272 | 273 | 274 | 275 | 276 | 277 | 278 | 279 | 280 | 281 | 282 | 283 | 284 | 285 | 286 | 287 | 288 | 289 | 290 | 291 | 292 | 293 | 294 | 295 | 296 | 297 | 298 | 299 | 300 | 301 | 302 | 303 | 304 | 305 | 306 | 307 | 308 | 309 | 310 | 311 | 312 | 313 | 314 | 315 | 316 | 317 | 318 | 319 | 320 | 321 | 322 | 323 | 324 | 325 | 326 | 327 | 328 | 329 | 330 | 331 | 332 | 333 | 334 | 335 | 336 | 337 | 338 | 339 | 340 | 341 | 342 | 343 | 344 | 345 | 346 | 347 | 348 | 349 | 350 | 351 | 352 | 353 | 354 | 355 | 356 | 357 | 358 | 359 | 360 | 361 | 362 | 363 | 364 | 365 | 366 | 367 | 368 | 369 | 370 | 371 | 372 | 373 | 374 | 375 | 376 | 377 | 378 | 379 | 380 | 381 | 382 | 383 | 384 | 385 | 386 | 387 | 388 | 389 | 390 | 391 | 392 | 393 | 394 | 395 | 396 | 397 | 398 | 399 | 400 | 401 | 402 | 403 | 404 | 405 | 406 | 407 | 408 | 409 | 410 | 411 | 412 | 413 | 414 | 415 | 416 | 417 | 418 | 419 | 420 | 421 | 422 | 423 | 424 | 425 | 426 | 427 | 428 | 429 | 430 | 431 | 432 | 433 | 434 | 435 | 436 | 437 | 438 | 439 | 440 | 441 | 442 | 443 | 444 | 445 | 446 | 447 | 448 | 449 | 450 | 451 | 452 | 453 | 454 | 455 | 456 | 457 | 458 | 459 | 460 | 461 | 462 | 463 | 464 | 465 | 466 | 467 |
|---|---|---|---|---|---|---|---|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|

|    |    |
|----|----|
| mm | mm |
|----|----|

गणना : ७७८-७७९ ।

अडत्यो महाहियारो

[ ३९७ ]

ध्यान :- इसके आगे पार्श्वनाथके समवसरणमें प्रथम पीठकी ऊँचाई छहसे भाजित पाँच और वर्धमान जिनके तीनसे भाजित दो अनुष प्रमाण हो । शेष दो पीठोंकी ऊँचाई प्रथम पीठकी ऊँचाईसे आधी थी । (७७६॥)

विद्विष-पीडाणं रुदय-दंष्ट्रा—

[illegible]

तदिय-पीडाणं लदय-दंष्ट्रा—

[illegible]

श्रीकृत्यस्तस्य कृत्यसो, सोबाजं बज्रविशालं पश्यन् ।

अहं बस जड समानं, जिज्ञासाविहरीह-विद्यारार ॥७७६॥

अर्थ :—चारों दिशाओंमें से प्रत्येक दिशामें इत तोंमें पीठोंकी सीढियोंका प्रमाण कपड़ा बाँध, चार जोर चार है। इन सीढियोंकी सम्झाई और विस्तार जिनेन्द्र ही जानते हैं। अर्थात् उसका उपदेश लब्ध हो गया है। ॥७७९॥

**पहम-पीछाणं—**

८१ ८२ ८३ ८४ ८५ ८६ ८७ ८८ ८९ ९० ९१ ९२ ९३ ९४ ९५ ९६ ९७ ९८ ९९  
 १०० १०१ १०२ १०३ १०४ १०५ १०६ १०७ १०८ १०९ ११० १११ ११२ ११३ ११४ ११५ ११६ ११७ ११८ ११९ १२०

**विदिय-पीदार्ज सोवाणं—**

**A**



तालिका : १८

| पीठोंका विस्तार आदि एवं सीढ़ियोंका प्रमाण— |                                          |                       |                     |                                   |                                     |                                   |                                   | शाका ७७७—७८२ |  |
|--------------------------------------------|------------------------------------------|-----------------------|---------------------|-----------------------------------|-------------------------------------|-----------------------------------|-----------------------------------|--------------|--|
| क्र.सं.                                    | समवसरण स्थित प्रथम पीठोंकी ऊँचाई या. ७७७ | द्वितीय पीठोंकी ऊँचाई | तृतीय पीठोंकी ऊँचाई | प्रथम पीठों की सीढ़ियों का प्रमाण | द्वितीय पीठों की सीढ़ियों का प्रमाण | तृतीय पीठों की सीढ़ियों का प्रमाण | चतुर्थ पीठोंका विस्तार या. ७८१-८२ |              |  |
| १                                          | ८ अनुष                                   | ४ अनुष                | ४ अनुष              | सीढ़ियाँ ८ हैं                    | ४ हैं                               | ४ हैं                             | १००० अनुष                         |              |  |
| २                                          | ७ १/२                                    | ३ १/२                 | ३ १/२               | ८                                 | ४                                   | ४                                 | ६५५ १/२                           |              |  |
| ३                                          | ७ १/२                                    | ३ १/२                 | ३ १/२               | ८                                 | ४                                   | ४                                 | ६१६ १/२                           |              |  |
| ४                                          | ७                                        | ३ १/२                 | ३ १/२               | ८                                 | ४                                   | ४                                 | ५७५                               |              |  |
| ५                                          | ६ १/२                                    | ३ १/२                 | ३ १/२               | ८                                 | ४                                   | ४                                 | ५३३ १/२                           |              |  |
| ६                                          | ६ १/२                                    | ३ १/२                 | ३ १/२               | ८                                 | ४                                   | ४                                 | ४९१ १/२                           |              |  |
| ७                                          | ६                                        | ३                     | ३                   | ८                                 | ४                                   | ४                                 | ४५०                               |              |  |
| ८                                          | ५ १/२                                    | २ १/२                 | २ १/२               | ८                                 | ४                                   | ४                                 | ४०८ १/२                           |              |  |
| ९                                          | ५ १/२                                    | २ १/२                 | २ १/२               | ८                                 | ४                                   | ४                                 | ३६६ १/२                           |              |  |
| १०                                         | ५                                        | २ १/२                 | २ १/२               | ८                                 | ४                                   | ४                                 | ३२५                               |              |  |
| ११                                         | ४ १/२                                    | २ १/२                 | २ १/२               | ८                                 | ४                                   | ४                                 | २८३ १/२                           |              |  |
| १२                                         | ४ १/२                                    | २ १/२                 | २ १/२               | ८                                 | ४                                   | ४                                 | २४१ १/२                           |              |  |
| १३                                         | ४                                        | २                     | २                   | ८                                 | ४                                   | ४                                 | २००                               |              |  |
| १४                                         | ३ १/२                                    | १ १/२                 | १ १/२               | ८                                 | ४                                   | ४                                 | १५८ १/२                           |              |  |
| १५                                         | ३ १/२                                    | १ १/२                 | १ १/२               | ८                                 | ४                                   | ४                                 | ११६ १/२                           |              |  |
| १६                                         | ३                                        | १ १/२                 | १ १/२               | ८                                 | ४                                   | ४                                 | ७५                                |              |  |
| १७                                         | २ १/२                                    | १ १/२                 | १ १/२               | ८                                 | ४                                   | ४                                 | ३३३ १/२                           |              |  |
| १८                                         | २ १/२                                    | १ १/२                 | १ १/२               | ८                                 | ४                                   | ४                                 | २९१ १/२                           |              |  |
| १९                                         | २                                        | १                     | १                   | ८                                 | ४                                   | ४                                 | २५०                               |              |  |
| २०                                         | १ १/२                                    | ३/४                   | ३/४                 | ८                                 | ४                                   | ४                                 | २०८ १/२                           |              |  |
| २१                                         | १ १/२                                    | ३/४                   | ३/४                 | ८                                 | ४                                   | ४                                 | १६६ १/२                           |              |  |
| २२                                         | १                                        | ३/४                   | ३/४                 | ८                                 | ४                                   | ४                                 | १२५                               |              |  |
| २३                                         | ३/४                                      | ३/४                   | ३/४                 | ८                                 | ४                                   | ४                                 | १०४ १/२                           |              |  |
| २४                                         | ३/४                                      | ३/४                   | ३/४                 | ८                                 | ४                                   | ४                                 | ८३ १/२                            |              |  |

पीठाण उबरि माणस्वभा उसहुम्मि ताण' बहसत्तं ।  
 हु-यण-नव-सि-पुग-बंदा, अंक-कसे तिगुण-अहु-पविहत्ता ॥७८३॥  
 अउ-मउवि-अहिय-णव-सय-ऊणा कमसो य भोमि-परियत्तं ।  
 पण-कवी पंचूणा, खडवीस-हिवा य पासनाहुम्मि ॥७८४॥

वर्ण :—पीठोंके ऊपर मानस्तम्भ होते हैं । उनका बाह्य न्यग्रदेवके समवसरणमें आठके त्रिगुने ( २४ ) से भाजित, अंक क्रमसे दो, पाँच, नौ, तीन और दो ( २३६५२ ) धनुष प्रमाण था । इसके भागे नेमिनाथ तीर्थक्षुर पर्यन्त भाज्य राशियोंसे क्रमशः उत्तरोत्तर नौ सौ अष्टावर्ष कम होते गये हैं । पार्वत्यायके समवसरणमें मानस्तम्भोंका बाह्य चौबीससे भाजित पचासके वर्गमेंसे पाँच कम ( २३७५ ) धनुष प्रमाण था ॥७८३-७८४॥

उसहादि-पास-परियत्तं—

२३६५२ | २२६५४ | २१६५६ | २०६५८ | १९६६० | १८६६२ | १७६६४ | १६६६६

१६६६६ | १५६६८ | १४६७० | १३६७२ | १२६७४ | ११६७६ | १०६७८

१०६८० | ९६८२ | ८६८४ | ७६८६ | ६६८८ | ५६९० | ४६९२ | ३६९४

२४६५ |

पंच-सया रुऊणा, खक-हिवा बहुमाण-देवम्मि ।  
 गिय-गिय-खिज-उवयेहि, बारस-गुणियेहि बंभ-उवसेहो ॥७८५॥

४१० | ६००० | ५४०० | ४८०० | ४२०० | ३६०० | ३००० | २४०० |

१८०० | १२०० | १०८० | ९६० | ८४० | ७२० | ६०० | ५४० | ४८० |

४२० | ३६० | ३०० | २४० | १८० | १२० | ९७ | २१ |

**सर्ग :-** बर्द्धमान तीर्थङ्करके समवसरणमें मानस्तम्भोंका आह्वय करते भाजित एक कम पाँच सौ वनूष प्रमाण था । इन मानस्तम्भोंकी ऊँचाई अपने-अपने तीर्थङ्करके शरीरकी ऊँचाईसे बाह्य-मुणी होती है ॥७८२॥

**जोयन-अहियं उदयं, मानस्यंभाण उत्तह-साभिम्मि ।**

**कम-हीणं येयेसं एवं तेई निगण्हंति ॥७८३॥**

पाठान्तरम्

|    |    |    |    |    |    |    |    |    |    |    |    |    |    |
|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|
| २४ | २३ | २२ | २१ | २० | १९ | १८ | १७ | १६ | १५ | १४ | १३ | १२ | ११ |
| २४ | २४ | २४ | २४ | २४ | २४ | २४ | २४ | २४ | २४ | २४ | २४ | २४ | २४ |
| १० | ९  | ८  | ७  | ६  | ५  | ४  | ३  | २  | १  | ०  | ०  | ०  | ०  |
| २४ | २४ | २४ | २४ | २४ | २४ | २४ | २४ | ४८ | ४८ | ४८ | ४८ | ४८ | ४८ |

**सर्ग :-** श्रुषभनाथ स्वामीके समवसरणमें मानस्तम्भोंकी ऊँचाई एक योवनसे अधिक थी । शेष तीर्थङ्करोंके मानस्तम्भोंकी ऊँचाई कमवा; होन होती गई है । ऐसा कितने ही आचार्य कहते हैं ॥७८६॥

पाठान्तरम्

२३२ ]

तिलोवगणती

[ तालिका : १६

तालिका : १६

| मानस्तम्भोंका बाह्य एवं ऊँचाई— |                     |                     | गाथा ७८३-७८६                               |        |
|--------------------------------|---------------------|---------------------|--------------------------------------------|--------|
| नं०                            | मानस्तम्भोंका बाह्य | मानस्तम्भोंकी ऊँचाई | प्रकारान्तरसे मानस्तम्भोंकी ऊँचाई गाथा ७८६ |        |
| १                              | ६६८                 | घनुष                | ६०००                                       | १ योजन |
| २                              | ६६६५                | "                   | ५४००                                       | ३६ कोस |
| ३                              | ६१४६                | "                   | ४८००                                       | ३३ " " |
| ४                              | ८७३३                | "                   | ४२००                                       | ३३ " " |
| ५                              | ८३१३                | "                   | ३६००                                       | ३३ " " |
| ६                              | ७६०३                | "                   | ३०००                                       | ३३ " " |
| ७                              | ७४८३                | "                   | २४००                                       | ३ " "  |
| ८                              | ७०६३                | "                   | १८००                                       | २५ " " |
| ९                              | ६६५३                | "                   | १२००                                       | २३ " " |
| १०                             | ६२३३                | "                   | १०८०                                       | २३ " " |
| ११                             | ५८२३                | "                   | ६६०                                        | २३ " " |
| १२                             | ५४०३                | "                   | ८४०                                        | २३ " " |
| १३                             | ४६६                 | "                   | ७२०                                        | २ " "  |
| १४                             | ४५७२                | "                   | ६००                                        | १५ " " |
| १५                             | ४१५३                | "                   | ५४०                                        | १३ " " |
| १६                             | ३७४३                | "                   | ४८०                                        | १३ " " |
| १७                             | ३३२३                | "                   | ४२०                                        | १३ " " |
| १८                             | २९१३                | "                   | ३६०                                        | १३ " " |
| १९                             | २४९३                | "                   | ३००                                        | १ " "  |
| २०                             | २०७३                | "                   | २४०                                        | २ " "  |
| २१                             | १६६३                | "                   | १८०                                        | ३ " "  |
| २२                             | १२४३                | "                   | १२०                                        | ३ " "  |
| २३                             | १०३३                | "                   | २७                                         | ३३ " " |
| २४                             | ८३३                 | "                   | २१                                         | ३ " "  |

बंभाण मूलभागा, दु-सहस्त-पमान बज्जहारु<sup>१</sup> ।

मणिभय भागा<sup>२</sup> बडा, पत्तेकां कनिह-जिम्मविषा ॥७८७॥

२००० ।

उपरिम-भागा उज्जल-वेणसियमया विभूसिया परदो ।

चामर - घंटा - किकिणि - रयणावलि - केहु - पट्टवोहि ॥७८८॥

अर्थ :—प्रत्येक मानस्तम्भका मूलभाग दो हजार ( धनुष ) प्रमाण है और बज्ज-द्वारेसे युक्त होता है । मध्यम भाग स्फटिक मणिसे निर्मित और वृत्ताकार होता है तथा उज्जल बंदूयं मणिभय उपरिम भाग चारों ओर चामर, घंटा, किकिणी, रत्नहार एवं छवजा इत्यादिकोंसे विभूषित रहता है ॥७८७-७८८॥

ताणं भूले उवरि, अट्ट-महापाडिहेरि-जुताओ ।

पडिविसमेक्केकाओ, रम्माओ जिणिद-पडिमाओ ॥७८९॥

अर्थ :—प्रत्येक मानस्तम्भके मूलभागमें एवं उपरिमभागमें प्रत्येक दिशामें आठ-आठ महा-प्रतिमायोंसे युक्त एक-एक रमणीय जिन प्रतिमा होती है ॥७८९॥

माणुत्तासिय-मिच्छा, वि दूरवो बंसलोण बंभाणं ।

अं होंति गलिव-माणा, माणत्वंमेस्ति<sup>३</sup> तं<sup>४</sup> भजिबं ॥७९०॥

अर्थ :—क्योंकि मानस्तम्भोंको दूरसे ही देख नेनेपर अभिमानी मिथ्यादृष्टि लोग अभिमान से रहित हो जाते हैं अतः इन ( स्तम्भों ) को 'मानस्तम्भ' कहा गया है ॥७९०॥

सातत्तय-बाहिरए, पसेक्कं चउ-बिसासु होंति बहा ।

ओहि पडि पुब्बादि-वकमेण सज्जेसु ससवसरणेसु ॥७९१॥

१. द. क. क. उ. बज्जहारुंदा, ज. य. बज्जहारुंदा ।

२. द. भावी, ज. व. बया ।

३. द. ज. य. माणत्वंमेस्ति ।

४. द. क. उ. यं ।



आश्रितं चिं तु विद्यमानं च ।

अर्थ :—सब समबत्तरणोंमें तीनों कोटोंके बाहर चार-विशाओंमेंसे प्रत्येक दिशामें क्रमशः पूर्वादिक बीचीके आश्रित ब्रह्म ( वायिकाएँ ) होते हैं ॥७६१॥

गन्धुत्तर-गन्दाओ, नन्दिमई नन्दिघोस-नामाओ ।

पुष्पस्थंमे पुष्पाविएसु भागेषु चत्वारो ॥७६२॥

अर्थ :—पूर्वदिशागत मानस्तम्भके पूर्वादिक भागोंमें क्रमशः नन्दोत्तरा, नन्दा, नन्दिमती और नन्दिघोषा नामक चार ब्रह्म होते हैं ॥७६२॥

विजया य ब्रह्मजयन्ता, जयन्त-अवराजिता नामेहि ।

पश्चिम-पंथे पुष्पाविएसु भागेषु चत्वारो ॥७६३॥

अर्थ :—दक्षिण दिशा स्थित मानस्तम्भके आश्रित पूर्वादिक भागोंमें क्रमशः विजया, ब्रह्मजयन्ता, जयन्ता और अवराजिता नामक चार ब्रह्म होते हैं ॥७६३॥

अभिहाणे य असोभा, सुप्पइबुद्धा य कुमुद-पुंकरिया ।

पश्चिम-पंथे पुष्पाविएसु भागेषु चत्वारो ॥७६४॥

अर्थ :—पश्चिम दिशागत मानस्तम्भके आश्रित पूर्वादिक भागोंमें क्रमशः असोका, सुप्रतिबुद्धा ( सुप्रसिद्धा ), कुमुदा और पुण्डरीका नामक चार ब्रह्म होते हैं ॥७६४॥

ह्रिय-महापंचाओ, सुप्पइबुद्धा पङ्करा नामा ।

उत्तर-पंथे पुष्पाविएसु भागेषु चत्वारो ॥७६५॥

अर्थ :—उत्तर दिशावर्ती मानस्तम्भके आश्रित पूर्वादिक भागोंमें क्रमशः ह्रियानन्दा, महा-नन्दा, सुप्रतिबुद्धा और पञ्चकूरा नामक चार ब्रह्म होते हैं ॥७६५॥

एवे सम-चउरस्ता, पवर-वहा पउम-पट्टवि-संजुवा ।

दक्षिणिका वेविय-चउ-तोरण-रयणमास-रमणिज्जा ॥७६६॥

अर्थ :—ये उपर्युक्त उत्तम ब्रह्म समचतुष्कोण, कमलादिकसे संयुक्त, टङ्कोत्कीर्ण और वेदिका, चार तोरण एवं रत्नमाळाओसे रमणीय होते हैं ॥७६६॥

सप्तम-ब्रह्म-मणिमय-सोपान-चतुर्भुज-रत्न-सं  
जल-कीवज-जोगोह, संपुष्पं दिव्य-वज्रोह ॥७६७॥

अर्थ :—सब ब्रह्मोंके चारों तरफोंमेंसे प्रत्येक तटपर जलक्रीड़ाके योग्य दिव्य द्रव्योंसे परिपूर्ण मणिमयी सोपान होते हैं ॥७६७॥

भावज-बैतर-ओदृत-कल्पवासी य कीवज-पयह्वर ।  
नर-किन्नर-मिहुजाणं, कुंकुम-पंकज पिजरिया ॥७६८॥

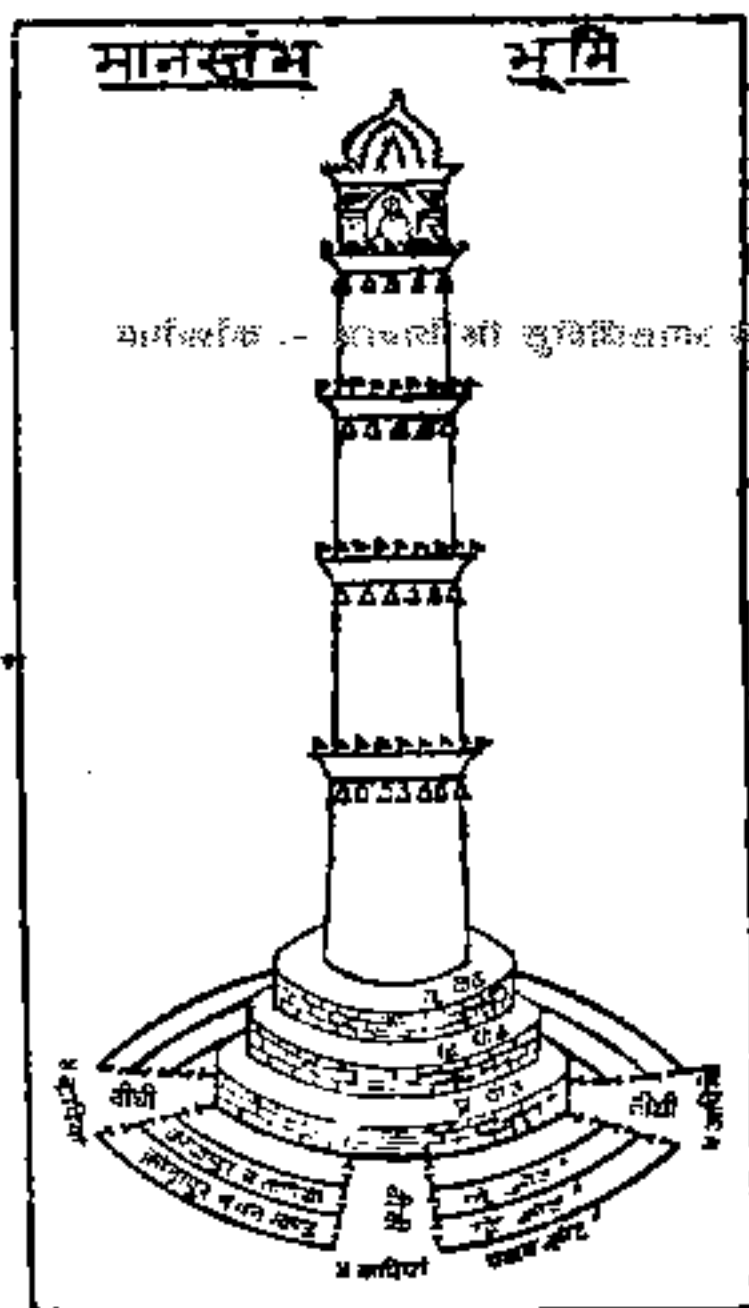
अर्थ :—इन ब्रह्मोंमें भवनवासी, व्यन्तर, ज्योतिषी और कल्पवासी देव स्त्रीकामें प्रवृत्त होते हैं । ये ब्रह्म नर एवं किन्नर-युगलोंके कुंकुम-पङ्कजसे पीतवर्ण रहते हैं ॥७६८॥

एकैक-कमल-संघे, बोहो कुंङाणि सिम्मल-जलाई ।  
सुर-शर-तिरिया सेसुं, ध्वजंतो चरण-रेणुओ ॥७६९॥

। माणस्वभा समस्ता ।

अर्थ :—प्रत्येक कमलसंघ अर्थात् ब्रह्मोंके आश्रित निर्मल जलसे परिपूर्ण दो-दो कुम्भ होते हैं, जिनमें देव, मनुष्य एवं तिर्यञ्च अपने पैरोंकी धूलि धोया करते हैं ॥७६९॥

। मानस्तम्भोंका वर्चन समाप्त हुआ ।



प्रथम वेदीका निरूपण—

वर-रयज-केतु-तोरण-घंटा-जासादिपृष्टि कुत्ताओ ।

आविम-वेदीओ 'तहा, सख्येसु वि समवसरणेसु ॥८००॥

अर्थः—आविम ओ 'तहा' सख्येसु वि समवसरणेसु

अर्थ :—सभी समवसरणोंमें उत्तम रत्नमय ध्वजा, तोरण और घंटाओंके समूहादिकसे युक्त प्रथम वेदियां भी उसीप्रकार होती हैं ॥८००॥

गोउर-बुबार-बाउल-पहुबी सख्वाण वेविद्याण<sup>१</sup> तहा ।

अदुत्तर-सय-संगल-नव-विहि-बेव्वाइ पुब्बं व ॥८०१॥

अर्थ :—सर्व वेदियोंके गोपुरदार, नौ निधियां, पृथलिका इत्यादि तथा एक ही आठ मंगल प्रथ्य पूर्वके सदृश ही होते हैं ॥८०१॥

नवरि बिसेसो गिय-णिय-भूलीसासाण मूल-व<sup>२</sup> देहि ।

भूलोवरि-भागेसु<sup>३</sup>, समान-बासाओ वेदीओ ॥८०२॥

|     |     |     |     |     |     |     |     |     |     |     |     |     |
|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|
| २४  | २३  | २२  | २१  | २०  | १९  | १८  | १७  | १६  | १५  | १४  | १३  | १२  |
| १४४ | १४४ | १४४ | १४४ | १४४ | १४४ | १४४ | १४४ | १४४ | १४४ | १४४ | १४४ | १४४ |

|     |     |     |     |     |     |     |     |     |     |    |
|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|----|
| ११  | १०  | ९   | ८   | ७   | ६   | ५   | ४   | ३   | २   | १  |
| १४४ | १४४ | १४४ | १४४ | १४४ | १४४ | १४४ | १४४ | १४४ | २८८ | ७२ |

। पदम-वेदी समता ।

अर्थ :—विशेषता मात्र यह है कि इन वेदियोंके मूल और उपरिम भागका विस्तार अपने-अपने धूलिसालोंके मूल विस्तारके सदृश होता है ॥८०२॥

। प्रथम वेदीका कथन समाप्त हुआ ।

खाइय-खेसाण<sup>४</sup> तबो, ह्वंति<sup>५</sup> वर-सख्य-सलिल-पुष्पाणं ।

शिय-शिय-जिण-उवण्हि, चउ-भजिबेहि सरिच्छ-गहिराणि ॥८०३॥

१. व. व. क. व. य. उ. तहा ।

२. व. ज. व. वेदिषाण ।

३. व. व. य. वेसाणि ।

४. व. व. क. व. य. उ. वरखण ।

१२५ | २२५ | १०० | १७५ | ७५ | १२५ | ५० | ७५ | २५ | ४५ | २० | ३५ |

४०४-४०५ :- १५ | २५ | ४५ | २० | ४५ | २५ | ४५ | २५ | ४५ | २५ | हस्ता ६ | ७ |

अर्थ :—इसके आगे उत्तम एवं स्वच्छ जलसे परिपूर्ण और धपने-अपने जिनेन्द्रकी ऊँचाईके चतुर्थ भाग प्रमाण गहरे खातिका-लेख होते हैं ॥८०३॥

कुसुम-कुमुद-कुवलय-कमल-बनानोद-भर'-सुगंधीनि ।

मल्लिमय-सोपानानि, सुधाभि पक्खीहि' हंस-पट्टवीहि ॥८०४॥

अर्थ :—ये खातिकाएँ भूले हुए कुमुद, कुवलय और कमल-बनोंके बानोदसे सुगन्धित तथा मल्लिमय सोपानों एवं हंसादि पक्षियों सहित होती हैं ॥८०४॥

निय-निय-यडम-स्त्रिवीणं, तैलियमेरां खु वास-परिमाचं ।

निय-निय-विदिय-स्त्रिवीणं, तैलियमेरां च पसेमं ॥८०५॥

२६४ | २५३ | २४२ | २३१ | २२० | २०९ | १९८ | १८७ | १७६ | १६५ | १५४ |

१४३ | १३२ | १२१ | ११० | ९९ | ८८ | ७७ | ६६ | ५५ | ४४ | ३३ |

५५ | ११ |

अर्थ :—अपनी-अपनी प्रथम पृथिवीके विस्तारका जितना प्रमाण होता है, उसना ही विस्तार अपनी-अपनी प्रत्येक द्वितीय पृथिवीका भी हुआ करता है ॥८०५॥

वेचप्पासाव-स्त्रिदि, केई नेचंछंति ताव' उवाएसे ।

साइय-स्त्रिवीण जोयजमुसहे सेसेसु कम-हीणं ॥८०६॥

अर्थ :—कोई-कोई प्राच्य-प्रासाद-भूमिकी स्वीकार नहीं करते हैं । उनके उप-  
देशानुसार ऋषभदेवके समवसरणमें खातिका-भूमिका विस्तार एक योजन प्रमाण या और तेष  
तीर्थक्षेत्रोंके समवसरणमें क्रमशः हीन-हीन या ॥८०६॥

धूसीसालाणं विस्तारे हि सह्य-आहय-क्षेत्राणं क्रमसो रुद-अपेक्षाणि—

|    |    |    |    |    |    |    |    |    |    |    |    |    |    |    |    |    |
|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|
| २४ | २३ | २२ | २१ | २० | १९ | १८ | १७ | १६ | १५ | १४ | १३ | १२ | ११ | १० | ९  | ८  |
| २४ | २४ | २४ | २४ | २४ | २४ | २४ | २४ | २४ | २४ | २४ | २४ | २४ | २४ | २४ | २४ | २४ |
| ७  | ६  | ५  | ४  | ३  | ५  | ४  |    |    |    |    |    |    |    |    |    |    |
| २४ | २४ | २४ | २४ | २४ | २४ | ४८ | ४८ |    |    |    |    |    |    |    |    |    |

अर्थ :—धूसीसालके विस्तारके साथ खातिका-क्षेत्रका विस्तार क्रमशः हटने सेवने रहता  
है । ( तालिकामें देखिए )

तत्तु धूसीसालाणं क्रमसो मूल-विस्तारो—

|     |     |     |     |     |     |     |     |     |     |     |     |     |
|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|
| २४  | २३  | २२  | २१  | २०  | १९  | १८  | १७  | १६  | १५  | १४  | १३  |     |
| २८८ | २८८ | २८८ | २८८ | २८८ | २८८ | २८८ | २८८ | २८८ | २८८ | २८८ | २८८ | २८८ |
| १२  | ११  | १०  | ९   | ८   | ७   | ६   | ५   | ४   | ३   | ५   | ४   |     |
| २८८ | २८८ | २८८ | २८८ | २८८ | २८८ | २८८ | २८८ | २८८ | २८८ | ५७६ | ५७६ |     |

अर्थ :—क्रमशः धूसीसालका मूल विस्तार ( तालिकामें देखिए ) ।

सग-सग धूसीसालाणं विस्तारेण विरहिदे सग-सग-आहय-क्षेत्राणं विस्तारो—

|     |     |     |     |     |     |     |     |     |     |     |     |     |
|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|
| २६४ | २५३ | २४२ | २३१ | २२० | २०९ | १९८ | १८७ | १७६ | १६५ | १५४ | १४३ |     |
| २८८ | २८८ | २८८ | २८८ | २८८ | २८८ | २८८ | २८८ | २८८ | २८८ | २८८ | २८८ | २८८ |
| १३२ | १२१ | ११० | ९९  | ८८  | ७७  | ६६  | ५५  | ४४  | ३३  | ५५  | ४४  |     |
| २८८ | २८८ | २८८ | २८८ | २८८ | २८८ | २८८ | २८८ | २८८ | २८८ | ५७६ | ५७६ |     |

। साहयक्षेत्राणि समता ।

पाठान्तरम् ।

अपने-अपने धूसीसालोंके विस्तारसे रहित अपने-अपने खातिका-क्षेत्रोंका विस्तार ।  
( तालिकामें देखिए )

खातिका-क्षेत्रका वर्णन समाप्त हुआ ।

सालिबा : २७

**सातिका आणि सत्रिका प्रमाण—**

| सातिका धादि क्षेत्रीका प्रमाण— |                                                   |                                           |                                        |                                         |                                           |                                             |  |
|--------------------------------|---------------------------------------------------|-------------------------------------------|----------------------------------------|-----------------------------------------|-------------------------------------------|---------------------------------------------|--|
| नं०                            | वेदिकोके मूल एवं<br>उपरिम जागका<br>विस्तार गा.८०२ | सातिका ले.की<br>गाहराईका<br>प्रमाण गा.८०३ | दूसरी पृथिवी<br>का विस्तार<br>गाथा ८०५ | धूमिसाल<br>सहित सातिका<br>ले.का विस्तार | प्रकारान्तरसे<br>धूमिसालका<br>मूल विस्तार | धूमिसाल रहित<br>सातिका क्षेत्रका<br>विस्तार |  |
| १                              | ३३३३ घनुष                                         | १२५ घनुष                                  | १३ कोस                                 | १ योजन                                  | १९६३ घ०                                   | ३३ कोस                                      |  |
| २                              | ३९९४ "                                            | ११२३ "                                    | १३३३ "                                 | २३ कोस                                  | १५६३३ "                                   | ३३३ "                                       |  |
| ३                              | ३०५५ "                                            | १०० "                                     | १३३ "                                  | ३३ "                                    | १५२३ "                                    | ३३३ "                                       |  |
| ४                              | २९१३ "                                            | ८७३ "                                     | १३३३ "                                 | ३३ "                                    | १५५३ "                                    | ३३३ "                                       |  |
| ५                              | २७७३ "                                            | ७५ "                                      | १३३ "                                  | ३३ "                                    | १३८३ "                                    | ३३३ "                                       |  |
| ६                              | २६३३ "                                            | ६२३ "                                     | १३३३ "                                 | ३३ "                                    | १३१३३ "                                   | २३३ "                                       |  |
| ७                              | २५० "                                             | ५० "                                      | १३ "                                   | ३ "                                     | १२५ "                                     | २३ "                                        |  |
| ८                              | २३६३ "                                            | ३७३ "                                     | १३३३ "                                 | २३ "                                    | १ ८३३ "                                   | २३३ "                                       |  |
| ९                              | २२२३ "                                            | २५ "                                      | १३ "                                   | २३ "                                    | १११३ "                                    | २३ "                                        |  |
| १०                             | २०८३ "                                            | २२३ "                                     | १३३ "                                  | २३ "                                    | १०४३ "                                    | २३३ "                                       |  |
| ११                             | १९४३ "                                            | २० "                                      | १३३ "                                  | २३ "                                    | १७३ "                                     | २३३ "                                       |  |
| १२                             | १८०३ "                                            | १७३ "                                     | १६८३ घनुष                              | २३ "                                    | १०३३ "                                    | १३३ "                                       |  |
| १३                             | १६६३ "                                            | १५ "                                      | १८३३३ "                                | २ "                                     | ८३३ "                                     | १३ "                                        |  |
| १४                             | १५२३ "                                            | १२३ "                                     | १६८०३ "                                | १३ "                                    | ७६३३ "                                    | १३३ "                                       |  |
| १५                             | १३८३ "                                            | ११३ "                                     | १५२७३ "                                | १३ "                                    | ६३३ "                                     | १३३ "                                       |  |
| १६                             | १२५ "                                             | १० "                                      | १३७५ "                                 | १३ "                                    | ६२३ "                                     | १३ "                                        |  |
| १७                             | १११३ "                                            | ८३ "                                      | १२२२३ "                                | १३ "                                    | ५५३ "                                     | १३ "                                        |  |
| १८                             | ९७३ "                                             | ७३ "                                      | १०६६३ "                                | १३ "                                    | ४८३३ "                                    | १३३ "                                       |  |
| १९                             | ८३३ "                                             | ६३ "                                      | ११६३ "                                 | १ "                                     | ४१३ "                                     | १३ "                                        |  |
| २०                             | ६९३ "                                             | ५ "                                       | ७६३३ "                                 | ३ "                                     | ३४३३ "                                    | ३३ "                                        |  |
| २१                             | ५५३ "                                             | ३३ "                                      | ६११३ "                                 | ३ "                                     | २७३ "                                     | ३३ "                                        |  |
| २२                             | ४१३ "                                             | २३ "                                      | ४५८३ "                                 | ३ "                                     | २०३ "                                     | ३३ "                                        |  |
| २३                             | ३४३३ "                                            | २३ हाथ                                    | ३८१३३ "                                | ३३ "                                    | १७३३ "                                    | ३३३ "                                       |  |
| २४                             | २७३ "                                             | १३ "                                      | ३०५३ "                                 | ३ "                                     | १३३ "                                     | ३३ "                                        |  |

दूसरी वेदी एवं बल्ली क्षेत्रका विस्तार—

बिबियाओ बेबीओ, निय-बिय-पडमिस्त-बेबियाहि समा ।

एसो नवरि विसेसो, बिस्थारो दुगुण-धरिमाणं ॥८०७॥

विस्थारं दुगुण-दुगुणं होषि—

|    |    |    |    |    |    |    |    |    |    |    |    |    |    |
|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|
| २४ | २३ | २२ | २१ | २० | १९ | १८ | १७ | १६ | १५ | १४ | १३ | १२ | ११ |
| ७२ | ७२ | ७२ | ७२ | ७२ | ७२ | ७२ | ७२ | ७२ | ७२ | ७२ | ७२ | ७२ | ७२ |

|    |    |    |    |    |    |    |    |    |    |
|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|
| १० | ९  | ८  | ७  | ६  | ५  | ४  | ३  | २  | १  |
| ७२ | ७२ | ७२ | ७२ | ७२ | ७२ | ७२ | ७२ | ७२ | ७२ |

। बिदिय-वेदी-पमाणं सम्मत् ।

अर्थ :—दूसरी वेदियां अपनी-अपनी पूर्व वेदिकाओंके सट्टण हैं । परन्तु विशेषता यह है कि इनका विस्तार दुगुण-दुगुण प्रमाण है ॥८०७॥

विस्तार दूभा-दूना होता है ( तालिकामें देखिए ) ।

। द्वितीय वेदियोंका प्रमाण समाप्त हुआ ।

पुष्पाग-नाग-कुञ्जय - सयवसइमुत्त<sup>१</sup>-पट्टवि-कुत्ताणि ।

बल्ली-खेस्ताणि सढो<sup>२</sup>, कीडण-गिरि-गुखव<sup>३</sup>-सोहाणि ॥८०८॥

मणि-सोबाण-मणोहर-मोक्खरलो-कुत्त-कमल-संडाणि ।

साणं रंढो दुगुणो, लाइय-खेस्ताण-रंवावो ॥८०९॥

|     |     |     |     |     |     |     |     |     |     |
|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|
| २६४ | २५३ | २४२ | २३१ | २२० | २०९ | १९८ | १८७ | १७६ | १६५ |
| २८८ | २८८ | २८८ | २८८ | २८८ | २८८ | २८८ | २८८ | २८८ | २८८ |

|     |     |     |     |     |     |     |     |     |     |     |     |     |     |     |
|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|
| १४४ | १४३ | १३२ | १२१ | ११० | ९९  | ८८  | ७७  | ६६  | ५५  | ४४  | ३३  | २२  | ११  | ००  |
| २८८ | २८८ | २८८ | २८८ | २८८ | २८८ | २८८ | २८८ | २८८ | २८८ | २८८ | २८८ | २८८ | २८८ | २८८ |

। तदिय-बल्ली-खिदी-समत्ता ।

अर्थ :—इसके आगे पुष्पाग, नाग, कुञ्जक, सतपत्र एवं अतिमुक्त आदिसे संयुक्त, कीड़ा-पर्वतोंसे अतिशय शोभायमान और मणिमय-सोपानोंसे मनोहर, वापिकाओंके विकसित कमल-



समूहों सहित बल्ली-क्षेत्र होते हैं। इनका विस्तार आतिका-क्षेत्रोंके विस्तारसे दुगुना रहता है ॥८०८-८०९॥

। सुतीय-बल्ली-भूमि समाप्त हुई ।

गार्ग्योक्तः :- अथर्ववेद की सुविधिसंज्ञाएँ की व्यवस्थाएँ  
दूसरा कोट—

ततो विविद्या साला, धूसोसासाण<sup>१</sup> वर्णनेहि समा ।  
दुगुणो रंक्षो<sup>२</sup> वारा, रजतमया ज्वल-रक्ताणा भवति ॥८१०॥

|    |    |    |    |    |    |    |    |    |    |    |    |    |
|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|
| २४ | २३ | २२ | २१ | २० | १९ | १८ | १७ | १६ | १५ | १४ | १३ | १२ |
| ७२ | ७२ | ७२ | ७२ | ७२ | ७२ | ७२ | ७२ | ७२ | ७२ | ७२ | ७२ | ७२ |

|    |    |    |    |    |    |    |    |    |     |    |
|----|----|----|----|----|----|----|----|----|-----|----|
| ११ | १० | ९  | ८  | ७  | ६  | ५  | ४  | ३  | २   | १  |
| ७२ | ७२ | ७२ | ७२ | ७२ | ७२ | ७२ | ७२ | ७२ | १४४ | ३६ |

। विदिय-साला समप्ता ।

अर्थ :—इसके भागे दूसरा कोट है, जिसका वर्णन धूतिसालोंके सदृश ही है परन्तु इतना विशेष है कि इसका विस्तार दुगुना है और इसके द्वार रजतमय हैं। यह कोट यज्ञातिके देवों द्वारा रक्षित है ॥८१०॥

। द्वितीय कोट का वर्णन समाप्त हुआ ।

उपवन भूमि—

ततो अउत्थ-उववण-भूमौ<sup>३</sup> असोप-सत्तपम्भ-वणा ।  
चंपय-चूच-वणाइं, पुज्जावि-विसालु राजंति ॥८११॥

अर्थ :—इसके भागे चौथी उपवन भूमि होती है, जिसमें पुज्यावि दिवाग्योंके क्रमसे अशोकवन, सप्तपर्णवन, चम्पकवन, और आम्रवन, ये चार वन शोभायमान होते हैं ॥८११॥

विविह-वणसंड-संडण-विविह-गई-पुल्लिण-कोडण-गिरोहि ।  
विविह-अर-वाविआहि, उववण-भूमौ<sup>३</sup> रम्माओ ॥८१२॥

अर्थ-उपवन भूमियाँ विविध प्रकारके वन-समूहोंसे मण्डित, विविध नदियोंके

पुलिन और कीड़ा पर्वतों से तथा अनेक प्रकार की उत्तम वाषिकाओंसे रमणीय होती हैं ॥८१२॥

एकैककाए उबवण-सिद्धिए तरबो असोय-ससदसा ।

चंपय'-रूवा सुंदर-रूवा चत्वारि चत्वारि ॥८१३॥

अर्थ :—एक-एक उपवन-भूमिमें अलोक, सप्तच्छद, चम्पक एवं अम्र, ये चार-चार सुन्दर रूपवाले वृक्ष होते हैं ॥८१३॥

शैत्यवृक्षों की ऊँचाई एवं जिन-प्रतिमाएँ—

चामर-पट्टहि-जुवान, सेत-तकमं हवंति उच्छेहा' ।

णिय-चिय-अथ-उदएहि, बारस-गुणिवेहि सारिच्छा ॥८१४॥

६००० । ५४०० । ४८०० । ४२०० । ३६०० । ३००० । २४०० । १८०० ।

१२०० । १०८० । ९६० । ८४० । ७२० । ६०० । ५४० । ४८० । ४२० ।

३६० । ३०० । २४० । १८० । १२० । ९६ । ८४ । ७२ ।

अर्थ :—चामरादि सहित शैत्य-वृक्षोंकी ऊँचाई बारहसे गुणित अपने-अपने तीर्थंकरोंकी ऊँचाईके सरस होती है ॥८१४॥

मणिमय-जिन-प्रतिमाओ, अहु-महापादिहेर-कृत्ताओ' ।

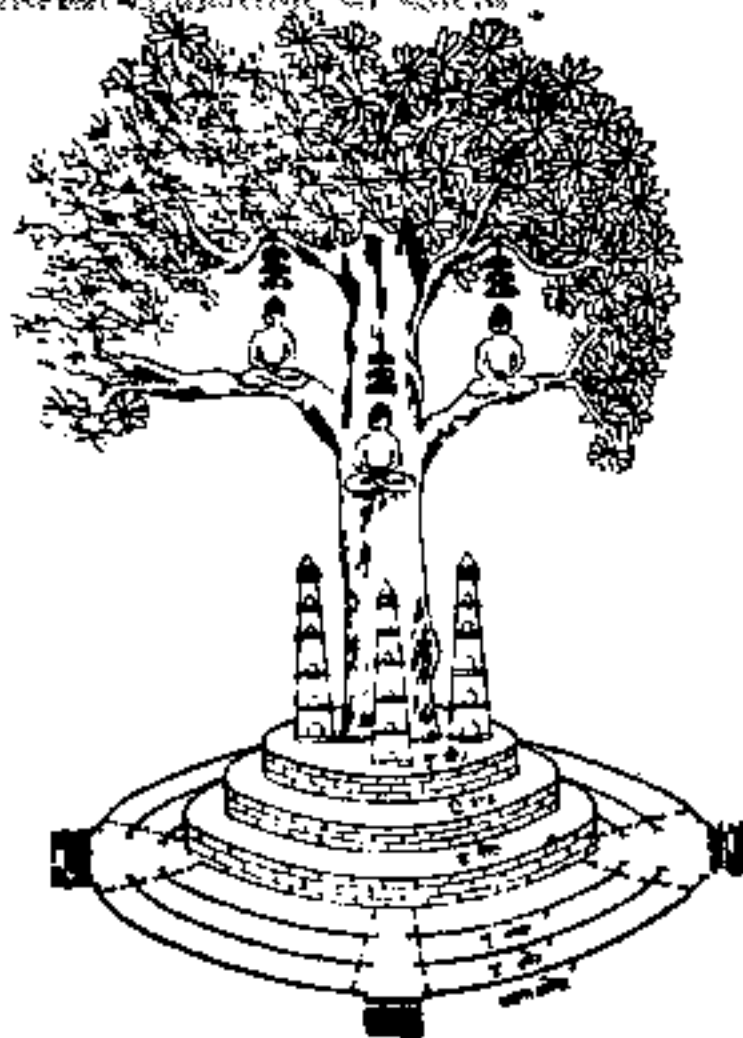
एकैककंसि सेतहुमन्मि चत्वारि चत्वारि ॥८१५॥

अर्थ :—एक-एक शैत्यवृक्षके आश्रित आठ महाप्रातिहार्योंसे संयुक्त चार-चार मणिमय जिन-प्रतिमाएँ होती हैं ॥८१५॥

१. व. पञ्चवभूदा सुन्दरभूदा, ज. द. पञ्चवभूदा सुन्दरभूदा । २. व. व. क. ज. य. उ. उच्छेद्यौ ।

३. व. व. क. ज. य. उ. उच्छेद्यौ ।

वार्मज्झिज्ज : ... आर्यसंघो जसि विज्झिमासुर जी खमाराम



सात भव निरीक्षण—

उपवन-वावि-जलेहि, सिता पेच्छति एक-भव-जाइ ।

तस्स निरिक्खण-मेसे, सत्त-भवातोद-वावि-जादीओ ॥८१६॥

अर्थ :—उपवनको वापिकाओंके जलसे अभिषिक्त जन-समूह एक भवजाति ( जन्म ) को देखते हैं, तथा उनके ( वापीके जलमें ) निरीक्षण करने पर अतीत-एवं अनागत सम्बन्धी सात भव-जातियोंको देखने हैं ॥८१६॥

**विशेषार्थ :**—समवसरणकी उपवन भूमिमें स्थित बापिकाओंके जससे स्नान करने पर वर्तमान भवके आगे-पीछेकी बात जानसे हैं और बापिकाओंके जसमें देखने पर तीन अतीतके, तीन भावी और एक वर्तमान का इसप्रकार सात भव देखते हैं ।

मानस्तम्भका विवेचन—

‘सालस्य-परिअरिया’, पोढ-स्य-उवरि माणयंभा य ।

चत्तारो चत्तारो, एक्केक्के चेत-सक्कम्मि ॥८१७॥

**अर्थ :**—एक-एक चैत्यवृक्षके आश्रित तीन कोठोंसे देवित एवं तीन पीठोंके ऊपर चार-चार मानस्तम्भ होते हैं ॥८१७॥

सहिवा वर-वावोहि, कमसुम्पल-कुमुद-परिमलित्ताहि<sup>१</sup> ।

सुर-गर-मिहुण-तणुण-हूँ-हूँ-पकेहि<sup>२</sup> विज्ज-अणुणहि<sup>३</sup> ॥८१८॥

**अर्थ :**—ये मानस्तम्भ कमल, उत्पल एवं कुमुदोंकी सुगन्धसे युक्त तथा देव और मनुष्य-युगलोंके क्षीरसे निकली हुई केशरके पत्रोंसे पोत अलवाली उत्तम बापिकाओं सहित होते हैं ॥८१८॥

कत्थं वि हम्मा रम्मा, कीडण-सात्ताओ कत्थं वि वराम्भो ।

कत्थं वि अङ्ग-सात्ता, गण्णंत्तं सुरंगणाइण्णा<sup>४</sup> ॥८१९॥

**अर्थ :**—वहाँ पर कहीं रमणीय भवन, कहीं उत्तम कीडनशाला और कहीं नृत्य करती हुई देवाङ्गनाओंसे आकीर्ण नाट्यशालाएँ होती हैं ॥८१९॥

अणुमो-मूसणया, सक्के वर-विविह-रयण-णिम्मविदा ।

एवे पंत्ति-कमेणं, उववण-भूमोसु सोहंति ॥८२०॥

**अर्थ :**—बहुत भूमियों ( जगहों ) से भूषित तथा उत्तम और नानाप्रकारके रत्नोंसे निर्मित ये सब भवन पंक्ति क्रमसे उपवनभूमियोंमें लोभायमान होते हैं ॥८२०॥

तात्तं हम्मादीणं, सम्भेत्तु<sup>१</sup> होंति सम्भसरणेत्तु<sup>२</sup> ।  
 भिय-भिय<sup>३</sup>-विण-उव्वहि, बारस-गुणिदेहि सम्भ-उव्वया ॥८२१॥

६००० । ५४०० । ..... णेमि १२० पास २७ । वीर २१ ।

अर्थ :—सब सम्भसरणीमें इन हम्मादिकोंकी ऊँचाई बारहसे गुणित अपने-अपने तीर्थकरोंकी ऊँचाईके बराबर होती है ॥८२१॥

णिय-णिय-वट्ठम-सिदीणं, वेसिय-वेसं<sup>४</sup> ह् वं व-परिमाणं ।  
 विण-भिय-वण-भूमिणं<sup>५</sup>, वेसिय-वेसं<sup>६</sup> ह्मे वट्ठमं ॥८२२॥

|     |     |     |     |     |     |     |     |     |
|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|
| २६४ | २५३ | २४२ | २३१ | २२० | २०९ | १९८ | १८७ | १७६ |
| २८८ | २८८ | २८८ | २८८ | २८८ | २८८ | २८८ | २८८ | २८८ |
| १६५ | १५४ | १४३ | १३२ | १२१ | ११० | ९९  | ८८  | ७७  |
| २८८ | २८८ | २८८ | २८८ | २८८ | २८८ | २८८ | २८८ | २८८ |
| ४४  | ३३  | ५५  | ४४  |     |     |     |     |     |
| २८८ | २८८ | ५७६ | ५७६ |     |     |     |     |     |

। तुरिम<sup>७</sup>-वण-भूमि समत्ता ।

अर्थ :—अपनी-अपनी प्रथम पृथिवीके विस्तारका जितना प्रमाण होता है, उससे बूना प्रमाण अपनी-अपनी उपवन-भूमियोंके विस्तारका होता है ॥८२२॥

। चतुर्थ वन-भूमिका कथन समाप्त हुआ ।

तालिका : २१ ]

चरखो महाहियारो

[ २४७ ]

तालिका : २१

वेवी, बल्लोभूमिका, कोट, खैत्यवृक्ष, प्रासादोंकी एवं उपवनभूमिका प्रमाण—

| नं० | दूसरी वेवीका<br>विस्तार<br>गाथा ८०७ | बल्लोभूमिका<br>विस्तार<br>गाथा ८०६ | दूसरे कोटका<br>विस्तार<br>गाथा ८१० | खैत्यवृक्षोंकी<br>ऊँचाई<br>गाथा ८१४ | प्रासादोंकी<br>ऊँचाई<br>गाथा ८२१ | उपवनभूमिका<br>विस्तार<br>गाथा ८२२ |
|-----|-------------------------------------|------------------------------------|------------------------------------|-------------------------------------|----------------------------------|-----------------------------------|
| १   | ६६६३ घनुष                           | ३३ कोन                             | ६६६३ घनुष                          | ६००० घनुष                           | ६००० घनुष                        | ३३ कोन                            |
| २   | ६३८६ " "                            | ३३३ " "                            | ६३८६ " "                           | ५४०० " "                            | ५४०० " "                         | ३३३ " "                           |
| ३   | ६११३ " "                            | ३३३ " "                            | ६११३ " "                           | ४८०० " "                            | ४८०० " "                         | ३३३ " "                           |
| ४   | ५८३३ " "                            | ३३३ " "                            | ५८३३ " "                           | ४२०० " "                            | ४२०० " "                         | ३३३ " "                           |
| ५   | ५५५३ " "                            | ३३३ " "                            | ५५५३ " "                           | ३६०० " "                            | ३६०० " "                         | ३३३ " "                           |
| ६   | ५२७३ " "                            | ३३३ " "                            | ५२७३ " "                           | ३००० " "                            | ३००० " "                         | ३३३ " "                           |
| ७   | ५०० " "                             | ३३ " "                             | ५०० " "                            | २४०० " "                            | २४०० " "                         | ३३ " "                            |
| ८   | ४७२३ " "                            | ३३३ " "                            | ४७२३ " "                           | १८०० " "                            | १८०० " "                         | ३३३ " "                           |
| ९   | ४४४३ " "                            | ३३ " "                             | ४४४३ " "                           | १२०० " "                            | १२०० " "                         | ३३ " "                            |
| १०  | ४१६३ " "                            | ३३३ " "                            | ४१६३ " "                           | १०८० " "                            | १०८० " "                         | ३३३ " "                           |
| ११  | ३८८३ " "                            | ३३३ " "                            | ३८८३ " "                           | ८६० " "                             | ८६० " "                          | ३३३ " "                           |
| १२  | ३६१३ " "                            | ३३३ " "                            | ३६१३ " "                           | ८४० " "                             | ८४० " "                          | ३३३ " "                           |
| १३  | ३३३३ " "                            | ३३ " "                             | ३३३३ " "                           | ७२० " "                             | ७२० " "                          | ३३ " "                            |
| १४  | ३०५३ " "                            | ३३३ " "                            | ३०५३ " "                           | ६०० " "                             | ६०० " "                          | ३३३ " "                           |
| १५  | २७७३ " "                            | ३३३ " "                            | २७७३ " "                           | ५४० " "                             | ५४० " "                          | ३३३ " "                           |
| १६  | २५० " "                             | ३३ " "                             | २५० " "                            | ४८० " "                             | ४८० " "                          | ३३ " "                            |
| १७  | २२२३ " "                            | ३३ " "                             | २२२३ " "                           | ४२० " "                             | ४२० " "                          | ३३ " "                            |
| १८  | १९४३ " "                            | ३३३ " "                            | १९४३ " "                           | ३६० " "                             | ३६० " "                          | ३३३ " "                           |
| १९  | १६६३ " "                            | ३३ " "                             | १६६३ " "                           | ३०० " "                             | ३०० " "                          | ३३ " "                            |
| २०  | १३८३ " "                            | ३३ " "                             | १३८३ " "                           | २४० " "                             | २४० " "                          | ३३ " "                            |
| २१  | १११३ " "                            | ३३ " "                             | १११३ " "                           | १८० " "                             | १८० " "                          | ३३ " "                            |
| २२  | ८३३ " "                             | ३३ " "                             | ८३३ " "                            | १२० " "                             | १२० " "                          | ३३ " "                            |
| २३  | ६९३ " "                             | ३३३ " "                            | ६९३ " "                            | २७ " "                              | २७ " "                           | ३३३ " "                           |
| २४  | ५५३ " "                             | ३३ " "                             | ५५३ " "                            | २१ " "                              | २१ " "                           | ३३ " "                            |

दो-दोसुं पासेसुं, सख-वण-व्यणिधि-सख-ओहीणं ।  
 दो-दो जडुय-साला, ताण पुढं आविमहु-सालासु ॥८२३॥  
 भावण-सुर-कण्ठाओ, गरुवत्ते कप्पवासि-कण्ठाओ ।  
 अगिम-अट-सालासुं, पुग्गा<sup>१</sup> च सुवण्णणा सळा ॥८२४॥

तृतीयवेदीया समाप्तः ।

अर्थ :—सब वनोंके आश्रित सब वीथियोंके दोनों पाखेंभागोंमें दो-दो नाट्यशालाएँ होती हैं । इनमें से आधिकी आठ नाट्यशालाओंमें भवनवासिनी देव-कन्याएँ और इससे आगेकी आठ नाट्यशालाओंमें कल्पवासिनी कन्याएँ नृत्य करती हैं । इन नाट्य-शालाओंका सुन्दर वर्णन पूर्वके सहस्र ही है ॥८२३-८२४॥

। नाट्यशालाओंका कथन समाप्त हुआ ।

तदियाओ वेदीओ, हवत्ति णिय-विबिय-वेवियाहि समा ।  
 गवरि विसेसो एसो, अक्खिवा वार-रक्खणया ॥८२५॥

। तदिया वेदी समाप्तः ।

अर्थ :—तीसरी वेदिया अपनी-अपनी दूसरी वेदियोंके सहस्र होती हैं । केवल विशेषता यह है कि यहाँ पर यक्षेन्द्र द्वार-रक्षक हुआ करते हैं ॥८२५॥

। तृतीय वेदी समाप्त हुई ।

ध्वज-भूमिका वर्णन—

तत्तो घय-भूमीए, दिव्व-धया होंति ते च दस-मेवा ।  
 सौह-गय-वसह-खगवह-सिहि-ससि-रवि-हंस-पञ्च-वक्का-य ॥८२६॥

अर्थ :—इसके आगे ध्वज-भूमिमें सिंह, गज, वृषभ, गरुड, भयूर, चन्द्र, सूर्य, हंस, पक्ष और चक्र इन चिह्नोंसे चिह्नित दस प्रकारकी दिव्य ध्वजाएँ होती हैं ॥८२६॥

अद्भुतर<sup>१</sup>-सय-सहिया, एकेकेका तं पि अद्भु-सहिय-सया ।

शालग्राम-धर्म-संग्रहा, पत्तेश्वरं चण्ड-विशाल-कृतं ॥८२७॥

**सप्त** :—चारों दिशाओंमेंसे प्रत्येक दिशामें इन दस प्रकारकी ध्वजाओंमें से एक-एक ध्वजा एक सौ बाठ रहती हैं और इनमें से भी प्रत्येक ध्वजा अपनी एक सौ बाठ क्षुद्रध्वजाओंसे संयुक्त होती हैं ॥८२७॥

सुण्ड-लह-लह-गभ-सग-चउक्क-अंकक्कमेण-मिसिदाणं ।

सम्य-व्यापारं संज्ञां गच्छेत्तु स्यात्परमम् ॥८२८॥

| ୪୭୦୮୨୦ |

अर्थ :—शून्य, आठ, साठ, शून्य, सात एवं चार अंकोंके क्रमशः मिलाने पर जो संख्या उत्पन्न हो उसकी ध्वजाएँ एक-एक समवसरणमें हटा करती हैं । (६२८)

विशेषाद्यं :—१०-१० प्रकारकी महाध्वजाएँ चारों दिशाओंमें हैं, अतः  $10 \times 4 = 40$  । प्रत्येक महाध्वजा १०८, १०८ है, अतः  $108 \times 40 = 4320$  कुल महाध्वजाएँ हुईं । इनमेंसे प्रत्येक महाध्वजा १०८, १०८ शुद्ध ध्वजाओं सहित हैं । इसप्रकार  $(4320 \times 108 = 466560) + 4320 = 470880$  कुल ध्वजाएँ एक समयसरणमें होती हैं ।

संलग्ना सयस-ध्या, कण्यत्थंभेसु रयरा-सचिवेस ।

यंभुल्लेहो नियम-नियम-जिण-तण-ववयहि वारस-हवेहि ॥८३६॥

६००० । ५५०० । ५८०० । ५२०० । ३६०० । ३००० । २५०० । १८०० ।

୧୨୦୦ । ୧୦୮୦ । ୬୧୦ । ୮୪୦ । ୭୨୦ । ୬୦୦ । ୫୪୦ । ୪୮୦ । ୪୨୦ ।

३६० । ३०० । २४० । १८० । १२० । २७ । २१ ।

अर्थ :—समस्त ध्वजाएँ रत्नोंसे सज्जित स्वर्णमय स्तम्भोंमें संलग्न रहती हैं । इन स्तम्भोंकी ऊँचाई अपने-अपने तीर्थकरोंके शरीरकी ऊँचाईसे बारह-गुणी हुआ करती है ॥८२६॥

### स्तम्भोंका विस्तार—

उसहस्रि चंभ-हं, सउसह्री-ग्रहिथ-वृ-सय-याज्जानि ।

सिन्धु-भजिदार्णि कमसो, एककहसुजाणि णेमि-यञ्जतं ॥८३०॥



पासमि धंभ-शंका, पञ्चा पञ्चवर्णा छक्क-यविहसा ।

चउवाला छक्क-हिवा, निहिट्टा बहुमानमि ॥८३१॥

|     |     |     |     |     |     |     |     |     |     |     |
|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|
| २६४ | २६३ | २६२ | २६१ | २६० | २५९ | २५८ | २५७ | २५६ | २५५ | २५४ |
| ३   | ३   | ३   | ३   | ३   | ३   | ३   | ३   | ३   | ३   | ३   |

|     |     |     |     |     |     |     |     |     |     |     |
|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|
| १४३ | १४२ | १४१ | १४० | १३९ | १३८ | १३७ | १३६ | १३५ | १३४ | १३३ |
| ३   | ३   | ३   | ३   | ३   | ३   | ३   | ३   | ३   | ३   | ३   |

अर्थ :—ऋषभदेवके समवसरणमें इन स्तम्भोंका विस्तार तीनसे भाजित दो सौ बीसठ अंगुल था । फिर इसके आगे नेमिनाथ पर्यन्त क्रमशः भाज्य राशि में ग्यारह-ग्यारह कम होते गये हैं । पार्श्वनाथके समवसरणमें इन स्तम्भोंका विस्तार छह से विभक्त पचपन अंगुल और धर्ममान स्वामीके छहसे भाजित चवालीस अंगुल प्रमाण कहा गया है ॥८३०-८३१॥

ध्वजदण्डोंका अन्तर—

धप-वंडाणं अंतरमुसह-जिजे धस्तिवाणि चावाणि ।

चउवीसेहि हिवाणि, पण-कवि-हीणाणि जाव नेमि-जिजं ॥८३२॥

|     |     |     |     |     |     |     |     |     |     |     |
|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|
| ६०० | ५७५ | ५५० | ५२५ | ५०० | ४७५ | ४५० | ४२५ | ४०० | ३७५ | ३५० |
| २४  | २४  | २४  | २४  | २४  | २४  | २४  | २४  | २४  | २४  | २४  |

|     |     |     |     |     |     |     |     |     |     |    |
|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|----|
| ३२५ | ३०० | २७५ | २५० | २२५ | २०० | १७५ | १५० | १२५ | १०० | ७५ |
| २४  | २४  | २४  | २४  | २४  | २४  | २४  | २४  | २४  | २४  | २४ |

पणुवीस-अहिय-धनु-सय 'अडवाल-हिवं च पासणाहम्मि ।

धीर - जिजे एक्क - सयं, सेसिय - नेसेहि मबहरिवं ॥८३३॥

|     |     |
|-----|-----|
| १२५ | १०० |
| ४८  | ४८  |

अर्थ :—ऋषभ जिनेन्द्रके समवसरणमें ध्वज-दण्डोंका अन्तर बीबीससे भाजित छह सौ धनुष प्रमाण था । फिर इसके आगे नेमि-जिनेन्द्र पर्यन्त भाज्य राशिमेंसे क्रमशः उत्तरोत्तर पाँचका वर्ग अर्थात् पञ्चोस-पञ्चीस कम होते गये हैं । पार्श्वनाथ तीर्थंकरके समवसरणमें इन ध्वज-दण्डोंका अन्तर अड़तालीससे भाजित एक सौ पञ्चोस धनुष एवं धीर जिनेन्द्रके समवसरण में इतने मात्र ( अड़तालीस ) से भाजित एक सौ धनुष-प्रमाण था ॥८३२-८३३॥

गाथा : ८३४-८३५ ]

चतुर्थो महाद्विचारो

[ २५१ ]

ध्वजभूमियोंका विस्तार—

जिय-जिय-बस्ति-सिद्धीलं, वेस्तिय-मेसो हुवेदि चित्पारो ।

जिय - जिय - धय - भूमीर्न, लेस्तिय - मेसो धुनेयध्वो ॥८३४॥

|     |     |     |     |     |     |     |     |     |     |     |     |
|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|
| २६४ | २५३ | २४२ | २३१ | २२० | २०९ | १९८ | १८७ | १७६ | १६५ | १५४ | १४३ |
| २८८ | २८८ | २८८ | २८८ | २८८ | २८८ | २८८ | २८८ | २८८ | २८८ | २८८ | २८८ |
| १३२ | १२१ | ११० | ९९  | ८८  | ७७  | ६६  | ५५  | ४४  | ३३  | २२  | ११  |
| २८८ | २८८ | २८८ | २८८ | २८८ | २८८ | २८८ | २८८ | २८८ | २८८ | २८८ | २८८ |

। पंचम-धय-भूमी समता ।

अर्थ :- अपनी-अपनी जता-भूमियोंका जितना विस्तार होता है उतना ही विस्तार अपनी-अपनी ध्वज-भूमियों का भी जानना चाहिए ॥८३४॥

। पंचम ध्वजभूमिका वर्णन समाप्त हुआ ।

तीसरे कोटका विस्तार—

तद्विया साखा अऊजुन-बण्णा जिय-धूसिसास-सरिसगुणा ।

जवरि य 'हुधुधो वासो, भावणया वार-रवसवया ॥८३५॥

|     |     |     |     |     |     |     |     |     |     |     |     |
|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|
| २४  | २३  | २२  | २१  | २०  | १९  | १८  | १७  | १६  | १५  | १४  | १३  |
| २८८ | २८८ | २८८ | २८८ | २८८ | २८८ | २८८ | २८८ | २८८ | २८८ | २८८ | २८८ |
| १२  | ११  | १०  | ९   | ८   | ७   | ६   | ५   | ४   | ३   | २   | १   |
| २८८ | २८८ | २८८ | २८८ | २८८ | २८८ | २८८ | २८८ | २८८ | २८८ | २८८ | २८८ |

। तद्विय-साखा समता ।

अर्थ :- इसके आगे चौदोंके सहस्र वर्णवाला तीसरा कोट अपने धूसिसास कोटके ही सहस्र होता है । परन्तु यहां इतनी विशेषता है कि इस कोटका विस्तार दूना होता है और इसके द्वाररक्षक, भवनवासी देव होते हैं ॥८३५॥

। तीसरे कोटका वर्णन समाप्त हुआ ।

## कल्पभूमिका विस्तार—

तलो छठी कुली, कर्णविह - कल्पवृक्षेहि संकुम्भा ।

निय - निय - नय - नृमीर्ष वास-रमा-कण्ठतह-नृमी ॥८३६॥

|     |     |     |     |     |     |     |     |     |     |     |     |
|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|
| २६४ | २४३ | २४२ | २३१ | २२० | २०९ | १९८ | १८७ | १७६ | १६५ | १५४ | १४३ |
| २८८ | २८८ | २८८ | २८८ | २८८ | २८८ | २८८ | २८८ | २८८ | २८८ | २८८ | २८८ |

|     |     |     |     |     |     |     |     |     |     |     |     |
|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|
| १३२ | १२१ | ११० | ९९  | ८८  | ७७  | ६६  | ५५  | ४४  | ३३  | २२  | ११  |
| २८८ | २८८ | २८८ | २८८ | २८८ | २८८ | २८८ | २८८ | २८८ | २८८ | २८८ | २८८ |

अर्थ :—इसके आगे छठी कल्पभूमि है, जो दस प्रकारके कल्पवृक्षोंसे परिपूर्ण और अपनी अपनी ध्वज-भूमियोंके विस्तार प्रमाण विस्तार वाली होती है ॥८३६॥

पार्यवर्तिका :— आचार्य श्री लुपिर्वाहाराजी महाराज  
[ तालिका : २२ पृष्ठ सं० २५३ पर देखिये ]

## कल्पभूमियोंका वर्णन—

पाणंग-सूरिंगा, नृसण-वर्धंग-भोषणंग य ।

आलय-बीविध'-भायण-माला-तेयंगवा तरओ ॥८३७॥

अर्थ :—इस भूमिमें पानाङ्ग, दूर्याङ्ग, भूषणाङ्ग, वस्त्राङ्ग, भोजनाङ्ग, जालयाङ्ग, दीपाङ्ग, भाजनाङ्ग, मालाङ्ग और तेजाङ्ग ये दस प्रकारके कल्पवृक्ष होते हैं ॥८३७॥

ते पाण - सूर - नृसण - वस्त्राहारास्यम्बवीवाणि ।

भायण - माला - जोदिणि वेंती संकल्प - मेलेण ॥८३८॥

अर्थ :—ये ( कल्पवृक्ष मनुष्योंको ) संकल्प मायसे पानक, वाद्य, आभूषण, वस्त्र, भोजन, प्रासाद, दीपक, वस्त्र, मालाएँ एवं तेजयुक्त पदार्थ देते हैं ॥८३८॥



कलत्रं च वर-शाखोभो, कमलपुष्प-कमूद-परिमलितस्रग्भो ।

संस्कृत-विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली-११००६८

करथ वि हुन्ना रम्मा, कीडण-साखाओ करथ वि कराधो ।

कस्थ वि मेवक्षण-साला, गिष्मन्त-निनिह-जय-चरिया ॥८४०॥

अर्थ :—कल्प भूमिमें कहीं पर कमल, उत्पल एवं कुमुदोंकी सुगन्धसे परिपूर्ण तथा देव एवं मनुष्य युगलोंके शरीरसे निकले हुए केशरके कदमसे पीत-जलवाली उत्तम बापिकाएँ, कहीं पर रमणीय प्रासाद, कहीं पर उत्तम कीड़न-खासाएँ और कहींपर विजेन्द्रदेवके विजय-चरित्रके गीतोंसे युक्त प्रेक्षण (नृत्य देखनेकी) शाखाएँ होती हैं ॥८३६-८४०॥

बह-मृगो-भुसन्ध्या, सख्ये शर-बिबिह-रयज-णिम्नदिव्या ।

एवे पंति-कमेष्णं, सोहंते कण्य - भुमीसु ॥८४१॥

वर्ष :—उत्तम नाना रत्नोंसे निमित और अनेक लण्डों ( भंजिलों ) से सुशोभित ये सब हर्म्यदिक ( प्रासाद, क्रीड़ागृह, प्रेक्षागृह आदि ) पंक्ति क्रमसे इन कल्पभूमियोंमें शोभायमान होते हैं ॥८१॥

चत्तारो चत्तारो, पुण्याविसु' महा नमैरु-मंदारा ।

संतराम-पारिजादा, सिद्धस्था<sup>२</sup> कण्ठ - भ्रमोत्तु<sup>३</sup> ॥८४२॥

स्यः :—कल्पभूमियों पर पूर्वादि चारों दिशाओंमें नभेर, मन्वार, सन्तानक और पारिजात, ये चार-चार महान् सिद्धार्थ वृक्ष होते हैं ॥८४२॥

सध्ये सिद्धस्य-तरु, तिष्यादारा ति<sup>३</sup>-मेगलसिरस्या ।

एकमेवकस्स य तदणो, मुले चत्तारि चत्तारि ॥८४३॥

सिद्धाणं पञ्चिभाओ, विचिस-पीडाओ रयण-महयाओ ।

खण्ड - भेदा - निवारण - इति - संसार - भोक्ता ॥८४॥

**अर्थ :-** ये सब सिद्धार्थवृक्ष तीन कोटोंसे युक्त और तीन-मेखलाओंके ऊपर स्थित होते हैं। इनमें से प्रत्येक वृक्षके मूल भागमें अद्भुत पीठोंसे संयुक्त और वन्दना करने भावसे ही दुरन्त संसारके भयको नष्ट करनेवाली ऐसी रत्नमय चार-चार प्रतिमाएं सिद्धोंकी होती हैं ॥८४३-८४४॥

सासराय-संवेष्टिय-ति-पीठ-उवरम्मि माणचंभाओ ।

बसारी बसारी, सिद्धत्थ-तथम्मि एक्केक्के ॥८४५॥

अर्थ :—एक-एक सिद्धार्थ वृक्षके आश्रित, तीन कोटोंसे संवेष्टित पीठत्रयके ऊपर चार-चार मानस्तम्भ होते हैं ॥८४५॥

कल्पतरु सिद्धत्था, कीडण - सालाओ तासु 'पासावा ।

णिय-णिय-अिच-उवरोहि बारस-गुणिबोहि सम-उदया ॥८४६॥

६००० । ५४०० । ४८०० । ४२०० । ३६०० । ३००० । २४०० । १८०० ।

१२०० । १०८० । ९६० । ८४० । ७२० । ६०० । ४४० । ४८० । ४२० ।

३६० । ३०० । २४० । १८० । १२० । २७ । २१ ।

। छट्ठ भूमि-समदा ।

अर्थ :—कल्पभूमियोंमें स्थित सिद्धार्थ-कल्पवृक्ष, कीडनशालाएँ एवं प्रासाद बारहसे गुणित अपने-अपने जिनेन्द्रकी ऊँचाई सदृश ऊँचाई वाले होते हैं ॥८४६॥

। छठी भूमिका वर्णन समाप्त हुआ ।

कल्पतरुभूमि स्थित नाट्यशालाएँ—

कल्प-तरु-भूमि-पणिबिसु, भीहि पडि दिव्व-रयण-मिम्मविहा ।

चउ चउ जट्टय-सासा, णिय-वेत्त-तरुहि सरित्त-उज्जेहो ॥८४७॥

६००० । ५४०० । ४८०० । ४२०० । ३६०० । ३००० । २४०० । १८०० ।

१२०० । १०८० । ९६० । ८४० । ७२० । ६०० । ४४० । ४८० । ४२० । ३६० ।

३०० । २४० । १८० । १२० । २७ । २१ ।

अर्थ :—कल्पतरु-भूमिके पार्श्वभागोंमें प्रत्येक घीघीके आश्रित दिव्य रत्नोंसे निर्मित और अपने चैत्य-वृक्षोंके सदृश ऊँचाई वाली चार-चार नाट्यशालाएँ होती हैं ॥८४७॥

परम-भूमि-भूतिदात्री, सध्याओ बु-सीस-रंग-भूमीओ ।  
ओहसिय - कण्ठयाहि, पण्चवसाणाहि रम्माओ ॥८४८॥

। ऋष्यशाला समस्ता ।

अर्थ :—सर्व नाट्यशालाएँ पाँच भूमियों ( खण्डों-मंजिलों ) से विभूजित, बत्तीस रङ्ग-भूमियों सहित और नृत्य करती हुई ज्योतिषी कन्याओंसे रमणीय होती हैं ॥८४८॥

। नाट्यशालाओंका वर्णन समाप्त हुआ ।

चतुर्थ वेदी—

ततो अउरध-वेदी, हवेदि निय-पत्रम-वेदिया-सरिसा ।  
अवरि विसेसो भावण - देवा वाराणि रक्खंति ॥८४९॥

। तुरिय-वेदी समस्ता ।

अर्थ :—इसके आगे अपनी प्रथम वेदी सदृश चौथी वेदी होती है । विशेषता मात्र इतनी है कि यहाँ द्वारों की रक्षा भवनवासी देव करते हैं ॥८४९॥

। चौथी वेदीका वर्णन समाप्त हुआ ।

भवन-भूमियाँ—

ततो भवण-सिबीओ, भवणः तासु रयण-रहवाहं ।  
धुव्वंत - धय -<sup>१</sup>वडाहं, वर - तोरण - तुंग - वाराहं ॥८५०॥

अर्थ :—इससे आगे भवन-भूमियाँ होती हैं; जिनमें कहुराती हुई ध्वजा-वताकाओं सहित एवं उत्तम तोरण-शुक्ल उन्नत द्वारों वाले रत्न-निर्मित भवन होते हैं ॥८५०॥

सुर - मिहण - गेय - अरुण-सुर-रवेहि जिणाभिसेएहि ।  
सोहंते ते भवणा, एवकेवके भवण - भूमीसु ॥८५१॥

अर्थ :—भवन-भूमियोंपर स्थित वे एक-एक भवन सुर-गुणोंके गीत, नृत्य एवं बाजोंके शब्दोंसे तथा जिनाभिषेकोंसे शोभायमान होते हैं ॥८५१॥

उववण-पहुवि सव्वं, पुब्बं विव भवण-भूमि-विस्संभो ।

णिय-पव्वम-वेदि-भासे, गुणिते एक्कारसेहि सारिस्सा ॥८५२॥

यववण-पहुवि सव्वं ... सारिस्सा ओ गुणितेसारेहि एक्कारसेहि

|     |     |     |     |     |     |     |     |     |     |     |     |
|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|
| २६४ | २५३ | २४२ | २३१ | २२० | २०९ | १९८ | १८७ | १७६ | १६५ | १५४ | १४३ |
| ५७६ | ५७६ | ५७६ | ५७६ | ५७६ | ५७६ | ५७६ | ५७६ | ५७६ | ५७६ | ५७६ | ५७६ |

|     |     |     |     |     |     |     |     |     |     |      |      |
|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|------|------|
| १३२ | १२१ | ११० | ९९  | ८८  | ७७  | ६६  | ५५  | ४४  | ३३  | २२   | ११   |
| ५७६ | ५७६ | ५७६ | ५७६ | ५७६ | ५७६ | ५७६ | ५७६ | ५७६ | ५७६ | ११५२ | ११५२ |

। भवणविसदी समत्ता ।

अर्थ :- यही उपवनादिक सब पूर्व सहण हो होते हैं । उपयुक्त भवन-भूमियोंका विस्तार ग्यारह से गुणित अष्टमी प्रथम वेदीक विस्तार सहण है ॥८५२॥

। भवनभूमिका वर्णन समाप्त हुआ ।

स्तूपोंका वर्णन - -

भवण-सिद्धि-प्यणिघोसुं, बोहि पडि होलि बल-जवा बूहा ।

जिन - सिद्ध - प्यडिमाहि, अप्पडिमाहि समाइणा ॥८५३॥

अर्थ :- भवन-भूमिके पार्श्वभागोंमें प्रत्येक ओरोंके मध्यमें जिन ( महंत ) और सिद्धोंकी अनुपम प्रतिमाओंसे व्याप्त नौ-नौ स्तूप होते हैं ॥८५३॥

छरावि-विभव-जुसा, जज्जंत-विज्जिहा-घय-वलालोला<sup>१</sup> ।

मड - संगल - परियरिया, से सव्वे विज्ज - रज्जमया ॥८५४॥

अर्थ :- वे सब स्तूप छत्रादि वैभवसे संयुक्त, कहराती हुई ध्वजाओंके समूहसे चञ्चल, आठ मङ्गल द्रव्योंसे सहित और दिव्य-रत्नोंसे निमित्त होते हैं ॥८५४॥

एक्केक्केसि बूहे, अंतरयं मयर - तोरणाण सयं ।

उज्जेत्तो<sup>२</sup> बूहाणं, जिय - वेरा - बुमाण उदय - समं ॥८५५॥



६००० । ५४०० । ४८०० । ४२०० । ३६०० । ३००० । २४०० । १८०० । १२०० ।

१०८० । ६६० । ८४० । ७२० । ६०० । ५४० । ४८० । ४२० । ३६० । ३०० ।

२४० । १८० । १२० । ९० । ६० ।

अर्थ :—एक-एक स्तूपके बीचमें मकराकार सी तोरण होते हैं । इन स्तूपोंकी ऊँचाई इनके अपने चरमवृक्षोंकी लम्बाई के समान होती है ॥८५५॥

दीहता - हंस - माणं, ताणं संपद् पण्डु - उवएसं ।

‘भग्नाभिसेय - णकवण - पदाहिणं तेसु कुप्पन्ति ॥८५६॥

। धूहा समत्ता ।

अर्थ :—इन स्तूपोंकी लम्बाई एवं विस्तारके प्रमाण का उपदेश इस समय नष्ट हो चुका है । भग्न-जीव इन स्तूपोंका अभिषेक, पूजन और प्रदक्षिणा करते हैं ॥८५६॥

। स्तूपोंका कथन समाप्त हुआ ।

चतुर्थ कोट—

ततो चउत्थ - सात्ता, ह्वेइ आयास-कत्तिह-संकात्ता ।

मरगय - मणिमय - गोडर-दार - चउक्केण रमन्निजा ॥८५७॥

अर्थ :—इसके आगे निर्मल-स्फटिक रत्न सहस्र घोर भरकत-मणिमय चार-गोपुर-द्वारोंसे रमणीय ऐसा चतुर्थ कोट होता है ॥८५७॥

वर-रमण - वंड - मंडल-भुज-वंडा कप्पवासिणो देवा ।

जिज्जपाव - कमल-भत्ता, गोडर - वाराणि रक्खन्ति ॥८५८॥

अर्थ :—जिनके भुजदण्ड उत्तम रत्नमय दण्डोंसे मण्डित हैं और जितेन्द्र भगवान्‌के चरण-कमलोंमें जिनकी भक्ति है ऐसे कल्पवासी देव वहाँ गोपुर द्वारोंकी रक्षा करते हैं ॥८५८॥

तालाणं विक्खंमो, कोसं चउधोस वत्तह - राहम्मि ।

अडसीदि - हुसय - भजिवा एककूणा जाव चेमि-जिणं ॥८५९॥

२४ | २३ | २२ | २१ | २० | १९ | १८ | १७ | १६ | १५ | १४ | १३ | १२ |  
२८८ | २८८ | २८८ | २८८ | २८८ | २८८ | २८८ | २८८ | २८८ | २८८ | २८८ | २८८ | २८८ |

११ | १० | ९ | ८ | ७ | ६ | ५ | ४ | ३ |  
२८८ | २८८ | २८८ | २८८ | २८८ | २८८ | २८८ | २८८ | २८८ |

**वर्ष :-** वृषभनाथ महादेवजी के समवसरणमें कोटका विस्तार छत्तीससे विभक्त छहसौ पञ्चीस पौबीस कोस प्रमाण था । इसके प्रागे नेमिनाथ पर्यन्त क्रमशः एक-एक कोस कम होता गया है ॥८५६॥

पणबीसाहिय - छत्तसय - बंका छत्तीस<sup>१</sup>-संविहत्था य ।

पासम्मि बड़माने, पब - हिद - पणुबीस-अहिद-सयं ॥८६०॥

| ६२५<sup>२</sup> | १२५ |  
३६ | ६ |

। तुरिम-सासा समसा ।

**वर्ष :-** मयवान् पार्वनाथके समवसरणमें कोटका विस्तार छत्तीससे विभक्त छहसौ पञ्चीस धनुष और वर्धमान स्वामीके कोटका विस्तार नौसे भाजित एकसौ पञ्चीस धनुष प्रमाण था ॥८६०॥

। धनुयें कोटका वर्धन समाप्त हुआ ।

श्रीमण्डपभूमि—

मह सिरि-मंडब-भूमी, अट्टमया<sup>३</sup> अनुबसा मनोहरया ।

बर - रयण - यंस - बरिया, मुत्ता-बालाह<sup>४</sup>-कय-सोहा ॥८६१॥

**वर्ष :-** इसके पश्चात् अनुपम, मनोहर, उत्तम रत्नोंके स्तम्भों पर स्थित और मुक्त-आलादिसे शोभायमान आठवीं श्रीमण्डपभूमि होती है ॥८६१॥

निम्मल-यलिह-विजिम्मिय-सोलस-भिराण अंतरे कोट्टा ।

बारस ताणं उदओ, गिय-जिय-उदएहि बारस-होहि ॥८६२॥

१. म. बत्तीस । २. म. ३३५ । ३. द. अनुबसा, व. न. य. मणुबसासमसो, क. मणुबमसो, उ. मणुबमाणं मसो । ४. द. व. क. ज. प. उ. बालाप्रोकमसोहा ।

२६० ]

तिलोपपञ्चली

[ पाथा : ८६३-८६४ ]

६००० । ५४०० । ४८०० । ४२०० । ३६०० । ३००० । २४०० । १८०० । १२०० ।  
 १०८० । ९६० । ८४० । ७२० । ६०० । ४४० । ४८० । ४२० । ३६० । ३०० ।  
 २४० । १८० । १२० । २७ । २१ ।

अर्थ :- निर्मल स्फटिकसे निर्मित सोलह दीवालोक मध्य बारह कोठे होते हैं । इन कोठोंकी ऊँचाई अपने-अपने जिनेन्द्रकी ऊँचाईसे बारह-गुणी होती है ॥८६२॥

वीसाहिय - कोस - सयं, वंशं कोट्टाभ उसह-भाहम्मि ।

बारस - बग्गेण हिं, पक्कीणं जाव पेसि - जिणं ॥८६३॥

पास-जिणे पक्कीसा, अइसीवी-अहिय-वुसय-पविहवा ।

वीर-जिणिं वंसा, पंच-घणा वस-हवा य एव-भजिवा ॥८६४॥

|     |      |     |     |     |     |     |     |     |     |     |
|-----|------|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|
| १२० | ११५  | ११० | १०५ | १०० | ९५  | ९०  | ८५  | ८०  | ७५  | ७०  |
| १४४ | १४४  | १४४ | १४४ | १४४ | १४४ | १४४ | १४४ | १४४ | १४४ | १४४ |
| ६५  | ६०   | ५५  | ५०  | ४५  | ४०  | ३५  | ३०  | २५  | २०  | १५  |
| १४४ | १४४  | १४४ | १४४ | १४४ | १४४ | १४४ | १४४ | १४४ | १४४ | १४४ |
| २५  | २२५० |     |     |     |     |     |     |     |     |     |
| २८८ | ६    |     |     |     |     |     |     |     |     |     |

। स्तिरिमंढवा समसा ।

अर्थ :- ऋषभतीर्थकरके समवसरणमें कोठोंका विस्तार बारहके वर्ग (१४४) से भाजित एक से बीस कोस प्रमाण था । इसके आगे नेमिनाथ पर्यंत क्रमशः उत्तरोत्तर पाँच-पाँच कम होते गये हैं । पार्श्व जिनेन्द्र के यह विस्तार दो से षठासीसे भाजित पक्कीस कोस और महावीरके पाँचके धनको दससे गुणाकर नौ का भाग देनेपर जो लब्ध आये उसने धनुष प्रमाण था ॥८६३-८६४॥

। श्रीमण्डपोंका वर्णन समाप्त हुआ ।

**सारिका : २३**

**करपबुद्धों काटखशालाओं, स्तूपों एवं कोठों आदि का प्रमाण—**

[illegible]



अहुमए अहुविहा, बेंतरवेवा य किन्नर - प्यहुबो ।  
नवमे ससि-रवि-पहुबी, जोहसिया जिरा-रिबिहु-मणा ॥८७०॥

अर्थ :—आठवें कोठेमें किन्नरादिक आठ प्रकारके व्यन्तरदेव और नवम कोठेमें जितेन्द्र-  
देवमें मनकी निविष्ट करने वाले चन्द्र-सूर्यादिक ज्योतिषी देव बैठते हैं ॥८७०॥

सोहमाबी मज्जुव - कम्पंता वेव - रायणी वसमे ।  
एककरसे चक्कहुरा, मंडलिया पत्थिवा मज्जुवा ॥८७१॥

अर्थ :—दसवें कोठेमें शोधर्मस्वर्गसे लेकर मज्जुत स्वर्ग पर्यन्तके देव एवं उनके इन्द्र तथा  
ग्यारहवें कोठेमें चक्रवर्ती, माण्डलिक राजा एवं मन्त्र मनुष्य बैठते हैं ॥८७१॥

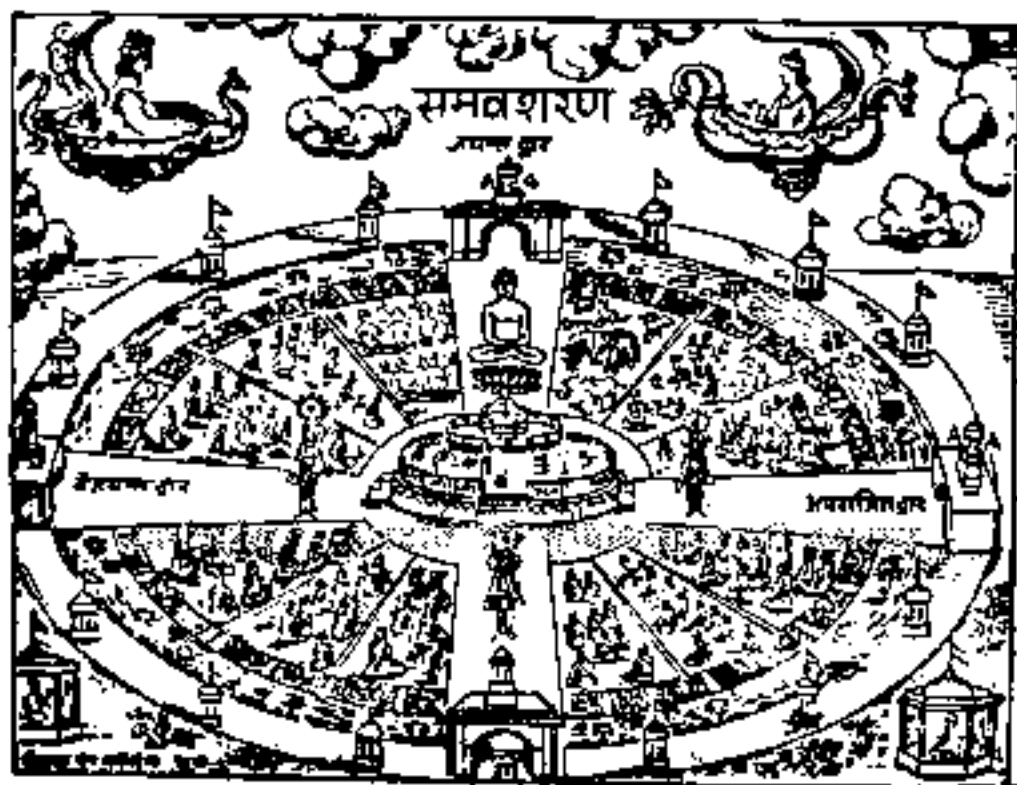
अर्थवर्णन :- आठवें श्री सुविधिनामक श्री गुरुदेव  
बारसमझि य तिरिया, करि-केसरि-बाघ-हरिण'-पहुबीओ ।  
मोसूरण पुअ - वेरं, ससू वि सुमिल - भाव - बुवा ॥८७२॥

। गहा-विष्णुनासा समसा ।

अर्थ :—बारहवें कोठेमें हाथी, सिंह, व्याघ्र घोर हरिणादिक तिर्यञ्च जीव बैठते हैं ।  
इनमें पूर्व वंरको छोड़कर शत्रु भी उत्तम भिन्न भावसे संयुक्त होते हैं ॥८७२॥

[ समवधारण बिच पृष्ठ २६४ पर देखें ]

। गलोंकी रचना समाप्त हुई ।



पाँचवीं वेदो—

अह पंचम-वेदीओ, शिम्मल-फलिहोबलेहि रहबाओ ।

णिय-णिय-खउत्थ-साला-सरिच्छ - उज्जेह-यहुदीओ ॥८७३॥

|     |     |     |     |     |     |     |     |     |     |     |     |
|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|
| २४  | २३  | २२  | २१  | २०  | १९  | १८  | १७  | १६  | १५  | १४  | १३  |
| २८८ | २८८ | २८८ | २८८ | २८८ | २८८ | २८८ | २८८ | २८८ | २८८ | २८८ | २८८ |
| १२  | ११  | १०  | ९   | ८   | ७   | ६   | ५   | ४   | ३   | २   | १   |
| २८८ | २८८ | २८८ | २८८ | २८८ | २८८ | २८८ | २८८ | २८८ | २८८ | २८८ | २८८ |

। पंचम-वेदी समस्ता ।

सम्बन्ध :- इसके अनन्तर निर्मल स्फटिक पाषाणोंसे विरचित और अपने-अपने चतुर्थ कोटके सहस्र विस्तारवि सहित पाँचवीं वेदियां होती हैं ॥८७३॥

। पाँचवीं वेदीका वर्णन समाप्त हुआ ।

## प्रथम पीठका प्रमाण—

तछो पदमे पीठा, बैसनिब - सणोहि निम्बिया तानं ।

जिय - मानस्तम्भादिम - पोइकुछेहोम्ब उच्छेहा' ॥८७४॥

|    |    |    |    |    |    |    |    |    |    |    |    |    |    |
|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|
| २४ | २३ | २२ | २१ | २० | १९ | १८ | १७ | १६ | १५ | १४ | १३ | १२ | ११ |
| ३  | ३  | ३  | ३  | ३  | ३  | ३  | ३  | ३  | ३  | ३  | ३  | ३  | ३  |

|    |   |   |   |   |   |   |   |   |   |   |   |   |   |   |   |   |   |   |   |   |
|----|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १० | ९ | ८ | ७ | ६ | ५ | ४ | ३ | २ | १ | ० | ९ | ८ | ७ | ६ | ५ | ४ | ३ | २ | १ | ० |
| ३  | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ |

अर्थ :—इसके आगे बँहूर्य-भणियोंसे निमित प्रथम पीठ है । इन पीठोंकी ऊँचाई अपने-अपने मानस्तम्भादि की ऊँचाई सहज है ॥८७४॥

पक्षेष्कं कोठुपं, 'पणधोसु' तह म सयल-बीहीणं ।

होति ह सोलस सोलस, सोबाणा पद्धम पीडेसु' ॥८७५॥

अर्थ :—प्रथम पीठोंके ऊपर ( उपर्युक्त ) बारह कोठोंमेंसे प्रत्येक कोठेके प्रवेश-द्वारमें एवं समस्त (चारों) बीजियोंके सम्मुख सोलह-सोलह सोपान होते हैं ॥८७५॥

द्वेण पद्धम-पीठा, कोसा चउत्थीस बारसेहि 'हिवा ।

उसह - जिणिदे कमसो, एक्केक्कूभाणि जेमि - जिणं ॥८७६॥

|    |    |    |    |    |    |    |    |    |    |    |    |    |
|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|
| २४ | २३ | २२ | २१ | २० | १९ | १८ | १७ | १६ | १५ | १४ | १३ | १२ |
| १२ | १२ | १२ | १२ | १२ | १२ | १२ | १२ | १२ | १२ | १२ | १२ | १२ |

|    |    |    |    |    |    |    |    |    |
|----|----|----|----|----|----|----|----|----|
| ११ | १० | ९  | ८  | ७  | ६  | ५  | ४  | ३  |
| १२ | १२ | १२ | १२ | १२ | १२ | १२ | १२ | १२ |

अर्थ :—शुद्ध-जिनेन्द्रके समयसरणमें प्रथम पीठका विस्तार बारहसे भाजित बीबीस कोस था । फिर इसके आगे नेमि जिनेन्द्र पर्यन्त क्रमशः एक-एक अंक कम होता गया है ॥८७६॥

१. द. ब. क. ज. व. महीपुच्छेहो हवति कुच्छेहो, य. महीपुच्छेहो वति उच्छेहो । २. य. पणवीसुतम-सय-बीहीणं, ब. ज. व. उ. पणवीसुतम-सयल-बीहीणं । क. पणवीसुतमसयल बीहीणं । ३. द. ब. क. ज. य. उ. हवा ।



पञ्च-परिमाण्ना कोसा, चञ्चोस हिवा य पासणीहम्मि ।  
एक्को विजय छक्क - हिंसे देसे तिरिवद्धमाणम्मि ॥८७७॥

$$\begin{array}{|c|c|} \hline ५ & १ \\ \hline २४ & ६ \\ \hline \end{array}$$

अर्थ :— पावर्ष-जिनेन्द्रके समवसरणमें प्रथम पीठका विस्तार चौबीससे भाजित पाँच कोस और वर्धमान जिनेन्द्रके समवसरणमें छहसे भाजित एक कोस प्रमाण ही था ॥८७७॥

पीठोंकी परिधियोंका प्रमाण—

पीठानं परिहीओ, जिय-णिय-विस्वार-तिगुणिय-पमाणा ।  
धर - रयण - जिम्मियाओ, अणुवस-रमणिज्ज-सोहाओ ॥८७८॥

|    |    |    |    |    |    |    |    |    |    |    |    |
|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|
| २४ | २३ | २२ | २१ | २० | १९ | १८ | १७ | १६ | १५ | १४ | १३ |
| ४  | ४  | ४  | ४  | ४  | ४  | ४  | ४  | ४  | ४  | ४  | ४  |
| १२ | ११ | १० | ९  | ८  | ७  | ६  | ५  | ४  | ३  | २  | १  |
| ४  | ४  | ४  | ४  | ४  | ४  | ४  | ४  | ४  | ४  | ४  | ४  |

अर्थ :— पीठोंकी परिधियोंका प्रमाण अपने-अपने विस्तारसे तिगुणा होता है । ये पीठिकाएँ उत्तम रत्नोंसे निर्मित एवं अनुपम रमणीय दोआसे सम्पन्न होती हैं ॥८७८॥

धर्मचक्र—

वसयोवस - पीहेसु, विविह्वण-इव्व-मंगल-सुवेसु ।  
तिर-धरिद-वम्म-वक्का, वेदुंते चञ्च-विसासु जम्मिवा ॥८७९॥

अर्थ :— चूड़ी सदृश गोल तथा नाना प्रकारके पूजा-द्रव्य एवं मंगल-द्रव्यों सहित इन पीठों पर चारों दिशाओंमें धर्मचक्रको तिर पर रत्ने हुए वस्त्रोंसे स्थित रहते हैं ॥८७९॥

मेखलाका विस्तार—

चावाणि छत्तहत्ता, अट्ट - हिवा पीठ-मेहसा-वधं ।  
उत्तह - जिणे पम्माहिय-ओ-सय-ऊणाणि वेमि - जिणं ॥८८०॥

पञ्चोसाहिय - छत्सय, अहु-बिहसं च पास-गाहम्मि ।

एक्क - सयं पञ्चोसअहियं वीरम्मि दोहि हिं ॥८८१॥

|      |      |      |      |      |      |      |      |      |      |
|------|------|------|------|------|------|------|------|------|------|
| ६००० | ५७५० | ५५०० | ५२५० | ५००० | ४७५० | ४५०० | ४२५० | ४००० | ३७५० |
| ८    | ८    | ८    | ८    | ८    | ८    | ८    | ८    | ८    | ८    |
| ३५०० | ३२५० | ३००० | २७५० | २५०० | २२५० | २००० | १७५० | १५०० | १२५० |
| ८    | ८    | ८    | ८    | ८    | ८    | ८    | ८    | ८    | ८    |
| १००० | ७५०  | ६२५  | ५००  |      |      |      |      |      |      |
| ८    | ८    | ८    | ८    |      |      |      |      |      |      |

अर्थ :—ऋषभजिनेन्द्रके समवसरणमें पीठकी मेखलाका विस्तार आठसे भाजित छह हजार धनुष प्रमाण था । पुनः इसके आगे नेमिनाथ पर्यन्त क्रमशः उत्तरोत्तर दोसौ पचास-दोसौ पचास अंक कम होते गये हैं तथा पार्श्वनाथके यह विस्तार आठसे भाजित छहसौ पञ्चोस धनुष एवं बीर प्रभुके दो से भाजित एकसौ पञ्चोस धनुष प्रमाण था ॥८८०-८८१॥

गणधरादिकों द्वारा की हुई भक्ति—

आरुहिव्वणं सेसुं, 'गणधर - देवादि - बारस-गणा से ।

काकूण 'ति - ध्ववाहिममव्वति मुहं मुहं गाहं ॥८८२॥

योकूण बुदि - सएहि, असंसगुणसेहि-कम्म-णिज्जरणं ।

काकूण पसण्ण - मजा, निय - निय - कोट्टेसु पविसंति ॥८८३॥

। पढन-पीढा समत्ता ।

अर्थ :—वे गणधरदेवादिक बारह-गण उन पीठों पर चढ़कर और तीन प्रदक्षिणा देकर बार-बार जिनेन्द्र देवकी पूजा करते हैं, तथा संकड़ों स्तुतियों द्वारा कीर्तन कर कर्मोंकी प्रसङ्गात्-गुणध्वेणीरूप निर्जरा करके प्रसन्न-चित्त होते हुए अपने-अपने कोठोंमें प्रवेश करते हैं । यर्थात् अपने-अपने कोठोंमें बैठ जाते हैं ॥८८२-८८३॥

। प्रथम पीठोंका वर्णन समाप्त हुआ ।

**विशेषार्थ :**—समोसरणके बारह कोठोंमें क्रमशः ऋषि (गणधरादिक), कल्पवासी देवियाँ, आर्यिकाएँ, आर्यिकाएँ, ज्योतिष देवियाँ, व्यन्तर देवियाँ, भवत्वासिनी देवियाँ, भवनवासी देव, व्यन्तरदेव, ज्योतिषी देव, कल्पवासी देव, चक्रवर्ती आदि पुरुष तथा तिर्यचोके बैठनेकी व्यवस्था रहती है । जिनेन्द्र भगवान्को ये सब अपने-अपने कोठोंमें प्रविष्ट होकर ही नमस्कार, वन्दना एवं स्तुति करते हैं । परन्तु सब कोठोंके प्रधान, प्रमुख गण ( गणधर प्रमुख, कल्पवासी देवो प्रमुख, आर्यिका प्रमुख आदि-आदि ) प्रथम पीठ पर चढ़कर तीन प्रदक्षिणा देकर जिनेन्द्र भगवान्की पूजा-स्तुतिरूप कीर्तन द्वारा असंख्यात गुणश्रेणीरूप निर्जरा करते हैं । भगवान् महावीरके समवसरणमें यह गौरव ऋषियोंमें गौतमगणधरको, आर्यिकाओंमें आर्यिका चन्दनाको, आवकोंमें राजा श्रेणिक को, पशुओंमें सिंह को एवं अन्य-अन्य प्रमुखोंको अवश्य ही मिला है और गन्धकुटीकी जिस प्रथम पीठ पर लड़े होकर गणधर देवादि ने स्तुति की है उसी पीठ पर आर्यिका, आर्यिका, देवियाँ और सिंहने भी पहुँच कर भक्ति-भाव पूर्वक स्तुति, वन्दनादि की है ।

आर्यिकाएँ . . . आर्यिकाएँ की स्तुतिविधानमें भी उक्तप्रमाण

[ तालिका : २४ पृष्ठ २६६ पर देखिये ]

तालिका : २४

चतुर्थो महाहियारी

[ २६६ ]

तालिका : २४

मार्गदर्शक :- आचार्य की सुविधितमस्त जी यज्ञाचार्य

वेदी, पीठ, परिचियों एवं मेखला का विस्तार भावि

| नं० | पाँचवीं वेदी का<br>विस्तार<br>गा० ८७३ | प्रथम पीठ की<br>ऊँचाई<br>गा० ८७४ | प्रथम पीठका<br>विस्तार<br>गा० ८७६ | पीठोंकी परिचियों<br>का प्रमाण<br>गा० ८७८ | पीठ की<br>मेखला का विस्तार<br>गा० ८८० |
|-----|---------------------------------------|----------------------------------|-----------------------------------|------------------------------------------|---------------------------------------|
| १   | १६६३ घ.                               | ८ घनुष                           | २ कोस                             | ६ कोस                                    | ७५० घनुष                              |
| २   | १५६३३ "                               | ७३ "                             | १३३ "                             | ५३ "                                     | ७१८३ "                                |
| ३   | १५२३ "                                | ७३ "                             | १३३ "                             | ५३ "                                     | ६७७३ "                                |
| ४   | १४३३ "                                | ७३ "                             | १३३ "                             | ५३ "                                     | ६५६३ "                                |
| ५   | १३८३ "                                | ६३ "                             | १३३ "                             | ५३ "                                     | ६२५ "                                 |
| ६   | १३१३३ "                               | ६३ "                             | १३३ "                             | ५३ "                                     | ५९३३ "                                |
| ७   | १२५ "                                 | ६३ "                             | १३३ "                             | ५३ "                                     | ५६२३ "                                |
| ८   | ११८३३ "                               | ५३ "                             | १३३ "                             | ५३ "                                     | ५३१३ "                                |
| ९   | १११३ "                                | ५३ "                             | १३३ "                             | ५३ "                                     | ५०० "                                 |
| १०  | १०४३ "                                | ५३ "                             | १३३ "                             | ५३ "                                     | ४६८३ "                                |
| ११  | ९७३ "                                 | ४३ "                             | १३३ "                             | ५३ "                                     | ४३७३ "                                |
| १२  | ९०३३ "                                | ४३ "                             | १३३ "                             | ५३ "                                     | ४०६३ "                                |
| १३  | ८३३ "                                 | ४३ "                             | १३३ "                             | ५३ "                                     | ३७५ "                                 |
| १४  | ७६३३२ "                               | ३३ "                             | १८३३३ घ०                          | २३ "                                     | ३४३३ "                                |
| १५  | ६९३ "                                 | ३३ "                             | १६६६३ "                           | २३ "                                     | ३१२३ "                                |
| १६  | ६२३ "                                 | ३३ "                             | १५०० "                            | २३ "                                     | २८१३ "                                |
| १७  | ५५३ "                                 | २३ "                             | १३३३३ "                           | २३ "                                     | २५० "                                 |
| १८  | ४८३३३ "                               | २३ "                             | ११६६३ "                           | १३ "                                     | २१८३ "                                |
| १९  | ४१३ "                                 | २३ "                             | १००० "                            | १३ "                                     | १८७३ "                                |
| २०  | ३४३३३ "                               | १३ "                             | ८३३३ "                            | १३ "                                     | १५६३ "                                |
| २१  | २७३ "                                 | १३ "                             | ६६६३ "                            | १३ "                                     | १२५ "                                 |
| २२  | २०३ "                                 | १३ "                             | ५०० "                             | १३ "                                     | ९३३ "                                 |
| २३  | १७३३३ "                               | १३ "                             | ४१६३ "                            | १३ "                                     | ७८३ "                                 |
| २४  | १०३ "                                 | १३ "                             | ३३३३ "                            | १३ "                                     | ६२३ "                                 |

## दूसरे पीठका वर्णन—

पहलोपीठकी भाँति ही दूसरी पीठकी वर्णन—

पहलोपीठकी भाँति ही दूसरी पीठकी वर्णन—

चउ-बंका आदि-जिणे, छत्रभागेगुण' जाय जेमिजित्तं ॥८८४॥

|    |    |    |    |    |    |    |    |    |    |    |    |    |    |    |
|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|
| २४ | २३ | २२ | २१ | २० | १९ | १८ | १७ | १६ | १५ | १४ | १३ | १२ | ११ | १० |
| ६  | ६  | ६  | ६  | ६  | ६  | ६  | ६  | ६  | ६  | ६  | ६  | ६  | ६  | ६  |

|   |   |   |   |   |   |   |
|---|---|---|---|---|---|---|
| ६ | ५ | ७ | ६ | ५ | ४ | ३ |
| ६ | ६ | ६ | ६ | ६ | ६ | ६ |

अर्थ :—प्रथम पीठोंके ऊपर दूसरे पीठ होते हैं। ऋषभदेवके समवसरणमें उनके (दूसरे) पीठकी ऊँचाई चार धनुष थी। फिर इसके आगे उत्तरोत्तर क्रमसे जेमिजिनेन्द्र पर्यन्त एक बटा छद्म— एक बटा छद्म ( ६ ) भाग कम होता गया है ॥८८४॥

पास-जिणे पञ्च-बंका, बारस-भजिवा य बीर-गाहम्मि ।

एकको भिद्य तिय-भजिवा गाणावर-रवण-<sup>१</sup>जिसय-इसा ॥८८५॥

|    |   |
|----|---|
| ५  | १ |
| १२ | ३ |

अर्थ :—पाँचवें नाथ सौर्यकरके समवसरणमें दूसरी पीठकी ऊँचाई बारहसे भाजित पाँच धनुष और बीरनाथके तीन से भाजित एक धनुष मात्र थी। ये दूसरी पीठिकाएँ नाना प्रकारके उत्तम रत्नोंसे अलंकृत भूमि-युक्त हैं ॥८८५॥

## दूसरी पीठोंकी मेखलाओंका विस्तार—

जावाणि छस्सहस्सा, अट्ट - हिवा ताण मेहसा - व'वा ।

उसह-जिणे पण्णा-हिय-वो-सय-ऊणा य जेमि-परियंतं ॥८८६॥

पञ्चवीसाहिय-छस्सय, अट्ट - विहत्तं च पास - सामिस्स ।

एक - सय पञ्चवीसवहिय बीरम्मि बोहि <sup>२</sup>हिवं ॥८८७॥

|      |      |      |      |      |      |      |      |      |      |      |      |      |      |      |      |      |      |      |      |      |     |     |     |
|------|------|------|------|------|------|------|------|------|------|------|------|------|------|------|------|------|------|------|------|------|-----|-----|-----|
| ६००० | ५७५० | ५५०० | ५२५० | ५००० | ४७५० | ४५०० | ४२५० | ४००० | ३७५० | ३५०० | ३२५० | ३००० | २७५० | २५०० | २२५० | २००० | १७५० | १५०० | १२५० | १००० | ७५० | ५२५ | १२५ |
| ८    | ८    | ८    | ८    | ८    | ८    | ८    | ८    | ८    | ८    | ८    | ८    | ८    | ८    | ८    | ८    | ८    | ८    | ८    | ८    | ८    | ८   | ८   | ८   |

अर्थ :—ऋषभनाथके समवसरणमें उनकी ( दूसरी पीठोंको ) मेखलाओंका विस्तार आठसे भाजित छह हजार धनुष था । इसके आगे नेमिनाथ पर्यन्त क्रमशः दो सौ पचास-दो सौ पचास साग कम होता गया है । पार्श्वनाथ [ के समवसरणमें द्वितीय पीठकी मेखलाओं ] का विस्तार आठसे भाजित छह सौ पन्चीस धनुष और वीरनाथ भगवान्‌के यह विस्तार दोसे भाजित एकसौ पन्चीस धनुष प्रमाण था ॥८८६-८८७॥

सोपान एवं ध्वजाश्रोंका वर्णन—

ताणं कचयमयाणं, पीछाणं पंच - वर्ण - रयचमया ।

समबहु सोवाणा, खेटुंते चउ - बिसासु अट्टु ॥८८८॥

( ८ ) ८ ।

अर्थ :—उन स्वर्णमय पीठोंके ऊपर चढ़नेके लिए चारों दिशाओंमें पाँच वर्णके रत्नोंसे निर्मित समान आकार वाले आठ-आठ सोपान होते हैं ॥८८८॥

केसरि-बसह-सरोरह-चक्करार-बाम-गरुड-हृत्वि-घया ।

मणि - रथम - संबमाणा, राजंते बिबिय - पीछेसु ॥८८९॥

अर्थ :—द्वितीय पीठोंके ऊपर मणिमय स्तम्भोंपर सटकती हुई सिंह, बैल, कमल, चक्र, वस्त्र, माला, गरुड और हाथी इन चिह्नोंसे युक्त ध्वजाएँ लोभायमान होती हैं ॥८८९॥

धूष-धडा गड-जिह्मो, अस्त्रज-इच्छाणि 'मंगसारिणि पि ।

खेटुंति बिबिय - पीछे, को सककह ताण बण्णेसु ॥८९०॥

अर्थ :—द्वितीय पीठपर जो धूपघट, नव निधियाँ, पूजन द्रव्य और मंगलद्रव्य स्थित रहते हैं, उनका वर्णन कर सकनेमें कौन समर्थ है ? ॥८९०॥

## द्वितीय पीठका विस्तार—

बीसाहिय-सय-कोसा, उसह-जिणे बिबिय-पीठ-बिस्थारा ।

पंचूणा सुण्णउवी, भजिदा कमसो य चेमि - पण्णंतं ॥८६१॥

पास - जिणे पणुबीसं, अट्ठुणं बीसएहि भवहरिवा ।

पंच बिबिय बीरजिणे, पविहस्ता अट्ठतासीहि ॥८६२॥

|     |     |     |     |     |    |    |    |    |    |    |
|-----|-----|-----|-----|-----|----|----|----|----|----|----|
| १२० | ११५ | ११० | १०५ | १०० | ९५ | ९० | ८५ | ८० | ७५ | ७० |
| ९६  | ९६  | ९६  | ९६  | ९६  | ९६ | ९६ | ९६ | ९६ | ९६ | ९६ |

सार्गद्वयं :- आचार्य की सुविधिराग्य की प्रस्ताव

|    |    |    |    |    |    |    |    |    |    |    |
|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|
| ६५ | ६० | ५५ | ५० | ४५ | ४० | ३५ | ३० | २५ | २० | १५ |
| ९६ | ९६ | ९६ | ९६ | ९६ | ९६ | ९६ | ९६ | ९६ | ९६ | ९६ |

$$\begin{array}{c} २५ \\ १६२ \end{array} \left| \begin{array}{c} ३ \\ ४८ \end{array} \right.$$

## । बिबिय-पीठा समस्ता ।

अर्थ :- नृपमनाथ जिनेन्द्रके सम्भवसरणमें द्वितीय पीठका विस्तार छधामबैसे भाजित एक सौ बीस कोस प्रमाण था । पश्चात् इसके आगे नेमिनाथ पर्यन्त क्रमशः पाँच-पाँच भाग कम होते गये हैं । पार्श्व जिनेन्द्रके यह विस्तार अठ कम दोसोबे भाजित एक्कीस कोस तथा बीर जिनेन्द्रके अट्ठतासीसे भाजित पाँच कोस प्रमाण था ॥८६१-८६२॥

। द्वितीय पीठोंका वर्णन समाप्त हुआ ।

तीसरी पीठिकाओंकी ऊँचाई एवं विस्तार—

ताजोवरि तबियाहं, पीठाहं बिबिह-रयण-रइबाहं ।

जिय-जिय-हुइज्ज-पीठुण्णेह-समा ताव उण्णेह ॥८६३॥

२४ | २३ | २२ | २१ | २० | १९ | १८ | १७ | १६ | १५ | १४ |

१३ | १२ | ११ | १० | ९ | ८ | ७ | ६ | ५ | ४ | ३ | २ | १ |

अर्थ :—द्वितीय पीठोंके ऊपर विविध प्रकारके रत्नोंसे अलंकृत तीसरी पीठिकाएँ होती हैं । इनकी ऊँचाई अपनी-अपनी दूसरी पीठिकाओंकी ऊँचाई सदृश होती है ॥८६३॥

शिय-आविम-पीठारणं, विस्तार-चतुर्थ-भाग-सारिण्या ।

एवाणं विस्तारा, 'सिउण-कवे तत्थ समहिण परिही ॥८६४॥

२४ | २३ | २२ | २१ | २० | १९ | १८ | १७ | १६ | १५ | १४ | १३ | १२ | ११ | १० | ९ | ८ | ७ | ६ | ५ | ४ | ३ | २ | १ |

१२ | ११ | १० | ९ | ८ | ७ | ६ | ५ | ४ | ३ | २ | १ |

५ | ४ | ३ | २ | १ |

अर्थ :—इनका विस्तार अपनी प्रथम पीठिकाओंके विस्तारके चतुर्थ भाग प्रमाण होता है और सिगुणे विस्तारसे कुछ अधिक इनकी परिधि होती है ॥८६४॥

ताणं दिणयर - मंडल - समचट्टारणं हवन्ति अट्टहं ।

सोवाणा रयणमया, चउसु विस्तासुं 'सुहण्णासा ॥८६५॥

। तद्विय-पीठार समत्ता ।

अर्थ :—सूर्य मण्डल सदृश गोल उन पीठोंके चारों ओर रत्नमय एवं सुखकर स्पर्शवाली आठ-आठ सीढ़ियाँ होती हैं ॥८६५॥

। तृतीय पीठिकाओंका वर्णन समाप्त हुआ ।



## गन्धकुटीका निरूपण—

एकैकका 'गंधउडो, होवि तवो तद्विय-पौड-उवरिम्मि ।

चामर - किकिणि - वन्दनमाला - हारादि-रमणीयता ॥८६६॥

गोसोस<sup>१</sup> - मसय - बंदरण-कासागर-पट्टवि-धूव-गंधबद्धा ।

पजसंत - रयण - दीवा, मरुचंत - विविस्त - धय-पंतो ॥८६७॥

अर्थ :—इसके आगे इन तीसरी पीठिकाओंके ऊपर एक-एक गन्धकुटी होती है । यह गन्ध-कुटी चामर, किकिणी, वन्दनमाला एवं हारादिकसे रमणीय, गोपीर, मलयचन्दन और कासागर इत्यादिक धूपोंकी गन्धसे व्याप्त, प्रज्वलित रत्नदीपकोंसे युक्त तथा नाचती हुई विचित्र ध्वजाओंकी पंक्तियोंसे संयुक्त होती है ॥८६६-८६७॥

तोए संधायमा, छस्सय - बंडारिण उसहजाहम्मि ।

पण-कवि - परिहीजाणि, कमसो सिरि-णेमि-परियंतं ॥८६८॥

पणुसोसबभहिध - सयं, बोहि विहत्तं च पासजाहम्मि ।

विगुजिय - पणुसोसाइं, तिस्थयरे बद्धमाजम्मि ॥८६९॥

६०० । ५७५ । ५५० । ५२५ । ५०० । ४७५ । ४५० । ४२५ । ४०० । ३७५ । ३५० ।

३२५ । ३०० । २७५ । २५० । २२५ । २०० । १७५ । १५० । १२५ । १०० ।

७५ । १३५ । ५० ।

अर्थ :—उस गन्धकुटीकी चौड़ाई और लम्बाई ऋषभनाथके समवसरणमें छहसौ धनुष प्रमाण थी । पश्चात् नेमिनाथ पर्यन्त क्रमशः उत्तरोत्तर पाँचका वर्ग अथवा २५-२५ धनुष कम होती गई है । पार्श्वनाथकी गन्धकुटी दो से विसक्त एक सौ पच्चीस धनुष तथा वर्धमान स्वामीकी दुगुणित पच्चीस (५०) धनुष प्रमाण थी ॥८६८-८६९॥

उबओ गंधउडोए, बंडाणं नव - सयानि उसह - जिजे ।

कमसो नेमि-जिजंतं, चउसोस-विहत्त-पभव-होणानि ॥८७०॥

पञ्चहृत्तरि-जुह-ति-सया, पास-जिनिबम्मि चउबिहता य ।

पञ्चवीसोयं<sup>१</sup> च सयं, जिणपवरे वीर - णाहम्मि ॥६०१॥

६०० | १७२५ | १६५० | १५७५ | १५०० | १४२५ | १३५० | १२७५ | १२०० | ११२५ |

१०५० | ९७५ | ९०० | ८२५ | ७५० | ६७५ | ६०० | ५२५ | ४५० | ३७५ | ३०० |

२२५ | १७५ | ७५ |

मार्गदर्शक :- अणुसंख्या की सुविधिपरिष्कारित की गयी है।

अर्थ :- ऋषभ जिनेन्द्रके समवसरणमें पञ्चकुटीकी ऊँचाई नौ सौ धनुष प्रमाण थी ।

पश्चात् क्रमशः नेमिनाथ पर्यन्त चौबीससे विभक्त मुख ( ६०० ÷ २४ = २५ ) प्रमाण हीन होती गई है । पादवे जिनेन्द्रके चारसे विभक्त तौनसौ पञ्चतर धनुष और वीरजिनेन्द्रके दण्डीस कम सौ धनुष प्रमाण थी ॥६००-६०१॥

सिंहासनाणि मण्डपे, गंधद्वीपं सपाव - पोढाणि ।

वर - फलिह-निम्मिवाणि<sup>२</sup> घंटा - जासादि रम्माणि ॥६०२॥

अर्थ :- गन्धकुटियोंके मध्य पादपोठ सहित, उत्तम स्फटिकमणियोंसे निर्मित एवं घण्टाओं के समूहादिकसे रमणीय सिंहासन होते हैं ॥६०२॥

[ तालिका : २५ अगले पृष्ठ २७६ पर देखिये ]

रयण-सच्चिदाणि ताणि, जिनिह-उरुसेह-ओग-उवयाणि ।

इत्थं तित्थयराणं, कहिवाहं समवसरणाहं ॥६०३॥

। इति समवसरणा समप्ता ।

तालिका : २५

सर्वोत्तम - आचार्य श्री सुबोधितानन्द जी स्वराट

## दूसरे एवं तीसरे पीठोंका तथा गन्धकुटीका विस्तार आदि—

| नं० | दूसरे पीठों<br>की ऊँचाई<br>गा० ८८४ | दूसरे पीठोंकी<br>मेखनाओंका<br>वि० गा. ८८६ | दूसरे पीठोंका<br>विस्तार<br>गा० ८८१ | तीसरे पीठों<br>की ऊँचाई<br>गा. ८८३ | तीसरे पीठोंका<br>विस्तार<br>गाथा ८८४ | गन्ध कुटीकी<br>लम्बाई और<br>वि० गा. ८८८ | गन्ध कुटीकी<br>ऊँचाई<br>गा० ८८० |
|-----|------------------------------------|-------------------------------------------|-------------------------------------|------------------------------------|--------------------------------------|-----------------------------------------|---------------------------------|
| १   | ४ धनुष                             | ७५० ध०                                    | १३ कोस                              | ४ धनुष                             | १००० धनुष                            | ६०० धनुष                                | ६०० धनुष                        |
| २   | ३३ "                               | ७१८३ "                                    | १३३ "                               | ३३ "                               | ६५८३ "                               | ५७५ "                                   | ८६२३ "                          |
| ३   | ३३ "                               | ६८७३ "                                    | १३६ "                               | ३३ "                               | ६१६३ "                               | ५५० "                                   | ८२५ "                           |
| ४   | ३३ "                               | ६५६३ "                                    | १३९ "                               | ३३ "                               | ८७५ "                                | ५२५ "                                   | ७८७३ "                          |
| ५   | ३३ "                               | ६२५ "                                     | १३९ "                               | ३३ "                               | ८३३३ "                               | ५०० "                                   | ७५० "                           |
| ६   | ३३ "                               | ५९३३ "                                    | १३७६३ ध०                            | ३३ "                               | ७९१३ "                               | ४७५ "                                   | ७१२३ "                          |
| ७   | ३ "                                | ५६२३ "                                    | १८७५ "                              | ३ "                                | ७५० "                                | ४५० "                                   | ६७५ "                           |
| ८   | २३ "                               | ५३१३ "                                    | १७७०३ "                             | २३ "                               | ७०८३ "                               | ४२५ "                                   | ६३७३ "                          |
| ९   | २३ "                               | ५०० "                                     | १६६६३ "                             | २३ "                               | ६६६३ "                               | ४०० "                                   | ६०० "                           |
| १०  | २३ "                               | ४६८३ "                                    | १५६२३ "                             | २३ "                               | ६२५ "                                | ३७५ "                                   | ५६२३ "                          |
| ११  | २३ "                               | ४३७३ "                                    | १४५८३ "                             | २३ "                               | ५८३३ "                               | ३५० "                                   | ५२५ "                           |
| १२  | २३ "                               | ४०६३ "                                    | १३५४३ "                             | २३ "                               | ५४१३ "                               | ३२५ "                                   | ४८७३ "                          |
| १३  | २ "                                | ३७५ "                                     | १२५० "                              | २ "                                | ५०० "                                | ३०० "                                   | ४५० "                           |
| १४  | १३ "                               | ३४३३ "                                    | ११४५३ "                             | १३ "                               | ४५८३ "                               | २७५ "                                   | ४१२३ "                          |
| १५  | १३ "                               | ३१२३ "                                    | १०४१३ "                             | १३ "                               | ४१६३ "                               | २५० "                                   | ३७५ "                           |
| १६  | १३ "                               | २८१३ "                                    | ९३७३ "                              | १३ "                               | ३७५ "                                | २२५ "                                   | ३३७३ "                          |
| १७  | १३ "                               | २५० "                                     | ८३३३ "                              | १३ "                               | ३३३३ "                               | २०० "                                   | ३०० "                           |
| १८  | १३ "                               | २१८३ "                                    | ७२९३ "                              | १३ "                               | २९१३ "                               | १७५ "                                   | २६२३ "                          |
| १९  | १ "                                | १८७३ "                                    | ६२५ "                               | १ "                                | २५० "                                | १५० "                                   | २२५ "                           |
| २०  | १ "                                | १५६३ "                                    | ५२०३ "                              | १ "                                | २०८३ "                               | १२५ "                                   | १८७३ "                          |
| २१  | ३ "                                | १२५ "                                     | ४१६३ "                              | ३ "                                | १६६३ "                               | १०० "                                   | १५० "                           |
| २२  | ३ "                                | ९३३ "                                     | ३१२३ "                              | ३ "                                | १२५ "                                | ७५ "                                    | ११२३ "                          |
| २३  | ८३ "                               | ७८३ "                                     | २६०३ "                              | ८३ "                               | १०४३ "                               | ६२३ "                                   | ९३३ "                           |
| २४  | ३ "                                | ६२३ "                                     | २०८३ "                              | ३ "                                | ८३३ "                                | ५० "                                    | ७५ "                            |

अर्थ :—रक्तोसे खचित उन सिंहासनों की ऊँचाई तीर्थंकरोंकी ऊँचाईके ही योग्य हुआ करती है । इस प्रकार यहाँ तीर्थंकरोंके समयसरणोंका कथन किया गया है ॥६०३॥

। इसप्रकार समयसरणोंका वर्णन समाप्त हुआ ।

गन्धकुटी का चित्रण—

गन्धकुटी का चित्रण—



यार्थः— अरुणोंकी स्थिति सिंहासनों के ऊपर जो

'चतुरंगुलंतरास्ते, उषरि सिंहासनाणि अरहंता ।

चेद्वृत्ति गणन - भगो, लोयालोय - प्ययास - मतंडा ॥९०४॥

अर्थ :—लोक-अलोककी प्रकाशित करनेके लिए सूर्य सदृश भगवान् अरहन्तवेव उन सिंहासनोंके ऊपर आकाशमार्गमें चार अंगुलके अन्तरालसे स्थित रहते हैं ॥९०४॥

जन्मके दस अतिशय—

निस्सेदसं निम्मल - गससं मुठ - धवस - कहरसं ।

आदिम - संहवसं, समचतुरस्तंग - संठाणं ॥९०५॥

। ५ ।

अणुपम - रुदसं राव - चंपय-वर-सुरहि - गंध-धारिसं ।

अदठुसर-वर-सक्खण-सहस्त-धरणं अन्नंतवस - चिरियं ॥९०६॥

। ४ ।

मिदु-हिब-मधुरासाओ, साभाविय-अदिसयं च बह-भेवं ।

एवं तिप्पयराणं जन्मवगहणादि - उत्पज्जं ॥९०७॥

। १ ।

अर्थ :— १ सेद-रहितता, २ निर्मल-शरीरता, ३ दूध सदृश धवल रश्मिर, ४ अश्वध्वजानाराज-संहनन, ५ समचतुरस्र-शरीर संस्थान, ६ अनुपम रूप, ७ नवीन चम्पक की उत्तम गन्ध सदृश गन्धका धारण करना, ८ एक हजार आठ उत्तम सत्तणों का धारण करना, ९ अनन्त बल-वीर्य और १० हितकारी मृदु एवं मधुर भाषण, ये स्वाभाविक अतिशयके दस भेद हैं । ये अतिशय तीर्थंकरोंके जन्म-प्रहृणसे ही उत्पन्न हो जाते हैं ॥९०५-९०७॥

केवलज्ञानके ग्यारह अतिशय—

ओयण-सव-मज्जादं, सुभिसवदा चउ-विसासु निय-ठाणा ।

णहयल - गमचमहिंसा, ओयण - उवसण - परिहोणा ॥९०८॥

सध्वार्हि - मुह - द्वियत्, अण्छायत्सं 'अण्मह्वर्हि' ।  
 विज्जाणं ईसत्सं, सम - ण्ह - रोमत्तणं सरोरम्मि ॥६०६॥  
 अट्ठरस - महाभासा, सुत्तय-भासा सघाइ सत्त-त्तहा ।  
 अण्खर - अणखरप्पय सण्णी-जीवाण सयल-भासाओ ॥६१०॥  
 एवात्ति भासाणं, तालुव - वंसोदु - कंठ - 'वावारे ।  
 परिहरिय एक्क - कालं, भव - जणे विम्ब-भासितं ॥६११॥  
 पगवीए अण्खलिवो, सभसिदयम्मि जण - मुहुत्ताणि ।  
 णित्तरवि णिरुवमाणो, विम्बभुणो जाव 'जोयणय ॥६१२॥  
 अवसेस - काल - समए, गणहर - वेविद - चक्कवट्ठीणं ।  
 पण्हाणुक्कमत्तं, विम्बभुणो सत्त - भंगोहि ॥६१३॥  
 छह्व - णव - पयत्थे, पंछट्ठीकाय - सत्त - तत्तवाणि ।  
 णाणाविह - हेव्वहि, विम्बभुणो भणइ भव्वाणं ॥६१४॥  
 'घादिक्कएण जावा, एक्कारस सविसया सहच्छरिया ।  
 एवे तित्थयरारणं, केवलणणम्मि उप्पण्णे ॥६१५॥

अर्थ :—अपने स्थानसे चारों दिशाओंमें १ एकसौ योजन पर्यन्त सुगमता, २ आकाश-गमन, ३ अहिंसा ( हिंसाका अभाव ), ४ भोजन एवं ५ उपसर्ग का अभाव, ६ सबकी ओर मुख करके स्थित होना, ७ छाया नहीं पड़ना, ८ निनिमेष दृष्टि, ९ विद्याओंको ईशता, १० शरीरमें नहीं एवं वालों का न बढ़ना, अठारह महाभाषा, सातसौ सुद-भाषा तथा और भी जो संजी जीवोंकी समस्त अक्षर-अनक्षररूपक भाषाएँ हैं उनमें तालु, दाँत, ओष्ठ और कण्ठके व्यापारसे रहित होकर एक ही समय ( एक साथ ) अथ्य जनोंको दिव्य उपदेश देना ।

अगवान् जिनेन्द्रकी स्वभावतः प्रसूचित तथा अनुपम ११ दिव्य-ध्वनि तीनों सन्ध्या-कालोंमें नव-मुहूर्तों तक निकलती है और एक योजन पर्यन्त जाती है । इसके अतिरिक्त गणधरदेव,

१. व. क. ण. प. उ. अण्मह्वर्हि, ब. अण्मह्वं दित्तं । २. द. ब. क. ज. प. उ. वावारी ।  
 ३. ब. उ. जोयणं । ४. द. व. क. ब. य. उ. पण्हाणुक्कमत्तं । ५. द. ब. क. ज. उ. पयत्थो । ६. द. ब. व. वत्ताणि, क. उ. तत्तवाणि । ७. द. दिम्बभुणु । ८. द. उ. घादिक्कएण य ।

इन्द्र एवं चक्रवर्तीके प्रधानरूप अर्थात् निरूपणार्थ यह दिव्य-ध्वनि शेष समयोंमें भी निकलती है । यह दिव्यध्वनि शब्द जीवोंको सह-द्रव्य, नो-पदार्थ, पौच अस्तिकाय और सात तत्त्वोंका निरूपण नानाप्रकारके हेतुओं द्वारा करती है । इसप्रकार यातिया कमोंके शयसे उत्पन्न हुए, महान् आश्चर्य-जनक ये आरह अतिशय तीर्थकरोंको केवलज्ञान उत्पन्न होने पर प्रगट होते हैं ॥६०८-६१५॥

देवकृत तेरह अतिशय—

माहृपेण जिघांशं, संसेञ्जेसु' च जीयन्तेसु वनं ।  
पल्लव - कुसुम - फलद्वी - भरिदं आयदि अकालस्मि ॥६१६॥  
कण्टक-सक्कर-पट्टवि, अवणिता यादि सुरकरो बाळ ।  
मोक्षूण पुष्प - वेरं, जीवा वहु'ति मेसीसु ॥६१७॥  
इप्पण-तल-सारिच्छा, रयणमई होदि तेत्तिया नूमो ।  
गंधोवकेइ वरिसह, मेघकुमारो पि सक्क - आणाए ॥६१८॥  
फल-भार-णमिव-साली-अवादि-सस्तं मुरा विकुब्बंति ।  
सव्वाणं जीवाणं, उप्पज्जदि निस्समार्जदो ॥६१९॥  
आयदि विविकरियाए, आयुकुमारो हु सोपलो पवणो ।  
कूच - तट्टायावोणि, जिम्मल - सल्लेख पुब्बाणि ॥६२०॥  
धूमुक्कपट्टण - वहुदीहि विरहिदं होदि जिम्मलं गयणं ।  
रोगाशीणं बाधा, ण होंति सयसाज जीवाणं ॥६२१॥  
अक्खिद-मत्थएसु', किरणुज्जल-दिक्ख-धम्म-अवकाणि ।  
वट्ठूय संठियाइ', अत्तारि अणस्स अण्णरिया ॥६२२॥  
कुप्पय्य चउदिसासु', कंठण - कमलाणि तिथ-कत्ताणं ।  
एक्कं च पापपीडे, अक्खण-इप्पाणि दिक्ख-विहिदाणि ॥६२३॥

। चौत्तीस अइतया समत्ता ।

वर्णः :— १ तीर्थंकरोंके माहात्म्यसे संख्यासंयोजनों तक वन प्रदेश अतमयमें ही पशों, फूलों एवं फलोंसे परिपूर्ण समृद्ध हो जाता है; २ कांटों और रेंती आदिको दूर करती हुई सुखदायक बाधु प्रवाहित होती है; ३ जीव पूर्व वैरको छोड़कर मंत्री-सावसे रहने लगते हैं; ४ उसभी भूमि वर्षातल सहसा स्वच्छ एवं रत्नमय हो जाती है; ५ सौधर्म इन्द्रकी आज्ञासे मेघकुमार देव सुगन्धित जलकी वर्षा करता है; ६ देव विक्रियासे फलोंके भारसे गम्भीरत शालि और जी आदि सस्यकी रचना करते हैं; ७ सब जीवोंको नित्य ध्यानन्द उत्पन्न होता है; ८ वायुकुमार देव विक्रियासे शीतल-पवन बलात्ता है; ९ कूप और तालाब आदिक निर्मल जलसे परिपूर्ण हो जाते हैं; १० आकाश धूर्त एवं उत्कृष्ट-पातादिसे रहित होकर निर्मल हो जाता है; ११ सम्पूर्ण जीव रोगवाधाओंसे रहित हो जाते हैं, १२ यक्षेन्द्रोंके भस्त्रकों पर स्थित और किरणोंकी शक्ति उज्ज्वल ऐसे चार दिव्य धर्मवर्णोंकी देखकर मनुष्योंको आश्चर्य होता है तथा १३ तीर्थंकरोंकी चारों दिशाओं (विदिशाओं) में छप्पन स्वर्ण-कमल, एक पादपीठ और विविध दिव्य पूजन-द्रव्य होते हैं ॥६१६-६३१॥

अथोक्तं - अतीतं च सुदिशितमयं च यद्वर्णनं

चौतीस अतिशयोक्ता वर्णन समाप्त हुआ ।

अशोक वृक्ष प्रतिहार्यका निरूपण—

असि तक्ष - मूले, उप्यर्णं जाण केवलं वारं ।

उसह - प्यह्वि - जिगार्यं, से चिय असोय-स्वत्त सि ॥६२४॥

वर्णः :—अथभादि तीर्थंकरोंको जिन वृक्षोंके नीचे केवलज्ञान उत्पन्न हुआ है वे ही अशोक-वृक्ष हैं ॥६२४॥

वागोह - सस्यपणां, सारं सरलं पियंगु तच्छेष ।

सिरितं आगतक वि म, अमला धूलीपलास तैद्वं ॥६२५॥

पाडल-अंशु पिप्पल - वह्निचणो अंदि-तिलय-धूवा य ।

‘ककेलि - चंप - घटलं, मेसयसिगं’ धवं सारं ॥६२६॥

सोहंति असोय - तक्ष, यत्तय - कुसुमानवाहि साहाहि ।

संबंत - मुल - वामा, घंटा - जासावि - रमचिष्ठा ॥६२७॥



अर्थ :—१ न्यग्रोध, २ सप्तपर्ण, ३ शाल, ४ सरल, ५ प्रियंगु, ६ प्रियंगु, ७ विरीष, ८ नागवृक्ष, ९ अज ( बहेड़ा ), १० धूलिपत्राण, ११ तेंदू, १२ पाटल, १३ जम्बू, १४ पीपल, १५ दधिपर्ण, १६ नन्दो, १७ तिलक, १८ अम्र, १९ कंकेलि ( अशोक ), २० चम्पक, २१ बकुल, २२ मेघशृङ्ग, २३ धव और २४ शाल, ये तीर्थंकरोंके अशोकवृक्ष हैं । अटकती हुई भोतियोंकी मारियों और घण्टा-समूहादिकसे रमणोपपञ्चसीके वृक्षोंकी सुन्दर लालिमाओंकी देखकर अशोक वृक्ष अत्यन्त शोभायमान होते हैं ॥६२५-६२७॥

जिय-शिय-जिज-उज्जह्नि, बारस-गुणिबेन सरिस-उज्जह्नि ।

उसह - जिज - प्यहुदीणं, असोय - स्वप्ता विरायंति ॥६२८॥

अर्थ :—ऋषभादिक तीर्थंकरोंके उपर्युक्त बीबीस अशोकवृक्ष अपने-अपने जिन्मकी ऊँचाईसे बारह गुणे ऊँचे शोभायमान हैं ॥६२८॥

कि वपणणेण बहूणा, बहूणमसोय - पावणे एवे ।

जिय - उज्जहाण - बणेसुं, न रमहि चित्तं सुरेसस्स ॥६२९॥

अर्थ :—बहुत वनोंसे क्या ? इन अशोक वृक्षोंको देखकर इन्द्रका भी चित्त अपने उद्यान-वनोंमें नहीं रमता है ॥६२९॥

तीन छत्र प्रातिहार्य—

सत्ति - मंडल - संकासं, मुक्ताञ्जल - प्यमास - 'संजुस' ।

छत्तसयं विरायहि संव्वाणं तिस्थ - 'कस्तार्ण' ॥६३०॥

अर्थ :—चन्द्र-मण्डल लट्ठन और मुक्ता-समूहोंके प्रकाशसे संयुक्त तीन छत्र सब तीर्थंकरोंके ( मस्तकों पर ) शोभायमान होते हैं ॥६३०॥

सिंहासन प्रातिहार्य—

सिंहासणं विस्सालं, विसुद्ध - फलिहोबलेहि जिन्मज्जि ।

वर-रयण-णियर-सच्चिदं, को सक्कह वणिहु' तार्ण ॥६३१॥

अर्थ :—निर्मल स्फटिक-पाषाणसे निर्मित और उत्कृष्ट रत्नोंके समूहसे सजित उन तीर्थंकरोंका जो विशाल सिंहासन होता है, उसका वर्णन करनेमें कौन समर्थ हो सकता है ॥६३१॥

भक्ति युक्त गणों द्वारा वेष्टित प्रातिहार्य—

जिबभर-भक्ति-पसस्ता, अंजलि-हुत्वा पकृल्ल-मुह-कमला ।

वेष्टुंति गणा सख्ये, एक्केक्कां वेदिऊण' विणं ॥६३२॥

अर्थ :—गाढ़ भक्तिमें आसक्त हाथ जोड़े हुए एवं विकसित मुख कमलसे संयुक्त सम्पूर्ण ( श्रावण ) गण प्रत्येक तीर्थंकर को घेर कर ( बारह सुभाषोंमें ) स्थित रहते हैं ॥६३२॥

संस्कृत :- आसक्त श्री सुविजितरथ जी अङ्गुलि  
दुन्दुभिवाद्य प्रातिहार्य—

विषय-कसायाससा, 'हव-भोहा एविस जिणपह सरणं ।

कहिवुं वा भव्वाणं, गहिरं सुर - वुंहुही सरइ ॥६३३॥

अर्थ :—“विषय-कषायोंमें आसक्त (हे जीवों) मोहसे रहित होकर जिनेन्द्र प्रभुकी शरणमें आओ,” मध्य जीवोंको ऐसा कहनेके लिए ही मानो देवोंका दुन्दुभी बाजा गम्भीर शब्द करता है ॥६३३॥

पुष्पवृष्टि प्रातिहार्य—

भल्ल-भल्ल-भल्लत-छुपय-छुण्णा वरभल्लि-अरिव-सुरमुक्का ।

जिववेदि कुसुम - बिट्ठी, जिजिद - पय-कमल - मूलेसुं ॥६३४॥

अर्थ :—भल्ल-भल्ल शब्द करते हुए भ्रमरोंसे व्याप्त एवं उत्तम भक्तिसे युक्त देवों द्वारा छोड़ी हुई पुष्पवृष्टि भगवान् जिनेन्द्रके वरण-कमलोंके मूलमें गिरती है ॥६३४॥

प्रभामण्डल प्रातिहार्य -

भव-सग-अंसण-हेहुं, अरिसण - मेस्तेण सयल - सोयस्स ।

आमंडलं जिणानं, रवि - कोडि - समुज्जसे जयइ ॥६३५॥

अर्थ :—जो दर्शन-मात्रसे ही सब लोगोंको अपने-अपने सात भव देखनेमें निमित्त है और करोड़ों सूर्योंके सदृश उज्ज्वल है तीर्थंकरोंका ऐसा वह प्रभामण्डल जयवन्त होता है ॥६३५॥

चमर प्रातिहार्य—

चउत्तट्टि - चामरेहि, मुणाल - कु'बेंदु - संस - धवलेहि ।

सुर - कर - पल्लविदेहि बिज्जिअज्जंता अयंतु जिणा ॥६३६॥

। अट्ट महपाडिहेरा समत्ता ।

सर्व :—देवोंके हाथोंसे मुलाये ( ढोरे ) गये मृदास, कुन्दपुष्प, चन्द्रमा एवं शङ्ख सदृश सफेद चौंसठ चामरोंसे वीज्यमान जिनेन्द्र भगवान् जयवन्त होंवें ॥६३६॥

। आठ महाप्रातिहार्योंका कथन समाप्त हुआ ।



नमस्कार—

चउतीसतिसय - संबुद'- अहु महापाबिहेर - संकुच' ।

मोक्षयरे तिस्थयरे. तिहुधन - जाहे जमंसामि ॥६३७॥

अर्थ :—जो चौतीस-अतिशयोंको प्राप्त हैं, आठ महाप्रातिहार्योंसे संयुक्त हैं, मोक्षको करने वाले ( मोक्षदायोंके नेता ) हैं और तीनों लोकोंके स्वामी हैं ऐसे तीर्थंकरोंको मैं नमस्कार करता हूँ ॥६३७॥

समोसरणोंमें बन्दनारत जीवोंकी संख्या—

जिण - बंणणा - बयट्टा, पल्लासंसेज्जभाग - परिभाणा ।

खेहुंति विविह - जीवा, एक्केक्के समवसरणेसुं ॥६३८॥

अर्थ :—प्रत्येक समवसरणमें पत्थक अक्षयानिर्गम्य-प्रमाण विविध-प्रकारके जीव जिन-  
देवकी बन्दनामें प्रवृत्त होते हुए स्थित रहते हैं ॥६३८॥

अवगाहन शक्तिकी अतिशयता—

कोट्टाणं खेत्तादो, जीवखेत्तप्फलं असंख - गुणं ।

होवूण अबुट्ट सि हू, जिण - माहूप्येण ते सखे ॥६३९॥

अर्थ :—समवसरणके कोठोंके क्षेत्रमें यद्यपि जीवोंका क्षेत्रफल असंख्यातगुणा है, तथापि  
वे सब जीव जिनेन्द्रदेवके माहात्म्यसे एक दूसरेसे घस्पृष्ट रहते हैं ॥६३९॥

प्रवेश-निर्गमन प्रमाण—

संखेज्ज - जोयणाणि, बाल - प्पट्टधी पवेस - विगमणे ।

संतोमुहुत्त - काले, जिण - माहूप्येण गच्छन्ति ॥६४०॥

अर्थ :—जिनेन्द्र भगवान्के माहात्म्यसे बालक-प्रभृति जीव समवसरणमें जीव प्रवेश करने  
अथवा निकलनेमें अन्तर्मुहूर्तकालके भीतर संख्यात योजन खले जाते हैं ॥६४०॥

समवसरणमें कौन नहीं जाते ?

मिच्छाद्विह-अभज्जा, तेसु असण्णी ण होति कइयावि ।

तह य अणवभवसाया, संबिद्धा विविह - विवरीया ॥६४१॥

अर्थ :—समवसरणमें मिच्छाद्विह, अभज्ज और असंजी जीव कदापि नहीं होते तथा  
अनध्यवसायसे युक्त, सन्देहसे संयुक्त और विविध प्रकारकी विपरीतताओं वाले जीव भी नहीं  
होते ॥६४१॥

समवसरणमें रोगादिका अभाव—

आतंक - रोग - मरणपुष्पसीओ वैर - काम - बाधाओ ।

तन्हा - सुह - पीडाओ, जिण - माहस्पेण न बि होति ॥६४२॥

अर्थ :—जिन भगवान्‌के माहात्म्यसे आतंक, रोग, मरण, उत्पत्ति, वैर, कामबाधा तथा पिपासा और दुःखाकी पीड़ाएँ वहाँ नहीं होती हैं ॥६४२॥

ऋषभादि तीर्थकरोके यक्ष—

अवसराणं यक्षेणः— अवातं ओ सुहोदिविजय ओ यक्षेणं

गोवदन - महाजक्ष, तिसुहो जक्षेसरो य सुंबुरओ ।

भातंग - विजय - अजियो, अम्हो ब्रह्मेसरो य कोमारो ॥६४३॥

छम्मुहओ पावालो, किण्णर - किपुसि - गरुड-गंधर्वा ।

तह य कुबेरो बरुओ, 'अकुडी-गोमेव-पास-मातंगा ॥६४४॥

गुह्मकओ इवि एदे, जक्षला अठवीस उसह - पटुवीहि ।

तिरपयराणं पासो, चेटुंते भत्ति - संकुत्ता ॥६४५॥

अर्थ :—१ गोवदन, २ महायक्ष, ३ त्रिमुख, ४ यक्षेश्वर, ५ तुम्बुख, ६ मातंग, ७ विजय, ८ अजित, ९ ब्रह्म, १० ब्रह्मोत्तर, ११ कुमार, १२ वष्पुख, १३ पाताल, १४ किन्नर, १५ किम्बुरुष, १६ गरुड, १७ गन्धर्व, १८ कुबेर, १९ वस्त्रा, २० मृकृति, २१ गोमेव, २२ पावर्क, २३ मातंग और २४ गुह्यक, भक्तिसे संयुक्त चौबीस यक्ष ऋषभादिक तीर्थकरोके पास स्थित रहते हैं ॥६४३-६४५॥

ऋषभादि तीर्थकरोकी यक्षिणियाँ—

जक्षोओ जक्षेसरि - रोहिणि-पण्णसि-वज्जसिलसया ।

वज्जकुत्ता य अप्पदिजक्षेसरि - पुरिसवत्ता<sup>१</sup> य ॥६४६॥

मणवेगा - कालीओ, तह जालाभालिणी महाकाली ।

गउरी - गंधारीओ, बेरोटी जामया अणंभमवी ॥६४७॥

मानसि-महमानसिया, जया य बिजयापराजिबाओ ब ।

बहुरूपिणि - कुंभंडी, पद्ममा - सिद्धायिनीओ सि ॥६४८॥

अर्थ :- १ चक्रेश्वरी, २ रोहिणी, ३ प्रकृति, ४ वज्रमृंगला, ५ वज्रांकुजा, ६ अश्रुति-चक्रेश्वरी, ७ पुरुषदत्ता, ८ मनोबेगा, ९ काली, १० ज्वालामालिनी, ११ महाकाली, १२ गौरी, १३ गान्धारी, १४ बेरोटी, १५ अनन्तमती, १६ मानसी, १७ महामानसी, १८ जया, १९ विजया, २० अपराजिता, २१ बहुरूपिणी, २२ कुम्भाण्डी, २३ पद्मा और २४ सिद्धादिनी ये यक्षिणियाँ भी कमलः कृष्णभादिक चौबीस तीर्थं करोके समीप रहा करती हैं ॥६४८-६४८॥

जिनेन्द्रभक्तिका फल—

वसन्ततिसकम्—

पौयूस - विजय - मिहं जिण - चंद - वाणि,

सोऊण बारस गणा 'विज - कोधुपसु' ।

विरुधं अर्थात् - शुभासेदि - विधुद्धि - सदा -

छिदंति कर्म - पदसं लु असंखसेणि ॥६४९॥

अर्थ :- जैसे चन्द्रमासे अमृत भरता है, उसी प्रकार जिनेन्द्र रूपी चन्द्रमाको वाणीको धपने-झपने कोठोंमें सुनकर वे भिन्न-भिन्न जीवोंके वारह गण तिर्य्य अनन्त-गुरुध्वंशरीरूप विशुद्धिसे संयुक्त तरीक़ो धारण करते हुए असंख्यातध्वंशरीरूप कर्म-घटनको नष्ट करते हैं ॥६४९॥

इन्द्रवज्रा—

भस्तीए आसत्त-मखा जिणिद-पायारविदेसु निवेसियस्था ।

पावीव-कासं ण पयडुमासं, जो भावि-कासं एविभावयंति ॥६५०॥

अर्थ :- जिनका मन भक्तिमें आसक्त है और जिन्होंने जिनेन्द्र-देवके पावारविन्दोंमें आस्था (अदा) रखी है वे मध्य जीव मत्तोंत, सर्वमान और भावी कालको भी नहीं चिन्तते हैं । अर्थात् भक्ति-यश 'मैं कौन हूँ, कौन था और क्या होऊँगा' इस विकल्पसे रहित हो जाते हैं ॥६५०॥

इन्द्रवज्रा—

एवं यहाया भरहस्त केसे, धम्म-व्यज्जसी<sup>१</sup> परमं विसंता ।

सख्ये जिणिदा वर-भण्व-संघस्सप्पोत्थिद<sup>२</sup> भोक्ख-सुहाइ-वसु ॥६५१॥

अर्थ :—उपयुक्त प्रभावसे संयुक्त वे सब तीर्थंकर भरत क्षेत्रमें उत्कृष्ट धर्म-प्रवृत्तिका उपदेश देते हुए उत्तम भण्य-समूहको आरमासे उत्पन्न हुआ मोक्ष-सुख प्रदान करें ॥६५१॥

श्रृणुभादि तीर्थंकरोंका केवलिकाल—

पुम्माणमेवक - लवणं, वासाणं ऊणिदं सहस्सेण ।

उसह - जिणिदे कहिदं, केवलि - कालस्स परिमाणं ॥६५२॥

उसह पू० १ ल ॥ रिण=वास १००० ॥

अर्थ :—श्रृणुभ जिनेन्द्रके केवलिकालका प्रमाण एक हजार वर्ष कम एक लाख पूर्व कहा गया है ॥६५२॥

वारस- वण्णर - समहिण-पुम्माण-विहीण-पुम्मा-इणि-लवणं ।

केवलिकाल - पमाणं, अजिय - जिणिदे मुनेयम्मां ॥६५३॥

अजिय पू० १ ल ॥ रिण=पूर्वांग १ । व १२ ।

अर्थ :—अजित जिनेन्द्रके केवलिकालका प्रमाण बारह वर्ष और एक पूर्वाङ्ग कम एक लाख पूर्व जानना चाहिए ॥६५३॥

चोइस-वण्णर - समहिण-वज-पुम्माणोण-पुम्मा-इणि-लवणं ।

संभव - जिणस्स भणिवं, केवलिकालस्स परिमाणं ॥६५४॥

संभव पू० १ ल ॥ रिण=पूर्वांग ४ । १४ वस्स ।

अर्थ :—संभव जिनेन्द्रका केवलिकाल चौबह वर्ष, चार पूर्वाङ्ग कम एक लाख पूर्व प्रमाण कहा गया है ॥६५४॥

अट्टारस - वासाहिण - अट्ट-<sup>३</sup>पुम्माणोण-पुम्मा-इणि-लवणं ।

केवलिकाल - पमाणं, जंजणणाहम्मि सिद्धिदं ॥६५५॥

जंदण पू० १ ल ॥ रिण=पूर्वांग ८ । वस्स १८॥

अर्थ :—अभिनन्दन जिनन्द्रका केवलिकाल अठारह वर्ष और ८ पूर्वाङ्ग कम एक लाख पूर्व प्रमाण निदिष्ट किया गया है ॥६५५॥

बीसवि - बज्जुर-समहिय - बारस-पुब्बंग-हीण-पुब्बाणं ।

अर्थ :—बीसवि - बज्जुर-समहिय - बारस-पुब्बंग-हीण-पुब्बाणं सुमहमाहम्मि ॥६५६॥

सुमह पू० १ ल ॥ रिण=पुब्बंग १२ ॥ वास २० ॥

अर्थ :—सुमति जिनन्द्रका केवलिकाल बीस वर्ष और १२ पूर्वाङ्ग कम एक लाख पूर्व प्रमाण है ॥६५६॥

विगुणिय-तिभास-समहिय-सोलस-पुब्बंग हीण - पुब्बाणं ।

इति - लक्ख पउमणाहे, केवलिकालस्त परिमाणं ॥६५७॥

पउम पू० १ ल ॥ रिण=पुब्बंग १६ ॥ भा ६ ॥

अर्थ :—पय जिनन्द्रका केवलिकाल ६ मास और सोलह पूर्वाङ्ग कम एक लाख पूर्व प्रमाण है ॥६५७॥

एण - संबकुर - समहिय-बीसवि-पुब्बंग-हीण-पुब्बाणं ।

एक्कं लक्खं केवलिकाल - पमाणं सुपास - तिणे ॥६५८॥

सुपास पू० १ ल ॥ रिण=पुब्बंग २० ॥ वास ६ ॥

अर्थ :—सुपास जिनन्द्रका केवलिकाल नौ वर्ष और बीस पूर्वाङ्ग कम एक लाख पूर्व प्रमाण है ॥६५८॥

मास-त्तिवयाहिय'- चउबीसवि-पुब्बंग - रहिर - पुब्बाणं ।

इति - लक्खं चंदप्पह - केवलिकालस्त संलाणं ॥६५९॥

चंदपह पू० १ ल ॥ रिण=पूर्वांग २४ ॥ मास ३ ॥

अर्थ :—चन्द्रप्रभ जिनन्द्रके केवलिकालकी संख्या तीन माह और चौबीस पूर्वाङ्ग कम एक लाख पूर्व है ॥६५९॥



चतु-वक्त्र - समहिय-अष्टवीसदि-पुष्पे-रहिद पुष्पाणि ।

एकं लक्षं केवलिकाल - पमाणं च पुष्पवत् - जिने ॥१६०॥

पुष्प पू० १ ले ॥ रिण=पूवागे २५ ॥ वास ० ॥

अर्थ :—पुष्पदन्त जिनेन्द्रका केवलिकाल चार वर्ष और अष्टाईस-पूर्वाङ्गकम एक लाख पूर्व प्रमाण है ॥१६०॥

संबस्सर-तिव - ऊणिथ - पणवीस-सहस्रयाणि पुष्पाणि ।

सीयलजिणम्म कहिदं, केवलिकालस्स परिमाणं ॥१६१॥

सीयल पुष्प० २५००० । रिण=वास ३ ॥

अर्थ :—सीयल जिनेन्द्रके केवलिकालका प्रमाण तीन वर्ष कम पणवीस-हजार पूर्व कहा गया है ॥१६१॥

इगिवीस-वस्स-सक्खार, दोहि विहीणा पट्टम्मि सेयंसे ।

चउवण्ण-वास-लक्खं, ऊणं एक्केण वासुपुज्जजिणे ॥१६२॥

॥ सेयंस वस्स<sup>१</sup> २०६६६६८ ॥ वासुपुज्ज वस्स ५३६६६६६ ॥

अर्थ :—श्रेयांस जिनेन्द्रका केवलिकाल दो ( वर्ष ) कम इक्कीस लाख वर्ष और वासुपूज्य जिनेन्द्रका एक कम चौवन लाख वर्ष प्रमाण है ॥१६२॥

एण्णरस-वास-लक्खा, तिदय-विहीणा य विमलभाहम्मि ।

सय-कवि-हय-पण्णारि-वासा दो विरहिवा अणंतजिने ॥१६३॥

॥ विमल<sup>२</sup> वस्स १४६६६६७ । अणंत वास ७४६६६८ ॥

अर्थ :—विमल जिनेन्द्रका केवलिकाल तीन कम पन्द्रह लाख वर्ष और अनन्तनाथ जिनेन्द्रका सौके बगैरे गुणित पचहत्तरमेंसे दो कम है ॥१६३॥

पंच - तयानं वग्गो, ऊणो एक्केण धम्मभाहम्मि ।

वस-वण - हव - पणुवीसा, सीलस - हीणा य संतीसे ॥१६४॥

॥ धम्म वस्स २४६६६६ । संति २४९८४ ॥

अर्थ :—धर्मनाथ जिनेन्द्रका केवलिकाल पाँचसौके वर्गमेंसे एक कम और ज्ञानिनाथ जिनेन्द्रका दसके अनसे गुणित पच्चीसमेंसे सोलह वर्ष कम है ॥२६५॥

चोरीसाहिय-सग-सय, तेवीस-सहस्त्रयाणि कुंभुम्मि ।  
चउसीवो-जुद-गव-सय-वीस-सहस्त्रा अरम्मि वासाणं ॥२६५॥

। कुंभु २३७३४ । अर २०६८४ ।

अर्थ :—कुन्धुनाथ जिनेन्द्रका केवलिकाल तेईस हजार सातसौ चौतीस वर्ष और अरनाथ जिनेन्द्रका बीस हजार नौ सौ बीसवीस वर्ष प्रमाण है ॥२६५॥

एव-अउवि-अहिय-अउ-सय-चउवण्ण-सहस्त्रयाणि वासाणि ।  
एवकरसं चिय मासा, चउवीस विजाइ मल्लिम्मि ॥२६६॥

। मल्लि वास ५४८६६ मा ११ दि २४ ।

अर्थ :—मल्लिनाथ जिनेन्द्रका केवलिकाल चौवन हजार आठ सौ निग्यानवें वर्ष, ग्यारह मास और चौबीस दिन प्रमाण है ॥२६६॥

अथएउवि-अहिय-अउ-सय-सत्त-सहस्त्राणि बस्तराणि पि ।  
इणि - मासो सुव्ववए, केवलिकालस्स परिमाणं ॥२६७॥

। सुव्वद वा० ७४६६ मा १ ।

अर्थ :—मुनिसुव्वत जिनेन्द्रका केवलिकाल सात हजार चारसौ निग्यानवें वर्ष और एक मास प्रमाण है ॥२६७॥

वासाणि वो सहस्त्रा, चत्थारि सयाणि जमिम्मि इणिणउवी ।  
एक्कीणा सत्ता - सया, बस मासा चउ - विजाणि नेमिस्स ॥२६८॥

। एणि वा २४६१ । नेमि वा ६६६ मा० १० दि ४ ।

अर्थ :—जमिनाथ जिनेन्द्रका केवलिकाल दो हजार चार सौ एकानवें वर्ष और नेमिनाथ जिनेन्द्रका एक कम सातसौ वर्ष, दस मास तथा चार दिन प्रमाण है ॥२६८॥

आठ-मास-समहिषाणं, ऊणसारि वत्सराणि पासविधे ।  
वीरम्य तोस वासा, केवलिकालस्स संख रि ॥६६६॥

। पारा वास ६६ मा ८ । वीर वास ३० ।

अर्थ :—पाश्वर्जिनेन्द्रके केवलिकाल का प्रमाण आठ मास अधिक उनत्तर वर्ष और वीर जिनेन्द्रका तीस वर्ष है ॥६६६॥

प्रत्येक तीर्थंकरके गणधरोंकी संख्या—

अष्टसीधो सगसीधो, सससारि छक्क - समहिषा सट्ठी ।  
पणवण्णा पण्णासा, तसो य अणंत - परियंतं ॥६७०॥

। उ ८४, अ ६०, सं १०५, णं १०३, सु ११६, प. १११, सु ६५, वं. ६३ ।

अर्थ :—आठवें तीर्थंकर पर्यन्त क्रमशः अष्टसी, सगसी, सससारि, छक्क, एकसौ पचास, एकसौ तीस, एकसौ सोलह, एकसौ ग्यारह, पंचानवे और तेरानवे गणधर देव थे ॥६७०॥

अष्टसीधो सगसीधो, सससारि छक्क - समहिषा सट्ठी ।  
पणवण्णा पण्णासा, तसो य अणंत - परियंतं ॥६७१॥

। पु ८८, सी ८७, से ७७, वासु ६६, वि ५५ अणं ५० ।

अर्थ :—अनन्तनाथ तीर्थंकर पर्यन्त क्रमशः अष्टसी, सगसी, सससारि, छक्क, पचपन और पचास गणधर थे ॥६७१॥

तेवासं छत्तीसा, वणतीसा तीस अट्ठीसा य ।  
अट्ठारस ससारसेक्कारस - वत्स - एककरस य वीरंतं ॥६७२॥

ध० ४३, संति ३६, कुंयु ३५, अर ३०, म. २८, सु १८, ए १७, णं ११, पा १०, वीर ११ ।

अर्थ :—धर्मानाथ वीर जिनेन्द्र पर्यन्त क्रमशः छत्तीस, वणतीस, तीस, अट्ठाईस, अठारह, सत्तरह, ग्यारह, दस और ग्यारह गणधर थे ॥६७२॥

आर्थिक :- आठवाँ श्री रुद्रिधिरामर जी गणेश  
ऋषभादि तीर्थंकरोंके आठ गणेशोंके नाम—

'पडमो हु उसहसेणो, केसरिसेणो य चारवसो य ।  
वज्रचमरो' य बज्जो, चमरो बसवसा - वेववसा ॥६७३॥

नागो कुंभू जम्मो, संविरचामा जजो अरिहो य ।  
सेणो चक्रायुह्यो, सयंभू कुंभो विसाखो य ॥६७४॥

मल्लीणामो सोमा - वरवत्ता सयंभू - इवभूदीजो ।  
उसहावीर्यं आदिम - गणहर नामानि एवानि ॥६७५॥

अर्थ :- १ अधभसेन, २ केसरि (सिंह) सेन, ३ चारवत्ता, ४ वज्रचमर, ५ वज्र, ६ चमर, ७ वसवत्ता ( बलिदत्तक ), ८ वेदार्म, ९ नाग ( अन्तगार ), १० कुन्धू, ११ धर्म, १२ मन्दिर, १३ जय, १४ अरिष्ट, १५ सेन ( अरिष्टसेन ), १६ चक्रायुध, १७ स्वयंभू, १८ कुम्भ ( कुन्धू ), १९ विशाख, २० मल्लि, २१ सोमक, २२ वरदत्त, २३ स्वयंभू और २४ इन्द्रभूति, ये क्रमशः ऋषभादि तीर्थंकरोंके प्रथम गणेशोंके नाम हैं ॥६७३-६७५॥

[ तालिका : २६ अगले पृष्ठ पर देखिये ]

ऋद्धियोंका स्वरूप कहनेकी प्रतिज्ञा एवं उनके भेद—

एवे गणहर - देवा, सज्जे वि हु अहु-रिद्धि-संपुज्जा ।  
ताणं रिद्धि - सकव, लव - मेत्तं तं गिकवेजो ॥६७६॥

अर्थ :- ये सब ही गणेशदेव आठ ऋद्धियोंसे संयुक्त होते हैं । यही उन गणेशोंकी ऋद्धियोंके स्वरूपका हम लव-मात्र निरूपण करते हैं ॥६७६॥

२६४ ]

तिलोपपण्णसी

[ तालिका : २६ ]

तालिका : २६

तीर्थंकरोंका केवलिकाल, गणधरोंकी संख्या एवं नाम—

| नं० | नाम         | केवलिकाल ( मा० ६५२-६६६ )                            | गणधरोंकी संख्या | शुद्धभादि तीर्थ के माघ गणधरोंके नाम मा. ६७३-७५ |
|-----|-------------|-----------------------------------------------------|-----------------|------------------------------------------------|
| १   | शुद्धभनाथ   | ६६६६६ पूर्व, ८३६६६६६ पूर्वांग, ८३६६००० वर्ष ।       | ८४              | शुद्धभसेन                                      |
| २   | अजितनाथ     | ६६६६६ पूर्व, ८३६६६६८ पूर्वांग, ८३६६६८८ वर्ष ।       | ६०              | केसरि(सिंह)सेन                                 |
| ३   | सम्भव       | ६६६६६ पूर्व, ८३६६६६५ पूर्वांग, ८३६६६८६ वर्ष ।       | १०५             | भारुदत्त                                       |
| ४   | अधिनन्दन    | ६६६६६ पूर्व, ८३६६६६१ पूर्वांग, ८३६६६८२ वर्ष ।       | १०३             | वज्रधर                                         |
| ५   | सुमतिनाथ    | ६६६६६ पूर्व, ८३६६६८७ पूर्वांग, ८३६६६८० वर्ष ।       | ११६             | वज्र                                           |
| ६   | पद्मप्रभु   | ६६६६६ पूर्व, ८३६६६८३ पूर्वांग, ८३६६६६३ वर्ष ।       | १११             | चमर                                            |
| ७   | सुपाश्वनाथ  | ६६६६६ पूर्व, ८३६६६७६ पूर्वांग, ८३६६६६१ वर्ष ।       | ६५              | अलवत्त                                         |
| ८   | चन्द्रप्रभ  | ६६६६६ पूर्व, ८३६६६७५ पूर्वांग, ८३६६६६६ वर्ष ६ माह । | ६३              | वेदमं                                          |
| ९   | पुष्पदन्त   | ६६६६६ पूर्व, ८३६६६७१ पूर्वांग, ८३६६६६६ वर्ष ।       | ८८              | नाग (अमगार)                                    |
| १०  | शीतलनाथ     | २४६६६ पूर्व, ८३६६६६६ पूर्वांग, ८३६६६६७ वर्ष ।       | ८७              | कुन्धु                                         |
| ११  | श्रेयांसनाथ | २०६६६८८ वर्ष ।                                      | ७७              | धर्म                                           |
| १२  | वासुपूज्य   | ५३६६६६६ वर्ष ।                                      | ६६              | मन्दिर                                         |
| १३  | विमलनाथ     | १४६६६६७ वर्ष ।                                      | ५५              | जय                                             |
| १४  | अनन्तनाथ    | ७४६६६८ वर्ष ।                                       | ५०              | अरिष्ट                                         |
| १५  | धर्मनाथ     | २४६६६६ वर्ष ।                                       | ४३              | सेन(अरिष्टसेन)                                 |
| १६  | शान्तिनाथ   | २४६८४ वर्ष ।                                        | ३६              | चक्रायुध                                       |
| १७  | कुन्धुनाथ   | २३७३४ वर्ष ।                                        | ३५              | स्वयंभू                                        |
| १८  | अरनाथ       | २०६८४ वर्ष ।                                        | ३०              | कुम्भ (कुन्धु)                                 |
| १९  | मल्लिनाथ    | ५४८६६ वर्ष, ११ मास, २४ दिन ।                        | २८              | विवाह                                          |
| २०  | मुनिसुवत    | ७४६६ वर्ष, १ मास                                    | १८              | मल्लि                                          |
| २१  | नमिनाथ      | २४६१ वर्ष ।                                         | १७              | सुप्रभ(सोमक)                                   |
| २२  | नेमिनाथ     | ६६६ वर्ष, १० मास, ४ दिन ।                           | ११              | वरदत्त                                         |
| २३  | पाश्वनाथ    | ६६ वर्ष, ८ मास ।                                    | १०              | स्वयंभू                                        |
| २४  | वीरनाथ      | ३० वर्ष ।                                           | ११              | इन्द्रभूति                                     |
|     |             |                                                     | १४५६            |                                                |

सुद्धो-विकिरिय'-किरिया, तब-कल-भोसहि-रसबिलबो रियो ।

एकामसु बुद्धि - रिद्धो, सद्बुद्धिर्बुद्धिर्मेव विवर्धयामासुः ॥ १ ॥

मोहि - मणपकसदाजं, केवलनाथी धि बीज - बुद्धी य ।

पंचमया कोटुमई, पदापुसरित्तभं हृदं ॥६७८॥

संभिण्णस्सोवित्तं, दूरस्सादं च दूरपत्तं च ।

दूरध्वनिं दूरस्सवर्णं तह दूरवसंणं जेव ॥६७६॥

दत्त-चोदस - पुर्विक्तं, निमित्त-रिद्धौ सत्य कसलसत् ।

पण्यसमणाह्विमाशं, कमसो पत्तेय - बुद्धि - वाविसं ॥६८०॥

अर्थ :—१ बुद्धि, २ विक्रिया, ३ क्रिया, ४ तप, ५ बल, ६ औषधि, ७ रस और ८ स्थिति ( क्षेत्र ) के भेदसे ऋद्धिषां आठ प्रकारकी हैं ।

इनमेंसे बुद्धिऋद्धि—१ अवधिज्ञान, २ मनःपर्ययज्ञान, ३ केवलज्ञान, ४ बीजबुद्धि, ५ कोष्ठ-  
मति, ६ पदानुसारित्व, ७ संभिन्नश्रोतृत्व, ८ दूरास्वादन, ९ दूरस्पर्श, १० दूरघ्राण, ११ दूरध्वन, १२ दूरदर्शन, १३ दसपूवित्व, १४ चौदह-पूवित्व, १५ निमित्तऋद्धि इनमें कुशलता, १६ प्रज्ञाश्रमण, १७ प्रत्येक-बुद्धित्व और १८ वादित्र इन अठारह भेदोंसे विख्यात है ॥६७७-६८०॥

बुद्धि-श्रुद्धियोंके अन्तर्गत अवधिज्ञान श्रुद्धिका स्वरूप—

अंतिम - खंडलाइ<sup>२</sup>, परमाणु - पृथ्वि - मुक्ति-दम्बाइ ।

ॐ पञ्चवक्त्रं जायते, तमोहिमार्णं ति यावत्सं । ६८१ ।।

। ओष्ठिणारजं गदं ।

सम् :—जो ( देश ) प्रत्यक्ष-ज्ञान अन्तिम स्कन्ध-पर्यन्त परमाणु सादिक मूर्त इव्यांको जागता है उसको अवधिज्ञान जानना चाहिए ॥६८॥

। अक्षरभिल्लानका वर्णन पर्वः कृष्ण ।

मनःपर्ययज्ञानं श्रुति—

मार्गदर्शक — आचार्य और सुविद्यतामय जी महाराज

चित्तिमचित्तिमं वा, 'श्रुति' चित्तिममयेय - भेय - गयं ।

अं आचरु कर - सोए, तं चिय मनपञ्चयं जानं ॥१८२॥

। मनपञ्चयजानं गयं ।

अर्थ :—मनुष्य लोकमें स्थित अनेक भेद रूप चित्तित, अचित्तित अथवा अर्धचित्तित पदार्थोंको जो ज्ञान जानता है वह मनःपर्ययज्ञान है ॥१८२॥

। मनःपर्ययज्ञान का वर्णन पूर्ण हुआ ।

केवलज्ञान—

उपविष्ट-सयल-भावं, लोयालोएसु तिमिर - परिधरां ।

केवलमसंख - भेद, केवलजानं भर्णति 'जिना ॥१८३॥

। केवलजानं गयं ।

अर्थ :—जो ज्ञान प्रतिपक्षीसे रहित होकर सम्पूर्ण पदार्थोंको विषय करता है, लोक एवं अलोकके विषयमें अज्ञान-तिमिरसे रहित है, केवल ( इन्द्रियादिक की सहायतासे रहित ) है और अक्षय्य है, उसे जिनेन्द्रदेव केवलज्ञान कहते हैं ॥१८३॥

। केवलज्ञान का वर्णन पूर्ण हुआ ।

बीजश्रुति—

जोर्ध्विय - सुवशाणावरजानं 'बीरमंतरायाए ।

तिविहाणं पयबीणं, उक्कस्स - सओवसम - विसुद्धस्स ॥१८४॥

संखेज्ज - सकुवाणं, 'सहाणं तस्य लिग - संजुत्तं ।

एकं चिय बीजयवं, लव्धूणं गुरुपदेसेण ॥१८५॥

तस्मि पवे माहारे, सयस - सुबं चित्तिऊण' गेहेवि ।

कस्स वि महेसिणो जा, बुद्धी सा बीज - बुद्धि सि ॥६८६॥

मार्गदर्शक :- अरामार्ग की सुविचारिताय की आधारभूत

। बीज-बुद्धी समता ।

अर्थ :- नोइन्द्रियावरण, श्रुतज्ञानावरण और वीर्यान्तराय इन तीन प्रकारकी प्रकृतियोंके उत्कृष्ट क्षयोपशमसे विमुक्त हुए किसी भी महाशिवकी जो बुद्धि संख्यात-स्वरूप शब्दोंके मध्यमेंसे लिङ्ग सहित एक ही बीजभूत पदको गुरुके उपदेशसे प्राप्त कर उस पदके ध्याययसे सम्पूर्ण श्रुतको विचार कर ग्रहण करती है, वह बीज-बुद्धि है ॥६८४-६८६॥

। बीज-बुद्धिकी वर्णना समाप्त हुई ।

कोष्ठबुद्धि—

उवकस्स - धारणाए, कुसो पुरिसो गुरुबदेसेण ।

णाणाविह - गंघेसु<sup>१</sup>, वित्थारे सिग - सह - बीजाणि ॥६८७॥

गत्तिऊण गिय-मवीए, मिस्सेण विणा धरेवि मवि-कोट्टे ।

जो होवि तस्स बुद्धी, गिहिट्टा कोट्ट - बुद्धि सि ॥६८८॥

। कोट्ट-बुद्धी<sup>२</sup> गवा ।

अर्थ :- उत्कृष्ट धारणासे युक्त जो कोई पुरुष ( ऋषि ) गुरुके उपदेशसे नाना प्रकारके ग्रन्थोंमेंसे विस्तार पूर्वक लिङ्ग सहित शब्दरूप बीजोंको अपनी बुद्धिसे ग्रहण कर उन्हें मिश्रणके बिना बुद्धिरूपी कोठमें धारण करता है, उसकी बुद्धि कोट्ट-बुद्धि कही गई है ॥६८७-६८८॥

। कोष्ठ बुद्धिकी वर्णना समाप्त हुई ।

पदानुसारिणी बुद्धिके भेद एवं उनका स्वरूप—

बुद्धी वियवस - गार्ण, पदानुसारी हवेदि तिवियप्पा ।

अणुसारी पडिसारी, जहस्व - जामा उभयसारी ॥६८९॥

१. व. व. क. ज. प. उ. चित्तियारणं । २. द. गंघेसु वित्थारे तिव-सद्दु बीजाणि । ३. द. व.

क. ज. प. उ. कोट्टबुद्धि एव ।



अर्थ :—विशिष्ट ज्ञानको पदानुसारणी बुद्धि कहते हैं। उसके तीन भेद हैं—अनुसारणी, प्रतिसारणी और उभयसारणी। ये तीनों बुद्धियाँ यथायं नाम बाकी हैं ॥६८६॥

आदि - अवसाण - मज्जे, गुरुवदेसेण एक-बीज-पदं ।

गेष्मिह्य उपरिम-गंधं, जा गिण्हदि सा मवी द्वा अनुसारी ॥६८७॥

। अनुसारी गदा ।

अर्थ :—जो बुद्धि आदि, मध्य एवं अन्तमें गुरुके उपदेशसे एक बीज पदको ग्रहण करके उपरिम ग्रन्थको ग्रहण करती है वह अनुसारणी बुद्धि कहलाती है ॥६८७॥

। अनुसारणी बुद्धि की वर्णना समाप्त हुई ।

आदि-अवसाण-मज्जे, गुरुवदेसेण एक - बीज - पदं ।

गेष्मिह्य हेट्ठिम - गंधं, बुज्झदि जा सा च, पडिसारी ॥६८८॥

। पडिसारी गदा ।

अर्थ :—गुरुके उपदेशसे आदि, मध्य अथवा अन्तमें एक बीज पदको ग्रहण करके जो बुद्धि मध्यस्तन ग्रन्थको जानती है, वह प्रतिसारणी बुद्धि कहलाती है ॥६८८॥

। प्रतिसारणी बुद्धि की वर्णना समाप्त हुई ।

गियमेण अनियमेण य, सुगवं एगस्स बीज - सद्दस्स ।

उपरिम - हेट्ठिम - गंधं, जा बुज्झदि उभयसारी सा ॥६८९॥

। उभयसारी गदा ।

। एवं पदानुसारी गदा ।

अर्थ :—जो बुद्धि नियम अथवा अनियमसे एक बीज-शब्दके (ग्रहण करने पर) उपरिम और मध्यस्तन ग्रन्थको एक साथ जानती है, वह उभयसारणी बुद्धि है ॥६८९॥

। उभय-सारणी बुद्धिका कथन समाप्त हुआ ।

। इसप्रकार पदानुसारणी बुद्धिका कथन समाप्त हुआ ।

### संमिश्रश्रोतृत्व-बुद्धि-ऋद्धि—

सोर्विद्विय<sup>१</sup> - सुदखाणावरणां वीरियंतरायाए ।  
उक्कस्स - सखोवसमे, उद्विंणोवंग - गाम - कम्मम्मि ॥६६३॥  
सोदुक्कस्स - सिदीदो, बाहिं संसेज्ज - जोयज-यएसे ।  
संठिय - एर - तिरियाणं, बहुविह - सद्दे सुमुत्पत्ते ॥६६४॥  
अक्खर - अणक्खरमए, सोव्वणं वस - विसासु पसेक्कं ।  
अं विज्जहि पडिक्खणं, तं चिय संभिण्ण - सोवित्तं ॥६६५॥

। संभिण्ण-सोवित्तं गवं ।

अर्थ :—श्रोत्रेन्द्रियावरण, श्रुतज्ञानावरण और वीर्यान्तरायका उत्कृष्ट क्षयोपशम तथा अङ्गोपाङ्ग नामकर्मका उदय होनेपर श्रोत्र-इन्द्रियके उत्कृष्ट क्षेत्रसे बाहर दसों दिशाओंमें संख्यात योजन प्रमाण क्षेत्रमें स्थित मनुष्य एवं तिर्यङ्मूर्खोंके अक्षरानक्षरात्मक बहुत प्रकारके उठने वाले शब्दों को सुनकर जिससे प्रत्युत्तर दिया जाता है, वह संमिश्रश्रोतृत्व नामक बुद्धि-ऋद्धि कहलाती है ॥६६३-६६५॥

। संमिश्रश्रोतृत्व-बुद्धि-ऋद्धिका कथन समाप्त हुआ ।

### दूरस्वादिव-ऋद्धि—

जिंविंभद्विय - सुवणाणावरणां वीरियंतरायाए ।  
उक्कस्स - सखोवसमे उद्विंणोवंग - गाम - कम्मम्मि ॥६६६॥  
जिदुक्कस्स-सिदीदो, बाहिं संसेज्ज-जोयज-ठियाणं ।  
जिबिह - रसाणं सादं, अं जाणइ दूर - सावित्तं ॥६६७॥

। दूरसावित्तं गवं ।

अर्थ :—जिह्वेन्द्रियावरण, श्रुतज्ञानावरण और वीर्यान्तरायका उत्कृष्ट क्षयोपशम तथा अङ्गोपाङ्ग नामकर्मका उदय होने पर जो जिह्वा-इन्द्रियके उत्कृष्ट विषय-क्षेत्रसे बाहर संख्यात योजन

प्रमाण क्षेत्रमें स्थित विविध-रसोंके स्वादको जानती है, उसे दूरास्वादित्व-ऋद्धि कहते हैं ॥६६६-६६७॥

। दूरास्वादित्व-ऋद्धिका कथन समाप्त हुआ ।

दूरस्पर्शत्व-ऋद्धि—

आसिखिय - सुवणाणावरणां वीरियंतरायाए ।

उक्कस्स - सखीवसमे, उदिदंगोवंग - नाम - कम्मम्मि ॥६६८॥

फासुक्कस्स - सिदीदो, बाहि संखेज्ज-ओयण-ठियाणं ।

अट्ट - बिहप्फासाणि, जं जाणइ दूर - फासं ॥६६९॥

। दूर-फासं गदं ।

अर्थ :—स्पर्शनेन्द्रियावरण, श्रुतज्ञानावरण और वीर्यान्तरायका उत्कृष्ट क्षयोपशम तथा अङ्गोपाङ्ग नामकर्म का उदय होने पर जो स्पर्शनेन्द्रियके उत्कृष्ट विषय क्षेत्रसे बाहर संख्यात योजनोंमें स्थित आठ प्रकारके स्पर्शोंको जानती है वह दूरस्पर्शत्व-ऋद्धि है ॥६६८-६६९॥

। दूर-स्पर्शत्व-ऋद्धिका कथन समाप्त हुआ ।

दूर-घ्राणत्व-ऋद्धि—

घाणियिय - सुवणाणावरणां वीरियंतरायाए ।

उक्कस्स - सखीवसमे, उदिदंगोवंग - नाम - कम्मम्मि ॥१०००॥

घाणुक्कस्स-सिदीदो, बाहि संखेज्ज-ओयण-गणाणि ।

जं बहुविह - गंधाणि, तं घायहि दूर - घाणसं ॥१००१॥

। दूर-घाणसं गदं ।

अर्थ :—घ्राणेन्द्रियावरण, श्रुतज्ञानावरण और वीर्यान्तरायका उत्कृष्ट क्षयोपशम तथा अङ्गोपाङ्ग नामकर्मका उदय होने पर जो घ्राणेन्द्रियके उत्कृष्ट विषय क्षेत्रसे बाहर संख्यात योजनोंमें प्राप्त हुए बहुत प्रकारके गंधोंको सूँघती है, वह दूरघ्राणत्व-ऋद्धि है ॥१०००-१००१॥

। दूरघ्राणत्व-ऋद्धिका कथन समाप्त हुआ ।

गाथा : १००२-१००६ ]

चउत्थो महाहियारो

[ ३०१ ]

दूर-श्रवणत्व-ऋद्धि —

सौविदिय - सुवशाणावरणाणं वीरियंतरायाए ।

उक्कस्स - खओवसमे, उदिदंगोबंग - गाम - कम्मम्मि ॥१००२॥

सोवुक्कस्स - खिदीवो, बाहि संखेज्ज - जोयण - पएसे ।

जिट्ठंताणं माणुस - तिरियाणं बहु - वियप्पाणं ॥१००३॥

अक्खर - अणक्खरमए, बहुविह - सहं विसैस-संजुत्तो ।

उप्पण्णो आयप्पाइ, जं भणिअं दूर - सवणरा ॥१००४॥

। दूरसवणत्वं गवं ।

अर्थ :- श्रोत्रेन्द्रियावरण, श्रुतज्ञानावरण और वीर्यान्तरायका उत्कृष्ट क्षयोपशम तथा अङ्गोपाङ्ग नामकर्मका उदय होने पर जो श्रोत्रेन्द्रियके उत्कृष्ट विषय-क्षेत्रसे बाहर संख्यात योजन प्रमाण क्षेत्रमें स्थित-रहने वाले बहुत प्रकारके मनुष्यों एवं तिर्यङ्कोंकी विशेषतासे संयुक्त अनेक प्रकारके बहिरावधारक शब्दोंके उत्पन्न होने पर उनका श्रवण करती है, उसे दूरश्रवणत्व ऋद्धि कहा गया है ॥१००२-१००४॥

। दूरश्रवणत्व-ऋद्धिका कथन समाप्त हुआ ।

दूर-दर्शित्व-ऋद्धि—

सौविदिय - सुवशाणावरणाणं वीरियंतरायाए ।

उक्कस्स - खओवसमे, उदिदंगोबंग - गाम - कम्मम्मि ॥१००५॥

उक्कस्स-खिदीवो, बाहि संखेज्ज - जोयण - ठिवाइं ।

जं बहुविह - वप्पाइं, वेक्खइ तं दूरवरिसिणं गाम ॥१००६॥

। दूरवरिसिणं गवं ।

अर्थ :- चक्षुरिन्द्रियावरण, श्रुतज्ञानावरण और वीर्यान्तरायका उत्कृष्ट क्षयोपशम तथा अङ्गोपाङ्ग नामकर्मका उदय होने पर जो चक्षुरिन्द्रियके उत्कृष्ट विषयक्षेत्रसे बाहर संख्यात योजनोंमें स्थित बहुत प्रकारके व्यक्तियोंको देखती है, वह दूरदर्शित्व-ऋद्धि है ॥१००५-१००६॥

। दूरदर्शित्व-ऋद्धिका कथन समाप्त हुआ ।

**दस-पूर्वत्व-श्रुति—**

रोहिणि - पटुवीण महाविष्णुनामं देवदात पंच सया ।

अंगुष्ठ - श्लेष्माहं, 'सुल्लय - विज्जाण सस सया ॥१००७॥

एतूण पेसमाहं, मग्गंते वसम - पुत्त - पडवम्मि ।

णेण्वंति संजमंता, ताओ जे ते' अभिन्नवसपुत्तो ॥१००८॥

मुक्खेसु सुप्पसिद्धा, विज्जाहर-समण-नाम-पज्जाया ।

ताथं मुणीण वुद्धो, इसपुत्तो नाम बोद्धव्वा ॥१००९॥

**। दसपुत्तो गदा ।**

**अर्थ :—** दस-पूर्व पढ़नेमें रोहिणी आदि महाविद्याओंके पांचसौ और अंगुष्ठ-श्लेष्मादिक ( प्रश्नादिक ) क्षुद्र ( लघु ) विद्याओंके सातसौ देवता आकाश मांगते हैं । इस समय जो महर्षि ब्रह्मेन्द्रिय होनेके कारण उन विद्याओं की इच्छा नहीं करते, वे 'विद्याधर धर्मराज' पर्याय नामसे भुवनमें प्रसिद्ध होते हुए अभिन्नदसपूर्व कहलाते हैं । उन ऋषियोंकी बुद्धिकी दस - पूर्वी जानना चाहिए ॥१००७-१००९॥

**। दस-पूर्वत्व-श्रुतिका कथन समाप्त हुआ ।**

**चौदह-पूर्वत्व-श्रुति—**

सयसागम-पारमया, सुवकेवलि - नाम - सुप्पसिद्धा जे ।

एवाण वुद्धि - रिद्धो, चौदसपुत्ति सि नामेण ॥१०१०॥

**। चौदस-पुत्तिस्त' गदा ।**

**अर्थ :—** जो महर्षि सम्पूर्ण आगमके पारंगत हैं तथा सुवकेवली नामसे सुप्रसिद्ध हैं उनके चौदहपूर्व नामक बुद्धि-श्रुति होती है ॥१०१०॥

**। चौदह-पूर्वत्व-श्रुतिका कथन समाप्त हुआ ।**

निमित्त-शुद्धिके अन्तर्गत तम, भीम आदि निमित्तोंका निरूपण— :

गङ्गानिमित्तिका य रिद्धी, राम - भवमंग - सराह वैजयन्त ।

लक्षण - चिन्हं सत्तमं, अट्ट - विष्णोहि विस्वरिचं ॥१०११॥

अर्थ :—नैमित्तिक शुद्धि तम, भीम, अंग, स्वर, व्यंजन, लक्षण. चिन्ह ( चिह्न ? ) और स्वप्न इन आठ भेदोंसे विस्तृत है ॥१०११॥

रवि-ससि-गह-पहुवीचं, उदयत्यमणादिआहं वट्टूणं ।

कालसय-दुखल-सुहं, अं जाणइ तं हि जह - निमित्तं ॥१०१२॥

आगेकेप्रकार :—आचार्य जी शुद्धिकेप्रकार और प्रकारान्तरे  
। जह-निमित्तं गवं ।

अर्थ :—सूर्य, चन्द्र और ग्रह आदिके उदय एवं अस्त आदिकोंको देखकर जो कालत्रयके दुःख-सुख आदिको जानना है, वह नम-निमित्त है ॥१०१२॥

। नम-निमित्तका कथन समाप्त हुआ ।

धन-सुसिर-णिद्ध-सुखल-पुहुवि-मुंणे आबिदूण भुमीए ।

अं जाणइ जय-वडिड, तम्मयस-कणय-रजद-पमुहाणं ॥१०१३॥

दिस-विदिस-अंतरेसुं, चउरंग - बलं टिडं च वट्टूणं ।

अं जाणइ जयमजयं, तं भउम - निमित्तमुद्दिडुं ॥१०१४॥

। भउम-निमित्तं गवं ।

अर्थ :—पृथिवीके धन ( सान्द्रता ), सुविर ( पोलापन ), स्निग्धता और रक्षता आदि गुणोंका विचार कर ओ तांबा, लोहा, स्वर्ण एवं चांदी आदि धातुओंकी हानि-वृद्धिको तथा दिशा-विदिशाओंके अन्तरालोंमें स्थित चतुरंगबलको देखकर जो जय-पराजय को भी जानता है, उसे भीम-निमित्त कहा गया है ॥१०१३-१०१४॥

। भीम-निमित्तका कथन समाप्त हुआ ।

वातादि - प्ययडीओ<sup>१</sup>, रहिर - प्यहुविस्सहाव-सलाइ<sup>२</sup> ।

जिप्पाण<sup>३</sup> उक्कायाणं, अंगोअंगण वंसणा पासा<sup>४</sup> ॥१०१५॥

गर-तिरियाणं बट्ठुं<sup>५</sup>, जं जाणइ बुक्क-सोक्क-सरणादि ।

कालराय - जिप्पणां, अंग - जिमिसं पसिठं<sup>६</sup> तु ॥१०१६॥

। अंग-जिमिसं गदं ।

अर्थ :—जिससे मनुष्य और तिर्यङ्चोंके निम्न एवं उन्नत अंग-उपाङ्गोंके दर्शन एवं स्पर्शसे वातादि तीन प्रकृतियों और रहिरादि सात स्वभावों ( धातुओं ) को देखकर तीनों कालोंमें उत्पन्न होने वाले सुख-दुःख तथा भरण-आदिको जाना जाता है, वह अङ्ग-निमित्त नामसे प्रसिद्ध है ॥१०१५-१०१६॥

। अङ्ग-निमित्तका कथन समाप्त हुआ ।

गर-तिरियाणं जिमिसं, सरं सोदुण बुक्क-सोक्कादि ।

कालराय - जिप्पणां, जं जाणइ तं सरं - जिमिसं ॥१०१७॥

। सर-जिमिसं गदं ।

अर्थ :—जिसके द्वारा मनुष्यों और तिर्यङ्चोंके विभिन्न शब्दोंको सुनकर कालत्रयमें होने वाले दुःख-सुखको जाना जाता है, वह स्वर-निमित्त है ॥१०१७॥

। स्वर-निमित्तका कथन समाप्त हुआ ।

तिर-मुह-कंठ-प्यहुविसु, तिल-मसय-प्यहुविआइ<sup>७</sup> बट्ठुणं ।

जं तिय-काल-सुहाइ<sup>८</sup>, जाणइ तं अङ्गण - जिमिसं ॥१०१८॥

। अङ्गण-जिमिसं गदं ।

अर्थ :—तिर, मुख और कण्ठ आदि पर तिल एवं मसै आदिको देखकर तीनों कालके सुखादिक को जानना, सो व्यङ्जन-निमित्त है ॥१०१८॥

। व्यङ्जन-निमित्तका कथन समाप्त हुआ ।

१. द. व. क. अ. य. उ. परिखीओ । २. द. व. क. अ. य. उ. सत्तेइ । ३. द. व. क. अ. य. उ.

तिप्पाण उक्कायाणं । ४. द. व. क. अ. य. उ. पासा । ५. द. व. क. अ. य. उ. धादि ।

कर-चरणतल-व्यहृदिसु, पंकज - कुलिसाविद्याणि बट्ठूणं ।

जं तिय-कास-सुहाइ<sup>१</sup>, लक्खइ तं लक्खण - निमित्तं ॥१०१६॥

लक्खण-निमित्तं गदं ।

अर्थ :—हस्ततल ( हथेली ) और चरणतल ( पगतली ) आदिमें कमल एवं वज्र इत्यादि चिह्नोंको देखकर कालत्रयमें होने वाले सुखादिको जानना, यह लक्षण निमित्त है ॥१०१६॥

संस्कृत-अर्थ - अरण्य श्री सुविजितभार जी महाराज  
। लक्षण-निमित्तका कथन समाप्त हुआ ।

सुर-वाणव-रक्खस-गर-तिरिएहि<sup>२</sup> छिण्ण-सत्थ-वस्त्राणि ।

पासाव - भयर - देसादियाणि चिह्नाणि बट्ठूणं ॥१०२०॥

काससय - संभूदं, सुहासुहं मरण - विविह - वच्चं च ।

सुह - दुक्खाइ<sup>३</sup> लक्खइ, चिह्ण-निमित्तशि तं जाणइ ॥१०२१॥

। चिह्ण-निमित्तं गदं ।

अर्थ :—देव, दानव, राक्षस, मनुष्य और तिर्यञ्चोंके द्वारा छेदे गये वस्त्र एवं वस्त्रादि तथा प्रासाद, नगर और देशादिक चिह्नोंको देखकर त्रिकालमें उत्पन्न होने वाले शुभ-वशुभको, भरण-को, विविध प्रकारके द्रव्योंको और सुख-दुःखको जानना यह चिह्न निमित्त है ॥१०२०-१०२१॥

। चिह्न-निमित्तका कथन समाप्त हुआ ।

दातादि-दोस-वत्तो, पल्लिअ - एत्ते मयंक-एवि-पहुदि ।

जिय-सुह-कमल-पविट्ठ<sup>४</sup>, बेक्खइ सउणम्मि सुह - सउणं ॥१०२२॥

घड - सेहलवभंगादी, रासह - करभादिएसु<sup>५</sup> आरोहं ।

परबेस - गमण - सम्भं, जं बेक्खइ असुह - सउणं तं ॥१०२३॥

जं भासइ दुक्ख - सुह - प्पमुहं काससए वि संजादं ।

तं चिय सउण - निमित्तं, चिह्णा मालो<sup>६</sup> ति बो-भेवं ॥१०२४॥



करि-केसरि-महदोषं, 'दंसण - मेलादि चित्त-सङ्गं तं ।  
पुष्पावर - सङ्गं, सङ्गं तं मास - सङ्गो ति ॥१०२५॥

। सङ्ग-निमित्तो गद्य ।

॥ एवं निमित्त-रिद्धी समवा ॥

अर्थ :—वाड-पितादि दोषोंसे रहित सोया हुआ व्यक्ति पिछली रात्रिमें यदि अपने मुख-कमलमें प्रविष्ट होते हुए सूर्य-चन्द्र आदि शुभ स्वप्नोंको देखे तथा घृत एवं तैल आदि की मालिश, गर्दभ एवं ऊँट आदि पर सवारी और परदेस-यमनादिरूप अशुभ स्वप्न देखे तो उसके फलस्वरूप तीन कासमें होनेवाले सुख-दुःखादिकको वतसाना स्वप्न-निमित्त है । इसके चित्त और भावा रूपसे दो भेद हैं । इनमेंसे स्वप्नमें हाथी एवं सिंहदिकके दर्शन मात्र आदिकको चित्त-स्वप्न और पूर्वापर सम्बन्ध रखने वाले स्वप्नको भाला स्वप्न कहते हैं ॥१०२२-१०२५॥

। स्वप्न-निमित्तका कथन समाप्त हुआ ।

। इसप्रकार निमित्त-श्रुतिका कथन समाप्त हुआ ।

प्रज्ञा-श्रमण-श्रुति—

पण्डोए सुवणाभावरणाए धीरिधन्तरायाए ।  
उक्कस्स - सवोवसमे, उण्णज्जह पण्ण - समज्झी ॥१०२६॥  
पण्णा-सवणादि-धुवो, धोहस-पुष्पीसु विसय-सुहुमत्तं ।  
सख्यं हि सुवं जायदि, अकम्मज्झणो वि शियमेत्तं ॥१०२७॥  
मासंति तस्स बुद्धी, पण्णा - समज्झि ता च खड-भेदा ।  
अउपत्तिय - परिणामिय-बइराइको-कम्मजाभिधानेहि ॥१०२८॥

अर्थ :—श्रुतज्ञानवरण और धीरान्तरायकर्मका उत्कृष्ट क्षमोपशम होने पर प्रज्ञा-श्रमण-श्रुति उत्पन्न होती है । प्रज्ञा-श्रमण-श्रुतिसे युक्त महर्षि बिना अध्ययन किए ही चौदह-पूर्वोंमें विषय-की सूक्ष्मता पूर्वक सम्पूर्ण श्रुतकी जानता है और उसका नियम-पूर्वक निरूपण करता है । उसकी

बुद्धिको प्रज्ञा-अमरा-श्रद्धा कहते हैं । वह धौत्यतिकी, पारिणामिकी, वैभविकी और कर्मजा इन चार नामों वाली जाननी चाहिए ॥१०२६-१०२८॥

मार्गदर्शिका :- आचार्य की बुद्धिबिज्ञानपर की व्याख्या

अउपरािकी भवंतर - सुव - विनएणं समुत्तसिद्धभावा ।

विज-एण-आदि-विसेसे, उप्पज्जा पारिणामिकी नामा ॥१०२९॥

बहुमदकी विनएणं, उप्पज्जवि वारसंग-सुव-बोले ।

उवसेसेण विणा तव - विसेस-साहेण कम्मजा तुरिमा ॥१०३०॥

। वज्जा-समनश्चि गवा ।

अर्थ :- पूर्व-भवमें श्रुतके प्रति की गई विनयसे उत्पन्न होने वाली धौत्यतिकी, निज-निज जाति-विशेषमें उत्पन्न हुई पारिणामिकी, द्वादशाङ्ग श्रुतके योग्य विनयसे उत्पन्न होने वाली वैभविकी और उपदेशके बिना ही विशेष तपकी प्राप्तिसे आविर्भूत हुई चौथी कर्मजा प्रज्ञा-अमरा-श्रद्धा समझनी चाहिए ॥१०२९-१०३०॥

। प्रज्ञा-अमरा-श्रद्धिका कथन समाप्त हुआ ।

प्रत्येक-बुद्धि—

कम्माण उवससेण य, गुरुवसेसं विणा वि पावेदि ।

सज्जान - तवप्पगमं, जीए' पत्तेय - बुद्धी सा ॥१०३१॥

। पत्तेय-बुद्धी गवा<sup>१</sup> ।

अर्थ :- जिसके द्वारा गुरुके उपदेशके बिना ही कर्मोंके उपशमसे सम्यग्ज्ञान और तपके विषयमें प्रगति होती है, वह प्रत्येक-बुद्धि कहलाती है ॥१०३१॥

प्रत्येक बुद्धिका कथन समाप्त हुआ ।

वादिस्व-बुद्धि —

सर्वकारि पि विपक्षं, बहुवादोहि निवृत्तरं कुम्भदि ।

पर - दम्भाद् गणेश, जीए पाविस - बुद्धीए ॥१०३२॥

। वादिस-रिद्धी-गवा ।

एवं बुद्धि-रिद्धी-गवा

अर्थ :—जिस ऋद्धि द्वारा वाक्यादिक ( या शकादि ) विपक्षियोंको भी बहुत भारी वादसे निवृत्तर कर दिया जाता है और परके द्रव्योंको गणेशणा ( परोक्षा ) की जाती है ( या दूसरोंके धिक् अवयवा दोष नूढ़े जाते हैं ) वह वादिस्व बुद्धि-ऋद्धि कहलाती है ॥१०३२॥

वादिस्व-बुद्धि-ऋद्धिका कथन समाप्त हुआ ।

॥ इसप्रकार बुद्धि-ऋद्धिका कथन समाप्त हुआ ॥

विक्रिया ऋद्धिके भेद एवं तन्का स्वरूप—

अणिमा-महिमा-सधिमा-गरिमा-पत्नी य तह<sup>१</sup> अ पाकम्मं ।

ईसत्त - वसिसाहं<sup>२</sup>, अप्यद्धिधावन्तमाणा य ॥१०३३॥

रिद्धी तु कामक्या, एवं सुवेहि विविह - मेएहि ।

रिद्धि - विकिरिया णामा, समणार्णं तव - विसेसेणं ॥१०३४॥

अर्थ :—अणिमा, महिमा, सधिमा, गरिमा, प्राप्ति, प्राकाम्य, ईश्वरत्व, वसित्व, अप्रतिष्ठात, अन्तर्धान और कामरूप, इस प्रकारके अनेक भेदोंसे युक्त विक्रिया नामक ऋद्धि तपो-विशेषसे श्रमणोंके हुआ करती है ॥१०३३-१०३४॥

१. [ पर छिदाहं ] । २. व. तह अप्यकम्मं । ३. उ. उहा अ पाकम्मं । ४. द. व. क. व.

व. उ. वसिसाहं ।

अणिमा-ऋद्धि—

अणु-सणु-करणं अणिमा, अणुक्लिष्टे पबिसिदूण तरथेव ।

बिकिरदि संवावारं, <sup>१</sup>मिस्सेसं चक्कबट्टिस्स ॥१०३५॥

अर्थ :—शरीरको अणु बराबर ( छोटा ) कर लेना अणिमा-ऋद्धि है । इस ऋद्धिके प्रभावसे महर्षि अणुके बराबर छिद्रमें प्रविष्ट होकर वहाँ ही ( विक्रिया द्वारा ) चक्रवर्तीके सम्पूर्ण कटककी रचना करता है ॥१०३५॥

महिमा, लघिमा और गरिमा-ऋद्धियाँ—

महर्षिऋद्धिः :- अणुकार्थं श्री सुविजित्वागते श्री यक्षराज

मेरुवमाण<sup>१</sup>- देहा, महिमा अणिलाउ लघुतरो लहिमा ।

वज्ज्जाहितो गुदवराणं च गरिम ति भण्णाति ॥१०३६॥

अर्थ :—शरीरको मेरु बराबर ( बड़ा ) कर लेना महिमा, वायुसे भी लघुतर ( पतला ) करनेको लघिमा और वज्रसे भी अधिक गुदता युक्त कर लेनेको गरिमा ऋद्धि कहते हैं ॥१०३६॥

प्राप्त-ऋद्धि—

भूमौए चेद्वंसी, अंगुलि - अग्गेण सुर - सत्ति - पटुवि ।

मेरु - सिहराणि अण्णं, अं पाववि पत्ति - रिद्धो सा ॥१०३७॥

अर्थ :—भूमिपर स्थित रहकर अंगुलिके अपभागसे सूर्य-चन्द्र आदिकको, मेरु-शिखरोंकी तथा अन्य भी वस्तुओंको जो प्राप्त करती है वह प्राप्ति-ऋद्धि कहलाती है ॥१०३७॥

प्राकाम्य-ऋद्धि -

सलिले वि प भूमौए, <sup>२</sup>उम्मज्ज-णिमज्जजाणि अं कुणवि ।

भूमौए वि य सलिले, गच्छवि पाकम्म - रिद्धो सा ॥१०३८॥

अर्थ :—जिस ऋद्धिके प्रभावसे ( भ्रमण ) पृथिवीपर भी जलके सदृश उम्मज्जन-निमज्जन करता है तथा जलपर भी पृथिवीके सदृश गमन करता है, वह प्राकाम्य-ऋद्धि है ॥१०३८॥

ईशत्व-वशित्व-ऋद्धि—

विस्सेताण पटुसं, अजाण ईसस - गाम - रिद्धी सा ।

वसमेति तव - वसेणं, अं जीवोहा वसिस - रिद्धी सा ॥१०३६॥

अर्थ :—जिससे सब मनुष्यों पर प्रभुत्व होता है, वह ईशत्व-नामक ऋद्धि है तथा जिससे तपो-बल द्वारा जीव-समूह वश में होते हैं, वह वशित्व ऋद्धि कही जाती है ॥१०३६॥

अप्रतिघात-ऋद्धि—

सेल-सिसा-तर-पमुहाणअंतरं<sup>१</sup> होइदुण गयरं व ।

अं वरुवदि सा रिद्धी अप्पहिणवेसि गुण - गामा ॥१०४०॥

अर्थ :—जिस ऋद्धिके बलसे शूल, सिसा और वृक्षादिकके मध्यमें होकर आकाशके सदृश गमन किया जाता है, वह सार्वक नामवाली अप्रतिघात-ऋद्धि है ॥१०४०॥

बहस्यता एवं कामरूपित्व-ऋद्धि—

अं हवदि 'अदिसस', अंतद्धाणाभिहाण - रिद्धी सा ।

अुगवं बहुवर्णाणि, ओ वियवि कामरुव - रिद्धी सा ॥१०४१॥

। विक्किरिया-रिद्धि<sup>२</sup> समत्ता ।

अर्थ :—जिस ऋद्धिसे बहस्यता प्राप्त होती है, वह अन्तर्धान-नामक ऋद्धि और जिससे गुणवत् बहुतसे रूप रचे जाते हैं, वह कामरूप-ऋद्धि है ॥१०४१॥

। विक्किया-ऋद्धि-समाप्त हुई ।

क्रिया-ऋद्धिके भेद, आकाश-गामिनी-ऋद्धिका लक्षण एवं चारण-ऋद्धिके भेद—

बुबिहा किरिया - रिद्धी, गहयल-गामिस-चारणसेहि ।

\*उद्दीप्पो आसीप्पो, काउस्सग्गेण इवरेणं ॥१०४२॥

१. ट. व. क. ज. घ. ङ. पमुहाणं अंतरं होइदुग्गि । २. व. क. ज. घ. ङ. अदिसस ।

३. व. क. ऋद्धि । ४. ट. व. उ. उद्दीप्पो, क. उन्मीप्पो ।

गच्छेवि जिए गयजे, सा रिद्धी गयस-गामिणी नामा ।

चारण - रिद्धी बह्विह - बियप्प - संबोह - बिस्परिवा ॥१०४३॥

जल-अंधा-फल-पुष्पं, पत्तमि - सिहाण धूम - मेघाणं ।

धारा-मक्कह<sup>१</sup> - तंतु - जोदी - मरुवाण चारणा कमसो ॥१०४४॥

यहाँ जल-चारण-श्रद्धि के दो भेद हैं—जल-चारण-श्रद्धि और जल-चारण-श्रद्धि । इनमें से जिस श्रद्धि के द्वारा कायोस्तरों अथवा अन्य प्रकारसे ऊर्ध्व स्थित होकर या बैठकर आकाशमें गमन किया जाता है, वह आकाश-गामिनी नामवासी श्रद्धि है । दूसरी चारण-श्रद्धि कमसः जल-चारण, जङ्घा-चारण, फल-चारण, पुष्प-चारण, पत्र-चारण, अग्निशिखा-चारण, धूम-चारण, मेघ-चारण, धारा-चारण, मक्कही-तंतु-चारण, ज्योतिश्चारण और महज्जारण इत्यादि घनेक प्रकारके विकल्प-समूहोंसे विस्तारको प्राप्त है ॥१०४३-१०४४॥

जल-चारण-श्रद्धि—

अविराहियपुकाए, जीवे पद - खेवणोहं जं जावि ।

धावेवि जलहि-मक्कहे सव्वे य जल - चारणा<sup>२</sup> - रिद्धी ॥१०४५॥

अर्थ :—जिस श्रद्धिसे जीव समुद्रके मध्यमें अर्थात् जलपर पैर रखता हुआ जाता है और दौड़ता है किन्तु जलकाधिक जीवोंकी विराचना नहीं करता वह जल-चारण-श्रद्धि है ॥१०४५॥

जङ्घाचारण-श्रद्धि—

चउरंगुल-मेस-महि, छंडिय गयणम्मि कुड्डिस-जाणु बिणा ।

जं बहु - जोयण - गमर्ण, सा अंधाचारणा रिद्धी ॥१०४६॥

अर्थ :—चार-अंगुल प्रमाण पृथिवीको छोड़कर तथा घुटनोंको मोड़े बिना जो आकाशमें बहुत योजनों पर्यन्त गमन करता है, वह जङ्घाचारण-श्रद्धि है ॥१०४६॥

फलचारण-श्रद्धि—

अविराहिण जीवे, तस्सीणे वण - फलाण विविहाणं ।

उद्धरिम्मि जं पधाववि, स बिच्च फल - चारणा रिद्धी ॥१०४७॥

**सर्ग :-** जिस ऋद्धिसे विविध-प्रकारके वन-फलोंमें रहने वाले जीवोंकी विराघना न करते हुए उनके ऊपरसे बीड़ता ( बसता ) है, वह फल-चारण-ऋद्धि है ॥१०४७॥

### पुष्पचारण-ऋद्धि—

अचिराहिबूण जीवे, तरुलीणे बहु - विहाण पुष्पाणं ।

उत्तरिस्मि जं पसप्पदि, सा रिद्धी पुष्प-चारणा नामा ॥१०४८॥

वार्ताव्यक्तिक :- अचिरात् जीवो लुप्तिवित्तमस्तु नो रक्षतस्तु

**अर्थ :-** जिस ऋद्धिके प्रभावसे बहुत प्रकारके फूलोंमें रहने वाले जीवोंकी विराघना न करके उनके ऊपरसे जाता है, वह पुष्पचारण नामक ऋद्धि है ॥१०४८॥

### पत्रचारण-ऋद्धि—

अचिराहिबूण जीवे, तरुलीणे बहु - विहाण पत्ताणं ।

या उत्तरि बच्चवि सुत्तो, सा रिद्धी पत्र-चारणा नामा ॥१०४९॥

**अर्थ :-** जिस ऋद्धिका धारक मुनि बहुत-प्रकारके पत्तोंमें रहने वाले जीवोंकी विराघना न करके उनके ऊपरसे चला जाता है वह पत्र-चारण नामक ऋद्धि है ॥१०४९॥

### अग्निशिखा-चारण ऋद्धि—

अचिराहिबूण जीवे, अग्निशिखा - संठिए विचिस्ताणं ।

जं ताण उत्तरि गमभं, अग्निशिखा - चारणा रिद्धी ॥१०५०॥

**अर्थ :-** अग्निशिखाधर्मोंमें स्थित जीवोंकी विराघना न करके उन विचित्र अग्नि-शिखाधर्मों परसे गमन करना अग्निशिखा ऋद्धि कहलाती है ॥१०५०॥

### धूम-चारण-ऋद्धि—

यह-उद्ध-तिरिय-पसरं, धूमं 'अवसंबिऊण जं वेति ।

पव - सेवे अवसलिया, सा रिद्धी धूम - चारणा नामा ॥१०५१॥

**अर्थ :—**जिस ऋद्धिके प्रभावसे मुनिजन नीचे, ऊपर और तिरछे फैलने वाले घुएँका भवसम्बन्ध लेकर अस्वस्थित ( एकसी गति ) पावक्षेप करते हुए गमन करते हैं, वह-धूम-चारण नामक ऋद्धि है ॥१०५१॥

धार्मिकार्थक - आचार्यों की उच्चैर्दिग्गमन, जहाँ अस्वस्थित

धूम-चारण-ऋद्धि—

अविराहिवृण जीके, अपुकाए बहु - विहाण मेघार्ण ।

जं उच्चरि गच्छद् मुनी, सा रिद्धी मेघ - चारणा नाम ॥१०५२॥

**अर्थ :—**जिस ऋद्धिसे मुनि अस्त्रादिक जीवोंको पीड़ा न पहुँचाकर बहुत प्रकारके मेघों परसे गमन करते हैं, वह मेघ-चारण नामक ऋद्धि है ॥१०५२॥

धारा-चारण-ऋद्धि—

अविराहिय तल्लीणे, जीवे घन-मुक्क-चारि-धाराण ।

उच्चरि जं जावि मुनी, सा धारा - चारणा रिद्धी ॥१०५३॥

**अर्थ :—**जिसके प्रभावसे मुनि मेघोंसे छोड़ी गयी जलधाराओंमें स्थित जीवोंकी विराघना न कर उनके ऊपरसे जाते हैं, वह धारा-चारण-ऋद्धि है ॥१०५३॥

मकड़ी-तन्तु-चारण-ऋद्धि—

मक्कडय-तंतु-वंतो-उच्चरि अदिसधुओ तुरिद-पद-खेवे ।

गच्छेवि मुणि - महेसी, सा मक्कड-तंतु-चारणा रिद्धी ॥१०५४॥

**अर्थ :—**जिसके द्वारा मुनि-महर्षि शीघ्रतासे किए गये पद-विशेषमें अत्यन्त लघु होते हुए, मकड़ीके तन्तुओंकी पंक्ति परसे गमन करता है वह मकड़ी तन्तु-चारण-ऋद्धि है ॥१०५४॥

ज्योतिश्चारण-ऋद्धि—

अह-उद्ध-तिरिय-पसरे, किरणे अवलंबिऊण<sup>१</sup> जोवीण ।

जं गच्छेवि तवस्सी, सा रिद्धी जोवि - चारणा नाम ॥१०५५॥



अर्थ :—जिस ऋद्धिके द्वारा तपस्वी ज्योतिषी-देवोंके विमानोंकी नीचे, ऊपर और तिरछे फैलनेवाली किरणोंका अवलम्बन लेकर गमन करता है, वह ज्योतिषचारण-ऋद्धि है ॥१०५५॥

माकल-चारण-ऋद्धि—

जायाबिह-गदि-माकल-पवेस-पंतीसु<sup>१</sup> रँति<sup>२</sup> पवसेवे ।

अं अवलसिमा मुनिजो, सा माकल - चारण - रिद्धी ॥१०५६॥

अर्थ :—जिस ऋद्धिके प्रभावसे मुनि नानाप्रकारकी गतिसे युक्त वायुके प्रदेशोंकी पंक्तियों पर अस्थित होकर पद-विक्षेप करते हैं, वह माकल-चारण-ऋद्धि है ॥१०५६॥

उपसंहार—

अण्वे विविहा - भंगा , चारण-रिद्धीए भासिवा भेदा ।

साण सक्क कहणे, उवएसी अम्ह उचिछण्णी ॥१०५७॥

एवं किरिया-रिद्धी समप्ता ।

अर्थ :—विविध भङ्गोंसे युक्त चारण-ऋद्धिके अन्य भेद भी भासित होते हैं, परन्तु उनके स्वरूपका कथन करने-वाला उपदेष्टा हमारे लिए तब ही नृका है ॥१०५७॥

। इसप्रकार क्रिया-ऋद्धि समाप्त हुई ।

तप-ऋद्धिके भेद-प्रभेद--

उगगतवा विसतवा, तसतवा तह महातवा तुरिमा ।

घोरतवा पंचमिया, घोर - परक्कम - तथा छट्ठी ॥१०५८॥

तव - रिद्धीए कहिवं, सत्तम य अघोर - बम्हचारिसं ।

उगगतवा दो भेदा, उगगोम-अवट्टि-कुग-त्तव-जात्ता ॥१०५९॥

अर्थ :—उग्रतप, दीप्ततप, तप्ततप, ( चतुर्थ ) महातप, ( पाँचवाँ ) घोरतप, ( छठा ) घोर-पराक्रमतप और ( सातवाँ ) अघोरब्रह्मचारित्व, इसप्रकार तप-श्रद्धिके ये सात भेद कहे गये हैं । इनमेंसे उग्रतप-श्रद्धिके दो भेद होते हैं—उग्रोग्रतप और अवस्थित-उग्रतप ॥१०६०-१०६१॥

उग्रोग्र-तप-श्रद्धि—

दिक्खोपवासमादि, 'कावुं' एककाहिएकपवणएण<sup>१</sup> ।

आमरणते<sup>२</sup> अवण, सा होवि उग्रोग्र - तप - रिद्धी ॥१०६०॥

अर्थ :—दीक्षोपवाससे प्रारम्भ कर मरण-पर्यन्त एक-एक अधिक उपवासको बढ़ाकर निर्वाह करना, उग्रोग्रतप-श्रद्धि है ॥१०६०॥

अवस्थित-उग्र-तप—

दिक्खोपवासमादि, कावुं<sup>३</sup> एककंतरोव वासाणि ।

कुम्माणो जिण - णिउभर - भत्ति - पससेण चित्तेण ॥१०६१॥

उपपण्ण - कारणंतर, जादे छट्ठुमादि उववासे ।

हेट्ठं<sup>४</sup> ण जावि जीए, सा होवि अवट्ठिदोग्ग-तप-रिद्धी ॥१०६२॥

अर्थ :—दीक्षार्थ एक उपवास करके ( पारणा करे और पुनः ) एक-एक दिनका अन्तर देकर उपवास करता जाए । पुनः कुछ कारण पाकर षष्ठ-भक्त, पुनः अष्टम-भक्त ( पुनः दशम-भक्त, पुनः द्वादशम-भक्त ) इत्यादि क्रमसे नीचे न गिर-कर जिनेन्द्रकी भक्ति-पूर्वक प्रसन्न-चित्तसे उत्तरोत्तर मरणपर्यन्त उपवासोंको बढ़ाते जाना अवस्थित-उग्र-तप-श्रद्धि है ॥१०६१-१०६२॥

दीप्त-तप-श्रद्धि—

बहुविह - उववासेहि, रचिसम-बड्ढंत-काय-किरणोहा ।

हाय-भण-वयण-बलिजो, जीए<sup>५</sup> सा वित्त-तप-रिद्धी ॥१०६३॥

अर्थ :—जिस श्रद्धिके प्रभावसे मन, वचन और कायसे बलिष्ठ श्रद्धिके बहुत प्रकारके उपवासों-द्वारा शरीरकी किरणोंका समूह सूर्य-सदृश बढ़ता हो वह दीप्त-तप-श्रद्धि है ॥१०६३॥

३१६ ]

तिलोपपण्णसो

[ गाथा : १०६४-१०६८

तप्त-तप-ऋद्धि—

तप्ते लोह - कडाहे, पटिवंदु - कणं व जीए भुत्तप्पं ।

भिक्षुजि धाऊहि सा, णिय - भाणाएहि तप्प - तप्पा ॥१०६४॥

अर्थ :- जोहेकी तप्त कड़ाहीमें गिरे हुए जल-कणके सदृश जिस ऋद्धिसे खाया हुआ वस्तु धातुओं सहित क्षीण हो जाता है ( मल-मूत्रादिरूप परिवर्तन नहीं करता ) वह निज ध्यानसे उत्पन्न हुई तप्त-तप-ऋद्धि है ॥१०६४॥

महातप-ऋद्धि—

मन्दरपंति - प्पमुहे, महोववासे<sup>१</sup> करेवि सव्वे वि ।

चच्च - तप्पण - बसेणं, 'जीए' सा महातप्पा रिद्धी ॥१०६५॥

अर्थ :- जिस ऋद्धिके प्रभावसे मुनि चार सम्यग्ज्ञानोंके वत्तसे मन्दर-पंक्ति-प्रमुख सब ही महान् उपवासोंको करता है, वह महातप-ऋद्धि है ॥१०६५॥

घोर-तप-ऋद्धि—

जर - सूल - प्पमुहाणं, रोगेणच्चंत-पीडि-अंगा<sup>२</sup> वि ।

साहंति दुद्धर - तव, जीए<sup>३</sup> सा घोर - तप्प - रिद्धी ॥१०६६॥

अर्थ :- जिस ऋद्धिके बलसे ज्वर एवं घृतादिक-रोगसे शरीरके अत्यन्त पीडित होने पर भी साधुजन दुद्धर-तपको सिद्ध करते हैं, वह घोर-तप-ऋद्धि है ॥१०६६॥

घोर-पराक्रम-तप-ऋद्धि -

णिववम-वड्ढंत-तप्पा, तिहुवसा-संहरण-करण-सत्ति-जुवा ।

कांटय-सिलगि-पव्वय-भूमुक्का-पहुवि - वरिसण-समत्था ॥१०६७॥

सहसं ति सयल-सायर-सलित्थुप्पोसस्स सोसण-समत्था ।

जायति जीए<sup>४</sup> मुणिणो, घोर-पराक्रम-तप्पं ति सा रिद्धी ॥१०६८॥

**अर्थ** :—जिस ऋद्धिके प्रभावसे मुनिजन अनुपम एवं वृद्धिज्ञत तप सहित, तीनों लोकोंको संहार करनेकी शक्ति युक्त; कण्टक, शिला, अग्नि, पर्वत, धुआँ तथा उल्का आदिके बरसानेमें समर्थ एवं सहसा सम्पूर्ण समुद्रके जल-समूहकी सुखानेकी शक्तिसे भी संयुक्त होते हैं, वह अघोरपराक्रम-तप-ऋद्धि है ॥१०६७-१०६८॥

अघोर-ब्रह्मचारित्व-ऋद्धि—

जीए न होंति मुनिजो, खेतन्मि बि चोर-पहुवि-बाधाओ ।

कलह - महाबुद्धावी, रिद्धी साघोर - बम्हचारिस्ता ॥१०६९॥

**अर्थ** :—जिस ऋद्धिसे मुनिके क्षेत्रमें चौरादिक बाधाएँ और कलह एवं युद्धादिक नहीं होते हैं, वह अघोरब्रह्मचारित्व ऋद्धि है ॥१०६९॥

उषकस्त - खखोवसमे, चारिचावरण - मोह - कम्मस्स ।

जा बुस्सिमणं नासइ, रिद्धी साघोर - बम्ह - चारिस्ता ॥१०७०॥

**अर्थ** :—चारित्र-निरोधक मोहकर्म ( चारित्रमोहनीय ) का उत्कृष्ट क्षयोपशम होनेपर जो ऋद्धि दुस्स्वप्नकी नष्ट करती है, वह अघोर-ब्रह्मचारित्व-ऋद्धि है ॥१०७०॥

अहवा—

सम्ब - गुमेहि अघोरं, महेसिजो बम्हसइ - चारिसं ।

विष्कुरिवाए जीए, रिद्धी साघोर - बम्ह - चारिस्ता ॥१०७१॥

। एवं तव-रिद्धी समत्ता ।

**अर्थ** :—अथवा—

जिस ऋद्धिके आविर्भूत होनेसे महाविघ्नन सब गुणोंके साथ अघोर ( अविनश्वर ) ब्रह्मचर्य का आचरण करते हैं, वह अघोर-ब्रह्मचारित्व-ऋद्धि है ॥१०७१॥

। इसप्रकार तप-ऋद्धिका कथन समाप्त हुआ ।

वस-शक्ति के भेद एवं मनोबल-शक्ति—

बल-रिद्धी ति - वियप्पा, मज्ज-वयज्ज-सरीरयान भेदेण ।

सुद - पाञ्चाङ्गरणाए, पयस्वीए ओरियन्तराम्याए ॥१०७२॥

उत्कृष्ट - स्वयंसेवक, सुदृढ - मेधांतरिम्भ सयल-सुदं ।

वित्तव आणव जीए, ता रिहो मण - बला नामा ॥१०७३॥

प्रश्न :—मन, वचन और कायके भेदसे बल-ऋद्धि तीन प्रकार की है। इनमेंसे जिस ऋद्धिके द्वारा स्मृतज्ञानावरण और बोधान्तराय, इन दो प्रकृतियोंका उत्कृष्ट क्षयोपसम होनेपर (श्रमण) मुहूर्तमात्र (अन्तर्मुहूर्त) कालमें सम्पूर्ण धृतका विनिवदन कर लेता है एवं उसे ज्ञान लेता है, वह भनोबल नामक ऋद्धि है ॥१०७२-१०७३॥

वचनबल-शक्ति--

**जिनिभविद्य - मोहोदिय-सुदणानावरण-विरिय-विगघानं ।**

उपकस्स - खड्गवसमे, सुहत्त - मेरातरस्मि सुणी ११०७४।।

सत्यत्वं पि सूत्रं ज्ञानम्, उक्त्याहम् जीए\* विष्णुरंतीए ।

<sup>२</sup>असमो अह्नीज-कंठो, सा रिद्धी वयज - बल - नामा ॥३०७५॥

अर्थ :- जिह्वेन्द्रियावरण, नोड्दन्द्रियावरण, श्रुतज्ञानावरण और वीर्यास्तरायका वस्तुष्ट  
अयोपशम होने पर जिस-श्रद्धिके प्रगट होनेसे मुनि श्रम-रहित एवं अहीन-कण्ठ ( कण्ठसे बोले बिना  
ही ) होते हुए ( अन्तर ) मुहूर्तमात्र कालके भीतर सम्पूर्ण श्रुतको जान लेते हैं एवं उसका उच्चारण  
कर लेते हैं, उसे वचन-वज्र नामक श्रद्धि जानना चाहिए ॥१०७४-१०७५॥

कायवल-नदि—

उष्णकृत्स्न - स्रवणोदसमे, पवित्रेसे विरिध-विश्व-पयडोए ।

मास-चतुर्मास-पञ्चमे, काउस्तभो वि सम - होणा ॥१०७६॥

उच्छ्रष्ट्रिय 'तेस्त्वोवकं, भस्ति कणिद्व'गुलीए अण्णस्व ।

अधिदु' जीए समत्था, सा रिद्धी काय - बल - आमा ॥१०७७॥

सारांशार्थः :- अण्णस्व' की सुविशेषताएत की महत्ताएत  
। एवं बल-रिद्धी समत्ता ।

अर्थ :- जिस ऋद्धिके बलसे वीर्यान्तराय प्रकृतिके उत्कृष्ट क्षयोपक्षमकी विशेषता होने पर मुनि भास एवं चतुर्मासादिरूप कायोत्सर्ग करते हुए भी श्रमसे रहित होते हैं तथा शीघ्रतासे तीनों लोकोंको कनिष्ठ अंगुलीके ऊपर उठाकर अन्यत्र स्थापित करनेमें समर्थ होते हैं, वह कायबल नामक ऋद्धि है ॥१०७६-१०७७॥

। इसप्रकार बल-ऋद्धिका वर्णन समाप्त हुआ ।

ओषधि-ऋद्धिके भेद—

आमरिस-खेल-अहत्वा-मल-विड-सच्चा ओसही - पत्ता ।

मुह - विट्ठि - निम्बिसाओ, अह - विहा ओसही रिद्धी ॥१०७८॥

अर्थ :- आमशौषधि, खेलाशुषधि, अलोषधि, मलाशुषधि, विडोषधि, सदाशुषधि, मुषनिविष और दृष्टिनिविष, इसप्रकार औषधिऋद्धि आठ प्रकारकी है ॥१०७८॥

आमशौषधि-ऋद्धि—

रिसि-कर-चरणाधीरं, अल्लिय-नेलम्मि जीए पासम्मि ।

जीवा होंति निरोगा, सा अमरीसोसही रिद्धी ॥१०७९॥

अर्थ :- जिस ऋद्धिके प्रभावसे ऋषिके हस्त एवं पादादिके स्पर्शसे तथा समीप आने मात्रसे ( रोगी ) जीव निरोग हो जाते हैं, वह आमशौषधि-ऋद्धि है ॥१०७९॥

खेलाशुषधि-ऋद्धि—

जीए तासासेवच्छीमत्त' - सिहाण - आबिया सिग्घं ।

जीवाण रोग - हरणा, स च्छिय खेत्तोसही रिद्धी ॥१०८०॥

अर्थ :—जिस ऋद्धिके प्रभावसे ( ऋद्धिके ) लार, कफ, मलमस, और नासिकामल योघ्न ही जीवोंके रोगोंको नष्ट करते हैं, वह जलोषधि-ऋद्धि है ॥१०८०॥

जलोषधि-ऋद्धि—

सेयजलं घृगण्यं, जलं भण्णंति जोए सेरावि ।

जीवाण रोग - हरणं, रिद्धी जल्लोसही एमा ॥१०८१॥

अर्थ :—स्वेदजल ( पसीना ) के आश्रित ( उत्पन्न होने वाला ) शरीरका ( भक्षण ) मल जल कहा जाता है । जिस ऋद्धिके प्रभावसे उस भक्षणसे भी जीवोंके रोग नष्ट होते हैं, वह जलोषधि-ऋद्धि है ॥१०८१॥

मलोषधि-ऋद्धि—

जीहोदु - बंत - एमासा - सोसावि-मलं पि जोए सत्तोए ।

जीवाण रोग - हरणं, मलोसही नाम सा रिद्धी ॥१०८२॥

अर्थ :—जिस ऋद्धिके प्रभावसे जिह्वा, ओठ, दाँत, नासिका और श्रोत्रादिकका मल भी जीवोंके रोगोंको दूर करनेवाला होता है वह मलोषधि नामक ऋद्धि है ॥१०८२॥

विडोषधि-ऋद्धि—

मुत्ता-पुरीसो वि पुडं, वाक्ख-बहुजोव-वाहि-संहरणा ।

जोए महामुणीणं, विडोसही नाम सा रिद्धी ॥१०८३॥

अर्थ :—जिस ऋद्धिके प्रभावसे महामुनियोंका मूत्र एवं विष्टा भी जीवोंके बहुत भयानक रोगोंको नष्ट करनेवाला होता है, वह विडोषधि नामक ऋद्धि है ॥१०८३॥

गवीषधि-ऋद्धि —

जोए पत्त-अलाणिल-रोम-महावीणि<sup>१</sup> वाहि - हरणाणि ।

कुक्कर - सब - कुशाणं, रिद्धी सज्जोसही नामा ॥१०८४॥

अर्थ :—जिस ऋद्धिके प्रभावसे दुष्कर तपसे युक्त भुक्तियों द्वारा स्पर्श किया हुआ जल एवं वायु तथा उनके रोग और नस आदि भी व्याधिके हरनेवाले हो जाते हैं, वह सर्वोषधि नामक ऋद्धि है ॥१०८४॥

### वचननिविष-ऋद्धि—

तिसावि-विविह-मध्वा, विसजुत्त<sup>१</sup> जोए वयण-भरीण<sup>२</sup> ।  
पावेवि निखिसत्तां<sup>३</sup>, सा रिद्धी वयण-निखिसा नामा ॥१०८५॥

अर्थ :—जिस ऋद्धिके प्रभावसे तिसादिक रस एवं विष संयुक्त विविध-प्रकारका अन्न ( भोजन ) वचनमात्रसे ही निविष हो जाता है, वह वचननिविष नामक ऋद्धि है ॥१०८५॥

अहवा बहुवाहीहि, परिभूवा भसि<sup>४</sup> होंति जीरोगा ।  
सोहु<sup>५</sup> वयण जोए, सा रिद्धी वयण - निखिसा नामा ॥१०८६॥

अर्थ :—यद्यपि जिस ऋद्धिके प्रभावसे बहुत-व्याधियोंसे युक्त जीव ( ऋषिके ) वचन सुनकर ही शीघ्र भीरोग हो जाते हैं, वह वचन-निविष नामक ऋद्धि है ॥१०८६॥

### दृष्टिनिविष-ऋद्धि—

रोग - विसेहि पहवा, विट्टोए जोए भसि<sup>६</sup> पावंति ।  
जीरोग-निखिसत्तां, सा भणिवा विट्टि-निखिसा रिद्धी ॥१०८७॥

### । एषमोसहि-रिद्धी समाप्ता ।

अर्थ :—जिस ऋद्धिके प्रभावसे रोग एवं विषसे युक्त जीव ( ऋषिके ) देखने मात्रसे शीघ्र ही नीरोगता एवं निविषताको प्राप्त करते हैं, वह दृष्टिनिविष-ऋद्धि कही गई है ॥१०८७॥

। इसप्रकार औषधि-ऋद्धिका कथन समाप्त हुआ ।

### रस-ऋद्धिके भेद—

छासेया रस - रिद्धी, भासी-विट्टी-विसा य वो<sup>७</sup> तेसु<sup>८</sup> ।  
खीर -<sup>९</sup>महु - अमिय - सप्पोसबिओ चचारि होंति कामे ॥१०८८॥

१. द. व. क. ज. घ. उ. निखिसत्तां । २. द. व. य. ज. वि । ३. द. व. क. ज. य. उ. यवा ।



**अर्थ :**—आशोविष और दृष्टिविष तथा क्षीरसूत्री, मधुशुक्ली, अमृतसूत्री एवं सविन्नवी ऐसे दो तथा चार क्रमशः रस-ऋद्धिके छद्म भेद होते हैं ॥१०८८॥

**आशोविष-ऋद्धि—**

आशोविषं च आशोविषं जी सुविषिणस्तथा जी सुविषिणं

मर इति भणिते जीवो, मरेद्द सहस च जीए सस्तीए ।

कुषकर-तव-भुव-मुणिना, आसीवित्त-नाम-रिद्धी सा ॥१०८९॥

**अर्थ :**—जिस ऋद्धिके प्रभावसे दुष्कर-तप युक्त मुनिके द्वारा 'मर जाओ' इसप्रकार कहने पर जीव सहसा मर जाता है, वह आशोविष नामक ऋद्धि है ॥१०८९॥

**दृष्टिविष-ऋद्धि—**

जीए जीओ विद्वो, महेसिणो रोस - भरिय - हिवरण ।

अहि - वद्वो न सरिञ्जदि, विट्टिविसा नास सा रिद्धी ॥१०९०॥

**अर्थ :**—जिस ऋद्धिके प्रभावसे रोष युक्त हृदयवासे महर्षि द्वारा देखा गया जीव सर्प द्वारा काटे गयेके सदृश मर जाता है वह दृष्टिविष नामक ऋद्धि है ॥१०९०॥

**क्षीरसूत्री-ऋद्धि—**

करयल - निविक्खसाणं<sup>१</sup>, इक्खआहारादियानि<sup>२</sup> तत्कालं ।

पायंति खीर - नायं, जीए खीरोसवी रिद्धी ॥१०९१॥

**अर्थ :**—जिससे हस्ततल पर रखे हुए रखे आहारादिक तत्काल ही दुग्ध-परिणामको प्राप्त हो जाते हैं, वह क्षीरसूत्री-ऋद्धि है ॥१०९१॥

अहथा बुक्खप्पहुवी, जीए मुणि - धयण - सबण<sup>३</sup>-सेत्तेयं ।

पससदि णर - तिरियाणं, स जिय खीरासवी रिद्धी ॥१०९२॥

**अर्थ :**—अथवा, जिस ऋद्धिसे मुनियोंके वचनोंके श्रवणमात्रसे ही मनुष्य-तियों<sup>४</sup>के दुःखादिक शान्त हो जाते हैं, उसे क्षीरसूत्री-ऋद्धि समझना चाहिए ॥१०९२॥

## मधुसूत्री-ऋद्धि—

प्राप्यतिष्ठति :— अथवा ही सुविधितयागते जी श्रुतमात्र

मुनि-कर-निमित्तसाधि, रक्ताहारावियाणि ह्येति सन्ने ।

जीए मधुर - रसाङ्ग, स विषय मधुयासवी रिद्धी ॥१०६३॥

अर्थ :—जिस ऋद्धिसे मुनिके हाथमें रहे गये रुखे आहारादिक अणुभरमें मधुर-रससे युक्त हो जाते हैं, वह मधुसूत्री ऋद्धि है ॥१०६३॥

अथवा बुक्ख - प्यह्वी, जीए मुनि-वयण-सवण-मेत्तेणं ।

नासति जर - तिरियाणं, स विषय 'मधुयासवी रिद्धी ॥१०६४॥

अर्थ :—अथवा, जिस ऋद्धिसे मुनिके वक्त्रोंके अवयवमात्रसे मनुष्य-तिर्यञ्चोंके दुःखादिक नष्ट हो जाते हैं, वह मधुसूत्री ऋद्धि है ॥१०६४॥

## अमृतसूत्री-ऋद्धि—

मुनि-याणि-संठियाणि, रक्ताहारावियाणि जीअ<sup>१</sup> सन्ने ।

पावेति अमिय - भाव, एसा अमियासवी रिद्धी ॥१०६५॥

अर्थ :—जिस ऋद्धिके प्रभावसे मुनियोंके हाथमें स्थित रुखे आहार आदिक, अणुमात्रमें अमृतपनेको प्राप्त होते हैं, वह अमृतसूत्री ऋद्धि है ॥१०६५॥

अथवा बुक्खावीणि, महेसि-वयणस सवण-कालम्मि<sup>२</sup> ।

नासंति जीए सिग्घं, सा रिद्धी अमिय-आसवी नामा ॥१०६६॥

अर्थ :—अथवा, जिस ऋद्धिके वक्त्र सुवनेमात्रसे ( अवयवकालमें ) शीघ्र ही दुःखादिक नष्ट हो जाते हैं, वह अमृतसूत्री नामक ऋद्धि है ॥१०६६॥

## सपिसूत्री-ऋद्धि—

रिसि-वाणितस<sup>३</sup>-णिहत्तां, रक्ताहारावियं पि सवण-मेत्ते ।

पावेति सप्पिक्खं, जीए सा सप्पियासवी रिद्धी ॥१०६७॥

अर्थ :—जिस ऋद्धिसे ऋषिके हस्ततलमें निक्षिप्त रुखा आहारादिक भी अणुमात्रमें धृतरूपताको प्राप्त करता है, वह सपिसूत्री ऋद्धि है ॥१०६७॥

अहवा बुधस-प्यमुहं, सवणेन मुनिव-दिग्द-वयनस्स ।  
उवसारमवि जीवाणं, जीए सऱ सप्पियासवी रिद्धी ॥१०६८॥

। एवं रस-रिद्धी समप्ता ।

अर्थ :—अथवा, जिस ऋद्धिके प्रभावसे मुनीन्द्रके दिव्य वचनोंके सुननेसे ही जीवोंके दुःखादिक शान्त हो जाते हैं, वह सर्पिन्त्रवी-ऋद्धि है ॥१०६८॥

। इसप्रकार रस-ऋद्धिकी वर्णना समाप्त हुई ।

क्षेत्र-ऋद्धिके भेद—

तिहुवण-विम्भय-जणणा, वो भेवा होंति सेत-रिद्धीए ।  
अक्खीण - महाणसिया, अक्खीण-महालयया व जायेन ॥१०६९॥

पार्ष्वार्थिक :- अक्खीण अर्थात् सुविशिष्टतायुक्त जीवों के लक्षण

अर्थ :—त्रिभुवनको विस्मित करनेवाली क्षेत्र-ऋद्धिके दो भेद हैं, अक्षीणमहानसिक और अक्षीणमहालय ॥१०६९॥

अक्षीणमहानसिक-ऋद्धि—

लाहंताराय-कम्मकक्षोवसम-संजुवाए जीअ फुडं ।  
मुणि-भुत्त-सेसमण्णं, याविय-मउभम्मि एवकं पि ॥११००॥  
तट्ठिसे सउअंतं, खंधावारेण ववकवट्ठिस्स ।  
भिरउज्झ न लवेण वि सा, अक्खीण-महाणसा रिद्धी ॥११०१॥

अर्थ :—लाभान्तरायकर्मके अयोपशमसे संयुक्त जिस ऋद्धिके प्रभावसे मुनिके आहारोप-रान्त घासीके मध्य बची हुई भोज्य सामग्रीमेंसे एक भी वस्तुको यदि उस दिन चक्रवर्तीका सम्पूर्ण कटक भी खावे तो भी वह लेवामत्र क्षीण नहीं होता है, वह अक्षीण-महानसिक ऋद्धि है ॥११००-११०१॥

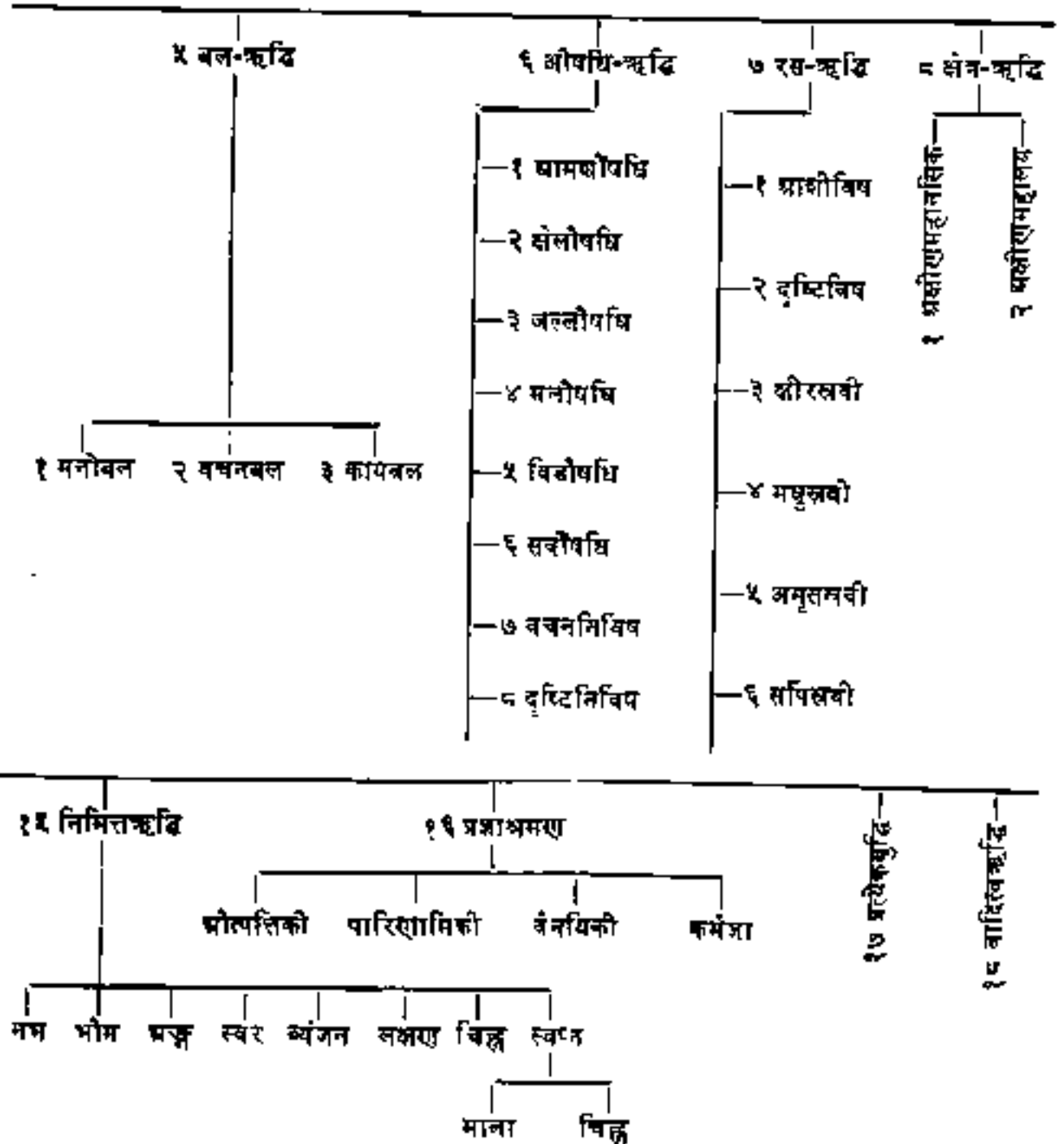
१. व. क. उ. मुणि-भुत्त-सेसेसुमण्णदामकउ विमं कं पि ।

ज. य. मुणिकुत्त-सेसेमण्ण " " " ।

व. मुणिकुत्त-सेसेमण्ण " " " ।







ऋषियोंकी संख्या—

एतौ<sup>१</sup> उर्वरि रिसि-संखं<sup>२</sup> भगिस्सामि—

अउसीवि-सहस्साणि, रिसि-प्पमाणं हवेवि उतह-जिणे ।

इगि-धु-ति-सक्खा, कमसो अजिय-जिणे संभवम्मि चंदणए ॥११०३॥

उत्त ८४००० । अजि १ ल । संभव २ ल । अमि ३ ल ।

अर्थ :—यहाँसे आगे अब ऋषियोंकी संख्या कहता हूँ—

ऋषियोंका प्रमाण ऋषभ-जिनेन्द्रके समयमें चौरासी हजार तथा अजितनाथ, सम्भवनाथ एवं अभिनन्दननाथके समयमें क्रमशः एक लाख, दो लाख और तीन लाख था ॥११०३॥

बोस-सहस्स-धुवाहं, लक्खाहं तिण्णि सुमइ-वेदम्मि ।

तीस-लक्खाहं<sup>३</sup> सुविधिजिणे<sup>४</sup> सुविधिजिणे<sup>५</sup> सक्खाणि ॥११०४॥

सुमइ ३२०००० । पउम ३३०००० ।

अर्थ :—सुमतिनाथके समयमें ऋषियोंका प्रमाण तीन लाख, बीस हजार और पचप्रभके समयमें तीन लाख, तीस हजार था ॥११०४॥

तिण्णि सुपासे चंदप्पह-वेवे बोणि अउ-संजुत्ता ।

सुविहि-जिणिवम्मि कुवे, सीयलणाहम्मि इगि-लक्खं ॥११०५॥

सुपास ३ ल । चंद २५०००० । पुप्फ २ ल । सीय १ ल ।

अर्थ :—ऋषियोंकी संख्याका प्रमाण सुपार्ष्वनाथस्वामीके समयमें तीन लाख, चन्द्रप्रभ-देवके अढ़ाई लाख, सुविधिजिनेन्द्रके दो लाख और शीतलनाथके एक लाख था ॥११०५॥

अउसीवि - सहस्साहं, सेयंसे वासुपुज्ज - गाहम्मि ।

बावसरि अउसहो, विमले छावट्टिया अजंतम्मि ॥११०६॥

से ८४००० । वा ७२००० । विम ६८००० । अणं ६६००० ।

अर्थ :—श्रेयांस जिनेन्द्रके समयमें ऋषियोंका प्रमाण चौरासी हजार, वासुपुज्यस्वामीके बहसर हजार, विमलनाथके अड़सठ हजार और अनन्तनाथके छयासठ हजार था ॥११०६॥

**धम्मस्मि संति-कुंशू-अर-मल्लोसुं कमा सहस्ताणि ।**

**चउसट्ठी वासट्ठी, सट्ठी पञ्चास चात्तीसा ॥११०७॥**

धम्म ६४००० । सं ६२००० । कुं ६०००० । अर ४०००० । मल्लो ३०००० ।

अर्थ :—धर्मनाथ, शान्तिनाथ, कुन्शुनाथ, अरनाथ और मल्लिनाथ तीर्थंकरके समयमें ऋषियोंकी संख्याका प्रमाण क्रमशः चौसठहजार, बासठहजार, साठहजार, पचासहजार और चात्तीस हजार था ॥११०७॥

**सुध्वद-भमि-णेमीसुं, कम्मसो पासम्मि वड्ढमाणम्मि ।**

**तीस वोसट्ठारस, सोमस-बोहस' - सहस्ताणि ॥११०८॥**

सु ३०००० । रा २०००० । भेमि १८००० । पास १६००० । वीर १४००० ।

अर्थ :—मुनिसुवत, भमिनाथ, नेमिनाथ, पाश्चंनाथ और वर्धमान स्वामीके समयमें ऋषियोंका प्रमाण क्रमशः तीस हजार, बीस हजार, अठारह हजार, सोलह हजार और चौदह हजार था ॥११०८॥

प्रत्येक तीर्थंकरके सात गणोंके नाम—

**पुब्बधर-सिक्ख-ग्रोही-केवलि-वेउड्ढि-विउलमदि-वादी ।**

**परोक्कं सस-गणा, सट्ठाणं तिरथ - कत्तारं ॥११०९॥**

अर्थ :—सब तीर्थंकरोंमेंसे प्रत्येक ( तीर्थंकर ) के पूर्वधर, सिक्ख, अवधिज्ञानी, केवली, विक्रिया-ऋद्धिधारी, विपुलमति एवं वादी इसप्रकार ये सात संघ होते हैं ॥११०९॥

ऋषभ-तीर्थंकरके गणोंकी संख्या—

**चत्थारि सहस्सा सग - सयाइ - पञ्चास पुब्बधर-संत्ता ।**

**सिक्खण - संत्ता स च्चिय, छत्सय ऊणी कवं चत्थरि ॥१११०॥**

उसह पुब्ब ४७५० । सिक्ख ४१५० ।

अर्थ :—ऋषभ जिनेन्द्रके सात गणोंमेंसे पूर्वधरोंकी संख्या चार हजार सातसौ पचास थी । शिक्षकोंकी संख्या भी यही थी परन्तु इसमेंसे छहसौ कम थे, इतनी यहाँ विशेषता है ॥१११०॥



नव - बीस - सहस्राणि, कमेण ओहीण केवलीणं पि ।

वेगुब्बीण सहस्सा, बीसण्विय छत्तयकभहिया ॥११११॥

अर्थ :- आठसौ ओं तुल्यविहाराण ओं अष्टादश  
ओ ६००० के २०००० के २०६०० ।

अर्थ :- ऋषभजिनेन्द्रके कथनः अविज्ञानी नौ हजार, केवली बीस हजार और विख्या-  
धारी छहसौ अधिक बीस हजार थे ॥११११॥

विउलमबीणं बारस - सहस्सया सय - सयाइ पण्णासा ।

वादीण तत्तियं विय, एवे उसहम्मि सत्त - गणा ॥१११२॥

वि १२७५० । वा १२७५० ।

अर्थ :- विपुलमति बारह हजार सातसौ पचास थे और वादी श्री इतने ही थे । इसप्रकार  
ऋषभदेवके ये सात गण थे ॥१११२॥

अजिस जिनेन्द्रके सात गणोंका प्रमाण—

ति-सहस्सा सत्त-सया, पण्णा-अजिय-पहुम्मि पुब्बधरा ।

इगिबीस - सहस्साणि, सिक्खकया छत्तयाइं पि ॥१११३॥

पु ३७५० । सि २१६०० ।

चउजउवि-सया ओही, बीस-सहस्साणि होंति केवस्सिणो ।

वेगुब्बीण सहस्सा, बीस सयाणि पि चत्तारि ॥१११४॥

ओ ६४०० । के २०००० । वे २०४०० ।

विउलमबीओ बारस, सहस्सया चउ - सयाइ पण्णासा ।

वादीण सहस्साइं, बारस चत्तारि च सयाणि ॥१११५॥

वि १२४५० । वा १२४०० ।

अर्थ :—अजितप्रभुके सत्त गणोंमेंसे पूर्वघर तीन हजार सातसौ पचास, शिक्षक इक्कीस हजार छह सौ, अवधिजानी नौ हजार चारसौ, केवली बीस हजार, विक्रिया-ऋद्धि धारक बीस हजार चारसौ, विपुलमति बारह हजार चारसौ पचास और बादी बारह हजार चारसौ थे ॥१११३-१११५॥

सम्भवनाथके गणोंकी संख्या—

पुष्पधरा पञ्जाहिय-इगिबीस-सयाणि संभव-जिणम्मि ।

उणत्तीस - सहस्साइ', इगिसक्खं सिक्खणा ति - सया ॥१११६॥

। पु २१५० । सि १२६३०० ।

अणउवि-सया ओही, केवल्लिणो पणरस-सहस्साणि ।

उणत्तीस - सहस्साइ', वेगुखिय ऋड - सयाणि वि ॥१११७॥

अर्थ :—आचार्य श्री सुप्रियसिंहजी महाराज  
श्री ६६०० । केवल्लि १५००० । वे १६००० ।

होति सहस्सा बारस, पञ्जाहियभिगि-सयं च विउलमवी ।

अवकेण य गुभिवारिण, बोण्णि सहस्साणि वादि - गणा ॥१११८॥

। वि १२१५० । वादि १२०००० ।

अर्थ :—सम्भवजिनेन्द्रके सत्त गणोंमेंसे पूर्वघर दो हजार एक सौ पचास, शिक्षक एक लाख उनतीस हजार तीन सौ, अवधिजानी नौ हजार छह सौ, केवल्लो पन्द्रह हजार, विक्रियाऋद्धि धारक उन्नीस हजार आठसौ, विपुलमति बारह हजार एकसौ पचास और वादि-गण छहसे गुणित दो हजार अर्थात् बारह हजार थे ॥१११६-१११८॥

अभिनन्दननाथके गणोंकी संख्या—

पंचसयमहियाइं, बोण्णि सहस्साइ होति पुब्बधरा ।

दो सिक्खग-लक्काइं, तीस-सहस्साइ पञ्जासा ॥१११९॥

। पु २५०० । सि २३००५० ।

अणउवि-सया ओही, केवल्लिणो विगुण-ऋड-सहस्साणि ।

वेगुखि - सहस्साइं, बहंति एककूण - बीसाणि ॥११२०॥

। श्री ६००० । के १६००० । वे १६००० ।

इगिबीस-सहस्साहं, पण्णाहिय-सुसयाणि विउलभदी ।

एककं चेय सहस्सा, वादी अभिज्जणे वेवे ॥११२१॥

। वि २१६५० । वा १००० ।

अर्थ :—अभिज्जण जेनेन्द्रके सात गणोंमेंसे पूर्वघर दो हजार पांच सौ, शिक्षक दो लाख-तीस हजार पचास, अवधिजानी नौ हजार आठ सौ, केवली पुणे आठ (सालह) हजार, विक्रिया-अद्धिधारक एक कम बीस (उभोस) हजार, विपुलमति इक्कीस हजार छहसौ पचास और वादी केवल एक हजार ही थे ॥१११६-११२१॥

सुमतिनाथके गणोंकी संख्या--

दोणिण सहस्सा जउ-सय, जुत्ता सुमदि-प्यकुन्मि पुस्वधरा ।

अद्धाहउजं लक्ख्वा, सेवान-सयाह सिक्खगा पण्णा ॥११२२॥

पुस्व २४०० । सि २५४३५० ।

एककरस-तेरसाहं, कमे' सहस्साणि ओहि-केवलिणो ।

अट्टरस-सहस्साहं, चत्तारि सयाणि वेगुल्लो ॥११२३॥

ओ ११००० । के १३००० । वे १८४००

विउलभदी य सहस्सा, वस-संखा जउसएहि संजुत्ता ।

पण्णास-जुद-सहस्सा, वस जउ-सय-अहिय वादिगणा ॥११२४॥

। वि १०४०० । वा १०४५० ।

अर्थ :—सुमतिजनेन्द्रके सात गणोंमेंसे पूर्वघर दो हजार चार सौ, शिक्षक दो लाख चौवनहजार तीन सौ पचास, अवधिजानी ग्यारह हजार, केवली तेरह हजार, विक्रिया-अद्धि धारक एक लाख बीस बीस हजार, विपुलमति दस हजार चार सौ और वादी दस हजार चार सौ पचास थे ॥११२२-११२४॥

पथप्रभजिनेन्द्रके सात गणोंकी संख्या—

बोष्णि सहस्त्रा ति-सया, पुन्वधरा सिक्खया बुबे लक्खा ।  
ऊनसरि सहस्त्रा, ओहि-मया वस-सहस्त्राणि ॥११२५॥

पुन्व २३०० । ति २६६००० । ओ १०००० ।

चउरंक'-ताडिदाह', तिष्णि सहस्त्राणि होंति केवलियो ।  
अट्ट - सएहि जुत्ता, वेगुखी सोलस - सहस्त्रा ॥११२६॥

। के १२००० । वे १६८०० ।

विगुणा पंच-सहस्त्रा, तिष्णि सयाह' हवन्ति विजलमयो ।  
छाविय - णउवि - सयाह', वादी षडमप्पहे वेवे ॥११२७॥

। वि १०३०० । वा ६६०० ।

अर्थ :- पथप्रभजिनेन्द्रके सात गणोंमेंसे पूर्वधर दो हजार तीन सौ, शिक्षक दो लाख उनहत्तर हजार, प्रवधिजानी दस हजार, केवली चारसे गुणित तीन हजार (चारह हजार), विक्रिया-अट्टिके धारक सोलह हजार आठ सौ, विपुलमति पांच हजारके दुगुणे ( दस हजार ) तीन सौ और वादी नौ हजार छह सौ वे ॥११२५-११२७॥

सुपाख्वजिनेन्द्रके सात गणोंकी संख्या—

पुन्वधरा तीसाहिय-बोष्णि-सहस्त्रा हवन्ति सिक्खगणा ।  
बोबाल सहस्त्राणि, दो लक्खा णव-सया दोस ॥११२८॥

। पु २०३० । नि २४४६२० ।

णव य सहस्त्रा ओही, केवलियो एक्करस - सहस्त्राणि ।  
तेवण्ण - सयम्भहिधा, वेगुखी वस सहस्त्राणि ॥११२९॥

। ओ ६००० । के ११००० । वे १४३०० ।

एकचत्वारिंश - सयाइं पुष्पासा - संजवाइ विजलमवि ।

अद्द सहस्सा छस्सय - सहिया वादी सुपास - जिणे ॥११३०॥

वि ६१५० । वा ८६०० ।

अर्थ :- सुपासवज्जिनेन्द्रके सात गणोंमेंसे पूर्वधर दो हजार तीस, शिक्षकगण दो लाख चत्वारिंश हजार नौ सौ बीस, अवधिज्ञानी नौ हजार, केवली म्यारह हजार, चिकिया-ऋद्धिधारक त्रिरेपन सौ अधिक दस हजार ( पन्द्रह हजार तीन सौ ), विपुलमति नौ हजार एकसौ पचास और वादी आठ हजार छहसौ थे ॥११२८-११३०॥

चन्द्रप्रभके सात गणोंकी संख्या—

चत्वारि सहस्साइं, देवे चंध्यहम्मि पुष्पधरा ।

सो-लक्ख - दस - सहस्सा, चत्वारि सयाइं सिक्खगणा ॥११३१॥

। पु ४००० । सि २१०४०० ।

वे अद्दुरस सहस्सा, छब्ब सया अद्द सग सहस्साइं ।

कम्मसो ओही केवल्लि - वेउज्जी - विजलमवि - वादी ॥११३२॥

सो २००० । के १८००० । वे ६०० । वि ८००० । वा ७००० ॥

अर्थ :- चन्द्रप्रभ जिनेन्द्रके सात गणोंमेंसे पूर्वधर चार हजार, शिक्षकगण दो लाख दस हजार चारसौ और अवधिज्ञानी, केवली, चिकियाधारी, विपुलमति तथा वादी क्रमशः दो हजार, अठारह हजार, छहसौ, आठ हजार और सात हजार थे ॥११३१-११३२॥

पुष्पदन्तके सात गणोंकी संख्या—

ति-गुणिय-पंच-सयाइं, पुष्पधरा सिक्खयाइं इगि-लक्खा ।

पणवण - सहस्साइं, अब्भहियाइं पण - सएहि ॥११३३॥

पु १५०० । सि १५५५०० ।

अउसोवि-सया ओही, केवल्लिणो सग-सहस्स-पंच-सया ।

एह-सुण्य-सुण्य-तिव-इगि-अंक-कमेणं पि वेगुज्जी ॥११३४॥

ओ ८४०० । के ७५०० । वे १३००० ।

सग-संख-सहस्त्राणि, जुताणि पण-सएहि विजलमवी ।

आवाहु सया वावी, बेवे सिरिपुण्फवंतम्मि ॥११३५॥

वि ७५०० । वा ६६०० ।

अर्थ :—श्री पुण्यदन्तके सात गणोंमेंसे पूर्वधर पाँचसौके तिगुने ( पन्द्रहसौ ), शिक्षक एक लाख पचपन हजार पाँचसौ, अवधिजानी आठ हजार चारसौ, केवली सात हजार पाँच सौ, विक्रिया-कृद्विधारी क्रमशः शून्य, शून्य, शून्य तीन और एक अंक ( तेरह हजार ) प्रमाण, विपुलमति सात हजार पाँचसौ और वादी छह हजार छहसौ थे ॥११३५-११३५॥

शीतलनाथके सात गणोंकी संख्या—

एक - सहस्त्रं चउ-सय-संजुत्तं सीयलम्मि पुण्यधरा ।

उणसहि - सहस्त्राहं, वेण्णि सया सिक्खणा होत्ति ॥११३६॥

पु १४०० । सि ५६२०० ।

दु-सय-जुव-सग-सहस्त्रा सत्त-सहस्त्राणि ओहि केवल्लो ।

चउरंक्क - ताडिवाणि, तिण्णि सहस्त्राणि वेणुब्धी ॥११३७॥

ओ ७२०० । के ७००० । वे १२००० ।

सत्त-सहस्त्राणि पुढं, जुताणि पण - सवेहि विजलमवी ।

सत्तावण्ण सयाहं, वावी सिरिसीयलेमम्मि ॥११३८॥

वि ७५०० । वा ५७०० ।

अर्थ :—श्रीशीतलनाथस्वामीके सात गणोंमेंसे पूर्वधर एक हजार चारसौ, शिक्षक उनसठ हजार दो सौ, अवधिजानी सात हजार दो सौ, केवली सात हजार, विक्रियाकृद्विधारी चारसे गुणित तीन ( अर्थात् बारह ) हजार, विपुलमति सात हजार पाँच सौ और वादी पाँच हजार सात सौ थे ॥११३६-११३८॥

श्रीगोस-जिनेन्द्रके सात गणोंका प्रमाण—

एकं चय सहस्त्रा, संजुत्ता तिय-सएहि पुण्यधरा ।

अडवाल-सहस्त्राहं, दो-सय-जुताह सिक्खणा ॥११३९॥

पु १३०० । सि ४८२०० ।

छ-सहस्साहं ओही, केवलिजो छस्सहस्स-पंच-सया ।  
एककारस-मेत्ताणि, होति सहस्साणि वेगुब्बी ॥११४०॥

ओ ६००० । के ६५०० । वे ११००० ।

वे-कव-ताडिदाहं, तिज्जि सहस्साह तह य विजलमवी ।  
पण - गुणिद - सहस्साहं, वादी सेयंस - देवम्मि ॥११४१॥

वि ६००० । वा ५००० ।

अर्थ :—येयांसजिनेन्द्रके सात गणोंमेंसे पूर्वघर एक हजार तीनसौ, शिक्षक अड़तालीस हजार दो सौ, अवधिज्ञानी छह हजार, केवली छह हजार पांचसौ, विप्रिया-श्रद्धिधारी ग्यारह हजार, विपुलमति दोसे गुणित तीन ( छह ) हजार तथा वादी पांच हजार थे ॥११३९-११४१॥

वासुपूज्यदेवके सात गणोंका प्रमाण—

एककं चैव सहस्सा, संजुत्ता दो-सएहि पुव्वघरा ।  
उणदास-सहस्साणि, वोण्णि सम्यणि वि सिक्खगणा ॥११४२॥

पु १२०० । सि ३६२०० ।

पंच-सहस्सा अउ-सय-जुत्ता ओही हवति केवलिजो ।  
छब्बेव सहस्साणि, वेगुब्बी वस सहस्साहं ॥११४३॥

ओ ५४०० । के ६००० । वे १०००० ।

छब्बेव सहस्साणि, वत्तारि सहस्सया य कु-सय-जुवा ।  
विजलमवी वादीओ, कमसो सिरि - वासुपूज्य - जिने ॥११४४॥

वि ६००० । वा ४२०० ।

अर्थ :—श्री वासुपूज्य जिनेन्द्रके सात गणोंमेंसे पूर्वघर एक हजार दो सौ, शिक्षकगण उनतालीस हजार दो सौ, अवधिज्ञानी पांच हजार चार सौ, केवली छह हजार, विप्रिया-श्रद्धिधारी दस हजार, विपुलमति छह हजार और वादी चार हजार दो सौ थे ॥११४२-११४४॥

विमल-जिनेन्द्रके सात गणोंकी संख्या—

एक - सएणअभिरिय, एक - सहस्सं हवंति पुब्बघरा ।

अट्ठसीस सहस्सा, पण-सय-सज्जिवा, य विमल - गण ॥११४५॥

। पुब्ब ११०० । ति ३८५०० ।

अट्ठवाल - सय ओही, केवलिनो पण - सएण जुत्ताणि ।

पण - संख - सहस्साणि, वेगुब्बो णव सहस्साणि ॥११४६॥

ओ ४८०० । के ५५०० । वि ६००० ।

पंच - सहस्साणि पुब्ब, जुत्ताणि पण-सएहि विटलमवो ।

तिणि सहस्सा छस्सय - सहिवा वादी विमलदेवे ॥११४७॥

वि ५५०० । वा ३६०० ।

अर्थ :—विमलनाथ तीर्थंकरके सात गणोंमेंसे पूर्वघर एक हजार एक सौ, शिक्षकगण अट्ठसीस हजार पांच सौ, अवधिज्ञानी चार हजार आठसौ, केवली पांच हजार पांच सौ, विज्रिया-ऋद्धिके धारी नौ हजार, विपुलमति पांच हजार पांच सौ और वादी तीन-हजार छहसौ थे ॥११४५-११४७॥

अनन्तनाथके सात गणोंका प्रमाण—

एकं चैव सहस्सा, पुब्बघरा सिक्खणा य पंच-सया ।

अट्ठवाल सहस्साणि, ओही तेवाल - सय - संखा ॥११४८॥

पु १००० । ति ३६५०० । ओ ४३०० ।

पंचहु-पण - सहस्सा, केवलि-वेगुब्बि-विटलमवि-तिवए ।

तिणि सहस्सा वे - सय - जुत्ताणि वादी अणंत - जिणे ॥११४९॥

के ५००० । वे ८००० । वि ५००० । वा ३२०० ।

अर्थ :—अनन्तनाथ जिनेन्द्रके सात गणोंमेंसे पूर्वघर एक हजार, शिक्षक अट्ठसीस हजार पांच सौ, अवधिज्ञानी चार हजार तीन सौ, केवली पांच हजार, विज्रिया ऋद्धिधारी आठ हजार, विपुलमति पांच हजार और वादी तीन हजार दो सौ थे ॥११४८-११४९॥



धर्मनाथके सात गणोंका प्रमाण—

नव पुण्यधर-सयाह, चास-सहस्साह सग-सया-सिक्का ।  
छत्तीस - सया ओही, पणवास - सयाणि केवलिणी ॥११५०॥

पु ६०० । सि ४०७०० । ओ ३६०० । के ४५०० ।

वेगुण्वि सग-सहस्सा, पणवास-सयाणि होंति बिउलमवी ।  
अट्ठावीस - सयाणि, वादी सिरिधम्म - तामिम्मि ॥११५१॥

वे ७००० । सि ४५०० । वा २८०० ।

अर्थ :—धर्मनाथ स्वामीके सात गणोंमेंसे पूर्वधर नौ सौ, शिक्षक चालीस हजार सात सौ, अवधिजानी छत्तीस सौ, केवली चार हजार पाँच सौ, विख्या-ऋद्धिधारी सात हजार, विपुलमति चार हजार पाँच सौ तथा वादी दो हजार आठ सौ थे ॥११५०-११५१॥

शान्तिनाथके सात गणोंका प्रमाण—

अट्ठ-सया पुण्यधरा, इगिवास-सहस्स-अट्ठ-सया सिक्का ।  
तिण्णि सहस्सा ओही, केवलिणी अट्ठ - सहस्साणि ॥११५२॥

पु ८०० । सि ४१८०० । ओ ३००० । के ४००० ।

वेगुण्वि अट्ठसहस्सा, अट्ठारि - सहस्सयाणि बिउलमवा ।  
दोण्णि सहस्सा अट्ठ - सय - जुता संतीसरे वादी ॥११५३॥

वे ६००० । सि ४००० । वा २४०० ।

अर्थ :—शान्तिनाथके सात गणोंमेंसे पूर्वधर आठ सौ, शिक्षक इकतालीस हजार आठ सौ, धवधिजानी तीन हजार, केवली चार हजार, विख्या-ऋद्धिधारी छह हजार, विपुलमति चार हजार और वादी दो हजार चार सौ थे ॥११५२-११५३॥

गणेशाय नमः । अथ गणेशाय नमः । अथ गणेशाय नमः ।

कुन्धुनाथके सात गणोंके प्रमाण—

सप्त सयानि सेव य, पुण्यधरा होंति सिक्कमा य सहा ।

तेवाल - सहस्साह, पण्णासकभहियमेक - सय ॥११५४॥

। पु ७०० । सि ४३१५० ।

पण्नीस सया ओही, असीस-सयानि होंति केवलियो ।

एक - सयकभहियानि, पण - सहस्साणि वेगुव्वी ॥११५५॥

ओ २५०० । के ३२०० । वे ५१०० ।

ति-सहस्सा तिणि सया, पण्णासकभहिया होंति बिउलमवी ।

वोणि सहस्सानि पुढ, आवी सिरि - कुन्धुणाहम्मि ॥११५६॥

वि ३३५० । वा २००० ।

अर्थ :— कुन्धुनाथ स्वामीके सात गणोंमेंसे पुण्यधर सातसौ, सिक्क तंतासीस हजार एक सौ पचास, अवधिमानी दो हजार पाँच सौ, केवली तीन हजार दो सौ, विक्रिया-वृद्धिधारी पाँच हजार एकसौ, विपुलमति तीन हजार तीन सौ पचास तथा वादी दो हजार थे ॥११५४-११५६॥

अर-जिनेन्द्रके सात गणोंका प्रमाण—

दस-अहिय छस्सयाह, पुण्यधरा होंति सिक्कमा सबया ।

पण्नीस - सहस्साणि, अक - सय - जूसानि पण्नीस ॥११५७॥

पु ६१० । सि ३५२३५ ।

अट्ठावीस सयानि, ओहीओ तेत्तियाणि केवलियो ।

अस्तारि सहस्सानि, ति - सयकभहियानि वेगुव्वी ॥११५८॥

। ओ २५०० । के २५०० । वे ४३०० ।

पणपण्णासकभहियानि, दोणि सहस्साह होंति बिउलमवी ।

एक - सहस्सं छस्सय - संजुत्तं अर - जिणे वादी ॥११५९॥

वि २०५५ । वा १६०० ।

अर्थ :—अरनाथ जिनेन्द्रके सात गणोंमेंसे पूर्वधर छहसौ दस, शिक्षक-अमण पैंतीस हजार आठ सौ पैंतीस, अवधिज्ञानी दो हजार आठ सौ, इतने ही केवली, विज्या-कटिधारी चार हजार तीन सौ, विपुलमति दो हजार पचपन और वादी एक हजार छह सौ थे ॥११५७-११५९॥

मल्लिजिनेन्द्रके सात गणोंका प्रमाण—

पञ्चासव्यहियाणि, पंच - सयाणि ह्वंसि पुण्यधरा ।

एकवीसति - संख्ये, सिकलगाणा एकवीसति सहस्सं य ॥११६०॥

। पु ५५० । सि २६००० ।

आवीस-सया ओहो, तैसिय-मेसा य होंति केवलिनो ।

पच-सय-अव्यहियाश्च<sup>१</sup>, बोणि सहस्साणि वेगुव्वी ॥११६१॥

। ओ २२०० । के २२०० । वे २६०० ।

एक-सहस्सा सग-सय-सहिवं पञ्चा म होंति विपुलमती ।

चउसय - जुवं सहस्सं, वादी सिरि - मल्लिणाहम्मि ॥११६२॥

। वि १७५० । वा १४०० ।

अर्थ :—श्रीमल्लिनाथके सात गणोंमेंसे पूर्वधर पांचसौ पचास, शिक्षक-अमण एक कम सौस अर्थात् उनतीस हजार, अवधिज्ञानी दो हजार दो सौ, इतने ही केवली, विज्या-कटिधारी दो हजार नौ सौ, विपुलमति एक हजार सातसौ पचास और वादी एक हजार चार सौ थे ॥११६०-११६२॥

मुनिमुप्रतनाथके सात गणोंकी संख्या—

पंच-सया पुण्यधरा, सिकलगाणा एकवीसति सहस्सा ।

अउ<sup>२</sup>- सय - जुवं सहस्सं, ओहो तं वेव केवलिनो ॥११६३॥

पु ५०० । सि २१००० । ओ १८०० । के १८०० ।

बाबोसं पण्णारस, 'बारस कमसो सयाणि बेठब्बी ।  
विठलमदी बाबोओ, सुब्बययाहम्मि जिणणाहे ॥११६४॥

। वे २२०० । वि १५०० । वा १२०० ।

अर्थ :—मुनिसुव्रत-जिनेन्द्रके सात गणोंमेंसे पूर्वधर पाँचसौ, शिक्षक इक्कीस हजार, अवधि-  
ज्ञानी एक हजार आठ सौ, केवली भी इतने ही, विक्रिया-ऋद्धिधारी बाईससौ, विपुलमति पन्द्रहसौ  
तथा बादी बारह सौ थे ॥११६३-११६४॥

६३) ६४) ६५) ६६) ६७) ६८) ६९) ७०) ७१) ७२) ७३) ७४) ७५) ७६) ७७) ७८) ७९) ८०) ८१) ८२) ८३) ८४) ८५) ८६) ८७) ८८) ८९) ९०) ९१) ९२) ९३) ९४) ९५) ९६) ९७) ९८) ९९) १००)

वस्तारि सया पण्णा, पुब्बधरा सिक्खया सहस्साइ ।  
'बारस छ-सय-जुवाइ', ओही सोलस-सयाणि जमिणाहे ॥११६५॥

पु ४५० । सि १२६०० । ओ १६०० ।

ताइ' चिय केवत्तिणो, पण्णारस-सयाइ' होति बेगुब्बी ।  
बारस सयाइ पण्णा, विठलमदी दस - सया बावी ॥११६६॥

के १६०० । वे १५०० । वि १२५० । वा १००० ।

अर्थ :—नमितायके सात गणोंमेंसे पूर्वधर चारसौ पचास, शिक्षक बारह हजार छह सौ,  
अवधिज्ञानी सोलह सौ, केवली भी सोलह सौ, विक्रिया-ऋद्धिधारी पन्द्रहसौ, विपुलमति बारह सौ  
पचास और बादी एक हजार थे ॥११६५-११६६॥

नेमितायके सात गणोंका प्रमाण—

बौस-कबी पुब्बधरा, एक्करस-सहस्स-अड-सया सिक्खा ।  
पण्णारस - सया ओही, तेजिय - मेसा य केवत्तिणो ॥११६७॥

पु ४०० । सि ११८०० । ओ १५०० । के १५०० ।

इति-सम-बुधं सहस्रं, वेगुब्बो भव सयाणि विटलमधी ।  
अहं सयाहं वाधी, तिहुबध - सामिम्मि जेमिम्मि ॥११६८॥

वे ११०० । वि ९०० । वा ८०० ।

अर्थ :—ब्रह्मोक्त स्वामी श्री नेमिनाथके सात गणोंमेंसे पूर्वधर बीसके वर्ग ( चार सौ ) प्रमाण, शिक्षक प्यारह हजार आठ सौ, अवधितानी पन्द्रहसौ केवली भी इतने ही, विजिया-अद्विधारी एक हजार एक सौ, विपुसर्गति सात सौ और वाधी सहस्र सौ है ॥११६८॥

पादर्व-जिनेन्द्रके सात गणोंका प्रमाण—

तिम्मि सयाणि पण्णा, पुव्वधरा सिक्खणा सहस्रानि ।  
वहं नम-सम-बुत्ताणि, ओहि - मुणी चोहस-सयाणि ॥११६९॥

पु ३५० । सि १०६०० । ओ १४०० ।

इस-धन-केवलताणी, वेगुब्बो तेसिधं पि विटलमधी ।  
सस - सयाणि पण्णा, पास - जिने छस्सया वाधी ॥११७०॥

के १००० । वे १००० । वि ७५० । वा ६०० ।

अर्थ :—पादर्व-जिनेन्द्रके सात गणोंमेंसे पूर्वधर तीससौ पचास, शिक्षक दस हजार नी सौ, अवधितानी मुनि चौदह सौ, केवली दसके धन ( अर्थात् एक हजार ) प्रमाण, इतने ही विजिया-अद्विधारी, विपुसर्गति सातसौ पचास और वाधी छह सौ है ॥११६९-११७०॥

वर्धमान जिनके सात गणोंका प्रमाण—

ति-सयाहं पुव्वधरा, नम-वउवि-सयाहं होंति सिक्खणा ।  
तेरस - सयाणि ओही, सस - सयाहं पि केवलिनो ॥११७१॥

पु ३०० । सि ६६०० । ओ १३०० । के ७०० ।

गाथा : ११७२-११७५ ]

पठत्यो महाहियारो

[ १४३ ]

दृगि-सय-रहिब-सहस्सं, वेगुब्धी पण-सयावि बिउलमदी ।

चत्तारि - सया बाबी, गण - संज्ञा बद्धमान - जिने ॥११७२॥

वे ६०० । वि ५०० । वा ४०० ।

अर्थ :- वर्धमान जिनेन्द्रके सात गणोंमेंसे पूर्वधर तीन सौ, शिक्षकगण नौ हजार नौ सौ, अवधिज्ञानी तेरह सौ, केवली सात सौ, विजिया-श्रद्धि-धारी सौ कम एक हजार ( नौ सौ ), विपुल-मति पाँचसौ और बाबी चार सौ थे ॥११७१-११७२॥

सर्व तीर्थंकरोंके सातों गणोंमेंसे प्रत्येक की कुल-संख्या—

जम-चउ-जम-छक्क-तिथं, पुब्बधरा सज्ज-तिथ-कसाणं ।

पण-पंच-पण-गभा जम-जम-दुग-अंककमेण सिक्कगणा ॥११७३॥

सज्ज-पुब्बधरांक-कमेण आगिज्जइ ३६६४० ।

सज्ज सि २०००५५५ ।

अर्थ :- सर्व तीर्थंकरोंके शून्य, चार, सौ, छह और तीन इतने ( ३६६४० ) अक्षु प्रमाण पूर्वधर तथा पाँच, पाँच, पाँच, शून्य, शून्य, शून्य और दो इतने ( २०००५५५ ) अक्षुप्रमाण शिक्षक-गण थे ॥११७३॥

गयणंबर-छत्तसस-दु-एक्का सज्जे वि ओहि-जाणीओ ।

केवलजाणी सज्जे, गयणंबर - अट्ट - पंच - अट्टेक्का ॥११७४॥

सज्ज-ओही १२७६०० । सज्ज-के १८५८०० ।

अर्थ :- सर्व अवधिज्ञानी शून्य, शून्य, छह, सात, दो और एक इतने ( १२७६०० ) अक्षु-प्रमाण; तथा सर्व केवली शून्य, शून्य, आठ, पाँच, आठ और एक इतने ( १८५८०० ) अक्षु-प्रमाण थे ॥११७४॥

आयास-जम-'जवं पण-दु-दु-अंक-कमेण सज्ज-वेगुब्धी ।

पंचंबर-जजय-अठ्ठ-पणसेक्कं सिय सज्ज - बिउलमदी ॥११७५॥

सज्ज-वे २२५६०० । सज्ज-वि १५४६०५ ।

३४४ ]

तिलोपपद्यन्ते

[ गीता : ११७६ ]

अर्थ :—सर्व विक्रिया-वृद्धि-घाती अङ्क-क्रमसे शून्य, शून्य, नौ, पाँच, दो और दो ( २२५६०० ) अंक-प्रमाण; तथा सर्व विपुलमति पाँच, शून्य, नौ, चार, पाँच और एक ( १५४२०१ ) अङ्क-प्रमाण थे ॥११७५॥

अभ-अभ-ति-छ-एककेषकं, अंक-क्रमे ह्येति सव्य-वावि-गणा ।

सप्तगणा अभ - अक्षर - गयचतु - सप्तक-अष्ट-शेषिणि ॥११७६॥

सव्य-वादिगणा ११६३०० । सव्य-गणा २८४८००० ।

अर्थ :—सर्व वादी अङ्क-क्रमसे शून्य, शून्य, तीन, छह एक और एक ( ११६३०० ) अङ्क-प्रमाण थे । इन सातों गणोंकी सम्पूर्ण संख्या शून्य, शून्य, शून्य, आठ, चार, आठ और दो इन ( २८४८००० ) अङ्कों-प्रमाण होती है ॥११७६॥

नोट :—११०३ से ११७६ अर्थात् ७४ गाथाओंकी मूल-संरक्षितिका अर्थ इस तालिकामें निहित है—

( तालिका २८ अगले पृष्ठ पर देखिये )

तालिका : २८

सालों गलों का पृथक्-पृथक् एवं एकजित (कृषिगणों का) प्रसारण ११०६-११७६

| क्र० | पूर्वधर | शिलक    | अवधिजानी | कैवली  | विक्रिया० | विपुलमति | वादी    | कृषिगण  |
|------|---------|---------|----------|--------|-----------|----------|---------|---------|
| १    | ४७५०+   | ४१५०+   | ६०००+    | २००००+ | २०६००+    | १२७५०+   | १२७५०=  | ६४०००   |
| २    | ३७५०    | २१६००   | ६४००     | २००००  | २०४००     | १२४५०    | १२४००=  | १०००००  |
| ३    | २२५०    | १९६३००  | ६६००     | १५०००  | १६५००     | १२१५०    | १२०००=  | २०००००  |
| ४    | २५००    | २३००५०  | ६८००     | १६०००  | १६०००     | २३६५०    | १०००=   | ३०००००  |
| ५    | २४००    | २५४३५०  | ११०००    | १३०००  | १८४००     | १०४००    | १०४५०=  | ३२००००  |
| ६    | २३००    | २६६०००  | १००००    | १२०००  | १६८००     | १०३००    | ६६००=   | ३३००००  |
| ७    | २०३०    | २४४६२०  | ६०००     | ११०००  | १५३००     | ६१५०     | ८६००=   | ३०००००  |
| ८    | ४०००    | २१०४००  | २०००     | १८०००  | ६००       | ८०००     | ७०००=   | २५००००  |
| ९    | १५००    | १५५५००  | ८४००     | ७५००   | १३०००     | ७५००     | ६६००=   | २०००००  |
| १०   | १४००    | ५६२००   | ७२००     | ७०००   | १२०००     | ७५००     | ५७००=   | १०००००  |
| ११   | १३००    | ४८२००   | ६०००     | ६५००   | ११०००     | ६०००     | ५०००=   | ८४०००   |
| १२   | १२००    | ३६२००   | ५४००     | ६०००   | १००००     | ६०००     | ४२००=   | ७२०००   |
| १३   | ११००    | ३८५००   | ४८००     | ५५००   | ९०००      | ५५००     | ३६००=   | ६८०००   |
| १४   | १०००    | ३६५००   | ४३००     | ५०००   | ८०००      | ५०००     | ३२००=   | ६६०००   |
| १५   | ९००     | ४०७००   | ३६००     | ४५००   | ७०००      | ४५००     | २८००=   | ६४०००   |
| १६   | ८००     | ४१८००   | ३०००     | ४०००   | ६०००      | ४०००     | २४००=   | ६२०००   |
| १७   | ७००     | ४३१५०   | २५००     | ३२००   | ५१००      | ३३५०     | २०००=   | ६००००   |
| १८   | ६१०     | ३५८३५   | २८००     | २८००   | ४३००      | २०५०     | १६००=   | ५००००   |
| १९   | ५५०     | २६०००   | २२००     | २२००   | २९००      | १७५०     | १४००=   | ४००००   |
| २०   | ५००     | २१०००   | १८००     | १८००   | २२००      | १५००     | १२००=   | ३००००   |
| २१   | ४५०     | १२६००   | १६००     | १६००   | १५००      | १२५०     | १०००=   | २००००   |
| २२   | ४००     | ११८००   | १५००     | १५००   | ११००      | ९००      | ८००=    | १८०००   |
| २३   | ३५०     | १०६००   | १४००     | १०००   | १०००      | ७५०      | ६००=    | १६०००   |
| २४   | ३००     | ९६००    | १३००     | ७००    | ९००       | ५००      | ४००=    | १४०००   |
|      | ३६६४०   | २०००५५५ | १२७६००   | १८५८०० | २२५६००    | १५४९०५   | ११६३००= | २८४८००० |



ऋषभादि तीर्थंकरोंकी आर्थिकाओंका प्रमाण—

पञ्चास-सहस्राणि, सप्तसाणि तिष्णि उत्तह - चाहुस्स ।

अजियस्स तिष्णि सप्तसा, बीस - सहस्राणि बिरदीओ ॥११७७॥

३५०००० । ३२००००

अर्थ :—ऋषभादिनेन्द्रके तीर्थमें तीन लाख पचास हजार ( ३५०००० ) और अजितनाथ के तीर्थमें तीन लाख बीस हजार ( ३२०००० ) आर्थिकाएँ थीं ॥११७७॥

तीस - सहस्सन्महिया, तिय-सप्तसा संभवस्स तित्थम्मि ।

बिरदीओ तिष्णि सप्तसा, तीस-सहस्राणि छ-सय तुरियम्मि ॥११७८॥

आर्थिकताः :- अजितनाथ के तीर्थमें ३३०००० सहस्राणि सप्तसा

अर्थ :—सम्भवनाथके तीर्थमें तीन लाख तीस हजार ( ३३०००० ) एवं चतुर्थ अजितनाथनाथके तीर्थमें तीन लाख तीस हजार छह सौ ( ३३०६०० ) आर्थिकाएँ थीं ॥११७८॥

तीस-सहस्सन्महिया, सुमइ-जिजिबस्स तिष्णि सप्तसाइ ।

बिरदीओ छ-सप्तसा, बीस-सहस्राणि यठमपह-वाहे ॥११७९॥

३३०००० । ४२०००० ।

अर्थ :—सुमतिजिनेन्द्रके तीर्थमें तीन लाख तीस हजार ( ३३०००० ) और पद्मप्रभके तीर्थमें चार लाख बीस हजार ( ४२०००० ) आर्थिकाएँ थीं ॥११७९॥

तीस - सहस्सा तिष्णि य, सप्तसा तित्थे सुपासवेजस्स ।

अवपहे' तिय - सप्तसा, बीस - सहस्राणि बिरदीओ ॥११८०॥

३३०००० । ३८०००० ।

अर्थ :—सुपासर्वाजिनेन्द्रके तीर्थमें तीन लाख तीस हजार ( ३३०००० ) और चन्द्रप्रभके तीर्थमें तीन लाख अस्सी हजार ( ३८०००० ) आर्थिकाएँ थीं ॥११८०॥

ताहं चिय पसेवकं, सुविहि-जिनेसम्मि सीयल-जिणिदे ।

तीस - सहस्सकम्महियं, लक्खं सेयंसवेवम्मि ॥११८१॥

३८०००० । ३८०००० । १३०००० ।

अर्थ :- सुविधि और सीयल जिनेन्द्रमेंसे प्रत्येकके तीर्थमें उसनी ही ( तीन लाख अस्सी हजार ) तथा श्रेयांस जिनेन्द्रके तीर्थमें एक लाख तीस हजार ( १३०००० ) आयिकाएँ थीं ॥११८१॥

विरबीउ वासुपुज्जे, इगि-लक्खं होंति छस्सहस्साणि ।

इगि-लक्खं ति - सहस्सा, विरबीओ विमल - देवस्स ॥११८२॥

१०६००० । १०३००० ।

अर्थ :- वासुपूज्य स्वामीके तीर्थमें एक लाख छह हजार ( १०६००० ) और विमलदेवके तीर्थमें एक लाख तीन हजार ( १०३००० ) आयिकाएँ थीं ॥११८२॥

अट्ठ-सहस्सकम्महियं, अनन्त-सामिस्स होंति इमि-लक्खं ।

आसट्ठि - सहस्साणि<sup>१</sup>, अस्तारि सयानि अम्मणाहस्स ॥११८३॥

१०८००० । ६२४०० ।

अर्थ :- अनन्तनाथ स्वामीके तीर्थमें एक लाख आठ हजार ( १०८००० ) और अम्मनाथके तीर्थमें आसठ हजार चार सौ ( ६२४०० ) आयिकाएँ थीं ॥११८३॥

सट्ठि-सहस्सा ति-सयकम्महिया संतो-सत्तिट्ठ-विरबीओ ।

सट्ठि - सहस्सा ति - सया, पण्णासा कुंभुदेवस्स ॥११८४॥

६०३०० । ६०३५० ।

अर्थ :- शान्तिनाथके तीर्थमें साठ हजार तीन सौ ( ६०३०० ) और कुम्भुजिनेन्द्रके तीर्थमें साठ हजार तीन सौ पचास ( ६०३५० ) आयिकाएँ थीं ॥११८४॥

अर-जिण-वरिद-तिट्ठे, सट्ठि-सहस्साणि होंति विरबीओ ।

पणवण्ण - सहस्साणि, मत्ति - जिनेसस्य तित्थम्मि ॥११८५॥

६०००० । ५५००० ।

३४८ ]

तिलोपपञ्चाली

[ गाथा : ११८६-११८८

अर्थ :- भरजिनेन्द्रके तीर्थमें साठ हजार ( ६०००० ) और मल्ल जिनेन्द्रके तीर्थमें पचपन हजार ( ५५००० ) आधिकार्य थीं ॥११८५॥

पञ्चास - सहस्राणि, विरवीओ सुध्वयस्स तित्थम्भि ।

पंच - सहस्सभहिया, चास - सहस्सा नमि - जिणस्स ॥११८६॥

५०००० । ५५००० ।

अर्थ :- मुनिसुव्रतके तीर्थमें पचास हजार ( ५०००० ) और नमि जिनेन्द्रके तीर्थमें पचास हजार अधिक चालीस ( पैंतासीस ) हजार ( ५५००० ) आधिकार्य थीं ॥११८६॥

द्विगुणिय-ओस-सहस्सा, नेमिस्स कमेण पास-वीराणं ।

अइतीसं छत्तीसं, होंति सहस्साणि विरवीओ ॥११८७॥

४०००० । ३८००० । ३६००० ।

अर्थ :- नेमिनाथके तीर्थमें द्विगुण ओस ( चालीस ) हजार ( ४०००० ) और पार्श्वनाथ एवं वीर जिनेशके तीर्थमें क्रमशः अइतीस हजार ( ३८००० ) एवं छत्तीस हजार ( ३६००० ) आधिकार्य थीं ॥११८७॥

आधिकार्योकी कुल संख्या—

अभ-पण-बु-छ-पंचंबर - पंचक - कमेण तित्थ - कत्ताणं ।

सव्वार्ण विरवीओ, चंबुज्जल - निवकलंक - सीलाओ ॥११८८॥

। ५०५६२५० ।

अर्थ :- सर्व तीर्थंकरोंके तीर्थमें चन्द्र सदृश उज्ज्वल एवं निष्कलङ्क सीलसे संयुक्त समस्त आधिकार्य क्रमशः शून्य, पांच, दो, छह, पांच, शून्य और पांच ( ५०५६२५० ) अंक प्रमाण थीं ॥११८८॥

प्रमुख आर्थिकाओंके नाम—

बन्धुपुत्रज<sup>१</sup> - जाना, चम्पसिरी मेरसेन - अयणंता ।  
 तह रतिसेना<sup>२</sup> भीणा, बहना घोसा य धरणा य ॥११८६॥  
 चारण - वरसेनाग्रो, यम्मा<sup>३</sup> - सव्यस्ति-सुव्यबाग्रो वि ।  
 हरिसेना - भाविनाग्रो, कुंघू - मधुसेन - पुष्पवंताग्रो ॥११८७॥  
 मगिणि-जविस्स-सुलोया, चवण-गामाग्रो उसह-महुदीनं ।  
 एवा पदम - एणीग्रो, एक्केक्का सव्यविरदीग्रो ॥११८८॥

अर्थ :—१ ब्राह्मी, २ प्रकुन्वा ( कुन्वा ), ३ धर्मश्री ( धर्मार्थी ), ४ मेरसेना, ५ अनन्ता ( अनन्तमती ), ६ रतिसेना, ७ भीना ( भीनार्थी ), ८ बहना, ९ घोसा ( घोषार्थी ), १० धरणा, ११ चारणा ( चारणा ), १२ वरसेना ( सेना ), १३ यम्मा, १४ सर्वश्री, १५ सुवता, १६ हरिसेना, १७ भाविता, १८ कुन्धुसेना ( यक्षिता ), १९ मधुसेना ( मधुसेना ), २० पुष्पदन्ता ( पूर्वदन्ता ), २१ मगिणी ( मगिनी ), २२ यक्षिणी ( राजमती ), २३ सुलोका ( सुलोचना ) एवं २४ चन्दना नामक एक-एक आर्थिका क्रमशः ऋषभादिकके तीर्थमें रहने वाली आर्थिकाओंके समूहमें प्रमुख थीं ॥११८६-११८८॥

श्रावकोंकी संख्या—

लक्खणि तिण्णि सावय - संता उसहादि-अहु-तिस्सेसु ।  
 पसेक्कं वो लक्खा, सुविह्वह्वीसु<sup>१</sup> अहु - तिस्सेसु ॥११८९॥

। ८ । ३००००० । २००००० ।

एक्केकं<sup>२</sup> चिय लक्खं, कुंघू-जिणिदादि-अहु-तिस्सेसु ।  
 सवधान सावयानं, मिलिबे अज्झाल - लक्खाणि ॥११९३॥

८ । १००००० । ४००००००<sup>३</sup> ।

१ द. ब. क. ज. य. उ. कुम्भ । २ द. क. ज. य. उ. सामा । ३ द. ब. क. ज. य. उ. यम्मा-  
 वलत्ससुव्यबाग्रो वि । ४ द. क. ज. य. उ. सुविह्वह्वीसु । ५ द. ब. क. ज. य. एक्केकं । ६ द. उ.  
 ८४००००० ।

**अर्थ :**—आवकोंकी संख्या ऋष्यभादिक आठ तीर्थंकरोंमेंसे प्रत्येकके तीर्थमें तीन-तीन लाख और सुविधिनाथ प्रभृति आठ तीर्थंकरोंमेंसे प्रत्येकके तीर्थमें दो-दो लाख थी। कुम्भ्युनायादि आठ तीर्थंकरोंमेंसे प्रत्येकके तीर्थमें आवकोंकी संख्या एक-एक लाख कही गई है। सर्व आवकोंकी संख्याकी मिला देनेपर समस्त प्रमाण अड़तालीस लाख होता है ॥११६२-११६३॥

**आविकाओंकी संख्या—**

पण - ऋष - तिम - लक्ष्माई, 'पण्णाविहाहुहु - तित्थेसु' ।

पुह पुह सावणि - संजा, सज्जा सज्जाउवि - लक्ष्माई ॥११६४॥

। ५००००० । ४००००० । ३००००० । ६६००००० ।

**अर्थ :**—आठ-आठ तीर्थंकरोंमेंसे प्रत्येकके तीर्थमें आविकाओंकी पृथक्-पृथक् संख्या क्रमशः पाँच लाख, चार लाख और तीन लाख तथा ( आविकाओं की ) सम्पूर्ण संख्या छयानबे लाख कही गई है ॥११६४॥

**प्रत्येक तीर्थमें देव-देवियों तथा अन्य मनुष्यों एवं तिर्यग्योंकी संख्या—**

*आविकाविक्रि :— आविकाविक्रि जी सुतेविहारापर जी सुतेराज*

बेदी - बेव - समूहा, संजासीवा हवन्ति गर - तिरिया ।

संसेज्जा 'एक्केवके, तित्थे विहरन्ति भस्सि - जुत्ता' ॥११६५॥

**अर्थ :**—प्रत्येक तीर्थंकरके तीर्थमें असंख्यात देव-देवियोंके समूह एवं संख्यात मनुष्य और तिर्यक् जीव भक्तिते संयुक्त होते हुए विहार किया करते हैं ॥११६५॥

ऋष्यभादि तीर्थंकरोंके मुक्त होनेकी तिथि, काम, नक्षत्र और सह-मुक्त

जीवोंकी संख्याका निर्देश—

माघस्स किण्ह-ओइसि-पुण्वणे णियय-जम्म-णक्खत्ते ।

अट्ठावयम्मि उसहो, अजुवेण समं गमो मोक्खत्ते ॥११६६॥

१००००

**अर्थ :**—ऋष्यभदेव भाघ-कृष्णा चतुर्दशीके पूर्वाह्णमें अपने जन्म ( उत्तराषाढा ) नक्षत्रके रहते कैलासपर्वतसे दस हजार मुनिराजोंके साथ मोक्षको प्राप्त हुए ॥११६६॥

१. द. व. क. ज. घ. ङ. पण्णिविरा । २. एक्केवको । ३. व. उ. पुत्तो, द. व. जुत्तो, य. क. जुत्ता । ४. द. व. क. ज. ङ. जोमि । ५. जम्मि ।

चेतस्त सुक्क-सत्तमि, पुम्भण्हे जम्म - भम्मि सम्मेदे ।

सम्मेदे अजियजिणो, मुत्ति पत्तो सहस्स - सयं ॥११६७॥

१०००

वर्ण :—अजित जिनेन्द्र चैत्र-शुक्ला पंचमीके पूर्वाह्णमें भरणी नक्षत्रके रहते सम्मेदशिक्षरसे एक हजार मुनियोंके साथ मुक्तिको प्राप्त हुए ॥११६७॥

चेतस्त सुक्क - छट्ठी - अघरण्हे जम्म - भम्मि सम्मेदे ।

संपत्तो अयवगं, संभवसामी सहस्स - जुदो<sup>१</sup> ॥११६८॥

१००० ।

वर्ण :—सम्भवनाथ स्वामी चैत्र-शुक्ला षष्ठीके अपराह्णमें जन्म ( ज्येष्ठा ) नक्षत्रके रहते सम्मेदशिक्षरसे एक हजार मुनियोंके साथ मोक्षको प्राप्त हुए हैं ॥११६८॥

वइसाह-सुक्क-सत्तमि, पुम्भण्हे जम्म - भम्मि सम्मेदे ।

वस-सय - महस्सि - सहिबो, अणवेवो<sup>२</sup> गवो मोक्खं ॥११६९॥

। १००० ।

वर्ण :—अभिनन्दन देव वैशाख-शुक्ला सप्तमीके पूर्वाह्णमें अपने जन्म ( पुनर्वसु ) नक्षत्रके रहते सम्मेदशिक्षरसे एक हजार महर्षियोंके साथ मोक्षको प्राप्त हुए ॥११६९॥

चेतस्त सुक्क - वसमी - पुव्वण्हे जम्म - भम्मि सम्मेदे ।

वस - सय - रिसि - संजुत्तो<sup>३</sup>, सुमई निज्जाजमावण्णो ॥१२००॥

१०००

वर्ण :—सुमतिजिनेन्द्र चैत्र-शुक्ला दसमीके पूर्वाह्णमें अपने जन्म ( मघा ) नक्षत्रके रहते सम्मेदशिक्षरसे एक हजार ऋषियोंके साथ निर्वाणको प्राप्त हुए ॥१२००॥

१. द. व. क. ज. उ. मुत्ति पत्ता । २. द. व. ज. उ. जुदा । ३. द. व. क. ज. उ. वेवा ।

४. द. व. ज. उ. संजुत्ता ।

कलगुण-किण्ह-चउटवी-अबरण्हे जम्म - भम्मि सम्मेवे ।

चउटवीसाहिय - तिय - सय - सहिदो पउमप्पहो देवो ॥१२०१॥

३२४

अर्थ :- पद्मप्रभदेव फाल्गुन-कृष्ण पक्षकी अपराह्णमें अपने जन्म ( विना ) नक्षत्रके रहते सम्मेदशिखरसे तीनसौ चौबीस मुनियोंके साथ मुक्तिको प्राप्त हुए हैं ॥१२०१॥

कलगुण - बहुलकष्टुदी - पुव्वण्हे पम्पडम्मि सम्मेवे ।

अणुराहाए पण - सय - खुत्तो' मुत्तो सुपास - जिणो ॥१२०२॥

। ५०० ।

अर्थ :- सुपाश्वजिनेन्द्र फाल्गुन-कृष्ण पक्षकी पूर्वाह्णमें अनुराधा नक्षत्रके रहते सम्मेद-पर्वतसे पचासो मुनियों सहित मुक्तिको प्राप्त हुए हैं ॥१२०२॥

सिद-सत्तमि-पुव्वण्हे, भद्वपदे भुणि सहस्स - 'संजुत्तो ।

जेट्ठेसु' सम्मेवे, चंडप्पह - जिणवरो सिद्धो ॥१२०३॥

१००० ।

अर्थ :- चन्द्रप्रभ-जिनेन्द्र भाद्रपद-शुक्ला सप्तमीके पूर्वाह्णमें ज्येष्ठा नक्षत्रके रहते एक हजार मुनियों सहित सम्मेदशिखरसे मुक्त हुए हैं ॥१२०३॥

अस्सब्बुद-सुक्क-अट्ठमि-अबरण्हे जम्म - भम्मि सम्मेवे ।

अणुवर-सहस्स-साहिबो, सिद्धि - गबो पुप्फवंत - जिणो ॥१२०४॥

१००० ।

अर्थ :- पुष्पदन्त जिनेन्द्र आश्विन-शुक्ला अष्टमीके अपराह्णमें अपने जन्म ( मूल ) नक्षत्र के रहते सम्मेदशिखरसे एक हजार मुनियोंके साथ सिद्धिको प्राप्त हुए हैं ॥१२०४॥

कणिय - सुक्के पंचमि - पुव्वण्हे जम्म-भम्मि सम्मेवे ।

जिण्णानं संपत्तो, सीयलवेवो सहस्स - खुवो ॥१२०५॥

१००० ।

अर्थ :—शोतसनाथ जिनेन्द्र कार्तिक-शुक्ला पंचमीके पूर्वाह्णमें अपने जन्म ( पूर्वाषाढा ) नक्षत्रके रहते सम्मेदशिवरसे एक हजार मुनियोंके साथ निर्वाणको प्राप्त हुए हैं ॥१२०५॥

साधनय-पुष्पिमाए<sup>१</sup>, पुष्पण्हे मुनि - सहस्स - संजुसो ।  
सम्मेदे सेयंसो, सिद्धि पत्तो धनिदुसु<sup>२</sup> ॥१२०६॥

। १००० ।

अर्थ :—भगवन्मूर्ध्निशनाथ अम्बरदुर्गमुक्थो पुष्पिमाके पूर्वाह्णमें धनिदुसु नक्षत्रके रहते सम्मेदशिवरसे एक हजार मुनियोंके साथ सिद्धिको प्राप्त हुए हैं ॥१२०६॥

फग्गुण - बहुले पंचमि - अवरण्हे अस्सिणीसु चंपाए ।  
कम्पाहिय-छ-सय-जुवो<sup>१</sup> सिद्धि - गहो वासुपुज्ज-विणो ॥१२०७॥

। ६०१ ।

अर्थ :—वासुपूज्य जिनेन्द्र फाल्गुन-कृष्णा पंचमीके दिन अपराह्णमें अस्विनी नक्षत्रके रहते छहसौ एक मुनियोंके साथ अम्पापुरसे सिद्धिको प्राप्त हुए हैं ॥१२०७॥

सुक्कहुमी - पवोसे, आसाहे जम्म - अस्मि सम्मेदे ।  
छस्सय - मुनि - संजुसो, मुत्ति पत्तो विमलसामी ॥१२०८॥

। ६०० ।

अर्थ :—विसलनाथ स्वामी आषाढ़-शुक्ला अष्टमी को प्रदोष काल ( दिन और रात्रिके सम्मिकाल ) में अपने जन्म ( पूर्वभाद्रपद ) नक्षत्रके रहते छहसौ मुनियोंके साथ सम्मेदशिवरसे मुक्त हुए ॥१२०८॥

जेतस्स किण्ह-अणिल्लम-विजण्णवोसम्मि जम्म-अवकात्ते ।  
सम्मेवम्मि अणंतो, सत्त - सहस्सेहि संयत्तो ॥१२०९॥

। ७००० ।



वर्ष :—अनन्तनाथ स्वामी चैत्रमासके कृष्णपक्ष सम्बन्धी पञ्चम दिन ( अमावस्या ) को प्रदोष-कालमें अपने जन्म ( रेवती ) नक्षत्रमें सम्मेदसिखरसे सात हजार मुनियोंके साथ मोक्षको प्राप्त हुए हैं ॥१२०६॥

जेदुस्त किम्ह - जोहसि - पञ्जसे जन्म - भस्मि सम्मेदे ।

सिद्धो जम्म - जिजिवो, क्वाहिय - यव - सहि जुवो ॥१२१०॥

। ८०१ ।

वर्ष :—धर्मनाथ जिनेन्द्र ज्येष्ठ-कृष्णा-चतुर्दशीको प्रत्यूष ( रात्रिके अन्तिम भाग-प्रभात ) कालमें अपने जन्म ( पुष्य ) नक्षत्रमें शीत-घाट की स्थितिमें मुनियोंके साथ सम्मेदसिखरसे सिद्ध हुए हैं ॥१२१०॥

जेदुस्त किम्ह - जोहसि-पदोस-समयम्मि जन्म-जवससे ।

सम्मेदे संति - जिजो, जव-सय-मुनि-संजुवो<sup>१</sup> सिद्धो ॥१२११॥

। १०० ।

वर्ष :—पान्तिनाथ जिनेन्द्र ज्येष्ठ-कृष्णा-चतुर्दशीको प्रदोषकालमें अपने जन्म ( भरणी ) नक्षत्रमें तीसरी मुनियोंके साथ सम्मेदसिखरसे सिद्ध हुए हैं ॥१२११॥

वइसाह-सुवक-पाडिब-पदोस-समयम्मि जन्म - जवससे ।

सम्मेदे कुंघु - जिजो, सहस्स - सहिवो गवो सिद्धि ॥१२१२॥

। १००० ।

वर्ष :—कुन्धु जिनेन्द्र वेशाख-शुक्ला-प्रतिपदाको प्रदोष-कालमें अपने जन्म ( कृत्तिका ) नक्षत्रके रहते एक हजार मुनियोंके साथ सम्मेदसिखरसे सिद्धिको प्राप्त हुए हैं ॥१२१२॥

चेत्तस्स जहुत्त-वरिमे, विजम्मि<sup>२</sup> निय जम्मि-मम्मि पञ्जसे ।

सम्मेदे अर - वेजो, सहस्स - सहिवो गवो मोक्ख ॥१२१३॥

। १००० ।

अर्थ :- भरनाथ भगवान् ने चैत्र-कृष्ण प्रमदस्याको प्रत्युद-कालमें अपने जन्म (रोहणी) नक्षत्रके रहते एक हजार मुनियोंके साथ सम्मेदक्षिणरसे मोक्ष प्राप्त किया है ॥१२१३॥

पंचमि-पद्मोत्तमसमए, फगुन-बहुलध्मि भरणि-नक्षत्रसे ।  
सम्मेदे भल्लिजिणो, पंच - सय<sup>१</sup> - समं तबो मोक्षसं ॥१२१४॥

५००

अर्थ :- भरनाथ तीर्थंकर फाल्गुन-कृष्ण पंचमीको प्रदोष समयमें भरणी नक्षत्रके रहते सम्मेदक्षिणरसे पाँचसौ मुनियोंके साथ मोक्षको प्राप्त हुए हैं ॥१२१४॥

फगुन-किष्के चारसि-पद्मोत्तमसमयध्मि जम्म-नक्षत्रसे ।  
सम्मेदध्मि विमुक्को, सुखद - देवो सहस्सं जूतो ॥१२१५॥

। १००० ।

अर्थ :- मुनिचक्रजिनेन्द्र फाल्गुन-कृष्ण चारसको प्रदोष समयमें अपने जन्म (श्रवण) नक्षत्रके रहते एक हजार मुनियोंके साथ सम्मेदक्षिणरसे सिद्धिको प्राप्त हुए हैं ॥१२१५॥

चइसाह-किण्ह-जोहसि, पञ्चसूसे जम्म - भग्नि सम्मेदे ।  
बिस्सेयसं पञ्चणो, समं सहस्सेण गमि - सामी ॥१२१६॥

। १००० ।

अर्थ :- नमिनाथ स्वामी चैत्राक्ष-कृष्ण चतुर्दशीके प्रत्युदकालमें अपने जन्म (अश्विनी) नक्षत्रके रहते सम्मेदक्षिणरसे एक हजार मुनियोंके साथ निःश्रेयस-पदको प्राप्त हुए हैं ॥१२१६॥

बहुलदुमी - पद्मोत्ते, आसाहे जम्म - भग्नि उज्जते ।  
छत्तीसाहिय - पञ्च - सय - सहिबो जेभीसरो सिद्धो<sup>२</sup> ॥१२१७॥

। ५३६ ।

अर्थ :- नेमिनाथ जिनेन्द्र आषाढ़-कृष्ण अष्टमीको प्रदोष-कालमें अपने जन्म (चित्रा) नक्षत्रके रहते पाँच सौ छत्तीस मुनिराजोंके साथ ऊर्जयन्तगिरिसे सिद्ध हुए हैं ॥१२१७॥

सिंह-सलामी-यबोसे, साबन-भासम्मि जम्म - जवसरो ।  
सम्मोदे पासजिबो, छत्तीस - जुधो गवो मोरसं ॥१२१८॥

। ३६ ।

अर्थ :—पार्श्वनाथ जिनेन्द्र श्रावण मासमें शुक्लपक्षकी सप्तमीके प्रदोष-कालमें अपने जन्म ( विशाखा ) नक्षत्रके रहते छत्तीस मुनियों सहित सम्मेदशिखरसे मोक्षको प्राप्त हुए हैं ॥१२१८॥

करियाय - किण्हे चोदसि, पञ्चूसे सादि-बाम-एकसले ।  
पावाए जयरीए, एक्को बीरेसरो सिद्धो ॥१२१९॥

१

अर्थ :—पार्श्वनाथ जिनेन्द्र श्रावण मासमें शुक्लपक्षकी सप्तमीके प्रदोष-कालमें अपने जन्म ( विशाखा ) नक्षत्रके रहते पावागरीसे एकले ही सिद्ध हुए हैं ॥१२१९॥

[ तालिका : २६ अगले पृष्ठ ३५८-३५९ पर देखिये ]

श्रद्धसादिजिनेन्द्रोंका योग-निवृत्ति काल—

उसहो चोदसि बिधसे, वु - दिणं बीरेसरस्स सेसाणं ।  
मासेण य विणिबिरो, जोगावो मुत्ति - संपण्णो ॥१२२०॥

अर्थ :—श्रद्धसादिजिनेन्द्रने चोदह दिन पूर्व, बीर जिनेन्द्रने दो दिन पूर्व और जेध तीर्थकरोंने एक मास पूर्व योगसे निवृत्त होनेपर मोक्ष प्राप्त किया है ॥१२२०॥

तीर्थकरोंके मुक्त होनेके आसन—

उसहो य वासुपुञ्जो, जेवी परलंक - 'बद्धया सिद्धा ।  
काउस्सगेण जिणा, सेसा मुत्ति सभाधम्मया ॥१२२१॥

अर्थ :—ऋषधनाथ, वासुपूज्य एवं नेमिनाथ परंपर-बद्ध-आसक्तसे तथा शेष जिनेन्द्र कायोत्तम मुद्रासे मोक्षको प्राप्त हुए हैं ॥१२२१॥

मुक्तिफल याचना—

वसन्ततिलकम्—

घोरदृ-कम्प-जियरे दलिहूरा लखं-

गिस्सेयसा जिनबरा जगवं - जिज्जा ।

सिद्धि धिसेपु नुनिबे शिरियासवर-

'सिद्ध'तिमम्पहुदि-अम्ब-जणारा सखे ॥१२२२॥

अर्थ :—जिन्होंने घोर अष्ट-कर्मोंके समूहको नष्ट करके निःश्रेयसपदको प्राप्त कर लिया है और जो जगत्के वन्दनीय हैं ऐसे वे सब जिनेन्द्र शीघ्र ही, श्री बालचन्द्र सैद्धान्तिक आदि भव्यजनोंको मुक्ति प्रदान करें ॥१२२२॥

श्रवभादिजिनेन्द्रोंके तीर्थमें अनुबद्ध केवलियोंकी संख्या—

वसन्ते चउसीदी, कमसो अणुबद्ध - केवली होंति ।

बाहसारि चउबासं, सेघसे वासुपुज्जे य ॥१२२३॥

८४ । से ७२ । बा ४४ ।

अर्थ :—आदिनाथसे शीतलनाथ पर्यन्त ( प्रत्येक के ) चौदासी तथा श्रेयांसनाथ और वासुपूज्यके क्रमशः बहत्तर एवं अवासीस अनुबद्ध केवली हुए हैं ॥१२२३॥

विमल-जिणे बालीसं, एवसु तबो चउ-विधजिज्जा कमसो ।

तिष्णि किय पास-जिणे तिष्णि किय बद्धमाराम्मि ॥१२२४॥

। ४० । ३६ । ३२ । २८ । २४ । २० । १६ । १२ । ८ । ४ । ३ । ३ ।

अर्थ :—विमल जिनेन्द्रके बालीस, इसके पश्चात् नौ तीर्थंकरोंके क्रमशः उत्तरीतर बार-बार हीन, पार्श्वनाथके तीन और वर्धमान स्वामीके भी तीन ही अनुबद्ध केवली हुए हैं ॥१२२४॥

| क्र. | आधिकारों की संख्या | प्रमुख-आधिकार | आधिकारों की संख्या | आधिकारों की संख्या | निर्माण-प्रार्थि |       |            |           |          |              |          |
|------|--------------------|---------------|--------------------|--------------------|------------------|-------|------------|-----------|----------|--------------|----------|
|      |                    |               |                    |                    | मास              | पक्ष  | तिथि       | समय       | नक्षत्र  | स्थान        | सह-मुक्त |
| १    | १२००००             | ब्राह्मी      | ३ भाग              | ५ भाग              | माघ              | कृष्ण | चतुर्दशी   | पूर्वाह्न | उ०वा०    | कंसाध पर्वत  | १००००    |
| २    | ३२००००             | प्रभुम्हा     | " "                | " "                | चैत्र            | शुक्ल | पंचमी      | "         | मरली     | सम्पेदसिद्धर | १०००     |
| ३    | ३२००००             | धर्मशी        | " "                | " "                | "                | "     | बुद्धी     | मकराह्न   | ज्येष्ठा | " "          | १०००     |
| ४    | ३३००००             | मेकवेला       | " "                | " "                | चैत्र            | "     | सप्तमी     | पूर्वाह्न | पुनर्वसु | " "          | १०००     |
| ५    | ३३००००             | अनन्ता        | " "                | " "                | चैत्र            | "     | दशमी       | "         | मघा      | " "          | १०००     |
| ६    | ४२००००             | रत्नवेला      | " "                | " "                | फाल्गुन          | कृष्ण | चतुर्दशी   | मकराह्न   | विशा     | सम्पेदसिद्धर | ३२१      |
| ७    | ४३००००             | मीना          | " "                | " "                | "                | "     | बुद्धी     | पूर्वाह्न | अशु०     | " "          | ५००      |
| ८    | ४८००००             | वस्त्रा       | " "                | " "                | माघपक्ष          | शुक्ल | सप्तमी     | "         | ज्येष्ठा | " "          | १०००     |
| ९    | ४८००००             | बोवा          | २ भाग              | ४ भाग              | आश्विन           | "     | दशमी       | मकराह्न   | मूल      | " "          | १०००     |
| १०   | ४८००००             | चरणा          | " "                | " "                | कार्तिक          | "     | पंचमी      | पूर्वाह्न | पू०वा०   | " "          | १०००     |
| ११   | ४८००००             | चारणा         | " "                | " "                | माघपक्ष          | "     | पूर्णिमा   | "         | ज्येष्ठा | " "          | १०००     |
| १२   | ४९००००             | रत्नेना       | " "                | " "                | फाल्गुन          | कृष्ण | पंचमी      | मकराह्न   | अश्वि०   | धर्मपुर      | ६०१      |
| १३   | ४९००००             | धर्म          | " "                | " "                | आषाढ़            | शुक्ल | अष्टमी     | प्रयोग    | पू०वा०   | सम्पेदसिद्धर | ६००      |
| १४   | ४९००००             | सर्वशी        | " "                | " "                | चैत्र            | कृष्ण | सप्तमी     | "         | रेवती    | " "          | ७०००     |
| १५   | ५२००००             | मुपवा         | " "                | " "                | ज्येष्ठ          | "     | चतुर्विंशी | प्रत्युष  | पुष्य    | " "          | ५०१      |

प्राग्वर्तिक : आधारों की सावित्रीसागर की महाद्वार

|     |         |                   |         |        |         |       |              |        |          |             |       |
|-----|---------|-------------------|---------|--------|---------|-------|--------------|--------|----------|-------------|-------|
| १६  | ६०३००   | हरिपंखा           | २ साक   | ४ साक  | ज्येष्ठ | कृष्ण | चतुर्वर्त्तो | प्रदोष | भरणी     | सम्पेक्षितर | २००   |
| १७  | ६०३५०   | भाबिता            | एकमात्र | ३ साक  | वेधाक   | कृष्ण | प्रतिपदा     | "      | कृति०    | " "         | १०००  |
| १८  | १००००   | कुं कुसेना        | " "     | " "    | भेन     | कृष्ण | समावस        | प्रदोष | रोहणी    | " "         | १०००  |
| १९  | ५५०००   | मधुसेना           | " "     | " "    | कात्पुन | "     | पंचमी        | प्रदोष | भरणी     | " "         | ५००   |
| २०  | ५००००   | गुणवती            | " "     | " "    | "       | "     | भरणी         | "      | धनुरा    | " "         | १०००  |
| २१  | ४५०००   | मागिणी            | " "     | " "    | वेधाक   | "     | चतुर्वर्त्तो | प्रदोष | प्रतिपदा | " "         | १०००  |
| २२  | ४००००   | पतिनी<br>(राजपती) | दिशिक   | २-०५   | दशरथ    | अग्नि | चतुर्वर्त्तो | प्रदोष | प्रतिपदा | सम्पेक्षितर | ५२५   |
| २३  | ३५०००   | सुलोका            | " "     | " "    | व्याकण  | कृष्ण | पंचमी        | "      | वि०      | सम्पेक्षितर | ३९    |
| २४  | ३६०००   | मन्दिना           | " "     | " "    | कर्तिक  | कृष्ण | चतुर्वर्त्तो | प्रदोष | स्थाति   | पामापुरी    | एकाकी |
| योग | ५०५६२५० |                   | ४०००००  | २६०००० |         |       |              |        |          |             |       |



प्रकारान्तरसे—

द्या सप्तममेवक-सयं, उषरि-सिय एउवि हाउवि चउसीवी ।

सेसेसु पुण्व - संखा, हवति अनुबद्ध - केवली अहवा ॥१२२५॥

पत्तेयं १०० । १०० १०० । १०० । १०० । १०० । १०० । १०० । ६० । ६० । ६० । ६० ।

८४ । ४० । ३६ । ३२ । २८ । २४ । २० । १६ । १२ । ८ । ४ । ३ । ३ ।

अर्थ :—अथवा सातवें सुपाश्वर्नाथ पर्यन्त एकसौ, आगे तोमके नम्बे, पुनः नम्बे, चौरासी एवं शेष तीर्थकरोंके पूर्वोक्त संख्या प्रमाण ही अनुबद्ध केवली हुए हैं ॥१२२५॥

अथभादि तीर्थकरोंके सिष्योंमेंसे अनुत्तर विमानोंमें जाने वालोंकी संख्या—

उसह-सियार्च सिस्सा, बीस - सहस्सा अनुत्तरेसु गवा ।

कमसो पंच - जिनेसु, तसो बारस - सहस्सार्णि ॥१२२६॥

२०००० । २०००० । २०००० । १२००० । १२००० । १२००० । १२००० । १२००० ।

तसो पंच - जिनेसु, एक्कार - सहस्सयाणि पसेकं ।

पंचसु सामिसु तसो, एक्केक्के दस - सहस्सार्णि ॥१२२७॥

११००० । ११००० । ११००० । ११००० । ११००० । १०००० । १००००

। १०००० । १०००० । १०००० ।

अह्वासीवि - सयार्णि, कमेण सेसेसु जिणद्धरिवेसु ।

गयण-गम-अहु-सग-सग-ओ-अंक-कमेण सव्व-परिमाणं ॥१२२८॥

८८०० । ८८०० । ८८०० । ८८०० । ८८०० । ८८०० ॥ समेलिदा २७७८०० ॥

। अनुत्तरं गदं ।

अर्थ :—अथभादिक तीन जिनेन्द्रोंके कमरा: बीस-बीस हजार, आगे पाँच तीर्थकरोंके बारह-बारह हजार, आगे पाँच जिनेन्द्रोंमेंसे प्रत्येकके बारह-बारह हजार, फिर पाँच जिनेन्द्रोंमेंसे एक-एकके दस-दस हजार तथा शेष छह जिनेन्द्रोंके कमरा: अठासी-अठासी सौ सिष्य अनुत्तर विमानोंमें

गये हैं। इन विमानों में जाने वाले सम्पूर्ण शिष्टोक्त प्रसारण अक्षुब्ध रूपसे पूर्ण, सुन्दर, निश्चल, सात, सात-दस और दो ( २७७५०० ) संख्याके बराबर है ॥ १२२६-१२२८॥

। अनुसार विमानोंमें जाने वालोंका कथन समाप्त हुआ ।

ऋषभादिकोंके भुक्ति-प्राप्त यतिगणोंका प्रमाण—

सद्भि-सहस्रा षव-सय-सहिया सिद्धि गदा जवीण गणा ।

सहस्रं अजित-युद्धो, एक-सया सप्तहस्तरि - सहस्रा ॥१२२६॥

| ବିଶେଷ | ଗୁରୁତ୍ବପୂର୍ଣ୍ଣ |

वर्ष :—ऋषभजिनेन्द्रके साठ हजार नौ सौ धोर अजितप्रभुके सत्तर हजार एकसौ यतिगण सिद्धिको प्राप्त हुए हैं ॥१२२६॥

सगरि-सहस्र-इगि-सय-संज्ञता संभवस्त इगि - सबलं ।

वो स्वयंसा एक-सयं, सीबि-सहस्राणि गंधन-जिहत्स ॥१२३०॥

। ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ।

वर्ष :- सम्भवनाथके एक लाख सत्तर हजार एक सौ और अभिनन्दन जितेन्द्रके दो लाख  
अस्सी हजार एक सौ यतिगण सिद्ध हुए हैं ॥१२३०॥

सकृत्साणि त्रिणि सौप्त-सर्पि जूताणि समद-सःभिस्त ।

बोहस-सहस्र-सह्रहा, पलभपह-किरावरस 'तिय-सकसा ॥१२३॥

| ୩୦୧୬୦୩ | ୩୨୪୦୦୦ |

अर्थ :- मुनसिनाथ स्वामीके तीन लाख सोलह सौ भीर पद्मप्रभ जितेन्द्रके तीन लाख बीसह हजार मुनि सिद्ध हुए ॥१२३१॥

पञ्चासोद्वि - सहस्त्रा, षो लक्ष्मि चतुस्रस्य संप्रदासस्य ।

अजतीस - सहस्र - अरु, हो लकड़ा अंशुपह - पहनी ॥१२३२॥

। २८५६०० । २३५००० ।



अर्थ :—सुषार्ध-जिनेन्द्रके दो लाख पचासी हजार छह सौ और चन्द्रप्रभुके दो लाख बीतीस हजार यति मुक्त हुए ॥१२३२॥

उणसीदि - सहस्त्राणि, इगि - लक्षं छस्सयाणि सुविहिस्स ।

सीदि - सहस्त्रा<sup>१</sup> छस्सय, संजुत्ता<sup>२</sup> सीयलस्स देवस्स ॥१२३३॥

। १७६६०० । ८०६०० ।

अर्थ :—सुविधिनाथके एक लाख उन्नीसी हजार छह सौ और क्षीतलदेवके अस्सी हजार छह सौ ऋषि मुक्तिको प्राप्त हुए ॥१२३३॥

पण्णाट्टि-सहस्त्राणि, सेयंस - जिणस्स छस्सयाणि पि ।

चत्तवण्ण - सहस्त्राद्वि, छण्व सया बासुपुज्जस्स ॥१२३४॥

। ६५६०० । ५४६०० ।

अर्थ :—श्रेयांस जिनेन्द्रके पैंसठ हजार छह सौ और बासुपूज्यके बीवन हजार छह सौ ऋषि मुक्तिको प्राप्त हुए ॥१२३४॥

एक्कावण्ण-सहस्त्रा, तिज्णि सयाणि पि विमल-भाहस्स ।

सेत्तिय - मेत्त - सहस्त्रा, तिय - सय - हीणा अर्धंतस्स ॥१२३५॥

। ५१३०० । ५१००० ।

अर्थ :—विमल जिनेन्द्रके एक्यावन हजार तीन सौ और अर्धन्तनाथके तीन सौ कम इतने ही अर्थात् एक्यावन हजार यति सिद्धपदको प्राप्त हुए ॥१२३५॥

उणधण्ण - सहस्त्राणि, सत्त - सएहि बुद्धाणि चम्मस्स ।

अट्ठवाल - सहस्त्राद्वि, चत्तारि सयाणि संतिस्स ॥१२३६॥

। ४६७०० । ४८४०० ।

अर्थ :—धर्मनाथ जिनेन्द्रके उन्चास हजार सात सौ और भान्तिनाथके अड़सतीस हजार चार सौ ऋषि सिद्धपदको प्राप्त हुए ॥१२३६॥

छाबाल - सहस्ताणि, अट्ट - सदाणि च कुञ्जु-माहस्स ।

सत्तसीस - सहस्ता, दो-सय-मुत्ता अर - जिणिवस्स ॥१२३७॥

। ४६५०० । ३७२०० ।

अर्थ :- कुञ्जुनाथके छयासीस हजार आठ सौ और अर-नाथ जिनेन्द्रके सैंतीस हजार दो सौ बत्ति भुक्त हुए ॥१२३७॥

अट्टाधीस - सहस्ता, अट्ट - सदाणि पि मल्लिणाहस्स ।

उत्तसीस - सहस्ताणि, दोणि सया सुब्बय - जिणस्स ॥१२३८॥

। २८५०० । १६२०० ।

अर्थ :- मल्लिनाथके अट्टाईस हजार आठ सौ और मुनिसुव्रत जिनेन्द्रके उत्तीस हजार दो सौ बत्ति सिद्ध हुए ॥१२३८॥

जय य सहस्ता छत्तसय-संबुत्ता नमि-जिणस्स सिस्स-गणा ।

जेमिस्स अर - सहस्ता, बात्ताट्टि - सयाणि पासस्स ॥१२३९॥

। ६६०० । ८००० । ६२०० ।

अर्थ :- नमिनाथ जिनेन्द्रके नौ हजार छह सौ, जेमिनाथके आठ हजार और पार्श्वनाथके बासठ सौ शिष्यगण मोक्ष गये हैं ॥१२३९॥

चउदास - सया बीरेसरस्स सन्वाण मित्तिव-परिमाणं ।

चउवीसवि-सक्काणि, चउसट्ठि-सहस्स-चउ-सयाणि ति ॥१२४०॥

४४०० । २४६४४०० ।

अर्थ :- बीर जिनेश्वरके पचासीससौ शिष्यगण मुक्तिको प्राप्त हुए । इन सब शिष्योंका सम्मिलित प्रमाण बीबीस लाख बीसठ हजार चार सौ होता है ॥१२४०॥

आवभादिकोंके मुक्ति प्राप्त शिष्यगणोंका मुक्तिकाल—

उत्तहावि - सोलसाणं, केवलनागप्पसूवि - विवसम्मि ।

पठमं चिय सिस्स - गणा, जिस्सेयस - संपयं यत्ता ॥१२४१॥

कुंभु - चउके कमसो, इगि-हु-ति-छम्मास-समय-येरंतं ।

नमि - पहुदि - जिजिदेसु, इगि-हु-ति-छम्मास-संसाए ॥१२४२॥

मा १ । २ । ३ । ६ । बास १ । २ । ३ । ६ ।

अर्थ :—अष्टभादि सोलह तीर्थंकरोंको केवलज्ञान होनेके दिनोंसे ही मोक्ष-सम्पदाको प्राप्त हो गये थे । कुन्धुनाथ, अरनाथ, मस्तिनाथ और मुनिसुप्रतनाथ तीर्थंकरोंको केवलज्ञान होनेके क्रमशः एक माह, दो माह, तीन माह और छह माहके समयमें ही तथा नमिनाथ, नेमिनाथ, पार्श्वनाथ एवं वीर जिनेन्द्रको केवलज्ञान होने के क्रमशः एक वर्ष, दो वर्ष, तीन वर्ष एवं ६ वर्षके मध्यमें ही उन-उनके शिष्यगण क्रमशः मुक्ति-पदको प्राप्त हो चुके थे ॥१२४१-१२४२॥

विशेषार्थ :—अष्टभादिकोंके शिष्योंकी मुक्ति परम्पराका प्रारम्भ—

अष्टभादि सोलह तीर्थंकरोंके शिष्यगण केवलज्ञान उत्पन्न होनेके दिनसे ही मोक्ष-सम्पदाको प्राप्त करने लगे । कुन्धुनाथ, अरनाथ, मस्तिनाथ और मुनिसुप्रतनाथ तीर्थंकरोंके शिष्यगण क्रमशः केवलज्ञान होनेके एक माह, दो माह, तीन माह और छह माहके उपरान्त तथा नमिनाथ, नेमिनाथ, पार्श्वनाथ और वीर जिनेन्द्रके शिष्य क्रमशः केवलज्ञान होनेके एक वर्ष, दो वर्ष, तीन वर्ष एवं छह वर्षके पश्चात् मुक्ति पदको प्राप्त होने लगे ।

( तालिका ३० पृष्ठ ३६५ पर देखिये )

अष्टभादिकोंके सोधमादिकों को प्राप्त हुए शिष्योंकी संख्या—

सोहम्माविथ - उवरिम - नेववजा जाव उवणदा सगं ।

उसहावीरां सिस्सा, ताण पमाणं पस्सेमो ॥१२४३॥

अर्थ :—अष्टभादिक जिनेन्द्रोंके जो मुनि ( शिष्य ) सोधमसे लेकर उर्व्ववेयक पर्यन्त स्वर्गको प्राप्त हुए हैं, उनके प्रमाणका प्ररूपण करता हूँ ॥१२४३॥

| क्र० | योग-निवृत्ति काल | मुक्त होनेके सासन | अनुबद्ध केवलियोंका प्रमाण | प्रकारान्तसे अनु. केवलियों का प्रमाण | अनुत्तर वि० में उत्पन्न होने वाली का प्रमाण | मुक्तिप्राप्त यतिगणों की संख्या | शिष्यों की मुक्तिप्राप्ति का प्रारम्भ काल |
|------|------------------|-------------------|---------------------------|--------------------------------------|---------------------------------------------|---------------------------------|-------------------------------------------|
| १    | १४ दिन पूर्व     | पत्यकासन          | ८४                        | १००                                  | २००००                                       | ६०६००                           | प्रथम दिन                                 |
| २    | १ मास            | कायोत्सर्ग        | ८४                        | १००                                  | २००००                                       | ७७१००                           | " "                                       |
| ३    | १ " "            | "                 | ८४                        | १००                                  | २००००                                       | १७०१००                          | " "                                       |
| ४    | १ " "            | "                 | ८४                        | १००                                  | २००००                                       | २८०१००                          | " "                                       |
| ५    | १ " "            | "                 | ८४                        | १००                                  | १२०००                                       | ३०१६००                          | " "                                       |
| ६    | १ " "            | "                 | ८४                        | १००                                  | १२०००                                       | ३१४०००                          | " "                                       |
| ७    | १ " "            | "                 | ८४                        | १००                                  | १२०००                                       | २८५६००                          | " "                                       |
| ८    | १ " "            | "                 | ८४                        | ६०                                   | १२०००                                       | २३४०००                          | " "                                       |
| ९    | १ " "            | "                 | ८४                        | ६०                                   | १२०००                                       | १७६६००                          | " "                                       |
| १०   | १ " "            | "                 | ८४                        | ६०                                   | १२०००                                       | ८८६००                           | " "                                       |
| ११   | १ " "            | "                 | ७२                        | ६०                                   | ११०००                                       | ६४६००                           | " "                                       |
| १२   | १ " "            | पत्यकासन          | ४४                        | ८४                                   | १२०००                                       | ५४६००                           | " "                                       |
| १३   | १ " "            | कायोत्सर्ग        | ४०                        | ४०                                   | ११०००                                       | ५१३००                           | " "                                       |
| १४   | १ " "            | "                 | ३६                        | ३६                                   | १००००                                       | ५१०००                           | " "                                       |
| १५   | १ " "            | "                 | ३२                        | ३२                                   | १००००                                       | ४६७००                           | " "                                       |
| १६   | १ " "            | "                 | २८                        | २८                                   | १००००                                       | ४८४००                           | " "                                       |
| १७   | १ " "            | "                 | २४                        | २४                                   | १००००                                       | ४६८००                           | १ मास                                     |
| १८   | १ " "            | "                 | २०                        | २०                                   | १००००                                       | ३७२००                           | २ "                                       |
| १९   | १ " "            | "                 | १६                        | १६                                   | ८८००                                        | २८८००                           | ३ "                                       |
| २०   | १ " "            | "                 | १२                        | १२                                   | ८८००                                        | १६२००                           | ६ "                                       |
| २१   | १ " "            | "                 | ८                         | ८                                    | ८८००                                        | ६६००                            | १ वर्ष                                    |
| २२   | १ " "            | पत्यकासन          | ४                         | ४                                    | ८८००                                        | ८०००                            | २ "                                       |
| २३   | १ " "            | कायोत्सर्ग        | ३                         | ३                                    | ८८००                                        | ६२००                            | ३ "                                       |
| २४   | २ दिन पूर्व      | "                 | ३                         | ३                                    | ८८००                                        | ४४००                            | ४ "                                       |

इति-सय तिप्पि-सहस्सा, णव-सय-अव्वमहिम-बो-सहस्साणि ।

णव-सय-ववय-सहस्सा, णव-सय-संजुल-सग-सहस्साणि ॥१२४४॥

। ३१०० । २२०० । ६६०० । ७६०० ।

कउ-सय-छ-सहस्साणि, चाल-सया बो सहस्स चारि सया ।

चाल-सया पसेक्कं, चारि-सयेण<sup>१</sup> हि य एण अउ सहस्सा ॥१२४५॥

६४०० । ४००० । २४०० । ४००० । ६४०० । ८४०० ।

चउ-सय-सल-सहस्सा, चउ-सय-अविरित-छस्सहस्साणि ।

सग-सय-संजा-समहिम - पंच - सहस्सा पण - सहस्सा ॥१२४६॥

। ७४०० । ६४०० । ५७०० । ४००० ।

मार्गदर्शक :- अव्वमहिम और सुविधित्तायल की गहनाय

तिय-सय-चउस्सहस्सा, छस्सय-संजुल-तिय-सहस्साणि ।

बो-सय-जुव-ति-सहस्सा, अउ-सय-अव्वमहिम-बो-सहस्साणि ॥१२४७॥

४३०० । ३६०० । ३२०० । २८०० ।

चउ-सय-जुव-बु-सहस्सा, बु सहस्सा चैव सोलस-सयाणि ।

बारस - सया सहस्सं, अउ - सयासि जहा कमसो ॥१२४८॥

२४०० । २००० । १६०० । १२०० । १००० । ८०० ।

अर्थ :- तीन हजार एकसौ, नौसौ अधिक दो हजार ( २९०० ) . नौ हजार नौ सौ, सात हजार नौ सौ, छह हजार चार सौ चार हजार, दो हजार चार सौ, चार हजार, चारसौके साथ नौ हजार और चारसौ के साथ आठ हजार ( ९४००, ८४०० ) . सात हजार चारसौ, चारसौ अधिक छह हजार, सातसौ संख्यासे अधिक पांच हजार, पांच हजार, चार हजार तीन सौ, छहसौ सहित तीन हजार, दो सौ सहित तीन हजार, आठ सौ अधिक दो हजार, चारसौ युक्त दो हजार, दो हजार, सोलहसौ, बारहसौ, एक हजार और आठ सौ, इस प्रकार क्रमशः ऋषभादिक चौबीस तीर्थंकरोंके ये शिष्य मुनि सोढमादिकको प्राप्त हुए ॥१२४३-१२४८॥

गाथा : १२४६-१२४८ ]

चतुर्थो महाहियारो

[ ३६७ ]

भाव-श्रमणोंकी संख्या—

सबलं पंच-सहस्रा, अष्ट-सयानि<sup>१</sup> वि मिलित्व-परिमाणं ।

विजय-सुद-जियम - संजम - भरिवाणं भाव - समजाणं ॥१२४६॥

[ १०५८०० ]

अर्थ :—विजय, श्रुत, नियम एवं संयमसे परिपूर्ण इन सब भाव भुक्तियोंका सम्मिलित प्रमाण एक लाख, पाँच हजार आठ सौ होता है ॥१२४६॥

विशेषार्थ :—प्रत्येक सीधकरके ऋषियोंकी जो संख्या गा० ११०३-११०८ में बताई गई है वह सात शरणोंमें विभक्त है । जिसकी तालिका गाथा संख्या ११७६ के बाद अंकित है ।

ऋषियोंकी यह संख्या सीधर्म से ऊर्ध्वग्रीवेयक, अनुत्तर और मोक्ष गमनकी अपेक्षा तीन भागोंमें विभक्त है । इनमें मोक्ष जाने वाले और अनुत्तर विमानोंमें उत्पन्न होने वाले सो भाव-ऋषि ( श्रमण ) थे ही किन्तु सीधर्मसे ऊर्ध्वग्रीवेयक तक जाने वाले ऋषि भी भाव श्रमण ही थे । यह सूचित करनेके लिए ही गाथा संख्या १२४६ में भावश्रमणका प्रमाण पृथक् दर्शाया गया है ।

( तालिका ३१ पृष्ठ ३६८ पर देखिये )

तालिका : ३१

कृषिभावि तीर्थधारों के स्वयं और मोक्ष-प्राप्त शिष्यों की संख्या

| क्र० | नाम           | सौचर्मसे ऊर्ध्वग्री०<br>गा. १२४४-१२४८ | प्रनुत्तरीत्यक्त<br>गा. १२२६-१२२८ | मोक्ष-प्राप्त<br>गा. १२२२-१२४० | कुल योग<br>गा. ११०३-११०८ |
|------|---------------|---------------------------------------|-----------------------------------|--------------------------------|--------------------------|
| १    | कृषभनाथ       | ३१०० +                                | २०००० +                           | ६०६०० =                        | ८४०००                    |
| २    | अजितनाथ       | २६००                                  | २००००                             | ७७१०० =                        | १०००००                   |
| ३    | सम्भवनाथ      | ६६००                                  | २००००                             | १७०१०० =                       | २०००००                   |
| ४    | अभिनन्दनजी    | ७६००                                  | १२०००                             | २८०१०० =                       | ३०००००                   |
| ५    | सुमतिनाथ      | ६४००                                  | १२०००                             | ३०१६०० =                       | ३२००००                   |
| ६    | पद्मप्रभु     | ४०००                                  | १२०००                             | ३१४००० =                       | ३३००००                   |
| ७    | सुपाद्वर्षनाथ | २४००                                  | १२०००                             | २८५६०० =                       | ३०००००                   |
| ८    | चन्द्रप्रभु   | ४०००                                  | १२०००                             | २३४००० =                       | २५००००                   |
| ९    | पुष्पदन्त     | ६४००                                  | ११०००                             | १७६६०० =                       | २०००००                   |
| १०   | शीतलनाथ       | ८४००                                  | ११०००                             | ८६६०० =                        | १०००००                   |
| ११   | श्रेयांसनाथ   | ७४००                                  | ११०००                             | ६४६०० =                        | ८४०००                    |
| १२   | वासुपुज्य     | ६४००                                  | ११०००                             | ४४६०० =                        | ७२०००                    |
| १३   | विमलनाथ       | ५७००                                  | ११०००                             | ४१३०० =                        | ६८०००                    |
| १४   | अनन्तनाथ      | ५०००                                  | १००००                             | ५१००० =                        | ६६०००                    |
| १५   | धर्मनाथ       | ४३००                                  | १००००                             | ४६७०० =                        | ६४०००                    |
| १६   | शान्तिनाथ     | ३६००                                  | १००००                             | ४८४०० =                        | ६२०००                    |
| १७   | कुण्डुनाथ     | ३२००                                  | १००००                             | ४६८०० =                        | ६००००                    |
| १८   | अरनाथ         | २८००                                  | १००००                             | ३७२०० =                        | ५००००                    |
| १९   | मल्लिनाथ      | २४००                                  | ८८००                              | २८८०० =                        | ४००००                    |
| २०   | मुनिमुपत      | २०००                                  | ८८००                              | १६२०० =                        | ३००००                    |
| २१   | नमिनाथ        | १६००                                  | ८८००                              | ६६०० =                         | २००००                    |
| २२   | नेमिनाथ       | १२००                                  | ८८००                              | ८००० =                         | १८०००                    |
| २३   | पाश्वर्षनाथ   | १०००                                  | ८८००                              | ६२०० =                         | १६०००                    |
| २४   | वीरनाथ        | ८०० +                                 | ८८०० +                            | ४४०० =                         | १४०००                    |
|      | योग           | १०५८०० +                              | २७७८०० +                          | २४६४४०० =                      | २८४८०००                  |

ऋषभनाथ और बीर जिनेन्द्रका सिद्धि-काल—

तिय-भासा<sup>१</sup> अठ-मासा, पण्ह<sup>२</sup> सह सविय-काल-अवसेसे ।

सिद्धो उसह - जिणिदो, बीरो तुरियस्स तेस्सिण्ण<sup>३</sup> सेसे ॥१२५०॥

अर्थ :- ऋषभनाथ और बीर जिनेन्द्र तृतीयकाल में पण्ह सह सविय-काल-अवसेसे ।

अर्थ :— ऋषभजिनेन्द्र तृतीयकालमें और बीर जिनेन्द्र चतुर्थकालमें तीन वर्ष, आठ मास और एक पक्ष अवधिष्ट रहनेपर सिद्ध पदको प्राप्त हुए ॥१२५०॥

विलेखार्थ :— गाथा संख्या ११६६ में ऋषभजिनेन्द्र की मोक्ष-तिथि माघ कृष्णा चतुर्दशी बताई गई है और यहाँ गा० १२५० में कहा गया है कि तृतीयकालके ३ वर्ष ८६ माह शेष रहने पर ऋषभदेव मोक्ष गये । युगका प्रारम्भ श्रावण कृष्णा प्रतिपदासे होता है और माघ कृ० चतुर्दशीसे श्रावण कृ० प्रतिपदा तक ५३ माह ही होते हैं । जो गा० १२५० की प्रकृषणाके बाधक हैं । यदि ऋषभनाथकी निर्वाण तिथि कार्तिक कृष्णा अमावस्या होती तो गा० १२५० का कथन यथार्थ बैठ सकता है । यह विषय विचारणीय है ।

ऋषभादि-तीर्थंकरोंके मुक्त होनेका अन्तर काल—

सिद्धि गवम्मि उसहे, सायर - कोढोण पण्ण - सक्खेसु<sup>४</sup> ।

बोलीणेषु<sup>५</sup> अजियो, निस्सेयस - सम्पयं<sup>६</sup> पत्तो ॥१२५१॥

। सा ५० ल को ।

अर्थ :— ऋषभजिनेन्द्रके मुक्त हो जानेके पचास लाख करोड़ सागर वाद अजितनाथ तीर्थकरने निःश्रेयस-सम्पदाको प्राप्त किया ॥१२५१॥

अबहोसु तीस<sup>७</sup> बस-एव-संसेसु<sup>८</sup> कोढि-सक्ख-पहवेसु<sup>९</sup> ।

तत्तो कमेव संभव - जंघण - सुमई गवा सिद्धि ॥१२५२॥

। सा ३० ल को । सा १० ल को । सा ६ ल को ।

अर्थ :— इसके आगे तीस लाख करोड़, दस लाख करोड़ और नौ लाख करोड़ सागरोंके व्यतीत हो जानेपर क्रमशः सम्भव, अभिनन्दन और सुमतिनाथ मोक्ष गये ॥१२५२॥

१. व. व. क. फ. प. उ. बाहो । २. व. व. क. अ. उ. पत्ता । ३. व. व. क. उ. उ. सीसु ।

४. व. व. क. व. प. उ. पण्णम् ।



उवहि-उवभाष भवधी, गवसु सहस्तेसु कोडि-<sup>१</sup>पहरेसु<sup>२</sup> ।

तसो गवेषु कमसो, सिद्धा पडमप्यह<sup>३</sup> - सुपासा ॥१२५३॥

सा ६०००० को । सा ६००० को ।

अर्थ :—इसके पश्चात् नव्वे हजार करोड़ और नौ हजार करोड़ सागरोंके व्यतीत हो जाने पर क्रमशः पद्मप्रभ एवं सुपाशनाथ तीर्थंकर सिद्ध हुए ॥१२५३॥

गव-सय-भउदि-गवेषु<sup>४</sup>, कोडि - हरेसु<sup>५</sup> समुद् - उवभाषी ।

बावेसु<sup>६</sup> तसो सिद्धा, चंवप्यह<sup>७</sup> - सुविहि<sup>८</sup> - सोयसया<sup>९</sup> ॥१२५४॥

सा ६०० को । सा ६० को । सा ६ को ।

अर्थ :—इसके पश्चात् एक करोड़से गुणित नौसौ वर्षात् नौसौ करोड़ सागर, नव्वे करोड़ सागर और नौ करोड़ सागर व्यतीत हो जानेपर क्रमशः चन्द्रप्रभ, सुविधिनाथ और सीतलनाथ जिनेन्द्र सिद्ध हुए ॥१२५४॥

छब्बोस-सहस्साहिय-छ<sup>१०</sup>-सहि-सवसेहि वस्स सायर-सएष ।

ऊगम्मि कोडि - सायर - कासे सिद्धो य सेयंसो ॥१२५५॥

सा १ को रिए । सा १०० वरा ६६२६००० व ।

अर्थ :—छपासठ लाख छब्बोस हजार ( ६६२६००० वर्ष ) और सौ सागर कम एक करोड़ सागर प्रमाण कालके बने जानेपर भगवान् श्रेयांसनाथ सिद्ध हुए ॥१२५५॥

चउवण्ण-सीस-गव-चउ - सायर - उवमेसु तह अबीदेसु ।

सिद्धो य वासुपुज्जो, कमेण विमसो अणंत - धम्मा<sup>११</sup> य ॥१२५६॥

। ५४ । ३० । ६ । ४ ।

अर्थ :—पश्चात् चौवन, तीस, नौ और चार सागरोपमोंके व्यतीत हो जाने पर क्रमशः वासुपूज्य, विमलनाथ, अनन्तनाथ और धर्मानाथ तीर्थंकर सिद्ध हुए ॥१२५६॥

१. द. व. क. ज. य. उ. पहरेसु । २. द. व. क. ज. य. उ. पडमप्यहा सुपासा य । ३. द. व. क. ज. य. उ. बावेसु । ४. द. व. क. ज. उ. समुहसी । ५. व. उ. सातहि, क. बासहि । ६. व. क. ज. य. उ. वम्मो य ।

तिय-सागरोपमेसुं, ति-वरण-पत्तोखिबेसु संति-अणो ।

पसिबोबमस्स अहे, ततो सिद्धि गयो कुंभू ॥१२५७॥

। सा ३ रिण प ३ । कुं प ३ ।

अर्थ :—इसके पश्चात् पोन पत्त्य कम तीन सागरोपमोंके व्यतीत हो जानेपर शान्तिनाथ जिनेन्द्र एवं फिर अर्धपत्त्य बीत जानेपर कुन्धु जिनेन्द्र मुक्तिको प्राप्त हुए ॥१२५७॥

पलिबोबमस्स पादे, इगि-कोडि-सहस्स-वस्स-परिहीणे ।

अरयेवो, पत्तिवज्जिणो, कोडि - सहस्सम्मि वासाणं ॥१२५८॥

अ प ३ रिण वस्स १००० को । मल्लि वस्स १००० को ।

अर्थ :—पश्चात् एक हजार करोड़ वर्ष कम पाव पत्त्योपम व्यतीत हो जाने पर अरनाथ और एक हजार करोड़ वर्षोंके बाद मल्लिनाथ मोक्ष गए ॥१२५८॥

चउवण्ण - छवक - पंचसु, सक्खेसुं पवगडेमु वासाणं ।

कमसो सिद्धि पत्ता', सुव्वय-एम्मि-नेमिजिण-आहा' ॥१२५९॥

। वास ५४ ल । व ६ ल । व ५ ल ।

अर्थ :—इसके पश्चात् चौवन लाख, छह लाख और पांच लाख वर्षोंके व्यतीत हो जाने पर क्रमशः मुनिमुव्वतनाथ, नमिनाथ और नेमिनाथ जिनेन्द्र मुक्तिको प्राप्त हुए ॥१२५९॥

तेसीद्धि - सहस्सेसुं, पण्णाधिय - सग - सएसु जावेसुं ।

ततो पासो सिद्धो, पण्णम्महिपम्मि दो - सए बीरो ॥१२६०॥

व ८३७५० । व २५० ।

। भोक्खंतंरं गवं ।

अर्थ :—इसके पश्चात् तेरासी हजार सातसौ पचास वर्ष व्यतीत हो जानेपर वास्सेनाथ और दो सौ पचास वर्ष व्यतीत हो जानेपर बीर जिनेन्द्र मोक्ष गये ॥१२६०॥

। भोक्खे अन्तराम कालका कथन समाप्त हुआ ।

श्रमभादिक-जिनेन्द्रोंका तीर्थप्रवर्तन काल—

पुष्पंग-भक्तिमार्गि, सायर-उद्यमान - कोटि - लक्ष्मार्गि ।

पञ्चास तिल्यवहूण - कालो उत्तहस्स सिद्धिदो ॥१२६१॥

सा २० ल को । पुष्पंग १ ।

अर्थ :—भगवान् श्रमभादिक तीर्थप्रवर्तन-काल एक पुष्पङ्ग अधिक पचास लाख करोड़ सागरोपम-प्रमाण कहा गया है ॥१२६१॥

पुष्पंग-सय-जुवाइं, समुद् - उद्यमान कोटि - लक्ष्मार्गि ।

तीसं धिय सो कालो, अजिय - जिजिवस्स भावणो ॥१२६२॥

सा ३० ल को । पुष्पंग ३ ।

अर्थ :—अजितनाथ जिनेन्द्रका तीर्थ-प्रवर्तनकाल तीन पुष्पङ्ग सहित तीस लाख करोड़ सागरोपम-प्रमाण जानना चाहिए ॥१२६२॥

चउ-पुष्पंग-जुवाइं, समुद् - उद्यमान कोटि - लक्ष्मार्गि ।

वस - मेत्ताइं भणिवो, संभव - सामिस्स सो कालो ॥१२६३॥

सा १० ल को । पुष्पंग ४ ।

अर्थ :—सम्भवनाथ स्वामीका वह काल चार पुष्पङ्ग सहित दस लाख करोड़ सागरोपम-प्रमाण कहा गया है ॥१२६३॥

चउ-पुष्पंग - जुवाइं, वारिधि-उद्यमान-कोटि-लक्ष्मार्गि ।

णव - मेत्ताएण कहिदो, गंदण - सामिस्स सो सभओ ॥१२६४॥

सा ६ ल को । पुष्पंग ४ ।

अर्थ :—अभिनन्दन स्वामीका वह काल चार पुष्पङ्ग सहित नौ लाख करोड़ सागरोपम-प्रमाण कहा गया है ॥१२६४॥

खड - पुष्पगन्धमहिमा, पयोहि-उबमाण-बलवि-मेघाखं ।

कोडि-सहस्रा हि पुढं, सो समओ सुमह - सामिस्स ॥१२६५॥

सा ६०००० को । पुष्पग ४ ।

अर्थ :—सुमतिनाथ स्वामीका यह काल चार पूर्वाङ्ग सहित नब्बे हजार करोड़ सागरोपम-प्रमाण कहा गया है ॥१२६५॥

खड-पुष्पगन्धमहिमा, नीरहि-उवसा सहस्र-शब्द-कोडी ।

तित्थ - पयद्वण - कासो, पयमप्पह - जिणद्धिर्वहस ॥१२६६॥

आध्यात्मिक :—आचार्य श्री श्रीविजितानन्द जी महाराज

सा ६००० को । पुष्पग ४ ।

अर्थ :—पद्मप्रभ जिनेन्द्रका तीर्थप्रवर्तनकाल चार पूर्वाङ्ग अधिक नौ हजार करोड़ सागरोपम-प्रमाण है ॥१२६६॥

खड-पुष्पगन्धमाओ, गव-सद-कीडीओ असहि-उबमाणं ।

घम्म - पयद्वण - कासत्पमाणमेहं सुपासस्स ॥१२६७॥

सा ६०० को । पुष्पग ४ ।

अर्थ :—सुपासनाथ तीर्थंकरके धर्मप्रवर्तनकालका प्रमाण चार पूर्वाङ्ग सहित नौ सौ करोड़ सागरोपम प्रमाण है ॥१२६७॥

खड-पुष्पगन्धमाओ, रयणायर-उबम-बलवि-कोडीओ ।

णिस्सेय - पय - पयद्वण - कासो चंदप्पह - जिणस्स ॥१२६८॥

सा ६० को । पुष्पग ४ ।

अर्थ :—चन्द्रप्रभ जिनेन्द्रका निःश्रेयस-पद-प्रवर्तनकाल चार पूर्वाङ्ग सहित नब्बे करोड़ सागरोपम-प्रमाण है ॥१२६८॥

अडवीस-पुष्पगन्धाहिय - पल्ल - अडत्यभाग - हीसाओ ।

मयरायर - उवमाणं, गव - कोडीओ समहिजाओ ॥१२६९॥

सा=९ को=रिण ५ १ पुष्पग २८ ।

अद्विरेगस्स पमाणं, पुब्बमाणं सक्कमेवक - परिमाणं ।

मोक्खस्सेणि<sup>१</sup> - पयट्ठण - कासो तिरिपुप्फईतस्स ॥१२७०॥

। घणं पुब्ब १ ल ।

अर्थ :—श्रीपुष्पदन्त जिनेन्द्रका मोक्षमार्ग-प्रवर्तनकाल अट्टाईस पूर्वाङ्ग अधिक पत्थके चतुर्थभागसे हीन नो करोड़ सागरोपमोसे अधिक है । इस अधिक कासका प्रमाण एक लाख पूर्व है ॥१२६६-१२७०॥

पलिबोवमद्ध-समहिण-तोयहि-उवमाण एवक-सय-हीणा ।

रयणायरुवम - कोट्ठी, सोयलदेवस्स अद्विरिस्ता ॥१२७१॥

सा १ को रिए सा १०० । प १ ।

अद्विरेगस्स पमाणं, पणुबोस - सहस्स होति पुब्बाणि ।

अण्णोस सहस्साहिण-वज्झर-उवहि-सवक - परिणीणा ॥१२७२॥

यस्य देशिके ... अथोस जी पुत्रिदिस्समर जी अण्णोस

घणं पुब्बाणि २५००० । रिए व ६६२६००० ।

अर्थ :—शीतलनाथ जिनेन्द्रका तीर्थ-प्रवर्तनकाल अर्ध-पत्थोपम और एक सौ सागर कम एक करोड़ सागरोपम प्रमाण कालसे अतिरिक्त है । इस अतिरिक्त कालका प्रमाण अधासठ लाख अण्णोस हजार वर्ष कम पच्चीस हजार पूर्व है ॥१२७१-१२७२॥

इगिबोस-सवक-वज्झर-विहहि-पल्लस्स ति-भरणेणूणा ।

अउवण्ण-उवहि-उवमा, सेयंस-अधस्स तिए - कसितं ॥१२७३॥

सा ५४ वा २१ ल । रिए प ३ ।

अर्थ :—श्रेयांस जिनेन्द्रका तीर्थ-कर्तृत्वकाल इसकीस लाख वर्ष कम एक पत्थके तीन चतुर्थांशसे रहित जीवन सागरोपम-प्रमाण है ॥१२७३॥

अउवण्ण-सवक-वज्झर-अधिय-पल्लेण विहहिवा होति ।

तीस महम्मथ - उवमा, सो कासो वामुपुज्जस्स ॥१२७४॥

। सा ३० व ५४ ल । रिए प १ ।



जभ-यज-इग-संग-छक-हुगो जभ-संल-वास - परिहोणा ।

पस्वस्व चउभागो, सो कासो कुंभनाहस्व ॥१२७६॥

प्रारंभिक : - अथर्ववेद, अथर्वसंहिता, अथर्वश्रौतसूत्र, अथर्वसूक्त, अथर्ववेद, अथर्वसंहिता, अथर्वश्रौतसूत्र, अथर्वसूक्त

वर्ष :- कुण्डुनाथ स्वामीका वह काल शून्य, पाँच, दो, सात और छह स्थानोंमें जो, इन अक्षरोंसे निर्मित संख्या प्रमाण ( ६६६६६६७२५० ) वर्षोंमें हीन पत्थके चतुर्थ भाग प्रमाण है ॥१२७६॥

कोटि-सहस्रा एव-सय-त्रैलीस-सहस्र-वत्स-परिहीणा ।

निष्ठाज-पय-पपट्टन - कात्त - पमाणं अर - जिगत्त ॥१२८०॥

| ୧୧୧୧୧୧୬୬୫୦୦ |

सर्व १ :—अस्मात् जिनेन्द्रके निर्वाण-यद्-प्रवर्तनकालका प्रमाण तैत्तीस हजार नौसौ वर्ष कम एक हजार करोड वर्ष है ॥१२८०॥

यथाह्वय-लवण-वस्त्रा, वायव्य-सहस्र-सुस्तय-विहीना ।

अपवर्ग-मर्ग-पक्ष - कासो सिरिमल्लि - सामिस्स ॥१२८१॥

वा ५४४७४०० ।

समय :- श्रीमद्विष्णुनाथ स्वामीका मोक्षमार्ग-प्रवर्तन-काल बावन हजार स्रहसौ वर्षोंसे रहित पञ्चदश लाख वर्ष प्रमाण है ॥१२८१॥

पंच-सहस्र-अक्षरिणः, स्रुजिचयः संवत्सराणि त्वत्सराणि ।

गिस्सेय - पय - पयङ्गुण - कालो सुध्वय - गिरिवत्स ॥१२६२॥

। वा ६०५००० ।

वर्ष :- मुनिसुव्रतजिनेन्द्रका निःश्रेयस-पद-प्रवर्तनकाल छह लाख पाँच हजार वर्ष प्रमाण है ॥१२८२॥

अहमय-एषक-सहस्रभहिया संवत्तराण वन - लवसा ।

तिस्वावतार - ब्रह्म - काल - पमाणं भूमि - जिघेक्षुः ॥१२८३॥

। व ५०१५०० ।

अर्थ :—नमिनाथ जिनेन्द्रका तीर्थावतार-वर्तन-काल पाँच लाख एक हजार आठसौ वर्ष प्रमाण है ॥१२८३॥

चउरासीदि-सहस्रा, तिणि सया होंति विगुण-बासीसा ।

वर-धम्म-यय - पयहुण - कालो सिरिणेमि - बाहस्स ॥१२८४॥

व ८४३८० ।

अर्थ :—श्री जेगिणसय जिनेन्द्रके तीर्थावतार-वर्तन-काल चौरासी हजार तीसरी और बासीसके गुणने ( ८० ) वर्ष प्रमाण है ॥१२८४॥

दोणि सया भउहस्ररि-अुसा बासाण पाससाहस्स ।

इगिणीस - सहस्रानि, बुवाल वीरस्स सो कालो ॥१२८५॥

वा २७८ । वास २१०४२ ।

अर्थ :—पार्वनाथस्वामीका वह तीर्थकाल दोसो अठसर वर्ष और वीर भगवान्‌का इसकोस हजार ब्यासीस वर्ष प्रमाण है ॥१२८५॥

तोहको'—

तित्थ - पयहुण - काल - पमाणं,

बासज - कम्म - विणास<sup>१</sup> - हुणं ।

जे गिसुणंति पडंति बुणंते,

ते अपवण - सुहाइ लहंते ॥१२८६॥

अर्थ :—जो तीक्ष्ण-कर्मोंका नाश करनेवाले इस तीर्थप्रवर्तनकासके प्रमाणको सुनते हैं, पढ़ते हैं और स्तुति करते हैं, वे मोक्षमुखको प्राप्त करते हैं ॥१२८६॥

( तालिका : ३९ अगले पृष्ठ पर देखिए । )



तालिका : ३२

मुलांमतेर एव तीर्थप्रवर्तनकाल—

| क्र० | तीर्थकरींका निर्वणि अन्तरकाल | तीर्थप्रवर्तनकाल                                          |
|------|------------------------------|-----------------------------------------------------------|
| १    | ५० लाख कोटि सागर             | ५० लाख कोटि सागर + १ पूर्वाज्ञ                            |
| २    | ३० " " "                     | ३० लाख कोटि सागर + ३ पूर्वाज्ञ                            |
| ३    | १० " " "                     | १० " " " + ४ पूर्वाज्ञ                                    |
| ४    | ६ " " "                      | ६ " " " + ४ पूर्वाज्ञ                                     |
| ५    | ६०,००० कोटि सागर             | ६०,००० " " + ४ पूर्वाज्ञ                                  |
| ६    | ६००० " " "                   | ६००० " " + ४ पूर्वाज्ञ                                    |
| ७    | ६०० " " "                    | ६०० " " + ४ पूर्वाज्ञ                                     |
| ८    | ६० " " "                     | ६० " " + ४ पूर्वाज्ञ                                      |
| ९    | ६ " " "                      | ६ को० सा०—(३ प० + २८ पूर्वाज्ञ) + १ सा० पूर्व             |
| १०   | ३३७३६०० सागर                 | १ को० सा०—((१०० सा० + ३ प०) + (२३००० पूर्व—६६२६००० वर्ष)) |
| ११   | ५४ सागर                      | ( ५४ सा० + २१ ला० वर्ष )—३ प०                             |
| १२   | ३० सागर                      | ( ३० सा० + ५४ ला० वर्ष )—१ प०                             |
| १३   | ६ सागर                       | ( ६ सा० + १५ ला० वर्ष )—३ प०                              |
| १४   | ४ सागर                       | ( ४ सा० + ७५०००० वर्ष )—३ प०                              |
| १५   | ३ सागर—३ प०                  | ( ३ सा० + २५०००० वर्ष )—१ प०                              |
| १६   | ३ प०                         | ३ प० + १२५० वर्ष                                          |
| १७   | ३ प०—१००००००००० वर्ष         | ३ प०—६६६६६६७२५० वर्ष                                      |
| १८   | १०००००००००० वर्ष             | ६६६६६६६१०० वर्ष                                           |
| १९   | ५४००००० वर्ष                 | ५४४७४०० वर्ष                                              |
| २०   | ६००००० वर्ष                  | ६०५००० वर्ष                                               |
| २१   | ५००००० वर्ष                  | ५०१८०० वर्ष                                               |
| २२   | ८३७५० वर्ष                   | ८४३८० वर्ष                                                |
| २३   | २५० वर्ष                     | २७८ वर्ष                                                  |
| २४   | x                            | २१०४२ वर्ष                                                |

दुष्मसुखमा कालका प्रवेश—

उसह-जिने जिम्बाणे, बास - तए अहु - मास मासहे ।

बोलीणम्मि पबिहो, दुस्समसुखमो तुरिम - कालो ॥१२८७॥

वा ३, मा ८, दि १५ ।

अर्थ :—अवधजिनेन्द्रके मोक्ष-नामन पदवात् तीन वर्ष, आठ मास और पन्द्रह दिन व्यतीत होनेपर दुष्मसुखमा नामक चतुर्थकाल प्रविष्ट हुआ ॥१२८७॥

मायु आदिका प्रमाण—

तस्स य पद्धम - पएसे, कोहि पुठवाणि आज-उबकस्सो ।

अडहाला पुठुही, पण - सय - पणुबीस - वंछया उबसो ॥१२८८॥

पु १ को । पु ४८ । उ ८ ५२५ ।

अर्थ :—उस चतुर्थकालके प्रथम प्रवेशमें उत्कृष्ट मायु एक पूर्वकोटि, पृष्ठ भागकी हृदिद्वय अडहालीस और शरीरकी ऊँचाई पाँचसौ पञ्चोस धनुष-प्रमाण थी ॥१२८८॥

धर्म-तीर्थकी व्युत्पत्ति—

उज्झण्णो सो धम्मो, सुबिहि - प्पमुहेसु 'सत्त-तित्थेसु' ।

सेसेसु सोलसेसु, शिरंतरं धम्म - संताणं ॥१२८९॥

अर्थ :—सुविधिनाथको आदि लेकर (धर्मनाथ पर्यन्त) सात तीर्थोंमें उस धर्मकी व्युत्पत्ति हुई थी और शेष सोलह तीर्थोंमें धर्मकी परम्परा निरन्तर रही है ॥१२८९॥

पल्लस्स पावमद्ध', ति-वरण-पल्लं कू ति - वरणं अद्ध' ।

पल्लस्स पाव - मेत्तं, वोण्णोद्धो धम्म - तित्थस्स ॥१२९०॥

प ३ । प ३ । प ३ । प १ । प ३ । प ३ । प ३ ।

अर्थ :—सात तीर्थोंमें क्रमशः पाव पल्ल, अर्धपल्ल, पौनपल्ल, ( एक ) पल्ल, पौन पल्ल, अर्धपल्ल और पाव पल्लप्रमाण धर्मतीर्थका विच्छेद रहा था ॥१२९०॥

हुंदावसप्पिजिस्स य, दोसेणं वेत्ति' सोत्ति विच्छेदे' ।

विक्खाहिमुहुराभावे, अस्थमिदो धम्म - वर - दोमो ॥१२६१॥

अर्थ :—हुंदावसप्पिणी कालके दोषसे, वक्ताओं और श्रोताओंका विच्छेद होनेके कारण तथा दोषाके अस्तिमुख होने वालोंके अभावमें धर्म रूपी उत्तम दीपक अस्तमित हो गया था ॥१२६१॥

भक्तिमें आसक्त भरतादिक चक्रवर्तियोंका निर्देश—

, भरहो , सगरो , मधवो , सनत्कुमारो य संति, कुंभु, अरो ।

कमसो सुभोम , पञ्चमो , , हरि-जयसेणा , , य , बम्हवसो य ॥१२६२॥

एवे वारस चक्की, पञ्चवक्ख - परोक्ख - बंवेणासत्ता ।

जिक्कभर - भत्ति - सभग्गा, सव्वाणं तिथ - कत्ताणं ॥१२६३॥

अर्थ :—भरत, सगर, मधवा, सनत्कुमार, शान्ति, कुम्भ, अर, सुभोम, पञ्च हरिसेना, जयसेन और बम्हावस, कमलः ये बारह चक्रवर्ती सर्व तीर्थचक्रोंकी प्रत्यक्ष एवं परोक्ष बन्धनामें आसक्त तथा अत्यन्त गाढ़-भक्तिये परिपूर्ण रहे हैं ॥१२६२-१२६३॥

तीर्थचक्रोंसे चक्रवर्तियोंकी प्रत्यक्षता एवं परोक्षता—

रिसहेसरस्स भरहो, सगरो अजिण्णसरस्स पञ्चवक्खं ।

मधवा सनत्कुमारो, दो चक्की धम्म-संति-विक्खाते ॥१२६४॥

अह संति-कुंभु-अरजिण, तिथयरा ते च चक्क-वट्ठिते ।

एक्को सुभोम - चक्की, अर - मल्ली - अंतरालम्मि ॥१२६५॥

अह पञ्चम - चक्कवट्ठी, मल्ली-मुणिसुव्वयाण विक्खाते ।

सुव्वय - गमीण भक्के, हरिसेणो नाम चक्कहरो ॥१२६६॥

जयसेण - चक्कवट्ठी, जमि-गेमि-जिणाणमंतरालम्मि ।

तह बम्हवस - एणो, चक्कवट्ठी गोमि-पास-विक्खाते ॥१२६७॥

अर्थ :—भरत चक्रवर्ती ऋषभेश्वरके समक्ष, सगर चक्रवर्ती अजितेश्वरके समक्ष तथा मधवा और सनत्कुमार ये दो चक्रवर्ती धर्मनाथ एवं शान्तिनाथके अन्तरालमें हुए हैं । शान्तिनाथ,

कुम्भनाथ और अरनाथ, ये तीनों चक्रवर्ती तीर्थंकर भी थे । सुभोग चक्रवर्ती अरनाथ और मल्लिनाथ भगवानके अन्तरालमें, पद्म चक्रवर्ती मल्लि और मुनिसुव्रतके अन्तरालमें, हरिनेसु नामक चक्रवर मुनिसुव्रत और नमिनाथके मध्यकालमें, जयसेन चक्रवर्ती नमिनाथ और नेमिनाथ जिनके अन्तरालमें तथा ब्रह्मदत्त नामक चक्रवर्ती नेमिनाथ और पार्श्वनाथ तीर्थंकरके अन्तरालमें हुए हैं ॥१२६४-१२६५॥

तीर्थंकर एवं चक्रवर्तियोंके प्रत्यक्ष एवं परोक्षताको प्रदर्शित करनेवाली संहट्टिका स्वरूप—

बोसीसाण कोट्टा, काइव्वा तिरिय - रुव - पंतीए ।

उइवेण बे कोट्टा, काव्वाण पढम - कोट्टेसु ॥१२६८॥

पण्णरसेसु जिणिदा, निरंतरं बोसु सुण्णया तसो ।

तिणि जिजा बो सुण्णा<sup>१</sup>, इगि जिण बो सुण्ण एवक जिणो<sup>२</sup> ॥१२६९॥

बो सुण्णा<sup>३</sup> एवक जिणो, इगि सुण्णो इगि जिणो य इगि सुण्णो ।

बेणि जिजा "इवि कोट्टा, निविट्टा तिरिय - कत्ताणं" ॥१३००॥

बो कोट्टेसु चक्की, सुण्णं तेरससु चक्किणो छक्के ।

सुण्ण तिय चक्कि सुण्णं, चक्की बो सुण्ण चक्कि "सुण्णो य ॥१३०१॥

चक्की बो सुण्णाइं, छक्कड - बईण चक्कवट्ठीणं ।

एवे कोट्टा कमसो, संविट्ठी एवक - बो अंका ॥१३०२॥

|   |   |   |   |   |   |   |   |   |   |   |   |   |   |   |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ |
| २ | २ | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० |

|   |   |   |   |   |   |   |   |   |   |   |   |   |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ० | ० | १ | १ | १ | ० | ० | १ | ० | ० | १ | ० | ० |
| २ | २ | २ | २ | २ | २ | ० | ० | ० | २ | ० | २ | ० |

|   |   |   |   |   |   |
|---|---|---|---|---|---|
| १ | ० | १ | ० | १ | १ |
| ० | २ | ० | २ | ० | ० |

१. व. व. क. ज. य. उ. सुण्णा । २. व. व. क. ज. य. उ. जिणा । ३. व. व. क. ज. य. उ. सुण्णो । ४. व. व. क. ज. य. उ. इगि । ५. य. कत्ताणं । ६. द. व. क. ज. य. उ. सुण्णा । ७. व. व. प्रत्योः समस्तन-कोट्टेसु छक्क २ स्थाने १ इति पाठः ।

**अर्थ :**—तिरछी पंक्तिके रूपमें चौत्तीस कोठे धीरे ऊर्ध्वरूपसे दो कोठे बनाकर इनमेंसे ऊपरके प्रथम पन्द्रह कोठोंमें निरन्तर तीर्थकर इसके आगे दो कोठोंमें शून्य, तीन कोठोंमें तीर्थकर, दोमें शून्य, एकमें तीर्थकर, दोमें शून्य, एकमें तीर्थकर, दोमें शून्य, एकमें तीर्थकर, एक शून्य, एक तीर्थकर, एक शून्य और दो तीर्थकर, इस प्रकार तीर्थकरोंके कोठों में अष्टादश कोठे हैं। इनमें से दो में चक्रवर्ती, तेरहमें शून्य, छहमें चक्रवर्ती, फिर तीन शून्य, चक्रवर्ती, शून्य, चक्रवर्ती, दो शून्य, चक्रवर्ती, शून्य, चक्रवर्ती और फिर दो शून्य, क्रमशः ये छह शब्दोंके अधिपति चक्रवर्तियोंके कोठे हैं। जिनमें संहति के लिए क्रमशः एक और दो के अङ्क ग्रहण किये गये हैं तथा शून्य अन्तराल का सूचक है ॥१२६८-१३०२॥

( संहति मूलमें देखिए )

भरतादिक चक्रवर्तियोंके शरीरकी ऊँचाई—

पंच सया पञ्चाह्वय - चउस्सया दोसु-हरिव-पणसीदी ।

कु - बिहत्ता चउसीदी, चासं पणसीस तीसं च ॥१३०३॥

वंड ५०० । ४५० । ५५ । ५४ । ४० । ३५ । ३० ।

अट्टासीस बुवीसं, बीसं पण्णरस सत्त इय कमसी ।

बंडा चवकहराण, भरहु - प्पमुहाण उस्सेहो ॥१३०४॥

२८ । २२ । २० । १५ । ७ ।

**अर्थ :**—भरतादिक चक्रवर्तियोंकी ऊँचाई क्रमशः पचासो, पचास अधिक चारसो (४५०), दोसे भाजित पचासी (४२६), दोसे भाजित चौरासी ( ४२ ), चालीस, पैंतीस, तीस, अट्ठाईस, बीस, बीस, पन्द्रह और सात धनुष प्रमाण की ॥१३०३-१३०४॥

चक्रवर्तियोंकी आयु आदिका प्रमाण कहने की प्रतिज्ञा—

आऊ कुमार-मंडलि-परिजय-रज्जाण 'संजम-ठिदीए ।

चक्कीण काल - माण, बोच्छामि जहाणुपुच्छीए ॥१३०५॥

अर्थ :—अब मैं ( श्री यतिवृषभाचार्य ) अनुक्रमसे चक्रवर्तियोंकी आयु, कुमारकाल, मण्डलोककाल, विविजय काल, राज्य काल और संयमकालका प्रमाण कहता हूँ ॥१३०५॥

चक्रवर्तियोंकी आयु—

चतुरम्भहिया सीबी, बाहत्तरि पुष्पयाणि लक्ष्मणि ।  
पंच तिय एक चतुर-लक्ष्मणि पंच-चत्वारि कुलसीदी ॥१३०६॥  
सट्ठी तीसं वस तिय, बास-सहस्त्राणि सत्त य सय्याणि ।  
कमसो भरहावीणं, चक्कीणं ग्राउ - परिमाणं ॥१३०७॥

आउ पुष्प ८४ ल । पुष्प ७२ ल । वरिस ५ ल । ३ ल । १ ल । २५००० । ८४००० ।  
६०००० । ३०००० । १०००० । ३००० । ७०० ।

॥ आऊ परिमाणं गदं ॥

अर्थ :—भरतादिक चक्रवर्तियोंकी आयुका प्रमाण क्रमशः चौरासीलाख पूर्व, बहतर लाख पूर्व, पाँच लाख वर्ष, तीन लाख वर्ष, एक लाख वर्ष, पंचानवे हजार, चौरासी हजार, साठ हजार, तीस हजार, वस हजार, तीन हजार और सातसौ वर्ष है ॥१३०६-१३०७॥

। आयु प्रमाण कालका कयन पूर्ण हुआ ।

कुमार-कालका प्रमाण—

सत्तसरि - लक्ष्मणि, पण्णास - सहस्त्रयाणि पुष्पाणि ।  
पण्णीस - सहस्त्राई, बासाणं ताइ - विगुणाई ॥१३०८॥  
पुष्प ७७ ल । पु ५०००० । वस्त २५००० । ५०००० ।  
पण्णीस - सहस्त्राई, सेवीस - सहस्त्र-सत्त - सय-पण्णा ।  
इगिबीस - सहस्त्राणि, पंच - सहस्त्राणि पंच - सया ॥१३०९॥

२५००० । २३७५० । २१००० । ५००० । ५०० ।

पण्णीसाहिय-ति-सया, ति-सयाई अट्ठीस इय कमसो ।  
भरहाविसु - चक्कीणं, कुमार - कालसस परिमाणं ॥१३१०॥

३२५ । ३०० । २८ ।

। कुमार-कालं गदं ।

अर्थ :—भरतादिक चक्रवर्तियोंका कुमार-काल क्रमशः सत्तर लाख पूर्व, पचास हजार पूर्व, पच्चीस हजार वर्ष, पचास हजार वर्ष, पच्चीस हजार वर्ष, तेईस हजार सात सौ पचास वर्ष, इक्कीस हजार वर्ष, पाँच हजार वर्ष, पाँचसौ वर्ष, तीन सौ पच्चीस वर्ष, तीनसौ वर्ष और अट्ठाईस वर्ष प्रमाण था ॥१३०८-१३१०॥

। कुमार-कालका कथन समाप्त हुआ ।

मण्डलीक-कालका प्रमाण—

एकं वास - सहस्त्रं, पञ्चास - सहस्त्राणि पुञ्जाणि ।  
पञ्चोस - सहस्त्राणि, पञ्चास - सहस्त्राणि वासाणं ॥१३११॥

व १००० । पु ५०००० । व २५००० । ५०००० ।

पञ्चोस - सहस्त्राणि, तेथोस-सहस्त्र-सप्त-सय-पञ्चा ।  
इगिथोस - सहस्त्राणि, पंच - सहस्त्राणि पंच - सया ॥१३१२॥

२५००० । २३७५० । २१००० । ५०००० । ५००

पञ्चोसाह्व-ति-सया, ति-सया छप्पण इय-कमेण पुढं ।  
मंडलि - काल - पमाणां, भरह - प्यमुहान चक्कीणं ॥१३१३॥

१२५ । ३०० । ५६ ।

। मंडलिक-कालं गदं ।

अर्थ :—भरतादिक चक्रवर्तियोंके मण्डलीक कालका पृथक्-पृथक् प्रमाण क्रमशः एक हजार वर्ष, पचास हजार पूर्व, पच्चीस हजार वर्ष, पचास हजार वर्ष, पच्चीस हजार वर्ष, तेईस हजार सातसौ पचास वर्ष, इक्कीस हजार वर्ष, पाँच हजार वर्ष, पाँचसौ वर्ष, तीससौ पच्चीस वर्ष, तीन सौ वर्ष और ५६ वर्ष है ॥१३११-१३१३॥

। मण्डलीक-काल समाप्त हुआ ।

चक्ररत्नकी उपलब्धि एवं दिग्विजय प्रस्थान—

अह भरह-प्यमुहानं, आयुध-सात्तासु भुवन - विम्हपरा ।  
गद - जन्मंतर - कय - तव - ज्ञेय छप्पणवे चमकं ॥१३१४॥

अर्थ :—पूर्वजन्ममें किये गये तपके बलसे भरतादि चक्रवर्तियोंकी आयुषसालाओंमें लोकको आश्चर्य उत्पन्न करनेवाला चक्ररत्न उत्पन्न होता है ॥१३१४॥

चक्रकुप्यति - पहिस्ता, पूजं कावूय निणवरिवाणं ।

पच्छा विषय - पयारणं, ते पुण्य - दिसाए कुर्वन्ति ॥१३१५॥

अर्थ :—चक्रकी उत्पत्तिसे अतिशय हर्षको प्राप्त हुए वे चक्रवर्ती जिनेन्द्रोंकी पूजा करके पश्चात् विषयके निमित्त पूर्व-दिशामें प्रयाण करने हैं ॥१३१५॥

सुरसिद्धे लीरं, धरिऊयं अंति दुण्य - विम्भाए ।

मरुदेव - गाम - मन्ने, णो कासावो जावमुवजलहि ॥१३१६॥

अर्थ :—वे ( चक्रवर्ती ) गङ्गानदीके तटका सहारा लेकर पूर्वदिशामें जाकर और वहाँ मरुदेव नामक देवकी साधकर ( वनमें करके ) कुछ कालमें उपसमुद्र-पर्यन्त जाते हैं ॥१३१६॥

गंगा सम्बन्धी विम्बवनमें पडात्र—

अम्पविसिऊय गंगा - उववण - वेवीए तोरणद्वारे ।

उत्तर - मुहेण पविसिय, खउरंग - बलेण संजुसा ॥१३१७॥

गंतुं पुम्माहिमुहं, वीणोववणस्स वेदियाद्वारे ।

सोबाणे चडिऊयं, गंगा - वारम्मि' गच्छन्ति ॥१३१८॥

अर्थ :—इसके आगे गङ्गानदी सम्बन्धी उपवन-वेदीमें प्रवेश न करके चतुरङ्गबलसे संयुक्त होते हुए वे चक्रवर्ती उत्तरद्वारसे तोरणद्वारमें प्रवेश करके पूर्वकी ओर जानेके लिए जम्बूद्वीप-सम्बन्धी उपवनवेदिकाके द्वारवाला सीढ़ियों पर चढ़कर गङ्गाद्वारमें होकर जाते हैं ॥१३१७-१३१८॥

गंतूणं लीसाए, सन्निग्गय - रम्म - बिल्ल - वण-मण्णे ।

पुम्मावर - आपामे, खउरंग - बलाणि गच्छन्ति ॥१३१९॥

अर्थ :—इसप्रकार लीखामात्रसे जाकर पूर्वसे पश्चिम पर्यन्त लम्बे नदी-सम्बन्धी रमणीय एवं दिव्य वनमें चतुरङ्गसेना सहित ठहर जाते हैं ॥१३१९॥



जलस्तम्भिनी निद्याकी सिद्धि एवं समुद्र प्रवेश—

मंतीनं उद्धरोहे, जलवर्धं साहयंति चक्रहरा ।

रत्न-वर - सुरंग - धरिरे', अजिह्वजय - नामधेय - रहे ॥१३२०॥

आरुहिकुणं गंगा - दारेण पविसिन्नुष लवणुर्वाहि' ।

बारस - जोयण - मेसं, सखे गच्छंति गो परबो ॥१३२१॥

अर्थ :—वहीपर चक्रवर्ती मन्त्रियोंके आग्रहसे जलस्तम्भ ( जलस्तम्भिनी ) निद्या सिद्ध करते हैं । पुनः इस उत्तम योद्धासे धारण किए गये अजितकुजय नामक रथ पर चढ़कर और मङ्गा-द्वारसे प्रवेशकर वे सब <sup>मन्त्रियोंके</sup> <sup>अनुसार</sup> <sup>बारह</sup> <sup>योजन</sup> <sup>प्रमाण</sup> <sup>जोते</sup> <sup>हैं</sup>, आगे नहीं ॥१३२०-१३२१॥

मागधदेवको वध करना—

मागधदेवस्स तवो, ओसगसात्वाए रयज-वर-कससं ।

विधंति सज्जमकिद - बाणेण अमोघ - नामेण ॥१३२२॥

अर्थ :—फिर वहाँसे अपने नामसे अङ्कित अमोघ नामक बाण-द्वारा मागधदेवकी ओसग-शालाके रत्नमय उत्तम कलशकी भेदते हैं ॥१३२२॥

सोदूण सर - जिगावं, 'मागधदेवो वि कोहुमुज्जहइ ।

ताहे' तस्स य मंती, वारंते महर - सहेण ॥१३२३॥

अर्थ :—बाणके शब्दको सुनकर मागधदेव भी क्रोध प्रारण करता है किन्तु उस समय उसके मन्त्री उसे मधुर-शब्दों द्वारा ( ऐसा करनेसे ) रोकते हैं ॥१३२३॥

रयजमय - पटलिहाए, कांडं' घेसूण कुण्डलादि च ।

यसा मागधदेवो', वणमइ चक्कीण पयसूसे ॥१३२४॥

अर्थ :—तब वह मागधदेव रत्नमय पटलिका (पिटारी) में उस बाण और कुण्डलादिकको लेकर चक्रवर्तीको देता है और उनके चरणोंमें प्रणाम करता है ॥१३२४॥

१. क. ज. घ. उ. धरिरे' । २. व. अ. ब. मरुतुर्वाहि, क. मरुतुर्वाहि । उ. मरुतुर्वाहि । ३. व. व. क. ज. घ. उ. मागधदेवा । ४. व. अ. क. अ. म. उ. तादे । ५. अ. व. क. उ. कर्ह' । ६. व. अ. क. अ. म. उ. मागधदेवा ।

ते तस्त अभय - वधनं, दाहूय य मागहेण सह सव्ये ।

पबिसिय 'संभावारं, विजय - पयाणाणि कुम्भन्ति ॥१३२५॥

अर्थ :—वे उसे अभय-वधन देकर और ( उमी ) मागधदेवके साथ वे सब कटकमें प्रवेश-कर विजयके लिए प्रस्थान करते हैं ॥१३२५॥

वरतनु एवं प्रभासदेवको वश करना—

तस्यो जम्बूद्वीपः सप्तद्वीपः सीमन्तः प्रदक्षिणयेन ते जति ।

जम्बूद्वीपस्त पुढं, दक्षिण - वर - बहुजयंत - वारंतं ॥१३२६॥

अर्थ :—फिर वे वहाँसे उपवनके बीचमें होकर द्वीपके प्रदक्षिणरूपसे जम्बूद्वीपके वैजयन्त-नामक उत्तम दक्षिणद्वारके समीप तक जाते हैं ॥१३२६॥

वारम्मि बहुजयंते, पबिसिय 'सवणं'बुहिम्मि चकहरा ।

पुण्णं च कुणन्ति वसं, वरतनु नामंकिथ - सरेणं ॥१३२७॥

अर्थ :—वे चक्रवर्ती वैजयन्त द्वारसे लवण समुद्रमें प्रवेश कर पूर्वके सहस्र ही अपने नामांकित बाणसे वरतनु नामक देवको वशमें करते हैं ॥१३२७॥

तस्यो आगंतुनं, संभावारम्मि पबिसिऊणं च ।

दीवोववण - प्पहेणं, गच्छन्ते सिधु - वण - वेवि ॥१३२८॥

अर्थ :—पुनः वहाँसे आकर और कटकमें प्रवेश कर द्वीपोंपवनके मार्गसे सिन्धु नदी सम्बन्धी वन-वेदिका की ओर जाते हैं ॥१३२८॥

तीए 'तोरण-वारं, पबिसिय पुण्णं च लवण-जलरासि ।

सिधु - णदीए वारं, पबिसिय साहंति ते प्रभासपुरं ॥१३२९॥

अर्थ :—उसके तोरण-द्वारमें प्रवेशकर और सिन्धु नदीके द्वारसे लवण समुद्र की जलराशिमें भीतर जाकर वे चक्रवर्ती प्रभासदेवकी सिद्ध करते हैं ॥१३२९॥

वैताळप देव एवं विद्याधरों पर विजय—

तप्तो पुष्पाहिमुहा, बीबोववणस्स द्वार - सोद्यानं ।

अडिबूणं वण - मज्झे, अलंति उववत्सहि - सीमंतं ॥१३३०॥

अर्थ :—वहाँसे पूर्वाभिमुख होकर द्वीपोपवनके द्वारकी सीढ़ियोंपर चढ़कर वनके मध्यमेंसे उपसमुद्रकी सीमा तक जाते हैं ॥१३३०॥

तप्पश्लिघि-वेदि-द्वारे, पंथंग-इसाणि तानि निस्सरिया ।

सरि - तीरेण अलंते, वेयइडगिरिस्स जाव वण - वेदि ॥१३३१॥

अर्थ :—समुद्रके समीपकी वेदीके द्वारसे वे पंथाएँ निकलकर विजयार्धगिरिकी वन-वेदिका तक नदीके किनारे-किनारे जाते हैं ॥१३३१॥

तप्तो तव्वण - वेदि, अडिबूणं अंति पुब्ब - विज्जाए ।

तगिरि-मज्झिम-कूट-प्वजिघिमि वेदि-द्वार-परियंतं ॥१३३२॥

अर्थ :—फिर इसके आगे उस वन-वेदीका आश्रय करके पूर्व-दिशामें उस पर्वतके मध्यम-कूटके समीप वेदी-द्वार-पर्यन्त जाते हैं ॥१३३२॥

तद्दारेणं पबिसिय, वण - मज्झे अंति उत्तराहिमुहा ।

रज्जवाचल - तव - वेदि, पाविय सीए वि चेहुंति ॥१३३३॥

अर्थ :—पश्चात् उस वेदी-द्वारसे प्रविष्ट होकर वनके मध्यमेंसे उत्तरकी ओर गमन करते हैं और विजयार्धके तटकी वेदी पाकर वहीं पर ठहर जाते हैं ॥१३३३॥

ताहे' तगिरि - मज्झिम - कूट वेयइड - बेंतरो जाम ।

आगंतुग - भय - बियसो, पवमिय अक्कीण यइसरइ ॥१३३४॥

अर्थ :—उस समय विजयार्धगिरिके मध्यम कूटपर रहते वाला वैताळप नामक व्यन्तरदेव आगन्तुक भयसे विकल होता हुआ प्रणाम करके शक्तियोंकी सेवा करता है ॥१३३४॥

तगिरि-वविल्लण-भागे, संठिय-पण्णास-अयर-सयर-गणा ।

समिहय आगच्छंते, पुब्बिल्लय तोरण - द्वारा ॥१३३५॥

अर्थ :—उस पर्वतके दक्षिणभागमें स्थित पचास नगरोंके विद्याधर-समूहोंको सिद्ध करके पूर्वोक्त तोरण-द्वारसे वापिस आते हैं ॥१३३२॥

कृतमानको वश करना—

ततो तम्बुज - बेदि, अडिबूजं एदि पञ्चिसाहिमुहा ।

सिधुबज-बेदि-पासे, पबिसंते तगिरिस्स विम्ब - वणं ॥१३३६॥

अर्थ :—इसके आगे उस वन-वेदीका आश्रय करके पश्चिमकी ओर आते हैं और सिधुबज-वेदीके पासमें उस पर्वतके दिव्य वनमें प्रवेश करते हैं ॥१३३६॥

ताहे तगिरि - कासी, कश्मालो जाम बेतरो बेबो ।

आगतूणं बेवजगिरि - वार - कवाड - फेडणोवायं ॥१३३७॥

अर्थ :—तब उस पर्वत पर रहनेवाला कृतमान नामक व्यन्तरदेव आ-करके विजयाश्व-पर्वतके द्वार-कवाट खोलनेका उपाय [ बतलाता है ] ॥१३३७॥

तिमिसगुफा द्वार उद्घाटन—

तस्सुबसेस - वसेणं, सेणवई सुरग - रयण - मारुहिय ।

गहिऊण वंड - रयणं, गिस्सरवि<sup>१</sup> सवंग - बल - जुत्तो ॥१३३८॥

अर्थ :—उसके उपदेशसे सेनापति सुरग रत्नपर चढ़कर और दण्ड-रत्नको ग्रहणकर वज्र-बल सहित निकलता है ॥१३३८॥

सिधु-बज-बेदि-द्वारं, पबिसिय गिरि-बेदि-तोरणद्वारे ।

गच्छिय तिमिसगुहाए, सोषाणे अडवि<sup>२</sup> बल - जुत्तो ॥१३३९॥

अर्थ :—वह सिधुबज-वेदीके द्वारमें प्रवेशकर पर्वतीय वेदीके तोरणद्वारमें होकर सैन्य-सहित तिमिसगुफाकी सीढ़ियोंपर चढ़ता है ॥१३३९॥

अवराहिमुहे गच्छिय, सोषाण - सएहि बबिज्ज-सुहेण ।

उत्तारिय<sup>३</sup> सयल-बलं, बज्जवि सरि - वणस्स मज्जेण ॥१३४०॥

अर्थ :—सो सीढ़ियोंसे पश्चिमकी ओर जाकर, फिर दक्षिणकी ओरसे सब सैन्यको उतारकर वह सेनापति नदीवनके मध्यमें होकर जाता है ॥१३४०॥

ततो सेनाहिर्वा, करयस - अरिदेव बंड - रमणेन ।

पहणदि कथाड - जुगलं, आभाए चकचकुीनं ॥१३४१॥

अर्थ :—तदनन्तर सेनाधिपति चक्रवर्तीकी आज्ञासे हस्ततलमें धारण किये हुए दण्डरत्नसे दोनों कपाटीपर प्रहारकरता है ॥१३४१॥

उद्यद्विष - कथाड - जुगलसंभंतर-यसरस-उह-भीबीए ।

बारस - जोयण - मैसं, तुरंग - रयणेन संघंति ॥१३४२॥

अर्थ :—(पश्चात् वह सेनापति) कपाट-युगलको उद्घाटितकर भीतर फैली हुई उष्णताके भयसे तुरङ्ग ( घोड़ा ) रत्न द्वारा बारह योजन-प्रमाण क्षेत्रको लांघता है ॥१३४२॥

म्लेच्छ-खण्डपर विजय—

गंतूण दक्खिणमुहो, सग-<sup>१</sup>पववासिब-जलम्मि पविसेदि ।

पण्णा पक्खिमवयणो, सेणावई गिरिवणं एदि ॥१३४३॥

अर्थ :—वह ( सेनापति ) दक्षिणकी ओर जाकर अपने प्रतिवासित सैन्यमें ( पडावमें ) प्रवेश करता है । पश्चात् वह सेनापति पश्चिमाभिमुख होकर पर्वतीय-वनको जाता है ॥१३४३॥

दक्खिणमुहेण ततो, गिरि - वण - वेदीए तोरणहारे ।

निस्सरिय मेच्छसंघं, साहेवि<sup>२</sup> य वाहिणी जुसो ॥१३४४॥

अर्थ :—पश्चात् दक्षिणमुख होकर पर्वतीय वन-वेदीके तोरणद्वारमेंसे निकलकर सैन्यसे संयुक्त होता हुआ वह म्लेच्छखण्डको सिद्ध करता है ॥१३४४॥

सब्बे छम्मासेहि, मेच्छ - अरिवा जलम्मि कावूलां ।

एवि<sup>३</sup> हु पुण्य - पहेंजं, वेयडगुहाए बार - परिचत्तं ॥१३४५॥

१. द. पडवासिद, द. क. ज. य. उ. पडवासिदं । २. व. क. उ. सासादि पदाहियां, द. ज. य. वासोदि पदाहियां । ३. द. व. क. ज. य. उ. एवे ।

अर्थ :—छह महिनोमें सब स्लेच्छ राजाओंको वस्त्रमें करके सेनापति पूर्व-मार्ग द्वारा बैतालघ-गुफाके द्वार-पर्यन्त जाता है ॥१३४५॥

कावुण वार-रखलं, वेव - बलं मेख्खराय - पवियरिओ ।

पविसिय खोवार, पणमिय चक्कीय पय - कमसे ॥१३४६॥

अर्थ :—वहाँ पर देव-सेनाको द्वारका रक्षक ( नियुक्त ) कर स्लेच्छ-राजाओंसे परिचारित वह सेनापति अपने पड़ावमें प्रविष्ट होकर चक्रवर्तीके चरण-कमलोंमें नमस्कार करता है ॥१३४६॥

तिमिलगुफाके लिए प्रस्थान, उसमें प्रवेश एवं उसके उत्तर-द्वारसे निष्काशन—

इय वस्सिणम्मि भरहे, खंड - कुअं साहिबूण सोलाए ।

पविसंति हु चक्कहरा, सिघुणईए वणं विउलं ॥१३४७॥

अर्थ :—इसप्रकार दक्षिणभारतमें दो सण्डोंको अनायास ही सिद्ध करके चक्रवर्ती सिन्धु-नदीके विशाल वनमें प्रवेश करते हैं ॥१३४७॥

गिरि-तट-वेदी-बारे, पविसिय गिरि-द्वार-रयण-सोवाणे ।

आहहिबूणं वक्कवि, सयल - बलं तण्णईअ दो - तीरे ॥१३४८॥

अर्थ :—पुनः गिरितट-सम्बन्धी वेदीके द्वारमें प्रवेश करके और गिरिद्वारको रत्नमय सीढ़ियों पर चढ़कर सम्पूर्ण सेना उस नदीके दोनों किनारों परसे जाती है ॥१३४८॥

वो - तीर - बोहि - रुं, वो-हो-ओमण-पमाणमेक्केक्कं ।

तेसुं महंणयारे, ए सक्कवे तं बलं गंतुं ॥१३४९॥

अर्थ :—दोनों तीरोंकी बीचियोंमेंसे प्रत्येकका विस्तार दो-वो योजन-प्रमाण है । उनमें घोर अन्धकार होनेसे चक्रवर्तीकी वह सेना आगे बढ़नेमें समर्थ नहीं होती है ॥१३४९॥

उववेसेण सुराणं, काकिणि - रणणेण सुरिदमात्तिहियं ।

सत्तहरं - रवि - बिवाणि, सेल-गुहा-उभय-भिस्सीसुं ॥१३५०॥

१. ड. व. क. ज. घ. ङ. पणम्मि । २. ट. व. क. ज. घ. ङ. चक्कीय । ३. ड. व. क. ज. घ. ङ. लम्हाई । ४. ड. व. घ. ङ. पमाणमेक्केक्कं । ५. ड. व. लक्कवं सममिस्सीसु । ६. ड. व. क. ज. घ. ङ. सत्तिकर ।

अर्थ :—तब देवोंके उपदेशसे ( विजयार्थ ) पर्वतीय गुफाकी दोनों दीवारों पर काफ़ी-रत्नसे शीघ्र ही चन्द्र और सूर्य-मण्डलोंके आलेख-चित्र बनाए गये ॥१३५०॥

एककोटक - जोषणंतर - लिहिदाणं ताण बित्ति उवजोवे ।

बज्जोवि सङ्गं - बलं, उग्मग्ग - निमग्ग - परियंतं ॥१३५१॥

अर्थ :—एक-एक योजनके घन्तरालसे लिखित अर्थात् अंकित उन बिम्बोंके प्रकाश देनेपर बड़ङ्ग-बल ( सेना ) उग्मग्ग-निमग्ग मरियों तक जाता है ॥१३५१॥

ताण सरियाण गहिरं, जलप्यवाहं सुबूर - बित्तिष्णं ।

उत्तरिबुं पि ए सक्कइ, सयल - बलं चक्कवट्टीणं ॥१३५२॥

अर्थ :—उन नदियोंके दूर तक विस्तारों और गहरे जलप्रवाहको ( पार ) उत्तरनेमें चक्कवर्तीकी सारी सेना समर्थ नहीं होती ॥१३५२॥

सुर-उववेस-अलेणं, बड्ढइ - रयणेण रयइ - संकमणे ।

आवहहि सङ्गं - बलं, तागो सरियाओ उत्तरहि ॥१३५३॥

अर्थ :—तब देवके उपदेशसे बड़ई-रत्न द्वारा पुलकी रचना करने पर बड़ङ्ग-बल ( सेना ) पुल पर चढ़ता है और उन नदियोंको पार करता है ॥१३५३॥

सेल - गुहाए उत्तर - बारेंणं जिस्सरेवि बल - सहिओ ।

बइ - पुच्छ - वेदि - बारे, गंतुं गिरिणंअणस्स भञ्जन्मि ॥१३५४॥

अर्थ :—इसप्रकार आगे गमन करते हुए नदीके पूर्व-वेदीदारसे पर्वत-वनके मध्यमें पहुँचनेके लिए चक्कवर्ती सैन्य-सहित विजयार्थकी गुफाके उत्तर द्वारसे निकलता है ॥१३५४॥

म्लेच्छ-सखोंपर विजय प्राप्त करते हुए सिन्धुदेवीको वल करना—

तस्य य वसस्य-सोहे, गाजातरु - संघ - मंडले' बिउले ।

बिस्तहरे चक्कहुरा, संघावारं निवेसंति ॥१३५५॥

अर्थ :—वहाँ चक्रवर्ती प्रशस्त घोषाको प्राप्त, विस्तृत एवं गाना वृक्षोंके समूहसे मण्डित वनमें सेनाको ठहराते हैं ॥१३५५॥

आणाए चक्रकोशं, सेराधई अबरभागा - मेच्छ - महि ।

साहिय छम्मासेहि, खंभाचारं समल्लियइ ॥१३५६॥

अर्थ :—पुनः चक्रवर्तीको आज्ञासे सेनापति पश्चिम भागके म्लेच्छ खण्डको वशमें कर छद्म नामसे पड़ावमें सम्मिलित हो जाता है ॥१३५६॥

जिगाछ्छते चक्रकी, गिरि - वन - बेबीए बार - मग्गेण ।

मज्झम्मि मेच्छसंड - प्यसाहणहुं बलेण कुवा ॥१३५७॥

अर्थ :—पश्चात् मध्यम म्लेच्छखण्डको सिद्ध करनेके लिए चक्रवर्ती सेना सहित पर्वतीय वन-वेदीके द्वार-मार्गसे निकलते हैं ॥१३५७॥

मेच्छ - महि - पद्मदेहि, तेहि सह मेच्छ-परवरं सखे ।

कुलदेवदा - बलेण, कुम्भं कुम्भंति घोरवरं ॥१३५८॥

अर्थ :—उस समय म्लेच्छ-मन्त्रीकी ओर प्रस्थित हुए उनके साथ सब म्लेच्छ राजा अपने कुलदेवताओंके बलसे प्रचण्ड युद्ध करते हैं ॥१३५८॥

बेत्तूण मेच्छराए, तसो सिधूए तीर - मग्गेण ।

गंतूण उत्तरमुहा, सिधूबेचो कुम्भंति वसं ॥१३५९॥

अर्थ :—अनन्तर चक्रवर्ती म्लेच्छ राजाओंको जीतकर सिन्धुनदीके तटवर्ती मार्गसे उत्तरकी ओर जाकर सिन्धुदेवीको वशमें करते हैं ॥१३५९॥

हिमवान् देवको वश करताः—

पुम्बाहिमुहा तसो, हिमवंत - वनस्स बेवि - मग्गेण ।

हिमवंत - कूड - पणिहो - परियंतं जाव गंतूणं ॥१३६०॥

जिय-नामंकिब-इसुणा, चक्रहारा विधिदूण साहंति ।

हिमवंत-कूड - संठिय - बेतर - हिमवंत - गाम - सुरं ॥१३६१॥



**अर्थ :-** इसके पश्चात् पूर्वाभिमुख होते हुए हिमवान् पर्वत-सम्बन्धी वनके बेसी-भार्गसे हिमवान् कूटके समीप तक आकर वे चक्रवर्ती अपने नामसे लिखित नामों के द्वारा गङ्गादेवी हिमवान् कूट-पर स्थित हिमवान् नामक अन्तर देवको सिद्ध करते हैं ॥१३६०-१३६१॥

वृषभगिरिपर प्रशस्ति लिखकर गङ्गादेवीको वश करना—

अह दक्षिण - भाएणं, बसहगिरि जाव ताव वरुवति ।

तगिरि - तोरणद्वारं, पविससे गिधयणाम - लिहणकुं ॥१३६२॥

**अर्थ :-** अन्तर चक्रवर्ती दक्षिणभागसे वृषभगिरि-पर्यन्त जाकर अपना नाम लिखनेके लिए उस पर्वतके तोरणद्वारमें प्रवेश करते हैं ॥१३६२॥

बहु - विजय - पसत्थीहि, गय-चक्कीणं चिरंतरं भरिदं ।

वसह - गिरिदे सध्मे, पवाहिणेणं 'दिलोवकति ॥१३६३॥

**अर्थ :-** वहाँ जाकर वे गत चक्रवर्तियोंकी बहुतसी ( अनेकों ) विजय-प्रशस्तियोंसे निरन्तर भरे हुए वृषभगिरिको प्रदक्षिणा देते हुए देखते हैं ॥१३६३॥

गिय-नाम-लिहणठानं, तिल - मैलं पव्वए' अपावता ।

गसिद - विजयाभिमाना, चक्की धिताए केहुंति ॥१३६४॥

**अर्थ :-** अपना नाम लिखनेके लिए पर्वत पर तिल-मात्र भी स्थान न पाकर चक्रवर्ती विजयाभिमानसे रहित होकर चिन्तायुक्त खड़े रह जाते हैं ॥१३६४॥

मंतीणं अमराणं, उद्धरोध - वसेण पुक्ख - चक्कीणं ।

नामानि एक - ठाणे, जिमणासिय बंड - रयणेण ॥१३६५॥

लिहिवूणं जिय - नामं, तत्तो गंतूण उत्तर - भुहेण ।

पाविय गंगा - कूडं, गंगादेवी कुणंति वसं ॥१३६६॥

**अर्थ :-** तब मन्त्रियों और देवताओंके आग्रहवश एक स्थानपर पूर्व चक्रवर्तियोंके नाम वण्डरत्नसे नष्ट करके और अपना नाम लिखकर वहाँसे उत्तरकी ओर जाते हुए गङ्गाकूटको पाकर गङ्गादेवीकी वशमें करते हैं ॥१३६५-१३६६॥

खण्डप्रपातगुफाका उदघाटन एवं उत्तरभरतपर विजय—

अह वज्रिण - भाएणं, गंगा - सरियाए तीर - मग्गेण ।

गंतूणं चेह्वंते, वेयइठ - वणम्मि चक्कहरा ॥१३६७॥

अर्थ :—वज्रवर्तीके आश्रमसे वेद-ग्रन्थोंके निर्यास लेकर मग्गसे गंतुकी ओर जाकर विजयार्थ-पर्वतके वनमें ठहर जाते हैं ॥१३६७॥

आणाए चक्कीणं, संघमुहाए कवाड - जुगलं पि ।

उग्याडिय सेणवई, पुठ्ठं पिय मेण्णसंठं पि ॥१३६८॥

साहिय तसो पविसिय, संघाबारं एसण - भत्त - मणा ।

चक्कीण चरण - कमले, पणमिय चेह्वंदि सेणवई ॥१३६९॥

अर्थ :—पुनः चक्रवर्तीकी आज्ञासे सेनापति खण्डप्रपातगुफाके दोनों कपाट खोलकर और पूर्व स्तेच्छ खण्डकी भी वशमें करके वहाँसे कटकमें प्रवेश करता है तथा प्रसन्नमन एवं भक्तिमान होकर चक्रवर्तीके चरण-कमलोंमें प्रणाम करके ठहर जाता है ॥१३६८-१३६९॥

वेयइठ - उत्तर - विसा-संठिय-मयरान लपररामा' य ।

चक्कीण चरण - कमले, पणमंति कुजंति दासत्तं ॥१३७०॥

अर्थ :—विजयार्थकी उत्तरदिशामें स्थित नगरोंके विशाखर राजा भी चक्रवर्तीके चरण-कमलोंमें नमस्कार करते हैं और उसका दासत्व स्वीकार कर लेते हैं ॥१३७०॥

इय उत्तरम्मि भरहे, मूचर - लखरावि साहिय समगं ।

वरुचंति वसेण जुवा, गंगाए जाव वण - वेवि ॥१३७१॥

अर्थ :—इसप्रकार चक्रवर्ती उत्तर भरतमें सम्पूर्ण भूमिगोचरी ( राजाओं ) और विद्या-धरोंको वशमें करके सैन्य सहित गङ्गाकी वन वेदी तक जाते हैं ॥१३७१॥

खण्डप्रपातगुफाके दक्षिणद्वारसे निष्काशन—

तन्वेदीए वारे, लीए उवण - खिदीसु लीलाए ।

पविसिय बलं समगं, निक्कावदि वज्रिण - मुहेण ॥१३७२॥

अर्थ :—उस वेदीके द्वारसे उसकी उपवन-भूमियोंमें लीला-भात्रसे प्रवेष्ट करके समस्त सैन्य दक्षिणमुखसे निकलता है ॥१३७२॥

गिरि-तट-वेदी-वारं, गच्छिष्य गुह-वार-रयण-सौवाणे ।

आरुह्य सङ्ग - बसं, चक्रवि बह - उन्नय - तीरेसुं ॥१३७३॥

पारमार्थिक :—आजारी की श्रुतिप्रमाणान्तर की प्रमाणान्तर

अर्थ :—तत्पश्चात् पर्वतकी तट-वेदीके द्वार तक जाकर और फिर गुफाद्वारके रत्न-सोपानों पर चढ़कर वह पङ्क्त-बल ( सेना ) नदीके दोनों तीरों परसे जाता है ॥१३७३॥

तन्गिरि-वारं पविस्त्रिय, हो - तीरेसुं गङ्गा उन्नय-सङ्गे ।

चक्रवि हो - हो ज्योतिष-मेते 'हं' - तीर - बीहीषं ॥१३७४॥

अर्थ :—उस पर्वतके द्वारमेंसे प्रवेष्ट कर वह सैन्य नदीके दोनों ओर दो तीरोंपर दो-दो योजन विस्तारवाली तट-भूमियों परसे जाता है ॥१३७४॥

पुष्पं च गुह्य - सङ्गं, गंतूषं दक्षिणेषु द्वारेण ।

गिरिकल्पिय सङ्ग - बसं, 'गंगा' - वरुण - मन्मथमावावि ॥१३७५॥

अर्थ :—पूर्वके सदृश ही ( खण्डप्रपात ) गुफाके बीचमेंसे जाकर और दक्षिण-द्वारसे निकलकर वह पङ्क्त-बल गङ्गावनके मध्यमें आ पहुँचता है ॥१३७५॥

अन्तिम स्तेच्छ खण्ड पर विजय एवं नगर प्रवेश—

बह-वण-वेदी-दारे, गंतूषं गिरि - वणस्त सङ्गम्भि ।

चेदुते चक्रहृता, लंघाद्वारेण परिवारिया ॥१३७६॥

अर्थ :—इसके पश्चात् सैन्यसे परिवारित चक्रवर्ती नदीकी वन-वेदीके द्वारमेंसे जाकर पर्वत-सम्बन्धी वनके मध्यमें ठहर जाते हैं ॥१३७६॥

अण्णाए चक्रकीर्ण, सेणवर्द्ध पुष्प - मेच्छसङ्गं पि ।

छम्मासेहि साह्य, लंघाद्वारं समस्त्रियवि ॥१३७७॥

अर्थ :—पुनः सेनापति चक्रवर्तीको आज्ञासे छह मासमें पूर्व म्लेच्छबण्डको भी वधमें करके स्कन्धावारमें आ मिलाता है ॥१३७७॥

तमिरि-यज-बेबीए, तोरण - दारेण दक्षिण - कुहेज ।

जिक्कलिय चक्कबड्डी, गिय - गिय - गयरेसु पचिसंति ॥१३७८॥

अर्थ :—अनन्तर चक्रवर्ती उस पर्वतकी वन-वेड़ीके दक्षिणमुख तोरण-द्वारसे निकलकर अपने-अपने नगरोंमें प्रवेश करते हैं ॥१३७८॥

चक्रवर्तियोंका दिग्विजय काल—

सट्टि तीसं वस दस, वास - सहस्ता सणक्कुमारंतं ।

अड छप्पण अड ति - सया, कमेण तचो य पठमंतं ॥१३७९॥

६०००० । ३०००० । १०००० । १०००० । ८०० । ६०० । ५०० । ४०० । ३०० ।

अर्थ :—समस्त भूमि पर विजय प्राप्त करने के लिये

हरिसेन - प्पमुहणं, परिमाणं विजय - कासस्स ॥१३८०॥

१५० । १०० । १६ ।

। एवं चक्कहुराणं विजय-कालो 'समथो ।

अर्थ :—( भरत चक्रवर्तीसे ) सनत्कुमार पर्यन्त विजय-कालका प्रमाण क्रमशः साठ हजार, तीस हजार, दस हजार, दस हजार, तथा पच चक्रवर्ती पर्यन्त क्रमशः आठ सौ, छह सौ पांच सौ, बारसौ और तीनसौ वर्ष है । पुनः हरिषेणादिक चक्रवर्तियोंमेंसे प्रत्येकका क्रमशः एक सौ पचास, एक सौ और सोलह वर्ष ही है ॥१३८०-१३८०॥

। इसप्रकार चक्रवर्तीके विजयकालका वर्णन समाप्त हुआ ।

चक्रवर्तियोंके वैभवका निर्देश—

अह गिय-गिय-गयरेसु, चक्कीण रत्तयाण सीलाए ।

विभवस्स य सब - मेसं, बोक्खामि जहानुप्पवीए ॥१३८१॥

कर्मवर्तीकः :- अथर्वणं श्री सुविशेषात्तमः श्री यक्षराजः

अर्थ :- अब अपने-अपने नगरोंमें लीखासे रमण करते हुए उन चक्रवर्तियोंके वैभवका यहाँ अनुक्रमसे किंचित् मात्र कथन करता हूँ ॥१३८१॥

आदिम-संहृदय-बुद्धा, सख्ये तवगिज्ज-अण्ण-वर-वेहा ।

सयस - सुलक्खण - भरिया, 'समचउरस्संग-संठाणा ॥१३८२॥

अर्थ :- सर्व चक्रवर्ती आदिके वज्रवृषभनारायण संहनन सहित, सुवर्ण सदृश वर्ण वाले, उत्तम शरीरके धारक, सम्पूर्ण सुलक्षणोंसे समन्वित और समचतुरस्ररूप शरीर-संस्थानसे संयुक्त होते हैं ॥१३८२॥

सम्भाओ भण - हराओ, अहिणव-लावण्य-रूप-रेहाओ ।

ध्वणउदि - सहस्साइं, पत्तेकं होंति जुववीओ ॥१३८३॥

१६०००

अर्थ :- प्रत्येक चक्रवर्तीके, मनको हरण करने वाली और अभिनव लावण्य-रूप रेखा-वाली कुल स्रपानवं हजार युवतियाँ ( स्त्रियाँ ) होती हैं ॥१३८३॥

'तासु' मज्जासंवे, बत्तीस - सहस्स - राजकन्याओ ।

सेवरराज - सुवाओ, तेसिय - मेत्ताओ मेण्ण-बूवाओ ॥१३८४॥

। ३२००० । ३२००० । ३२००० ।

अर्थ :- उनमेंसे बत्तीस हजार राजकन्याएँ आर्यखण्डकी इतनी ( ३२००० ) ही सुताएँ विद्याधर राजाओंकी और इतनी ( ३२००० ) ही मेण्ड-कन्याएँ होती हैं ॥१३८४॥

एककेक - जुवइ - रयणं, एककेककाणं हवेहि तवकीणं ।

भुंजंति हु तेहि समं, संकप्प - वसंगइं सोक्खं ॥१३८५॥

अर्थ :- प्रत्येक चक्रवर्तीके एक-एक युवति-रत्न होता है । वे उसके साथ संकल्पित ( इच्छित ) सुखोंको भोगते हैं ॥१३८५॥

संखेज - सहस्राहं, पुता पुत्तीयो होंति चक्कीज ।

गणबद्धवेव - गामा, बत्तीस - सहस्र ताण तहुरबत्ता ॥१३८६॥

अर्थः—संखेज :- अ. ग. क. त. पुता पुत्तीयो होंति चक्कीज ।

अर्थ :—प्रत्येक चक्रवर्तीके संख्यात हजार पुत्र-पुत्रियाँ होती हैं और बत्तीस हजार गणबद्ध नामक देव उनके अङ्गरक्षक होते हैं ॥१३८६॥

तणुवेज - महारसिया, कमसो ति-सयाइ सहु-पुताइ ।

बोहस-बर-रयणाइ, जीवाजीव्य - भेद - पु - बिहाइ ॥१३८७॥

[ ३९० : ३९० : १४ ]

अर्थ :—प्रत्येक चक्रवर्तीके चिकित्सक ( वैद्य ) तीसरी साठ, महान्तिक ( रसोदये ) तीसरी साठ और उत्तमरत्न चौबह होते हैं । ये रत्न जीव और धनोवके भेदसे दो प्रकारके होते हैं ॥१३८७॥

ते तुरय-हृत्वि-बद्धह, गिह्वह - सेणाबह सि रयणाइ ।

जुवइ-पुरोहित-रयणा, सत् जीवाणि ताव अभिहाणा ॥१३८८॥

पवधंजय-विजयनिरो, 'भदुमुहो तह य कामउहो य ।

होंति मउम्मु सुमदा, बुद्धिसमुहो चि पसेमं ॥१३८९॥

अर्थ :—उनमेंसे अश्व, हाथी, बकई, गृहपति, सेनापति, युवती और पुरोहित ये सात जीव-रत्न हैं । इनके नाम क्रमशः पवनञ्जय, विजयगिरि, भद्रमुख, कामवृष्टि, अयोध्य, सुसद्रा और बुद्धि-समुह हैं ॥१३८८-१३८९॥

तुरग-इभ-हृत्वि-रयणा, विजयद्वगिरिम्भि होंति खत्तारि ।

अवसेस - जीव - रयणा, जिय-सिय-णयरेसु अम्भंति ॥१३९०॥

अर्थ :—इन सात रत्नोंमेंसे तुरग, हाथी और स्त्री ये तीन रत्न विजयार्थ पर्वतपर तथा अवशिष्ट चार जीव-रत्न अपने-अपने नगरमें उत्पन्न होते हैं ॥१३९०॥

छुरासि-बंङ्ग-चक्का, काकिणि-बिन्तामणि रि रयणाइं ।

चम्म - रयणं च सराम, इय शिउजीवाणि रयणाणि ॥१३६१॥

अर्थ :—छत्र, असि, दण्ड, चक्र, काकिणी, बिन्तामणि और चर्म, ये सात रत्न निर्जीव होते हैं ॥१३६१॥

आदिम-रयण-चउक्कं, आयुह-सात्ताअ जायचे' तरों ।

तिणि वि रयणाइ पुढं, सिरिणिहे ताअ नाम इमे ॥१३६२॥

अर्थ :—इनमेंसे आदिके चार रत्न आयुधशालामें और शेष तीन रत्न श्रीगृहमें उत्पन्न होते हैं। उन सातों रत्नोंके नाम इसप्रकार हैं ॥१३६२॥

सूरप्पह - सुवमुहो, पचंङ्गेगा सुवरिसणो सुरिमो ।

बिन्ताजणणी बूडामणि मज्झमओ रि पत्तेक्कं ॥१३६३॥

अर्थ :—सूर्यप्रभ ( छत्र ), भूतमुख ( असि ), प्रचण्डवेग ( दण्ड ), सुवर्धन ( चक्र ), बिन्ताजननी ( काकिणी दोपिका ), बूडामणि ( बिन्तामणि ) और मज्झमय ( चर्मरत्न ) के क्रमशः ( नाम ) कहे गये हैं ॥१३६३॥

अह अह जोगाट्टाणे, उप्यक्खा भोहसाइ रयणाइं ।

इदि केई प्रायरिया, नियम - सक्कं ण मण्णंति ॥१३६४॥

[ पाठान्तरम् ]

अर्थ :—ये श्रीदह रत्न यथायोग्य स्थानमें उत्पन्न होते हैं । इसप्रकार कोई-कोई आचार्य इनके नियम रूपको नहीं भी मानते हैं ॥१३६४॥

( पाठान्तर )

चक्कोलु चामराणि, जक्खा बत्तोस विविस्संति तहा ।

आउट्टा कोडीओ, पत्तेक्कं बंधु - कुल - माणं ॥१३६५॥

। ३२ । ३५०००००० ।

गाथा : १३६६-१३६८ ]

चउत्थो महाहियारो

[ ४०१ ]

अर्थ :- चक्रवर्तियोंके चीनरोंकी बत्तीस यक्ष दुराया करते हैं। तथा प्रत्येक ( यक्ष ) के बन्धुकुसका प्रमाण साठे तीन करोड़ होता है ॥१३६६॥

काल-महाकाल-पण्डू, माक्षव-संज्ञा य पउम - गहसप्पा ।

विगल - जाचारयका, जव - जिहिणो सिरिपुरे जावा ॥१३६७॥

अर्थ :- काल, महाकाल, पण्डू, मानव, शङ्ख, पद्म, नैऋत, पिङ्गल और नानारत्न, ये नौ निधियाँ श्रीपुरमें उत्पन्न हुआ करती हैं ॥१३६७॥

काल-स्पमुहा जावा - रयणंता ते गई - मुहे जिहिणो ।

उप्पज्जदि इदि केई, पुब्बाइरिया परुवेत्ति ॥१३६७॥

[ पाठान्तरम् ]

अर्थ :- कालनिधिको आदि लेकर नानारत्न-पर्यन्त के निधियाँ नदी मुखमें उत्पन्न होती हैं, इसप्रकार भी कितने ही पूर्वोक्तार्थ निरूपण करते हैं ॥१३६७॥

( पाठान्तर )

उहु-ओग्ग-वस्स-भायण-वण्णाउहु-सूर-वत्थ - हम्मणि ।

आभरण-रयण-गियरा, जव - जिहिणो वेत्ति' पसेयं ॥१३६८॥

अर्थ :- इन नौ निधियोंमेंसे प्रत्येक निधि क्रमशः ऋतुके योग्य द्रव्य, साजन, धान्य, मायुष्य, वाणिज्य, वस्त्र, हर्म्य, आभरणा और रत्नसमूहोंको दिया करती है ॥१३६८॥

इमिस्सज-मुह-आवसा, चउथीस हवन्ति वजस-वर-संज्ञा ।

एक्के - वकोडी लक्खो, हलाणि पुडवी बि' छस्संडा ॥१३६९॥

[ सं २४ । हल को १ न । ६ ।

अर्थ :- चक्रवर्तियोंके ( अधिकारमें ) चौबीस दक्षिणमुखावर्त श्वस एवं उत्तम शङ्ख, एक लाख करोड़ ( १०००००००००००० ) हल और चहूँ सप्तरूप पृथिवी होती है ॥१३६९॥



भेरी पडहा रम्मा, बारस पुह - पुह हवति चक्कीणं ।

बारस जोयण - मेसे, बेसे मुब्बरा - वर - सदा<sup>१</sup> ॥१४००॥

गोपीराजः १०१ ॥ १४०० ॥ १४०१ ॥ १४०२ ॥ १४०३ ॥ १४०४ ॥

अर्थ :—चक्रवर्तियोंके रमणीय भेरी और पटह धृक्-धृक् बारह-बारह होते हैं, जिनका उत्तम सम्य देसमें बारह योजन प्रमाण सुना जाता है ॥१४००॥

कोडि - तियं गो-संखा, पासीओ एक-कोडि-मेसाओ ।

बुलसीवी समखाहं, परोबकं भद् - वारण - रहाणि<sup>२</sup> ॥१४०१॥

को ३ । को १ । ४४ ल । ८४ ल ।

अर्थ :—उनकी गौओंकी संख्या तीन करोड़, पातियाँ एक करोड़ तथा भद्र-हाथी एवं रघोंमेंसे प्रत्येक चौरासी-चौरासी लाख प्रमाण होते हैं ॥१४०१॥

अठारस कोडीओ, तुरया बुलसीवि-कोडि-वर-वीरा ।

सयरा बहु - कोडीओ, अडसीहि-सहस्स-मेच्छ-वरजाहा ॥१४०२॥

को १८ । को ८४ । ० । ८८००० ।

अर्थ :—उनके अठारह करोड़ घोड़े, चौरासी करोड़ उत्तम वीर, कई करोड़ विद्याधर और अठासी हजार म्लेच्छ राजा होते हैं ॥१४०२॥

सख्याव मउडबडा, बत्तीस सहस्सयाणि पत्तेबकं ।

तेसिय - मेसा णट्टयसासा संगीव - सासाओ ॥१४०३॥

३२००० । ३२००० । ३२००० ।

अर्थ :—सब चक्रवर्तियोंमेंसे प्रत्येकके बत्तीस हजार मुकुटबद्ध राजा, इतनी ( ३२००० ) ही नाट्यशालाएँ और इतनी ( ३२००० ) ही सङ्गीत-शालाएँ भी होती हैं ॥१४०३॥

होति पदाभाणीया, दु-गुणिय-सउबीस-कोडि-परिमाणा ।

बत्तीस - सहस्साणि, वेसा चक्कीण पत्तेयं ॥१४०४॥

को ४८ । ३२००० ।

अर्थ :—प्रत्येक चक्रवर्तीके पदाधीन ( पदाति ) अड़तासीस करोड़ चौद देश बस्तीस हजार होते हैं ॥१४०४॥

छप्पउदि - कोदि गामा, पयराइं पंचहत्तरि - सहस्सा ।

अड - ह्य - पु - सहस्सार्णि, सेवा सम्बासा पसेवर्क ॥१४०५॥

को २६ । ७५००० । १६००० ।

अर्थ :—सर्व चक्रवर्तियोंमेंसे प्रत्येकके अध्यामर्ब करोड़ ग्राम, पंचहत्तर हजार नगर और आठसे गुणित दो ( सोलह ) हजार सेइ ( सेट ) होते हैं ॥१४०५॥

अउधीस - सहस्सार्णि, मयव - नामा मयव-नामा य ।

चत्तारि सहस्साइं, अडवाल - सहस्स - पट्टाईं पि ॥१४०६॥

अर्थ :—अउधीस से सहस्सार्णि नामा मयव-नामा य ।

२४००० । ४००० । ४८००० ।

अर्थ :—कर्बट चौबीस हजार, मयव चार हजार और पट्टन अड़तासीस हजार होते हैं ॥१४०६॥

णव - अउदि - सहस्साइं, संवा सेणामुहाण चक्कीसु ।

संवाहणानि अउदस - सहस्स - मेत्ता य पसेवर्क ॥१४०७॥

६६००० । १४००० ।

अर्थ :—प्रत्येक चक्रवर्तीके नित्यानर्ब हजार ओणमुख और चौदह हजार-प्रमाण संवाहन हुआ करते हैं ॥१४०७॥

छप्पण्णंतर बीवा, कुक्षि-णिवासा हवन्ति सस - सया ।

अडवीस - सहस्साइं, दुग्गाअवीयाणि सम्बेसु ॥१४०८॥

५६ । ७०० । २८००० ।

अर्थ :—सर्व चक्रवर्तियोंके छप्पन अन्तर्द्वीप, सात सौ कुक्षि निवास और अट्ठाईस हजार दुर्ग एवं वन भावि होते हैं ॥१४०८॥

दिव्यपुरं रम्य-निहि, 'बभ्रु-भायव-भोषणाह सभवं च ।

भासन - बाहव - गह्वर, दसंग - भोगा इमे तावन् ॥१४०६॥

अर्थ :—उन चक्रवर्तियोंके १ दिव्यपुर, २ रत्न, ३ निधि, ४ संन्य, ५ भाजन, ६ भोजन, ७ शय्या, ८ भासन, ९ बभ्रुन और १० माटय, ये दशाङ्ग भोग होते हैं ॥१४०६॥

परिचय :- आचार्य श्री गुरुदेवियोग्य श्री महादेव  
तालिका : ३३

### चक्रवर्तियोंकी नव-निधियोंका परिचय

| क्र. | नाम      | उत्पत्तिस्थान | प्रकारान्तरसे<br>उत्पत्ति स्थान | क्या प्रदान करती है ?                 |
|------|----------|---------------|---------------------------------|---------------------------------------|
| १    | काल      | श्रीपुर       | नदीमुख                          | ऋतुके अनुसार इन्ध ( फल, पुष्प आदि ) । |
| २    | महाकाल   | "             | "                               | भाजन ( बर्तन एवं वातुर्ण ) ।          |
| ३    | पाण्डु   | "             | "                               | धान्य ( घनाज एवं षट्त्स ) ।           |
| ४    | मानव     | "             | "                               | सायुध ( अनेक शस्त्र ) ।               |
| ५    | मह्व     | "             | "                               | वादित्र ( बाजे ) ।                    |
| ६    | पद्म     | "             | "                               | वस्त्र ( कपड़े )                      |
| ७    | नैसर्ग   | "             | "                               | हर्म्य ( महल एवं प्रासाद आदि ) ।      |
| ८    | पिञ्जल   | "             | "                               | ग्राहण ( गहने ) ।                     |
| ९    | नानारत्न | "             | "                               | रत्नसमूह ( अनेक प्रकारके रत्न ) ।     |

सालिका । ३४ ]

चलत्तो महाहियारो

[ ४०५ ]

सालिका । ३४

### चक्रवर्तियोंके चौदह रत्नोंका परिचय

| क्र० | नाम       | क्या है    | संज्ञा गाथा<br>१३८६ एवं<br>१३६३ | जीव या<br>मजीव | उत्पत्ति<br>स्थान | कार्य                                                             |
|------|-----------|------------|---------------------------------|----------------|-------------------|-------------------------------------------------------------------|
| १    | अवध       | घोड़ा      | पवनऊजय                          | जीव            | विजयाधं पर        | गुफा द्वार खुल जानेपर तुरंगरत्न द्वारा बारह यो. क्षेत्रको घोषणा । |
| २    | गज        | हाथी       | विजयगिरि                        | "              | "                 | सवारी करना ।                                                      |
| ३    | सुहृपति   | भण्डारी    | भद्रमुख                         | "              | स्व नगरमें        | भण्डार आदि की सन्हास करना ।                                       |
| ४    | स्थपति    | बढ़ई       | कामवृष्टि                       | "              | " "               | उत्पत्ति-निम्नता नदियोंपर पुल बनाना ।                             |
| ५    | सेनापति   | सेनाध्यक्ष | अयोध                            | "              | " "               | गुफाओंके द्वार खोलना एवं सेना संचालन ।                            |
| ६    | पुरोहित   | धर्मप्रेरक | सुखिसमुद्र                      | "              | " "               | धार्मिक अनुष्ठान कराना ।                                          |
| ७    | युवती     | पटरानी     | सुभद्रा                         | "              | विजयाधं पर        | उपभोगका साधन ।                                                    |
| ८    | चक्र      | आयुध       | सुदर्शन                         | अजीव           | आयुधवाला          | छह छण्ड विजयका प्रेरक साधन ।                                      |
| ९    | छत्र      | छतरी       | सूर्यप्रभ                       | "              | "                 | वर्षासे कटककी रक्षा करना ।                                        |
| १०   | असि       | आयुध       | भूतमुख                          | "              | "                 | जन्तुसंहार ।                                                      |
| ११   | दण्ड      | अस्त्र     | प्रचण्डवेग                      | "              | "                 | गुफाओंके कपाट खोलना एवं वृषभाचल पर प्रशस्ति लिखना ।               |
| १२   | काकिणी    | "          | विस्तारवनी                      | "              | श्रीगृह           | दीनों गुफाओंमें प्रकाश करना ।                                     |
| १३   | चिन्तामणि | रत्न       | चूषामणि                         | "              | "                 | मनोवाञ्छित कार्य सिद्धि करना ।                                    |
| १४   | चर्मरत्न  | तम्बू      | मज्जमसय                         | "              | "                 | जंघादि वस्त्रोंके अलङ्कार कटककी रक्षा करना ।                      |

सिन्धुपत्रिका के विभिन्न सामान्य परिचय-गा० १५८१ से १५८६ तक

| क्र० | वैभव नाम              | विशेषता एवं प्रमाण | क्र० | वैभव नाम        | विशेषता एवं प्रमाण |
|------|-----------------------|--------------------|------|-----------------|--------------------|
| १    | मरीर-संहनन            | वज्रवृषभनाराचसंहनन | २४   | वीर ( योद्धा )  | ८४ करोड़           |
| २    | मरीर-वर्ण             | स्वर्ण-सदृश        | २५   | विद्याधर        | अनेक करोड़         |
| ३    | मरीराकार              | समचतुरस्र-संस्थान  | २६   | म्लेच्छराजा     | ८८०००              |
| ४    | रानियाँ               | २६०००              | २७   | मुकुटबद्धराजा   | ३२०००              |
| ५    | पटरानी                | १                  | २८   | नाट्यशालाएँ     | ३२०००              |
| ६    | पुत्र-पृथिवी          | संख्यात हजार       | २९   | संगीतशालाएँ     | ३२०००              |
| ७    | गणपति नामक            | ३२०००              | ३०   | पदातिक          | ४८ करोड़           |
| ८    | अंगरक्षक देव          |                    | ३१   | देवा            | ३२०००              |
| ९    | वैद्य                 | ३६०                | ३२   | ग्राम           | ६६ करोड़           |
| १०   | रसोइया                | ३६०                | ३३   | नगर             | ७५०००              |
| ११   | उत्तम रत्न            | १४                 | ३४   | खेड़े           | १६०००              |
| १२   | नामक दोस्तेवासे यक्ष  | ३२                 | ३५   | कबूट            | २४०००              |
| १३   | प्रत्येकके मन्त्र-कुल | ३५००००००           | ३६   | मटब             | ४०००               |
| १४   | निधियाँ               | ६                  | ३७   | पट्टन           | ४८०००              |
| १५   | महल                   | २४                 | ३८   | द्रोणमुख        | ६६०००              |
| १६   | हल                    | एक लाख करोड़       | ३९   | संवाहन          | १४०००              |
| १७   | पृथिवी                | छह सप्प            | ४०   | अन्तर्द्वीप     | ५६                 |
| १८   | भेरी                  | १२                 | ४१   | कुम्हिनिकास     | ७००                |
| १९   | पटह                   | १२                 | ४२   | दुर्ग एवं कनाहि | २८०००              |
| २०   | गायें                 | ३ करोड़            | ४३   | दिव्य भोग       | १० प्रकार          |
| २१   | पालियाँ               | १ करोड़            |      |                 |                    |
| २२   | महाधी                 | ८४ लाख             |      |                 |                    |
| २३   | रथ                    | ८४ लाख             |      |                 |                    |
| २४   | घोड़े                 | १८ करोड़           |      |                 |                    |

ग्राम नगरादिकोंके लक्षण—

बहु - परिवेष्टो<sup>१</sup> ग्रामो, नयरं नरगोडरेहि रमणिरुजं ।

गिरि-सरिकव-परिवेष्टं<sup>२</sup>, खेडं गिरि-वेष्टिमं<sup>३</sup> च कव्यद्वयं ॥१४१०॥

अर्थ :—वृत्तिसे वेष्टित ग्राम, चार गोपुरोंसे रमणीय नगर, पर्वत एवं नदीसे घिरा हुआ घेष्ट और पर्वतसे वेष्टित कवंड कहलाता है ॥१४१०॥

पण-सय - पमाण - ग्राम - पहाणसूदं मडब-ग्रामं सु ।

नर - रयणाणं जोषी, पड्डण - ग्रामं विनिहिड्डं ॥१४११॥

अर्थ :—जो पाँचसौ ग्रामोंमें पहाणशाल होता है उसका नाम मडब और जो उत्तम रत्नोंकी योनि ( खान ) होता है, उसका नाम पड्डण कहा गया है ॥१४११॥

वोणामुहाहिहाण, सरिणइ - वेलाए वेष्टियं जाण ।

संवाहणं ति बहु - बिहरण - महासेल - सिहरत्वं ॥१४१२॥

[ । एवं विभवो समस्तो । ]

अर्थ :—समुद्रको वेलासे वेष्टित द्रोणमुख और बहुत प्रकारके अरण्योंसे युक्त महापर्वतके शिखर पर स्थित संवाहन जानना चाहिए ॥१४१२॥

। इसप्रकार विभवका वर्णन समाप्त हुआ ।

चक्रवर्तियोंके राज्य-कालका प्रमाण—

भरहे छ-लख-पुण्या, इगिसट्टि-सहस्स-वास-परिहीणा ।

तीस - सहस्सुणाणि, सत्तरि लख्खाणि पुण्य सगरम्मि ॥१४१३॥

। पु ६ ल । रिण वरिस ६१००० । सगर पुण्य ७० ल । रिण ३०००० ।

अर्थ :—भरत चक्रवर्तीके [ राज्य-कालका प्रमाण ] एकसठ हजार वर्ष कम छह लाख पूर्व और सगर चक्रवर्तीके राज्य-कालका प्रमाण तीस हजार वर्ष कम सत्तर लाख पूर्व प्रमाण है ॥१४१३॥

१. द. व. क. ज. य. उ. परिवेष्टो । २. द. व. क. ज. य. उ. परिवेष्टं । ३. द. व. ज. उ. वेष्टिं, क. वेष्टिं, य. वेष्टं । ४. द. व. क. ज. य. उ. वेष्टिं ।

जडवि-सहस्स-जुवाणि, सप्तसार्णि तिग्नि मधव-शामम्नि ।

जडवि - सहस्सा वासं, सप्तकुमारम्नि चक्रहरे ॥१४१४॥

३६०००० । ६०००० ।

अर्थ :—मधवा नामक चक्रवर्तीका राज्यकाल तीन लाख नव्वे हजार वर्ष और सप्तकुमार चक्रवर्तीका राज्यकाल नव्वे हजार वर्ष प्रमाण है ॥१४१४॥

जडवीस - सहस्सार्णि, वासार्णि वो - समानि संतिम्नि ।

तेवीस - सहस्साहं, इति - सय - पञ्चाहिषाद कु'धुम्नि ॥१४१५॥

२४२०० । २३१५० ।

अर्थ :—शान्तिनाथ चक्रवर्तीके राज्यकालका प्रमाण बीबीस हजार दोसो वर्ष और कुन्धुनाथके राज्यकालका प्रमाण तेईस हजार एक सौ पचास वर्ष है ॥१४१५॥

वीस - सहस्सा वस्सा, छस्सय-जुसा भरम्नि चक्रहरे ।

उनवण - सहस्साहं, पण - सय - जुसा सुभउमम्नि ॥१४१६॥

। २०६०० । ४६५०० ।

अर्थ :—अरनाथ चक्रधरका राज्यकाल बीस हजार छहसो वर्ष और सुभोम चक्रवर्तीका राज्यकाल उनचास हजार पाँचसो वर्ष प्रमाण है ॥१४१६॥

अट्टरस - सहस्सार्णि, सत्त - सएहि समं तहा पउमो ।

अट्ट - सहस्सा छट्ठ - सय, पण्णअहिषा य हरिसेणे ॥१४१७॥

। १८७०० । ८८५० ।

अर्थ :—पद्म चक्रवर्तीके राज्यकालका प्रमाण अठारह हजार सातसो वर्ष और हरिसेण चक्रवर्तीके राज्यकालका प्रमाण आठसो पचास अधिक आठ हजार वर्ष है ॥१४१७॥

उनवीस - सया वस्सा, अयसेणे बन्हुदस - नामम्नि ।

चक्रहरे छ - समानि, परिमाणं रउजकासस्स ॥१४१८॥

१६००० । ६००० ।

। एवं रउजकालो समसो ।







अर्थ :—इन बारह चक्रवर्तियोंमेंसे आठ चक्रवर्ती मोलको, बहादुर और सुभोम सातवीं पृथिवीको तथा मल्लवा एवं सनत्कुमार चक्रवर्ती समत्कुमार नामक तीसरे कल्पको प्राप्त हुए हैं ॥१४२२॥

॥ इसप्रकार चक्रवर्तियोंकी प्ररूपणा समाप्त हुई ॥

बलदेव, नारायण एवं प्रतिनारायणोंके नाम—

विजयो अचलो धर्मो, 'सुप्रहृणामो सुबंसणो णंदी ।  
नंदिमित्तो य रामो, 'पञ्चमो णव हंति बलदेवा ॥१४२३॥

। ६ ।

अर्थ :—विजय, अचल, धर्म, सुप्रम, सुदर्शन, नन्दी, नन्दिमित्र, राम और पञ्च ये नौ बलदेव हुए हैं ॥१४२३॥

पार्श्ववर्तिका :—आचार्य श्री सुविदितामृत श्री श्रीमदभ्य

हंति त्रिविष्ट-बुविष्टा, सयंभु-पुरिसुसमा य पुरिससिहो ।  
पुरिसधर - पुंडरीओ, दत्तो नारायणो किण्हो ॥१४२४॥

। ६ ।

अर्थ :—त्रिपृष्ठ, द्विपृष्ठ, स्वयंभू, पुरुषोत्तम, पुरुषसिंह, पुरुषपुण्डरीक, पुरुष-दत्त, नारायण ( सक्मण ) और कृष्ण ये नौ नारायण हुए हैं ॥१४२४॥

अस्सग्गीवो तारण - भेरण - मधुकीटभा<sup>१</sup> णिसुंभो य ।  
बलि - पहरणो य रावण - जरसंघा<sup>२</sup> णव य पडिसत्तू ॥१४२५॥

। ६ ।

अर्थ :—अश्वघोष, तारक, भेरक, मधुकीटभ, निशुम्भ, बलि, प्रहरण, रावण और जरसंघ ये नौ प्रतिशत्रु ( प्रतिनारायण ) हुए हैं ॥१४२५॥

१. ब. उ. सुहृणामो । २. द. व. क. ज. य. उ. पञ्चमो एते एव बलदेवा य विष्णवे । ३. द. व. क. ज. य. उ. पुंडरीया । ४. ब. क. उ. मधुकीटया । ५. द. व. क. ज. य. उ. जरसिंघ ।

बलदेव-वासुदेव-व्यडिससूरां जाभावहुं संविष्टी—

पंच जिनिदे बं वति, केसवा पंच आहुपुण्णीए ।

सेयंससामि - पहुँचि, तिनिहु - समुहा य पत्तेकं ॥१४२६॥

बलदेव, वासुदेव एवं प्रतिशत्रुओंको जाननेके लिए संदृष्टि—

अर्थ :- विष्णु आदिक पाँच नारायणोंमेंसे प्रत्येक नारायण क्रमशः श्रेयांसस्वामी आदिक पाँच तीर्थंकरोंकी वन्दना करते हैं ( प्रारम्भके पाँच नारायण क्रमशः श्रेयांसनाथ आदि पाँच तीर्थंकरोंके कालमें ही हुए हैं ) ॥१४२६॥

अर - मल्लि - अंतराले, णावन्वो पुंङ्करीय-णामो' सो ।

मल्लि - मुणिसुखयाणं, विज्जाले इत्त - चामो' सो ॥१४२७॥

अर्थ :- अर और मल्लिनाथ तीर्थंकरके अन्तरालमें वह पुंङ्करीक तथा मल्लि और मुनि-सुखतके अन्तरालमें इत्त नामक नारायण जानना चाहिए ॥१४२७॥

सुखय - णमि - सामीणं, मज्जे णारायणो समुपपणो ।

जेमि - समयम्मि किण्णो, एवे णव वासुदेवा य ॥१४२८॥

अर्थ :- मुनिसुखतनाथ और नमिनाथ स्वामीके मध्यकालमें नारायण ( लक्ष्मण ) तथा नेमिनाथ स्वामीके समयमें कृष्ण नामक नारायण उत्पन्न हुए थे । ये नौ वासुदेव भी कहलाते हैं ॥१४२८॥

इत्त सुण्ण पंच केसव, छस्सुण्णा केसि सुण्ण केसीओ ।

तिय-सुण्णमेक्क-केसी, वो सुण्णं एक्क केसि तिय सुण्णं ॥१४२९॥

[ संदृष्टि भगवत् पृष्ठ पर देखिये ]

|   |   |   |   |   |   |   |   |   |   |   |   |   |   |   |   |   |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | ० |
| २ | २ | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | २ |
| ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० |

|   |   |   |   |   |   |   |   |   |   |   |   |   |   |   |   |   |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ० | १ | १ | १ | ० | ० | १ | ० | ० | १ | ० | ० | १ | ० | १ | १ | ० |
| २ | २ | २ | २ | २ | ० | ० | ० | २ | ० | २ | ० | ० | ० | २ | ० | ० |
| ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० |

|   |   |   |
|---|---|---|
| ० | १ | १ |
| २ | ० | ० |
| ० | ० | ० |

अर्थ :—क्रमशः दस शून्य, पाँच नारायण, छह शून्य, नारायण, शून्य, नारायण, तीन शून्य, एक नारायण, दो शून्य, एक नारायण और अन्तमें तीन शून्य हैं । (इस प्रकार नौ नारायणोंकी संहट्टिका क्रम जानना चाहिए । संहट्टिमें अंक १ तीर्थंकर का, अंक २ अक्षवर्तीका, अंक ३ नारायण का और शून्य अन्तरालका सूचक है ) ॥१४२९॥

नारायणादि तीनोंके शरीरका उत्प्रेध—

सीढी सत्तरि सट्टी, पञ्चा पञ्चवाल ऊणसीसाणि ।

बाषीस - सोल - दस-वणु, केस्सीतिवयम्मि<sup>१</sup> उण्सेहो ॥१४३०॥

८० । ७० । ६० । ५० । ४५ । २६ । २२ । १६ । १० ।

। इदि उण्सेहो ।

अर्थ :—केशवत्रितय-नारायण, प्रतिनारायण एवं नवदेवोंके शरीरकी ऊँचाई क्रमशः अस्सी, सत्तर, साठ, पचास, पैंतालीस, उनतीस, बाईस, सोलह और दस अनुष प्रमाण थी ॥१४३०॥

। इसप्रकार उत्प्रेधका कथन समाप्त हुआ ।

नारायणादि तीनोंकी आयु—

सगसीबी सत्तरसि सग - सट्टी सत्तसीस सत्त - बसा ।  
वस्ता सक्ताम - हवा, आऊ विजयादि - पंचभू ॥१४३१॥

। ८७ ल । ७७ ल । ६७ ल । ३७ ल । १७ ल ।

सगसट्टी सगसीसं, सत्तरस - सहस्स बारस - सयाणि ।  
कमसो आउ - पमाणं, नदि - प्यमुहा - छउवकम्मि ॥१४३२॥

। ६७००० । ३७००० । १७००० । १२००० ।  
समीक्षा :— आद्योक्तं श्री सुविदितमते जी श्रीराम

अर्थ :—विजयादिक पांच बलदेवोंकी आयु कमसः सतासी-लाख, सत्तर लाख, सड़सठ लाख, सैंतीस लाख और सत्तरहू लाख वर्ष प्रमाण थी तथा नन्दि-प्रमुख चार बलदेवोंकी आयु कमसः सड़सठ हजार, सैंतीस हजार, सत्तरहू हजार और बारहसौ वर्ष-प्रमाण थी ॥१४३१-१४३२॥

जुलसीबी बाहसरि, सट्टी तीसं बसं स लक्काणि ।  
पणसट्टि - सहस्साणि, तिबिट्ट - छक्के कामे आऊ ॥१४३३॥

८४ ल । ७२ ल । ६० ल । ३० ल । १० ल । ६५००० ।

बसीस - बारसेवकं, सहस्समाऊणि बस - पट्टुबोणं ।  
पडिसत्तु-आउ-माणं, निय-निय-नारायणाउ-समा ॥१४३४॥

३२००० । १२००० । १०००० ।

अर्थ :—त्रिपृष्ठादिक छह नारायणोंकी आयु कमसः चौरासो लाख, बहत्तर लाख, साठ लाख, तीस लाख, दस लाख और पैंसठ हजार प्रमाण थी तथा दस-प्रभृति ज्येष्ठ तीन नारायणोंकी आयु कमसः बत्तीस हजार, बारहू हजार और एक हजार वर्ष प्रमाण थी । प्रतिशत्रुओंकी आयुका प्रमाण अपने-अपने नारायणोंकी आयुके सदृश है ॥१४३३-१४३४॥

प्रतिनारायणोंकी पर्यायान्तर-प्राप्ति—

एवे जव पडिसत्तू, जबाण हस्येहि बासुदेवारणं ।  
निय - छक्केहि रणेसुं, समाहवा अंति गिरय - सिबि ॥१४३५॥

अर्थ :—ये नौ प्रतिसप्त युद्धमें क्रमशः नौ वायुदेवोंके हाथसे मरने ही शक्तोंके द्वारा मृत्युको प्राप्त होकर नरकभूमिमें जाते हैं ॥१४३५॥

नारायणोंका कुमार काल, मण्डलीक काल, विजयकाल और राज्यकाल—  
अथ मण्डलीक-कालः—

पञ्चवीस - सहस्राहं, वास कोमार - मंडलिकाहं ।

पद्म - हरिस्त वनेन, वास - सहस्रं विजय - कालो ॥१४३६॥

। २५००० । २५००० । १००० ।

अर्थ :—प्रथम ( विप्लव ) नारायणका-कुमारकाल पञ्चीस हजार वर्ष, मण्डलीक-काल पञ्चीस हजार वर्ष और विजयकाल एक हजार वर्ष प्रमाण है ॥१४३६॥

तेसीदि सक्ताणि, उगवण - सहस्र - संजुबाहं वि ।

वरिस्ताणि रजकालो, णिहिहो पद्म - किहस्त ॥१४३७॥

। ८३४६००० ।

अर्थ :—प्रथम नारायणका राज्य-काल तेरासी लाख उनचास हजार वर्ष प्रमाण निर्दिष्ट किया गया है ॥१४३७॥

कोमार-मंडलिको, ते विजय विधि जवो वि वास-सहं ।

इगिहस्तारि - सक्ताहं, उगवण-सहस्र-णव-सयार रज्जं ॥१४३८॥

। २५००० । २५००० । १०० । ७१४६६०० ।

अर्थ :—द्वितीय नारायणका कुमार और मण्डलीक-काल उतना ही ( प्रथम नारायणके सदृश पञ्चीस-पञ्चीस हजार वर्ष, जयकाल सौ वर्ष ) और राज्यकाल इकत्तर लाख उनचास हजार नौ सौ वर्ष प्रमाण कहा गया है ॥१४३८॥

विदियाहो<sup>१</sup> अट्टाहं, सयंभुकोमार - मंडलिकारि ।

विजओ णठको रज्जं, तिय-काल-विहीण-सहि-सक्ताहं ॥१४३९॥

। १२५०० । १२५०० । ६० । ५६७४६१० ।

अर्थ :—स्वयम्भून्नारायणका कुमारकाल और मण्डलीक-काल द्वितीय नारायणसे आधा (बारह हजार पाँचसौ वर्ष), विजयकाल तन्त्र्यवर्ष और राज्यकाल इन तीनों ( कुमारकाल १२५०० + म० का० १२५०० + विजय० ६० = २५०६० वर्ष ) कालोंसे रहित साठ लाख ( ६००००० — २५०६० = ५६७४६० ) वर्ष कहा गया है ॥१४३६॥

सुरिभस्स सत्त तेरस, सयाणि कोमार-मंडलित्ताणि ।

विजयो सोढी रज्जं, तिय-काल-विहीन-सीस-सक्काइं ॥१४४०॥

। ७०० । १३०० । ८० । २६६७६२० ।

अर्थ :—चतुर्थ नारायणका कुमार और मण्डलीककाल क्रमशः सात-सौ और तेरहसौ वर्ष, विजयकाल अस्सी वर्ष तथा राज्यकाल इन तीनों ( कु० ७०० + म० १३०० + वि० ८० = २०८० ) कालोंसे रहित तीस लाख ( ३०००००० — २०८० = २९९७९२० ) वर्ष प्रमाण कहा गया है ॥१४४०॥

कोमारो तिण्णिसया, बारस-सय-पण्ण मंडलीयत्तं ।

पंचम विजयो सत्तरि, रज्जं तिय-काल-हीन-बह-लक्का ॥१४४१॥

। ३०० । १२५० । ७० । ६६८३८० ।

अर्थ :—पाँचवें नारायणका कुमारकाल तीनसौ वर्ष, मण्डलीक-काल बारहसौ पचास वर्ष, विजय-काल सत्तर वर्ष और राज्य-काल इन तीनों ( कु० ३०० + म० १२५० + वि० ७० = १६२० ) कालोंसे रहित दस लाख ( १०००००० — १६२० = ९९८३८० ) वर्ष प्रमाण कहा गया है ॥१४४१॥

कोमार - मंडलित्ते, कमसो छट्ठे सयण्ण-जोण्ण-सया ।

विजयो सहो रज्जं, चउसट्ठि-सहस्स-चउसया तात्तं ॥१४४२॥

। २५० । २५० । ६० । ६४४४० ।

अर्थ :—छठे पुण्डरीक नारायणका कुमार और मण्डलीककाल क्रमशः दो सौ पचास वर्ष, विजयकाल साठ वर्ष और राज्यकाल धीसठ हजार चारसौ पचासीस वर्ष प्रमाण है ॥१४४२॥

कोमारो दोण्णि सया, बासा पण्णास मंडलीयत्तं ।

वत्ते विजयो पण्णा, इगितीस-सहस्स-सग-सया रण्जं ॥१४४३॥

सार्धशतक : अठारवें और पण्डलीकाल और राज्यकाल १०० । ४० । ४० । ३१७०० ।

अर्थ :—एत नारायणका कुमारकाल दोसी वर्ष, मण्डलीककाल पचास वर्ष, विजयकाल पचास वर्ष और राज्यकाल इकतीस हजार सातसो वर्ष प्रमाण कहा गया है ॥१४४३॥

अहुमए इगि - ति - सया, कमेण कोमार-मंडलीयत्तं ।

विजय चात्तं रण्जं, एक्करस-सहस्स-पण-सया सट्ठी ॥१४४४॥

१०० । ३०० । ४० । ११५६० ।

अर्थ :—आठवें नारायणका कुमार और मण्डलीककाल क्रमशः एकसौ और तीनसौ वर्ष, विजय-काल चालीस वर्ष और राज्यकाल ग्यारह हजार पाँचसौ साठ वर्ष प्रमाण है ॥१४४४॥

सोसस कुप्पण कमे, बासा कोमार - मंडलीयत्तं ।

किण्हस्स अट्ट विजयो, बीसाहिय - णव - सया - रण्जं ॥१४४५॥

१६ । ५६ । ८ । ६२० ।

अर्थ :—कृष्ण नारायणका कुमार-काल और मण्डलीककाल क्रमशः सोलह और छप्पन वर्ष, विजयकाल आठ वर्ष तथा राज्यकाल बीसो बीस वर्ष प्रमाण है ॥१४४५॥

नारायण एवं बलदेवोंके रत्नोंका निर्वेश—

ससी-कोबंड-गहा, चक्क - किबाणाणि संल - दंडाणि ।

इय सस महारयणा, सोहंते मट्टचक्कीणं ॥१४४६॥

। ७ ।

अर्थ :—शक्ति, वनुष, गदा, चक्र, कृपाण, शङ्ख एवं दण्ड ये सात महारत्न अर्ध-चक्रवर्तियों के पास शोभायमान रहते हैं ॥१४४६॥



मुससाइ संगसाइ, गवाइ रयणाबसीओ चत्तारि ।  
रयणाइ राखते, बलदेवानं नवानं पि ॥१४४७॥

। ४ ।

अर्थ :—मुसल, सांगल (हुल), गदा और रनाबली ( हार ), ये चार रत्न सभी ( नौ ) बलदेवोंके यहाँ शोभायमान रहते हैं ॥१४४७॥

गोपनीयार्थ :- आकाश की सुविद्यितापर भी बलदेव बलदेव आदि तीनोंकी पर्यायान्तर-प्राप्ति—

अणिदान - गदा सम्बे, बलदेवा केसवा निदान-गदा ।  
उर्ध्वगामी सम्बे, बलदेवा केसवा अधोगामी ॥१४४८॥

अर्थ :—सब बलदेव निदान रहित और सब नारायण निदान सहित होते हैं । इसीप्रकार सब बलदेव ऊर्ध्वगामी ( स्वर्ग और मोक्षगामी ) तथा सब नारायण अधोगामी ( नरक जाने वाले ) होते हैं ॥१४४८॥

जिस्सेयससहु गया, 'हलिओ चरिओ हु बम्हकप-गवो ।  
तसो कालेरु मवो, सिक्कवि किण्हुस्त तित्थम्मि ॥१४४९॥

अर्थ :—ग्राठ बलदेव मोक्ष और अन्तिम बलदेव ब्रह्मस्वर्गको प्राप्त हुए हैं । अन्तिम बलदेव स्वर्गसे व्युत्त होकर कृष्णके तीर्थमें ( कृष्ण इसी भरतक्षेत्रमें आयाभी चौबीसीके सोलहवें तीर्थकर होंगे ) सिद्धपदको प्राप्त होगा ॥१४४९॥

पवम - हरी सत्तमए, पंच च्छट्ठम्मि पंचमी एक्को ।  
एक्को तुरिमे चरिओ, तदिए गिरए तहेव पडिस्त ॥१४५०॥

अर्थ :—प्रथम नारायण सातवें नरकमें, पाँच नारायण छठे नरकमें, एक पाँचवें नरकमें, एक ( सप्तम ) चौथे नरकमें और अन्तिम नारायण ( कृष्ण ) तीसरे नरकमें गया है । इसीप्रकार प्रतिपद्वर्धों को भी पति जाननी चाहिए ॥१४५०॥

( तालिका ३७ पृष्ठ ४१६ पर देखिये )

तालिका : ३७ ]

चउत्थो महाहियारो

[ ४१६ ]

| तालिका : ३७      |            |         |             |                                                               |                          |
|------------------|------------|---------|-------------|---------------------------------------------------------------|--------------------------|
| बलभद्रोंका परिचय |            |         |             |                                                               |                          |
| क्र०             | नाम        | उत्सेष  | आयु         | रत्न                                                          | पर्यायान्तर प्राप्ति     |
| १                | विजय       | ८० धनुष | ८७ लाख वर्ष | मूसल, हुल, गदा और रत्नावली हार सब<br>बलदेवोंके पास रहते हैं । | मोक्ष                    |
| २                | अचल        | ७० "    | ७७ " "      |                                                               | "                        |
| ३                | धर्म       | ६० "    | ६७ " "      |                                                               | "                        |
| ४                | सुप्रभ     | ५० "    | ५७ " "      |                                                               | "                        |
| ५                | सुदर्शन    | ४५ "    | ५७ " "      |                                                               | "                        |
| ६                | नन्दी      | २५ "    | ६७००० "     |                                                               | "                        |
| ७                | नन्दिमित्र | २२ "    | ३७००० "     |                                                               | "                        |
| ८                | राम        | १६ "    | १७००० "     |                                                               | "                        |
| ९                | पद्म       | १० "    | १२०० "      |                                                               | पाँचवाँ<br>ब्रह्म-स्वर्ग |





रुद्रोंके नाम एवं उनके तीर्थ निर्देश—

भीमावलि - जिवसत्सू, रुद्रो वइसाणसो य सुपइद्वो ।  
 अजितो य पुंङ्गरीओ, अजितंघर - अजियणाभी य ॥१४५१॥  
 पीठो सच्चइपुसो, अंगयरा सित्यकसि - समाएसु ।  
 रिसहम्मि पदम-रुद्रो<sup>१</sup>, जिवसत्सू होदि अजियसामिम्मि ॥१४५२॥  
 सुविहि - पपुहेसु रुद्रा, सत्सु सत्स - ककमेण संजादा ।  
 संति-जिणिवे वसभो, सच्चइपुसो य ओर - सित्यम्मि ॥१४५३॥

अर्थ :—भीमावलि, जितशत्रु, रुद्र, वैश्वानर ( विष्णुवत्सल ), सुप्रतिष्ठ, मधुसूत, पुण्डरीक, अजितन्धर, अजितनाभि, पीठ और सात्यकिपुत्र ये ग्यारह रुद्र अङ्गुष्ठर होते हुए, तीर्थकर्ताओंके काल में हुए हैं । हममेंसे प्रथम रुद्र ऋषभदेवके कालमें और जितशत्रु अजितनाथ स्वामीके कालमें हुआ है । इसके भागे सात रुद्र क्रमशः सुविधिनाथकी अर्पित लेकर सात तीर्थकरोंके समयमें हुए हैं । दसवीं रुद्र पान्तिनाथ तीर्थकरके समयमें और सात्यकि पुत्र और जिनेन्द्रके तीर्थमें हुए हैं ॥१४५१-१४५३॥

रुद्रोंके नरक जानेका कारण—

सम्मे दसमे पुव्वे, रुद्रा भट्टा तवाउ विसयसर्थ<sup>२</sup> ।  
 सम्मस - रयण - रहिदा, बुद्धा ओरेसु गिरएसु ॥१४५४॥

अर्थ :—सब रुद्र दसवें पूर्वका अध्ययन करते समय विषयोंके निमित्त तपसे भ्रष्ट होकर सम्यक्त्वरूपी रत्नसे रहित होते हुए घोर नरकोंमें डूब गये ॥१४५४॥

रुद्रोंका तीर्थ निर्देश—

ओ राह सुण्ण सक्का, सग रुद्रा सह य ओणि सुण्णाहं ।  
 रुद्रो पण्णरसाहं, सुण्णं रुद्रं च अरिमम्मि ॥१४५५॥

( संक्षिप्त अगले पृष्ठ ४२२ पर देखिये )

|   |   |   |   |   |   |   |   |   |    |    |    |    |    |    |    |    |    |    |    |    |    |    |    |    |    |    |    |    |    |    |    |    |    |    |    |    |    |    |    |    |    |    |    |    |    |    |    |    |    |    |    |    |    |    |    |    |    |    |    |    |    |    |    |    |    |    |    |    |    |    |    |    |    |    |    |    |    |    |    |    |    |    |    |    |    |    |    |    |    |    |    |    |    |    |    |    |    |    |     |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|-----|
| १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० | २१ | २२ | २३ | २४ | २५ | २६ | २७ | २८ | २९ | ३० | ३१ | ३२ | ३३ | ३४ | ३५ | ३६ | ३७ | ३८ | ३९ | ४० | ४१ | ४२ | ४३ | ४४ | ४५ | ४६ | ४७ | ४८ | ४९ | ५० | ५१ | ५२ | ५३ | ५४ | ५५ | ५६ | ५७ | ५८ | ५९ | ६० | ६१ | ६२ | ६३ | ६४ | ६५ | ६६ | ६७ | ६८ | ६९ | ७० | ७१ | ७२ | ७३ | ७४ | ७५ | ७६ | ७७ | ७८ | ७९ | ८० | ८१ | ८२ | ८३ | ८४ | ८५ | ८६ | ८७ | ८८ | ८९ | ९० | ९१ | ९२ | ९३ | ९४ | ९५ | ९६ | ९७ | ९८ | ९९ | १०० |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|-----|

अर्थ :—क्रमशः दो रुद्र, छह शून्य, सात रुद्र, दो शून्य, रुद्र, पन्द्रह शून्य और अस्तिम कोठेमें एक रुद्र है । ( इसप्रकार रुद्रोंकी संदृष्टि है संदृष्टिमें अंक १ तीर्थकर, अंक २ ऋकवर्तीका, अंक ३ नारायण का, अंक ४ रुद्र का और शून्य अंतरालका सूचक है । ) ॥ १४५५ ॥

नोट :—वर्तमान चौबीसीके तीर्थंकारी प्रसिद्ध पुरुषों [ गा० १२६८ से १३०२, १४२९ और १४५५ की मूल संदृष्टियों ] का विवरण इस तालिका १६ में निहित है—

( तालिका ३६ पृष्ठ ४२४-४२५ पर देखिये )

### रुहोंके परीक्षा उत्सव—

पंच-सया पञ्चाहिय-चउस्सया इति - सयं च चउदी य ।

सीखी सत्तरि सद्गो, पण्णासा अट्ठबोसं पि ॥१४५६॥

षड्वीस - त्रिचय बंडा, भोमावलि-पहुवि-पहु-दसकत्स ।

उज्ज्वलो निहिहो, सग हत्या सज्जहसुधस्त ॥१४५७॥



| क्र० | सौर्षिकार   | चक्रवर्ती | वन्देय      | नारायण    | प्रतिवारामण | वद          |
|------|-------------|-----------|-------------|-----------|-------------|-------------|
| १    | १ अक्षय माग | १ दशरथ    | आचार्य श्री | सुविधिताम | १ ज्ञानाज   | १ श्रीमामि  |
| २    | २ अक्षय     | २ सगर     | ०           | ०         | ०           | २ जितलु     |
| ३    | ३ अक्षय     | ०         | ०           | ०         | ०           | ०           |
| ४    | ४ अक्षय     | ०         | ०           | ०         | ०           | ०           |
| ५    | ५ अक्षय     | ०         | ०           | ०         | ०           | ०           |
| ६    | ६ अक्षय     | ०         | ०           | ०         | ०           | ०           |
| ७    | ७ अक्षय     | ०         | ०           | ०         | ०           | ०           |
| ८    | ८ अक्षय     | ०         | ०           | ०         | ०           | ०           |
| ९    | ९ अक्षय     | ०         | ०           | ०         | ०           | ०           |
| १०   | १० अक्षय    | ०         | ०           | ०         | ०           | ०           |
| ११   | ११ अक्षय    | ०         | १ विजय      | १ विजय    | १ अक्षय     | १ सुविधिताम |
| १२   | १२ अक्षय    | ०         | २ अक्षय     | २ विजय    | २ अक्षय     | २ अक्षय     |
| १३   | १३ अक्षय    | ०         | ३ अक्षय     | ३ अक्षय   | ३ अक्षय     | ३ अक्षय     |
| १४   | १४ अक्षय    | ०         | ४ अक्षय     | ४ अक्षय   | ४ अक्षय     | ४ अक्षय     |
| १५   | १५ अक्षय    | ०         | ५ अक्षय     | ५ अक्षय   | ५ अक्षय     | ५ अक्षय     |

|    |                                                 |                |             |               |          |                 |
|----|-------------------------------------------------|----------------|-------------|---------------|----------|-----------------|
| १६ | *                                               | ३ पञ्चमा       | *           | *             | *        | *               |
| १७ | *                                               | ४ षष्ठी        | *           | *             | *        | *               |
| १८ | १६ शान्तिनाथ                                    | ५ शान्तिनाथ    | *           | *             | *        | १० पीठ          |
| १९ | १७ कुम्भनाथ                                     | ६ कुम्भनाथ     | *           | *             | *        | *               |
| २० | १८ चरमाथ                                        | ७ चरमाथ        | *           | *             | *        | *               |
| २१ | *                                               | ८ शुभोप        | *           | *             | *        | *               |
| २२ | *                                               | *              | ९ नन्दी     | ९ पुष्करोक्त  | ९ बनि    | *               |
| २३ | १९ मल्लिनाथ                                     | *              | *           | *             | *        | *               |
| २४ | *                                               | *              | १० नन्दिविष | १० पुन्यदत्ता | १० शहराण | *               |
| २५ | मार्गदर्शक : आचार्य श्री सुबिद्धिसागर जी यहीराज |                |             |               |          | *               |
| २६ | २० मुनिमुक्ता                                   | *              | *           | *             | *        | *               |
| २७ | *                                               | ११ हरिषेण      | *           | *             | *        | *               |
| २८ | *                                               | *              | १२ राध      | १२ नक्षत्राण  | १२ राधण  | *               |
| २९ | २१ नमिनाथ                                       | *              | *           | *             | *        | *               |
| ३० | *                                               | १३ जयलाल       | *           | *             | *        | *               |
| ३१ | २२ नमिनाथ                                       | *              | १४ पञ्च     | १४ कृष्ण      | १४ चरमाथ | *               |
| ३२ | *                                               | १५ ब्रह्मदत्ता | *           | *             | *        | *               |
| ३३ | २३ पादसेनाथ                                     | *              | *           | *             | *        | *               |
| ३४ | २४ महावीर                                       | *              | *           | *             | *        | ११ सात्यकिपुत्र |
|    | २४                                              | १२             | १           | १             | १        | ११              |



अर्थ :—सीमावलि रुद्रका संयमकाल सत्ताईस लाख छपासठ हजार छहसौ बड़सठ पूर्व-प्रमाण है ॥१४६१॥

सत्ताबोसं लक्खा, छावटिठ-सहस्स-छत्स-अडभहिया ।  
छावट्टी पुब्बाणि, भीमावलि - भंग - तव - कासो ॥१४६२॥

पुब्ब २७६६६६६  
अर्थ :—सीमावलि रुद्रका भङ्ग-तप काल सत्ताईस लाख छपासठ हजार छहसौ छपासठ

पूर्व-प्रमाण है ॥१४६२॥

तेवीस पुब्ब - लक्खा, छावट्टि-सहस्स-छत्स-अडभहिया ।  
जिवसत्तू - कोमारो, तेत्तिव - नेत्तो य भंग-तव-कासो ॥१४६३॥

। पुब्ब २३६६६६६ । २३६६६६६ ।

अर्थ :—जितशत्रु रुद्रका तेईस लाख छपासठ हजार छहसौ छपासठ पूर्व प्रमाण कुमार-काल और इतना ही भङ्ग-तप काल है ॥१४६३॥

तेवीस पुब्ब - लक्खा, छावट्टि-सहस्स-छत्स-अडभहिया ।  
संजम - कास - पमाणं, एवं जिवसत्तू - सहस्स ॥१४६४॥

। पु २३६६६६६ ।

अर्थ :—जितशत्रु रुद्रके संयमकालका प्रमाण तेईस लाख छपासठ हजार छहसौ बड़सठ पूर्व है ॥१४६४॥

छावट्टी - सहस्साइ, छावट्टभहिय - छत्सयाइं पि ।  
पुब्बाणं कोमारो, विणट्ट - कासो य सहस्स ॥१४६५॥

। पु ६६६६६६ । ६६६६६६ ।

अर्थ :—तृतीय रुद्र नामक रुद्रका कुमारकाल और विणट्ट-संयम काल छपासठ हजार छहसौ छपासठ पूर्व प्रमाण है ॥१४६५॥

छावट्टि - सहस्साइ, पुब्बाणं छत्सयाणि अडभहिया ।  
संजम - कास - पमाणं, सहज्ज - सहस्स णिदिट्ठं ॥१४६६॥

। पु ६६६६६६ ।

अर्थ :—तृतीय रुद्रके संयम कालका प्रमाण छद्मासठ हजार छहसौ भक्तसठ पूर्व कहा गया है ॥१४६६॥

तेत्तीस - सहस्त्राणि, पुष्पाणि त्रिय - सप्ताणि तेत्तीसं ।

वद्विंशानरस्त कहिवो, कोमारो भंग - तव - कालो ॥१४६७॥

। पु ३३३३३ । ३३३३३ ।

अर्थ :—वैश्वानर ( विष्णुवत्सल ) का कुमार काल और भङ्ग-तप-काल तैंतीस हजार तीनसौ तैंतीस पूर्व-प्रमाण कहा गया है ॥१४६७॥

तेत्तीस-सहस्त्राणि, पुष्पाणि त्रिय - सप्ताणि चउत्तीसं ।

संयम - समय - पमाणं, वद्विंशानल - नामधेयस्त ॥१४६८॥

। पु ३३३३४ । २

अर्थ :—वैश्वानर ( विष्णुवत्सल ) नामक रुद्रके संयम-समयका प्रमाण तैंतीस हजार तीनसौ चउत्तीस पूर्व कहा गया है ॥१४६८॥

अट्ठावीसं तवका, वासाजं सुषुप्तदृढ - कोमारो ।

तेत्त्रिय - तेत्ती संयम - कालो - तव - भट्ठ - समयस्त ॥१४६९॥

२०००००० । २०००००० । २०००००० ।

अर्थ :—सुप्रतिष्ठका कुमारकाल अट्ठाईस लाख वर्ष है, संयमकाल भी इतना ( २० लाख वर्ष ) ही है और तप-भ्रष्ट काल भी इतना ( २० लाख वर्ष ) ही कहा गया है ॥१४६९॥

वासाओ बीस-तवका, कुमार-कालो य अचल-नामस्त ।

तेत्त्रिय - तेत्ती संयम - कालो तव - भट्ठ - कालो य ॥१४७०॥

। २०००००० । २०००००० । २०००००० ।

अर्थ :—अचल नामक रुद्रका कुमारकाल बीस लाख वर्ष, इतना ( २० लाख वर्ष ) ही संयमकाल और तप-भ्रष्ट-काल भी इतना ही है ॥१४७०॥

वासा सोलस - तवका, छाषट्वि-सहस्त्र-सप्त-छावट्ठी ।

कोमार - भंग - कालो, पत्तेयं पुंक्षरीयस्त ॥१४७१॥

। १६६६६६६ । १६६६६६६ ।



अर्थ :—प्रजितनाभिका जितनेही धारणाकाल, छह साल, उपासक हजार, चतुस्रो महसूत वर्ष प्रमाण है ॥१४७६॥

जरिसाणि तिणि सखसा, तेसीस-सहस्स-ति-सय-तेसीसा ।

कोमार - भट्ट - समया, कमसो पोखाम - रहस्स ॥१४७७॥

। ३३३३३३ । ३३३३३३ ।

अर्थ :—पीठात ( पीठ ) रुद्रका कुमार काल और तप-स्रष्ट काल कमसः तीन लाख तेंतीस हजार तीनसौ तेंतीस वर्ष प्रमाण है ॥१४७७॥

सिय-सखसाणि वासा, तेसीस-सहस्स-ति-सय-चोसीसा ।

संजम - काल - पमाणं, गिद्धिदु वसम - रहस्स ॥१४७८॥

। ३३३३३४ ।

अर्थ :—दसवें ( पीठ ) रुद्रके संजम-कालका प्रमाण तीन लाख तेंतीस हजार तीनसौ चौतीस वर्ष निदिष्ट किया गया है ॥१४७८॥

सग - वासं कोमारो, संजम - कालो ह्वेवि चोसीसं ।

अडवीस भंग - कालो, एयारसमस्स रहस्स ॥१४७९॥

। ७ । ३४ । २८ ।

अर्थ :—ग्यारहवें ( सात्यकिपुत्र ) रुद्रका कुमार-काल सात वर्ष, संजम काल चौतीस वर्ष और संजम-मङ्गल-काल षट्ठाईस वर्ष प्रमाण है ॥१४७९॥

रुद्रोंकी पर्यायान्तर प्राप्ति—

दो रुद्र सप्तमए, पंच य छहूमि पंचमे एक्को ।

दोणि चउत्थे पडिवा, एक्करसो तविय - गिरमम्मि ॥१४८०॥

। रुद्र-गदा ।

अर्थ :—इन ग्यारह रुद्रोंमेंसे दो रुद्र सप्तमं नरकमें, पांच छठेमें, एक पंचममें, दो चौथेमें और अन्तिम ( ग्यारहवां ) रुद्र तीसरे नरकमें गया है ॥१४८०॥

। इसप्रकार रुद्रोंका कथन समाप्त हुआ ।

## तालिका १४०

रुद्रोका परिचय—गा० १४५६-१४८०

| क्र. | नाम            | उत्प्रेष | आयु          | कुमारकाल<br>भारतकाल | संयम-काल<br>आयु | संयम<br>प्रभुकाय | पर्यायान्तर<br>प्राप्ति |
|------|----------------|----------|--------------|---------------------|-----------------|------------------|-------------------------|
| १.   | भीमावलि        | ५०० धनुष | ८३ लाख पूर्व | २७६६६६६ पूर्व       | २७६६६६६ पूर्व   | २७६६६६६ पूर्व    | सातवीं नरक              |
| २.   | जितशत्रु       | ४५० ..   | ७१ लाख पूर्व | २३६६६६६ पूर्व       | २३६६६६६ पूर्व   | २३६६६६६ पूर्व    | " "                     |
| ३.   | रुद्र          | १०० ..   | २ लाख पूर्व  | ६६६६६ पूर्व         | ६६६६६ पूर्व     | ६६६६६ पूर्व      | छठा नरक                 |
| ४.   | वेदवानस        | १० ..    | १ लाख पूर्व  | ३३३३३ पूर्व         | ३३३३३ पूर्व     | ३३३३३ ..         | " "                     |
| ५.   | सुप्रतिष्ठ     | ८० ..    | ८४ .. वर्ष   | २८ लाख वर्ष         | २८ लाख वर्ष     | २८ लाख वर्ष      | " "                     |
| ६.   | अचल            | ७० ..    | ६० लाख ..    | २० लाख वर्ष         | २० लाख वर्ष     | २० .. ..         | " "                     |
| ७.   | पुण्डरीक       | ६० ..    | ५० लाख वर्ष  | १६६६६६६ ..          | १६६६६६६ ..      | १६६६६६६ ..       | " "                     |
| ८.   | अजितम्बर       | ५० ..    | ४० लाख ..    | १३३३३३३ ..          | १३३३३३३ ..      | १३३३३३३ ..       | पाँचवीं ..              |
| ९.   | अजितनाभि       | २८ ..    | २० लाख ..    | ६६६६६६ वर्ष         | ६६६६६६ वर्ष     | ६६६६६६ ..        | चौथा ..                 |
| १०.  | पीठाल<br>(पीठ) | २४ ..    | १० लाख ..    | ३३३३३३ ..           | ३३३३३३ ..       | ३३३३३३ ..        | " "                     |
| ११.  | वात्यकिपुत्र   | ७ हाथ    | ६६ वर्ष      | ७ ..                | ३४ ..           | २८ ..            | तीसरा ..                |

नारदोंका निर्देश—

भीम-महाभीम-रुद्र, महारुद्रो बोधि काल - सहकाला ।

बुध्मुह - गिरयमुहाधोमुह - नामा जय य नारदा ॥१४८१॥

वर्ष :—भीम, महाभीम, रुद्र, महारुद्र, काल, महाकाल, दुर्मुख, नरकमुख और असोमुख  
ये नौ नारद हुए हैं ॥१४८१॥

रुद्र इव अइरुद्रा, पाव - गिहाणा हवन्ति सखे वे ।

कसह - महाबुध्भ - पिया, अयोगया वासुदेव ज्य ॥१४८२॥

अर्थ :—रुद्रोंके सदृश अतिरोद्र ये सब नारद पापके निधान होते हैं कलह-प्रिय एवं युद्ध-प्रिय होनेसे वासुदेवोंके समान ही ये भी नरकको प्राप्त हुए हैं ॥१४८२॥

उत्सेह - आउ - तिस्थयरवेव - पश्यन्त-भाष-पशुबोसुं ।

एवान गारवाण, उबएतो अहं उबिषन्तो ॥१४८३॥

। गारवा गवा ।

अर्थ :—इन नारदोंकी ऊँचाई, घायु और तीर्थकर देवोंके ( प्रति ) प्रत्यक्ष-भावादिकके विषयमें हमारे लिए उपदेश नष्ट हो चुका है ॥१४८३॥

। नारदोंका कथन समाप्त हुआ ।

कामदेवोंका निर्देश—

कालेसु जिणवरानं, चउवीसाणं हवन्ति चउवीसा ।

से बाहुबलि - प्समुहा, कंदप्पा गिरुवमायारा ॥१४८४॥

। कामदेवं गर्द ।

अर्थ :—चौबीस तीर्थकरोंके कालमें अनुपम आकृतिके धारक वे बाहुबलि-प्रमुख चौबीस कामदेव होते हैं ॥१४८४॥

॥ कामदेवोंका कथन समाप्त हुआ ॥

१६० महापुरुषोंका मोक्षपथ निर्देश—

तिस्थयरा तग्गुरग्गो, चक्की-क्कल - केसि - रुह-मारहा ।

अंगज - कुलयर - पुरिसा, भग्वा सिज्जन्ति गियमेण ॥१४८५॥

अर्थ :—तीर्थकर ( २४ ), उनके गुरुजन ( माता-पिता २४ + २४ ), चक्रवर्ती ( १२ ), बलदेव ( ६ ), नारायण ( ६ ), रुद्र ( ११ ), नारद ( ६ ), कामदेव ( २४ ) और कुलकर ( १४ ) ये सब ( १६० ) ग्रन्थ पुरुष नियमसे सिद्ध होते हैं ॥१४८५॥

दुवमा कालका प्रवेश एवं उसमें घायु यादिका प्रमाण—

गिम्वाणे धीर - जिणे, वास - तिये अट्ट-मास-पक्खेसुं ।

पइवेसुं पंचमज्जो, दुट्ठम - कासो समस्सियदि ॥१४८६॥

अर्थ :—धीर जिनेन्द्रका निर्वाण होनेके पश्चात् तीन वर्ष, आठ मास और एक पक्ष व्यतीत हो जाने पर दुःखमाकाल प्रवेश करता है ॥१४८६॥

तत्पदम-<sup>१</sup>पथेसम्मि य, बीसाहिण-इति-सयं पि परमाळ ।

सग - हत्थो उत्सेहो, गराण चउबीस पुठ्ठो ॥१४८७॥

आ १२० । ७ । २४ ।

अर्थ :—इस दुःखमाकालके प्रथम प्रवेशमें मनुष्योंकी उत्कृष्ट आयु एक सौ बीस वर्ष, ऊँचाई सात हाथ और पूठ भागकी हड्डियाँ बीसोंत होती हैं ॥१४८७॥

गीतमादि अनुबद्ध केवलियोंका निर्देश—

जाबो सिद्धो घोरो, तहिबसे गोवधो परम - गाणी ।

जाबो तत्ति सिद्धे, सुधम्मसामी तबो जाबो ॥१४८८॥

तम्मि कद-कम्म-गासे, जम्बूसामि सि केवली जाबो ।

तत्थ पि सिद्धि - पवप्पे, केवसिणो गत्थि अणुबद्धा ॥१४८९॥

अर्थ :—जिस दिन भगवान् महावीर सिद्ध हुए उसी दिन गीतम-गणधर केवलज्ञानको प्राप्त हुए । पुनः गीतमके सिद्ध होने पर सुधर्मस्वामी केवली हुए । सुधर्मस्वामीके कर्मनाश करने ( मुक्त होने ) पर जम्बूस्वामी केवली हुए । जम्बूस्वामीके सिद्ध होनेके पश्चात् फिर कोई अनुबद्ध केवली नहीं हुआ ॥१४८८-१४८९॥

गीतमादि अनुबद्ध केवलियोंका धर्म-प्रवर्तनकाल—

वासट्ठो वासाप्पि, गोवम - पहुवीण नावधंतासुं ।

अम्म - पयकूण - कासे, परिमाणं पिड - ख्वेण ॥१४९०॥

। ४ ६२ ।

अर्थ :—गीतमादिक ( गीतम गणधर, सुधर्मस्वामी और जम्बूस्वामी ) केवलियोंके धर्म-प्रवर्तन-कालका प्रमाण पिण्डरूपसे वासठ वर्ष प्रमाण है ॥१४९०॥

अन्तिम केवली, चारण ऋद्धिधारी, प्रजाश्रमण और अवधिज्ञानी आदिका निरूपण—

कु'बल्लगिरिम्मि चरिबो, केवलजाणीसु सिरिधरो सिद्धो ।

चारणरिसीसु चरिबो, सुपासबंधामिहाणो य ॥१४९१॥

अर्थ :- केवलज्ञानियोंमें अन्तिम केवली श्रीधर कुण्डलगिरिसे सिद्ध हुए और चारण-  
श्रवियोंमें सुपाश्वरचन्द्र नामक श्रवि अन्तिम हुए ॥१४६१॥

पण-सधनेसु चरिमो, बहरजसो नाम ओहि-जाणीसु' ।

चरिमो सिरि - नामो सुब-बिखय-सुखीलादि-संपणो ॥१४६२॥

अर्थ :- प्रज्ञाश्रमणोंमें यमयज्ञ अन्तिम हुए और अवधिज्ञानियोंमें श्रुत, विनय एवं  
शुकीलादिसे सम्पन्न श्री नामक श्रवि अन्तिममें हुए हैं ॥१४६२॥

मउड-बरेसु' चरिमो, जिणबिक्खं 'वरदि चंवगुसो य ।

तसो मउडधरा 'दु - प्यम्पज्जं भेव गेहंति ॥१४६३॥

अर्थ :- मुकुटधरोंमें अन्तिम जिनदीक्षा चन्द्रगुप्तने धारण की । इसके पश्चात् किसी  
मुकुटधरोंने प्रव्रज्या ग्रहण नहीं की ॥१४६३॥

चौदहपूर्व-धारियोंके नाम एवं उनके कालका प्रमाण—

एगंवी य एगंविमिसो, बिधियो 'अवराजिबो तइज्जो य ।

गोवदणो चउत्थो, पंचमणो भइबाहु ति ॥१४६४॥

पंच इमे पुरिसबरा, चोदसपुण्णी जगमि बिक्खावा ।

ते बारस - अंगधरा, तिस्ये सिरिवड्ढमाणस्स ॥१४६५॥

अर्थ :- प्रथम नन्दी, द्वितीय नन्दिमित्र, तृतीय अपराजित, चतुर्थ गोवर्धन और पञ्चम  
भद्रबाहु, इसप्रकार ये पांच पुण्योत्तम जगमें 'चौदह पूर्वी' इस नामसे विख्यात हुए । बारह अंगोंके  
धारक ये पाँचों श्रुतकेवली श्रीवर्धमान स्वामीके तीर्थमें हुए हैं ॥१४६४-१४६५॥

पंचाणं मित्तिवाणं, काल - पमाणं हवेदि वास-सवं ।

वीरम्मि' य पंचमए, भरहे सुबकेवली जत्थि ॥१४६६॥

। १०० ।

। चौदसपुण्णी गवा ।



**अर्थ :**—इन पाँचों श्रुतकेवलियोंका सम्पूर्ण काल मिना वेनेपर ही बर्ण होता है । पाँचवें श्रुतकेवलीके पश्चात् भरतक्षेत्रमें फिर कोई श्रुतकेवली नहीं हुआ ॥१४६६॥

। चौदह पूर्वधारियोंका कथन समाप्त हुआ ।

दसपूर्वधारी एवं उनका काल—

पहलो विसाहनाभो, पोट्टिल्लो कचिओ जओ र्हागो ।  
सिद्धत्यो बिदितेणो, बिजओ बुद्धिल्ल - गंगेदेव य ॥१४६७॥  
एकरसो य सुधम्मो, दसपुण्यधरा इसे सुबिक्कावा ।  
पारंपरिओवगवो<sup>१</sup>, तेसीबि सयं ज ताण वासाणि ॥१४६८॥

पारंपरिओवग - पारंपरिक । तेसीबि सयं ज ताण वासाणि - तेसीबि सयं ज ताण वासाणि

**अर्थ :**—( प्रथम ) विसाह, पोट्टिल, कचिय, जय, नाग, सिद्धार्थ, भूतिदेव, बिजय, बुद्धिल, गङ्गदेव और सुधर्म, ये ग्यारह धार्याँ दस पूर्वधारी विख्यात हुए हैं । परम्परासे प्राप्त इन सबका काल एकसी तेरासी वर्ष प्रमाण है ॥१४६७-१४६८॥

सखेसु बि काल - वसा, तेसु खरीदेसु भरहु - खेसम्मि ।  
बियसंत-अव्व-कमसा<sup>२</sup>, ज संति दसपुण्य - विवसयरा ॥१४६९॥

। दसपुण्यी गया ।

**अर्थ :**—कालके वल उन सब श्रुतकेवलियोंके मलीत हो जाने पर भरतक्षेत्रमें भूम्यरूपी कमलोंकी विकसित करने वाले दस पूर्वधररूप सूर्य फिर नहीं ( उदित ) रहे ॥१४६९॥

। दसपूर्वियोंका कथन समाप्त हुआ ।

ग्यारह-अङ्गधारी एवं उनका काल—

णक्खसो जयपालो, पंडुय<sup>३</sup>-धुवसेण - कंस-आहरिया ।  
एकरसंगधारी, पंच इसे वीर - तित्थम्मि ॥१५००॥

**अर्थ :**—नलन, जयपाल, पाण्डु, ध्रुवसेन और कंस, ये पाँच आचार्य वीर जिनेन्द्रके तीर्थमें ग्यारह अङ्गके धारी हुए हैं ॥१५००॥

१. व. क. ज. य. उ. पारंपरिओवगवो । २. व. उ. कमसाणि । ३. व. पंडुमधुसेण, व. उ. पंडु-सधुसेण, क. ज. य. पंडु मधुसेण ।

शेनि सया बीस-बुधा, बासाणं साण पिह - परिमाणं ।

तेसु अवीवे जलिह हु, अरहे एक्कारसंगधरा ॥१५०१॥

। २२० ।

। एक्कारसंगं गर्ब ।

अर्थ :—इनके कालका प्रमाण पिण्डरूपसे दो सौ बीस वर्ष है । इनके स्वर्गस्थ होनेपर फिर भरतक्षेत्रमें कोई ग्यारह अंगोंका धारक भी नहीं रहा ॥१५०१॥

। ग्यारह अंगोंके धारकोंका कर्म समाप्त हुआ ।

आचाराङ्गधारी एवं उनका काल—

पहलो सुभद्रनामो, जसबहो तह य होदि जसबाह ।

तुरिमो य 'लोह - नामो, एवे आचार - अंगधरा ॥१५०२॥

अर्थ :—प्रथम सुभद्र फिर यशोभद्र, यशोबाहू और चतुर्थ लोहार्य, ये चार आचार्य आचाराङ्गके धारक हुए हैं ॥१५०२॥

सेसेकरसंगणं, चौहस - पुष्पाणमेकदेसधरा ।

एकसयं अठारस - वास - बुधं साण परिमाणं ॥१५०३॥

। ११८ ।

। आचारंगं गर्ब ।

अर्थ :—उक्त चारों आचार्य आचाराङ्गके अतिरिक्त शेष ग्यारह अङ्गों और चौदह पुरुषोंके एकदेसके धारक थे । इनके कालका प्रमाण एकसौ अठारह वर्ष है ॥१५०३॥

। आचाराङ्ग-धारियोंका वर्णन समाप्त हुआ ।

गौतम गणधरसे लोहार्य पर्यन्तका सम्मिलित काल प्रमाण—

तेसु अवीवेसु तबा, आचारधरा न होति अरहम्मि ।

गौतम - मुनि - पहुडीणं, वासाणं अस्सयाणि सेसीवी ॥१५०४॥

। ६८३ ।

४३६ ]

तिलोचनपञ्चली

[ भाषा : १५०५-१५०७ ]

सर्ब :—इनके स्वर्गस्थ होनेपर भरतक्षेत्रमें फिर कोई आचारारुह-सागके धारक नहीं हुए हैं । गोधम मुनिको बादि लेकर ( आचार्य जोहार्य पर्यन्तके ) सम्पूर्ण कालका प्रमाण यह ही तेरासी वर्ष होता है ॥१५०४॥

श्रुततीर्थके नष्ट होनेका समय—

बीस-सहस्रं ति - सदा, सत्तारह वच्छराणि सुव-तिथं ।

धम्म - पयहण - हेतु, वोच्छिस्सवि काल - बीसेन ॥१५०५॥

। २०३१७ ।

सर्ब :—काल दोपसे धर्मप्रवर्तनके कारणभूत श्रुततीर्थका बीस हजार तीनसौ सत्तरह वर्षों बाद व्युच्छेद हो जावेगा ॥१५०५॥

वितेवार्थ :—दुःखमा नामक पंचमकाल २१००० वर्षका है, जिसमें ६८३ वर्ष पर्यन्त आचारारुहदि श्रुतकी धारा क्रमशः क्षीण होती हुई प्रवाहित होती रही । पश्चात् ( २१०००—६८३= ) २०३१७ वर्ष पर्यन्त श्रुततीर्थका प्रवाह हीयमान रूपसे प्रवाहित होता रहेगा, तत्पश्चात् धर्मप्रवर्तन करने वाले इस श्रुततीर्थका सर्वथा व्युच्छेद हो जावेगा ।

चतुर्वर्ण्य संघका अस्तित्व काल—

तेत्थि - मेत्ते कासे, जम्मिस्सवि चाउबन्ध - संघादो ।

अविणीवी दुम्भेधो<sup>१</sup>, असूयको सह य पाएणं ॥१५०६॥

सत्त-मय-मय-मवेहि, संजुसो<sup>२</sup> सत्त - गारव<sup>३</sup> - तएहि ।

कलह - पिपो<sup>४</sup> रागिदो, कूरो कोहासुओ<sup>५</sup> लोओ<sup>६</sup> ॥१५०७॥

। सुवित्तिरय-कहणं समत्तं ।

सर्ब :—इतने मात्र समय पर्यन्त चतुर्वर्ण्य सङ्घ जन्म लेता रहेगा । किन्तु लोक प्रायः अविनीत, दुर्बुद्धि, असूयक ( ईर्ष्यालु ), सात भयों, आठ मयों, तीन वार्यों एवं तीन गारवों सहित, कलहप्रिय, रागिह, क्रूर एवं क्रोधी होगा ॥१५०६-१५०७॥

। श्रुततीर्थका कथन समाप्त हुआ ।

१. द. व. क. ज. य. उ. दुम्भेधो । २. द. व. क. ज. य. उ. संजुसो । ३. व. गारवमये एहि, व. क. ज. उ. गारवमये एहि । ४. व. उ. रागिदो । ५. द. व. क. उ. कोहासुओ, ज. य. कोहासिओ । ६. य. व. क. ज. य. उ. लोहो ।

शक राजाकी उत्पत्तिका समय—

बीर-जिणे<sup>१</sup> सिद्धि-गवे, चत-सय-हगिसङ्गि-वास-परिमाणे<sup>२</sup> ।

कालम्मि अदिक्कंते<sup>३</sup>, उप्पण्णो एत्थ सक - राजो ॥१५०८॥

। ४६१ ।

अर्थ :—बीर जिनेन्द्रके मुक्ति प्राप्त होनेके चारसौ इकसठ वर्ष प्रमाण कालके व्यतीत होनेपर यही शक राजा उत्पन्न हुआ ॥१५०८॥

अह्वा बीरे सिद्धे, सहस्स - णवकम्मि सग-सयम्भहिण् ।

पणसीविम्मि यतीवे, पणमासे सक - णिओ जावो ॥१५०९॥

६७८५ मास ५

पाठान्तरम् ।

अर्थ :—अथवा, बीरभगवान्के सिद्ध होनेके नौ हजार सातसौ पचासी वर्ष और पौन मास व्यतीत हो जानेपर शक नृप उत्पन्न हुआ ॥१५०९॥

पाठान्तर ।

बीहस-सहस्स-सग-सय-ते णववी-वास - काल - विच्छेदे ।

बीरेसर<sup>४</sup> - सिद्धीवो, उप्पण्णो सग - णिओ अह्वा ॥१५१०॥

। १४७२३ ।

पाठान्तरम् ।

अर्थ :—अथवा, बीर भगवान्की मुक्तिके बीसह हजार सातसौ तेरानव वर्ष व्यतीत हो जानेपर शक नृप उत्पन्न हुआ ॥१५१०॥

पाठान्तर ।

विम्बाणे बीरजिणे, छम्मास - सवेसु पंच - वरिसेसु<sup>५</sup> ।

पण - मासेसु गवेसु, संजावो सग - णिओ अह्वा ॥१५११॥

। ६०५ मा ५ ।

पाठान्तरम् ।

१. व. व. क. व. उ. जिणे । २. द. व. उ. परिमाणो । ३. द. व. भदिककंती । ४. द. व. क. व. उ. सकनिजजाया । ५. व. क. व. बीरेसरस्स ।

अर्थ :- अथवा, बीर भगवान्‌के निर्वाण आनेके छह्त्ती पाँच वर्ष और पँच मास व्यतीत हो जानेपर एक नृप उत्पन्न हुआ ॥१५११॥

पार्ष्वार्थक :- अथवा, यदि तुल्यवैयर्थ्यता की श्रद्धा हो पाठान्तर ।

प्रायुकी क्षय-वृद्धि एवं एक नृपके समयकी उत्कृष्ट-आयु निकालनेका विधान—

बीसुत्तर - बास - सवे, बीसवि बासावि सोहेऊन तबी ।

इगिबीस - सहस्तेहि, भजिबे आऊन सय - बह्दी ॥१५१२॥

॥१॥  
॥२॥

अर्थ :- एकसी बीस वर्षोंमेंसे बीस वर्ष घटा देनेपर जो शेष रहे, उसमें इक्कीस हजारका भाग देनेपर प्रायुकी क्षय-वृद्धिका प्रमाण आता है ॥१५१२॥

अर्थ :- ( १२० — २० ) ÷ २१००० वर्ष =  $\frac{1}{210}$  वर्ष हानि-वृद्धिका प्रमाण । अर्थात् प्रायुका प्रतिदिन की हानि-वृद्धि का प्रमाण ६ मिनट ५२ सेकेण्ड है ।

सक-गिब-बास-बुवाण, चउ-सब-इगिसहि-बास-पहुबीण ।

बस-बुब-बो-सय-भजिबे, लख' सोहेऊन विगुण - सहोए ॥१५१३॥

तस्ति' अं अयसेसं, लखेव पयहुमान - जेहुऊ ।

पाठान्तरेसु' एसा, कुसी सध्वेसु पसेवसं ॥१५१४॥

अर्थ :- एक नृपके वयों सहित चारसी इकसठ आदि वर्षोंको दोसी दससे भाजित करे, जो लब्ध प्राप्त हो उसे एकसी बीसमेंसे कम करने पर जो अवशिष्ट रहे उतना उसके समयमें प्रवर्तमान उत्कृष्ट प्रायुका प्रमाण था । यह युक्ति एतत् सम्बन्धी पाठान्तरोंमेंसे प्रत्येकके समयमें भी जानना चाहिए ॥१५१३-१५१४॥

वित्तेवार्थ :- प्रकारान्तरोंसे एक नृप बीर-निर्वाणके ४६१ वर्ष, या १७८५  $\frac{1}{2}$  वर्ष, या १४७९  $\frac{1}{2}$  वर्ष या ६०४  $\frac{1}{2}$  वर्ष पक्कासु उत्पन्न हुआ और उस ( सकों ) का राज्य २४२ वर्ष पर्यन्त रहा अतः प्रत्येक एक राज्यके अन्तमें उत्कृष्ट प्रायुका प्रमाण इसप्रकार जानना चाहिए—

( १ ) १२० — { ( ४६१ + २४२ ) ÷ २१० } = ११६  $\frac{1}{2}$  वर्ष इस एक राज्यके अन्तमें उत्कृष्टायु ।

१. द. २१०, ब. क. ख. ग. उ. २१००० । २. द. ब. उ. तिस्रऊँ । ३. व. ब. क. ख. ग. उ.

(२) १२० — { ( ६७८५५ + २४२ ) ÷ २१० } = ७२५  $\frac{१५}{१४}$  वर्ष उत्कृष्टायु ।

(३) १२० — { ( १४७६३ + २४२ ) ÷ २१० } = ४०  $\frac{१५}{१४}$  वर्ष उत्कृष्टायु ।

(४) १२० — { ( ६०५५ + २४२ ) ÷ २१० } = ११५  $\frac{१५}{१४}$  वर्ष उत्कृष्टायु ।

शकराजाकी उत्पत्ति एवं उसके वंशका राज्यकाल—

जिस्वान - गवे कीरे, अज-सय-इगिलहि-वास-त्रिभुवे ।

जायो य सग - करियो, रज्जं वंसस्स<sup>१</sup> दु-सय-बादासा ॥१५१५॥

। ४६१ । २४२ ।

अर्थ :- वीर जिनेन्द्रके मिय्याणके चारसी इकसठ वर्ष बीत जाने पर शक नरेन्द्र उत्पन्न हुआ । इस वंशके राज्यकालका प्रमाण दोसी बयालीस वर्ष है ॥१५१५॥

गुप्तोंका और अशुमुखका राज्यकाल—

क्षोणि सया पणवण्णा, गुप्ताणं<sup>२</sup> अजमुहस्स बादासं ।

सय्वं होदि सत्तस्स, केई एव पक्खेति ॥१५१६॥

। २४५ । ४२ ।

अर्थ :- गुप्तोंके राज्यकालका प्रमाण दो सौ पचपन वर्ष और अशुमुखके राज्यका प्रमाण बयालीस वर्ष है, इन सबको मिलाने पर ( ४६१ + २४२ + २४५ + ४२ = ) १००० ( एक हजार ) वर्ष होते हैं, कितने ही आचार्य ऐसा भी निरूपण करते हैं ॥१५१६॥

पालक नामक अवन्तिसुतका राज्याभिषेक—

अवकाले<sup>३</sup> वीरजिणो, निस्सेयस - संपयं समावण्णो ।

तवकाले अभिसिस्सो, पालय - जामो अवन्तिसुतो ॥१५१७॥

अर्थ :- जिस कालमें वीर जिनेन्द्रने निःश्रेयस-सम्पदाको प्राप्त किया था, उसी समय पालक नामक अवन्तिसुतका राज्याभिषेक हुआ ॥१५१७॥

पालक, विजय एवं मुरण्डवंशी तथा पुष्यमित्रका राज्यकाल—

पालक-रज्जं सट्ठो, इगि-सय-पणवण्णा विजय-वंसभवा ।

वासं मुह<sup>४</sup> - वंसा, तीसं वत्ताणि पुत्तमिसम्मि ॥१५१८॥

६० । १४५ । ४० । ३० ।

१. द. व. क. ज. घ. ङ. वंसस्स । २. व. दुय । ३. व. गुप्ताणं । ४. व. व. ज. घ. ङ. जं कारे, क. जं काले । ५. व. मुह, क. घ. मुत्तय ।

**वर्ष :-** ( भवन्ति पुत्र ) पालकका राज्य साठ वर्ष, विजय वंशियोंका एकसौ पचपन वर्ष, गुरुव-वंशियोंका बालीस वर्ष और पुष्यमित्रका राज्य तीस वर्ष पर्यन्त रहा ॥१५१८॥

वसुमित्र-अग्निमित्र, गन्धर्व, नरबाहुन, भृत्यवंश और गुप्तवंशियोंका राज्यकाल—

वसुमित्र - अग्निमित्रो, सहो गन्धर्वया नि सप्तमेवकं ।

नरबाहुनो य चालं, तसो भत्तकुणा जादा ॥१५१९॥

६० । १०० । ४० ।

**वर्ष :-** इसके पश्चात् वसुमित्र-अग्निमित्र साठ वर्ष, गन्धर्व सौ वर्ष और नरबाहुन बालीस वर्ष पर्यन्त राज्य करते रहे । पश्चात् भृत्यवंशकी उत्पत्ति हुई ॥१५१९॥

भत्तकुणाच कालो, बोष्णि सदाहं हवन्ति बाबाला ।

तसो गुप्ता तानं, रज्जे बोष्णि य सदाणि' इगितोसा ॥१५२०॥

मार्कण्डेय :- अत्रार्थः श्री कृष्णदेवरायः श्री महाराज

**वर्ष :-** इन भृत्य ( कुषाण ) वंशियोंका काल दोसौ ब्यालीस वर्ष है, इसके पश्चात् फिर गुप्तवंशी हुए जिनके राज्यकालका प्रमाण दोसौ इकतीस वर्ष पर्यन्त रहा है ॥१५२०॥

कल्कीकी आयु एवं उसका राज्यकाल—

तसो कल्की जादो, इंदपुरे तस् चतुर्मुख - नामो ।

सत्तरि धरिता आऊ, विगुणिय - इगिबीस-रज्जं' य ॥१५२१॥

। ७० । ४२ ।

**वर्ष :-** फिर इसके पश्चात् इन्द्रपुरमें कल्की उत्पन्न हुआ । इसका नाम चतुर्मुख, आयु सत्तर वर्ष एवं राज्यकाल ब्यालीस वर्ष प्रमाण रहा ॥१५२१॥

**विशेषार्थ :-** पालकका राज्य ६० वर्ष, विजय० का १५५ वर्ष, भृगुव० वं० ४० वर्ष, पुष्य० का ३० वर्ष, वसुमित्र + अग्नि० का ६० वर्ष, गन्धर्वका १०० वर्ष, नरबाहुन ४०, भृत्य० २४२, गुप्त० २३१ वर्ष और चतुर्मुख का ४२ वर्ष अर्थात् ६० + १५५ + ४० + ३० + ६० + १०० + ४० + २४२ + २३१ + ४२ = १००० वर्ष ।

कल्कीकी पट्टवन्ध—

आयारंग - नराबो, पणहसरि - जुस कु-सय - बासेसु' ।

बोसीबेसु' बढो, पढो कबिकस्त नर - बह्मौ ॥१५२२॥

। २७५ ।

अर्थ :—आचारानुधरोके पश्चात् दोसी पञ्चत्तर वर्षोंके व्यतीत हो जाने पर नरपतिको पट्ट बाँधा गया था ॥१५२२॥

। ६८३ + २७५ + ४२ = १००० वर्ष ।

दिगम्बर मुनिराजों पर शुल्क ( देस ) एवं उन्हें अवधिज्ञान—

अह साहिऊण कक्की, गिय - जोसो<sup>१</sup> जणपदे पयत्तोण ।

सुक्कं 'जाचवि सुद्धो, पिङ्गणं' जाव समभाओ ॥१५२३॥

अर्थ :—तदनन्तर वह कल्की प्रयत्न-पूर्वक अपने योग्य जनपदोंको सिद्ध करके लोभको प्राप्त होता हुआ मुनिराजोंके आहारमेंसे भी अन्न-पिण्ड ( प्रथम प्रास ) को शुल्क ( कर ) स्वरूप माँगने लगा ॥१५२३॥

वावूणं पिङ्गणं, समभा कावूण अंतरायं पि ।

गच्छन्ति ओहिणाणं, उप्पज्जहि तेसु एक्कस्सि<sup>२</sup> ॥१५२४॥

अर्थ :—तब अमण ( मुनि ) अन्नपिण्ड देकर और अन्तराय करके [ निराहार ] चले जाते हैं । उस समय उनमेंसे किसी एक अमण को अवधिज्ञान उत्पन्न होता है ॥१५२४॥

कल्कीकी मृत्यु एवं उसके पुत्रको राज्य पद—

अह को वि असुरवेसो<sup>३</sup>, ओहीवो मुणि-गणाण उक्कसगं ।

वावूणं तं कक्कि, मारेवि हु धम्मवोहि सि ॥१५२५॥

अर्थ :—इसके पश्चात् कोई असुरदेव अवधिज्ञानसे मुनिगणोंके उपसर्गको जानकर एवं उस कल्कीको धर्म-ओही मानकर मार डालता है ॥१५२५॥

कक्कि-सुद्धो 'अज्झिज्जय-वामो रक्ख सि एमवि तक्करणे ।

तं रक्खवि असुरवेसो, धम्मे रज्जं करेज्ज सि ॥१५२६॥

अर्थ :—तब अजितञ्जय नामक उस कल्कीका पुत्र 'रक्षा करो' इस प्रकार कहकर उस देवके घरणोंमें नमस्कार करता है और वह देव 'धर्म पूर्वक राज्य करो' इस प्रकार कहकर उसकी रक्षा करता है ॥१५२६॥

१. द. क. ज. य. उ. जोसो । २. द. व. क. उ. उ. जातदि । ३. द. व. क. ज. य. उ. विवर्क ।

४. द. व. क. ज. य. उ. एक्कप्पि । ५. द. व. क. व. उ. असुरवेसो । ६. द. व. क. ज. य. उ. अजितञ्जयवामो ।



धर्म प्रवृत्तिमें हानि—

तत्तो शोभे वासे<sup>१</sup>, समदृग्मो पयदृदि जगणं ।

कमसो विवसे विवसे, कास - महप्येण हाएवे ॥१५२७॥

अर्थ :—इसके पश्चात् कुछ वर्षों तक लोगोंमें समीचीन धर्मकी प्रवृत्ति रहती है । फिर क्रमशः कालके माहात्म्यसे वह प्रतिदिन हीन होती जाती है ॥१५२७॥

कल्की एवं उपकल्कीयोंका समय एवं प्रमाण—

एवं वस्स - साहस्से, पुह - पुह कक्को हवेदि एक्केक्को ।

पंच - समय - वच्छरेसुं, <sup>१</sup>एक्केक्को तह य उमक्को ॥१५२८॥

अर्थ :—इसप्रकार एक-एक हजार वर्षोंके पश्चात् पृथक्-पृथक् एक-एक कल्की तथा पाँच-पाँचसौ वर्षोंके पश्चात् एक-एक उपकल्की होता है ॥१५२८॥

पञ्चम कासके दुष्प्रभावोंका संक्षिप्त निर्देश प्रत्येक कल्कीके समय साधुको अवधिज्ञान एवं

चातुर्वर्ण्य संघका प्रमाण—

कक्कि पडि एक्केक्के, दुस्सम - साहुस्स ओहिचाणं पि ।

संघा य चावुज्जणा, थोळा जायंति तक्काले ॥१५२९॥

अर्थ :—प्रत्येक कल्कीके प्रति दुःखमाकालवर्ती एक-एक साधुको अवधिज्ञान होता है और उसके समयमें चातुर्वर्ण्य संघ भी अल्प हो जाते हैं ॥१५२९॥

नाना प्रकारके उपसर्ग—

दुसमम्भो ओसहिओ, जायंते नीरसाओ सव्वाओ ।

बहु - चाओ नीर-राउस अरि - मारी घोर - उवसग्गा ॥१५३०॥

अर्थ :—दुःखम काल ( के प्रारम्भ ) में सभी औषधियाँ ( वनस्पतियाँ ) नीरस हो जाती हैं तथा घोर, राजकुल, शत्रु, भारी आदि अनेक प्रकारके घोर उपसर्ग होने लगते हैं ॥१५३०॥

दुःख प्राप्तिका कारण—

इन्द्रवज्रा—

सीसेण सक्केण बसेण ओहुप्पसीए तेएण कुलक्कभेरां ।

इक्केवमावीहि पुणेहि मुक्का, सेवति विज्जं न सुहं लहंते ॥१५३१॥

**अर्थ :**—इस कालमें मनुष्य कुल क्रमागत क्षीन, सत्य, बल, तेज तथा मर्यादा ज्ञान आदि नुणोति हीन पुरुषोंकी सेवा करते हैं भक्त: सुख प्राप्त नहीं करते ॥१५३१॥

उच्चकुलको भी दूषित करना—

मिथ्यास्त-मोहे बिसमम्भि ततो, मायाए भीषीए जरा य नारी ।

मञ्जाव-सज्जावि न से गणति, गोस्ताइ तुंगाइ बिबूतयति ॥१५३२॥

**अर्थ :**—इस विषम कालमें मिथ्यात्व और मोहमें प्रस्त नर-नारी माया एवं भयके कारण मर्यादा और सज्जा को भी नहीं गिनते हैं और इसी कारणसे वे अपने उच्चगोन को भी दूषित करते हैं ॥१५३२॥

असहिष्णुताकी मूर्ति—

रागेण दमेण मखोदयेण, संजुल - बिता बिनयेण होना ।

कोहेण लोहेण सिमिस्तमाणा, कीवाजवा होति असूय-काया ॥१५३३॥

**अर्थ :**—इस कालमें विनयसे हीन एवं चिन्तासे युक्त मनुष्य राग, दम्भ, मद, क्रोध एवं सोमसे विलेशित होते हुए निन्दयता एवं ईर्ष्या की मूर्ति होते हैं ॥१५३३॥

चारित्र्यका परित्याग—

संगेण पापाबिह - संकिलेसु, बेगेण घोरेंण परिगहेरां ।

अचंचल-मोहेण व मञ्जमाणा, अरिस्त-मुञ्चन्ति सबैण केई ॥१५३४॥

**अर्थ :**—परिग्रहकी तीव्र भासकितसे तथा अत्यन्त मोहसे एवं मदके वेगसे अनेक प्रकारके संस्पर्शोंमें डूबते हुए कितने ही जीव चारित्र्यको छोड़ देते हैं ॥१५३४॥

उत्सेध एवं मायु आदिकी हीनता—

उच्छेहमाऊ-बल-वीरियावि, सम्भं पि हाएवि कसेण ताणं ।

पापेण ओबंति बिबेक-हीणा, सेव नसेयं न बिचारयति ॥१५३५॥

**अर्थ :**—इस दुष्प्रमाकालमें मनुष्योंका उत्सेध, मायु, बल एवं वीर्य आदि सभी क्रमशः हीन-हीन होते जाते हैं तथा विवेकहीन प्राणी अंध-अश्रेयका विचार नहीं करते हैं और पापसे ही जीते हैं । अर्थात् पापाचरण करते हुए ही जीवन यापन करते हैं ॥१५३५॥

कुल हीन राजा—

अणाण-सुत्ता कुल-हीन-राजा, पालंति भूमि परदार-रत्ता ।

सज्जेण धम्मेण बिमुञ्चमाणा, कालस्स बोत्तेस्य य दुस्समस्स ॥१५३६॥

अर्थ :—दुःखमा कालके दोषसे सभी धर्मोंका परित्याग करते हुए भ्रजान युक्त, परदारारहित और कुल-हीन राजा प्रजाका पालन करते हैं ॥१५३६॥

देवादिकोंके आनेका निषेध—

अतो चारण - मुनिगो, देवा विष्वाहुरा य नार्यन्ति ।

संजम - गुणाहियाणं, मज्जयान विराम बोसेन ॥१५३७॥

अर्थ :—इस दुःखमाकालमें संजम-गुणसे निषिष्ट मनुष्योंके विराम दोष ( उनके अभाव ) के कारण चारणकटिघारी मुनि, देव और विद्याधर भी नहीं आते हैं ॥१५३७॥

जनपदमें उत्पन्न होने वाली बाधाएँ—

अहविष्टि - अनाविष्टि, तववर-परचवक-ससभ-पहुबीहि ।

सम्मान जनपदार्ण, बाधा उपपज्जये विसमा ॥१५३८॥

अर्थ :—( इस दुःखमा-कालमें ) अतिवृष्टि, अनावृष्टि, चोर, परचक ( शत्रु ) एवं ( सेतमें हानि पहुँचाने वाले ) कीड़ों आदिसे सभी जनपदोंके लिए विषम बाधा उत्पन्न होती जाती है ॥१५३८॥

पापी-प्रभृति मनुष्योंकी बहुलता—

चंडाल-सबर-पाप्मा, पुल्लिन्द-माहल-चिलाह' - पहुबीओ ।

दीसन्ति णरा बह्वा, पुण्व - पिबद्धेहि पाणेहि ॥१५३९॥

बीजाणाहा कूरा, णाणाविह - बाहि - धेयणा - कुसा ।

सम्पर - करंक - हत्था, वेसंतर - गमेण संतप्ता ॥१५४०॥

अर्थ :—उस समय पूर्वमें बांधे हुए पापोंके उदयसे अण्डाल, शबर, द्रवपच, पुल्लिन्द, साहल ( स्लेच्छ विशेष ) और किरात आदि; दीम, समाध, कूर और नागा प्रकारकी व्याधि एवं वेदनासे युक्त; हाथोंमें सम्पर तथा भिक्षापत्र लिए हुए और वेशास्तर-गमनसे सन्तप्त बहुतसे मनुष्य दिखते हैं ॥१५३९-१५४०॥

अन्तिम कल्की एवं अन्तिम चतुर्विधसंघका निर्देश—

एवं दुस्सम - कासे, हीयन्ते धम्म - आउ - उदयाधी ।

अन्ते विसम - सहाओ, उपपज्जवि एकवीसमो कक्की ॥१५४१॥

**अर्थ** :—इसप्रकार दुबसा-कालमें घर्मे, आयु और लेंचाई आदि कम होती जाती है, पश्चात् (कालके) अन्तमें विषम स्वभाववाला (जलमन्यन नामक) इक्कीसवाँ कल्की उत्पन्न होता है ॥१५४१॥

वीरंगजाभिधानो,<sup>१</sup> तबकाले मुनिबरो भवे एक्को ।

सम्बसिरो तह बिरवी, सावय-जुग-मणिलोसि<sup>२</sup> पंगुसिरो ॥१५४२॥

**अर्थ** :—उस कल्कीके समयमें वीराङ्गज नामक एक मुनि, सर्वश्रो नामकी आयिका तथा अग्निल और पंगुघ्नी नामक आवक युगल (आवक-आविका) होते हैं ॥१५४२॥

कल्की राजा एवं मन्त्री की वार्ता—

आम्हाए कक्किणिओ, रिय-जोगो साहिऊण जणपवए ।

सो कोइ गरिब मणुओ, जो मम एा बस सि 'मंसिबरे ॥१५४३॥

**अर्थ** :—वह कल्की आजासे अपने योग्य जनपदोंको सिद्ध (जीत) कर कहता है कि हे मन्त्रिवर ! ऐसा कोई पुरुष तो नहीं है जो मेरे वशमें (आधीन) रहने लगे ॥१५४३॥

अह बिष्णुबिति संतो, सामिय<sup>३</sup> एक्को मुनी बसो गरिब ।

तसो भणेवि कक्की, कहह रिसी 'केरिसायारो ॥१५४४॥

सचिवा<sup>४</sup> सबति सामिय, सयल-अहिंसावधान आधारो ।

संतो यिमोक्क - संगो, 'तणुदुण - कारणेण मुनी ॥१५४५॥

पर - घर<sup>५</sup> - दुबारएसुं, मज्झण्हे काय-वरिसण किन्ना ।

पासुयमसणं<sup>६</sup> भुंजवि, पाणिपुडे विगघ<sup>७</sup> - परिहीणं ॥१५४६॥

**अर्थ** :—तब मन्त्री निवेदन करते हैं कि हे स्वामिन् ! एक मुनि आपके वशमें नहीं है । तब कल्की कहता है कि कहो उस ऋषिका कैसा स्वरूप है ? तब सचिव (मन्त्री) कहते हैं कि हे स्वामिन् ! सकल-अहिंसावर्तोंका आधारभूत वह मुनि परिग्रहसे रहित होता हुआ शरीरको स्थिति (आहारके) निमित्त दूसरोंके घर-द्वारों पर शरीरको दिखाकर मध्याह्न-कालमें अपने हस्तपुटमें विघ्न-रहित प्रामुक आहार ग्रहण करता है ॥१५४४-१५४६॥

१. द. व. ज. उ. मिधानो । २. द. व. मण्णिलोसि, क. ज. य. उ. मणिलोसि । ३. द. मंसिपुरो, व. क. य. उ. मंसिपुरो । ४. द. व. क. ज. य. सामय । ५. व. ज. य. केविमाणी, व. क. उ. केविलीमाणी । ६. व. व. क. ज. य. उ. सचिवो । ७. द. व. क. ज. य. उ. तणुदुण । ८. द. व. क. ज. य. उ. पर । ९. द. व. य. मसणं हि, व. क. उ. मसणहि । १०. द. व. क. ज. य. उ. विष्णु ।

कल्की द्वारा मुनिराजसे शुल्क ग्रहण, उन्हें भवविज्ञानकी प्राप्ति एवं  
संघको कासावसानका संकेत—

सोबूण संति - वयणं, भणेवि कक्को अहिसवधधारी ।  
कहि' सो वचवदि पावो, अप्पं ओ 'हणदि सम्बर्भगीहि ॥१५४७॥  
सं तस्स जग - पिडं, सुक्कं 'गेण्हेह अप्प - धाविस्स ।  
अह आचिवम्हि पिडे, बाहूणं मुणिवरो तुरिबं ॥१५४८॥  
काहूणमंतरायं, गक्कवि पावेवि ओहिणार्ण पि ।  
हक्कारिय अणिलयं, पंगुसिरी - विरवि - सम्बसिरी' ॥१५४९॥  
भासह पसण्ण-हिवधो, इस्सम - कासस्स आदमवसाणं ।  
सुम्हम्ह' ति - दिवमाळ, एसो अणसाण - कक्को हु ॥१५५०॥

वार्त्ता :—इस प्रकार मन्त्रीके वचन सुनकर वह कल्की कहता है कि—सब प्रकारसे जो अपनी  
आत्माका धात करता है ऐसा वह अहितावतधारी पापी कहा जाता है ? सो कहो और उस आत्म-  
धाती मुनिका प्रथम पिण्ड शुल्क रूपमें ग्रहण करो । तत्पश्चात् ( कल्कीकी आज्ञानुसार ) प्रथम पिण्ड  
( यास ) मांगे जानेपर मुनीन्द्र तुरन्त प्राप्त देकर एवं अन्तराय करके वापिस चले जाते हैं तथा भववि-  
ज्ञान भी प्राप्त कर लेते हैं । उस समय वे मुनीन्द्र अग्निल भावक, पंगुधो आबिका और सर्वधो  
धायिकाको बुलाकर प्रसन्नचित्त होते हुए कहते हैं कि अब दुःखमाकालका अन्त आचुका है, हमारी और  
तुम्हारी प्रायु मात्र तीन दिनकी अवशेष है और यह अन्तिम कल्की है ॥१५४७-१५५०॥

अन्तिम चतुर्विध संघका संन्यास ग्रहण एवं समाधिग्रहण—

साहे अत्तारि अणा, चउविह - आहार - संग - पहुवीणं ।  
जावण्णीयं खंभिय, सण्णासं करंति' भसीए ॥१५५१॥

वार्त्ता :—तब वे चारों ( मुनि, धायिका, भावक, आबिका ) जन चारों प्रकारके आहार  
और परिग्रहादिको जीवन ग्रह के लिए छोड़कर संन्यास ग्रहण कर लेते हैं ॥१५५१॥

१. व. व. य. कह सो वचवदि, व. क. उ. कह सो वचवदि । २. व. व. क. य. उ. जावण्णि ।  
३. व. व. क. य. उ. वेण्हेव । ४. द. व. क. ज. य. उ. सम्बसिडीहि । ५. व. य. सुम्हम्हि । ६. द. व. क.  
ज. द. उ. करंतीए ।

धर्म-व्यवस्थाका विनाश—

कसिय - बहुलस्संते, सादीसुं विणयरम्मि उत्तमिए ।

किय - सण्णासा' सन्ने, पावन्ति समाहिमरणाइं ॥१५५२॥

अर्थ :—वे सब कार्तिक मासके कृष्णपक्षके अन्तमें ( अमावस्याके दिन ) सूर्यके स्वाति नक्षत्रके ऊपर उदित रहते संन्यास पूर्वक समाधिमरण प्राप्त करते हैं ॥१५५२॥

पर्यायान्तर-प्राप्ति—

उवहिउवमाउ 'जुसो, सोहम्मे मुनिवरो' तवो जावो ।

तम्मि य ते तिणिज्ज जणा, साहिय-पत्तिरोवमाउ-जुवा' ॥१५५३॥

अर्थ :—समाधिमरणके पश्चात् बीराङ्गद मुनिराज एक सागरोपम आयुसे युक्त होते हुए सोधमंस्वर्गमें उत्पन्न होते हैं और वे तीनों जन भी एक पर्योपमसे कुछ अधिक आयु लेकर वहीं पर ( सोधमं स्वर्गमें ) उत्पन्न होते हैं ॥१५५३॥

राज्य ( राजा ) एवं समाज ( अग्नि ) व्यवस्थाका विनाश—

तद्विसे मज्झण्हे, कय - कोहो को वि असुर-वर-देवो ।

सारेदि कक्किरायं, अग्गो एासेदि विणयरत्त्वमये ॥१५५४॥

अर्थ :—उसी दिन मध्याह्नमें असुरकुमार जातिका कोई क्रुद्ध हुआ उत्तम देव उस कल्की राजाको मारता है और सूर्यास्त समयमें अग्नि नष्ट हो जाती है ॥१५५४॥

सर्व कल्की एवं उपकल्कियोंकी पर्यायान्तर प्राप्ति—

एवमिगिवीस कल्की, उवकक्की तेत्तिया य धम्माए ।

जम्मांति धम्म - बोहा, जसणिहि - उवमाण-आउ-जुवा ॥१५५५॥

अर्थ :—इस प्रकार इनकीस कल्की और इतने ही उपकल्की धर्मका विध्वंस करने के कारण एक सागरोपम आयुसे युक्त होकर धर्मा पृथिवी ( पहले तरक ) में जन्म लेते हैं ॥१५५५॥

अतिदुःखमा कालका प्रवेश और उसके उत्सेह आदिका प्रमाण—

वास-तए घट - भासे, पण्खे गलिबम्मि पबिसदे तत्तो ।

सो अबिदुस्सम - नामो, छट्ठो कालो महाविसमो ॥१५५६॥

। वा ३. मा ८. दि १५ ।

अर्थ :—इसके पश्चात् तीन वर्ष, आठ मास और एक पक्षके बीत जाने पर महाविषम वह अतिदुःखमा नामक छठा काज प्रविष्ट होता है ॥१५५६॥

महाविषम :- अथवा ओ सुविदितसम्पत्ति ओ महाराम

तत्त पढम - पवेसे 'ति-हत्थ - बेहो अट्ठ - हरथो य ।

तह बारह पुहुट्टो, परमाऊ बीस वासाणि ॥१५५७॥

। ३। ३। १२। २०।

अर्थ :—उसके प्रथम प्रवेशमें शरीरकी ऊँचाई तीन हाथ अथवा साढ़े तीन हाथ, पृष्ठभाग की हड्डियाँ बारह और उत्कृष्ट आयु बीस वर्ष प्रमाण होती है ॥१५५७॥

इस कालके मनुष्योंका आहार एवं उनका स्वरूप चित्रण—

मूलफल - मच्छाबी, सम्भारं माणुसाण आहारो ।

ताहे<sup>१</sup> वासा वण्छा, गेह - पण्हुवी करण न बीसंति ॥१५५८॥

तत्तो बग्गा सम्भे, भवण - बिहीणा वण्हेसु हिंसता ।

सम्भंग - भूस - वण्णा<sup>२</sup>, गो धम्म - परामणा कूरा ॥१५५९॥

बहिरा धंधा काणा, मूका वारिह - कूड - परिपुष्णा ।

बीणा वाणर - कूबा, महमेच्छा<sup>३</sup> हुंसंठाणा ॥१५६०॥

कुज्जा बाम्भन-तणुणो<sup>४</sup>, गान्धाहि-वाहि-वेयना-वियसा<sup>५</sup> ।

बहु - कोह - लोह - मोहा, पडराहारा सहाव-पाविट्ठा ॥१५६१॥

संबद्ध-सज्ज-बंधव-धम-पुच-कलस - मिच - परिहीणा ।

कुडिबंग - कुडिब - केसा, जूबा - सिक्काहि संछण्णा ॥१५६२॥

१. व. न. य. दुहत्थवेदसो, व. उ. तिहत्थवेदसो । २. द. व. य. वादे, क. व. उ. वादे । ३. द. क. क. ज. य. उ. वण्णो । ४. व. व. क. व. य. उ. महमेच्छा । ५. द. क. क. ज. य. उ. तणुणा । ६. व. क. उ. विडसा ।





अर्थ :—उस समय महागम्भीर एवं भोषण संवर्तक वायु चलती है, जो सात दिन तक बृह, पर्वत और चिला आदिको चूर्ण कर देती है ॥१५६६॥

तरु-गिरि-भंगेहि णरा, तिरिया य सहति गुह्य-कुक्खाइं ।

इच्छति 'सरण - ठानं, विलसति बहुप्ययारेणं ॥१५६७॥

अर्थ :—वृक्षों और पर्वतोंके टूटनेसे मनुष्य एवं तिर्य्य महादुःख प्राप्त करते हैं तथा सरण-योग्य स्थानको अभिलाषा करते हुए बहुत प्रकारसे विलाप करते हैं ॥१५६७॥

गंगा - सिन्धु - जबीज, वेयइह - वनंतरम्मि पविसंति ।

पुह - पुह संसेज्जाइं, बाहसरि सयल - सुयलाइं ॥१५६८॥

अर्थ :—इस समय पृथक्-पृथक् संख्यात एवं सम्पूर्ण बहतर युगल गङ्गा-सिन्धु नदियोंकी वेदी और विजयार्थ-वनके मध्य प्रवेश करते हैं ॥१५६८॥

बेवा विज्जाहरमा, कारुण्य - परा णराण तिरियाणं ।

संसेज्ज - जीव - रासि, विसंति तेसुं पएसेसुं ॥१५६९॥

अर्थ :—देव और विद्याधर दयाईं होकर मनुष्य और तिर्य्योमेंसे संख्यात जीव-राशिको उन प्रदेशोंमें ले जाकर रखते हैं ॥१५६९॥

उनचास दिन पर्यन्त कुवृष्टि—

ताहे गभीर - गज्जी, 'मेघा सु'संति तुहिण-सार-जसं ।

विस - सलिलं पसेवकं, पसेवकं सत्त दिवसाणि ॥१५७०॥

अर्थ :—उस समय गभीर गज्जी सहित मेघ नीतल एवं धार जल तथा विष-जलमेंसे प्रत्येकको सात-सात दिन पर्यन्त बरसाते हैं ॥१५७०॥

धूमो धूलो वज्जं, जलंत - आला कला य 'दुप्येस्ये ।

वरिसंति जलद - गिबहा, एक्केवकं सत्त दिवसाणि ॥१५७१॥

अर्थ :—इसके अतिरिक्त मेघोंके वे समूह धूम, धूलि, वज्र एवं जलते हुए दुष्प्रकम्प ज्वाला समूह, इनमेंसे प्रत्येकको सात-सात दिन पर्यन्त बरसाते हैं ॥१५७१॥

कुवृष्टियोंके पक्ष्वात् आर्यखण्डका स्वरूप—

एवं कमेण भरहे, अज्जा - अंजस्मि ओयव्व एव्वं ।

चिन्ताए उवारि ठिवा, इज्झइ वडिइ - यदा भूमौ ॥१५७२॥

अर्थ :—इसप्रकार कमणः भरतओत्रके मध्य आर्यखण्डमें चिन्ता-पृथिवीके ऊपर स्थित वृद्धिज्ञत एक योजनकी भूमि जलकर नष्ट हो जाती है ॥१५७२॥

अज्ज-महग्गि-असेणं, अज्जा - अंजस्स वडिइया' भूमौ ।

पुण्डित्स - अंध - क्वं, मोसूणं जावि लोयंतं ॥१५७३॥

अर्थ :—अज्ज और महा-अग्निके जलसे आर्यखण्डकी बड़ी हुई भूमि अपने पूर्ववर्ती स्कन्ध स्वरूपको छोड़कर लोकान्त पर्यन्त पहुँच जाती है ॥१५७३॥

ताहे' अज्जा - अंध, इप्पवतस्स-सुसिह-कंति-सम-पुट्ट' ।

गय - अस्ति - पंक - कत्तुसं, होदि समं सेस - भूमौहि ॥१५७४॥

अर्थ :—उस समय आर्यखण्ड जेय भूमियोंके समान दण्डतलके सदृश कान्तिसे युक्त, पुट्ट और धूलि एवं कीचड़ आदिकी कलुषतासे रहित हो जाता है ॥१५७४॥

उपस्थित मनुष्योंका उत्सेध आदि—

तत्थुअत्थिह - जराणं, 'हत्थं उव्वो य सीलसं वस्सा ।

अह्मा पण्णरसाऊ, विरियादो तव्वज्झा य ॥१५७५॥

अर्थ :—(उस समय) वहाँ उपस्थित मनुष्योंकी ऊँचाई एक हाथ, प्राप्ति सीलह वर्ष अथवा पञ्चह वर्ष प्रमाण तथा शक्ति आदि भी तबनुसार ही होती हैं ॥१५७५॥

उत्सर्पिणी कालका प्रवेश और उसके भेद—

तत्तो पविस्सवि रम्मो, कालो उत्सर्पिणि सि चिककाहो ।

पडमो अइप्पुस्समओ, बुद्धज्जओ दुस्समाज्जामा ॥१५७६॥

दुस्समसुसमो तविओ, अउत्थओ सुसमदुस्सदो' नामा ।

पंचमओ तह सुसमो, अण्णिओ सुसमसुसमओ छट्ठो ॥१५७७॥

**अर्थ** :—इसके पञ्चाश उत्सर्पिणी ( इस ) नामसे विख्यात रमणीय काल प्रवेश करता है। इसके छह भेदोंमेंसे प्रथम अत्रिबुधमा, द्वितीय दुषमा, तृतीय सुषमसुषमा, चतुर्थ सुषमदुषमा, पाँचवीं सुषमा और छठा जनोंको प्रिय सुषमसुषमा है ॥१५७६-१५७७॥

उत्सर्पिणी कालका कालमान—

एवाण कालमानं, अवसर्पिणि - काल - मान-सारिच्छं ।

उज्जेह - आठ - पहुँची, बिबसे दिवसस्मि बह्वंसे ॥१५७८॥

अद्विदुस्समकाल वास २१००० । दु वास २१००० ।

दुसमसुषम सा १ को को रिण वास ४२००० ।

सुसमदुसम सा २ को को रिण वास ४२००० ।  
सु सु सा ४ को को ।

**अर्थ** :—इनका काल प्रमाण अवसर्पिणी कालके प्रमाण सहस्र ही होता है। उत्सर्पिणी कालमें ( शरीरकी ) ऊँचाई और आयु आदिक दिन-प्रतिदिन बढ़ती ही जाती है ॥१५७८॥

**विशेषार्थ** :—अवसर्पिणीकाल सहस्र उत्सर्पिणीकालके अतिदुःखमाकालका प्रमाण २१००० वर्ष, दुःखमाकालका २१००० वर्ष, दुःखमासुषमा कालका प्रमाण ४२००० वर्ष कम एक कोड़ाकोड़ी सागर, सुषमादुःखमाका दो कोड़ाकोड़ी सागर, सुषमाकालका तीन कोड़ाकोड़ी सागर और सुषमासुषमाकालका प्रमाण चार कोड़ाकोड़ी सागर है ।

सुवृष्टि निर्देश—

पुण्णर-मेघा सत्तिसं, वरिसंति विण्णानि सस सुह-जणणं ।

वज्जणिण्णाए वज्जा, सुमी सयला वि सीयलो होवि ॥१५७९॥

**अर्थ** :—उत्सर्पिणी कालके प्रारम्भमें पुण्णर-मेघ सात दिन पर्यन्त सुखोत्पादक जल बरसाते हैं, जिससे वन्याग्निसे जसी हुई सम्पूर्ण पृथिवी भीतल हो जाती है ॥१५७९॥

वरिसंति क्षीर-मेघा, क्षीर - जलं सेत्तिमानि विवसानि ।

क्षीर - जलेहि भरिवा, सज्झाया होवि सा सुमी ॥१५८०॥

**अर्थ** :—क्षीर-मेघ उतने ( सात ) ही दिन पर्यन्त क्षीरजलकी वर्षा करते हैं। इसप्रकार क्षीरजलसे भरी हुई यह पृथिवी उत्तम कान्ति युक्त हो जाती है ॥१५८०॥

ततो अमिश्र-पयोदा, अमिश्रं वरिसंति सप्त विवस्ताणि ।

अमिश्रेण<sup>१</sup> सिताए, महिए जायंति<sup>२</sup> बस्ति - गुम्मादी<sup>३</sup> ॥१५८१॥

अर्थ :—इसके पश्चात् सात दिन पर्यन्त अमृतमेघ अमृतको वर्षा करते हैं । इसप्रकार अमृतसे अभिविक्त भूमि पर मत्ता एवं गुल्म आदि उगने लगते हैं ॥१५८१॥

ताहे रस - जलवाहा, दिव्य-रसं पवरिसंति सप्त-दिने ।

दिव्यरसेणाउष्णा, रसवंता<sup>४</sup> होति ते सन्ने ॥१५८२॥

अर्थ :—उस समय रस-मेघ सात दिन पर्यन्त दिव्य-रसकी वर्षा करते हैं । इस दिव्य-रससे परिपूर्ण वे सब ( लता-मुल्म आदि ) रसवाले हो जाते हैं ॥१५८२॥

सृष्टि रचनाका प्रारम्भ—

विषिह-रसोत्तहि-भरिदा, सुमी सुत्साह-परिणवा होवि ।

ततो सोयल-गंधं, नाविता<sup>५</sup> निस्सरंति नर - तिरिया ॥१५८३॥

अर्थ :—विषिह रसपूर्ण औषधियोंसे भरो हुई भूमि गुस्वाद रूप परिणत हो जाती है । पश्चात् शीतल गन्धको महराकर वे मनुष्य और तिर्येम्भ गुफाओंसे बाहर निकल आते हैं ॥१५८३॥

उस कासका रहन-सहन एवं आहार—

फल-मूल-बल-प्यहुदि, कुहिबा<sup>६</sup> लावंति मस - पदुवीणं ।

जगा गो - धम्मपदा, नर - तिरिया बन्न - पएसेसुं ॥१५८४॥

अर्थ :—उस समय स्त्री, मनुष्य और तिर्येम्भ नरन रहकर पशुओं जैसा आचरण करते हुए क्षुधित होकर वन-प्रदेशोंमें मस ( धतूरे ) आदि वृक्षोंके फल, मूल एवं पत्ते आदि खाते हैं ॥१५८४॥

आयु आदिकका प्रमाण एवं उनकी वृद्धि—

तत्काल-पदम - भागे, आऊ पण्णरस सोलस समा वा ।

उब्भेहो इगि - हत्थं, वद्धंते आठ - पदुवीणि ॥१५८५॥

अर्थ :—उस कालके प्रथम भागमें आयु पन्द्रह अथवा सोलह-वर्ष और ऊँचाई एक हाथ प्रमाण होती है । इसके आगे आयु आदि बढ़ती ही जाती है ॥१५८५॥

१. अ. य. अमिश्रेण । २. ब. उ. वसि । ३. ड. ब. क. ज. य. उ. गुम्मादि । ४. ब. ब. क. क. प. उ. क्षुब्ध ।

आक तेजो बुद्धी, बाहुबलं तह य वेह - उज्ज्वलो ।

संसि - धिधि - प्यहुधीओ, काल - सहस्रेण बद्धंति ॥१५८६॥

अर्थ :- मायु, तेज, बुद्धि, बाहु ( भुजा ) बल, देहकी ऊँचाई तथा एवं वृत्ति ( धैर्य ) आदिक सब काल-स्वभावसे उत्तरोत्तर बढ़ते जाते हैं ॥१५८६॥

अतिदुषमा कालकी परिसमाप्ति—

एवं बोलीषेसु<sup>१</sup>, इगिषीस - सहस्स - संस - बासेसु<sup>२</sup> ।

पूरेषि भरहसोते, कालो अविदुस्तमो नाम ॥१५८७॥

। अविदुस्तम-कालं समस्त<sup>३</sup> ।

अर्थ :- इसप्रकार इसकीस हजार संख्या-प्रमाण वर्ष व्यतीत हो जानेपर भरतक्षेत्रमें अति-दुःखमा नामक काल पूर्ण होता है ॥१५८७॥

। अतिदुषमाकाल समाप्त हुआ ।

दुःषमाकालका प्रवेश और आहार—

ताहे दुस्तम-कालो, पबिसिहि तस्सि च मणुब-तिरियारुं ।

आहारो पुण्ण<sup>४</sup> चिय, बीस - सहस्सावहि जाव ॥१५८८॥

। २०००० ।

अर्थ :- तब दुःषमा कालका प्रवेश होता है । इस कालमें मनुष्य-तिर्यञ्चोंका आहार बीस हजार वर्ष पर्यन्त पहलेके ही सटक रहता है ॥१५८८॥

आयु आदिका प्रमरण—

तस्स य पद्धम - पवेसे, बीस बासाणि हीवि परमाक<sup>५</sup> ।

उदओ य तिण्णि हत्था, आउठ<sup>६</sup> - हत्था बबंति परे ॥१५८९॥

। २० । ३ । ३ ।

अर्थ :- इस कालके प्रथम प्रवेशमें उत्कृष्ट आयु बीस वर्ष और ऊँचाई तीन हाथ प्रमाण होती है । दूसरे साधारण ऊँचाई साढ़े तीन हाथ प्रमाण कहते हैं ॥१५८९॥

कुलकरींकी उत्पत्तिका निर्देश—

बास - सहस्ते सेसे, उप्पसी कुलकराज भरहम्मि ।

अह चोदसारा ताणं, कमेण नामाणि बोद्धामि ॥१५६०॥

अर्थ :—इस कालके एक हजार वर्ष पहले पड़ोस में चौदह कुलकरीं की उत्पत्ति होने लगती है । अब ( मैं ) उन कुलकरींके नाम क्रमशः कहता हूँ ॥१५६०॥

चौदह कुलकरींके नाम एवं उनका उत्प्रेष—

कणधो कणधप्पह-कणधराय-कणधद्वजा कणधपुंखो ।

‘नलिनो नलिनप्पह-नलिनराय’-एलिनद्वजा नलिनपुंखो ॥१५६१॥

पडमपह - पडमराजा, पडमद्वज-पडमपुंख-पामा य ।

आबिम - कुलकर - उदधो, चउ-हरयो धंतिमस्स सचवेव ॥१५६२॥

[ ४ । ७ । ]

अर्थ :—कनक, कनकप्रभ, कनकराज, कनकध्वज, कनकपुंख ( कनकपुङ्खव ), नलिन, नलिनप्रभ, नलिनराज, नलिनध्वज, नलिनपुंख ( नलिन पुङ्खव ), पद्मप्रभ, पद्मराज, पद्मध्वज और पद्मपुंख ( पद्मपुङ्खव ), क्रमशः ये उन चौदह कुलकरींके नाम हैं । इनमेंसे प्रथम कुलकरके शरीर की ऊँचाई चार हाथ और अन्तिम कुलकरकी ऊँचाई सात हाथ प्रमाण होती है ॥१५६१-१५६२॥

सेसाणं उत्सेहे<sup>१</sup>, संपदि अम्हाण नत्थि उववेसो ।

कुलकर - पट्टयो पामा, एदाणं होंति गुणजामा ॥१५६३॥

अर्थ :—ये कुलकरींकी ऊँचाईके विषयमें हमारे पास इस समय उपदेश नहीं है । इनके जो कुलकर आदि नाम हैं, वे गुण ( सार्वक ) नाम हैं ॥१५६३॥

कुलकरींका उपदेश—

ताहे बहुविह-ओसहि-बुराए<sup>२</sup> पुडवोए पावको नत्थि ।

सह कुलकरा जराणं<sup>३</sup>, उववेसं वेति<sup>४</sup> विजय - कुत्ताणं ॥१५६४॥

१. द. व. क. ज. य. उ. बोलीली । २. द. व. क. ज. उ. एलिनप्पह एराय । ३. द. व. क. ज. य. उ. उत्सेहो । ४. द. व. क. य. उ. पुंखाय । ५. द. व. क. ज. उ. सुठाय । ६. द. विजि, व. वेति ।

अर्थ :— उस समय विविध प्रकारकी औषधियोंके रहते हुए भी पृथिवी पर अग्नि नहीं रहती, तब कुलकर विनयसे युक्त मनुष्योंको उपदेश देते हैं ॥१५६४॥

मयिदूरा कुणह अग्निं, पचेह अण्णाणि भुंजह अहिच्छं ।

‘कारह विणाहं बंधव - पधुविदारेण सोक्खेणं ॥१५६५॥

अर्थ :— मक्कर आग उत्पन्न करो और अन्न ( भोजन ) पकाओ । विवाह करो और आन्धवादिकके निमित्तसे इच्छानुसार सुखोंका उपभोग करो ॥१५६५॥

एवमेव ते पण्डित, ते मिहमांसि कलकरा इत्थं ।

एवमिह विवाह - विहीओ, पट्ठसे पडमपुंसाओ ॥१५६६॥

। बुद्धसमकालो<sup>१</sup> समघो ।

अर्थ :— जिन्हें कुलकर इसप्रकारकी शिक्षा देते हैं, वे पुद्गल प्रत्यन्त म्लेच्छ होते हैं । विशेष यह है कि पद्मपुद्गल कुलकरके समयसे विवाह-विधियाँ प्रचलित हो जाती हैं ॥१५६६॥

। इसप्रकार दुःखमाकालका वर्णन समाप्त हुआ ।

दुःखमसुखम कालका प्रवेश, उत्सेध आदिक प्रमाण एवं मनुष्योंका स्वरूप—

तस्सो बुद्धसमसुसमो, कालो पण्डितेषि तस्स पडमम्मि ।

सग - हत्था उत्सेहो, वोसम्भहिं सयं आह ॥१५६७॥

। ७ । १२० ।

अर्थ :— इसके पश्चात् दुःखमसुखमाकालका प्रवेश होता है । इसके प्रारम्भमें ऊँचाई सात हाथ और आयु एकसौ बीस वर्ष प्रमाण होती है ॥१५६७॥

पुट्ठो जडवीसं, मज्झा राह पंच - वण्ण - वेह - बुवा ।

मज्झाय - विजय - मज्जा, संतुट्ठा होवि संपण्णा ॥१५६८॥

। २४ ।

अर्थ :— इस समय पृष्ठभागकी हड्डियाँ बीबीस होती हैं तथा मनुष्य पाँच वर्णवाले शरीरसे युक्त; मर्यादा, विनय एवं लज्जा सहित; सन्तुष्ट और सम्पन्न होते हैं ॥१५६८॥

१. व. ख. क. ज. घ. ङ. करण । २. व. ख. क. काला सम्मत्ता, ज. घ. कास सम्मत्ता । ३. व. ख.

विदेह-सदस वृत्तिका निर्देश—

तबकाले तिस्थयरा, चउवीस हर्षति तांन पठम-विहो<sup>१</sup> ।

अंतिलस - कुलकर - सुबो, विदेहवसी तबो होदि ॥१५६६॥

अर्थ :—इस कालमें भी तीर्थकर बीबीस होते हैं । उनमेंसे प्रथम तीर्थकर अन्तिम कुलकर का पुत्र होता है । उस पुत्रको देह विदेहवसी कह्यो, जो तबो होके लखी है ॥१५६६॥

बीबीस तीर्थकरोंके नाम निर्देश—

महापउमो सुरदेवो, सुपास - णामो सवंपहो तह य ।

सम्पपहो देवसुबो, कुलसुब - उवका य पोठिलओ ॥१६००॥

। ६ ।

जयकीची मुनिसुवय-अरय-अपापा य णिकसायाओ ।

विउलो निम्मल - णामा, अ विउगुतो समाहिगुतो य ॥१६०१॥

। ६ ।

उचवीसमो सवंप, अणिअहो जयो य विमल-णामो य ।

तह देवपाल - णामा, अणंतचिरिओ छ होदि चउवीसो ॥१६०२॥

। ६ ।

अर्थ :—१ महापय, २ सुरदेव, ३ सुपावर्ष, ४ स्वयंप्रभ, ५ सर्वप्रभ ( सर्वस्मिन्मत ), ६ देव-पुत, ७ कुलसुत, ८ उवक ( उवकू ), ९ प्रोष्ठिल, १० जयकीति, ११ मुनिसुवत, १२ अर, १३ अपाप, १४ णिकसाय, १५ विपुल, १६ निमल, १७ विउगुप्त, १८ समाधिगुप्त, १९ स्वयम्भू, २० अमिवृत्ति ( अमिवर्तक ), २१ जय, २२ विमल, २३ देवपाल और २४ अनन्तवीर्य ये बीबीस तीर्थकर होते हैं ॥१६००-१६०२॥

इन तीर्थकरोंकी ऊँचाई, आयु और तीर्थकर प्रकृति बंधके सब सम्बन्धी नाम—

आविम-विम-उवपाऊ, सग - हस्था सोलसुतरं च सवं ।

चरिमस्स पुम्बकीओ, आऊ पन-सय - चजूणि उस्सेहो ॥१६०३॥

। ७ । ११६ : पु को १ । ५०० ।



अर्थ :—इनमेंसे प्रथम तीर्थंकरके करोरकी ऊँचाई सात हाथ और आयु एकसौ सौलह वर्ष तथा अन्तिम तीर्थंकरकी आयु एक पूर्वकोटि और ऊँचाई पचासी वनस्पति प्रमाण होती है ॥१६०१॥

उच्छेदाङ्ग - पटुबिन्दु, सेसराणं जस्थि अभ् उचएसो ।

एवे तित्थयर - जिन्ना, तविय-मवे तिसुवणस्स सोहकरं ॥१६०४॥

तित्थयर - नामकम्मं, वंमंते ताण ते इमे नामा ।

सेणिग - सुपास - नामा, उदक - पोहिस्स - कटसूया ॥१६०५॥

। ५ ।

जस्थि-वाविल-संखा, य वंम-सुवणा ससंक - सेवगया ।

वेमगतीरण-रेवद-किण्हा सिरी-भगसि-विगलि-नामा य ॥१६०६॥

। १४ ।

दीपायन - माणवका, नारद - नामा मुख्यवत्तो य ।

सक्कह - पुत्तो चरिमो, जस्थि - वंसम्मि ते जाहा ॥१६०७॥

अर्थः—आजकी भी सुविधितानाएत जी खतरान

। ५ ।

अर्थ :—केव तीर्थंकरोंकी ऊँचाई और आयु इत्यादिके विषयमें हमारे पास उपदेश नहीं है । ये तीर्थंकर जिनेन्द्र तृतीय भवमें तीनों लोकोंको आश्चर्य उत्पन्न करनेवाले तीर्थंकर नामकर्मको बांधते हैं । उनके उस समयके वे नाम ये हैं—

१ ओणिक, २ सुपायन, ३ उदक, ४ प्रोहित, ५ कृतसूय ( कटसू ), ६ जस्थि, ७ वाविल ( बेली ), ८ बाह्व, ९ नन्द, १० सुनन्द, ११ सापाह्व, १२ सेवक, १३ प्रेमक, १४ अतीरण, १५ रेवत, १६ कृष्ण, १७ सीरी ( बलराम ), १८ भगसि, १९ विगलि, २० दीपायन, २१ माणवक, २२ नारद, २३ मुख्यवत् और अन्तिम २४ सात्यकिपुत्र । ये सब राजवंशमें उत्पन्न हुए थे ॥१६०४-१६०७॥

अविप्यन् कालीन अश्रुवतियोंके नाम—

तित्थयराणं काले, चक्कहरा ज्जोति ताण नामाहं ।

अरहो अ विगधवन्तो, मुत्तवन्तो य गूढवन्तो य ॥१६०८॥

१. द. क. उ. उदक । २. द. उ. जस्थि, न. जस्थि । ३. द. व. क. उ. वेमगरी शाय वदकिण्हा,

व. वेमगरी शाय वदकिण्हा । ४. वेमगरी शाय वदकिण्हा ।

सिरिलेणो सिरिभूवी, सिरिकंतो पडमनाभ-महपडमा ।

तह चित्तवाहणो विमलवाहणो रिदुसेन - नाथा य ॥१६०६॥

अर्थ :—( उपयुक्त ) तीर्थंकरोंके समयमें जो चक्रवर्ती होते हैं, उनके नाम ये हैं—भरत, दीर्घदन्त, मुक्तवन्त, गूढदन्त, श्रीपेरण, श्रीभूति, श्रीकान्त, पद्मनाभ, महापद्म, चित्रवाहन, विमलवाहन और शरिदुसेन ॥१६०६-१६०६॥

भविष्यत् कालीन बलदेव, नारायण और प्रतिनारायणोंके नाम—

चंदो<sup>१</sup> य महाचंदो, चंद्रधरो चंदसिंह<sup>२</sup> वरचंद<sup>३</sup> ।

हरिचंदो<sup>४</sup> सिरिचंदो, सुपुष्पचंदो<sup>५</sup> सुचंदो<sup>६</sup> य ॥१६१०॥

पुष्पभवे अणिदाणा, एवे जायंति पुण्या<sup>७</sup> - पाकेहि ।

अणुजा कमसो चंदो, तह णंवि - मित्त - सेणा य ॥१६११॥

तुरिमो य णंविभूवी, बल-महबल-अतिबला<sup>८</sup> तिबिदु<sup>९</sup> य ।

जबमो विविदु<sup>१०</sup> - नामो, ताणं जायंति जवम पडिसत् ॥१६१२॥

सिरि<sup>११</sup>-हरि-णीलकंठा, अस्सकंठा - सुकंठ - सिलिकंठा ।

अस्सग्रीव - हयग्रीव, मउरग्रीवा य पडिसत् ॥१६१३॥

अर्थ :—१ चन्द्र, २ महाचन्द्र, ३ चन्द्रधर (चक्रधर), ४ चन्द्रसिंह, ५ वरचन्द्र, ६ हरिचन्द्र, ७ श्रीचन्द्र, ८ पूर्णचन्द्र और ९ सुचन्द्र (शुभचन्द्र) ये नव बलदेव पुण्यके उदयसे होते हैं क्योंकि ये पूर्वभवमें निदानबंध नहीं करते । १ नन्दो, २ नन्दमित्र, ३ नन्दपेरण, ४ नन्दभूति, ५ बल, ६ महाबल, ७ अतिबल, ८ विपुल और ९ द्विपुल, ये नव नारायण क्रमशः उन बलदेवोंके अनुज होते हैं । इन नौ नारायणोंके प्रतिशब्द क्रमशः १ श्रीकण्ठ, २ हरिकण्ठ, ३ नीलकण्ठ, ४ अश्वकण्ठ, ५ सुकण्ठ, ६ शिलिकण्ठ, ७ अश्वग्रीव, ८ हयग्रीव और ९ मयूरग्रीव हैं ॥१६१०-१६१३॥

१. द. ब. क. ज. य. द. चंदो । २. द. ब. क. ज. य. उ. चंदो य । ३. द. ब. क. ज. य. उ. महावलादिबमो तिबिदुसाह । ४. द. ब. एणिलकंठाप-सकंठासुकंठ, क. सिरिहरिहरिणीकं कंठाप सकंठाप सुकंठा, ज. सिरिहरिहरिणीकं कंठाप सकंठाप सुकंठ, य. सिरिहरिहरिणीकं कंठाप सुकंठ, व. सिरिहरिहरिणीकं कंठाप सकंठा सुकंठा । ५. द. ब. क. ज. य. उ. मयूरग्रीवा ।

तालिका : ४१

भावी शलाका-

| कुलकर |                    | तोर्थकर |                        | पूर्वले तीसरे भवके |                      |
|-------|--------------------|---------|------------------------|--------------------|----------------------|
| क्र.  | नाम<br>गा० १५६१-६२ | क्र.    | नाम<br>गा० १६००-१६०२   | क्र.               | नाम<br>गा० १६०३-१६०७ |
| १     | कनक                | १       | महापद्म                | १                  | ये शिक               |
| २     | कनकप्रभ            | २       | सुरदेव                 | २                  | सुपाश्व              |
| ३     | कनकराज             | ३       | सुपाश्व                | ३                  | उदक                  |
| ४     | कनकध्वज            | ४       | स्वयंप्रभ              | ४                  | प्रोष्ठिल            |
| ५     | कनकपुंछ ( पुंगव )  | ५       | सर्वप्रभ (सर्वात्मभूत) | ५                  | कृतसूर्य ( कटग्र )   |
| ६     | नलिन               | ६       | देवसुत                 | ६                  | अत्रिय               |
| ७     | नलिनप्रभ           | ७       | कुलसुत                 | ७                  | पाविस ( ओंठी )       |
| ८     | नलिनराज            | ८       | उदक ( उदक )            | ८                  | शङ्ख                 |
| ९     | नलिनध्वज           | ९       | प्रोष्ठिल              | ९                  | तन्त्र               |
| १०    | नलिनपुंछ ( पुंगव ) | १०      | जयकोति                 | १०                 | सुनन्द               |
| ११    | पद्मप्रभ           | ११      | मुनिमुद्रत             | ११                 | सकाक                 |
| १२    | पद्मराज            | १२      | अर                     | १२                 | सेवक                 |
| १३    | पद्मध्वज           | १३      | अपाप                   | १३                 | प्रेमक               |
| १४    | पद्मपुंछ ( पुंगव ) | १४      | निष्कणाय               | १४                 | अतोरण                |
|       |                    | १५      | विपुल                  | १५                 | रंजत                 |
|       |                    | १६      | निर्मल                 | १६                 | कृष्ण                |
|       |                    | १७      | चित्रगुप्त             | १७                 | सीरी (बलराम)         |
|       |                    | १८      | समाधिगुप्त             | १८                 | मगल                  |
|       |                    | १९      | स्वयम्भू               | १९                 | विगल                 |
|       |                    | २०      | अनिवृत्ति (अनिवर्तक)   | २०                 | द्वीपायन             |
|       |                    | २१      | जय                     | २१                 | माणवक                |
|       |                    | २२      | विमल                   | २२                 | नारद                 |
|       |                    | २३      | देवपाल                 | २३                 | सुरूपदत्त            |
|       |                    | २४      | अनन्तवीर्य             | २४                 | सात्यकिपुत्र         |

पुरुष—

| चक्रवर्ती |                      | बलभद्र |                      | नारायण |                    | प्रति ना० |                 |
|-----------|----------------------|--------|----------------------|--------|--------------------|-----------|-----------------|
| क्र.      | नाम<br>गा. १६०८-१६०९ | क्र.   | नाम<br>गा. १६१०      | क्र.   | नाम<br>गा. १६११-१२ | क्र.      | नाम<br>गा. १६१३ |
| १         | भरत                  | १      | चन्द्र               | १      | नन्दी              | १         | श्रीकण्ठ        |
| २         | देवदन्त              | २      | महाचन्द्र            | २      | नन्दिमित्र         | २         | हरिकण्ठ         |
| ३         | मुक्तदन्त            | ३      | चन्द्रधर (चक्रधर)    | ३      | नन्दिधेरा          | ३         | नीलकण्ठ         |
| ४         | गूढदन्त              | ४      | चन्द्रसिंह           | ४      | नन्दिभूति          | ४         | अश्वकण्ठ        |
| ५         | श्रीधेरा             | ५      | वरचन्द्र             | ५      | वस                 | ५         | मुक्तकण्ठ       |
| ६         | श्रीभूति             | ६      | हरिचन्द्र            | ६      | महाबल              | ६         | शिक्षिकण्ठ      |
| ७         | श्रीकान्त            | ७      | श्रीचन्द्र           | ७      | अतिबल              | ७         | अश्वग्रीव       |
| ८         | पद्मनाभ              | ८      | पूर्णचन्द्र          | ८      | त्रिपृष्ठ          | ८         | हयग्रीव         |
| ९         | महापद्म              | ९      | सुचन्द्र (शुभचन्द्र) | ९      | द्विपृष्ठ          | ९         | मयूरग्रीव       |
| १०        | चित्रवाहन            |        |                      |        |                    |           |                 |
| ११        | विमलवाहन             |        |                      |        |                    |           |                 |
| १२        | अरिष्टसेन            |        |                      |        |                    |           |                 |

शलाका पुरुषोंकी उत्पत्तिका समय—

एबे तेसट्टि - णरा, सलाग - पुरिसा तइज्ज-कालम्मि ।

उप्पज्जंति ण्ण कमसो, एक्कोवहि - उवम-कोइकोडीओ ॥१६१४॥

सा १ को को ।

अर्थ :—ये तिरेसठ (२४ तीर्थे + १२ चक्र + ६ + ६ + ६) शलाका पुरुष एक कोइकोडी सागर-प्रमाण इस तृतीयकालमें क्रमशः उत्पन्न होते हैं ॥१६१४॥

इस कालके अन्तमें आयु आदिका प्रमाण—

एक्को णवरि विसेसो, बावास-सहस्स-वास-परिहीणो<sup>१</sup> ।

तक्खरिम्मि णराणं, आऊ इग्गि-पुब्बकोइ-परिमाणं ॥१६१५॥

पण्णसीसवमहिण्णो<sup>२</sup>, पंच सयांसि षण्णणि उच्चैहो ।

अउसट्टो पुट्टो, णर - नारी देव - अण्णर - सरिक्खा ॥१६१६॥

। दुस्समसुसमो समसो ।

अर्थ :—यहाँ विशेषता यह है कि यह काल एक कोइकोडी सागरीयम कालमेंस बयालीस हजार वर्ष हीन होता है । इस कालके अन्तमें मनुष्योंकी आयु एक पूर्वकोटि प्रमाण ऊँचाई पाँचसौ पण्णसीस धनुष और पृष्ठ भागकी इन्द्रियाँ चौसठ होती हैं । इस समय नर-नारी देवों एवं अप्सराओंके सहस्र होते हैं ॥१६१५-१६१६॥

। दुवमसुवम। कालका वर्णन समाप्त हुआ ।

चतुर्थकालका प्रवेश और प्रवेश कालमें आयु आदिका प्रमाण—

तसो पविसदि तुरिमो, नामेण सुसमवुस्समो कालो ।

तप्पडम्मि णराणं, आऊ वासाण पुब्बकोडीओ ॥१६१७॥

ताहे ताणं उवया, पण्णसीसवमहिण्ण पंचसय चावा ।

कमसो आऊ - उवया, काल - बसेण<sup>३</sup> पवइज्जंति ॥१६१८॥

अर्थ :—इसके पश्चात् सुवमदुवमा नामक चतुर्थकाल प्रविष्ट होता है । इसके प्रारम्भमें मनुष्योंकी आयु एक पूर्वकोटि प्रमाण और ऊँचाई पाँचसौ पण्णसीस धनुष प्रमाण होती है । पश्चात् कालके प्रभावसे आयु और ऊँचाई प्रत्येक उत्तरोत्तर कमसः बढ़ती ही जाती हैं ॥१६१७-१६१८॥

१. द. व. क. ज. य. उ. परिहीणा । २. द. व. क. ज. य. उ. विण्णणं । ३. व. पवधंते, क. व. पवइज्जंते, य. उ. पवइज्जंते ।

अथम्य भोगभूमिका प्रवेश एवं मनुष्योंकी आयु आदिका प्रमाण—

ताहे ऐसा<sup>१</sup> वसुहा, बणिज्जअइ अबर - भोगभूमि स्ति ।

तच्चरिमस्मि णराजं, एक्कं पत्तं हवे अऊ ॥१६१६॥

अर्थ :—उस समय यह पृथिवी उत्थ भोगभूमि कही जाती है । इस कालके अन्तमें मनुष्योंकी आयु एक पत्त प्रमाण होती है ॥१६१६॥

उवएण एक्क - कोसं, सत्त्व - णरा ते पियंगु-वण्ण-भुवा ।

तत्तो पविसवि कालो, पंचमओ सुसम - णामेणं ॥१६२०॥

अर्थ :—उस समय वे सब मनुष्य एक कोस ऊँचे और पियंगु जैसे वर्णसे युक्त होते हैं । इसके पश्चात् पाँचवाँ सुषमा नामक काल प्रकट होता है ॥१६२०॥

सुषमा नामक मध्यमभोगभूमिके मनुष्योंकी आयु आदि—

तस्स पद्धम-व्वयेसे, आउ - व्वहुबोणि होंति पुब्बं<sup>२</sup> वा ।

काल - सहावेण तहा, बद्धंते मच्चुव - तिरियाणं ॥१६२१॥

अर्थ :—उस कालके प्रथम प्रवेशमें मनुष्य-तिर्यक्वर्णोंकी आयु आदि पूर्वके ही समान होती है, परन्तु काल-स्वभावसे वह उत्तरोत्तर बढ़ती जाती है ॥१६२१॥

ताहे ऐसा कोणी, मज्झिम - भोगावनिस्ति भिस्सावा ।

तच्चरिमस्मि णराजं, आऊ वो - परल परिमाणं ॥१६२२॥

अर्थ :—उस समय यह पृथिवी मध्यम-भोगभूमिके नामसे प्रसिद्ध हो जाती है । इस काल के अन्तमें मनुष्योंकी आयु दो पत्त प्रमाण होती है ॥१६२२॥

दो कोसा उच्छेहो, णारि - णरा पुण्णामिदु-सरित्त-भुहा ।

बहुविणय - सीमवन्ता, विगुणिय - चउत्तरिदु - पुहुडी ॥१६२३॥

। सुसमो समसो<sup>३</sup> ।

अर्थ :—( उस समयके ) नर-नारी दो कोस ऊँचे, पूर्ण चन्द्रसदृश मुखवाले, बहुत विनय एवं कीलसे सम्पन्न और पृष्ठभागकी एकसौ अट्ठाईस हड्डियों सहित होते हैं ॥१६२३॥

। सुषमाकालका कथन समाप्त हुआ ।

सुषमासुषमाकालका प्रवेश एवं उसका स्वरूप—

सुसमसुसमाभिधातो, ताहे पवितेवि स्रुधुमो कालो ।

तत्स पदमे पएसे, आऊ - पट्टवीणि पुय्यं च ॥१६२४॥

अर्थ :—तदनन्तर सुषमसुषमा नामक छठा काल प्रविष्ट होता है । उसके प्रथम प्रवेशमें आयु आदिके प्रमाण पूर्वके सड़क ही होते हैं ॥१६२४॥

काल-सहाय-बलेणं, वड्डते ताह मज्जुम - तिरियाणं ।

ताहे एस धरिसी, उत्तमभोगावणि ति सुपसिद्धो ॥१६२५॥

अर्थ :—काल स्वभावके प्रभावसे मनुष्य और तिर्यचोंकी आयु आदिक कमशः वृद्धिजित होती जाती है । उस समय यह पृथिवी उत्तम-भोगभूमिक नामसे सुप्रसिद्ध हो जाता है ॥१६२५॥

तच्चधरिमस्मि नराणां, आऊ पत्ससय - प्यमाएणं च ।

उवएण तिग्णि कोसा, उवय - विणिहुज्जल - सरीरा ॥१६२६॥

अर्थ :—उस कालके अन्तमें मनुष्योंकी आयु तीन पत्स-प्रमाण और ऊँचाई तीन कोस होती है तथा मनुष्य उदित होते हुए सूर्य सूर्य उज्ज्वल शरीर वाले होते हैं ॥१६२६॥

वे - सब - छप्पणाइं, पट्टुही होंति ताज मज्जुम ।

बहु - परिधार - विगुज्जण - समत्थ - ससीहि संजुत्ता ॥१६२७॥

अर्थ :—उन मनुष्योंके पृष्ठ-भागकी हड्डियाँ दोसो छप्पन होती हैं, तथा वे मनुष्य बहुत परिवारकी विधिया करनेमें समर्थ ऐसी शक्तियोंसे सहित होते हैं ॥१६२७॥

पुनः अवसर्पिणीका प्रवेश—

ताहे पविसवि जियसा, कमेण अवसप्पिणि ति सो कालो ।

एवं अज्जा - खंडे, परियट्ठते दु - काल - चक्काणि ॥१६२८॥

अर्थ :—इसके पश्चात् पुनः नियमसे यह अवसर्पिणीकाल प्रवेश करता है । इसप्रकार आर्यवृद्धमें उत्सर्पिणी और अवसर्पिणी रूपी कालचक्र प्रवर्तित होता रहता है ॥१६२८॥

नोट—कालचक्रको दर्शाने वाला चित्र गाथा ३२३ के बाद अंकित है ।

पाँच म्लेच्छखण्ड और विद्याधर श्रेणियोंमें प्रवर्तमान कालका नियम—

पञ्च-म्लेच्छ-स्यारसेद्वितु, अवसप्पस्सप्पिणीए तुरिमम्मि ।

तदियाए हानि - चर्यं, कमसो पढमाद् चरिमो स्ति ॥१६२६॥

अर्थ :—पाँच म्लेच्छ खण्डों और विद्याधर-श्रेणियोंमें अवसप्पिणी एवं उत्सप्पिणीकालमें क्रमशः चतुर्थ और तृतीय कालके प्रारम्भसे अन्त-पर्यन्त हानि एवं वृद्धि होती रहती है । ( अर्थात् इन स्थानोंमें अवसप्पिणीकालमें चतुर्थकालके प्रारम्भसे अन्त-पर्यन्त हानि और उत्सप्पिणीमें तृतीय कालके प्रारम्भसे अन्त तक वृद्धि होती रहती है । यहाँ अन्य कालोंकी प्रवृत्ति नहीं होती ) ॥१६२६॥

उत्सप्पिणीके प्रतिदुषमा आदि तीन कालोंमें जीवों की संख्यावृद्धिका क्रम—

उत्सप्पिणीए अज्जाखंडे अदिदुस्समस्स पढम - लो ।

होति हु सार - तिरियाणि, जीवा सम्माणि चोवाणि ॥१६३०॥

अर्थ :—उत्सप्पिणीकालके अतिदुःखमाकालके प्रथम अणुमें मनुष्यों और

तिर्यञ्चोंमें सब जीव उत्पन्न होते हैं ॥१६३०॥

तत्तो कमसो बह्वा, मणुवा तेरिच्छ-सयल-वियलवक्खा ।

उप्पज्जति हु जाय य, दुस्समसुसमस्स चरिमो स्ति ॥१६३१॥

अर्थ :—इसके पश्चात् पुनः कमसः दुःखमसुषमाकालके अन्त पर्यन्त बहुतेसे मनुष्य तथा सकलेन्द्रिय और विकलेन्द्रिय तिर्यञ्च जीव उत्पन्न होते हैं ॥१६३१॥

एक समयमें विकलेन्द्रियोंका नाश एवं कल्पवृक्षोंकी उत्पत्ति—

णासंति एक-समए, वियलवक्खा-अंगि-<sup>१</sup>णिवह-कुल-मेया ।

तुरिमस्स पढम - समए, कल्पतक्खं पि उप्पसो ॥१६३२॥

अर्थ :—तत्पश्चात् एक समयमें विकलेन्द्रिय प्राणियोंके समूह एवं कुलभेद नष्ट हो जाते हैं तथा चतुर्थकालके प्रथम समयमें कल्पवृक्षोंकी भी उत्पत्ति हो जाती है ॥१६३२॥

पविसंति मणुव-तिरिया, जेतिय-मेसा जह्णा-भोगज्जिवि ।

तेत्तिय - मेसा होति हु, खणकाले भरह - एरब्बे ॥१६३३॥



**अर्थ :**—जितने मनुष्य और तिर्यञ्च ( चतुर्थकाल स्वरूप ) जघन्य भोगभूमिमें प्रवेश करते हैं उतने ही जीव छह कालोंके भीतर मरत ऐरावत क्षेत्रोंमें होते हैं ॥१६३३॥

**वितोषार्थ :**—अवसर्पिणीके अतिदुःखकालके अन्तिम ४६ दिनोंमें अशुभ वर्षा होती है । उस समय विद्याधर और देव-मनुष्य एवं तिर्यञ्चोंके कुछ भूतोंको विजयार्थ और गुंजा-सिन्धुकी बेदी स्थित गुफाओंमें रख देते हैं ( गा० १५६९ ) । अवसर्पिणीके अतिदुःख कालके प्रारम्भमें सृष्टि होनेके बाद वे जीव वहाँसे बाहर निकलते हैं ( गा० १५८३ ) । जो संख्यामें अति-अल्प होते हैं, इसी कारण उस समय मरत-ऐरावत क्षेत्रोंके आर्यखण्डोंमें मनुष्यों और तिर्यञ्चोंकी संख्या अति-अल्प होती है ( गा० १६३० ) । उसके बाद अतिदुःखमा, दुःखमा और दुःखमसुखमा अर्थात् पहले, दूसरे और तीसरे कालके अन्त-पर्यन्त मनुष्यों तथा सकलेन्द्रिय और विकलेन्द्रिय जीवोंका यह प्रमाण बढ़ता जाता है । अर्थात् दुःखमसुखमाके अन्त तक इनकी उत्पत्ति होती रहती है ( गा० १६३१ ) । इसके पश्चात् सुखमदुःखमा नामक चतुर्थ कालके प्रथम समयमें ही विकलेन्द्रिय प्राणियोंका विनाश हो जाता है और कल्पवृक्षोंकी उत्पत्ति हो जाती है ( गा० १६३२ ) क्योंकि उस समय कर्मभूमिका तिरोभाव और भोगभूमिका प्रादुर्भाव हो जाता है ।

मरत-ऐरावत क्षेत्रोंके आर्यखण्डोंमें चतुर्थकाल स्वरूप इस जघन्य भोगभूमिमें जितनी संख्या प्रमाण मनुष्य और तिर्यञ्च प्रवेश करते हैं, उतने ही जीव अवसर्पिणी सम्बन्धी १ सुखमदुःखमा, २ सुखमा और ३ सुखमसुखमा तथा अवसर्पिणी सम्बन्धी ४ सुखमसुखमा, ५ सुखमा और ६ सुखमदुःखमा इन छह कालोंमें रहते हैं ( गा० १६३३ ) । इन छह कालोंमें अर्थात् १८ कोड़ाकोड़ी सागर पर्यन्त इन जीवोंकी संख्यामें हानि-वृद्धि नहीं होती है कारण कि उस समय मनुष्य और तिर्यञ्च युगल रूपमें ही जन्म लेते हैं और युगलरूपमें ही मरते हैं ।

**विकलेन्द्रिय जीवोंकी उत्पत्ति एवं वृद्धि—**

**अवसर्पिणीए दुस्समसुसम - पवेसस्स पढम समयम्म ।**

**विधांसिविय - उप्वसी, मद्धी जीवाण थोव - कालम्म ॥१६३४॥**

**अर्थ :**—अवसर्पिणी कालमें दुःखमसुखमा ( चतुर्थ ) कालके प्रारम्भिक प्रथम समयमें ही विकलेन्द्रिय जीवोंकी उत्पत्ति तथा थोड़े ही समयके भीतर उनकी वृद्धि होने लगती है ॥१६३४॥

**वितोषार्थ :**—भोगभूमि सम्बन्धी उपयुक्त तीस-तीस अर्थात् छह काल व्यतीत हो जानेके बाद दुःखमसुखम ( चतुर्थ ) कालके प्रारम्भिक समयमें ही विकलेन्द्रिय जीवों की उत्पत्ति हो जाती है ।

कमसो बद्धंति हृत्सिय-काले भवसु-तिरियासमभि' संखा ।

ततो उत्सर्पिणि, तदिए बद्धंति पुष्पं वा ॥१६३५॥

अर्थ :—इस प्रकार तीन कालोंमें अनुप्य और सियेव जीवोंकी संख्या कमशः बढ़नी ही रहती है । फिर इसके पश्चात् उत्सर्पिणीके तीन वर्षात् प्रतिदुःखमा, दुःखमा और दुःखमसुखमा कालोंमें भी पहलेके सदृश ही वे जीव वर्तमान रहते हैं ॥१६३५॥

भवसर्पिणी-उत्सर्पिणीकालोंका प्रमाण—

अवसर्पिणि-उत्सर्पिणि-काल-चिह्नय र्हट-घटियगाएणं ।

होति अणताजंता, अण्णरावव - विविस्मि पणं ॥१६३६॥

अर्थ :—भरत और ऐरावत क्षेत्रमें र्हट-घटिका-न्यायसे भवसर्पिणी और उत्सर्पिणी काल अनन्तानन्त होते हैं । ( अर्थात् जैसे र्हटकी घड़ियाँ चक्रवत् घूमती हुई बार-बार ऊपर एवं नीचे आती-जाती हैं, उसीप्रकार अवसर्पिणीके बाद उत्सर्पिणी और उत्सर्पिणीके बाद अवसर्पिणी इस क्रमसे सदा इन कालोंका परिवर्तन होता ही रहता है ) ॥१६३६॥

हुण्डावसर्पिणी कालका निर्देश एवं उसके चिह्न—

अवसर्पिणि-उत्सर्पिणि-काल-संख्या गदे असंखानि ।

हुण्डावसर्पिणी 'सा, एका आएवि तस्स विण्हमिमं ॥१६३७॥

अर्थ :—असंख्यात अवसर्पिणी-उत्सर्पिणी कालकी शलाकाएँ नीत जानेपर प्रसिद्ध एक हुण्डावसर्पिणी आती है; उसके चिह्न ये हैं ॥१६३७॥

'तस्सि पि सुत्तमदुस्सम-कालस्स' ठिविस्मि बोव-अवसेसे ।

विज्जवि पावस-पट्टदी, मियल्लिय - जीव - उप्पत्ती ॥१६३८॥

अर्थ :—इस हुण्डावसर्पिणी कालमें सुखमदुःखम ( तृतीय ) कालकी स्थितिमें कुछ कालके अवसिद्ध रहने पर भी वर्षा आदिक पड़ने लगती है और विकलेन्द्रिय जीवोंकी उत्पत्ति होने लगती है ॥१६३८॥

कप्पतक्ख विरामो, बाबारो होदि कम्मभूमीए ।

तवकाले आयंते, पढम - जिणो पढम - वक्की य ॥१६३९॥

अर्थ :—इसी कालमें सत्यवृक्षोंका अन्त और कमंभूषिका व्यापार प्रारम्भ हो जाता है तथा प्रथम तीर्थंकर और प्रथम चक्रवर्ती भी उत्पन्न हो जाते हैं ॥१६३९॥

चक्रिस्त विजय-भंगो, रिण्डुद्व-गमनं च धीम-जीवान् ।

चक्रवर्ता विजानं, हवेदि वंसस्त उप्वत्ती ॥१६४०॥

अर्थ :—चक्रवर्तीका विजय-भङ्ग और ( तृतीय कालमें ही ) योड़ेसे जीवोंका मोक्ष गमन होता है, तथा चक्रवर्ती द्वारा डिजोंके वंश ( ब्राह्मण वंश ) की उत्पत्ति भी होती है ॥१६४०॥

दुस्तमसुसमे काले, ब्रह्मवन्मा ससाय - पुरिसा य ।

गवमावि - तोलसंते, सचसु तित्थेसु धम्म - वोण्णो ॥१६४१॥

अर्थ :—दुःखमासुषमा कालमें ब्रह्मवन् ही शलाका पुरुष होते हैं और नौवेंसे सोलहवें तीर्थंकर पर्यन्त सात तीर्थोंमें धर्मकी व्युत्पत्ति होती है ॥१६४१॥

विशेषार्थ :—प्रत्येक उत्सर्पिणी अबसर्पिणी कालमें ६३ जीव तीर्थंकर, चक्रवर्ती, वसुदेव, नारायण और प्रतिनारायण पदको धारण करनेवाले शलाका पुरुष होते हैं ।

ॐ वर्तमान हुण्डावसर्पिणी कालके चतुर्थकालमें शलाका पुरुषोंकी संख्या ५८ है । भगवान् आदिनाथ तीसरे कालमें ही मोक्ष चले गए थे और शान्तिनाथ, कुन्दनाथ तथा अरुनाथके जीव एक ही समयमें तीर्थंकर भी थे और चक्रवर्ती भी थे तथा प्रथम नारायण त्रिपृष्ठका जीव ही अश्विन तीर्थंकर महावीर हुआ । इसप्रकार शलाका जीवोंकी संख्या ५८ हुई ।

ॐ वर्तमान हुण्डावसर्पिणीकालमें तीन तीर्थंकर एक ही समयमें दो पदधारी हुए तथा भगवान् महावीरका जीव नारायण और तीर्थंकर इन दो पदोंका धारक हुआ । इसप्रकार इस कालमें चार जीव दो पदोंके धारक होनेसे शलाका जीवोंकी संख्या ३९ हुई ।

ॐ यदि आदिनाथ भगवान्के तीसरे कालमें मोक्ष-गमनकी विवक्षा न की जाय और भगवान् महावीरके पूर्वभव ( त्रिपृष्ठ नारायण ) की विवक्षा भी न की जाय तो इस हुण्डावसर्पिणी-कालमें केवल तीन तीर्थंकर दो पदधारी होनेसे शलाका पुरुषोंकी संख्या ६० हुई ।

एककरस होंति रुद्रा, कलह-प्रिया नारदा य नव-संता ।

ससम - तेवोसंतिम - तित्थवरानं च उवसगो ॥१६४२॥

अर्थ :—भ्यारह रुद्र और कलह-प्रिय भी नारद होते हैं तथा सातवें, तेईसवें और अश्विन तीर्थंकर पर उपसर्ग भी होता है ॥१६४२॥

तद्विय - बभ्रु - पंचमेसु<sup>१</sup>, कालेसु<sup>२</sup> परम-बभ्रु-मासयरा ।

विविह - कुदेव - कुलिङ्गी, क्षीसंति<sup>३</sup> 'बुध - पापिष्ठा ॥१६४३॥

चंडाल-सबर-पाणा, पुलिन-बाहल-विलाव<sup>४</sup>-पशुवि-कुला ।

वुस्तमकाले कक्की, उवकक्की<sup>५</sup> होंति बादासा ॥१६४४॥

अर्थ :- तृतीय, चतुर्थ एवं पंचम कालमें उत्तम धर्मको नष्ट करने वाले विविध प्रकारके दृष्ट, पापिष्ठ, कुदेव और कुलिङ्गी भी दिखने लगते हैं, चण्डाल, शबर, पाण ( स्वपथ ), पुलिन, बाहल और किरात आदि जातियाँ उत्पन्न होती हैं, तथा दुःषमा कालमें बयालीस कल्की एवं उप-कल्की होते हैं ॥१६४३-१६४४॥ अर्थविवरण :- आठवाँ भी द्युविधित्वापट जी यक्षतारा

अश्वहृि - मभाबुद्धो, भूबबुद्धी बज्र-गन्धि-ममुहा य ।

इह जाणाविह - दोसा, विविस्त - मेवा हर्षति पुवं ॥१६४५॥

। एवं काल-विभागो समस्तो ।

॥ एवं भरहवेस-वस्वचर्च<sup>६</sup> समस्त<sup>७</sup> ॥

अर्थ :- अतिवृष्टि, अनावृष्टि, भूबुद्धि और वज्रगन्धि आदिका गिरना, इत्यादि विविध भेदों सहित नानाप्रकारके दोष इस कुष्ठावस्तिणी-कालमें हुआ करते हैं ॥१६४५॥

। इसप्रकार काल विभागका कथन समाप्त हुआ ।

[ भरतखेन का चित्र पृष्ठ ४७० पर देखिये ]

। इसप्रकार भरतखेनका प्ररूपण समाप्त हुआ ।

१. व. ब. क. क. य. उ. कटु । २. व. क. उ. विनास, द. ब. प. विनास । ३. व. द. क. अ.

य. उ. वस्वचर्च ।



हिमवान् पर्वतका उत्सेध, अवगाह एवं विस्तार—

सबमुखेवं हिमवं, सुहस्रो पणुबीस - जोयलुब्धो<sup>१</sup> ।

विषलमेण सहस्त्रं, बावण्णा बारसेहि<sup>२</sup> भागेहि ॥१६४६॥

। १०० । २५ । १०५२३३ ।

अर्थ :—शुद्ध हिमवान् पर्वतकी ऊँचाई सी योजन, अवगाह पन्चीस योजन और विस्तार एक हजार बावन योजन तथा एक योजनके उन्नीस भागोंमेंसे बारह-भाग अधिक है ॥१६४६॥

हिमवान् पर्वतकी उत्तर-जीवाका प्रमाण—

तस्स य उत्तरजीवा, चउवीस-सहस्त्र-बाव-सयाइं पि ।

वसीत् एक - कला, सन्न - समासेन णिदिक्का ॥१६४७॥

यानिदिक्का - उत्तर-जीवा की सुविचारणार्थ जो महाराज  
। २४६३२,१ ।

अर्थ :—उस हिमवान् पर्वतकी उत्तरजीवा सब मिलाकर बीस हजार बीस वसीस योजन और योजनके उन्नीस भागोंमेंसे एक भाग-प्रमाण है ॥१६४७॥

हिमवान् के उत्तरमें धनुष पृष्ठका प्रमाण—

सुहस्र - हिमवंत - सेसे, उत्तरभागम्मि होदि धनुषपट्ट<sup>३</sup> ।

पणुबीस-सहस्त्राइं, बोणि-सया तीस चउ-कलवमहिया ॥१६४८॥

। २५२३०,५ ।

अर्थ :—शुद्ध हिमवान् पर्वतका धनुषपृष्ठ उत्तरभागमें पन्चीस हजार बीस तीस योजन और एक योजनके उन्नीस-भागोंमेंसे चार भाग अधिक है ॥१६४८॥

हिमवान् पर्वतकी शूलिकाका प्रमाण—

तस्स य शूलिय-मार्गं, पंच - सहस्त्राणि जोयणानि पि ।

तीसाहिय-बोणि-सया, सत्त - कला मद्ध - अविरिस्ता ॥१६४९॥

। ५२३०३२ ।

अर्थ :—उस पर्वतकी शूलिकाका प्रमाण पाँच हजार बीस तीस योजन और एक योजनके उन्नीस भागोंमेंसे साढ़े सात भाग अधिक है ॥१६४९॥

१. द. व. क. ख. उ. जोयणीवेहो । य. जायणीवेहो । २. द. व. क. ख. ग. घ. भागो व ।

३. द. व. ख ।

हिमवान् पर्वतकी पार्श्वभुजाका प्रमाण—

पंच-सहस्रा ति - सया, पण्णास ज्ञेयणाणि अद्भ-बुधा ।

पञ्चारस य कस्याभो, एस्सभुजा खुल्ल - हिमवन्ते ॥१९५०॥

। ५३५.०३२ ।

अर्थ :—शुद्ध हिमवान् पर्वतकी पार्श्वभुजाका प्रमाण पाँच हजार तीन सौ पचास योजन और एक योजनके उन्नीस भागोंमेंसे साढ़े पन्द्रह-भाग अधिक है ॥१९५०॥

पर्वतकी तट-वेदियाँ एवं उनका प्रमाण—

हिमवन्त-सरिस्-वीहा, तट-वेदी क्षीण्य हाति भूमितले ।

वे कोसा उत्तुंगा, पंच-घणुस्सद-पमान-विस्विज्जा ॥१९५१॥

। को २ । दं ५०० ।

अर्थ :—भूमितलपर हिमवान् पर्वतके सहस्र सम्बो उसको दो तट-वेदियाँ हैं । ये वेदियाँ दो कोस ऊँची और पाँचसौ घणुष प्रमाण विस्तार वाली हैं ॥१९५१॥

पर्वतके पार्श्वभागोंमें वनखण्ड एवं वेदी—

जोयण-वल-विक्खंभो, उभए पासेसु होवि वण - संढी ।

बहु-तोरण-दार-बुधा, वेदी पुण्विल्ल-वेविएहि समा<sup>१</sup> ॥१९५२॥

। वण जो ३ ।

अर्थ :—पर्वतके दोनों पार्श्वभागोंमें अर्ध योजन-प्रमाण विस्तारसे युक्त वन-खण्ड हैं तथा पूर्वोक्त वेदियोंके समान बहुत तोरण-द्वारोंसे संयुक्त एक वेदी है ॥१९५२॥

खुल्ल-हिमवन्त-सिहरे, समन्तवो पउम - वेदिथा विज्वा ।

वण - वणवेदी - सखं, पुण्वं पिव एस्स वसन्धं ॥१९५३॥

अर्थ :—शुद्ध हिमवान् पर्वतके शिखर पर चारों ओर पथरागमणियम दिव्य वेदिका है । वन और वनवेदी आदि सबका कथन, पूर्वके सहस्र यहाँ पर भी करना चाहिए ॥१९५३॥

आमंत्रणार्थः :- अथ तत्रां श्रीं सांख्यिकीसागर श्री महादेव  
हिमवान् पर्वतस्य कूटके नीम—

सिद्ध-हिमवन्त-कूडा, भरह-इला-गंगकूड - सिरिणामा\* ।

रोहीदासा सिन्धु, सुर - हेमवन्त च वेसमर्ष ॥१६५४॥

। ११ ।

अर्थ :- हिमवान् पर्वतके ऊपर सिद्ध, हिमवान्, भरत, इला, गङ्गा, श्री. रोहितास्या, सिन्धु, सुरा, हेमवन्त और वंशवरा ये ग्यारह कूट हैं ॥१६५४॥

कूटोंका विस्तार आदि—

उदयं भू-मुह-वासं, मरुभं पणुबीस तस्मिन् बलिबं ।

मुह - भूमि - कुवस्सद्धं, पत्तेकं जोयणाणि कूडाणं ॥१६५५॥

। २४ । २५ । २६ । २७ ।

अर्थ :- इनमेंसे प्रत्येक कूटकी ऊँचाई पच्चीस योजन, भू-विस्तार भी पच्चीस योजन, मुख विस्तार साढ़े बारह योजन और मध्यविस्तार भूमि एवं मुखका अर्ध (  $\frac{1}{2} + \frac{1}{2} = 1$  अर्थात् १ योजन ) भाग प्रमाण है ॥१६५५॥

प्रथम कूट पर अवस्थित जिन-भवनका निरूपण—

एककारस पुष्पाबी, सम - चट्टा वेदिएहि रमणिउजा ।

वेतर - पासाव - कुडा, पुष्पे कूडम्मि निरा - भवणं ॥१६५६॥

अर्थ :- पूर्वादि दिशाओंमें क्रमशः स्थित ये ग्यारह कूट समान गोल हैं, वेदियोंसे रमणीय हैं और व्यन्तर देवोंके भवनोसे संयुक्त हैं । इनमेंसे पूर्व कूटपर जिन-भवन है ॥१६५६॥

आवायो पञ्चासं, द्वित्यारो तहसं च जोयणया ।

पणहसरि-वत्त-मुवयो, ति-हार-जुवस्स निरा-निकेवस्स ॥१६५७॥

। ५० । २५ । २६ । २७ ।

अर्थ :- तीन द्वारों वाले इस जिन-भवनकी लम्बाई पचास योजन, विस्तार पच्चीस योजन और ऊँचाई साढ़े सैंतीस योजन है ॥१६५७॥

पुष्प - मुह - वार - उदयो, जोयणया अट्ट तहसं दंढं ।

दंढ - समं तु पवेसं, ताजद्धं वक्खिजुत्तर - कुडारे ॥१६५८॥

। ५० । २५ । २६ । २७ ।



अर्थ :—( उपर्युक्त तीन द्वारोंमेंसे ) पूर्वमुख द्वारकी ऊँचाई आठ योजन, विस्तार चार योजन और विस्तारके सदृश प्रवेश भी चार योजन प्रमाण है। मेष दक्षिण और उत्तर द्वारकी लम्बाई आदि पूर्व-द्वारसे आधी है ॥१६५६॥

अष्टोष य दोहस्त, दोहचखभाग - तत्प - विस्तारं ।

अष्ट - जोयण, दोहचख, दोहचख, दोहचख, दोहचख, दोहचख, दोहचख, दोहचख ॥१६५६॥

अर्थ :—जिन भवनमें आठ योजन लम्बा, लम्बाईके चतुर्थ भाग ( दो योजन ) प्रमाण चौड़ा और चार योजन ऊँचा देवच्छत्र है ॥१६५६॥

सिंहासनावि-सहिया, चामर-कर-नाग-वक्त्र-सिंहज-कुदा ।

पुरु - जिण - तुंगा - पडिमा, अट्ठार-सय-यमाणाधो ॥१६६०॥

सिरिदेवी सुवदेवी, सन्धान - सनकुमार - जयसाजं ।

कबाणि अट्ट - मंगल - देवच्छत्रम्मि खेटुंति ॥१६६१॥

अर्थ :—सिंहासनादि सहित, हाथमें चमर लिए हुए नाग-वक्त्र-पुगलसे संयुक्त, वृषभ जिनेन्द्र सदृश उत्तुङ्ग, एकसी आठ संख्या प्रमाण जिन प्रतिमाएँ तथा श्रीदेवी, श्रुतदेवी, सर्वाङ्गदेव और सनकुमार यशोंकी मूर्तियाँ एवं आठ मङ्गलद्रव्य देवच्छत्रकपर स्थित हैं ॥१६६०-१६६१॥

संबल - कुसुम - बामा, पारावय-मोर-कंठसिंह-वज्जा ।

मरगय - पवाल - वज्जा, विबाण - शिवहा विरार्थति ॥१६६२॥

अर्थ :—वहाँपर सदृशती हुई पुष्पमालाओं सहित कबूतर एवं मयूरके कण्ठ तथा मरकत और मूंगा सदृश वर्ण वाले खंदोबोंके समूह जोमायमान हैं ॥१६६२॥

भंभा<sup>१</sup>-भुर्बग-महल-जयघंटा-कंसताल - तिवसि - कुदा ।

पडुपडह - संल - काहल - सुरदुंहुहि - सह - गंभीरा ॥१६६३॥

जिणपुर - बुबार - पुरबो, पसेवकं वदनमंडवा विध्या ।

पणवीस - जोयणाहं, वासी विजणाह आधामो ॥१६६४॥

[ २४ । ५० ।

अर्थ :—प्रत्येक जिणपुर-द्वारके आगे भंभा ( भेरी ), मृदङ्ग, महल, जयघण्टा, कंसताल और तिवलीसे संयुक्त तथा पडुपडह, शङ्ख, काहल और देवदुन्दुभि आदि वाजोंके शब्दोंसे गम्भीर ऐसे

दिग्य मुख-मण्डप हैं । इन मण्डपोंका विस्तार पञ्चोस योजन और लम्बाई पचास योजन प्रमाण है ॥१६६३-१६६४॥

अहु चिचय जोयनया, अदिरिता होदि ताच उज्जेहो ।

अभिसेय-गौड-अवलोयकाण वर - मंडवा य तप्पुरवो ॥१६६५॥

अर्थ :—इन मण्डपोंकी ऊँचाई आठ योजनसे अधिक है । इनके आगे अभिवेक, गीत घोर अवलोकनके उत्तम मण्डप हैं ॥१६६५॥

चउगोउराणि सालसिदयं वीहीसु माणचंभा य ।

गव-धूहा तह 'वण-धय-चिसकसोणीओ जिण-निवासेसु ॥१६६६॥

अर्थ :—जिन भवनोंमें चार गोपुर, तीन प्राकार, बीधियोंमें मानस्तम्भ, नौ स्तूप, वनमृमि, ध्वज-मृमि और चंस्त्रमृमि होती हैं ॥१६६६॥

आर्यवर्णिक :- आचार्य जी तुमविदितानाएँ और अज्ञात

सक्ये मोउर - वारा, रमणिज्जा पंच-वण-रयणमया ।

बोउल - तोरण - जुसा, जाणाविह - मसावारणया ॥१६६७॥

अर्थ :—पाँच वर्णके रत्नोंसे निर्मित सब गोपुरद्वार, पुतली-युक्त तोरणों सहित और नाना-प्रकारके मत्तवारणों ( टोहियों ) से रमणीय हैं ॥१६६७॥

बहु-सालभंजियाहि, सुर-कोकिल-वरिहिणादि-पक्खीहि ।

मधुर - रवेहि सहिवा, जक्खंताणेय - धय<sup>१</sup> - बडायहि ॥१६६८॥

अर्थ :—( ये गोपुरद्वार ) बहुतसी सालभंजिकाओं ( पुतलियों ) एवं मधुर शब्द करने-वाले सुरकोकिल और मयूर आदि पक्षियों सहित तथा नाचती हुई बनेक ध्वजा-पताकाओं सहित हैं ॥१६६८॥

एसा-समाल-लवली-लङ्ग-कंकोल - 'कवलि - पट्टुदीहि ।

जाणातव - रयणीहि, उक्काण - वणा निराजंति ॥१६६९॥

अर्थ :—वहाँके उद्यानवन इलायची, तमाल, लवली, लोंग, कंकोल ( शीतल चीनीका वृक्ष ) और केला आदि नाना उत्तम वृक्षोंसे शोभायमान हैं ॥१६६९॥

कल्हार-कमल-कंदल-नीलपुष्प-कुमुद-कुसुम - संछन्ना ।

जिण-उज्ज्वल-मणिसुं, पोक्करणी - वाणि - वर-कूषा ॥१६७०॥

अर्थ :—जिनगृहके उद्यान-वनोंमें कल्हार, कमल-कन्दल, नीलकमल और कुमुदके फूलोंसे व्याप्त पुष्करिणी, वापी और उत्तम कूप हैं ॥१६७०॥

गंडादीघ्र ति-मेहुल, ति-पीठ-पुष्पाणि घग्म-चक्राणि ।

चउ-बरा-मरुत - गयाणि, वेदिय - सक्ताणि सोहंति ॥१६७१॥

अर्थ :—भारों वनोंके मध्यमें तीन मेखला-युक्त नन्दादिक वापिकाएँ, तीन पीठों वाले घग्मचक्र और चर्यवृक्ष शोभायमान हैं ॥१६७१॥

शेष कूटोंपर स्थित व्यन्तर-नगरोंका निरूपण—

सेसेसुं कूडेसुं, चेंतर - बेबाण होंति पासावा ।

चउ-तोरण-वेदि-कुवा, नाणाविह - रयण - निम्मविवा ॥१६७२॥

अर्थ :—शेष कूटोंपर चार तोरण-वेदिका सहित और नानाप्रकारके रत्नोंसे निर्मित व्यन्तर देवोंके भवन हैं ॥१६७२॥

हेमवद - भरह - हिमवंत - वेसवण - णामवेय-कूडेसुं ।

जिय - कूड - णाम - बेबा, सेसे जिय-कूड-णाम-बेबीओ ॥१६७३॥

अर्थ :—हैमवत, भरत, हिमवान् और वैश्वरणा नामक कूटोंपर अपने-अपने कूटोंके नाम धारक देव तथा शेष कूटोंपर अपने-अपने कूटोंके नामकी देवियाँ रहती हैं ॥१६७३॥

बहु - परिवारेहि कुवा, चेहुंते सेसु देव - बेबीओ ।

दस-घणु-उज्जेह-तणू, सोहंमिवस्स ते य परिवारा ॥१६७४॥

अर्थ :—इन कूटों पर बहुत परिवार सहित और दस-घणु प्रमाण ऊँचे सरीरसे युक्त जो देव-देवियाँ स्थित हैं, वे लोचर्महन्द्रके परिवार स्वरूप हैं ॥१६७४॥

ताणं वर - पासावा, सकोस - इगित्तीस ज्ञोयणा-दंवा ।

दो - कोस - सट्ठि - ज्ञोयण - उदया सोहंति रयणमया ॥१६७५॥

**अर्थ** :—इन व्यन्तर देव-देवियोंके ररमय भवन विस्तारमें इकतीस योजन एक कोस और ऊँचाईमें बासठ योजन दो कोस प्रमाण होते हुए गोमायमान हैं ॥१६७५॥

पायार-बलहि-गोडर-बललामल - वेदियाहि परियरिया ।

वेवाण होंति जयरा, बसम्पमानेसु कूड - सिहरेसु ॥१६७६॥

**अर्थ** :—दस कूटोंके सिंहरों पर प्राकार, बलमो ( छत्रा ) गोपुर और बल-निर्मल वेदिकाओंसे व्याप्त देवोंके नगर हैं ॥१६७६॥

मुम्बंत-धय-बडाया, गोडर - दारेहि सोहिहा चितला ।

बर-बल्ल-कवाड-जुवा, उवबण-पोबलरणि-बाबि-रमणिज्जा ॥१६७७॥

**अर्थ** :—देवोंके ये नगर उड़ती हुई ध्वजा-पताकाओं सहित गोपुरद्वारोंसे शोभित; विशाल, उत्तम वज्रमय कपाटोंसे युक्त और उपवन, पृष्करिणी एवं वापिकाओंसे रमणीय हैं ॥१६७७॥

कमलोदर-बण्ण-णिहा, तुसार-ससिकिरण-हार-संकासा ।

वियसिय-वपय-वण्णा, नीलुप्पल-रत्त-कमल-वण्णा य ॥१६७८॥

**अर्थ** :—( इन नगरोंमेंसे कितने ही नगर ) कमलोदर सदृश, ( कितने ही ) तुषार, चन्द्र-किरण एवं हार सदृश, ( कितने ही ) विकसित चम्पक और ( कितने ही ) नील तथा रक्त कमल सदृश वर्णवाले हैं ॥१६७८॥

वज्जिदण्णील - भरगय - कक्केयण - पउमराय-संपुण्णा ।

जिण - भवणेहि सणाहा, को सक्काइ वणिहुं सयलं ॥१६७९॥

**अर्थ** :—ये नगर वज्रमणि ( हीरा ), इन्द्रनीलमणि, मरकतमणि, कर्कोतज और पद्मराग मणियोंसे परिपूर्ण हैं तथा जिन-भवनों सहित हैं । इनका सम्पूर्ण वर्णन करनेमें कौन समर्थ हो सकता है ? ॥१६७९॥

हिमवान् पर्वतस्थ पद्मद्रुहका वर्णन—

हिमवंतयस्स मज्झे, पुम्भावरमायसो य पउमवहो ।

पण-सय - कोयण - द'वो<sup>२</sup>, तद्बुगुणायाम - सोहिस्सो ॥१६८०॥

अर्थ :—हिमवान् पर्वतके मध्यमें पूर्वे-पश्चिम सम्बन्धमान, पाँचसौ योजन विस्तृत और एक हजार योजन प्रमाण लम्बाईसे लोलायमान पथ नामक द्रह है ॥१६८०॥

दस-जोयभाणि गहिरो, चउ-तोरण-वेदि-नन्दन-वर्णोहि ।

सोवार्णोहि सहिवो, सुह - संवर - रयण - रत्निबोहि ॥१६८१॥

अर्थ :—यह पथद्रह दस योजन गहरा तथा चार तोरणों, वेदियों, नन्दनवर्णों और भन्धी तरहसे गमन करने योग्य, उत्तम रत्नोंसे विरचित सोपानों सहित है ॥१६८१॥

वेसवण - लाम - कूडो, ईसाणे होवि 'पंकय - दहस्स ।

सिरिणिचय-गाम्भ-कूडो, सिहि-विस-भागम्हि णिदिहो ॥१६८२॥

अर्थ :—इस पथद्रहके ईशानकोणमें वेश्रवण नामक कूट और आग्नेयमें श्रीनिचय नामक कूट कहा गया है ॥१६८२॥

कुल्ल-हिमवन्त-कूडो, णइरिदि-भागम्भि तस्स णिदिहो ।

पच्छिम - उत्तर - भागे, कूडो ऐरावतो नाम ॥१६८३॥

अर्थ :—उसके नैऋत्य भागमें सुदहिमवान् कूट और पश्चिमोत्तर भागमें ऐरावत नामक कूट कहा गया है ॥१६८३॥

सिरिसंचय - कूडो सह, भाए पउम - दहस्स उत्तरए ।

एवोहि कूडोहि, हिमवन्तो पंच - सिहरि - नाम - कूडो ॥१६८४॥

अर्थ :—पथद्रहके उत्तरभागमें श्रीसंचय नामक कूट स्थित है । इन पाँच कूटोंसे हिमवान् पर्वत 'पंचशिखरी' नामवाला है ॥१६८४॥

उपवन-वेदी-बुत्ता, बेत्तर - जयरेहि होति रमणिज्जा ।

सम्भे कूडा एवे, गाणाविह - रयण - निम्भविवा ॥१६८५॥

अर्थ :—नाना प्रकारके रत्नोंसे निर्मित ये सब कूट उपवन-वेदियों सहित, व्यस्तोंके नगरोंसे रमणीय हैं ॥१६८५॥

उत्तरदिता-विभागो, जलम्भि पउम - दहस्स जिम-कूडो ।

सिरिणिचयं वेदलियं, अंकमयं अंबरीय - वयणं च ॥१६८६॥

सिहरी-उत्पल-कूडा, पवाहिस्ता ह्येति तस्स सलिसम्मि ।

तट<sup>१</sup> - वण - वेदीहि कुवा, बेंसर - नयरेहि<sup>२</sup> सोहिस्ता ॥१६८७॥

अर्थ :—पद्मप्रहृके जलमें उत्तरदिशा की ओरसे प्रदक्षिणरूपमें जिनकूट, श्रीनिचय, वेंहूयं, भकूपय, अम्बरीक, रुचक, सिखरी और उत्पलकूट, ये कूट उसके जलमें तट-वेदियों और वन-वेदियों सहित व्यन्तर-नगरोंसे शोभायमान हैं ॥१६८७-१६८७॥

उवयं नू - पुहवासं, मज्झं पणवीस तत्तियं वलिवं ।

मुह - भूमि - जुवस्सड<sup>३</sup>, पसेक्कं जोयवाणि कूडाणं ॥१६८८॥

[ २५ । २५ । २५ । २५ ।

अर्थ :—उन कूटोंमेंसे प्रत्येक कूटकी ऊँचाई पच्चीस योजन, भूविस्तार भी पच्चीस योजन, मुख-विस्तार साढ़े बारह योजन और मध्य विस्तार भूमि एवं मुखके जोड़का अर्धभाग [ { ( २५ + २५ ) ÷ २ = } २५ अर्थात् १२५ योजन ] प्रमाण है ॥१६८८॥

पद्मप्रहृमें स्थित कमलका निरूपण—

वह - मज्झे अरिन्दय - नालं बावाल - कोसमुम्बिड<sup>४</sup> ।

इति - कोसं बाहुल्लं, तस्स मुणालं लि रजवमयं ॥१६८९॥

[ को ४२ । वा को १ ।

अर्थ :—सरोवरके मध्यमें बयालीस कोस ऊँचा और एक कोस मोटा कमल-नाल है । इसका मृणाल रजतमय और तीस कोस विस्तृत है ॥१६८९॥

कंठो<sup>५</sup> अरिष्ट-रयणं, नालो वैरुलिय-रयण-भिन्मविडो ।

तस्सुव्वरि वर - वियसिय - पउमं चउ - कोसमुम्बिड<sup>६</sup> ॥१६९०॥

[ को ४ ।

अर्थ :—उस कमलका कण्ठ अरिष्टरत्नसे और नाल वैरुयंमण्डिसे निर्मित है । इसके ऊपर चार कोस ऊँचा एक किंचित् विकसित पद्म है ॥१६९०॥

चउ-कोस-हंइ-मज्झं, अंते सो-कोस-महव चउ - कोसा ।

पसेक्कं इगिकोसं, उस्सेहायाम - कम्बिया तस्स ॥१६९१॥

[ को ४ । को २ । को ४ । को १ ।



अर्थ :—अनेक प्रकारके उज्ज्वल आभूषणोंसे शोभायमान तथा सुप्रसस्त एवं विनाश  
कायबाले के सामानिक देव चार हजार प्रमाण हैं ॥१६६६॥

ईसाण<sup>१</sup>-सोम-आइरु-दिसाणवि-भागेसु पउम-उवरिम्मि ।

सामानियाण भवणा, होंति सहस्साणि चत्तारि ॥१६६७॥

[ ४००० ]

अर्थ :—ईशान, सोम ( उत्तर ) और वायव्य दिशाओंके भागोंमें पश्चिमके ऊपर उन  
सामानिक देवोंके चार हजार भवन हैं ॥१६६७॥

तिरिवेयी - तनुरक्खा, देवा सोलस - सहस्सया ताणं ।

पुष्पाविसु पसेक्कं, चत्तारि - सहस्स - भवणाणि ॥१६६८॥

[ १६००० ]

अर्थ :—श्रीदेवीके तनुरक्षक देव सोलह हजार हैं । पुष्पादिक दिशाओंमें प्रत्येक दिशामें  
इनके चार-चार हजार भवन हैं ॥१६६८॥

अकमंतर - परिताण<sup>२</sup>, आइरुओ नाम सुर-वरो होदि ।

बलीस - सहस्साणं, देवाणं अहिबई धीरो ॥१६६९॥

अर्थ :—अभ्यन्तर परिषदमें बत्तीस हजार देवोंका अधिपति आदित्य नामक धैर्यशाली  
उत्तम देव है ॥१६६९॥

पउमइह - पउमोवरि, अणि - विसाए हवन्ति भवणाइं ।

बलीस - सहस्साइं, ताणं वर - एयण - रइवाइं ॥१७००॥

[ ३२००० ]

अर्थ :—पद्मइहके कमलोंके ऊपर आग्नेय दिशामें उन देवोंके सत्तम रत्नोंसे रचित बत्तीस  
हजार भवन हैं ॥१७००॥

पउमम्मि चंद-णामो, मळिअम - परिताए अहिबई देवो ।

बालीस - सहस्साणं<sup>३</sup>, सुराणं बहु - सत्थ - हत्थाणं ॥१७०१॥

[ ४०००० ]

१. व. वाण, घ. क. ज. व. उ. रइव । २. व. य. परिपसा । ३. व. क. ज. घ. उ. अइव्वा ।  
४. व. व. क. ज. व. सहस्साइं । ५. व. व. बहुत्थाणं, क. उ. बहुत्थाणं सत्थाणं ।



अर्थ :—पद्मद्रुह पर मध्यम परिवर्द्धमें बहुबलाघनीय हाथों वाले चालीस हजार देवोंका अधिपति अम्भ नामक देव है ॥१७०१॥

चालीस सहस्राणि, पासाका ताण विम्ब-मणि-वडिवा ।

दक्षिण - दिसाए अलगय - दिय - सस-सरोज-गम्भेसु ॥१७०२॥

[ ४०००० ]

अर्थ :—विम्ब-मणियों ( रत्नों ) से घड़े गये अर्थात् बनाए गए उन ( देवों ) के चालीस हजार प्रासाद हैं, जो सात जलगत कमलोंके मध्य दक्षिण दिशामें स्थित हैं ॥१७०२॥

अङ्गबाल-सहस्राणं<sup>१</sup>, सुराज सामी समुगय - पयाओ ।

बाहिर - परिसाए अङ्गु<sup>२</sup>, रामो सेवेवि तिरिदेवि<sup>३</sup> ॥१७०३॥

[ ४०००० ]

अर्थ :—बाह्य परिवर्द्धके अङ्गबालीस हजार देवोंका अङ्गु नामक देव श्रीदेवी की सेवा करता है ॥१७०३॥

एङ्गरिवदिसाअ ताणं, अङ्गबाल - सहस्र - संस-पासाबा ।

पउमद्रुह - अङ्गम्मि य, सुतुंग-तोरण-बुधार-रमणिज्जा ॥१७०४॥

[ ४०००० ]

अर्थ :—अङ्गत्व-दिशामें उन देवोंके उन्नत तोरणद्वारोंसे रमणीय अङ्गतासीस हजार भवन पद्मद्रुहके मध्यमें स्थित हैं ॥१७०४॥

कुञ्जर - सुरय - महारह<sup>४</sup> - गोवइ-गंधव-अङ्ग-वासाणं ।

सस अणीया ससहि, कण्ठाहि तस्य संजुसा ॥१७०५॥

अर्थ :—कुञ्जर, सुरङ्ग, महारथ, वेल, गन्धर्व, मर्तक और दास इनकी सात सेनाएँ हैं । हममेंसे प्रत्येक सेना सात-सात कक्षाओं सहित है ॥१७०५॥

पउभाचीय - पमाणं, सरिसं सामाजियाण सेसेसुं ।

विगुणा - विगुणा संखा, अस्सु अणीएसु पत्तेयं ॥१७०६॥

१. अ. ब. क. क. य. ड. सहस्राणि । २. अ. अङ्गुलायो, क. क. अ. य. ड. अङ्गुलायो ।

३. द. क. अ. य. उ. देवी । ४. अ. अ. क. अ. य. उ. गुहाय ।

अर्थ :—प्रथम अनोकका प्रमाण सामानिक देवोंके सदृश है । शेष छह सेनाओंमेंसे प्रत्येक सेनाका प्रमाण उत्तरोत्तर दूना-दूना है ॥१७०६॥

कुंजर-पट्टवि-तर्जुहि, देवा विकरन्ति विमल-सचि-जुवा ।

माया - लोह - बिहोणा, निबधं सेवन्ति सिरिर्वि<sup>१</sup> ॥१७०७॥

अर्थ :—निर्मल शक्तिसे संयुक्त देव, हाथी आदिके शरीरोंकी विक्रिया करते हैं और माया एवं लोभसे रहित होकर नित्य ही ओदेवोंकी सेवा करते हैं ॥१७०७॥

सत्ताणीयाज घरा<sup>२</sup>, पञ्चमह - पश्चिम<sup>३</sup> - प्यएसम्मि ।

कमल-कुसुमाण उर्वरि, सप्त विधय कवय - निम्मविवा ॥१७०८॥

अर्थ :—सात अनोक देवोंके सात घर पञ्चमहके पश्चिम-प्रदेशमें कमल-कुसुमोंके ऊपर पश्यन्ति स्थित हैं ॥१७०८॥

अट्टुत्तर - सय - मेसं, पडिहारा मत्तिनो य जुवा यं ।

बहुविह-वर-परिवारा, उत्तम - क्काह<sup>४</sup> विधय-जुसाह<sup>५</sup> ॥१७०९॥

अर्थ :—उत्तम रूप एवं विनयसे संयुक्त और बहुत प्रकारके उत्तमोत्तम परिवार सहित ऐसे एकसौ आठ प्रतीहार, मन्त्री एवं दूत हैं ॥१७०९॥

अट्टुत्तर - सय - संला, पासाया ताज पत्तम - गवमेसु ।

विश-विदिस-विभाग-ठिवा<sup>६</sup>, बहु-मज्जे अहिय-रमणिज्जा ॥१७१०॥

अर्थ :—उनके प्रतिशय रमणीय एक सौ आठ भवन इहके मध्यमें कमलों पर दिशा और विदिशाके विभागोंमें स्थित हैं ॥१७१०॥

होन्ति पद्मज्जम-यह्वी, ताणं भवन्<sup>७</sup> वि पत्तम-पुप्फेसु<sup>८</sup> ।

उच्छिण्णो<sup>९</sup> काल - वसा, तेसु<sup>१०</sup> परिभाण - उवएसो ॥१७११॥

अर्थ :—पद्म पुष्पों पर स्थित जो प्रकीर्णक आदिक देव हैं उनके भवनोंके प्रमाणका उपदेश कालवश नष्ट हो गया है ॥१७११॥

१. द. क. ज. घ. उ. देवो । २. घ. क. क. ज. घ. उ. मुरा । ३. द. घ. पश्चिमप्यएसम्मि ।

४. द. क. घ. व. उ. रिवा । ५. द. क. घ. म. उ. क्काहवि, व. क्काह वि । ६. द. घ. क. घ. य. उ. पुप्फेसु ।

७. घ. उ. उच्छिण्णो ।

कमला एकदिना ते, पुण्ड्रि-मया सुंदरा य इगिलवला ।  
 चालीस - सहस्राणि, एक - सर्व सोलसीह जुबं ॥१७१२॥

। १४०११६ ।

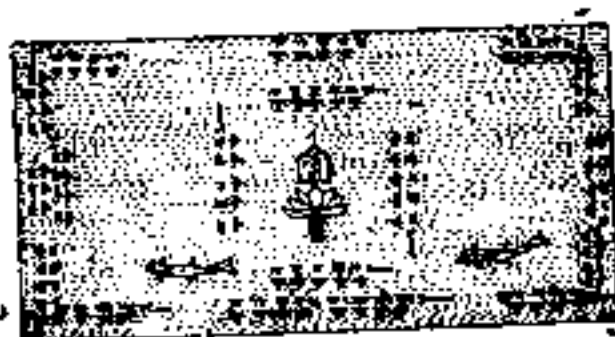
अर्थ :- वे सब अकृत्रिम, पृथिवीमय सुन्दर कमल एक लाख चालीस हजार एकसौ सोलह  
 हैं ॥१७१२॥

एवं महा - पुराणं, परिमाणं ताण होवि कमसेसुं ।  
 खुरुलप - पुर - संख्याणं, को सबकइ काहुमसिलाणं ॥१७१३॥

अर्थ :- इसप्रकार कमलोंके ऊपर स्थित उन महानगरोंका प्रमाण ( एक लाख चालीस  
 हजार एकसौ सोलह ) है । ( इनके प्रतिरिक्त ) क्षुद्र ( लघु ) पुरोंकी पूर्ण-रूपेण गणना करनेमें कौन  
 समर्थ हो सकता है ॥१७१३॥

पउम - बहे पुण्यपुहा, उत्तम - गेहा हवति सखे वि ।  
 ताणाभिमुहा<sup>१</sup> सेसा, खुरुलप - गेहा जहाजोगं ॥१७१४॥

अर्थ :- पद्मप्रहर्ष ( वे १४०११६ ) सर्व ही उत्तम गृह पूर्वाभिमुख हैं और शेष क्षुद्र-गृह  
 यथायोग्य उनके सम्मुख स्थित हैं ॥१७१४॥



कमल पुण्यस्थित भवनोंमें जिनमन्दिर—

कमल - कुसुमेषु तेषु, पासादा जेसिदा समुद्दिता ।  
 तैसिय-सेसा<sup>१</sup> होति तु, जिण - गेहा चिविह - रयणमया ॥१७१५॥

अर्थ :—उम कमल-पुष्पोंपर जितने भवन कहे गये हैं, वही विविध प्रकारके रत्नोंसे निर्मित जिनगृह भी उतने ही होते हैं ॥१७१५॥

भिगार - कलस - दम्परा - कुम्बुव-घंटा-धवावि-संपुष्पा ।

जिगबर - पासाबा<sup>१</sup> ते, आनाबिह - तोरण - कुमारा ॥१७१६॥

अर्थ :—वे जिनेन्द्र-प्रासाद नाना-प्रकारके तोरण-द्वारों सहित और भारी, कलश, दम्परा, बुदबुद, घंटा एवं ध्वजा-आदिकसे परिपूर्ण हैं ॥१७१६॥

बर-बामर - भामंडल - छत्तसय-कुसुम-वरिस-पहुदीहि ।

संजुसाओ तेसुं, जिगबर - पडिमाओ राजसि ॥१७१७॥

अर्थ :—उन जिन-भवनोंमें उत्तम बमर, भामण्डल, तीन छत्र और पुष्पवृष्टि आदिसे संयुक्त जिनेन्द्र-प्रतिमाएँ लोभायमान हैं ॥१७१७॥

रोहितास्या नदीका निर्देश—

यार्गिहिरिका :—अरुणस्य<sup>२</sup> नदीस्य<sup>३</sup> दक्षिणतः<sup>४</sup> अंगे<sup>५</sup> रोहितास-नाम-नदी ।

उमाञ्जह छावसरि, जोयन - बु - सयाह अबिरिसा ॥१७१८॥

। १७१९ ।

अर्थ :—पद्मदेहके उत्तर-भागसे रोहितास्या नामक उत्तम नदी निकलकर दो सौ छिहत्तर योजनसे कुछ अधिक दूर तक ( पर्वतके ऊपर ) जाती है ॥१७१८॥

रंदाबगाढ - तोरण - अंतर - कूड - ध्णालिया-ठाणा ।

बारा<sup>६</sup> - रंदा कुंढहीबावल - कूड<sup>७</sup> - रंदा - पहुदीओ ॥१७१९॥

तत्त्व य तोरण - वारे, तोरण - बंभा अ तीए सरिबाए ।

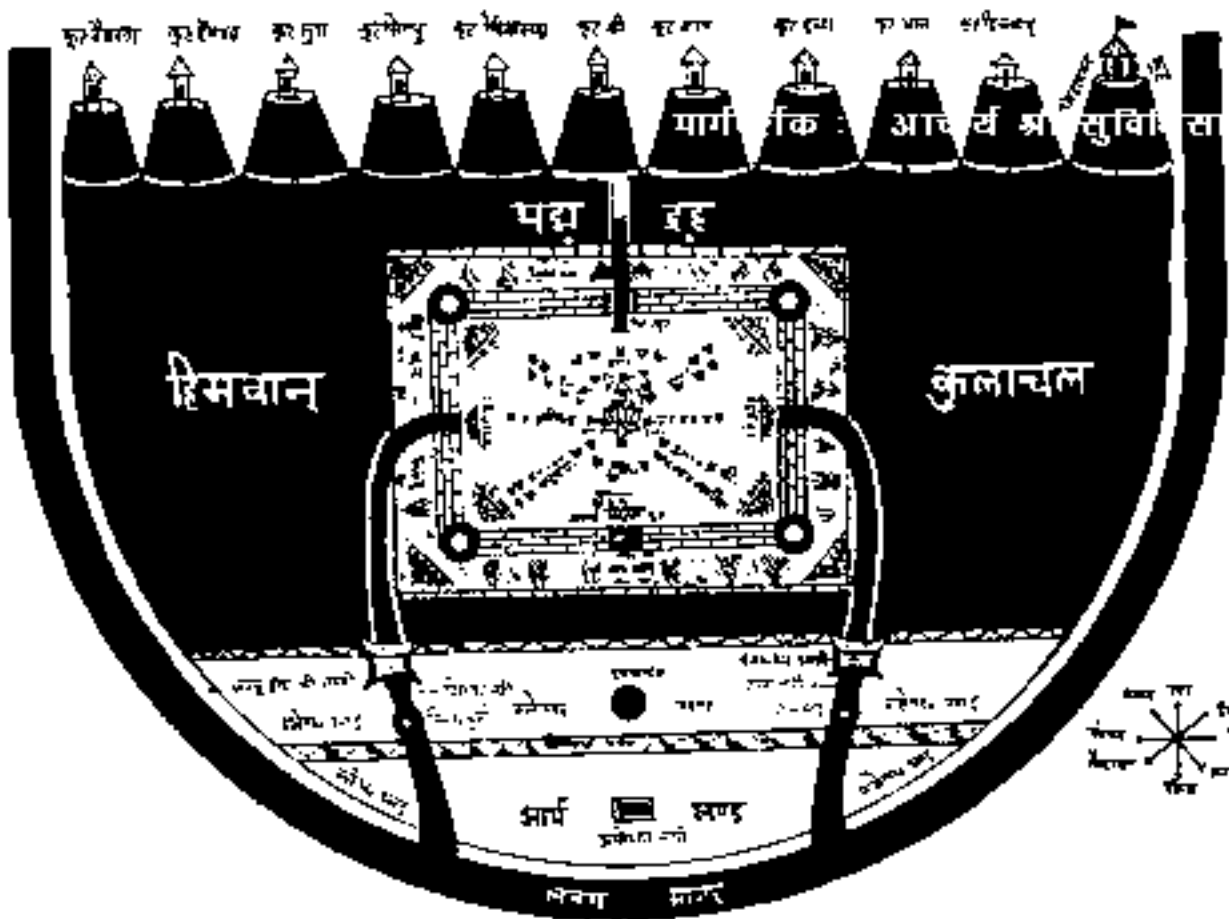
तंग - नईए सरिसा, न्चरि बासाबिएहि ते जिमुना ॥१७२०॥

। हिमवतं तयं ।

अर्थ :—इस नदीका विस्तार, गहराई, तोरणोंका अन्तर, कूट प्रणालिका-स्थान, घारा-का विस्तार, कूण्ड, द्वीप, झील और कूटका विस्तार आदि तथा वहाँ पर तोरणद्वारमें तोरण-स्तम्भ आदि सबका वर्णन गङ्गा नदीके सदृश ही जानना चाहिए । विशेष यह है कि यहाँ पर इन सबका विस्तार गङ्गा-नदीकी अपेक्षा दूना-दूना है ॥१७१९-१७२०॥

॥ हिमवान् पर्वतका कथन समाप्त हुआ ॥

१. ब. ब. क. अ. य. उ. पासावे । २. ब. ब. क. अ. उ. पद्म द्वाउदुत्तर । ३. द. ब. क. अ. य. उ. वाराहवा कुंढ । ४. ब. क. क. अ. कुंढ, अ. य. कुंढ ।



हेमवत क्षेत्रका निरूपण—

हेमवदस्स य उंवा, चाल-सहस्सा य कलाषीस - तिवा ।  
तस्स य उत्तर - बाणा<sup>१</sup>, भरह - सलोमावु सत्त - गुणो ॥१७२१॥

| ४०००० |  
१६

अर्थ :- हेमवत क्षेत्रका विस्तार उत्तरीससे भाजित चालीस हजार योजन और उसका उत्तर-बाण भरतक्षेत्रकी कालाकासे सात गुणा है अर्थात् ३६८४१६ योजन है ॥१७२१॥

सत्तत्तीस - सहस्सा, छक्क सया सत्तरी य चउ-अहिया ।  
किच्चूच - सोलस - कला हेमवदे उत्तरे ओवा ॥१७२२॥

| ३७६७४११ |

अर्थ :- हेमवतक्षेत्रके उत्तर-भागमें ओवा सैंतीस हजार छहसौ चौहत्तर योजन और कुछ कम सोलह कला प्रमाण है अर्थात् ३७६७४११ योजन है ॥१७२२॥

अट्टतीस<sup>२</sup> - सहस्सा, सत्त - सया जोयणाणि चालीसं ।  
दसय - कला जिहिह<sup>३</sup>, हेमवदस्सुत्तरं<sup>४</sup> चार्धं ॥१७२३॥

| ३८७४०११ |

अर्थ :- हेमवत क्षेत्रका उत्तर-धनुष अट्टतीस हजार सातसौ चालीस योजन और दस-कला मात्र निर्दिष्ट किया गया है अर्थात् ३८७४०११ योजन है ॥१७२३॥

इमिहत्तरि - कुत्तार्ध, सेसहि - सया<sup>५</sup> जोयणार्ण पि ।  
सच - कला दस - अहिया, हेमववा चूलिका एसा ॥१७२४॥

| यो ६३७१ | क ३१ |

अर्थ :- हेमवत क्षेत्रकी चूलिकाका प्रमाण तिरैसठसौ एकहत्तर योजन और साढ़े सात कला ( ६३७१३१ योजन ) ही निर्दिष्ट किया गया है ॥१७२४॥

पत्त - भुजा तस्स हक्कं अण्व सहुत्ताइ भाधियाणं पि ।

सत्त - सया पणवण्णाअभहिया तिणिं चिय कलाओ ॥१७२५॥

। ६७५५ । क २६ ।

अर्थ :—इसकी पार्श्व-भुजा छह हजार सातसौ पचपन योजन और तीन कला ( ६७५५.५२ योजन ) प्रमाण है ॥१७२५॥

अवसेस - बण्णजाओ, सरिसाओ सुसमदुस्समेणं पि ।

णवरि 'अवट्ठिद - रुवं, परिहीखं हाणि - बद्धोहि ॥१७२६॥

अर्थ :—इस क्षेत्रका शेष वर्णन सुषमदुःखमा कालके सदृश है । विशेषता केवल यह है कि वह क्षेत्र हानि-वृद्धिसे रहित होता हुआ एक सदृश ( अवस्थित ) रहता है ॥१७२६॥

हैमयत क्षेत्रस्थ शब्दवान् नामिगिरिका प्रकृपण—

तत्तसेसो बहुमज्जे, चेह्वि सहावधि सि नाभिगिरी ।

जोयण - सहस्स - उवओ, सेत्तिद-वासो सरिस - बहो ॥१७२७॥

। १००० । १००० ।

अर्थ :—इस क्षेत्रके बहुमध्यभागमें एक हजार योजन ऊँचा और दूने ( १००० योजन ) ही विस्तार-वाला, सदृश-गोल शृङ्गावान् ( शब्दवान् ) नामक नाभिगिरि स्थित है ॥१७२७॥

सज्जत्थ तस्स परिही, इगितोस - सयाइ तह य वासट्ठो ।

सो पत्त-सरिस-ठाणो, कण्णमओ' 'वट्ट - विजयवट्ठो ॥१७२८॥

अर्थ :—इस सम्पूर्ण पर्वतकी परिधि एकतीससौ बासठ योजन प्रमाण है तथा वह वट्ट विजयाचं पत्तके सदृश आकारवाला है और कण्णमय है ॥१७२८॥

एक - सहस्सं पण-सयमेवक-सहस्सं च सग-सया पण्णा ।

उवओ भुह' - मू - मज्झिम - विथारा तस्स ववसत्त ॥१७२९॥

। १००० । ५०० । १००० । ७५० ।

पाठान्तरम्

अर्थ :—उस ध्वज पर्वतकी ऊँचाई, मुख-विस्तार, भूविस्तार और मध्यविस्तार क्रमशः एक हजार, पाँचसौ, एक हजार और सातसौ पचास योजन प्रमाण है ॥१७३६॥

भूसोवरि - भाएसुं, सो सेसो वेदि - उबबणेहि - जुबो ।

वेदी - बरणाण चंदा, हिमबंत - जण रुव नावन्वा ॥१७३७॥

अर्थ :—वह पर्वत मूल और उपरिम भागोंमें वेदियों एवं उपरनों सहित है । वेदी और वनोंका विस्तार हिमवान् पर्वतके सदृश ही जानना चाहिए ॥१७३७॥

बहु-सोरणवार-जुबा, तच्छण - वेदी विचित्र - रयणमई ।

वरियट्टासिय - बिडला, 'णच्छंताजेय-वय-वडावा वा ॥१७३८॥

अर्थ :—उस पर्वतकी वन-वेदी बहुत तोरणदारोंसे संयुक्त, विचित्र रत्नमयी, मार्गों एवं भट्टालिकाओंसे प्रचुर तथा नाचती हुई अनेक ध्वजा-पताकाओंसे युक्त है ॥१७३८॥

तगिरि-उवरिमभागे, बहु-मऊन्ने होदि दिव्व-जिण-भवण ।

चउ - तोरण - वेदि - जुबं, पडिमाहि सुं बराहि संजुसं ॥१७३९॥

अर्थ :—उस पर्वतके ऊपर बहु-मध्यभागमें चार तोरणों एवं वेदियोंसे युक्त तथा सुन्दर प्रतिमाओं सहित दिव्य जिनभवन हैं ॥१७३९॥

उब्बेह - प्पहुवीसुं, संपहि अम्हाण शत्थि उबबेसो ।

तत्स य चउहिंसासुं, पासावा होंति रयणमया ॥१७४०॥

अर्थ :—इस जिनभवनकी ऊँचाई आदिके विषयमें इससमय हमारे पास उपदेश नहीं है । जिन-सवन्तके चारों ओर रत्नमय प्रासाद हैं ॥१७४०॥

ससट्ट - प्पहुवीहि, भूसोहि भूसिवा विचिसाहि ।

धुब्बंत - अयं - बडावा, पाणाविह - रयणकय-सोहा ॥१७४१॥

अर्थ :—ये प्रासाद सात-आठ आदि विचित्र भूमियोंसे विभूषित, कहवाती हुई ध्वजा-पताकाओंसे संयुक्त और नात्ता-प्रकारके रत्नोंसे सीमायमान हैं ॥१७४१॥



बहु-परिवारेहि शुभो<sup>१</sup>, माली - नामेण चेतरो<sup>२</sup> वेको ।

इस - धनु - तुंगो चेद्वि, पल्लमिवाक महामेको<sup>३</sup> ॥१७३५॥

अर्थ :—यहाँपर इस-धनुष ऊँचा, एक पल्ल-प्रमाण आमुवाला और महान् तेजस्वी 'माली' नामक व्यन्तरदेव बहुत परिवारसे युक्त होकर रहता है ॥१७३५॥

हेमवतक्षेत्रमें प्रवाहित रोहितास्या नदीका वर्णन—

पठम<sup>४</sup> - इहाग्रो उत्तर - भागेषु रोहिदास एवम गवी ।

दो - कोसेहि अपाविय, नाभिगिरि पच्छिमे बलइ ॥१७३६॥

अर्थ :—रोहितास्या नामक नदी पश्चिमके उत्तरभागसे निकलकर (शब्दवान्) नाभिगिरि पहुँचनेसे दो कोस पूर्व ही पश्चिमकी ओर मुड़ जाती है ॥१७३६॥

वे कोसेहि अपाविय, वेदद्वं बलय - पच्छिमाहिमुहा ।

उत्तर-मुहेण तला, कुडिल - सकवेण एत्ति सा सरिया ॥१७३७॥

गिरि-बहु-मज्झ-पवेसं, गिय-मज्झ - पवेसयं च कावुणं ।

पच्छिम - मुहेण गच्छइ, परिवार - गवीहि परिवारिया ॥१७३८॥

अर्थ :—यह नदी दो कोससे पर्वतकी न पाकर अर्थात् दो कोस पूर्व ही रहकर पश्चिमाभि-मुस हो जाती है । इसके पश्चात् फिर उत्तराभिमुख होकर कुटिल-रूपसे भागे जाती है और पर्वतके बहुमध्य प्रवेशको अपना मध्यप्रदेश करके परिवार-नदियोंसे युक्त होती हुई पश्चिमकी ओर बहती जाती है ॥१७३७-१७३८॥

अट्टाकोस - सहस्सा, परिवार - गवीण होदि परिमाणं ।

दीवस्स य जगदि-जिणं, पबिसिण पबिसेवि त्वण-वारिणिहि ॥१७३९॥

। २८००० ।

। हेमवतो गवी ।

अर्थ :—इसकी परिवार नदियोंका प्रमाण अट्टाईस हजार है । इसप्रकार यह नदी जम्बू-द्वीपकी जगतीके जिलमें होकर लवणसमुद्रमें प्रवेश करती है ॥१७३९॥

। हेमवत क्षेत्रका वर्णन समाप्त हुआ ।

१. व. व. शुभ । २. व. व. व. चेतरो । ३. व. महावेको । ४. व. पठमपहाउत्तर । ५. व. व. अथर्वं च बलय, ज. य. अथर्वं बलय । ६. व. प. तत्ति-सरिया, व. क. व. तत्ति स सरिया ।

महाहिमवान् कुलाधलकः निरूपण —

भरहाबणि - दंदाबो, अठ-गुण-दंभो य वुसय उच्छेहो ।

होवि महाहिमबंतो, हिमबंत - वियं 'बजेहि कयसोहा ॥१७४०॥

| ५०००० | ३२०० |

अर्थ :—महाहिमवान् पर्वतका विस्तार भरतक्षेत्रसे आठ गुणा ( ४२१०२३ यो० ) है और ऊँचाई दोसी ( २०० ) योजन प्रमाण है । वह हिमवतके समान ही वर्णसे शोभायमान है ॥१७४०॥

पष्णसय<sup>१</sup>-सहस्त्राणि, उभवीस-हिवाणि<sup>२</sup> ज्ञोयन्ताणि पि ।

भरहाउ उत्तरंतं, तगिरि - बाणस्स परिमाणं ॥१७४१॥

| १५०००० | १६ |

अर्थ :—भरतक्षेत्रसे उत्तर तक इस पर्वतके बाणका प्रमाण उन्नीससे भाजित एकसी पचास हजार ( ७५६४२३ ) योजन है ॥१७४१॥

तेवण्ण - सहस्त्राणि, नथ य सया एकतीस - संजुला ।

छ-विचय कलायो जीवा, उराए - भागम्मि तगिरिणो ॥१७४२॥

| ५३६३१.१ |

अर्थ :—उस पर्वतके उत्तर-भागमें जीवाका प्रमाण तिरपन हजार नोसी इकतीस योजन और छह कला ( ५३६३१.१ योजन ) है ॥१७४२॥

सत्ताबण्ण - सहस्त्रा, दु-सया तेण्णवि दस कलायो य ।

तस्य महाहिमबंतो, जीवाए होवि अनुपुट्ट<sup>३</sup> ॥१७४३॥

| ५७२६३१२ |

अर्थ :—महाहिमवान् पर्वतकी जीवाका अनुपुट्ट सत्तावन हजार दोसी तेरावन योजन और दस कला मात्र ( ५७२६३१२ यो० ) है ॥१७४३॥

पञ्च य सहस्त्रा कु-सया, छाहृसारि ज्योत्स्नाणि भंगा य ।

मृदसीस<sup>१</sup> - हिवुणवीसा, महहिमवंतन्मि पस्सभुजा ॥१७४४॥

। ९२७६३६ ।

अर्थ :—महाहिमवान् पर्वतकी पार्श्वभुजा की हजारों की छिन्नर योजन और मृदसीसे भाजित उसीस कला प्रमाण ( ९२७६३६ योजन ) है ॥१७४४॥

ज्योत्स्ना अद्भु - सहस्त्रा, एककसयं अद्भुवीस - संजुता ।

पञ्च - कलाओ एवं, तगिरिओ भूलिया - भाजो ॥१७४५॥

। ८१२८५१ ।

अर्थ :—उस पर्वतकी भूलिकाका प्रमाण आठ हजार एकसी मृदाईस योजन और पञ्च कला ( ८१२८५१ योजन ) है ॥१७४५॥

महहिमवंते बोसुं, पासोसुं उच्चवजाणि रम्माणि ।

गिरि - सम - दीहत्ताणि, वासादीणं च हिमवगिरि ॥१७४६॥

अर्थ :—महाहिमवान् पर्वतके दोनों पार्श्वभागोंमें रमणीय उपवन हैं । इनकी लम्बाई इसी पर्वतकी लम्बाईके बराबर और विस्तारविक हिमवान् पर्वतके सदृश है ॥१७४६॥

सिद्ध<sup>१</sup> - महाहिमवंता, हेमवतो रोहिदो य हरि-णामो ।

हरिकंतो हरिवरिसो, वेरुलिओ अद्भु इमे कूडा ॥१७४७॥

अर्थ :—इस पर्वतके ऊपर सिद्ध, महाहिमवान्, हेमवत, रोहित्, हरि, हरिकान्त, हरिवर्ष और वेङ्गर्ष इस प्रकार ये आठ कूट हैं ॥१७४७॥

हिमवंत-पम्बवत्स य, कूडाओ उच्च - वास - पद्भुवीणि ।

एवाणं कूडाणं, कुगुय - सक्काणि सम्भारि ॥१७४८॥

अर्थ :—हिमवान् पर्वतके कूटोंसे इन कूटोंकी ऊँचाई और विस्तार आदि सब कुगुने-कुगुने हैं ॥१७४८॥

अं जामा ते कूडा, तं जामा भंतरा सुरा होति ।

अमुचम - रुच - सरीरा, बहुविह - परिवार - संजुता ॥१७४९॥

**अर्थ** :—जिन नामोंके वे कूट हैं, उन्हीं नामवाले अन्तरदेव उन कूटोंपर रहते हैं। ये देव अनुमम रूप युक्त शरीरके धारक और बहुत प्रकारके परिवारसे संयुक्त हैं ॥१७५१॥

महापद्मद्रह, कमल एवं ह्रीदेवी आदिका निरूपण—

पद्म-द्रहाज बुगुणो, 'वासायामेहि गहिर - भावेण ।

होहि महाहिमवंते<sup>१</sup>, महपजमो नाम दिख - रह्यो ॥१७५०॥

। वा १००० । जा २००० । ता २० ।

**अर्थ** :—महाहिमवान् पर्वत पर स्थित महापद्म नामक ब्रह्म पद्मद्रहकी अपेक्षा बुगुणे विस्तार, लम्बाई एवं गहराई वाला है। अर्थात् १००० योजन विस्तार, २००० यो० प्रायाम और २० योजन गहराई वाला है ॥१७५०॥

**अर्थ** :—महापद्मद्रह, महापद्मद्रह, महापद्मद्रह, महापद्मद्रह, महापद्मद्रह ।

बहुपरिवारेहि भुवा, सिरियावेवि अब वणिणय-गुणोघा ॥१७५१॥

**अर्थ** :—उस तालाबमें कमलके ऊपर स्थित प्रासादमें बहुतसे परिवारसे संयुक्त तथा श्रीदेवीके सहस्र वृत्तित गुण-समूहसे परिपूर्ण ह्री देवी रहती है ॥१७५१॥

गवरि विसेसो एसो, बुगुणा परिवार-पद्म-परिसंज्ञा ।

वेसिय - मेसा - पद्मा<sup>२</sup>, जिमभवणा तेसिया<sup>३</sup> रम्मा ॥१७५२॥

**अर्थ** :—यहां विशेषता केवल यह है कि ह्री देवीके परिवार और पक्षोंकी संख्या श्रीदेवीकी अपेक्षा दूनी है। इस तालाबमें जितने पक्ष हैं, उतने ही रमणीय जिन-भवन भी हैं ॥१७५२॥

ब्रह्म सम्बन्धी कूटोंका निर्देश--

ईसाज - विसा - भागे, वेसमजो नाम सुंवरों कूडो ।

वणिणय-विसा-विभागो, कूडो सिरिनिचय नामो य ॥१७५३॥

गहिरि-भागे कूडो, महाहिमवंतो विचिस्त-रयणमओ ।

पणिचम - उत्तरभागे, कूडो एराबवो नाम ॥१७५४॥

सिरिसंजओ<sup>४</sup> वि कूडो, उत्तर - भागे बहस्त सेट्टेवि ।

एवेहि कूडोहि, महाहिमवंतो य पंचसिहरो सि ॥१७५५॥

अर्थ :—इस तालाबके ईशानदिशा-भागमें सुन्दर वैश्रवण नामक कूट, दक्षिणदिशाभागमें श्रीनिचय नामक कूट, नैऋत्यदिशामें विभिन्न रत्नोंसे निर्मित महाहिमवान् कूट, पश्चिमोत्तर भागमें ऐरावत नामक कूट और उत्तरभागमें श्रीसंचय नामक कूट स्थित है। इन कूटोंसे महाहिमवान् पर्वत 'पंच-शिखर' कहलाता है ॥१७५३-१७५४॥

एवे सज्जे कूडा, बेतर - जयरेहि<sup>१</sup> परम - रमणिज्जा ।

उदवण-वेणी-कुडा, उत्तर - पासे जलम्मि जिण - कूडो ॥१७५५॥

अर्थ :—ये सब कूट व्यन्तर नगरोंसे परम-रमणीय और उपवन-वेदियोंसे संयुक्त हैं। तालाबके उत्तरपाषाणभागमें जलमें जिनेन्द्र कूट है ॥१७५५॥

सिरिणिच्चयं बेरुसियं, अंकमयं अंबरीय - रजगाहं ।

उप्पल - सिहुरी कूडा, सलिलम्मि पवाहिणा होति ॥१७५७॥

अर्थ :—श्रीनिचय, वैश्रवण, अङ्कमय, अम्बरीक, इषक, उत्पल और शिखरी, ये कूट ( महापर्वतके ) जलमें प्रदक्षिणरूपसे स्थित हैं ॥१७५७॥

रोहित महानदी—

तद्दह-वणिज्ज-दारे, रोहि-गवी सिस्सरेवि विडल-जला ।

वणिज्ज-मुहेव वणवि, पव-हव-इगिणीस-ति-सयमविरित्तं ॥१७५८॥

। १६०३.१ ।

अर्थ :—प्रचुर-जल-संयुक्त रोहित नदी इस तालाबके दक्षिणद्वारसे निकलती है और पर्वत पर पाँचसे गुणित तीसरी इक्कीस योजनसे अधिक (  $५२१ \times ५ + १ = १६०३.१$  योजन ) दक्षिण की ओर जाती है ॥१७५८॥

रोहीए वंवादी, सारिण्णो होवि रोहिवासाए ।

जाहि - प्पवाहिजेजं, हेमवते जादि पुज्जमुहा ॥१७५९॥

अर्थ :—रोहित नदीका विस्तार आदि रोहितास्याके सदृश है। यह नदी हेमवत क्षेत्रमें नाभिगिरिकी प्रदक्षिण करती हुई पूर्वाभिमुख होकर भागे जाती है ॥१७५९॥

तन्निवृत्ति-बहु-भक्त्येणं, 'गन्धर्व्य बीवस्स जगदि-विज-वारे ।

पविसेदि सवण-जलहि, अरुवीस-सहस्स-वाहिनी-सहिवा ॥१७६०॥

। २८००० ।

। 'महहिमवन्तो गदो ।

अर्थ :—इसप्रकार यह नदी उस हैमवत क्षेत्रके बहुमध्यभागसे द्वीपकी घेदीके बिलडारमें जाकर भट्टाईस हजार नदियों सहित सवण समुद्रमें प्रवेश करती है ॥१७६०॥

। महाहिमवान् पर्वतका वर्णन समाप्त हुआ ।

हरिक्षेत्रका निरूपण—

महोदधिवीथ बाणं, इतितासं हवाभि ह्रीदि जलसु ।

हरिवरिसस्स य बाणं, सं उवहि - तवापु" भावम् ॥१७६१॥

। ३१०००० ।  
१८ ।

अर्थ :—भरतक्षेत्रके बाणकी इकतीससे गुणा करने पर जो गुणनफल (  $310000 \times 31 = 9610000$  ) प्राप्त हो उसना समुद्रके तटसे हरिवर्ष क्षेत्रका बाण (  $1631427$  यो० ) जानना चाहिए ॥१७६१॥

एकं" जोयण - लवणं, सट्ठि-सहस्साणि भागहारो य ।

उज्जोसेहि एसो, हरिवरिस - सिदीए विस्वारो ॥१७६२॥

। १६०००० ।  
१९ ।

अर्थ :—हरिवर्ष क्षेत्रका विस्तार उज्जीससे भाजित एक लाख सठ हजार (  $160000$  ) दोजन प्रमाण है ॥१७६२॥

सहस्ररी - सहस्सा, एककोत्तर-णव-सयाणि जोयणया ।

ससारस्स य कसाप्पो, हरिवरिसस्सुत्तरे जीवा ॥१७६३॥

। ७३६०१ । २० ।

अर्थ :—हरिवर्ष क्षेत्रकी उत्तर जीवा तिहत्तर हजार नौसौ एक योजन और सत्तरहू कला ( ७३१०१३३३ यो० ) प्रमाण है ॥१७६३॥

बुलसीदि-सहस्त्राणि, तह सोलह - ओयनाणि अउरंता ।

एवस्ति जीवाए, धनुषुद्ध होदि हरिचरिते ॥१७६४॥

। ८४०१६३३ ।

अर्थ :—हरिवर्षक्षेत्रमें इस जीवाका धनुषुद्ध चौरासी हजार सोलह योजन और चार प्राय योजन ( =४०१६३३ यो० ) प्रमाण है ॥१७६४॥

ओयन-अव-अउ वि-सया, पणसीबी होंति अट्टसीस-हिवा ।

एककरस - कला - अहिया, हरिचरिते चूलियामाणं ॥१७६५॥

। ६६८४३३ ।

अर्थ :—हरिवर्ष क्षेत्रकी चूलिकाका प्रमाण नौ हजार नौ सौ पचासी योजन और अट्टसीस से भाजित म्यारह कलाओंमें अधिक ( ६६८४३३ यो० ) है ॥१७६५॥

तेरस सहस्त्राणि, तिण्णि सया ओयनाइ इगिसहुी ।

अट्टसीस-हरिय-तेरस-कलाओ हरिचरिस - पस्त - भुजा ॥१७६६॥

। १३३६१ । ३३ ।

अर्थ :—हरिवर्ष क्षेत्रकी पावर्षभुजा तेरह हजार तीन सौ एकसठ योजन और अट्टसीससे भाजित तेरह कला ( १३३६१३३ यो० ) प्रमाण है ॥१७६६॥

अवसेस - वण्णनाओ, सुसमस्स व होंति तस्स छेरास्स ।

अवरि अवट्ठिद - कणं, परिहीणं हाणि - वट्ठीहि ॥१७६७॥

अर्थ :—उस क्षेत्रका अवशेष वर्णन सुवयाकालके सदस है । विशेष यह है कि वह क्षेत्र हाणि-वट्ठिसे रहित होता हुआ संस्थित रूप अर्थात् एकसा ही रहता है ॥१७६७॥

तक्खेस्से बहुमकळे, वेट्ठुदि विजयावदित्ति नाभिगिरी ।

तक्ख - विध्व - वण्णज - सुत्ता इह किर चारणा देवा ॥१७६८॥

अर्थ :—इस क्षेत्रके बहुमध्यभागमें विजयवान् नामक नाभिगिरि स्थित है । यहाँ सर्व दिव्य वर्णनसे युक्त चारणदेव रहते हैं ॥१७६८॥

हरिकान्ता नदीका निरूपण—

महोपजम - बहाउ नदी, उत्तरभागेण तोरणहारे ।

भिस्सरिवृणं वध्वदि, पञ्चद - उर्वारिम्भि हरिकंता ॥१७६९॥

अर्थ :—हरिकान्तानदी महापद्म-अर्थात् उत्तरभाग-सागरी-तोरणद्वारसे निकलकर पर्वतके ऊपरसे जाती है ॥१७६९॥

सा गिरि-उर्वारि गच्छद्, एक-सहस्रं पञ्चसरा छ-सपा ।

जोयणया पंच कला, पणालिए पडवि कूडम्भि ॥१७७०॥

। १६०५.५ ।

अर्थ :—वह नदी एक हजार छहसो पाँच योजन और पाँच कला ( १६०५.५ यो० ) प्रमाण पर्वतके ऊपर जाकर नालीके द्वारा कुण्डमें गिरती है ॥१७७०॥

वे - कोसेहिमपाविय, नाभि - गिरिवं पद्माहिर्ष कावु ।

पञ्चिम - मुहेण वध्वदि, रोहीवो बिगुन - वासावी ॥१७७१॥

अर्थ :—पश्चात् वह (नदी) नाभिगिरिसे दो कोस दूर ( ६धर ) ही रहकर अर्थात् उसे न पाकर, उसकी ( अर्ध ) प्रवक्षिणा करके रोहित्-नदीकी अपेक्षा दुगुने विस्तारादि सहित होती हुई पश्चिमकी ओर जाती है ॥१७७१॥

छयण - सहस्तेहि, परिवार - तरंगिणीहि परियरिया ।

वीचस्स य जगवि-विसं, पवित्तिय पविसेह लवणविहि ॥१७७२॥

। ५६००० ।

। हरिवरिसो गद्दी ।

अर्थ :—इसप्रकार वह नदी छयन हजार परिवार नदियों सहित द्वीपके जगती-द्वारमें ( बिलमें ) प्रवेश कर अनन्तर लवणसमुद्रमें प्रवेश करती है ॥१७७२॥

। हरिवर्य-क्षेत्रका वर्णन समाप्त हुआ ।



निषधपर्वतका निरूपण—

सोलस-सहस्र-अठ-सय-आवासा दो कला निसह - द'ब ।

उणबीस - हिवा य हसू, 'तीस - सहस्रानि छल्लबल' ॥१७७३॥

। १६८४२,३ । ६२०००० ।

अर्थ :—निषधपर्वतका विस्तार सोलह हजार आठसौ बयासीस योजन और दो कला ( १६८४२,३ योजन ) तथा बाण जलोखसे भाजित छह लाख तीस हजार ( ३३१५७३३ ) योजन प्रमाण है ॥१७७३॥

अहवा गिरि-वरिसाणं, त्रिगुणिय-वासम्मि भरह-इसु-माणे ।

अवणीवे जं सेसं, जिय - पिय - बाणाण सं माणं ॥१७७४॥

अर्थ :—अववा, पर्वत और क्षेत्रके दूने विस्तारमेंसे भरतक्षेत्र सम्बन्धी बाण-प्रमाणके कम कर देनेपर जितना शेष रहे उतना अपने-अपने बाणोंका प्रमाण होता है ॥१७७४॥

$3315733 \times 2 - 170000 = 6521466 = 3315733$  निषधका बाण ।

अठ-अठवि-सहस्रानि, जोजन छप्पन्न-अहिय-एक-सया ।

बोणि कलाओ अहिया, 'निसह - गिरिस्सुचरे जीवा ॥१७७५॥

। १४१२६,२ ।

अर्थ :—निषधपर्वतकी उत्तरजीवाका प्रमाण चौरानव हजार एकसौ छप्पन्न योजन और दो कला अधिक है ॥१७७५॥

एकं जोजण-सकलं, अठबीस-सहस्र-ति-सय-आवासा ।

अव - भागा अविरिठा, निसहे जीवाए धनुपुट्ट ॥१७७६॥

। १२४३४६,२ ।

अर्थ :—निषधपर्वतकी जीवाके धनुपुट्टका प्रमाण एक लाख चौबीस हजार तीनसौ छयासीस योजन और नौभाग-अधिक ( १२४३४६,२ योजन ) है ॥१७७६॥

सत्ताबीस-अहियं, एक - सयं बस - सहस्र जोजणया ।

बोणि कलाओ निसहे, निहिट्टं बुलिमा माणं ॥१७७७॥

। जो १०१२७३,२ ।

अर्थ :—निषधपर्वतकी शूलिकाका प्रमाण दस हजार एक सौ सत्ताईस योजन और दो कला ( १०१२७३२ यो० ) कहा गया है ॥१७७७॥

जोयण बीस - सहस्त्रं, एक - समं पंच-समहिमा सट्टी ।

अष्टादश - कलायो, पस्स - भुजा नितह - सेलस्स ॥१७७८॥

[ २०१६५३८ ]

अर्थ :—निषध पर्वतकी पार्श्वभुजा बीस हजार एक सौ पंचसठ योजन और द्वाई कला ( २०१६५३८ यो० ) प्रमाण है ॥१७७८॥

उपवन-खण्डोंका वर्णन—

तगिरि-दो-पासेसुं, उववण - संडाणि होति रसंजिज्जा ।

अर्थवर्णक :—उपवन की सुविधाएँ और जो वृक्ष  
बहुविह - वर - रक्खाणि, सुक-कोकिल-मोर-कुत्ताणि ॥१७७९॥

अर्थ :—इस पर्वतके दोनों पार्श्वभागोंमें बहुत प्रकारके उत्तम वृक्षों और तोता, कोयल एवं मयूर पक्षियोंसे युक्त रमणीय उपवन-खण्ड हैं ॥१७७९॥

उपवण - संडा सम्बे, पम्बह - दोहता-सरिस-दोहता ।

वर - बावी - कूच - जुवा, पुव्वं विम वण्णका सज्जा ॥१७८०॥

अर्थ :—ये सब उपवन-खण्ड पर्वतकी सम्भाई सहस्र सम्बे और उत्तम वापियों एवं कूपोंसे संयुक्त हैं । इनका सब वर्णन पूर्वके ही सहस्र है ॥१७८०॥

निषधपर्वतस्य कूट—

कूडो 'सिद्धो निसहो, हरिवस्सो तह विदेह-हरि-विजया ।

सीतोवपरविदेहा, 'रजयो य हवेदि निसह - उवरिस्मि ॥१७८१॥

अर्थ :—निषधपर्वतके ऊपर सिद्ध, निषध, हरिवर्ष, विदेह, हरि, विजय, सीतोषा, अपर-विदेह और रजक, ये नौ कूट स्थित हैं ॥१७८१॥

तार्ण उव्व - प्पहुदो, सम्बे हिमवंत - सेल - कूडावो ।

अड-गुणिया नवरि इमे, कूडोवरि 'जिणपुरा सरिसा ॥१७८२॥

अर्थ :—इस कूटोंकी ऊँचाई आदि सब हिमवान्-पर्वतके कूटोंसे चौगुनी है । विशेषता केवल यह है कि कूटोंपर स्थित ये जिनपुर हिमवान्-पर्वत सम्बन्धी जिनपुरोंके सदृश हैं ॥१७८२॥

अं नामा ते कूटा, तं नामा जेतरा सुरा तेषु ।

बहु - परिवारेहि जुषा, पत्न्याः दस - धनुस्तुंगा ॥१७८३॥

अर्थ :—ये कूट जिस नामवाले हैं, उसी नामवाले व्यन्तरदेव उन कूटोंपर निवास करते हैं । बहुत परिवारोंसे युक्त ये देव एक पत्न्य प्रमाण आयु वाले और दस धनुष ऊँचे हैं ॥१७८३॥

पउमहृहाउ चउ - गुण-र'ब'स्पहुवी हवेदि दिव्य - वही ।

तिगिण्छो' विक्खावो, बहु - मउके जिसह - सेलस्त ॥१७८४॥

वा २००० । आ ४००० । गा ४० । प संख्या ५६०४६४ ।

२उ ४ । वा ४ । उ ४२ । उ १ । वा १ । आ ४ को । वा २ को । उ ३ को ।

अर्थ :—निपथपर्वतके बहुमध्यभागमें पश्च-द्रव्यकी अपेक्षा चौगुने विस्तारादि सहित और तिगिण्छ-नामसे प्रसिद्ध एक दिव्य तालाब है ॥१७८४॥

तालाबका व्यास २००० योजन, आयाम ४००० यो० और अवगाह ४० योजन प्रमाण है । सम्पूर्ण कमलोंका प्रमाण ५६०४६४ है । कमलका उत्सेध ४ योजन और व्यास भी ४ यो० है । कमल-नाल की ऊँचाई ४२ योजन है । ( जलमग्न ४० योजन और उसके ऊपर २ यो० है । ) कमल-कणिका का उत्सेध १ योजन और व्यास १ योजन है । कमल-कणिका पर स्थित अत्येक भवन की लम्बाई ४ कोस, चौड़ाई २ कोस और ऊँचाई ३ कोस है ।

धृतिदेवी निर्देश—

तद्वह - पउमस्तोवरि, 'पास्तावे चेद्वे य विविदेवी ।

बहु - परिवारेहि जुषा, विहवस - लावण्या - संपुण्या ॥१७८५॥

अर्थ :—उस ब्रह्म सम्बन्धी कमलके ऊपर स्थित भवनमें बहुत परिवारसे संयुक्त और धनुषम लावण्यसे परिपूर्ण धृतिदेवी निवास करती है ॥१७८५॥

इगि - पत्न्य - पमाजाऊ, पाणाबिह-रयण-सूतिय-सरीरा ।

अइरम्भा जेतारिया, सोहृक्मिदस्त सा देवी ॥१७८६॥

अर्थ :—एक पत्न्य आयुकी धारक और नाना प्रकारके रत्नोंसे विभूषित शरीर-वाली अतिरमणीय वह व्यन्तरिणी सौधमेंन्दकी देवकुमारी ( आम्नाकारिणी ) है ॥१७८६॥

इहमें जिनभवन एवं फुट—

जोराय - मेरा तास्त, पञ्चमेनिहा ताताया जिजिवुरा ।

भव्वाभाणंदयरा<sup>१</sup>, सुर - किण्णर - मिहुण - संकिण्णा ॥१७८७॥

अर्थ :—उस ताताबमें जितने पद्मगृह हैं, भव्यजनोंको आनन्दित करने वाले किण्णर देवोंके युगलोंसे संकीर्ण जिनेन्द्रपुर भी उतने ही हैं ॥१७८७॥

ईसाण - विसा - भागे, वेसमणो गाम मणहरो कूडो ।

वक्खिण - विसा - विभागे, कूडो सिरिणिच्चय-गामो य ॥१७८८॥

णद्धरदि-विसा-विभागे, गिसहो गामेण सुंदरो कूडो ।

अइरावदो<sup>२</sup> सि कूडो, तिगिण्ण - पक्खिमुत्तर<sup>३</sup>-विभागे ॥१७८९॥

उत्तर-विसा-विभागे, कूडो सिरिसंखवो सि गामेण ।

एवेहि कूडेहि, गिसहगिरी पंज - सिहरि सि ॥१७९०॥

अर्थ :—तिगिण्ण ताताबकी ईशानदिशामें वैश्वरण नामक मनोहर कूट है, दक्षिणदिशा-भागमें श्रीनिचय नामक कूट, नैऋत्य दिशामें निचय नामक सुन्दर कूट, पश्चिमोत्तर कोणमें ऐरावत कूट और उत्तर दिशा भागमें श्रीसञ्चय नामक कूट है । इन कूटोंके कारण निचय-पर्वत 'पंचसिखरी' नामसे भी प्रसिद्ध है ॥१७८८-१७९०॥

वर-वेदियाहि बुसा, बेतर-णयरेहि परम - रमणिज्जा ।

एवे कूडा उत्तर - पासे सलिसम्मि जिण - कूडो<sup>४</sup> ॥१७९१॥

अर्थ :—ये कूट उत्तम वेदिकाओं सहित हैं और व्यन्तर मगरोंसे अतिप्रिय-रमणीय हैं । इन कूटोंके उत्तर पादवर्षभागमें जलमें जिनेन्द्र कूट है ॥१७९१॥

१. द. व. क. अ. य. भव्वाणंदयरा । २. द. व. क. अ. य. अइरावद । ३. व. अ. य. तिगिण्णी-मुत्तर । ४. व. व. क. अ. य. कूडा ।

तिरिचिचयं वेदलियं, अंकमयं अंबरीय - रुचगाहं ।

तिहरो उत्पल - कूडो, तिगिच्छ - बहुस्त 'ससिलम्पि ॥१७६२॥

अर्थ :- तिगिच्छ तासाबके जलमें श्रीनिचय, वेदूर्य, अंकूमय, अम्बरीय, रुचक, शिखरी और उत्पल कूट हैं ॥१७६२॥

हरित् नदीका निर्देश—

तिगिच्छादो दक्षिण - दारेण हरि-राषी विचिकंता ।

सप्त-सहस्रं चउ-सय-इगिषीसा इगि-कला य गिरि-उत्तरि ॥१७६३॥

। ७४२१ । १२ ।

आगच्छिय हरि-कुंहे<sup>१</sup>, पविऊणं हरि-गामी विगिस्सरदि<sup>२</sup> ।

गाहि<sup>३</sup> - प्यवाहिणं, हरिवास्ति<sup>४</sup> आदि<sup>५</sup> पुण्णमुहे<sup>६</sup> ॥१७६४॥

अर्थ :- हरित् नदी तिगिच्छ ग्रहके दक्षिणद्वारेसे निकलकर सात हजार चारसौ एकतीस योजन एवं एक कला ( ७४२१.२१ यो० ) प्रमाण पर्वतके ऊपर आकर घोर हरित् कुण्डमें गिरकर बहसि निकसती है तथा हरिखण क्षेत्रमें नाभिगिरिकी प्रदक्षिणा-रूपसे पूर्वकी ओर जाती है ॥१७६३-१७६४॥

छप्पण - सहस्सेहि, परिवार - भिमणगाहि संजुता ।

दीवस्त य जगदि-बिलं, पविसिय पवितेदि सवणणिहि ॥१७६५॥

। ५६००० ।

अर्थ :- वह नदी छप्पन हजार ( ५६००० ) परिवार नदिमोसे संयुक्त होकर द्वीपकी जगतीके बिलमें प्रवेश करती हुई लवणसमुद्रमें प्रवेश करती है ॥१७६५॥

हरिकंता - सारिच्छा, हरि-गामा-वात्त-गाह<sup>१</sup>-पहुदीओ ।

मोगवणीण जवीओ, सर - पहुदी असयर - बिहीआ ॥१७६६॥

। गिसहो<sup>२</sup> गदो ।

१. द. व. बहुससिलम्पि । २. द. विचिकंता । ३. द. व. क. ज. य. कुहे । ४. द. व. क. ज. य. विगिस्सरयो । ५. द. व. क. ज. य. पुण्णमुहे । ६. द. क. ज. य. व. गाहि । ७. द. व. शिखरी ।

अर्थ :—हरित् नदीका विस्तार एवं गहराई आदि हरिकान्ता नदीके सदृश है। प्रोग-भूमियोंकी नदियां एवं ताबान आदिक जलचर जीवोंसे रहित होते हैं ॥१७६६॥

। निषध-पर्वतका वर्णन समाप्त हुआ ।

महाविदेह-क्षेत्रका वर्णन—

नितहस्तुत्तर - भागे, दक्षिण - भागमि नीलवन्तस्स ।

वरिसो महाविदेहो, मंवर - सेलेण पविहस्तो ॥१७६७॥

अर्थ :—निषधपर्वतके उत्तरभागमें और नील-पर्वतके दक्षिण-भागमें मन्दरमेरुसे विभक्त महाविदेह-क्षेत्र है ॥१७६७॥

तेत्तीस-सहस्राङ्ग, स-तया चउसीविम्रा य चउ - अंता ।

तो महाविदेह - रुदं, जोयन - लक्खं मउभगव - जोवा ॥१७६८॥

अर्थ :—उत्तीसहजार अङ्गों की चौड़ाई और चउसीविम्रा य चउ - अंता ( ३३६८४२५ योज० ) प्रमाण, तथा मध्यगत जीवा एक लाख योजन प्रमाण है ॥१७६८॥

भरहस्त इत्तु-पमाणे, पंचाणउदीहि तादि दम्मि पुडं ।

रयणायर - सीरावो, विदेह - अट्टो ति सो वाचो ॥१७६९॥

अर्थ :—भरतक्षेत्रके बाणको पंचानवेसे गुणा करने पर जो ( भरतका बाण  $19999 \times 24 = 479976 = 40000$  योजन ) गुणफल प्राप्त हो उतना समुद्रके तीरसे अर्ध विदेह-क्षेत्रके बाणका प्रमाण है ॥१७६९॥

अट्टावण - सहस्सा, इणि - लक्खा तेरसुत्तरं च सयं ।

सग - कोसाणं अट्टं, महाविदेहस्स धनुपुट्टं ॥१८००॥

। १५८११३ । ३ ।

अर्थ :—महाविदेहका धनुपुट्ट एक लाख अट्टावन हजार एकसौ तेरह योजन और साढ़े तीन कोस ( १५८११३ योज० ३३ कोस ) प्रमाण है ॥१८००॥

५०४ ]

तिलोपभण्ति

[ गाथा : १८०१-१८०२ ]

जोयच 'उमतीस' - सया, इगिबीसं अट्टरस तथा भगा ।

एवं महाविदेह, जिदिहुं चूलिया - माणं ॥१८०१॥

। २९२१२६ ।

अर्थ :- महाविदेह सेवकी चूलिकाका प्रमाण उमतीससी इक्कीस योजन तथा अठारह भाग ( २६२१२६ यो० ) है ॥१८०१॥

सोलस-सहस्सयाणि, अट्ट - सया जोयणाणि तेसीबी ।

अट्टाहिय - अट्ट - कला, महाविदेहस्स पस्स - भुजा ॥१८०२॥

। १६८८३३३ ।

अर्थ :- महाविदेहकी पार्श्व-भुजा सोलह हजार आठसी तेरासी योजन और साढ़े आठ कला ( १६८८३३३ यो० ) प्रमाण है ॥१८०२॥

[ तालिका ४२ पृष्ठ ५०५ पर देखिये ]

सामिका : ४२

पर्वत एवं क्षेत्रोंके विस्तार, बाण, जोरा, वज्र साविका प्रमाण

| क्र. | पर्वत और क्षेत्रों के नाम | विस्तार | उत्प्रेष | विस्तार   | बाण       | जोरा जीवा | वज्र       | सूचिका    | पारवज्र   |
|------|---------------------------|---------|----------|-----------|-----------|-----------|------------|-----------|-----------|
|      |                           | मोहन    | मोहन     | मोहन      | मोहन      | मोहन      | मोहन       | मोहन      | मोहन      |
| १    | हिमवान                    | २५      | १००      | १०५२ १/२  | १५७५ १/२  | २४८३२ १/२ | २५२३० १/२  | ५२१० १/२  | २१५० १/२  |
| २    | हिमवानक्षेत्र             | ×       | ×        | २१०५ १/२  | २६८४ १/२  | ३७१७४ १/२ | ३८७५० १/२  | ६३७१ १/२  | ६७५५ १/२  |
| ३    | महाहिमवान                 | ५०      | २००      | ४२१० १/२  | ७८८४ १/२  | ४८८३१ १/२ | ४७९८३ १/२  | ८१२८ १/२  | ८२७६ १/२  |
| ४    | हरि क्षेत्र               | ×       | ×        | ८४२१ १/२  | १६६१५ १/२ | ७८८०१ १/२ | ८४०१५ १/२  | ८८८५ १/२  | १६६६१ १/२ |
| ५    | निषध                      | १००     | ४००      | १६८४२ १/२ | ३३१५७ १/२ | ४४१५६ १/२ | १२४३४३ १/२ | १०१२७ १/२ | २०१५५ १/२ |
| ६    | वलिणविदेह                 | ×       | ×        | १६८४२ १/२ | ५००००     | १०००००    | १५५१५३ १/२ | २६२१ १/२  | १६८८२ १/२ |
| ७    | उत्तरविदेह                | ×       | ×        | १६८४२ १/२ | ५००००     | १०००००    | १५५१५३ १/२ | २६२१ १/२  | १६८८२ १/२ |

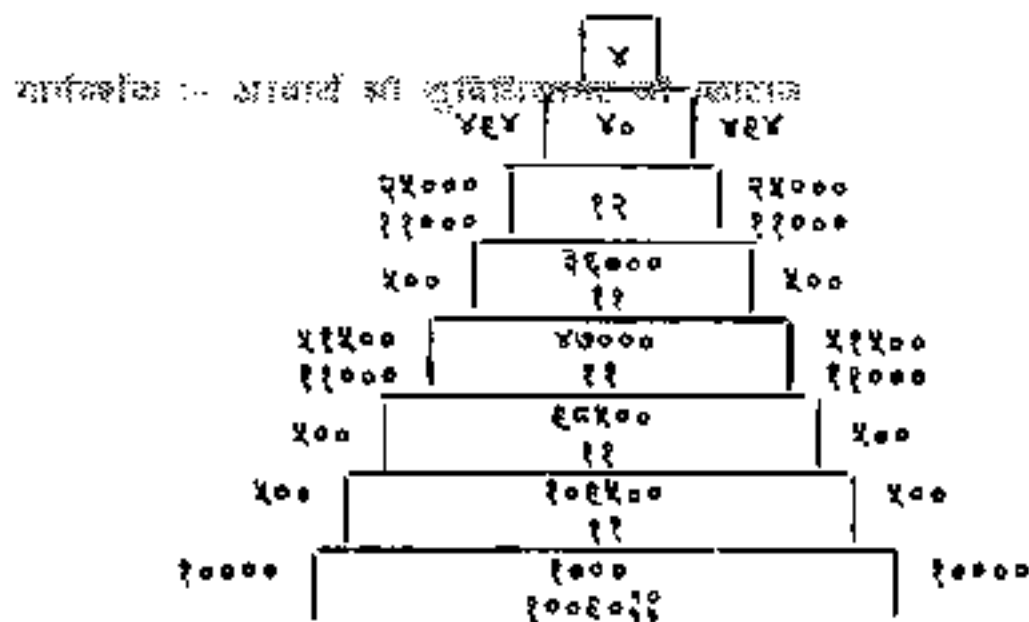
पर्वतों पर विस्तार



मन्दर महाभेरका निरूपण—

हरिसे महाविदेहे, बहुमण्डले मंदरो महासेतो ।

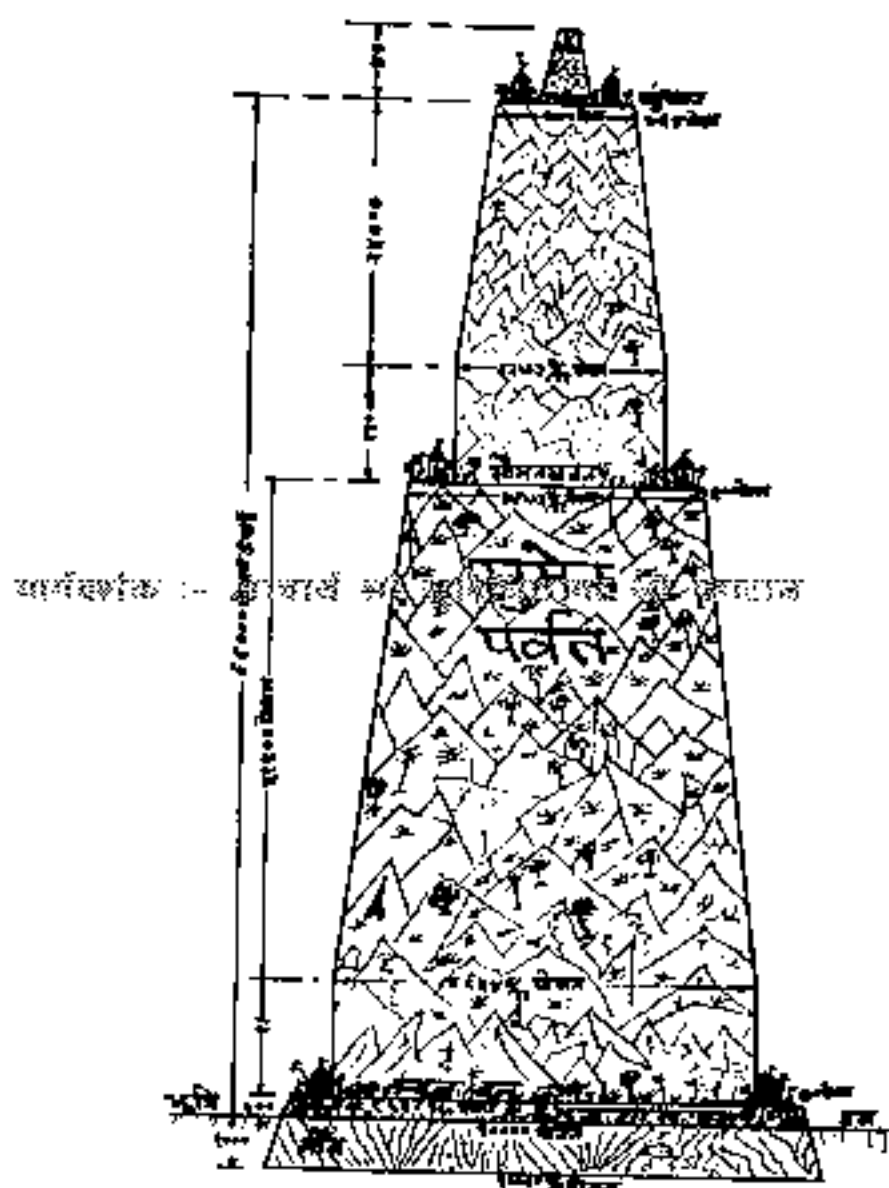
जम्माभिसेय - पीठो, सध्याचं तित्थ - कस्तानं ॥१८०३॥



अर्थ :- महाविदेहक्षेत्रके बहु-मध्यभागमें सब तीर्थकरोंके जम्माभिषेकका आसनरूप मन्दर ( सुदर्शन ) नामक महापर्वत है ॥१८०३॥

नोट—गाथा १८०३ की मूल संहतिका भाव 'सुमेरु' के चित्रसे स्पष्ट हो रहा है ।

( सुमेरु पर्वत का चित्र भगवते पृष्ठ पर देखिये )



ओयण-सहस्र-गाथो, राब-एबबि-सहस्र-मेत-उब्जेहो ।

बहुबिह-बण-संड-बुडो बाणावर - रयज - रमणिको ॥१८०४॥

। १००० । २५००० ।

अर्थ :—यह महापर्वत एक हजार ( १००० ) योजन गहरा ( नींव ), निम्नानवे ( २५००० ) हजार योजन ऊँचा, बहुत प्रकारके वन-बगडोंसे युक्त और अनेक उत्तम रत्नोंसे रमणीय है ॥१८०४॥

सहस्रं यः सहस्रं गतवी, ज्योतिषा इतः कतिपयं भागा ।

पाताल - तले चर्च, समष्टि - तनुस्त मेरुस्त ॥१८०५॥

। १००६० । ११ ।

अर्थ :—इस समान गोल शरीरवाले मेरु-पर्वतका विस्तार पाताल-तलमें इस हजार नब्बे योजन और एक योजनके ग्यारह भागोंमेंसे इस भाग ( १००६०३६ यो० ) प्रमाण है ॥१८०५॥

क्रम - हाथीए उर्वार, धरणी - पटुम्नि इत-सहस्रानि ।

ज्योषण - सहस्रमेकं, विचारो सिंह - भूमीए ॥१८०६॥

। १०००० । १००० ।

अर्थ :—फिर क्रमशः हानिरूप होनेसे उसका विस्तार पृथिवीके ऊपर इस हजार (१००००) योजन और सिखर-भूमि पर एक हजार ( १००० ) योजन प्रमाण है ॥१८०६॥

सरसमय-जलद-सिग्माव-विजयर - जिबं व सोहए मेरु ।

विजिह-वर-रयण-मंडिय - वसुमह - मउओ ए उतुंगो ॥१८०७॥

अर्थ :—वह उन्नत मेरुपर्वत शरत्कालीन बादलोंमेंसे निकलते हुए सूर्यमण्डलके सदृश और विविध उत्तम रत्नोंसे सज्जित पृथिवीके मुकुट सदृश शोभायमान होता है ॥१८०७॥

जन्माभिसेय-सुर-रहव-दुंदुही-मेरि-सुर - सिग्मोसो ।

जिज-महिम-जमिद-विक्कम-सर्गव - संबोह - रमणिज्जो ॥१८०८॥

अर्थ :—वह मेरु पर्वत जन्माभिषेकके समय देवीसे रचे गये दुंदुभि, मेरी एवं सूर्यके निर्वोद्य सहित और जिन-माहात्म्यसे उत्पन्न हुए पराक्रमवाले सुरेन्द्र - समूहोंसे रमणीय होता है ॥१८०८॥

ससि-हार-हंस-धवसुच्छलंत-खीरंबु-रासि - सलिसोघो ।

सुर - किन्नर - मिहुज्जणं, जाणाविह - कीडजेहि बुवो ॥१८०९॥

अर्थ :—चन्द्रमा, हार एवं हंस सदृश धवल तथा उक्षलते हुए क्षीरसागरके जल-समूहसे युक्त वह मेरु पर्वत किन्नर-जातिके देव-युगलोंकी नाना प्रकारकी क्रीड़ाओंसे मुषोभित होता है ॥१८०९॥

घरएयर'-कम्म-महासिल-संभूरण-जिनवरिव-भबजोधो ।

बिबिह-सर-कुसुम-पल्लव-फल-सिबह-सुगंध - भू - भागो ॥१८१०॥

अर्थ :—अतिसघन कर्मरूपी महाशिलाओंको पूर्ण करनेवाले जिनेन्द्र-मवनसमूहसे युक्त वह मेरुपर्वत अनेक प्रकारके वृक्ष-फल-पल्लव और फलोंके समूहसे पृथिवी-मण्डलको सुगन्धित करने वाला है ॥१८१०॥

मेरु पर्वतके विस्तारमें होनाधिकता—

भूमोद्यो-पंच-सया, एककरस-सहस्स-ओयण-पमाणं

तदुगणे संकुलितो, पंच - सया सो गिरी जुगवं ॥१८११॥

अर्थ :—वह मेरुपर्वत क्रमशः हानिरूप होता हुआ पृथिवीसे पाँचसौ योजन ऊपर जाकर उस स्थानमें युगपत् पाँचसौ योजन प्रमाण संकुचित हो गया है ॥१८११॥

सम-वित्तारो उवरि, एककरस-सहस्स-ओयण - पमाणं ।

ततो कम - हाणीए, इतिवक्क-सहस्स-पण-सया गंतुं ॥१८१२॥

। ११००० । ५१५०० ।

जुगवं 'समततो सो, संकुलितो ओयणाणि पंच - सया ।

सम - हंडं उवरि - ततो, एककरस - सहस्स-परिमार्ण ॥१८१३॥

। ५०० । ११००० ।

अर्थ :—पश्चात् इससे ऊपर ग्यारह हजार ( ११००० ) योजन पर्यन्त समान विस्तार है । यहाँसे पुनः क्रमशः हानि-रूप होकर इकदावन हजार पाँच-सौ ( ५१५०० ) योजन प्रमाण ऊपर जाने पर वह पर्वत सब ओरसे युगपत् पाँच-सौ योजन फिर संकुचित हो गया है । इसके आगे ऊपर ग्यारह हजार ( ११००० ) योजन पर्यन्त उसका विस्तार समान है ॥१८१२-१८१३॥

उद्धं कम - हाणीए, पणबीस - सहस्स - ओयणा गंतुं ।

जुगवं संकुलितो सो, वस्तारि समह चड - पडवी ॥१८१४॥

। २५००० । ४९४ ।

अर्थ :—फिर ऊपर क्रमशः हानिरूप होकर पणबीस हजार ( २५००० ) योजन आनेपर वह पर्वत युगपत् चारसौ औरानबे योजन प्रमाण संकुचित हो गया है ॥१८१४॥



मुह-भूमिण दिसेसे, उब्बेह - हिबम्मि नू - मुहाहितो ।

हानि - वयं गिहिद्धं, तस्स पमाणं ह 'वंचंसो ॥१८१६॥

वर्णन :- उब्बेह - उठनेवाला, मुहाहितो - मुह-भूमिण के प्रति।

अर्थ :- भूमिमेंसे मुखका प्रमाण घटाकर उत्सेधका भाग देनेपर जो लब्ध प्राप्त हो वह भूमिकी अपेक्षा हानि और मुखकी अपेक्षा वृद्धिका प्रमाण कहा गया है। वह हानि वृद्धिका प्रमाण यही योजनका पाँचवां भाग (  $\frac{1}{5}$  यो० ) है ॥१८१६॥

(भू० वि० १२ यो० - ४ यो० मुख वि० ÷ ४० यो० उत्सेध) = ( १२ - ४ ) ÷ ४० =  $\frac{8}{40} = \frac{1}{5}$  हानि—वृद्धिका प्रमाण ।

अत्थिच्छसि विचसंभं, खुसिद-सिहराउ समवदिष्णारं ।

तं पंचेहि विहसं, उउ - खुसं तस्य तत्वासं ॥१८२०॥

अर्थ :- खुसिकाके शिखरसे नीचे उतरते हुए जितने योजनपर विष्कम्भ जाननेकी इच्छा हो उतने योजनोंको पाँचसे विभक्त करनेपर जो लब्ध प्राप्त हो उसमें चार अङ्ग और जोड़ देनेपर वहीकर विस्तार निकलता है ॥१८२०॥

उदाहरण :- खुसिका-शिखरसे नीचे २० योजन पर विष्कम्भका प्रमाण जानना हो तो—  
 $20 \div 5 + 4 = 8$  योजन विष्कम्भ होगा ।

तं भूसे सगतीसं, मउभे पञ्चवीस जोजमाणं पि ।

उब्बे बारस अहिवा, परिही वेरुसिय - मइयाए ॥१८२१॥

[ ३७ । २४ । १२ ।

अर्थ :- वैदूर्यमणिमय उस शिखरकी परिधि मूलमें सैंतीस योजन, मध्यमें पञ्चवीस योजन और ऊपर बारह योजनसे अधिक है ॥१८२१॥

अत्थिच्छसि विचसंभं, मंदर - सिहराउ समवदिष्णारं ।

तं एक्कारस-भजिबं, सहस्स - सत्तिबं च तस्य विस्वारं ॥१८२२॥

अर्थ :- सुमेरुपर्वतके शिखरसे नीचे उतरते हुए जितने योजनपर उसका विष्कम्भ जाननेकी इच्छा हो उतने योजनोंमें ग्यारहका भाग देनेपर जो लब्ध आवे उसमें एक हजार योजन और मिला देनेपर वहीका विस्तार घा जाता है ॥१८२२॥

बबाहरण—चूलिकाके शिखरसे नीचे ३३००० योजनोंपर विष्णुमयका प्रमाण—  
 $३३००० \div ११ + १००० = ४०००$  योजन ।

अस्ति इच्छसि वासं, उर्वरि मूलाड सेतिय - पवेसं ।

एककारसेहि भजिदं, भू - वासे सोहिदम्भि तव्यासं ॥१८२३॥

अर्थ :—मूलसे ऊपर जिस स्थानपर मेरुका विस्तार जाननेकी इच्छा हो, उतने प्रदेशमें ग्यारहका भाग देनेपर जो लब्ध आवे उसे भूमिके विस्तारमेंसे घटा देनेपर शेष वहाँका विस्तार होता है ॥१८२३॥

एककारसे पवेसे, एक - पवेसा दु 'मूलदो हाणी ।

एवं पाद - करंगुल - कोस - प्पहुवीहि एतव्यं ॥१८२४॥

अर्थ :—मेरुके विस्तारमें मूलसे ऊपर ग्यारह प्रदेशोंपर एक प्रदेशकी हानि हुई है । इसी प्रकार पाद, हस्त, अंगुल और कोस आदिककी ऊँचाई पर भी स्वयं जानना चाहिए ॥१८२४॥

मेरुकी छह परिधियाँ एवं उनका प्रमाण—

हरिवालमई<sup>१</sup> परिही, वेदसिय-मयी य रघन-वज्रमई ।

उद्धम्भि य पउममई, तसो उवरिम्भि पउमरायमई ॥१८२५॥

अर्थ :—इस पर्वतकी परिधि नीचेसे क्रमशः हरितालमयी, वैदूर्यमणिमयी, रत्न (सर्वरत्न) मयी, वज्रमयी, इसके ऊपर पद्ममयी और इससे भी ऊपर पद्मरागमयी है ॥१८२५॥

सोमस - सहस्तर्याणि, पंच - सथा ज्ञोयणाणि पलोक्तं ।

साणं छप्परिहीणं, मंदर - सेलस्स परिमाणं ॥१८२६॥

। १६५०० ।

अर्थ :—मन्दर-पर्वतकी इन छह परिधियोंमेंसे प्रत्येक परिधिका प्रमाण सोलह हजार पाँचसी योजन है ॥१८२६॥

सातवीं परिधिमें ग्यारह वन—

ससामया<sup>२</sup> तप्परिही, जाणाविह-तव-गणेहि परियरिया<sup>३</sup> ।

एककारस - भेय - बुदां, बाहिरवो भगमि तवमेवे<sup>४</sup> ॥१८२७॥

१. द. व. क. ज. य. ठ. मूलदा । २. द. व. हरिवालमयी । ३. द. व. क. ज. य. ठ. तसमया ।

४. द. व. क. ज. य. ठ. तवमेव ।

अर्थ :—उस पर्वतकी सातवीं परिधि नाना प्रकारके वृक्ष-समूहोंसे व्याप्त है और बाहरसे ग्यारह प्रकारकी है । मैं उन भेदोंको कहता हूँ ॥१८२७॥

णामेण भद्रसालं, मल्लसुत्तर - शैव - शाग - रमसाङ्गं ।

मूदारमरुषं पञ्चम - मेदाहं भद्रसाल - षष्ठे ॥१८२८॥

अर्थ :—भद्रसालवनमें नामसे भद्रसाल, मानुषोत्तर, देवदमरा, नागदमरा और भूतदमरा ये पाँच वन हैं ॥१८२८॥

जंघण - पट्टकीणसुं, जंघणमुज्ज्वलं च सोमजसं ।

उज्जसोमजसं पङ्क, उज्जपङ्क - वज्राणि द्वौ - द्वौ वृ ॥१८२९॥

अर्थ :—नन्दनादिक वनोंमें नन्वन और उपनन्दन, सोमजस और उपसोमजस तथा पाण्डुक और उपपाण्डुक इसप्रकार दो-दो वन हैं ॥१८२९॥

मेरुके मूलभागादिककी वन्यादि-रूपता—

सो मूले वज्रजम्बो, एक - सहस्त्रं च ज्योयण-प्रमाणो ।

मऊके वर - रमजम्बो, इगिसङ्घि - सहस्त्र - परिमाणो ॥१८३०॥

। १००० । ६१००० ।

उज्जरिष्मि कंथजम्बो, अङ्गुलीस-सहस्त्र-ज्योयणानं पि ।

संवर - सैलस्त्र - सिरै, पङ्क - वनं गगम रमचिज्जं ॥१८३१॥

। ३५००० ।

अर्थ :—वह सुमेरुपर्वत मूलमें एक हजार ( १००० ) योजन प्रमाण वज्रजम्ब, मध्यमें एकसठ हजार ( ६१००० ) योजन प्रमाण उत्तम रत्नजम्ब और ऊपर अङ्गुलीस हजार ( ३५००० ) योजन - प्रमाण स्वर्णजम्ब है । इस मन्दर - पर्वतके शीश पर रमणीय पाण्डु नामक वन है ॥१८३०-१८३१॥

येह सम्बन्धी चार वन—

सोमजसं गगम वनं सान्पवेसेसु रांवरणं तह य ।

तत्थ चउत्थं वेदुवि, मूमीए भद्रसाल - षष्ठं ॥१८३२॥



अर्थ :—सौमनस तथा नन्दनयन मेरु-पर्वतके सानुप्रदेशोंमें और चौथा भद्रसालवन भूमि पर स्थित है ॥१८३२॥

मेरु-शिखरका विस्तार एवं परिधि—

जोयण - सहस्त्रमेवकं, मेरुगिरिबस्स सिहर - वित्थारं ।

एकस्तोस - सयाणि, वासट्ठी समहिमा य तप्परिही ॥१८३३॥

। १००० । ३१६३ ।

अर्थ :—मेरु महापर्वतके शिखरका विस्तार एक हजार ( १००० ) योजन और उसकी परिधि तीन हजार एकसौ वासठ योजनसे कुछ अधिक ( ३१६३.३३३ योजन ) प्रमाण है ॥१८३३॥

मेरुशिखरस्थ पाण्डुक वनका वर्णन—

पंडु - वणे अहरम्मा, समंतथो होवि दिव्य - तट - वेदी ।

चरिअट्टालय<sup>१</sup>-विडला, पाणाविह-घय-वडेहि<sup>२</sup> संजुसा ॥१८३४॥

अर्थ :—मेरुशिखरके चारों ओर का यह वन बहुत ही सुन्दर है जिसमें विविध और नाना प्रकारकी ध्वजा-पताकाओंसे संयुक्त अतिरमणीय दिव्य तट-वेदी है ॥१८३४॥

तीए तोरणवारे, जम्भस - कवाडा हवन्ति वज्जमया ।

विविह-वर-रयण-सचिवा, अकट्ठिमा निरुवमायारा ॥१८३५॥

अर्थ :—उस वेदीके तोरण-द्वारपर नाना प्रकारके उत्तम रत्नोंसे जड़ित, अनुपम आकार-वाले वज्रमयी अकृत्रिम युगल-कपाट ( किवाड़ ) हैं ॥१८३५॥

धुवन्त - घय - वडाया, रयणमया गोउराण पासावा ।

सुर-किण्णर-मिहुण-बुवा, चरिहिण<sup>३</sup>-पहुवोहि विविह वण-संठा ॥१८३६॥

अर्थ :—( पाण्डुक वनमें ) कहराती हुई ध्वजा-पताकाओंसे युक्त गोपुरोंके रत्नमय प्रसाद सुर-किण्वर युगलोंसे युक्त हैं तथा मयूरादि पक्षियों सहित अनेक वन-संघ है ॥१८३६॥

उज्जेहो वे कोसा, वेदीए पण - सयाणि वंडार्ण ।

वित्थारो भुवमसय - विन्ध्य - संभाय<sup>४</sup> - जणणीए ॥१८३७॥

। को २ । ४५०० ।

१. द. घ. क. ज. घ. चरिअट्टालय । २. व. वडेहि । ३. व. चरिहिण, क. ज. घ. ठ. चरिहिण ।

४. क. सुताय, उ. ज. घ. ठ. सताय ।

अर्थ :—भुवनत्रयको विस्मित और लुब्ध करने वाली इस वेदोकी ऊँचाई दो कोस और विस्तार पाँचसौ ( ५०० ) धनुष प्रमाण है ॥१८३७॥

तोए<sup>१</sup> मणिभूमभागे, पंडू<sup>२</sup> नामेण विव्व - वण - संडो ।

सेलस्त<sup>३</sup> चूलियाए, समंतको<sup>४</sup> दिण्ण - परिवेडो ॥१८३८॥

अर्थ :—उस वेदीके मध्यभागमें पर्वतकी चूलिकाको चारों ओरसे घेरा खाले हुए पाण्डु नामक दिव्य वनखण्ड है ॥१८३८॥

कप्पूर-कव्व-वउरा, तमाल-हिताल-ताल-कयलि-जुदा ।

लवली<sup>५</sup> - लवंग - सलिवा-दाडिम-पनसेहि<sup>६</sup> संखण्णो ॥१८३९॥

सयवसि - मल्लि - साला - चंपय-भारंग-मातुलिगेहि ।

पुण्णाय - नाय - कुञ्जय - असोय-पहुवीहि रमणिज्जा ॥१८४०॥

कोइल-कलयल-भरिदा, मोरायं विविह-कीडणोहि जुदा ।

सुक<sup>७</sup>-रव - सदा - इण्णा, सेखर-सुर-मिहुण-कीडयरा ॥१८४१॥

अर्थ :—( ये पाण्डु नामक वनखण्ड ) प्रचुर कपूर वृक्षोंसे संयुक्त, तमाल, हिताल, ताल और कदली वृक्षोंसे युक्त, लवली एवं लवङ्गसे सुशोभित, दाडिम तथा पनसवृक्षोंसे आच्छादित, सप्तपत्री ( सप्तच्छद ), मल्लि, साल, चम्पक, नारङ्ग, मातुलिङ्ग, पुन्नाग, नाग, कुञ्जक और अलोक आदि वृक्षोंसे रमणीय, कीयलोंके कलकल शब्दसे भरे हुए मयूरोंकी विविध क्रीड़ाओंसे युक्त, तोतोंके शब्दोंसे शब्दायमान और विद्याधर एवं देवयुगलोंकी क्रीड़ाके स्थल है ॥१८३९-१८४१॥

पाण्डुक शिलाका वर्णन—

पंडू<sup>८</sup>-वणभंतरए, ईसाण - दिसाए होवि<sup>९</sup> पंडुसिला ।

तट<sup>१०</sup>-वण - वेदी - जुता, अट्ठे<sup>११</sup> - सरिण्ण - संठाणा ॥१८४२॥

अर्थ :—पाण्डुवनके भीतर ( वनखण्डकी ) ईशान दिशामें तट-वनवेदीसे संयुक्त और अर्ध-चन्द्र सदृश आकारवाली पाण्डुकशिला है ॥१८४२॥

१. क. ज. घ. तीसए । २. द. ब. क. ख. ग. ठ. लवली । ३. द. ब. ज. य. पनसेहि, क. ठ. पनसेहि । ४. द. ज. य. ठ. संखण्णो, क. संखण्णी । ५. क. ज. य. ठ. जुदा । ६. द. ब. क. ठ. सुरकरिवर-सदृशणो । ७. द. ब. उ. पंडुए, क. पंडुएण होवि पंडुसिला, ज. ब. पंडुएण भरतरवेदाहेण पंडुसिला । ८. द. ब. उ. होवे । ९. क. ज. य. उ. तव ।

पुष्पावरेषु योजन - सव - बीहा दक्षिणोत्तरसेसु ।

पञ्चासा बहुमज्जे, कम - हाणी लीए उभय - पासेसु ॥१८४३॥

अर्थ :—( यह पाण्डुक सिला ) पूर्व-पश्चिममें सी योजन लम्बी और दक्षिणोत्तर दिशा  
गत बहु-मध्यभागमें पचास योजन विस्तार सहित है । ( अर्धचन्द्राकार होनेसे ) यह अपने मध्य भागसे  
दोनों पादलोंकी ओर क्रमशः हानि को प्राप्त हुई है ॥१८४३॥

योजन - अट्ठुच्चेहो<sup>१</sup>, सम्बत्थं होवि<sup>२</sup> कणयमहया सा ।

सम-बहुता उवरिम्मि य, वन - बेबी - पट्टदि - संजुत्ता ॥१८४४॥

अर्थ :—सर्वत्र स्वर्णमयी वह पाण्डुक सिला आठ योजन ऊँची, ऊपर समकृताकार और  
वन-बेदी आदिसे संयुक्त है ॥१८४४॥

पञ्चासासा :— अस्मिन् सी दक्षिणोत्तरागत सी बहुमज्जे

चउ-योजन-उच्चेहो, पण - सय - बीह सवड - विस्थारं ।

सगगायणि - आइरिया, एवं मासंति पंडुसिलं ॥१८४५॥

[ ४ । ५०० । २५० ।

पाठान्तरम् ।

अर्थ :—यह पाण्डुकसिला चार योजन ऊँची, पाँचसी ( ५०० ) योजन लम्बी और इससे  
अर्ध ( २५० ) योजन प्रमाण विस्तार युक्त है । इसप्रकार सगगायणी साधारण निरूपण करते  
हैं ॥१८४५॥

पाठान्तर ।

लीए 'बहुमज्जे-वेसे, 'तु'गं सीहासनं विविह - सोहं ।

सरसमय - तरणि - मंडल - संकास - फुरंत-किरणोद्यं ॥१८४६॥

अर्थ :—पाण्डुक सिलाके बहुमध्य स्थानमें शरत्कालीन सूर्य-मण्डलके समान फैलती हुई  
किरणोंके समूहसे अद्भुत शोभायमान सिंहासन है ॥१८४६॥

सिंहासनस्स बोसुं, पासेसुं विध्व - रयण - रहबाइं ।

भद्रासणाइ निम्भर - फुरंत - वर - किरण-निवहानि ॥१८४७॥

१. द. व. पट्टुच्चेहो, क. अट्ट उच्चेहो । २. द. व. उ. होहि । ३. द. लीर । ४. क. व. क. व.

बहुमज्जे । ५. द. व. क. व. न. तुंगा ।

अर्थ :—सिंहासनके दोनों पाद्वं-भागोंमें अत्यन्त प्रकाशमान उत्तम किरण-समूहसे संयुक्त एवं दिव्य रत्नोंसे रचे गये भद्रासन विद्यमान हैं ॥१८४७॥

पुह पुह पीठ-तयस्स य, उज्जेहा पण - सयाणि कोदंदा ।

तेत्तिय - भेत्तो मूलो, वात्तो सिंहरे अ तत्तद्धं ॥१८४८॥

[ ५०० । ५०० । २५० ।

अर्थ :—तीनों पीठोंकी पृथक्-पृथक् ऊँचाई-चींच सी धनुष है । मूल विस्तार भी इतने ही ( ५०० ) धनुष है तथा शिखर पर पीठोंका विस्तार इससे आधा ( २५० धनुष ) है ॥१८४८॥

धवलाववस - जुसा, ते पीठा पायपीठ - सोहिस्ता ।

मंगस - वज्जेहि जुवा, चामर - घंटा - पयारेहि ॥१८४९॥

अर्थ :—पादपीठोंसे शोभायमान वे पीठ धवल-छत्र एवं चामर घंटा आदि अनेक प्रकारके मङ्गल-द्रव्योंसे संयुक्त हैं ॥१८४९॥

सज्जे पुग्वाहिमुहा, पीठ - वरा तिहुवनस्स विम्भयरा ।

एक्क-मुह - एक्क - जीहो, को सक्कइ वणिणद्धं तारिणि ॥१८५०॥

अर्थ :—पूर्वाभिमुख स्थित वे सब उत्तम पीठ तीनों लोकोंको विस्मित करनेवाले हैं । इन पीठोंका वर्णन करनेमें एक मुख घोर एक जिह्वावाला कौन समर्थ हो सकता है ? ॥१८५०॥

बाल-तीर्थंकरका जन्माभिषेक—

भरहक्खेसे जावं, तित्थयर - कुमारकं गहेव्वणं ।

सक्कप्पहुदी इंदा, गेत्ति जिम्भुदीए विविहाए ॥१८५१॥

अर्थ :—सौधर्मादिक इन्द्र भरतक्षेत्रमें उत्पन्न हुए तीर्थंकर कुमारकी सहस्रकर विविध प्रकारकी विभूतिके साथ ( मेघ पर्वतपर ) ले जाते हैं ॥१८५१॥

मेरु - प्पदाहिणेणं, गच्छिय पंडू - सिसाए उबरिम्मि ।

सक्किथ - सिंहासणए, बइसाविय भत्ति - राएण ॥१८५२॥

अर्थ :—( वे इन्द्र ) मेरु की प्रदक्षिणा करते हुए पाण्डुक क्षिलापर जाकर बीचके सिंहासन पर भक्तिराग पूर्वक ( उन्हें ) बैठाते हैं ॥१८५२॥

सर्वदिक :— अथ दक्षिण दिशि दक्षिण दिशि दक्षिण दिशि दक्षिण दिशि दक्षिण दिशि

दक्षिण - पीछे सकको, ईशान्वी वि उत्तरा - पीछे ।

बहसिय अभिसेयाई, कुब्जति महाबिसोहीए ॥१८५३॥

अर्थ :— सौधमें दक्षिण पीठ पर और ईशान्वी उत्तर पीठ पर बैठकर महती विशुद्धिसे अभिषेक करते हैं ॥१८५३॥

पंडुकंबल गामा, रजवमई सिंह-बिसा-मुहम्मि सिला ।

उत्तर - दक्षिण - बीहा, पुष्पावर - भाग - विस्थिणा ॥१८५४॥

अर्थ :— आग्नेय-दिशामें उत्तर-दक्षिण दीर्घ ( लम्बी ) और पूर्व-पश्चिम भागमें विस्तीर्ण ( चौड़ी ) रजतमयी पाण्डुकम्बला नामक शिला स्थित है ॥१८५४॥

उज्ज्वेह - वास - पट्टी, पंडुसिलाए जहा सहा सोए ।

अवर - विवेह - जिणार्ण, अभिसेयं तत्प कुब्जति ॥१८५५॥

अर्थ :— ऊँचाई एवं विस्तारदिक जिस प्रकार पाण्डुकशिलाका है उसीप्रकार उस ( पाण्डुकम्बला ) शिलाका भी है । इस शिलाके ऊपर इन्द्र मण्डप ( पश्चिम ) विदेहके तीर्थंकरोंका अभिषेक करते हैं ॥१८५५॥

बहिरवि-बिसा-विभाने, रक्तसिला एगम होवि कणयमई ।

पुष्पावरेसु बीहं, वित्यारो दक्षिणुसरे सोए ॥१८५६॥

अर्थ :— नैऋत्य-दिशाभागमें रक्तशिला नामक स्वर्णमयी शिला है, जो पूर्व-पश्चिम दीर्घ और उत्तर-दक्षिण विस्तृत है ॥१८५६॥

पंडुसिला - सारिण्णा, सोए विस्थार - उदय - पट्टीधो ।

ऐरावतय - जिणार्ण, अभिसेयं तत्प कुब्जति ॥१८५७॥

अर्थ :— इसका विस्तार एवं ऊँचाई यदि पाण्डुकशिलाके सदृश है । यहाँ पर इन्द्र ऐरावत क्षेत्रमें उत्पन्न हुए तीर्थंकरोंका अभिषेक करते हैं ॥१८५७॥

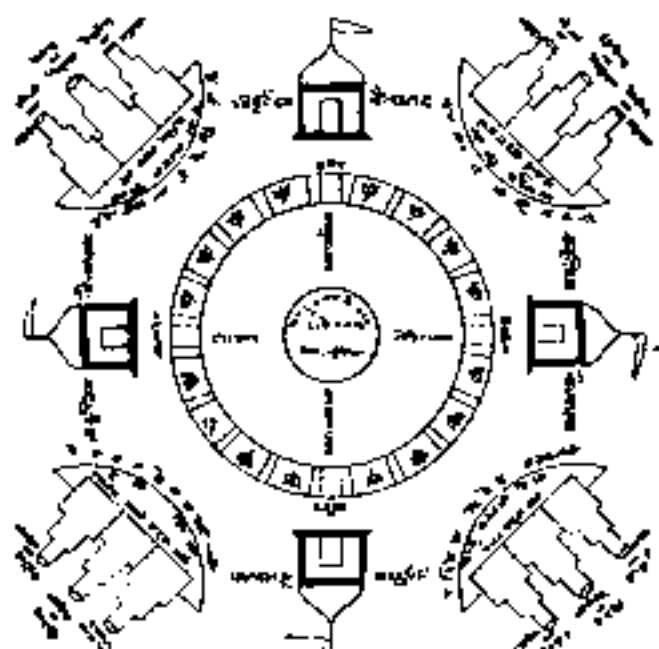
पवण - बिसाए होवि हू, बहिरमई रक्तकम्बला गाम ।

उत्तर - दक्षिण-बीहा, पुष्पावर - भाग - विस्थिणा ॥१८५८॥

अर्थ :— वायव्य दिशामें उत्तर-दक्षिण दीर्घ और पूर्व-पश्चिम भागमें विस्तीर्ण रक्तकम्बला नामक बहिरमयी ( लालमणिमयी ) शिला है ॥१८५८॥

पंडुसिलाग्र समाधा, विष्णुसिलो, पंडुसिलाग्रसहित की पंडुसिलाग्र  
पुष्प - विवेह - जिजाणं, अभिसेयं तस्य कुम्भंति ॥१८५६॥

अर्थ :—इसका विस्तार और ऊँचाई आदिक पाण्डुक-शिलाके सहज है । महीं पर इन्द्र  
पूर्वविदेहमें उत्पन्न हुए तीर्थंकरोंका अभिषेक करते हैं ॥१८५६॥



पाण्डुकवनस्य प्रासादों आदिका वर्णन—

पुष्प-विलास चूलिय - पासो पंडुग - वज्रमि प्रासादो ।  
लोहित - नामो सद्गो, वास - कुबो<sup>१</sup> तीस-<sup>२</sup>कोसार्णि ॥१८६०॥

[ ३० ]

अर्थ :—पाण्डुक-वनमें चूलिकाके पास पूर्व-दिगामें तीस कोस प्रमाण विस्तारवाला लोहित  
नामक वृक्षाकार प्रासाद है ॥१८६०॥

पण्णास<sup>३</sup>-कोस-उदधो, तप्परिहो जउवि-कोस-परिमाणा ।  
विविह - वर - रयण-सचिदो, एणाणाविह-वृष-गंवड्ढो ॥१८६१॥

अर्थ :—विविध उत्तम रत्नोंसे लचित और नाना प्रकारके धूपोंके गन्धसे व्याप्त यह पूर्व-मुख प्रासाद पचास कोस ऊँचा है तथा उसकी परिधि नव्वे ( ६० ) कोस प्रमाण है ॥१८६१॥

पार्श्ववर्तिनः — आगारं भी दुर्धितारुणम् उच्यते

सयनानि आसनाणि, अमलानि गौरजानि भंडगानि ।

द्वार - पास - संवर्णानि, पट्टणानि तत्र चेट्ठन्ति ॥१८६२॥

अर्थ :— ( उस प्रासादमें ) उत्तम पार्श्वभागोंसे युक्त, स्वच्छ, रज-विहीन एवं मृदुल सय्यायें तथा आसन प्रभुर परिमाणमें हैं ॥१८६२॥

तस्मैविर-बहुमण्डके, कीडण-सेसो<sup>१</sup> विविच-रयणमओ ।

सकस्स सोयपालो, सोमो कीडेदि पुण्व - हिस-नाहो ॥१८६३॥

अर्थ :—उस भवनके बहुमण्ड-भागमें अद्भुत रत्नमय एक कीड़ा-पीस है । इस पर्वतपर पूर्व-दिशाका स्वामी सोधर्म-इन्द्रका सोम नामक लोकपाल कीड़ा करता है ॥१८६३॥

आवहु - कोडिमाहि<sup>२</sup>, कप्पज-इस्थोहि परिउडो सोमो ।

अद्विय - पण - पल्लाऊ, रमवि सयंपह - विमाण-यहु ॥१८६४॥

। ३५०००००० । पल्ल ३ ।

अर्थ :—अर्थात् पल्लप्रमाण आयुवाला, स्वयम्प्रभ विमानका स्वामी, सोम नामक लोकपाल साढ़े तीन करोड़ प्रमाण कल्पवासिनी स्त्रियोंसे परिकृत होता हुआ यहाँ रमण करता है ॥१८६४॥

छल्लव्हा छासट्टो, सहस्सया छस्सपाइ छासट्टो ।

सोमस्स विमाणणइ, सयंपहे होंति परिवारा ॥१८६५॥

। ६६६६६६ ।

अर्थ :—स्वयम्प्रभ विमानमें सोम लोकपालके विमानोंका परिवार सह लाख, छयासठ हजार छहसौ छयासठ संख्या प्रमाण है ॥१८६५॥

बाहुरा-वत्थाभरणा, कुसुमा गंधा विमाण - सयणाहुं ।

सोमस्स समग्गाहुं, हवन्ति<sup>३</sup> अविरत्त - वण्णानि ॥१८६६॥

१ व. मडणानि, क. पडणानि, उ. व. पडणानि । २. द. व. क. ज. प. उ. सेसा । ३. द. कोडिमाहि, व. क. ज. प. उ. कोडिमाहि । ४. व. व. उ. हन्ति अविरत्त, क. ज. व. हवन्ति अविरत्त ।

अर्थ :— सोम लोकपालके वाहन, वस्त्र, आभरण, कुसुम, गन्धसूत्र, विमान और शयनादिक सब अत्यन्त ( गहरे ) रक्तवर्णके होते हैं ॥१८६६॥

पंडुग-वज्रस्स भज्जे, चूलिय-वासम्मि वज्जिज-विभागे ।

अंजन - नामो भवजो, वासप्पहुवीहि पुब्बं व ॥१८६७॥

अर्थ :—पाण्डुकवनके मध्यमें चूलिकाके पास दक्षिण दिशाकी ओर अञ्जन नामक भवन है । इसका विस्तारादिक पूर्वोक्त भवनके ही सदृश है ॥१८६७॥

जम-नाम-लोयपासो<sup>१</sup>, अंजन - भवजस्स चेद्ववे भज्जे ।

किष्किंजर-पुद्गुदि-बुवो<sup>२</sup>, अरिष्ट - नामो पद्म विमानस्मि ॥१८६८॥

अर्थ :—अञ्जन भवनके मध्यमें अरिष्ट नामक विमानका प्रभु यम नामक लोकपाल काले रंगकी वस्त्रादिक सामग्री सहित रहता है ॥१८६८॥

अस्सवसा छासद्वी, सहस्सया अस्सयाइ छासद्वी ।

तत्थारिद्ध - विमाणो, होति विमानाणि परिवारा ॥१८६९॥

। ६६६६६६ ।

अर्थ :—वहाँ अरिष्ट विमानके परिवार-विमान छह लाख छयासठ हजार अड़ती छपासठ हैं ॥१८६९॥

आउहु-कोटि-संखा, कप्पज - इत्थोओ णिरुवमायारा ।

होति अमस्स पिपाओ, अट्ठिय-यण - परस्स - आउस्स<sup>३</sup> ॥१८७०॥

३५०००००० । प ३ ।

अर्थ :—साढ़े तीन करोड़ ( ३५०००००० ) संख्या प्रमाण अनुपम आकृतिवाली कल्प-वासिनी देवियों यम नामक लोकपालकी प्रियामें हैं । इस लोकपालकी आयु अघित पाँच ( अड़ई ) पर्य-प्रमाण होती है ॥१८७०॥

पंडुग-वज्रस्स भज्जे, चूलिय - पासम्मि पक्खिम-विसाए ।

हारिहो पासवो वास - प्पहुवीहि पुब्बं वा ॥१८७१॥



अर्थ :—पाण्डुकवनके मध्यमें बूलिकाके पास पश्चिम-दिशामें पूर्वोक्त भवनके सहस्र व्यासदि सहित हारिद नामक प्रासाद है ॥१८७१॥

वरुणो लि लोमपालो, पासावे तस्य चेच्छवे निरुचं ।

किञ्चन - लि - पस्माद्ध, कलपह नामे प्रभु विमानम् ॥१८७२॥

अर्थ :—उस प्रासादमें सदैव कुछ कम तीन पत्य प्रमाण आयुका धारक जलप्रम नामक विमानका प्रभु वरुण नामक लोकपाल रहता है ॥१८७२॥

छत्सवका छासट्टो, सहस्सया छत्सवाणि छासट्टी ।

परिवार - विमाणाह, होंति असप्पह - विमानस्स ॥१८७३॥

। ६६६६६६ ।

अर्थ :—जलप्रम विमानके परिवार-विमान छह लाख छपासठ हजार छहसौ छपासठ संख्या प्रमाण हैं ॥१८७३॥

वाहण-वस्थ-विमूसन-कुसुम-प्पहुवीणि हेम - वण्णाणि ।

वरुणस्स होंति कप्पज - पिपाठ आउट्टु - कोडीओ ॥१८७४॥

। ३३०००००० ।

अर्थ :—वरुण लोकपालके वाहन, वस्त्र, भूषण और कुसुमादिक सभी पदार्थ स्वर्ण ( सुनहले ) वर्णवाले होते हैं । इसके साठे तीन करोड़ ( ३३०००००० ) कल्पवासिनी प्रियायें होती हैं ॥१८७४॥

तत्थन - भउक्के बूलिय - पासम्मि य उच्छरे विसायम्मि ।

पंडुग - नामो निसओ, वास - प्पहुवीहि पुब्बं वा ॥१८७५॥

अर्थ :—उस पाण्डुक वनके मध्यमें बूलिकाके पास उत्तर-विभागमें पूर्वोक्त भवनके सहस्र विस्तारदिवाला पाण्डुक नामक प्रासाद है ॥१८७५॥

तस्सि कुबेर - नामा, पासाव - 'वरम्मि चेच्छवे देवो ।

किञ्चन - ति - पस्माद्ध, सामो कागुप्पहे विमानम्मि ॥१८७६॥

अर्थ :—उस उत्तम प्रासादमें कुछ कम तीन पत्यप्रमाण आयुका धारक एवं वल्लुप्रम विमानका प्रभु कुबेर नामक देव रहता है ॥१८७६॥

छल्लवत्ता छाबट्टो, सहस्सया छस्सयाइ छासट्टो ।

परिवार - विमानाई, वागुपहे वर - विमानम्भि ॥१८७७॥

। ६६६६६६ ।

अर्थ :—वत्सुप्रभ नामक उत्तम विमानके परिवार-विमान छह लाख छपासठ हजार छह सौ छपासठ संख्या प्रमाण हैं ॥१८७७॥

बाह्व-वत्थ-प्यहुवी, ~~अवत्तो~~ उत्तर अ विस्वहिमासुत्त ~~अवत्तो~~ उत्तर अ विस्वहिमासुत्त  
कप्पज - वर - इत्थोओ, पियाओ आउहु - कोडीओ ॥१८७८॥

। ३५०००००० ।

अर्थ :—उत्तर-दिशाके स्वामी उस कुबेरके बाह्व-वत्थात्रिक धवल होते हैं और साढ़े तीन करोड़ ( ३५०००००० ) कल्पज उत्तम स्त्रियाँ उसकी प्रियायें होती हैं ॥१८७८॥

पाण्डुक वनस्य जिनेन्द्र-प्रासाद वर्णन—

तम्बज - मल्ले चूलिय - पुब्ब-दिसाए जिणिद-पासादो ।

उत्तर - दक्षिण - दोहो, कोस - समं पंचहत्तरी उदओ ॥१८७९॥

। कोस १०० । ७५ ।

अर्थ :—उस वनके मध्यमें चूलिकासे पूर्वकी ओर सौ कोस-प्रमाण उत्तर-दक्षिण-दीर्घ और पंचहत्तर कोस-प्रमाण ऊँचा जिनेन्द्र-प्रासाद है ॥१८७९॥

पुब्बावर - भागेसुं, कोसा पण्णास तस्म वित्थारो ।

कोसइ अवगाहो, अकट्ठिसो जिहण - परिहीओ ॥१८८०॥

। को ५० । गा ३ ।

अर्थ :—पचासकोस विस्तृत और अर्धकोस प्रवगाह वाले ये अकृत्रिम एवं अविनाशी ( अनादिनिघन ) जिनेन्द्र-प्रासाद पूर्व-पश्चिम-भागोंमें हैं ॥१८८०॥

एसो पुब्बाहिमुहो, वड - जोयण जेहु-बार-उप्पेहो ।

वो जोयण तब्बासो, वास - समणो पबेसो य ॥१८८१॥

। ४ । २ । २ ।

अर्थ :—यह जिन-भवन पूर्वाभिमुख है । इसके ज्येष्ठ द्वारकी ऊँचाई चार योजन, विस्तार दो योजन और प्रवेश भी विस्तारके समान ही दो योजन प्रमाण है ॥१८८१॥

उत्तर-दक्षिण-भाग, सुस्तय-वाराणि बोष्णि वेदुति ।

तहस - परिमाणानि, वर - तोरण - यंभ - सुसार्णि ॥१८८२॥

१२।१।१।

अर्थ :—उत्तर-दक्षिण-भागमें दो क्षुद्र ( लघु ) द्वार स्थित हैं, जो ज्येष्ठ द्वारकी अपेक्षा अर्धभाग-प्रमाण ऊँचाई आदि सहित और उत्तम तोरण-स्तम्भोंसे युक्त हैं ॥१८८२॥

संसेवु-कुं ब-धवलो, मयि-किरण-कल-प्यणासिय-तमोघो ।

किणवर-थासाव-वरो, तिहुवण - तिलओ सि एामेणं ॥१८८३॥

अर्थ :—शङ्ख, चन्द्रमा एवं कुन्दपुष्पके सहस्र धवल और मणियोंके किरण-कलापसे अन्धकार समूहको नष्ट करनेवाला यह उत्तम जिनेन्द्र-प्रासाद 'त्रिभुवन-तिलक' नामसे विख्यात है ॥१८८३॥

दार-सरिच्छुस्सेहा, वज्ज-कवाडा विचिह - वित्थिम्मा ।

जमत्ता तेसु समुज्जस, मरगय - कक्केयणावि जुवा ॥१८८४॥

अर्थ :—इन द्वारोंमें द्वारोंके सहस्र ऊँचाई वाले, विचित्र एवं विस्तीर्ण सर्व युगल वज्र-कपाट प्रति-उज्ज्वल मरकत तथा कर्कोतनादि मणियोंसे संयुक्त हैं ॥१८८४॥

विम्हयकर - क्वाहि<sup>१</sup>, पाणाविह-सालभंजियाहि जुवा ।

पण - धणण - रयण - रइवा, यंभा <sup>२</sup>तस्स विराजंति ॥१८८५॥

अर्थ :—उस जिनेन्द्रप्रासादमें विस्मय-जनक रूपवाली नानाप्रकारकी सालभञ्जिकाओंसे युक्त और पाँच वर्णोंके रत्नोंसे रचे गये स्तम्भ विराजमान हैं ॥१८८५॥

भिसीओ विविहाओ, जिम्मस-वर-फलिह<sup>३</sup>-रयण-रइवाओ ।

चिसेहि<sup>४</sup> विचिसेहि, विम्हय - जणवेहि जुताओ ॥१८८६॥

अर्थ :—निर्मल एवं उत्तम स्फटिक-रत्नोंसे रची गई विविध प्रकारकी भिसियाँ विचित्र और विस्मय जनक चित्रोंसे युक्त हैं ॥१८८६॥

१. द. व. क. ज. उ. क्वाह, य. क्वावे । २. इ. तरिछे, व. क. ज. य. उ. तरिछे । ३. क. व. उ.

पसिह, प. पविह । ४. द. व. ज. उ. चेत्तेहि ।

संभाष मज्ज - नुमी, समंतदो पंच - वण - रयणमई ।

तणु - मण - गयगानंदण - संवणजी निम्मसा विरजा ॥१८८७॥

अर्थ :—खम्भोंकी मध्यभूमि चारों ओर पांच वर्णोंके रत्नोंसे निर्मित, ऊरीर, मन एवं नेत्रोंको आनन्ददायक, निर्मल और धूलिसे रहित है ॥१८८७॥

बहुविह - विबानएहि, सुसाहल - दाम - चामर ऊर्दोहि ।

वर - रयण - नुसणोहि, संवुत्तो सो जिणिब - पासावो ॥१८८८॥

अर्थ :—बहुविह—बहुविजय—मोसादि मोतियोंकी मोलासी तथा चायोंसे युक्त है एवं उत्तम रत्नोंसे विभूषित बहुत प्रकारके वितानोंसे संयुक्त है ॥१८८८॥

गर्भ-ग्रहमें स्थित देवच्छन्दका वर्णन—

बसहीए गयभगिहे, देवच्छंदो वु - जोयणुखेहो ।

इगि - जोयण - विरधारो, चउ - जोयण-बीह-संवुत्तो ॥१८८९॥

। जो २ । १ । ४ ।

अर्थ :—वसतिकामें गर्भग्रहके भीतर दो योजन ऊँचा, एक योजन विस्तारवाला और चार योजन प्रमाण लम्बाईसे संयुक्त देवच्छन्द है ॥१८८९॥

सोसस - कोसुच्छेहं, समवउरस्सं तवह - विरधारं ।

लोयविजिच्छय - कसा, देवच्छंदं पखेहो ॥१८९०॥

। को १६ । ८ ।

पाठान्तरम् ।

अर्थ :—लोकविनिश्चयके कर्ता देवच्छन्दको समवतुष्कोण, सोलह कोस ऊँचा और दससे आधे ( ८ कोस ) विस्तारसे संयुक्त वतमाते हैं ॥१८९०॥

पाठान्तर ।

संबंत - कुसुम - दामो, पाराखय-मोर-कांठ-वक्का-णिहो ।

मरगय - पयस - वणो, कक्केयण - इंदणीलमओ ॥१८९१॥

सोसहु - कमल - पालो, चामर-घंटा-पयार-रमणिज्जो ।

मोसीर - मलय - चंबल - कासागर - धूव - गंधव्को ॥१८९२॥

त्रिगार-कस्त-वपण-गाणाबिह-वय-वडेहि<sup>१</sup> सोहिहसो ।

देवच्छन्दो रम्भो, जलंत - वर - रयण - बौष - जुवो ॥१८६३॥

अर्थ :—लटकती हुई पुष्पमालाओं सहित, कबूतर एवं मोरके कण्ठगत वर्ण सहित, मरकत एवं प्रवाल जैसे वर्णसे संयुक्त, कर्कत एवं इन्द्रनील मणियोंसे निर्मित, चौंसठ कमल-मालाओंसे शोभायमान, नानाप्रकारके चेंबर एवं घण्टाओंसे रमणीय, गोशोर, मलयचन्दन एवं कालागुरु धूपके गन्धसे व्याप्त, भारी, कलश, दर्पण तथा नाना प्रकारको ध्वजा-पताकाओंसे सुशोभित और देदीप्यमान उत्तम रत्नपीपकोंसे युक्त रमणीय देवच्छन्द है ॥१८६३-१८६३॥

सिंहासन, जिनेन्द्र-प्रतिमाओंका माप, प्रमाण एवं स्वरूप—

अट्ठसर<sup>२</sup> - सय - संज्ञा, जिणवर<sup>३</sup> - पसाव<sup>४</sup> - मणि<sup>५</sup> - भाग<sup>६</sup> -

सिंहासणाणि तुंगा<sup>७</sup>, सपायपीडा य<sup>८</sup> 'कलिहमया ॥१८६४॥

अर्थ :—जिनेन्द्र-आराधकोंके मध्यभागमें पाद-पीठों सहित स्फटिक-मणिमय एकसौ आठ उन्नत सिंहासन हैं ॥१८६४॥

सिंहासणाणि<sup>९</sup> उबरि, जिण-पट्टिमाओ अणाइ-णिहणाओ ।

अट्ठसर - सय - संज्ञा, पण - सय - चावाणि तुंगाओ ॥१८६५॥

अर्थ :—सिंहासनोके ऊपर पीचसी धनुष - प्रमाण ऊंची एकसौ आठ अनादि-निघन जिण-प्रतिमाएँ विराजमान हैं ॥१८६५॥

मिणिब - बीसमणिमय - कुंतल-भूवगविण-सोहाओ ।

कलिहिद<sup>१०</sup> - एोस - मिम्मिब-ववतासिब-गेस-जुयसाओ ॥१८६६॥

वज्जमय - वंतपंती - पहाओ पल्लव-सरिण्ड-अचराओ ।

हीरमय - वर - गहाओ, पउमावण - पाणि-वरणाओ ॥१८६७॥

अट्ठकमहिय - सहस्स - प्यमाण-बंजण-समूह-सहिवाओ ।

वत्तीस - लक्खणोहि, जुसाओ जिणेस - पट्टिमाओ ॥१८६८॥

अर्थ :—ये जिनेन्द्र-प्रतिमाएँ विभिन्न इन्द्रनीलमणिमय कुन्तल तथा धूपकुटियोंके अग्रभागसे गोमाको प्रदान करने वाली, स्फटिकमणि एवं इन्द्रनीलमणिसे निर्मित ववल और कृष्ण नेत्र-युगल

१. द. व. क. व. य. उ. ठ. वडेहि । २. व. व. न. अ. य. उ. ठ. तुंगो । ३. द. क. ज. य. उ. ठ.

पणिह । ४. व. व. क. ज. य. उ. ठ. सिंहासणाणि । ५. व. क. व. य. पणिहिदशी, ठ. उ. पणिहिदशी ।

सहित, वषट्मम दन्तपंक्ति की प्रभासे संयुक्त, पल्लव सदृश मधरोष्ठसे सुशोभित, हीरे सदृश उत्तम नखांसि विभूषित, कमल सदृश आल हाथ-पैरोंसे विविष्ट एक हजार आठ व्यञ्जन-समूहों और बत्तीस लक्षणोंसे युक्त हैं ॥१८६६-१८६८॥

**ओहा-सहस्र - जुग-जुव-घरणिव-सहस्र-कोडि-कोडोओ ।**

**ताजं च वण्णजेसु, सबकाओ भाणुसाण का सत्ती ॥१८६९॥**

**अर्थ :—**जब सहस्र युगलोंसे युक्त घरनेत्रों की सहस्रों, कोड़ाकोड़ी जिह्वाएँ भी उन प्रतिमाओंका समान करनेमें समर्थ नहीं हो सकतीं, तब उनका तो शक्ति ही क्या है ॥१८६९॥

**पत्तेकं सव्वाणं, चउसट्ठी वेव - मिहुरण - पडिमाओ ।**

**वर - चामर - हस्ताओ, सोहंति जिणिव - पडिमाणं ॥१९००॥**

**अर्थ :—**सब जितेन्द्र-प्रतिमाओंमेंसे प्रत्येक प्रतिमाके समीप, हाथमें उत्तम चंदरोंको लिए हुए चौंसठ देवयुगलोंकी प्रतिमाएँ शोभायमान हैं ॥१९००॥

**छत्तसयादि - जुसा, पडियंकासण - समण्णिदा जिण्णं ।**

**समचउरस्साधारा, जयंतु जिणगाह - पडिमाओ ॥१९०१॥**

**अर्थ :—**तीन छत्रादि सहित, पल्लवकासन समन्वित और समचतुरस्र आकारवाली वे जितनाथ प्रतिमाएँ निश्चय जयवन्त हैं ॥१९०१॥

**सेयर - सुररायेहि, भत्तीए एमिय - चरण-जुगलाओ ।**

**बहुविह - विभूसिबाओ, जिण - पडिमाओ नमस्सामि ॥१९०२॥**

**अर्थ :—**जिनके चरण-युगलोंको विद्याधर एवं देवेन्द्र भी भक्तिसे नमस्कार करते हैं, बहुत प्रकारसे विभूषित उन जिन-प्रतिमाओंकी मैं नमस्कार करता हूँ ॥१९०२॥

**ते सब्बे उवयरणा, घंटा - पहुदीओ सह य दिव्वाणि ।**

**मंगल - दब्बाणि पुढं, जिणिव - पासेसु रेहंति ॥१९०३॥**

**अर्थ :—**घंटा आदि वे सब उपकरण तथा दिव्य मङ्गल-द्रव्य पृथक्-पृथक् जितेन्द्र-प्रतिमा के पासमें सुशोभित होते हैं ॥१९०३॥

अष्ट-मङ्गल द्रव्य—

**भिगार-कलस-दप्पण-चामर-घण्ट-वियण-छत्त - सुपड्डा ।**

**अट्ठत्तर - सय - संसा, पत्तेकं मंगला तेसु ॥१९०४॥**

वर्ण :—भूङ्गार, कलश, दर्पण, चंद्र, ध्वजा, नौकना, छत्र और मुप्रतिष्ठ ( ठोना ) के आठ सङ्गल द्रव्य हैं । इनमेंसे वहाँ प्रत्येक एकसौ आठ-एकसौ आठ होते हैं ॥१६०४॥



यक्षादिसे युक्त जितेन्द्रप्रतिमाएं—

सिरिसुव-देवीए तहा', 'सव्वाह-सणककुमार-जक्षणां ।

क्याणि एतेषकं, यडिमा - सर - रयण - रद्वारिणि ॥१६०५॥

वर्ण :—प्रत्येक प्रतिमा उत्तम रत्नादिकोंसे रक्षित है तथा श्रीदेवी, ध्रुतदेवी तथा सर्वालि एवं सजलकुमार यक्षोंकी मूर्तियोंसे युक्त है ॥१६०५॥

देवचक्र एवं ज्येष्ठहार आदिकी शोभा सामग्री—

देवचक्रंरस्त पुरी, गाणाभिह - रयण - कुसुम-मासाओ ।

पुरिदिकिरण - कलाओ, लंमंताओ" बिरायते ॥१६०६॥

१. द. व. क. ज. य. उ. ठ. सहा । २. व. व. क. ज. उ. य. ठ. सव्वाह । ३. क. व. य. उ. रयणो, क. रयणाणि । ४. द. ज. य. पुरिदिकिरणलंमंताओ, क. पुरिदिकिरणलंमंताओ, उ. ठ. पुरिदिकिरण कलाओ । ५. व. व. क. ज. य. उ. उ. लंमंताओ ।

**वर्ण :**—देवसुन्दके सम्मुख नाना प्रकारके रत्नों और पुष्पोंकी भासायें प्रकाशमान किरण-समूह सहित लटकती हुई विराजमान हैं ॥१६०६॥

बचीस-सहस्रारिण, कंचन-रजवेहि<sup>१</sup> निम्मिदा विटला ।

सोहंति पुष्प-कससा, खचिदा वर - रघण - निघरोह<sup>२</sup> ॥१६०७॥

[ ३२००० ।

**वर्ण :**—स्वर्ण एवं चाँदीसे निर्मित और उत्तम रत्नसमूहोंसे खचित बसोत हजार ( ३२००० ) प्रमाण विस्तार एवं पवित्र कलश सुशोभित हैं ॥१६०७॥

चउवीस-सहस्रानि, धूव-घटा कणम-रजव<sup>३</sup>-निम्मिदा ।

कप्पूरागुह - चंदन - पधुवि - समुत्त<sup>४</sup> - धव - चंधइटा ॥१६०८॥

आध्यात्मिक :- आचार्य श्री श्रीविद्यानाथ जी महाराज

[ २४००० ।

**वर्ण :**—कपूर, अगुरु और अन्दनदिकसे उत्पन्न हुई धूपकी गन्धसे अशक्त और स्वर्ण एवं चाँदीसे निर्मित बीसोस हजार ( २४००० ) धूप-घट हैं ॥१६०८॥

भिंगार-रघण-रघण-बुखुव<sup>५</sup>-वर-चमर-चक्क-कय-सोह<sup>६</sup> ।

घंटा - पकाय<sup>७</sup> - पठरं, जिनिव - भवणं<sup>८</sup> निरुवमानं ॥१६०९॥

**वर्ण :**—भारी, रत्नदर्पण, बुद्बुद, उत्तम चमर और चक्के शोभायमान तथा प्रचुर घण्टा और पताकाओंसे युक्त वह जिनेन्द्र मवन अनुपम है ॥१६०९॥

जिन - पासावस्स पुरो, जेह्वा - वारस्स बोसु पासेसु<sup>९</sup> ।

पुह चत्तारि - सहस्सा, संबंते<sup>१०</sup> रघण - मात्ताओ ॥१६१०॥

[ ४००० ।

**वर्ण :**—जिन-प्रासादके सम्मुख ज्येष्ठ द्वारके दोनों पार्श्वभागोंमें पृथक्-पृथक् चार हजार ( ४००० ) रत्नमालाएँ लटकती हैं ॥१६१०॥

१. ब. क. य. रजवेहि, ग. क. ठ. ख. रजवेहि । २. द. रजवि । ३. द. वधुव । ४. व. क. व. ठ.

घ. सोही । ५. द. द. क. ज. प. ख. ठ. विषाध । ६. व. व. क. ख. व. ज. ठ. निरुवमानाओ । ७. व. व. क.

ज. घ. ख. ठ. घण्वंते ।



ताणं पि अंतरेसुं, अकट्टिमाओ 'फुरेस - किरणाओ ।

बारस - सहस्स - संखा, संबते<sup>१</sup> कणय - मालाओ ॥१६११॥

। १२००० ।

अर्थ :— इनके भी बीचमें प्रकाशमान किरणों सहित बारह-हजार अकृत्रिम स्वर्णमालाएँ लटकती हैं ॥१६११॥

सामर्थ्य :— आवायें की सुविधिताएँ की अकृत्रिम

अट्ट - सहस्साणि, धूष - घडा बार - अगाम्भीसुं ।

अट्ट - सहस्साओ, ताण पुरे कणय - मालाओ ॥१६१२॥

। धू ५००० । ५००० । मा ५००० । ५००० ।

अर्थ :— द्वारकी अग्र-भूमियोंमें आठ-आठ हजार धूप-घट और उन धूप-घटोंके आगे आठ-आठ हजार स्वर्ण-मालाएँ हैं ॥१६१२॥

पुह सुस्सय - दारेसुं, ताणहं होंति रयण-मालाओ ।

कणय - मालाओ तह, धूष - घडा कणय - मालाओ ॥१६१३॥

अर्थ :— लघु-द्वारोंमें धूप-घट इससे आधी रत्नमालाएँ, कण्चन-मालाएँ, धूप-घट तथा स्वर्ण-मालाएँ हैं ॥१६१३॥

अठवीस-सहस्साणि, जिहापुर-पुट्टीए कणय - मालाओ ।

ताणं च अंतरेसुं, अट्ट - सहस्साणि रयण - मालाओ ॥१६१४॥

अर्थ :— जिनपुरके पृष्ठ भागमें बीबीस हजार कनक ( स्वर्ण ) मालाएँ और इनके बीचमें आठ हजार रत्नमालाएँ हैं ॥१६१४॥

मुस-मण्डपका वर्णन—

मुह-मंडओ<sup>२</sup> य रऊओ, जिजवर-अवणस्स अण-आगम्मि ।

सोलस - कोसुण्हेहो, सयं च पण्णास - बीह - आसाणि ॥१६१५॥

१. द. क. ज. घ. ङ. पुरं । २. द. व. क. ङ. य. उ. ठ. अणंते । ३. द. व. क. ङ. य. ठ. उ.

कोसझो अवगाढो<sup>१</sup>, नाणा-बर<sup>२</sup>-रयण-स्त्रिघर-निम्मविबो ।

सुम्बत - धय - बडाघो, किं बहुला सो रिणवमानो ॥१६१६॥

अर्थ :—जिनेन्द्र भवनके अग्रभागमें सोलह कोस ऊँचा, सो कोस लम्बा और पचास कोस-प्रमाण विस्तार युक्त रमणीय मुष्मण्डप है, जो आधा कोस अवगाहसे युक्त, नाना प्रकारके उत्तम रत्न-समूहोंसे निर्मित और फहराती हुई ध्वजा-पताकाओं सहित है। बहुत वर्णनसे क्या, वह मण्डप निरूप्य है ॥१६१६-१६१६॥

अवलोकनादिमंडप एवं सभापुरादिका प्रमाण—

मुह-मंडवस्स पुरवो, अवलोपण - मंडधो परम-रम्भो ।

अहिमः सोलस जवघो, कोसा जउसट्ठि वीह<sup>३</sup> अयं - सयं वीह<sup>४</sup> ॥१६१७॥

अर्थ :—मुष्म-मण्डपके प्रागे सोलह कोससे अधिक ऊँचा, सो कोस विस्तृत और सो कोस लम्बा परम-रमणीय अवलोकन-मण्डप है ॥१६१७॥

निय - ओग्गुच्छेह - जुवो, तम्पुरवो चेदुवे अहिट्ठाणो<sup>५</sup> ।

कोसासीवो वासो, तेत्तिय - मेत्तस्स वीहत्तं ॥१६१८॥

[ ८० ]

अर्थ :—उसके आगे अपने योग्य ऊँचाईसे युक्त अधिष्ठान स्थित है। इसका विस्तार अस्सी कोस है और लम्बाई भी इतनी ( ८० कोस ) ही है ॥१६१८॥

तस्स बहु - मरुठ - वेसे, सभापुरं दिव्य-रयण-वर-रइवं ।

अहिवा सोलस जवघो, कोसा जउसट्ठि वीह - वासरणि ॥१६१९॥

[ १६ । ६४ । ६४ ।

अर्थ :—उसके बहुमध्यभागमें उत्तम दिव्य रत्नोंसे रचा गया सभापुर है, जिसकी ऊँचाई सोलह कोससे अधिक और लम्बाई एवं विस्तार चौंसठ कोस प्रमाण है ॥१६१९॥

पीठका वर्णन—

सोहासण-अहासण-वेत्तासण-पट्टवि - विविह - पीठाणि ।

वर - रयण - निम्मिवाणि, सभापुरे परम - रम्माणि ॥१६२०॥

१. द. व. क. ख. घ. ङ. ठ. अगाढो । २. ज. प. बिह । ३. द. व. क. ख. घ. ङ. ठ. वीह ।

४. व. ङ. वीहि । ५. द. व. क. ख. घ. ङ. ठ. अहिट्ठाणो ।

अर्थ :—सभापुरमें उत्तम रत्नोंसे निमित्त परम-रमणीय सिंहासन, भद्रासन और केनासन आदि नाना प्रकारके पीठ हैं ॥१६२०॥

होवि सभापुर - पुरवो, पीठो वासीस-कोस-उच्छो ॥

जाणाविह - रयणमग्गो, उच्छण्णो तस्स वास-उच्छसो ॥१६२१॥

। ४० को ।

अर्थ :—सभापुरके आगे नाना प्रकारके रत्नोंसे निमित्त वासीस ( ४० ) कोस ऊँचा एक पीठ है । इसके विस्तारका उपदेश नष्ट हो गया है ॥१६२१॥

पोडस्स चउ - विसासुं, बगरस वेदोओ होंति भूमियसे ।

वर - गोउराओ सेविय - मेत्ताओ पीठ - उच्छम्मि ॥१६२२॥

अर्थ :—पीठके चारों ओर उत्तम गोपुरोंसे युक्त बारह वेदियाँ पृथिवीतलपर और इतनी ही ( वेदियाँ ) पीठके ऊपर हैं ॥१६२२॥

स्तूपोंका वर्णन—

पीठोवरि बहुमज्जे, सममहो वेट्टुवे रयण - भूहो ।

विस्थारुच्छेहोहि, कमसो कोसाणि मज्जसहो ॥१६२३॥

। को ६४ । ६४ ।

अर्थ :—पीठके ऊपर बहुमध्य-भागमें एक समवृत्त रत्नस्तूप स्थित है, जो कमजः चौंसठ ( ६४ ) कोस विस्तृत और चौंसठ ( ६४ ) कोस ही ऊँचा है ॥१६२३॥

छत्ता-छत्तावि-सहिओ, कणयमओ पणजसंत-मणि-किरणो ।

भूहो अणाइ - जिहणो, जिह-सिद्ध-पडिम-पडिपुण्णो ॥१६२४॥

अर्थ :—छत्रके ऊपर छत्रसे संयुक्त, वेदीप्यमान मणि-किरणोंसे विभूषित और जिन ( जरिहन्त ) एवं सिद्ध प्रतिमाओंसे परिपूर्ण अनादिनिघन स्वर्णमय स्तूप है ॥१६२४॥

तस्स य पुरवो पुरवो, अण-भूहा तस्सरिच्छ - वासाओ ।

ताणं आगे विज्जं, पीठं वेट्टुवि कणयमयं ॥१६२५॥

अर्थ :—इसके आगे-आगे सहस्र विस्तारादि सहित आठ स्तूप हैं । इन स्तूपोंके आगे स्वर्णमय दिव्य आठ पीठ स्थित हैं ॥१६२५॥

तं हंवायामेहि<sup>१</sup>, बोणिण सया ओयणाणि पण्णासा ।

पीडस्स<sup>२</sup> उवयमाणो, उवएसो अम्ह उव्वण्णो ॥१६२६॥

। २५० । २५० । ० ।

अर्थ :—इस पीठका विस्तार एवं लम्बाई दो सौ पचास ( २५० ) योजन है । इसकी ऊँचाईके प्रमाणका उपदेश हमारे लिए नष्ट हो गया है ॥१६२६॥

पीडस्स<sup>३</sup> पेड - वितासु<sup>४</sup>, बारस-वेवाओ<sup>५</sup> हाति श्रीमयस ।

वर - गोउराओ<sup>६</sup> सेलिय - सेलियो पीड - उव्वम्मि ॥१६२७॥

अर्थ :—पीठके चारों ओर उत्तम गोपुरोंसे युक्त बारह वेदियाँ भूमितलपर और इतनी ही ( वेदियाँ ) पीठके ऊपर हैं ॥१६२७॥

चैत्यवृक्षका वर्णन—

पीडस्सुवरिम<sup>७</sup> - भागे, सोलस-<sup>८</sup>गम्बूदिमेल - उव्वेहो ।

सिद्धांतो<sup>९</sup> शासेणं, पेत्त - कुम्भो विव्व - वर - तेओ ॥१६२८॥

। को १६ ।

अर्थ :—पीठके उपरिम भागपर सोलह कोस प्रमाण ऊँचा दिव्य उत्तम तेजको धारण करने वाला सिद्धार्थ नामक चैत्यवृक्ष है ॥१६२८॥

संधुव्वेहो<sup>१०</sup> कोसो, चशारो बहुसमेक - <sup>११</sup>गम्बूवी ।

बारस - कोसा साहा - बीहत्त<sup>१२</sup> पेय विव्वत्तं ॥१६२९॥

। को ४ । १ । १२ । १२ ।

अर्थ :—चैत्यवृक्षके स्कन्धकी ऊँचाई चार कोस, बाह्य एक कोस और शाखाओंकी लम्बाई बारह कोस तथा उनका परस्पर अन्तराल भी बारह कोस प्रमाण है ॥१६२९॥

इग्गि - सक्कं<sup>१३</sup> जालोत्तं, सहस्सया इग्गि-सयं च बीस-जुवं ।

तस्स परिवार - सक्का, पीडोवरि तप्पमाण - धरा<sup>१४</sup> ॥१६३०॥

। १४० । १२० ।

१. व. क. ज. य. उ. हंवा यामेहि, उ. कडा यामेहि । २. व. व. क. ज. य. उ. उ. उवयमाणो ।

३. व. व. क. ज. य. उ. उ. पीडोवरिम । ४. व. व. क. ज. य. उ. उ. गम्मादि । ५. व. क. ज.

य. उ. उ. संधुव्वेहो । ६. व. व. क. ज. य. उ. गम्मादी । ७. व. व. क. ज. य. उ. उ. वरो ।

अर्थः—पीठके ऊपर इसी प्रमाणको धारण करने वाले एक लाख चालीस हजार एकसी बीस ( १४०१२० ) इसके परिवार-वृक्ष है ॥१६३०॥

विविह-धर-रयण-साहा<sup>१</sup>, मरगय-पशा य पडमराय-फला ।

आभीयर - रजवमया - कुसुम - जुवा सयल - कालं ते ॥१६३१॥

अर्थः—ये ( वृक्ष ) विविध प्रकारके उत्तम रत्नोंसे निर्मित शाखाओं, मरकतमणिमय-पत्तों, पद्मरागमणिमय फलों और स्वर्ण एवं चांदीसे निर्मित पुष्पोंसे सदैव संयुक्त रहते हैं ॥१६३१॥

सम्भे अणाह-णिहणा, पृथ्विमया विन्ध-वेरा-वर-रक्खा ।

जोडुप्पारी - सियणि, कारण - भूवा सद्धं हवन्ति ॥१६३२॥

अर्थः—ये सब उत्तम दिव्य चंद्रयवृक्ष अनादि-निघन और पृथिवीरूप होते हुए जीवोंको उत्पत्ति और विनाशके स्वयं कारण होते हैं ॥१६३२॥

इक्खान चउ-विसासुं, परोक्कं विविह-रयण-रइवाओ ।

जिण - सिद्धप्पडिमाओ, जयंतु चत्तारि चत्तारि ॥१६३३॥

अर्थः—( इन वृक्षोंमें ) प्रत्येक वृक्षकी चारों दिशाओंमें विविध प्रकारके रत्नोंसे रचित जिन ( अरिहन्तों ) और सिद्धोंकी चार-चार प्रतिमाएँ ( विराजमान हैं ) । ( ये प्रतिमाएँ ) जयवन्त हों ॥१६३३॥

वेरा - तक्कणं पुरवो, दिव्वं पोडं हुवेदि कजयमयं ।

उज्ज्वेह - बीह - वासा, तस्स य उज्ज्वण - उवएसो ॥१६३४॥

अर्थः—चंद्रयवृक्षोंके सामने स्वर्णमय दिव्य पीठ है । इसकी ऊँचाई, लम्बाई और विस्तारादिकका उपदेश नष्ट हो गया है ॥१६३४॥

पीडस्स चउ - विसासुं, आरस वेदी य होंति भूमियस्से ।

अरियट्टासय - गोउर - हुवार - तोरण - विविहाओ ॥१६३५॥

अर्थः—पीठके चारों ओर भूमितलपर मार्गों, अट्टासिकाओं, गोपुरदारों और तोरणोंसे ( युक्त ) अव्युत्त बारह वेदियाँ हैं ॥१६३५॥

चउ-ओयम-उज्ज्वेहा, उवर्णि पीडस्स कणय-वर-संसा ।

विविह-मणि-रयणा - सधिया, वामर-घंटा-पयार-जुवा ॥१६३६॥

अर्थ :- पीठके ऊपर विविध प्रकारके मणियों एवं रत्नोंसे सज्जित और अनेक प्रकारके ध्वजों एवं ध्वजाओंसे युक्त चार योजन ऊँचे स्वर्णमय तम्बमें हैं ॥१६३६॥

सज्जेसुं धंभेसुं, महाधया विविह - वज्र - रमणिज्जा ।

नामेण महिधया, क्षाण्य - सिंह - सोहिस्ता ॥१६३७॥

अर्थ :- सब छम्भोंके ऊपर अनेक प्रकारके वज्रोंसे रमणीय और शिखररूप तीन छत्रोंसे सुसोमित महेन्द्र नामकी महाध्वजाएँ हैं ॥१६३७॥

पुरवो<sup>१</sup> महाधयाणं, मयर - प्पमुहेहि मुक्क-सलिलाओ ।

वत्तारो वाओओ, कमसुप्पल - कुमुव - छम्माओ ॥१६३८॥

अर्थ :- महाध्वजाओंके सम्मुख मगर आदि जल-अन्तुओंसे रहित, जल-युक्त और कमल, उत्पल एवं कुमुदोंसे व्याप्त चार वापिकाएँ हैं ॥१६३८॥

पण्णास - कोस - वासा, पत्तेयं होति वुण्ण - दिग्घंता ।

दस कोसा अवगाढा, वाओओ वेवियादि - जुत्ताओ ॥१६३९॥

। को ५० । १०० । गा १० ।

अर्थ :- वेदिकादि सहित प्रत्येक वापिका पचास कोस विस्तृत, सो ( १०० ) कोस लम्बी और दस कोस गहरी है ॥१६३९॥

जिनेन्द्र भवन, कौड़ा भवन एवं प्रासादोंका वर्णन—

वादीणं बहुमज्जे, वेट्टवि एक्को जिनिव - पासाओ ।

विम्फुरिद-रमण - किरणो, कि बहुतो सो निदवमानो ॥१६४०॥

अर्थ :- वापियोंके बहुमध्यभागमें प्रकाशमान रत्नकिरणोंवाला एक जिनेन्द्र-प्रासाद स्थित है । बहुत कथनमें क्या ? वह जिनेन्द्र-प्रासाद निरुपम है ॥१६४०॥

तत्तो दहाउ पुरवो, पुण्णुत्तर - वणिज्जेसु भागेसुं ।

पासावा रमणमया, देवाणं कौडणा होति ॥१६४१॥

अर्थ :- पश्चात् वापिकाओंके आगे पूर्व, उत्तर और दक्षिण भागोंमें देवोंके रत्नमय कौड़ा-भवन हैं ॥१६४१॥

पञ्चास-कोस - उदया, कमसो पण्णसीस इ'द - दीहता ।

धूष - घटोहि कुचा, ते निलया विविह - मण्ण - वरा ॥१६४२॥

। को ५० । २५ । २५ ।

अर्थ :- विविध वर्णोंको धारण करने वाले वे भवन पचास कोस ऊँचे हैं, पण्णसीस कोस विस्तृत हैं और पण्णसीस ही कोस लम्बे हैं तथा धूप-घटोंसे संयुक्त हैं ॥१६४२॥

धर - वेदियाहि रम्मा, धर-कंचण-तोरणोहि परिरिया ।

वर - बज्ज - नील - मरगय-विम्मिद-भिशीहि सोहति ॥१६४३॥

अर्थ :- उत्तम वेदिकाघोसे रमणीय और उत्तम स्वर्णमय तोरणोंसे युक्त वे भवन उत्कृष्ट वज्र, नीलमणि और मरकत भण्डियोंसे निर्मित भित्तियोंसे शोभायमान हैं ॥१६४३॥

ताण भवणण पुरवो, तेसिय-माणेण दोष्णि पासावा ।

मुष्मंत - धय - बडाया, फुरंत - धर - रयण-किरकोहा ॥१६४४॥

। ५० । २५ । २५ ।

अर्थ :- उन भवनोंके आगे इतने ही ( ५० कोस ऊँचे, २५ कोस चौड़े और २५ कोस लम्बे ) प्रमाणसे संयुक्त, फहराती हुई ध्वजा-पताकाओं सहित और प्रकाशमान उत्तम रत्नोंके किरण-समूहसे सुशोभित दो प्रासाद हैं ॥१६४४॥

तसो विविस्त-कवा, पासावा दिव्व-रयण विम्मिदिदा ।

कोस-सय-नेस-उदया, कमेण पञ्चास-दीह-विस्मिया ॥१६४५॥

। को १०० । ५० । ५० ।

अर्थ :- इसके आगे दिव्य रत्नोंसे निर्मित सौ कोस ऊँचे और कमलः पचास कोस लम्बे एवं पचास कोस चौड़े अद्भुत सुन्दर प्रासाद हैं ॥१६४५॥

जे जेहू-दार-पुरवो, विव्वमूहा<sup>१</sup> - मंडवाविया कहिदा ।

ते सुल्लसय - दारेसु<sup>२</sup>, हवति मड - प्पमाणोहि ॥१६४६॥

अर्थ :- जेहू द्वारके आगे जो दिव्य मुख-मण्डपादिक कहे जा चुके हैं, उनसे अर्ध प्रमाण वाले ( मुख-मण्डपादिक ) लघु-द्वारोंमें भी हैं ॥१६४६॥

१. द. ज. मुहमंवाविकहिदा ये, ब. मुहमंवाविकहिदा ये, क. ठ. ज. मुहमंवाविकहिदा ते, य. मुहमंवाविकहिदा ते ।

ततो पुरवो बेदी, एवाणि वेठिबूज' सम्पाणि ।

वेठुदि चरियट्टालय - गोउर - दारेहि कणयमई ॥१६४७॥

अर्थ :—इसके आगे मागों, अट्टालिकाओं और गोपुर-द्वारों सहित स्वर्णमयी वेदी इन सबको वेष्टित करके स्थित है ॥१६४७॥

तोए पुरवो चरिया, तुंमेहि कणय - रयण - धंमेहि ।

वेठुंति चउ-बिसासु', वस-स्पयारा धया निरुवमाणा ॥१६४८॥

अर्थ :—इस वेदीके आगे चारों दिशाओंमें स्वर्ण एवं रत्नमय उन्नत शङ्खों सहित दस प्रकारकी श्रेष्ठ धनुषम ध्वजाएँ स्थित हैं ॥१६४८॥

हरि-करि-वसह-जगाहिम-सिहि-ससि-रवि-हंस-कमल-चमक-धया ।

अट्ठुत्तर - सय - संशर, पतेरकं तेत्तिया खुत्ता ॥१६४९॥

अर्थ :—सिंह, हाथी, बैल, गरुड़, मोर, चन्द्र, सूर्य, हंस, कमल और चक्र, इन चिह्नोंसे युक्त ध्वजाओंमेंसे प्रत्येक एकसौ आठ-एकसौ आठ हैं और इतनी ही लघु-ध्वजाएँ भी हैं ॥१६४९॥

चामोयर - वर - बेदी, एवाणि वेठिबूज' वेठुंदि ।

बिम्फुरिब-रयण - किरवा, चउ-गोउर-दार-रमणिज्जा ॥१६५०॥

अर्थ :—प्रकाशमान रत्नकिरणोंसे संयुक्त और चार गोपुरद्वारोंसे रमणीय स्वर्णमय उत्तम बेदी इनको वेष्टित करके स्थित है ॥१६५०॥

जे कोसाणि तुंभा', विरपारेणं धणूणि वंश - सया ।

बिम्फुरिब-धय-बहाया', फलिहमयाणेय - वर - भित्ती ॥१६५१॥

। को २ । द ५०० ।

अर्थ :—दो कोस ऊँची, पचासो धनुष चौड़ी, फहराती हुई ध्वजा-पताकाओं सहित यह बेदी स्फटिक मणिमय अनेक उत्तम भित्तियोंसे संयुक्त है ॥१६५१॥

१. व. ब. क. ठ. ड. वेठिबूज, घ. ज. वेठिबूज । २. व. ब. क. ठ. ड. वेठिबूज, ज. घ. वेठिबूज ।

३. व. ब. क. ज. घ. उ. ठ. तुंभा । ४. द. ज. घ. वय महाया, क. वय बहाया, ब. ठ. ड. वय बहाया ।



कल्पवृक्ष, मानस्तम्भ एवं जिन-भवन आदिका वर्णन—

तोए पुरबो बसबिह - कल्पतक ते समंतदो होंति ।

जिण - भवणेषु तिहुयण - विन्हुय - जणभेहि रुवेहि ॥१६५२॥

अर्थ :—इसके आगे जिन-भवनोमें चारों ओर तीनों लोकोंको प्रावचय उत्पन्न करनेवाले स्वरूपसे संयुक्त वे सब प्रकारके कल्पवृक्ष हैं ॥१६५२॥

गोमेदमणमय - खंषा, कंचणमय-कुसुम-जियर-रमणिकखा ।

मरगयमय-परा - धरा, विद्दुम-वेहसिय-पठमराय-फला ॥१६५३॥

सखे अणाइणिमय, स्फटिकमा, कम्म-पायय - पञ्चमराय

मूलेसु चउ - दिसासु, चरारि जिणिद - पडिमाओ ॥१६५४॥

अर्थ :—सभी कल्पवृक्ष गोमेदमणिमय स्कन्धसे युक्त, खंषमय कुसुम-समूहसे रमणीय, मरकतमणिमय पत्तोंको धारण करनेवाले, मूंगा, नीलमणि एवं पञ्चरागमणिमय फलोंसे संयुक्त, अक्रान्ति और अनादि-निघन हैं। इनके मूलमें चारों ओर चार-चार जिनेन्द्र प्रतिमाएँ हैं ॥१६५३-१६५४॥

तण्फलिह - वोहि-मरुभे, वेहसियमयाणि माणयंभाणि ।

वोहि पडि पत्तेय, विविहा - रुवाणि रेहति ॥१६५५॥

अर्थ :—उन स्फटिकमणिमय वीथियोंके मध्यमेंसे प्रत्येक वीथीके प्रति मदमृत रूपवाले वेदूयंमणिमय मानस्तम्भ सुषोभित हैं ॥१६५५॥

धामर-घंटा-किकिणि-केतण - बहुदीहि उवरि संजुता ।

सोहंति माणयंभा, चउ - वेदी - बार - तोरभेहि जुदा ॥१६५६॥

अर्थ :—चार वेदीद्वारों और तोरणोंसे युक्त ये मानस्तम्भ ऊपर घंटा, घण्टा, किकिणी और छद्वा इत्यादिसे संयुक्त होते हुए गोभ्रायमान होते हैं ॥१६५६॥

ताणं मूले उवरि, जिणिद - पडिमाओ चउदिसं तेषु ।

वर-रयण - जिम्मिवाओ, जयतु जय-जुणिद-वरिवाओ ॥१६५७॥

अर्थ :—इन मानस्तम्भोंके नीचे और ऊपर चारों दिशाओंमें विराजमान, उत्तम रत्नोंसे निभित और जगसे कीर्तित चरित्रसे संयुक्त जिनेन्द्र-प्रतिमाएँ जयवन्त हैं ॥१६५७॥

सर्गश्लोक - अरुणार्ति श्री सुखिनिस्त्रासक श्री भूषणराज

कल्पमहि परिवेष्टिय, सासा बर-रयन-गियर-निम्मबिदा' ।

बेष्टहि चरियहुलय - जाणाबिह - घप - बजाओ बा ॥१६५८॥

अर्थ :- मागी एवं अट्टालिकाओंसे युक्त, नाना प्रकारकी ध्वजा-पताकाओंके घाटोपसे सुशोभित और श्रेष्ठ रत्नसमूहसे निर्मित कोट इस कल्पमहीको वेष्टित करके स्थित है ॥१६५८॥

सुत्तिय-बनिस्त्राज-भागो, पछिस्त्रम-भाघम्मि उत्तर-विभागो ।

एकैकसं जिन - भवनं, पुब्बम्हि व वण्णणोहि जुवं ॥१६५९॥

अर्थ :- सुत्तिकाके दक्षिण, पवित्र और उत्तर-भागमें भी पूर्व-दिशावर्ती जिनभवनके सदृश वर्णनोंसे संयुक्त एक-एक जिन-भवन है ॥१६५९॥

एवं संखेवेण, पंडुग - वण - वण्णजाओ' भणिबाओ ।

विस्तार - वण्णणेतु', सक्को वि ञ सक्को तस्स ॥१६६०॥

अर्थ :- इसप्रकार महीं संक्षेपसे पाण्डुक वनका वर्णन किया है । उसका विस्तारसे वर्णन करनेके लिए तो इन्द्र भी समर्थ नहीं हो सकता है ॥१६६०॥

सौमनस-वनका निरूपण—

पंडुग - वणस्स हेट्ठे, छत्तीस - सहस्स - जोयणा गंतु' ।

सौमनसं नाम वणं, मेरुं परिवेष्टिभूरा चेट्ठेवे ॥१६६१॥

। ३६००० ।

अर्थ :- पाण्डुकवनके नीचे छत्तीस हजार ( ३६००० ) योजन जाकर सौमनस नामक वन मेरुको वेष्टित करके स्थित है ॥१६६१॥

पण-सय-जोयण - वं, चाम्पीयर-वेष्टियाहि परियरियं ।

चउ - गोउर - संबुत्त', सुत्तय - दारेहि रमणिज्जं ॥१६६२॥

अर्थ :- यह सौमनस वन पचासी योजन-प्रमाण विस्तार सहित, स्वर्णमय वेष्टिकाओंसे वेष्टित, चार गोपुरोंसे संयुक्त और लघु-द्वारोंसे रमणीय है ॥१६६२॥

चत्तारि सहस्सार्णि, बाहत्तरि - कुत्त - पु-सय-जोयनमा ।

एक्करसहि<sup>१</sup> हिह - कला, विक्कंभो बाहिरो तस्स ॥१६६३॥

। ४२७२ । १६ ।

अर्थ :—उसका बाह्य-विस्तार चार हजार दोसो बहत्तर योजन और ग्यारहसे भाजित आठ कला ( ४२७२.६६ योजन ) प्रमाण है ॥१६६३॥

तेरस - सहस्स - कुत्ता, पंच सया जोयनानि एक्करसं ।

एक्करसहि<sup>२</sup> हिह - छंसा, सोमनसे परिरय - पमाणं ॥१६६४॥

सोमनसकी परिधिका :- आकार्य की सुविधिलेखानर की यत्न  
। १३५११ । १६ ।

अर्थ :—सोमनस-वनकी परिधिका प्रमाण तेरह हजार पांचसो ग्यारह योजन और ग्यारहसे भाजित छह अंश ( १३५११.६६ योजन ) प्रमाण है ॥१६६४॥

सोमणसं करिकेसर - तमास-हितास-कदली-बकुलेहि<sup>३</sup> ।

लवली - लवंग - चंपय - पणस - प्पहुवीहि संक्खणं ॥१६६५॥

सुक-कोकिल-मधुर-रत्न, मोरादि - विहंगमेहि रमणित्तं ।

लेयर - सुर - मिहृप्पेहि, संक्खणं विविह - वावि - कुर्व ॥१६६६॥

अर्थ :—यह सोमनस वन नागकेसर, तमाल, हितास, कदली, बकुल, लवली, लवङ्ग, चम्पक और कटहन आदि वृक्षोंसे व्याप्त है; तोतों एवं कोयलोंके मधुर शब्दोंसे सुश्रुति है, मोर आदि पक्षियोंसे रमणीय है, विद्याधर युगलों एवं देवयुगलोंसे संकीर्ण है और अनेक वापियोंसे युक्त है ॥१६६५-१६६६॥

तस्मि वणे पुष्पादिसु, मंदर - पासे पुराह चत्तारि ।

वज्जं<sup>४</sup> वज्ज - पद्मसं, सुवण्ण - जामं सुवण्ण - पत्तं ॥१६६७॥

अर्थ :—इस वनमें मन्दर ( सुमेरु ) के पास पूर्वदिक् दिशाओंमें ( कमलः ) वज्र, वज्र-प्रभ, स्वर्ण और त्यर्णप्रभ नामक चार पुर हैं ॥१६६७॥

१. व. हिह कट्ट। २. व. क. ज. य. एक्करसहिहो छंसा, व. व. ठ. एक्करसहि छंसा। ३. व. क. ज. य. ठ. बकुलाहि। ४. व. वज्जं वज्जपद्मसं जमहंस्स सुवण्णल्लाम। व. य. वज्जं वज्जपद्मसं सुवण्णल्लाम। क. व. वज्जं वज्जपद्मसं जमहंस्सल्लाम। व. ठ. वज्जपद्मसं। ठ. वज्ज पद्मसं लाम।

पङ्क - बर - पुराहितो, एवाणि वास-पङ्क्ति-कुगुणाणि ।

वर - रयण - विरङ्गवाहं, कालागद - धूष - सुरहोणि ॥१६६८॥

अर्थ :—ये पुर पाण्डुकवनके पुरोंकी अपेक्षा कुगुने विस्तारादि सहित, उत्तम रत्नोंसे विरचित और कालागद-धूपकी सुगन्धसे व्याप्त हैं ॥१६६८॥

तेज्येय लोयपाला<sup>१</sup>, तेस्तिय - मेसाहि सुंदरोहि जुवा ।

एवाणं मज्जेत्सुं, विविह - विणोदेन कीर्तति ॥१६६९॥

अर्थ :—इन पुरोंके मध्यमें वे ही (पूर्वोक्त) लोकपाल उतनी ही सुन्दरियोंसे युक्त होकर ताना विनोद पूर्वक कीड़ा करते हैं ॥१६६९॥

उत्पलगुत्मा नलिना, उत्पल-जामा य उत्पलज्ज्वला ।

तत्त्वण - अग्नि - विसाए, षोडशरणीओ ह्वंति चत्वारि ॥१६७०॥

अर्थ :—उस वनकी आग्नेय-दिशामें उत्पलगुत्मा, नलिना, उत्पला और उत्पलज्ज्वला नामकी चार वापिकार्यें हैं ॥१६७०॥

पणवीसद्विध - हंदा, हंदाओ कुगुण - जोयणायामा ।

पण - जोयणावगाढा<sup>२</sup>, पस्सेकं ताओ सोहंति ॥१६७१॥

। १५ । २५ । ५ ।

अर्थ :—उनमेंसे प्रत्येक वापिका पञ्चीमके आधे ( १२३ ) योजन प्रमाण विस्तार सहित, विस्तारकी अपेक्षा कुगुनी लम्बाई ( २५ योज ) और पण योजन प्रमाण गहराईसे संयुक्त होती हुई लोभायमान होती है ॥१६७१॥

असयर-अस-अलोहा, वर - वेदी-तोरणोहि परियरिया ।

कहम - रहिवा ताओ, होनाओ हाणि - बह्वीहि ॥१६७२॥

अर्थ :—वे पुष्करिणियाँ जलधर जीवोंसे रहित जनसमूहकी धारण करनेवाली हैं, उत्तम वेदी एवं तोरणोंसे वेष्टित हैं, कीचड़से रहित हैं और हाणि-बूढ़िसे हीन हैं ॥१६७२॥

पौष्करभीरुं मञ्जुं, सक्कस्स ह्वे विहार - वासावो ।

पण - वज - कोसुत्तु गो - सहुस - ह्वे विहारवासावो ॥१६७३॥

[ १२५ । १३५ । ]

अर्थ :—पुष्करिणियोंके बीचमें एकसी पञ्चीस ( १२५ ) कोस ऊँचा घोर हलसे घावे ( ६२३ कोस ) विस्तारवाला सौधर्मइन्द्रका अनुपम विहार-वासाव है ॥१६७३॥

एकं कोसं गढो, सो गिल्लओ विविह-केहु-रमणिज्जो ।

तस्सायाम - पमाणे, उवएसो जत्थि अम्हाणं ॥१६७४॥

अर्थ :—यह प्रासाद एक कोस गहरा और विविध प्रकारकी ध्वजाओंसे रमणीय है उसकी सम्बाद्धिके प्रमाणका उपदेश हमारे पास नहीं है ॥१६७४॥

सौधर्मइन्द्रका सिंहासन और उनके परिवार देवोंके आसन—

सोहासनमहरम्मं, सोहम्मिबस्स भवण मञ्जुम्मि ।

तस्स थ वजसु विसासु, वजपीठा सोयपासाणं ॥१६७५॥

अर्थ :—उस भवनके मध्यमें सौधर्म इन्द्रका अतिरमणीय सिंहासन है और इसके चारों ओर लोकवालोंके चार सिंहासन हैं ॥१६७५॥

सोहम्मिवासणवो, वविसण-भायम्मि कणय-जिम्मिविवं ।

सिहासनं विरायदि, मणि - गल्ल - सच्चिवं पण्डितस्स ॥१६७६॥

अर्थ :—सौधर्म इन्द्रके आसनके दक्षिण-भागमें स्वर्णसे निर्मित घोर मणि-समूहसे शक्ति प्रतीन्द्रका सिंहासन विराजमान है ॥१६७६॥

सिहासखस्स पुरवो, महुत्ताणं होति अण - महिसेणं ।

जत्तोस - सहस्साणि, चियाण पवराह पीठाणं ॥१६७७॥

[ ४ । ३२००० । ]

अर्थ :—सिंहासनके आगे आठ भद्रमहिषियोंके ( आठ ) सिंहासन होते हैं । इसके अतिरिक्त बत्तीस हजार प्रवर पीठ जानना चाहिए ॥१६७७॥

पञ्चमीसाण - बिसासु, पासे सिंहासनस्त चतुससीदी ।

लक्ष्मणि वर - पीडा, हर्षति सामानिय - सुराण ॥१६७८॥

अर्थ :- पञ्चमीसाण की चतुससीदी के सिंहासन के पास पासे बिसासु, पासे सिंहासनस्त चतुससीदी ।

अर्थ :- सिंहासनके पास बायव्य और ईशान दिशामें सामानिक देवोंके चौरासी लाख ( ५४००००० ) उत्तम आसन हैं ॥१६७८॥

तत्सन्नि-बिसा-भागो, बररस - लक्ष्मणि पद्म-परिसाए ।

पीडाणि हर्षति कंचन - रत्नानि रमण - लक्ष्मणि ॥१६७९॥

। १२००००० ।

अर्थ :- उस सिंहासनकी आनेव दिशामें स्वर्ण निर्मित और रत्न-लक्षित बारह लाख ( १२००००० ) आसन प्रथम ( अग्र्यन्तर ) पारिषद देवोंके हैं ॥१६७९॥

बक्सिण-बिसा-विभागो, मज्झिम-परिसामराण पीडाणि ।

रत्नानि रमण, बौद्ध - लक्ष्म - पद्मानि ॥१६८०॥

। १४००००० ।

अर्थ :- दक्षिणदिशा-विभागमें मध्यम पारिषद देवोंके स्वर्ण एवं रत्नमय चौदह लाख ( १४००००० ) प्रमाण आसन हैं ॥१६८०॥

नहरिदि-बिसा-विभागो, बाहिर - परिसामराण पीडाणि ।

कंचन - रमण - मयानि, सोलस - लक्ष्मणि वेदुति ॥१६८१॥

। १६००००० ।

अर्थ :- नैऋत्य दिशा-विभागमें बाह्य पारिषद देवोंके स्वर्ण एवं रत्नमय सोलह लाख ( १६००००० ) प्रमाण आसन स्थित हैं ॥१६८१॥

तत्थ व बिसा - विभागो, तेसोस-सुराण हर्षति तेसोसा ।

वर - पीडाणि निरंतर-कुरंत-मणि-किरण-लियराणि ॥१६८२॥

। ३३ ।

अर्थ :- उसी ( नैऋत्य ) दिशा-विभागमें बायव्यदिशदेवोंके निरन्तर प्रकाशमान मणि-किरण-समूहसे सहित तैंतीस उत्तम आसन हैं ॥१६८२॥

सिंहासनस्त पश्चिम - भागे चेदुंति सप्त पीडाणि ।

सङ्कर्क महतराणि, महतराण्ये ह्ये एवम् ॥१६८३॥

। ७ ।

अर्थ :—सिंहासनके पश्चिमभागमें महतरोंके छह और महतरोंका एक, इसप्रकार सात आसन स्थित हैं ॥१६८३॥

सिंहासनस्त चतसु वि - दितसु चेदुंति द्वाग-रक्ताक्षं ।

चतुरासीवि - सहस्रा, पीडाणि विविक्त - रुदाणि ॥१६८४॥

। ४४००० ।

अर्थ :—सिंहासनके चारों ओर चतुरासक देवोंके अद्भुत सौन्दर्यवाले चौरासी हजार ( ४४००० ) आसन स्थित हैं ॥१६८४॥

सिंहासनमि तस्मि, पुष्पभुजे बहसिहूण सोहम्सो ।

विबिह - विजोदेन सुदो, वेष्मह सेवागदे देवे ॥१६८५॥

अर्थ :—सौधर्महन्त उस पूर्वाभिमुख सिंहासन पर बैठकर विविध प्रकारके विभोदसे युक्त होता हुआ सेवार्थ आये हुए देवोंकी ओर देखता है ॥१६८५॥

‘भिगा’ भिगनिहृक्ता, कञ्जलप्रभा कञ्जलस्यहा तस्थ ।

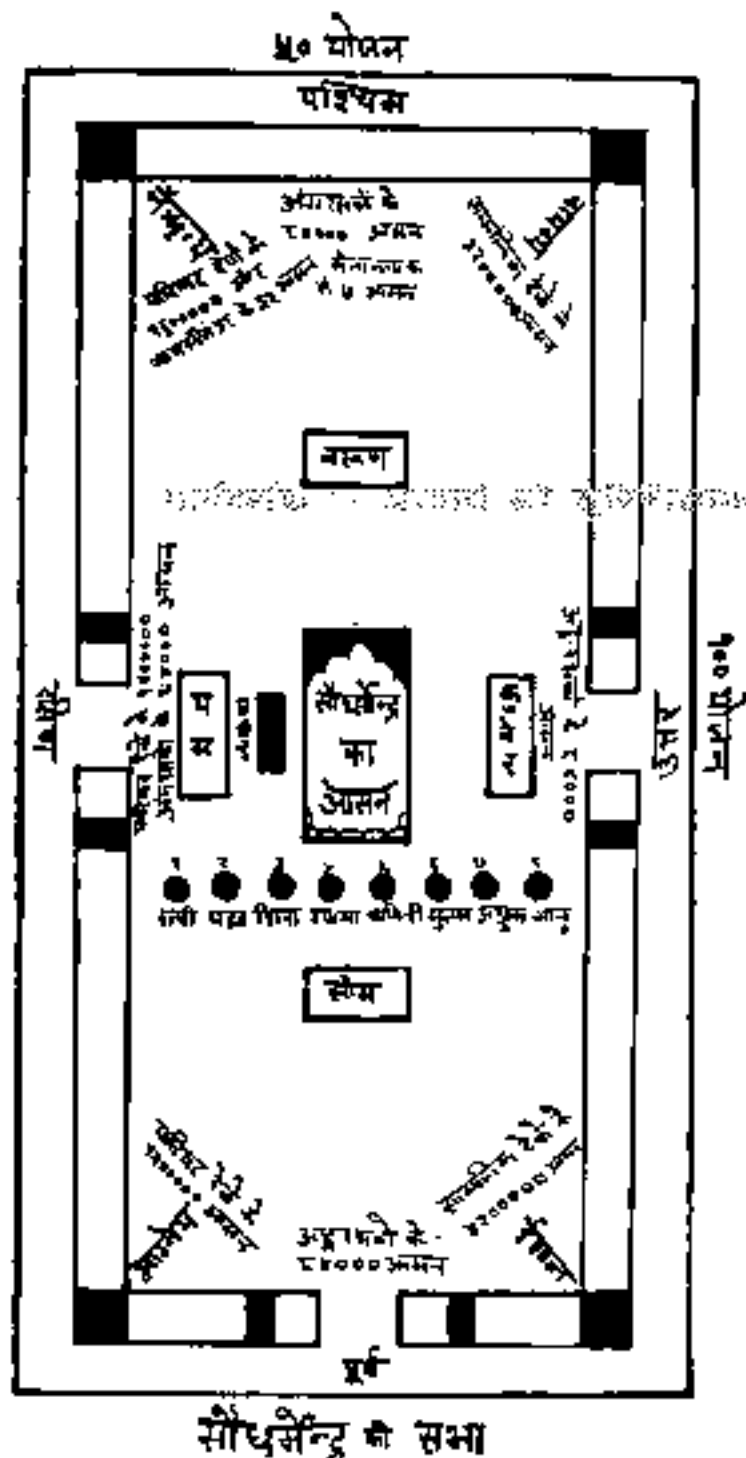
महरिचि - विसा - विभागो, पुष्प - पमाणाओ बावीधो ॥१६८६॥

अर्थ :—( सोमनस वनके भीतर ) नेत्रव्य विषामें भृङ्गा, भृङ्गनिभा, कञ्जला और कञ्जलप्रभा ये चार वापिकाएँ पूर्व वापिकाओंके सदृश प्रमाणादि सहित हैं ॥१६८६॥

चत-बावी - मण्ड - धुरे, सोहम्सो भस्ति - उवागदे देवे ।

वेष्मह अस्या-निरवे, चामर - सुतादि - परियरिओ ॥१६८७॥

अर्थ :—इन चार वापिकाओंके मध्यमें स्थित पुर ( भवन ) में चंबर छादिते वेश्ति सौधर्महन्त भस्तिसे समीप आये हुए एवं आदरमें निरत देवोंको देखता है ॥१६८७॥





ईशानेन्द्रके प्रासाद आदि—

सिरिभद्रा सिरिकंता, सिरिमहिवा मरु-बिसाए सिरिनिलया ।

पुष्करणीओ होंति हु, तेसु मज्झस्मि पासावो ॥१६८८॥

अर्थ :—वायव्य दिशामें श्रीमद्रा, श्रीकान्ता, श्रीमहिता और श्रीनिलया, ये चार पुष्करिणियां हैं । उनके मध्यमें एक प्रासाद है ॥१६८८॥

तस्सि पासाव - वरे, ईसानिओ सुहाणि भुंजेवि ।

बहु - छत्र - चपर - असो, विविध-विणोवेहि कोठंतो ॥१६८९॥

अर्थ :—उस उत्कृष्ट भवनमें बहुत छत्रों एवं चंवरोंसे युक्त ईशानेन्द्र विविध विनोद पूर्वक श्रीदा करता हुआ सुखोंको भोगता है ॥१६८९॥

मार्गदर्शक - पश्चिम-दिशामें नलिना, नलिनगुल्मा, कुमुदा और कुमुदप्रभा, ये चार बापियां

ईसाण - विसा - भागे, तेसु मज्झस्मि पासावो ॥१६९०॥

अर्थ :—ईशान-दिशा-भागमें नलिना, नलिनगुल्मा, कुमुदा और कुमुदप्रभा, ये चार बापियां हैं । उनके मध्यमें एक प्रासाद है ॥१६९०॥

तस्सि पासाव - वरे, ईसानिओ सुहेण कीजेवि ।

गाणा - विणोव - ससो, रज्जालंकार सोहिस्सो ॥१६९१॥

अर्थ :—इस उत्तम भवनमें नानाप्रकारके आनन्दसे युक्त सुन्दर आभूषणोंसे सुशोभित ईशानेन्द्र सुखसे श्रीदा करता है ॥१६९१॥

सोमणसकर्मंतरए, अउसु दिसासु होंति वसतारो ।

जिए - पासावा पंडुग - जिन-भवन-सरिच्छ-वण्णया ॥१६९२॥

पंडुग-अवणाहि तो, वास - प्पहुदीणि तानि दुगणाणि ।

पुच्छं व सयल - वण्ण - विस्वारो तेसु पावट्ठो ॥१६९३॥

अर्थ :—सौमनस वनके भीतर पूर्वदिक् चारों दिशाओंमें चार जिन-मन्दिर हैं । इनका सम्पूर्ण वर्णन पाण्डुक वन स्थित जिन-भवनोंके सहज जानना चाहिए । इतनी ही विवेचता है कि पाण्डुकवन स्थित भवनोंसे इनका क्यास आदि दुगुना है । शेष सम्पूर्ण वर्णनका विस्तार पूर्ववत् ही जानना चाहिए ॥१६९२-१६९३॥

पसेककं जिन्मंविर् सासां बाहिराभ्यं चैदुत्त ।

दो पासेसुं दो - दो, कूडा नामा वि ताण हमे ॥१९६४॥

जंबज-नामा मंवर-जिसह-हिमा रजद-रजम-नामा य ।

सायराचित्तो बज्जो, पुब्बादि - कमेण भद' - कूडा ॥१९६५॥

अर्थ :—प्रत्येक जिनमन्दिर सम्बन्धी कोटके बाहर दोनों पार्श्वभागोंमें जो दो-दो कूट स्थित हैं उनके नाम मन्दर, निषध, हिमवान्, रजत, रुचक, सागरचित्र और वज्र हैं । ये आठ कूट पूर्वादि-क्रमसे कहे गये हैं ॥१९६४-१९६५॥

पञ्चोत्तमभहिय-सथं, बासो' सिहरम्मि बुगुणिवो' मूले ।

मूल - समो उच्छेहो, पसेककं ताण कूडाणं ॥१९६६॥

। १२५ । २५० । २५० ।

अर्थ :—उन कूटोंमेंसे प्रत्येकका विस्तार शिखरपर एकसौ पञ्चोत्त ( १२५ ) योजन और मूलमें इससे दुगुना ( २५० योजन ) है । मूल विस्तारके सदृश ही ऊँचाई भी दोसौ पञ्चोत्त ( २५० ) योजन प्रमाण है ॥१९६६॥

कूडाणं मूलोत्तरि - भागेसुं वेधियाओ दिव्वाओ ।

वर - रयण - विरहवाओ, पुब्बं पिव वज्जम-अवाओ ॥१९६७॥

अर्थ :—कूटोंके मूलमें एवं उपरिम भागोंमें उत्तम रत्नोंसे रचित और पूर्वके सदृश वर्णन सहित दिव्य वेदियाँ हैं ॥१९६७॥

कूडाण उत्तरि - भागे, चउ-वेदी-तोरणोहि रमणिउत्ता ।

पाणाविह - पासावा, चैदुत्ते निरुवमायारा ॥१९६८॥

अर्थ :—कूटोंके उपरिम भागमें चार वेदी-तोरणोंसे रमणीय अनुपम आकार वाले नागा प्रकारके प्रासाद स्थित हैं ॥१९६८॥

पञ्जरस-सपा हंदा, उच्छो हंसे पि कोस-चउ-भागो ।

तद्दुमुचं वीहत्तं, पुह - पुह सज्जाण भवज्जाणं ॥१९६९॥

। १५०० । को ३ । ३ ।

अर्थ :—सब मयनोंकी ऊँचाई पुष्प-पुष्प पन्द्रहसौ ( १५०० ) घनुष है, बिस्तार एक कोसका चतुर्थभाग ( ३ कोस ) है और दीर्घता इससे दुगुनी ( ३ कोस ) प्रमाण है ॥१५६६॥

बासो पञ्च-घण-कोसा, तद्बुगुणो 'मंदिराज उच्छेहो ।

लोपविनिष्कल्प - कस्त, एवं माणे निरूपेदि ॥२०००॥

। १२५ । २५० ।

आदिर्लोकः ... अन्तर्लोकः श्री सुविदितामरः श्री खलराजः

( पाठान्तरम् )

अर्थ :—मन्दिरोंका बिस्तार पाँचके घन ( १२५ कोस ) प्रमाण और ऊँचाई इससे दुगुनी ( २५० कोस ) है । लोकविनिष्कल्पके कर्ता इनके प्रमाणका निरूपण इस प्रकार करते हैं ॥२०००॥

( पाठान्तर )

कुंडेसु वेदीभ्यो, कण्ठ - कुमारीभ्यो दिव्य - रुचाभ्यो ।

मेघंकर - मेघवती, सुमेघा मेघमालिनी तुरिमा ॥२००१॥

तोयंघरा विचिता, पुष्पमाला<sup>२</sup> अग्निदिवा अरिमा ।

पुष्पादिस्तु कुंडेसु, कमेण चेद्भूति एवाभ्यो ॥२००२॥

अर्थ :—पूर्वादिक कूटोपर कमलः मेघकुंजरा, मेघवती, सुमेघा, मेघमालिनी, तोयंघरा, विचिता, पुष्पमाला और अग्निदिवा, इसप्रकार दिव्य रूपवाली ये ( पाठ ) कन्याकुमारी देविता स्थित हैं ॥२००१-२००२॥

बलभद्रकूटका विवेचन—

बलभद्र - नाम - कूटो, ईशरण - बिस्तार सव्यसे होदि ।

ओयण - सध - मुत्तुंगो, मूलमि च तैत्तिभ्यो बासो ॥२००३॥

। १०० । १०० ।

अर्थ :—सोमनस-वनके भीतर ईशान दिशामें एकसौ योजन-प्रमाण ऊँचा और मूलमें इतने ही ( १०० योज ) बिस्तारवाला बलभद्र नामक कूट है ॥२००३॥

पण्णास - जोयणाहुं, सिंहरे कूडस्त होबि बित्थारो ।

मुह - भूमो - मिलिबद्ध, पण्णिम - बित्थार<sup>१</sup>-परिमाणं ॥२००४॥

। जो ५० । ७५ ।

अर्थ :—उस कूटका विस्तार शिखर पर पण्णास ( ५० ) योजन और मध्यमें, मुख एवं भूमिके (  $१०० + ५० = १५०$  ) सम्मिलित विस्तार प्रमाणसे आधा (  $१५० \div २ = ७५$  यो० ) है ॥२००४॥

एव वलमद्रकूट हजारे, सूर्यमण्डल-जोयन - उच्छेहो ।

सेसिय - हं - पमाणी, विजयर - विवं य समवट्टो ॥२००५॥

। १००० । १००० ।

(पाठान्तरम्)

अर्थ :—यह बलमद्रकूट हजार ( १००० ) योजन-प्रमाण ऊँचा और इसने ( १००० योजन ) हो विस्तार-प्रमाण सहित सूर्यमण्डलके सहस्र समवृत्त (गोल) है ॥२००५॥

(पाठान्तर)

सोमणसस्त य वासं, जिस्सेसं हंभिन्न सौ सेलो<sup>२</sup> ।

पंच - सय - जोयणाहुं, तसो हंमेदि आयासं ॥२००६॥

(पाठान्तरम्)

अर्थ :—वह गोल सोमनस-वनके सम्पूर्ण विस्तारको रोककर पुनः पाँचसौ योजन-प्रमाण आकाशको रोकता है ॥२००६॥

(पाठान्तर)

वस - विवं भू - वासो, पंच-सया जोयणाणि मुह-वासो ।

एवं सोयविणिज्जय - सग्गायणिस्स वोसेह ॥२००७॥

। १००० । ५०० ।

(पाठान्तरम्)

अर्थ :—उसका भूविस्तार इसके घनरूप ( १००० योजन ) और मुख-विस्तार पाँचसौ ( ५०० ) योजन प्रमाण है । इसप्रकार ओकविनिज्जय एवं सग्गायणीमें दर्शाया गया है ॥२००७॥

(पाठान्तर)

मृगोवरि सो कृडो, षड्वेदो - तोरणोहि संवृत्तो ।

उद्देश - भागे सत्स य, पासादा विविह - रयनमया ॥२००५॥

सर्व :—यह दूट मूलमें एवं ऊपर चार वेदों-तोरणोंसे संयुक्त है । उसके उपरिम भागपर नानाप्रकारके रत्नमय प्रासाद हैं ॥२००८॥

मंदिर - सेलाहिबई', जलमहो त्याम येतरी रेवो ।

अच्छादि<sup>३</sup> तेस प्रसेसु, बहु - परिवारेहि संजसो ॥२००६॥

अर्थ :—उन पुरोमें बहुत परिवारसे संयुक्त मन्दिर और शैलका अधिपति बलभद्र नामक व्यन्तर बैरा रहती है ॥२००६॥

**सौमनस-वृत्तका विस्तार आदि—**

तिग्निं सहुस्सा वु-सणा, बगहचरि जोयणाणि मद्द-कला ।

एषकरस - हिदा वासो<sup>३</sup>, सोमजसम्भंतरे होवि ॥२०१०॥

आर्थिक : भारत की आर्थिक नीति का मूल

अर्थ :—सोमनसवनके अभ्यन्तर भागमें तीन हजार दोसौ बहत्तर योजन घोर ग्यारहसे माजित आठ कला प्रमाण ( ३२७२  $\frac{1}{2}$  योजन ) विस्तार है ॥३०१०॥

दस्य य सहस्रा ति-सया, उज्ज्वला ज्योतिषि वे-अंसा ।

एककरस<sup>४</sup> - हिवा परिहो, सोमजसभंतरे भागे ॥२०१३॥

1 70346 1 1 1

सूचक :- सोमनाथ-धनके अन्तर्गत भागमें परिष्कृत प्रमाण दस हजार तीन सौ उन्नीस योजना और ग्यारहसे अधिक दो भाग ( १०३४६६६ योजना ) प्रमाण है ॥२०११॥

एवं संक्षेपेण, सोमणसं वर - वरुणं नमः अर्चयामः ।

विस्थार षण्मणासु, तस्स भ सक्केवि सक्को" वि ॥२०१२॥

शब्द :—इसप्रकार सोमनस नामक उत्तम वनका वर्णन मैंने संक्षेपमें किया है। उसका विस्तार पर्यंक वर्णन करनेमें तो हृन्द् भी समर्थ नहीं है ॥२०१२॥

१. ह. व. क. ख. घ. ङ. ट. ईवर्हि । २. व. ब. क. ख. घ. ङ. ट. अर्वाहि । ३. ह. व. क. ख. घ.

प्र. ठ. भासा । ४. इ. व. क. अ. उ. ठ. एककारसहित । ५. व. क. ए. व. लम्बाधो, अं. क. उ. लम्बाकत ।

नन्दन-वनका निर्देश—

पञ्च अ स्याद्भिः अन्तः प्रोक्तम् । सहस्रं जीवन्मा न्तु ।

सोमजसावो हेद्दे, होदि वणं जंवनं नाम ॥२०१३॥

| ६२५०० |

अर्थ :- सोमनरा वनसे वासठ हजार पांचसो ( ६२५०० ) योजन प्रमाण तोंचे जाकर नखन नामक वन है ॥२०१३॥

पण-सय-ज्ञोयण-कंठं, ज्ञात्रीयर - वेदियाति परियरियं<sup>१</sup> ।

चउ - तोरण - दार - ज्ञवं, स्वस्वय-भारैहि गंघर्णं रम्मं ॥२०१४॥

1500

सन्धः—यह रामायणिक नन्दन वन पांचसौ (५००) योजन विस्तृत है; स्वर्णमय वेदिकाओंसे वेष्टित है तथा लय-धारोंके साथ चार तोरणद्वारोंसे संयुक्त है ॥२०१४॥

एष य सहस्त्रा षड-सय-चतुर्विंश लोयनाणि सूत्रभागाः ।

एककरसेहि\* हिदा एवं, गंजन-बाहिरए होवि विषसम्भो ॥२०१५॥

1. 2. 3. 4. 5. 6. 7. 8. 9. 10. 11. 12. 13. 14. 15. 16. 17. 18. 19. 20. 21. 22. 23. 24. 25. 26. 27. 28. 29. 30. 31. 32. 33. 34. 35. 36. 37. 38. 39. 40. 41. 42. 43. 44. 45. 46. 47. 48. 49. 50. 51. 52. 53. 54. 55. 56. 57. 58. 59. 60. 61. 62. 63. 64. 65. 66. 67. 68. 69. 70. 71. 72. 73. 74. 75. 76. 77. 78. 79. 80. 81. 82. 83. 84. 85. 86. 87. 88. 89. 90. 91. 92. 93. 94. 95. 96. 97. 98. 99. 100. 101. 102. 103. 104. 105. 106. 107. 108. 109. 110. 111. 112. 113. 114. 115. 116. 117. 118. 119. 120. 121. 122. 123. 124. 125. 126. 127. 128. 129. 130. 131. 132. 133. 134. 135. 136. 137. 138. 139. 140. 141. 142. 143. 144. 145. 146. 147. 148. 149. 150. 151. 152. 153. 154. 155. 156. 157. 158. 159. 160. 161. 162. 163. 164. 165. 166. 167. 168. 169. 170. 171. 172. 173. 174. 175. 176. 177. 178. 179. 180. 181. 182. 183. 184. 185. 186. 187. 188. 189. 190. 191. 192. 193. 194. 195. 196. 197. 198. 199. 200. 201. 202. 203. 204. 205. 206. 207. 208. 209. 210. 211. 212. 213. 214. 215. 216. 217. 218. 219. 220. 221. 222. 223. 224. 225. 226. 227. 228. 229. 230. 231. 232. 233. 234. 235. 236. 237. 238. 239. 240. 241. 242. 243. 244. 245. 246. 247. 248. 249. 250. 251. 252. 253. 254. 255. 256. 257. 258. 259. 260. 261. 262. 263. 264. 265. 266. 267. 268. 269. 270. 271. 272. 273. 274. 275. 276. 277. 278. 279. 280. 281. 282. 283. 284. 285. 286. 287. 288. 289. 290. 291. 292. 293. 294. 295. 296. 297. 298. 299. 300. 301. 302. 303. 304. 305. 306. 307. 308. 309. 310. 311. 312. 313. 314. 315. 316. 317. 318. 319. 320. 321. 322. 323. 324. 325. 326. 327. 328. 329. 330. 331. 332. 333. 334. 335. 336. 337. 338. 339. 340. 341. 342. 343. 344. 345. 346. 347. 348. 349. 350. 351. 352. 353. 354. 355. 356. 357. 358. 359. 360. 361. 362. 363. 364. 365. 366. 367. 368. 369. 370. 371. 372. 373. 374. 375. 376. 377. 378. 379. 380. 381. 382. 383. 384. 385. 386. 387. 388. 389. 390. 391. 392. 393. 394. 395. 396. 397. 398. 399. 400. 401. 402. 403. 404. 405. 406. 407. 408. 409. 410. 411. 412. 413. 414. 415. 416. 417. 418. 419. 420. 421. 422. 423. 424. 425. 426. 427. 428. 429. 430. 431. 432. 433. 434. 435. 436. 437. 438. 439. 440. 441. 442. 443. 444. 445. 446. 447. 448. 449. 450. 451. 452. 453. 454. 455. 456. 457. 458. 459. 460. 461. 462. 463. 464. 465. 466. 467. 468. 469. 470. 471. 472. 473. 474. 475. 476. 477. 478. 479. 480. 481. 482. 483. 484. 485. 486. 487. 488. 489. 490. 491. 492. 493. 494. 495. 496. 497. 498. 499. 500. 501. 502. 503. 504. 505. 506. 507. 508. 509. 510. 511. 512. 513. 514. 515. 516. 517. 518. 519. 520. 521. 522. 523. 524. 525. 526. 527. 528. 529. 530. 531. 532. 533. 534. 535. 536. 537. 538. 539. 540. 541. 542. 543. 544. 545. 546. 547. 548. 549. 550. 551. 552. 553. 554. 555. 556. 557. 558. 559. 560. 561. 562. 563. 564. 565. 566. 567. 568. 569. 570. 571. 572. 573. 574. 575. 576. 577. 578. 579. 580. 581. 582. 583. 584. 585. 586. 587. 588. 589. 590. 591. 592. 593. 594. 595. 596. 597. 598. 599. 600. 601. 602. 603. 604. 605. 606. 607. 608. 609. 610. 611. 612. 613. 614. 615. 616. 617. 618. 619. 620. 621. 622. 623. 624. 625. 626. 627. 628. 629. 630. 631. 632. 633. 634. 635. 636. 637. 638. 639. 640. 641. 642. 643. 644. 645. 646. 647. 648. 649. 650. 651. 652. 653. 654. 655. 656. 657. 658. 659. 660. 661. 662. 663. 664. 665. 666. 667. 668. 669. 670. 671. 672. 673. 674. 675. 676. 677. 678. 679. 680. 681. 682. 683. 684. 685. 686. 687. 688. 689. 690. 691. 692. 693. 694. 695. 696. 697. 698. 699. 700. 701. 702. 703. 704. 705. 706. 707. 708. 709. 710. 711. 712. 713. 714. 715. 716. 717. 718. 719. 720. 721. 722. 723. 724. 725. 726. 727. 728. 729. 730. 731. 732. 733. 734. 735. 736. 737. 738. 739. 740. 741. 742. 743. 744. 745. 746. 747. 748. 749. 750. 751. 752. 753. 754. 755. 756. 757. 758. 759. 760. 761. 762. 763. 764. 765. 766. 767. 768. 769. 770. 771. 772. 773. 774. 775. 776. 777. 778. 779. 780. 781. 782. 783. 784. 785. 786. 787. 788. 789. 790. 791. 792. 793. 794. 795. 796. 797. 798. 799. 800. 801. 802. 803. 804. 805. 806. 807. 808. 809. 810. 811. 812. 813. 814. 815. 816. 817. 818. 819. 820. 821. 822. 823. 824. 825. 826. 827. 828. 829. 830. 831. 832. 833. 834. 835. 836. 837. 838. 839. 840. 84

सब :—नन्दन वनके वास्तु भागमें नौ हजार बीसौ बीघन योजन और ग्यारहसे भाजित  
सब भाग ( ६६४४३६ योजन ) प्रमाण विस्तार है ॥२०१५॥

एकसोस - सङ्गत्सा, चडस्तया जोयर्णाणि जणसौबो ।

नंदनवनस्य परिहो, बाहिर - भागमि अविदिता ॥२०१६॥

1 3474 1

सर्व :—नन्दन वनके बाह्य भागमें परिधिका प्रमाण इकतीस हजार चारसौ ऊन्यासी ( ३१४७६ ) योजनसे अधिक है ॥२०१६॥

अट्ट - सहस्सा नद-सय-वज्रवज्जा जोयणानि स्रग्भागा ।

एककरस<sup>१</sup> - हिदा बासो, नंदवन - नंदवनो हिदि ॥२०१७॥

। २०१४ । १ ।

अर्थ :—नन्दनवनसे रहित मेरुका विस्तार आठ हजार नौसो चौवन योजन और ग्यारहसे भाजित स्रग् भाग ( २०१४ १/१ योजन ) प्रमाण है ॥२०१७॥

अट्टावीस-सहस्सा, ति-सया सोलस-जुवा य अट्ट - कत्ता ।

एककरस<sup>१</sup> - हिदा परिहो, नंदनवन-विरहिदा अहिया ॥२०१८॥

। २०१६ । १ ।

अर्थ :—नन्दनवनसे रहित मेरुकी परिधि अट्टावीस हजार तीनसो सोलह योजन और ग्यारहसे भाजित आठ कत्ता अधिक ( २०१६ १/१ योजन ) है ॥२०१८॥

नन्दनवनस्य भवन—

मानक - चारणवज्जा, गिलया नंदन-चित्त-गामा य ।

नंदन - नन्दन भंवर - पासे चत्तारि पुग्गादी ॥२०१९॥

अर्थ :—नन्दनवनके भीतर सुमेरुके पास क्रमशः पूर्वदिक् दिशाओंमें मानास, चारणाल, गन्धर्व और चित्र नामक चार भवन भी हैं ॥२०१९॥

दिवसंभायासोहि, नंदन - भवणानि होंति दुग्गुभाणि ।

सोमनास - पुराहितो, पुम्भं पिब वज्जाण - जुवाणि ॥२०२०॥

अर्थ :—पूर्वोक्त वर्णनसे संयुक्त ये नन्दन-भवन विस्तार एवं सम्बाद्धिमें सोमनास-वनके भवनोसे दुगुने हैं ॥२०२०॥

सकस्त लोयपासा<sup>१</sup>, सोम - प्यहुषी वसन्ति एवेसु<sup>२</sup> ।

तेसिय - देवीहि शुवा, बहुविह कीडाव कुणामासा<sup>३</sup> ॥२०२१॥

अर्थ :—इन मन्त्रोंमें उतनी ही बेबियोंसे संयुक्त होकर विविध प्रकारकी कीडाओंको करनेवाले सोममें इनके सोमादिक लोकपात्र निवास करते हैं ॥२०२१॥

नन्दन-वनस्य बलमद्र कूट—

बलमद्र-जाम-कूटो, ईशान - विसाए षडण - वणम्मि ।

तत्सुष्मेह - प्यहुषी, सरिता सोमणस - कूडेणं ॥२०२२॥

अर्थ :—नन्दनवनके भीतर ईशान-विशामें बलमद्र नामक कूट है । इस कूटकी ऊँचाई आदि सोमनस-सम्बन्धी ( बलमद्र ) कूटके सदृश ही है ॥२०२२॥

जिनमन्दिरे - कूटार्ण, बापी - पासाद - देववाणं च ।

नामाई विष्णासो, सोहम्मोसाण - दिस - विभागो य ॥२०२३॥

इय-प्यहुषि शंखण-वणे, सोमणस-वणं च होदि जिस्सेसं ।

जवरि विसैसो एमको, वास - प्यमुहाणि शुगुणाणि ॥२०२४॥

अर्थ :—नन्दनवनमें जिनमन्दिर, कूट, बापी, प्रासाद एवं देवताओंके नाम, विन्धास और सीधम एवं ईशानेन्द्रकी दिशाओंका विभाग इत्यादिक सब सोमनस-वनके ही सदृश है । विशेषता केवल यह है कि उनके विस्तार आदिके प्रमाण दुगुने-दुगुने हैं ॥२०२३-२०२४॥

एवं संसेवेणं, जंवण - जामं वलं मए भणिवं ।

एक-मुह - एक - जीहो, की सकइ बिरवरं भणिवुं ॥२०२५॥

अर्थ :—इसप्रकार संक्षेपसे मैंने नन्दन नामक वनका वर्णन किया है । एक मुख और एक ही जिह्वावाला कौमसा मनुष्य उसका विस्तारसे वर्णन करनेमें समर्थ है ? ( अर्थात् कोई नहीं ) ॥२०२५॥

मद्रशाल-वनका वर्णन—

शंखण - वणाउ हेहुं, पंच - सया जोयणाणि गंतूणं ।

महुसीहि - विपथं, चैट्टहि सिरिभइसाल - वणं ॥२०२६॥

[ ५०० ]



**अर्थ :**—नन्दनवनसे पचासी ( ५०० ) योजन प्रमाण नीचे आकर बटासी विकल्पो सहित धीमद्रक्षालवन स्थित है ॥२०२६॥

**विशेषार्थ :**—सुमेरु सम्बन्धी भद्रक्षालवनको पूर्व-पश्चिम चौड़ाई २२००० योजन है, इसको ८८ से विभक्त करने पर दक्षिणोत्तर चौड़ाई प्राप्त होती है । गायद इसीलिए गाथामें भद्रक्षाल-वनको अठ्ठासी विकल्पोसे युक्त कहा गया है ।

बावीस - सहस्रानि, कमसो पुञ्चावरेसु विधारो ।

तह वनिलणुत्तरेसु, सु - सया पण्णास तम्मि बणे ॥२०२७॥

। २२००० । २२००० । २५० । २५० ।

**अर्थ :**—उस वनका विस्तार पूर्वमें ( २२००० यो० ) पश्चिममें चाईस हजार ( २२००० ) योजन तथा दक्षिण ( २५० यो० ) और उत्तरमें दोसी पचास ( २५० ) योजन प्रमाण है ॥२०२७॥

मेरु-महोदर-पासे, पुण्व - दिसे वनिलणवर - उत्तरए ।

एवमेवकं जिनभवणं होवि चरं भवसास - बणे ॥२०२८॥

**अर्थ :**—भद्रक्षाल-वनमें मेरुपर्वतके पार्श्वमें पूर्व, दक्षिण, पश्चिम और उत्तर दिशामें एक-एक जिन-भवन है ॥२०२८॥

पंडु-वण-पुराहितो, जउणुण - वासस्स उदय - पहुदीओ ।

जिनवर - पासादाणं, पुण्वं पिव वण्णणं सव्वं ॥२०२९॥

**अर्थ :**—इन जिनभवनोंका विस्तार एवं ऊँचाई आदि पाण्डुक-वनके जिन-भवनोंकी अपेक्षा चौगुना है । जेव सम्पूर्ण वर्णन पूर्वके हो सटश है ॥२०२९॥

तम्मि बणे वर-तोरण-सोहिद-वर-वार-णिबहु-रमणिउजा ।

अट्टालयावि - सहिधा, समंततो कण्ठमय - वेदी ॥२०३०॥

**अर्थ :**—उस वनके चारों ओर उत्तम तोरणोंसे शोभित, श्रेष्ठ वार-समूहसे रमणीय एवं अट्टालिकादि सहित स्वर्णमय वेदी है ॥२०३०॥

वेदीए उच्छेहो, जोयणमेवकं समंततो होवि ।

कोवंडाण - सहस्सं, वित्थारो भद्रक्षालम्मि ॥२०३१॥

। जो १ । दंड १००० ।

अर्थ :—भद्रशालवनमें चारों ओर पेदीकी ऊँचाई एक योजन और विस्तार एक हजार ( १००० ) धनुष प्रमाण है ॥२०३१॥

सिरिखंड-अंगर-केसर-मालोय-कपूर-तिलक - कदलीहि ।

मामुक्त - मालती - मालिनी - मालिनीहि ।

कोकिलरभी-रमणिज्जं, सर-वर-पासाव-निबह'-सोहिलं ।

कूडेहि जिनपुरेहि, विराजवे भद्रशाल - वर्ण ॥२०३३॥

अर्थ :—श्रीखण्ड, अंगर, केसर, अशोक, कपूर, तिलक, कदली, अनिमुक्त, मालती और हारिद आदि वृक्षोंसे व्याप्त; पुष्करिणियोंसे रमणीय तथा उत्तम सरोवर एवं भवनोंके समूहसे शोभायमान यह भद्रशालवन कूटों और जिनपुरोंसे शोभायमान है ॥२०३२-२०३३॥

मोर - सुक - कोकिलानं, सारस-हंसाण मधुर-सहृद्वं ।

विबिह - फल - कुसुम-भरिबं, सुरम्मियं भद्रशाल-वर्ण ॥२०३४॥

अर्थ :—यह सुरम्य भद्रशालवन मोर, सुक, कोयल, मारस और हंस आदिके मधुर शब्दोंसे व्याप्त है तथा विविध प्रकारके फल-फूलोंसे परिपूर्ण है ॥२०३४॥

बायोस - सहस्राणि, अट्ठासीवि - हिंसाणि वासमेवकेवके ।

पुष्पावर - भागेसु', 'वज्रम्मि सिरिभद्रशालस्त ॥२०३५॥

अर्थ :—पूर्व-पश्चिम भागोंमेंसे प्रत्येक भागमें श्रीभद्रशालवनका विस्तार अठासीसे विभाज्य बाईस हजार ( २२००० ) योजन प्रमाण है ॥२०३५॥

दोष्णि सया पण्णासा, अट्ठासीवी - विहत्तया दंवा ।

वज्रम्मि - उद्धर - भागे, एवकेवके वज्रस्त भद्रशालम्मि ॥२०३६॥

अर्थ :—दक्षिण-उत्तर भागोंमेंसे प्रत्येक भागमें भद्रशालवनका विस्तार अठासीसे विभक्त ( बाईस हजार योजन अर्थात् ) दोसी पचास ( २५० ) योजन प्रमाण है ॥२०३६॥

गजदन्त-पर्वतोंका वर्णन—

वारण-वंत-सरिच्छा, सेला चचारि मेरु - विवितासु' ।

वक्तार चि पतिद्धो, अणाइ - निहणा महारम्भो ॥२०३७॥

अर्थ :—नेत्रपर्वतकी विदिशाओंमें हाथीदांतके ( धाकार ) सदृश, अन्तर्विनिघ्नन मौल महारमणीय 'वक्षार' ( गजदन्त ) नामसे प्रसिद्ध चार पर्वत हैं ॥२०३७॥

भीलहृ - जिसहृ - पञ्चद - मंदर-सेलाण होंति संलग्ना ।

अंक - सख्यायासा, ते चत्तारो महासेला ॥२०३८॥

अर्थ :—तिरश्चरसे आये हुए चत्तारो महासेला भील, जिन्हें पञ्चद मंदरसे संलग्न हैं ॥२०३८॥

उत्तर-वक्षिण-भागो, मंदर - सेलस्त मङ्ग - वेसम्मि ।

एककेण पवेसेण, एक्केवकं सेण लम्माति ॥२०३९॥

अर्थ :—उनमेंसे प्रत्येक पर्वत उत्तर-वक्षिण-भागमें मन्दर-पर्वतके मध्य देशमें एक-एक प्रदेशसे ( उससे ) संलग्न है ॥२०३९॥

मंदर-अचल-विसावो, सोमएत्तो पाम विज्जुपह-नामो ।

कमसो महागिरी एं, गंजसावणो मालवंतो य ॥२०४०॥

अर्थ :—मन्दर-पर्वतकी आग्नेय दिशासे लेकर क्रमशः सोमनस, विज्जुप्रभ, गन्धमादन और माल्यवान् नामक चार महापर्वत हैं ॥२०४०॥

तामं रूपय-तवणिय-कणयं वेत्थुरिय - सरित्त-वष्णुणं ।

उववण - वेवि - प्पट्टुवो, सव्वं पुण्वोविहं होदि ॥२०४१॥

अर्थ :—क्रमशः चाँदी, तपनीय, कनक और वैभूर्यमयिके सदृश वर्णवाले उन पर्वतोंकी उपवन-वेदी आदिक सब पूर्वोक्त हो है ॥२०४१॥

पंच - सय - ओपणाणि, चित्थारो ताण वंत - सेलाणं ।

सव्वएय होदि सुंदर - कप्पत्तवप्पणा - सोहानो ॥२०४२॥

अर्थ :—सुन्दर कल्पवृक्षोंसे उत्पन्न हुई शोभासे संयुक्त उन दन्तशैलोंका विस्तार सर्वत्र पीचसो योजन प्रमाण है ॥२०४२॥

णील-जिसहृदि-पासे, चत्तारि सयाणि जोयणा होदि ।

तत्तो पवेस - वड्डी, पत्तेवकं मेघ - सेलंतं ॥२०४३॥

पासम्मि मेह-गिरिणो, पंच-सया ओयणाणि उक्तेहो ।

गिरिचम - रुच - वराणं, तारणं वक्षार - सेलाणं ॥२०४४॥

अर्थ :—नील और निवध-पर्वतके पासमें इन ( गजदन्तों ) को ऊँचाई चारसौ योजन-प्रमाण है । इसके आगे मेह-पर्वत पर्यन्त प्रत्येक ( पर्वत ) को प्रत्येक-वृद्धि होती है । इस प्रकार प्रत्येक-वृद्धिके होनेपर अनुपम रूपको धारण करनेवाले उन वक्षार-पर्वतोंकी ऊँचाई मेरुपर्वतके समीप पाँचसौ योजन-प्रमाण हो गई है ॥ २०४३-२०४४॥

गजदन्तोंकी जीवा एवं बाण आविका प्रमाण—

कुगुणम्मि भइसाले, मेह - गिरिवस्त चिबसु<sup>१</sup> चिबसंभं ।

बो-सेल-सक-जीवा, तेवण-सहस्त - ओयणा होति ॥२०४५॥

। ५३००० ।

अर्थ :—[ वक्षार ( गजदन्त ) के विस्तारसे रहित ] भद्रनालवनके विस्तारकी कुगुना करके उसमें मेह-पर्वतके विस्तारकी मिला देनेपर दोनों पर्वतोंके मध्यमें जीवाका प्रमाण तिरपन हजार ( ५३००० ) योजन जाता है ॥२०४५॥  $( २२००० - ५०० ) \times २ + १०००० = ५३००० ।$

अद्विय विवेह-रंभे, पंच - सहस्ताणि तस्य अवचिच्छं ।

बो - वक्षार - गिरीणं, जीवा - बाणस्त परिमाणं ॥२०४६॥

अर्थ :—विवेहके विस्तारकी छायाकर उसमेंसे पाँच हजार कम कर देनेपर वो वक्षार-पर्वतोंकी जीवाके मापका प्रमाण प्राप्त होता है ॥२०४६॥

यथा— $\frac{५३०००}{२} - ५००० = २१५००० ।$

पञ्चोस - सहस्तेहि, अबभहिया ओयणाणि दो लवला ।

उणवोसेहि विहस्ता, बाणस्त पमाण - मुहिद्धं ॥२०४७॥

। २२५००० ।

अर्थ :—उपयुक्त वाणका प्रमाण उन्नीससे भाजित दो लाख पञ्चोस हजार ( २२५००० या २२५४२५ ) योजन कहा गया है ॥२०४७॥

जोयण - सङ्गि - सहस्सा, वसतिर सया य अहुरस-वुत्ता ।

उज्ज्वीस-हरिह-वारस - कत्ताओ वसतिर - वज्जु - पुट्टे ॥२०४८॥

$$\left| \frac{१०४१८१२}{१६} \right|$$

प्रार्थना :—जोयण की कुटुम्बिकायुक्त की प्रार्थना

अर्थ :—वसतिर ( गजदन्तों ) वसंतोंका वज्जुपुट्ट साठ हजार चारसो अठारह योजन और उज्ज्वीससे भाजित वारस कत्ता ( १०४१८१२ योजन ) प्रमाण है ॥२०४८॥

जोयण-सीस-सहस्सा, 'णव-उत्तर दो सया य छक्कागा ।

उज्ज्वीसेहि विहत्ता, तार्ण सरिसायवारण' बीहत्त' ॥२०४९॥

$$\left| \frac{३०२०६६}{१६} \right|$$

अर्थ :—उन सदा आधत वसतिर-वसंतोंकी लम्बाई तीस हजार दोसो नो योजन और उज्ज्वीससे विभक्त छह भाग ( ३०२०६६ योजन ) प्रमाण है ॥२०४९॥

जीवाए अं वार्ण, वज्जुण - वाण - प्यमाणा - पविहत्तं ।

इसु - संवत्त' तार्ण, अकर्मतर - वट्ट - विक्कंभो' ॥२०५०॥

एकत्तरि सहस्सा, इणि-सय-सेवाल - जोयणा य कत्ता ।

जव-गुणिवुज्ज्वीस - हिदा, सग - तीसा वट्ट - विक्कंभे ॥२०५१॥

$$\left| \frac{७११४३३७}{१७१} \right|$$

अर्थ :—जीवाके वर्णमें जोगुणे वाणका भाग देकर लम्बराणिमें वाणके प्रमाणकी मिला देनेपर उनके अन्तर्वृत्त क्षेत्रका विष्कम्भ निकलता है । यह वृत्त-विष्कम्भ इकहत्तर हजार एकसौ तेतासीस योजन और नौसे गुणित उज्ज्वीस ( १७१ ) से भाजित सैतीस कत्ता ( ७११४३३७ योजन ) प्रमाण है ॥२०५०-२०५१॥

$$\text{यथा—} ५३००० \div ( ३३५५००५५ ) + १२२००० = ७११४३३७ \text{ योजन ।}$$

१. द. व. एडिता, क. व. म. ठ. एडितार । २. द. व. क. व. म. ठ. व. सुवितायवाए ।

३. व. क. व. म. ठ. विक्कंभा ।

नील-निसर्गहि - पासे, पञ्चासहस्रहि - सय-सोयणा ।

तसो परेस - बड़ो, पसेकं मेर - सेलतं ॥२०५२॥

[ २५० ]

ताणं च मेर-पासे, पंच - तथा जोयणाणि विस्तारो ।

सोयविनिच्छय - कसा, एवं नियमा शिरुवेदि ॥२०५३॥

[ ५०० ]

( पाठान्तरम् )

अर्थ :—नील और निम्न पर्वतके पास इन ( गजदन्त ) पर्वतोंका विस्तार दोसो पचास ( २५० ) योजन प्रमाण है । इसके आगे मेर पर्वत पर्यन्त प्रत्येकमें प्रदेशवृद्धि होनेसे मेरुके पास उनका विस्तार पाँचसो योजन-प्रमाण हो गया है । लोकविनिश्चयके कर्ता नियमसे इसप्रकार निरूपण करते हैं ॥२०५२-२०५३॥

( पाठान्तर )

सिरिमहुसाह - बेदी, बक्षार - गिरीण अंतर-पमाणं ।

पंच - सय - जोयणाणि, सगायनियम्नि विहिहु ॥२०५४॥

[ ५०० ]

( पाठान्तरम् )

अर्थ :—श्रीभद्रशास्त्र वेदी और बक्षार-गिरियोंका अन्तर पाँचसो ( ५०० ) योजन प्रमाण सगायणीमें कहा गया है ॥२०५४॥

( पाठान्तर )

गजदन्तोंकी नींव एवं उनके कूटोंका निरूपण—

गयहंताणं गाढा, शिय-जिय-उदय-प्यमाण-कड-भागा ।

सोमणस - गिरिवोवरि, वेहुते सस कूडाणि ॥२०५५॥

सिद्धो सोमणसक्खो, वेवकुक्क संगलो विमल - नाम्भो ।

कंचण - वसिहु - कूडा, निसहंता मंवर - प्यहुदी ॥२०५६॥

अर्थ :- गजदन्तोंकी गहराई अपनी-अपनी ऊँचाईके पतुर्पास प्रमाण है। सीमन्त गजदन्तके ऊपर सिद्ध, सीमन्त, देवकुह, मङ्गल, विमल, काञ्चन और बलिष्ठ, ये सात कूट मेखे लेकर निषध पर्वत पर्यन्त स्थित हैं ॥२०५५-२०५६॥

सीमन्त-सेल-उवए<sup>१</sup>, चउ - भजिबे होंति कूड-उवयाणि ।

वित्पारायामेसुं, कूडाण गरिष उवएसो ॥२०५७॥

अर्थ :- सीमन्त गजदन्तकी ऊँचाईमें चारका भाग देनेपर जो लब्ध प्राप्त हो उतनी इन कूटोंकी ऊँचाई है। इन कूटोंके विस्तार और सम्भाईके विषयमें उपदेश नहीं है ॥२०५७॥

भूमिए मुहं<sup>२</sup> बिसेहिय, उवए-हिं वू-मुहाज-सय-बड्डी ।

मुह-सय पण-घण भूमी, उवओ इगि<sup>३</sup>-हीण-कूड-परिसंता ॥२०५८॥

। १०० । १२५ । ६ ।

अर्थ :- भूमिमेंसे मुख कम करके उदयका भाग देनेपर जो लब्ध प्राप्त हो उतना भूमिकी अपेक्षा हानि और मुखकी अपेक्षा वृद्धिका प्रमाण होता है। यहाँ मुखका प्रमाण सौ ( १०० ) योजन, भूमिका पाँचके घन ( १२५ ) योजन और उदय एक कम कूट-संख्या ( ७ - १ = ६ ) प्रमाण है ॥२०५८॥

सय-बड्डीण पमाणां, पणुबोसं ओयणाणि छम्भजिबं ।

भूमि - मुहेसुं<sup>४</sup> हीणाहियम्मि कूडाण उवओहो ॥२०५९॥

२५  
६

अर्थ :- वह सय-वृद्धिका प्रमाण छहसे भाजित पञ्चीस योजन है। इसकी भूमिमेंसे कम करने और मुखमें जोड़ने पर कूटोंकी ऊँचाईका प्रमाण प्राप्त होता है ॥२०५९॥

अहवा इच्छा-मुनिवा-सय-बड्डी लिबि-बिसुद्ध-मुह-मुता ।

कूडाण होइ उवओ, सेसुं<sup>५</sup> पठमस्स पण - बिचं ॥२०६०॥

। १२५ ।

अर्थ :—अथवा, इच्छा राखिसे गुणित क्षय-वृद्धिको भूमिमेंसे कम करने और मुक्तमें मिला देने पर कूटोंकी ऊँचाई प्राप्त हो आती है । इनमेंसे प्रथम कूटकी ऊँचाई पाँचके घन ( १२५ योजन ) प्रमाण है ॥२०६०॥

विद्विपस्त बीस - अक्षं, सयमेकं<sup>१</sup> छम्बिहस्त-पंच-कला ।

सोलस-सहस्रं च सयं, दोष्णि कला तिय-हिदा तद्वजस्त ॥२०६१॥

। १२० । १ । । ११६ । ३ ।

अर्थ :—द्वितीय कूटकी ऊँचाई एकसौ बीस योजन और छहसे विभक्त पाँच कला ( १२०६ योजन ) प्रमाण तथा तृतीय कूटकी ऊँचाई एकसौ सोलह योजन और तीनसे भाजित दो कला ( ११६३ यो० ) प्रमाण है ॥२०६१॥

चतुर्थक :—आचार्य श्री सुब्रह्मण्यस्य श्री यज्ञराज

बारस-अब्भहिय-सयं, ओयणमद्वं च तुरिम - कूडस्त ।

ओयण-ति-भाग-अक्षं, पंचम - कूडस्त अष्ट - सहस्र-सयं ॥२०६२॥

। ११२ । ३ । । १०८ । ३ ।

अर्थ :—चतुर्थ कूटकी ऊँचाई एकसौ साढ़े बारह ( ११२३ ) योजन और पाँचवें कूट की ऊँचाई एकसौ आठ ( १०८३ ) योजन तथा एक योजनके तीसरे भागसे अधिक है ॥२०६२॥

अष्ट-अक्ष-ओयण-सयं, छम्बिहस्ता इगि-कला य छदुस्त ।

एक - सय - ओयणाद्वं, सप्तम - कूडस्त उच्छेद्यो ॥२०६३॥

। १०४ । ३ । १०० ।

अर्थ :—छठे कूटकी ऊँचाई एकसौ बार योजन और छहसे भाजित एक कला ( १०४६ यो० ) प्रमाण तथा सातवें कूटकी ऊँचाई एकसौ ( १०० ) योजन प्रमाण है ॥२०६३॥

सोमनस-आम-गिरिणो, आयामे सग-हिबम्मि अं सद्धं ।

कूडानमंतरालं, तं विप जाएदि पत्तेवर्त्त ॥२०६४॥

अर्थ :—सोमनस नामक पर्वतकी सम्बाईमें सातका भाग देनेपर जो लब्ध आवे उतमा प्रत्येक कूटके अन्तरालका प्रमाण होता है ॥२०६४॥



चत्वारि सहस्राहं, तिष्ठि सप्त जोयणाणि यन्वरता ।

तेत्तीसहिय - सएणं, भाजिव - बासोवि - कत्त - संसा ॥२०६५॥

। ४३१५ । ५३३ ।

अर्थ :—सहस्रनामक चत्वारि सप्त जोयणाणि यन्वरता तेंतीससे भाजित बयासी कत्ता ( ४३१५५५५ योजन ) प्रमाण है ॥२०६५॥

आविम - कूडोवरिमे, जिण-भवणं तस्स वास-उच्छेत्तो ।

बोहं च वण्णनाम्नो, पंडुण - वण - जिणपुर - सरिच्छा ॥२०६६॥

अर्थ :—प्रथम कूटके ऊपर एक जिन-भवन है । उसके विस्तार, ऊँचाई और सम्बन्ध आदिका वर्णन पाण्डुकवन-सम्बन्धी जिनपुरके सदृश है ॥२०६६॥

सेसेसुं कूडेसुं, वेत्तर - वेवान्ण होंति पासादा ।

वेदी-तोरण-जुत्ता, कणयमया रयण - वर - खच्चिदा ॥२०६७॥

अर्थ :—शेष कूटोंपर वेदी एवं तोरण सहित एवं उत्तम रत्नोंसे सजित ऐसे व्यन्तर वेदोंके स्वर्णमय आसाद हैं ॥२०६७॥

कंखण-कूडे शिवसह, सुवच्छ-वेवि<sup>१</sup> स्ति एकक - पत्ताऊ ।

तिरिवच्छ - भित्तवेवी, कूडवरे विमल - गामम्मि ॥२०६८॥

अर्थ :—काञ्चनकूट पर एक पत्थप्रमाण प्रायुसे युक्त सुवत्सादेवी ( सुमित्रा देवी ) और विमलनामक श्रेष्ठ कूटपर श्रीवत्समित्रा देवी निवास करती है ॥२०६८॥

अवसेसेसुं चउसुं, कूडेसुं वाए - वेत्तरा वेवा<sup>१</sup> ।

जिय-कूड-सरिस - गामा, विविह - विणोवेहि कीडंति ॥२०६९॥

अर्थ :—शेष चार कूटोंपर अपने-अपने कूट सदृश नामवाले व्यन्तरदेव विविध प्रकारके विनोद पूर्वक कीड़ा करते हैं ॥२०६९॥

विशुम्भभगजदन्नांके कूटोंका वर्णन —

विज्जुप्पहस्स उव्वरि, एव कूडा होंति शिवमाधारा ।

सिद्धो विज्जुप्पहस्सो, वेवकुरु-पडम-सवण-सत्थिकया ॥२०७०॥

सयउत्थल-सीतोदा, हरि सि लामेहि भुमल-विस्तारा ।

एवाणं उच्छेहो, शिय - सैलुच्छेह - चउ - भागो ॥२०७१॥

अर्थ :—विद्युत्प्रभ पर्वतके ऊपर सिद्ध, विद्युत्प्रभ, देवकुल, पथ, तपन, स्वस्तिक, शतोत्थल ( मतज्वाल ), सीतोदा और हरि, इन नामोंसे त्रैलोक्यमें विख्यात तथा अनुपम आकार-वाले नौ कूट हैं । इन कूटोंकी ऊँचाई अपने पर्वतको ऊँचाईके चतुर्थ भाग प्रमाण है ॥२०७०-२०७१॥

बीहरो वित्तारे, उवएसो तारण संपह पणहु ।

भाविम - कूडुच्छेहो, पणवीस-अव व ओयराण सयं ॥२०७२॥

एकं चिय होवि सयं, अंतिम कूटस्य उवद्वयविभागः ।

उभय - बिसेसे 'अव-हिव-पंचकवी हाणि - वड्डीओ ॥२०७३॥

अर्थ :—उन कूटोंको सम्झाई एवं विस्तार-विषयक उपदेश इस समय नष्ट हो चुका है । इनमेंसे प्रथम कूटकी ऊँचाई एकसौ पच्चीस ( १२५ ) योजन है और अन्तिम कूटकी ऊँचाईका प्रमाण एकसौ ( १०० ) योजन है । प्रथम कूटकी ऊँचाईमेंसे अन्तिम कूटकी ऊँचाई घटाकर शेष पाँचके वर्ग ( १२५ — १०० = २५ ) में आठका भाग देनेसे हानि-वृद्धिका प्रमाण ( ३<sup>१</sup> या ३२ यो० ) निकलता है ॥२०७२-२०७३॥

इच्छाए गुणिवाओ, हाणि-वड्डीओ सिदि-विमुद्धाओ ।

गुह - जुताओ कमसो, कूडाणं होवि उच्छेहो ॥२०७४॥

अर्थ :—इच्छासे गुणित हानि-वृद्धिके प्रमाणको भूमिमेंसे रुध करने अववा मुखमें जोड़ देने पर क्रमछः कूटोंकी ऊँचाई प्राप्त होती है ॥२०७४॥

पणवीसवभहिय - सयं, पमाणमुदओ पहिलए सेसे ।

उवद्वयपणोसु, पणवीसं समवणोजज अट्ट - हिवं ॥२०७५॥

१ १२५ । १२१ । ३ । ११८ । ३ । ११५ । ३ । ११२ । ३ । १०९ । ३ । १०६ । ३ । १०३ । ३ । १०० ।

१०३ । ३ । १०० ।

१. व. व. क. ठ. उ. वि विमावे, व. विमावे । २. व. व. व. वृद्धाणिबही, व. क. ठ. उ. कूडाणुदयो । ३. व. व. व. अवहिव, व. क. उ. ठ. अट्टहिव । ४. व. गुणिवाविम-वड्डीओ सिदि-महाविमुद्धाओ । ठ. व. व. गुणिवाविम वड्डीओ सिदि-महाविमुद्धाओ । ५. गुणिवाविम वड्डीओ सिदि-महाविमुद्धाओ । ६. गुणि वाविम वड्डीओ सिदि-महावसंदाओ ।

**अर्थ :**—प्रथम कूटकी ऊँचाई एकसौ पन्चीस ( १२५ ) योजन प्रमाण है। शेष कूटोंकी ऊँचाई जाननेके लिए उत्तरोत्तर उत्पन्न प्रमाणमेंसे आठसे भाजित पन्चीस ( ३३ ) योजन कम करते जाना चाहिए ॥२०७५॥

**यथा—**प्र० कूटकी १२५ यो०, द्वि० १२१६ यो०, तृ० ११८३ यो०, च० ११५२ यो०, पं० ११२६ यो०, ष० १०९३ यो०, स० १०६३ यो०, अ० १०३२ यो० और नवम कूट की १०० योजन ऊँचाई है।

**विष्णुपह-शाम-गिरियो, आयामे णव-हिबन्मि जं सद्धं ।**

**कूडाणमंतरालं, तं चिय जाएदि एक्केकं ॥२०७६॥**

**अर्थ :**—विष्णुप्रथ नामक पर्वतकी सम्बाद्धिमें नौ ( ९ ) का भाग देनेपर जो लब्ध आवे उसना प्रत्येक कूटके अन्तरालके प्रमाण होता है ॥२०७६॥

**तिप्पि सहुस्सा ति-सया, सुप्पणा जोयणा कल्लजं पि ।**

**एकस्सरि' - अहियसए, अबहिब - एक्कोत्तर - सयाई ॥२०७७॥**

$$\left| \begin{array}{c} ३३५६ \\ १०१ \\ १७१ \end{array} \right|$$

**अर्थ :**—यह अन्तराल-प्रमाण तीन हजार तीन सौ सुप्पण योजन और एकसौ इक्कोत्तरमे भाजित एकसौ एक कला ( ३३५६३३३ यो० ) प्रमाण है ॥२०७७॥

**जिण - भवण - प्पट्टवोणं, सोमणसे पण्णयं थ एद्धस्सि ।**

**शय्वरि विसेसो एसो, वेवोणं अण्ण - जामाणि ॥२०७८॥**

**अर्थ :**—इस पर्वतपर जिन-भवनाविक सोमनस-पर्वतके ही सदृश हैं। विशेष केवल यह है कि यहाँ देवियोंके नाम अन्य हैं ॥२०७८॥

**सोत्तिक - कूडे चेठ्ठवि, वेत्तरवेधो बल ति जामेजं ।**

**कूडम्मि तपण - जामे, वेधो वर - चारिसेण पि ॥२०७९॥**

**अर्थ :**—स्वस्तिक कूटपर बला नामक व्यन्तरदेवी एवं तपनकूटपर चारिवेष्टा नामक उत्तम देवी रहती है ॥२०७९॥

मन्दर-गिरिदो गच्छिष्य, षोडशमद्वं गिरिभिः निज्जुषहे ।

चेद्वेदि गुहा<sup>१</sup> रम्भा, पञ्चद - बासो य आयामा ॥२०८०॥

अर्थ :—मन्दर पर्वतसे आधा योजन जाकर विष्णुप्रभपर्वतमें पर्वतके विस्तार मद्दश एक लम्बी रमणीय गुफा है ॥२०८०॥

तोए दो - पासेसु<sup>२</sup>, दारा निय-जोग्य-उदय-विस्तारा<sup>३</sup> ।

ह्येति अकिट्टिम - क्वा, पाणावर-रयण - रमसिबजा ॥२०८१॥

अर्थ :—इसके दोनों पार्श्वभागोंमें अपने योग्य ऊँचाई एवं विस्तार सहित तथा अनेक उत्तम रत्नोंसे रमणीय अकृत्रिमरूप द्वार हैं ॥२०८१॥

गन्धमादन पर्वतके कूटों आदिका वर्णन —

कूडाणि गंधमादन - गिरिस्त उवरिभिः सप्त चेद्वंति ।

सिद्धमल - गंधमादन - वैवकुह - गंधवास - लोहिदया ॥२०८२॥

फलिहारंश<sup>४</sup> साणं, सप्ताणि इमाणि ह्येति जामाणि ।

एवार्ण उदयादी, सोमवास - जगं य नादध्या ॥२०८३॥

अर्थ :—गन्धमादनपर्वतके ऊपर सात कूट स्थित हैं । सिद्ध, गन्धमादन, वैवकुह, गन्धवास ( गन्धमासिनी ? ) लोहित, स्फटिक और आनन्द ये इन सात कूटोंके नाम हैं । इन कूटोंको ऊँचाई आदिक सोमवास पर्वतके सदृश ही जाननी चाहिए, ॥२०८२-२०८३॥

एवार्णि चित्तेसो एतो, लोहिद - कूडे वसेदि भोगवती ।

भोगंकरा<sup>५</sup> य देवी, कूडे फलिहाराभिधायिभिः ॥२०८४॥

अर्थ :—विशेष यह है कि लोहित कूटपर भोगवती एवं स्फटिक नामक कूटपर भोगकरा-देवी निवास करती है ॥२०८४॥

मात्यवान् पर्वतके कूटों आदिका वर्णन—

एव कूडा चेद्वंति, उवरिभिः गिरिस्त मालवतस्स ।

सिद्धमल - मालपुत्रकुह<sup>६</sup>-कच्छा सागरं<sup>७</sup> हि रजदध्या ॥२०८५॥

१. इ. व. क. ज. य. उ. ठ. गुणारम्भे । २. य. व. क. ज. य. उ. ठ. विरभारो । ३. इ. क. ज. य. उ. ठ. फलिहारंशः साणं । ४. इ. व. क. ज. य. उ. ठ. भोगंकरा । ५. इ. व. क. ज. य. उ. ठ. मंतर । ६. इ. व. क. ज. य. उ. ठ. सागरं ।

तह पुष्पभइ - सीता, हरिसह - नामा इमान कूडार्न ।

बित्थारोदय - पद्मसो, बिम्बुप्यह - कूड - सारिण्णा ॥२०८६॥

अर्थ :—भास्ववान् पर्वतके ऊपर सी कूट स्थित हैं । सिद्ध, भास्ववान्, उत्तरकुट, कच्छ, सागर, रजत, पूर्णचंद्र, सीता और हरिसह, ये इन कूटोंके नाम हैं । इनका विस्तार एवं ऊँचाई आदिक बिम्बुत्पन्न पर्वतके कूटोंके सदृश ही है।

एकसो णवरि विसेतो, सागर-कूडसु भोगवदि - नामा ।

शिवसेवि रजद - कूडे, नामेण भोगमासिणी देवी ॥२०८७॥

अर्थ :—विशेषता केवल यह है कि सागर कूटपर भोगवती एवं रजतकूट पर भोगमासिनी नामक देवी निवास करती है ॥२०८७॥

संवर-गिरिसो मच्छिय, जोजनमयं गिरिन्नि एवस्स ।

सोहेदि 'गुहा पश्य - बित्थार - सारिण्ण - बोहवा ॥२०८८॥

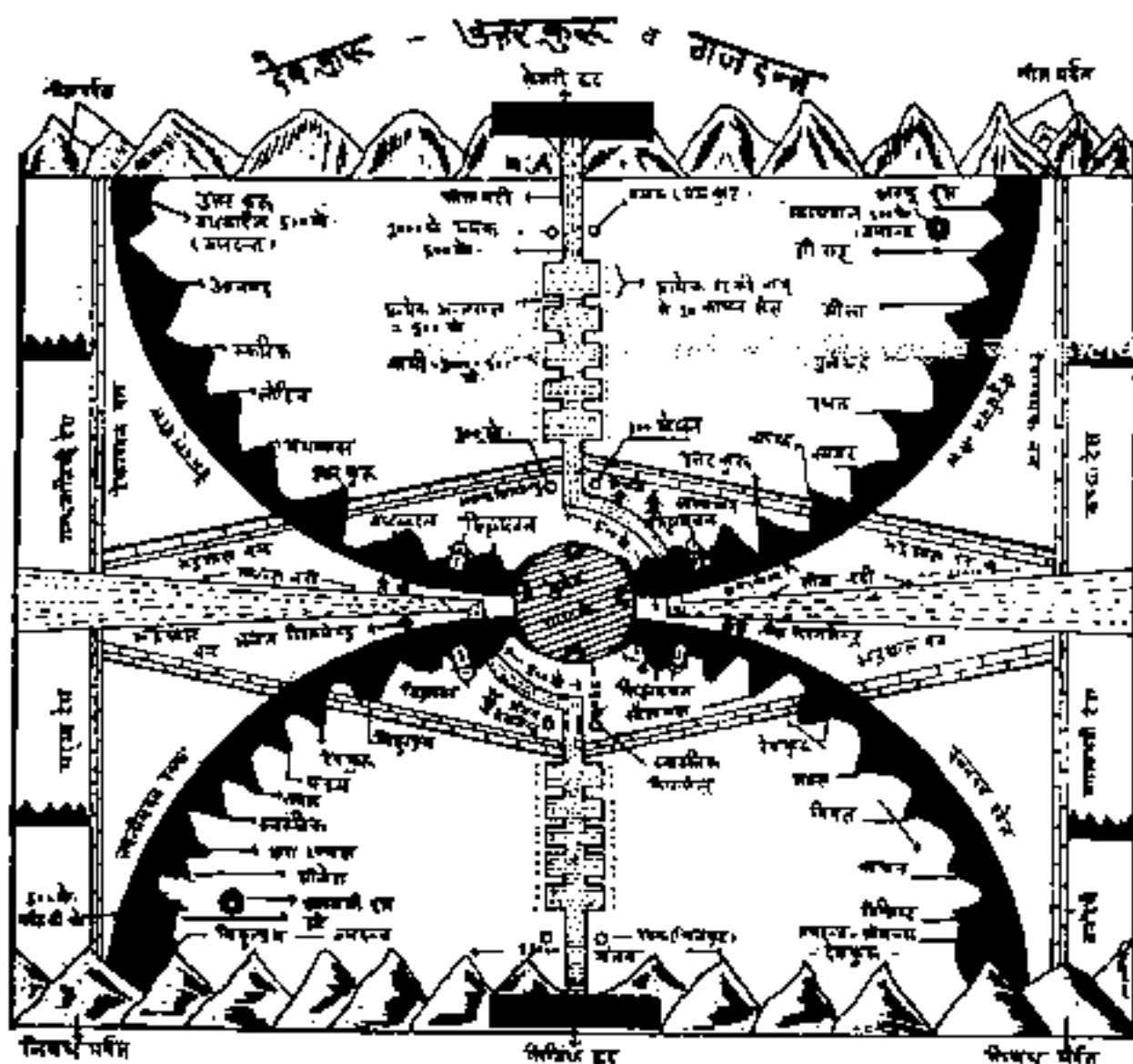
अर्थ :—मन्दर पर्वतसे माघा योजन आगे जाकर इस पर्वतके ऊपर पर्वतीय विस्तारके सदृश सम्मो गुफा कहो जाती है ॥२०८८॥

सीए बो - पासेसु, वारा जिय-जोग-उदय-बित्थारा ।

फुरिद-वर-रयम-किरणा, अकिट्ठिमा ते जिहवमाणा ॥२०८९॥

अर्थ :—उसके दोनों पार्श्वभागोंमें अपने योग्य उदय एवं विस्तार सहित तथा प्रकाशमान उसमें रत्नकिरणोंसे संयुक्त वे अकृत्रिम एवं अनुपम द्वार हैं ॥२०८९॥

[ चित्र पृष्ठ पर देखिये ]



सीतोदा नदीका सविस्तर वर्णन—

निसह-धराहर-जवरिम-तिगिच्छ-बहस्त उत्तर - दुवारे ।

सिन्धुगच्छति दिव्य - नदी, सीतोदा भुवन - विमलादा ॥२०६०॥

अर्थ :—निसह-धराहरके ऊपर ( स्थित ) तिगिच्छ-बहस्तके उत्तर-द्वारेसे लोक विख्यात दिव्य सीतोदा महानदी निकलती है ॥२०६०॥

जोयन सस - सहस्ते, जउस्सवे एककीस अवरिण<sup>१</sup> ।

जिसहस्सोवरि वज्जवि, सीतोदा उत्तर - मुहेण<sup>२</sup> ॥२०६१॥

[ ७४२१ । १ । ]

अर्थ :—यह सीतोदा नदी उत्तरमुख होकर सप्त हजार चारसी इनकीस योजनसे कुछ अधिक ( ७४२१<sup>१</sup> योजन ) नियमपर्वतके ऊपर जाती है ॥२०६१॥

आगंतूण तदो सा, पडितीदोद - जाम - कुण्डमि ।

पडिबूणं गिगण्छवि, तस्सुत्तर - तोरण - बुधारे ॥२०६२॥

गिगण्छिय सा गण्छवि, उत्तर-मग्गेण जाव मेव-गिरि ।

दो - कोसेहिमपाणिय, गिजसवे पच्छिम - मुहेण<sup>३</sup> ॥२०६३॥

अर्थ :—पश्चात् वह नदी पर्वत परसे आकर और प्रतिसीतोद नामक कुण्डमें गिरकर उसके उत्तर-तोरणद्वारसे निकलती हुई उत्तर-मार्गसे मेरु-पर्वत पर्वत जाती है । पुनः दो कोससे मेव पर्वतको न प्राप्तकर अर्थात् दो कोस दूरसे ही पश्चिमकी ओर मुड़ जाती है ॥२०६२-२०६३॥

विज्जुप्पहस्स गिरिणो, गुहाए उत्तर - मुहेण पविसेवि ।

अज्जेवि<sup>४</sup> अहसाले<sup>५</sup>, बंकस - रुवेण तेसि - अंतरिवा ॥२०६४॥

अर्थ :—अनन्तर वह नदी उतने ( दो कोस ) प्रमाण अन्तर सहित कूटिलकूपसे विज्जुप्प-पर्वतकी गुफाके उत्तरमुखमें प्रवेशकर भद्रप्रान्त वनमें जाती है ॥२०६४॥

मेरु-बहु-मज्झ-भागं, गिय-मज्झ-प्वणिधियं वि<sup>६</sup> कादूणे ।

पच्छिम - मुहेण सण्खवि, विवेह - विजयस्य बहु-मज्झे ॥२०६५॥

अर्थ :—मेरुके बहुमध्य भागको प्रपन्ता मध्य-प्रणिधि करके वह नदी पश्चिम मुखसे विदेहक्षेत्रके बहुमध्यमें होकर जाती है ॥२०६५॥

वेवकुर - सेस - जावा, जवो सहस्सा हवन्ति धुमसीवी ।

सीतोदा - पडितीरं, पविसन्ति सहस्स बाधालं<sup>७</sup> ॥२०६६॥

[ ५४००० । ]

१. व. क. क. म. ख. ठ. पविसेवि । २. व. सहसालं, व. व. अहसालो । ३. व. व. क. म. म. ख.

अर्थ :—देवकुश-क्षेत्रमें उत्पन्न हुई चौरासी हजार ( ८४००० ) नदियाँ हैं । इनमेंसे बयालीस हजार नदियाँ सीतोदाके दोनों ओरोंमें प्रवेश करती हैं ॥२०६६॥

अक्षर-विबोह-समुद्रमग्न-नदी समग्रा हर्षति च - लक्ष्मा ।

मग्नवानं च सहस्रा, अक्षतोऽपि पविसन्ति सीतोदं ॥२०६७॥

[ ४४८०३८ ]

अर्थ :—अपर विदेहक्षेत्रमें उत्पन्न हुई कुल नदियाँ चार लाख अक्षतालीस हजार अक्षतीस ( ४४८०३८ ) हैं, जो सीतोदामें प्रवेश करती हैं ॥२०६७॥

जम्बूदीपस्त ततो, जगदी - विल - बारण संचरिषं ।

पविसद् सवर्षं बुध्निहि, परिवार - वर्द्धहि जुता सा ॥२०६८॥

अर्थ :—जम्बूद्वीपकी जगतीके विल-द्वारमेंसे जाकर वह नदी परिवार-नदियोंमें युक्त होती हुई तवण-समुद्रमें प्रवेश करती है ॥२०६८॥

हं वाष्पगाढ - पट्टदी, हरिकंतादो हर्षति यो - गुणिदा ।

तोए मे - तड - वेदी - उबवण - संडाहि - रम्माए ॥२०६९॥

अर्थ :—दो तट-वेदियों और उपवन-काण्डोंसे रमणीय उस सीतोदा नदीका विस्तार एवं गहराई आदि हरिकान्ता नदीसे दूना है ॥२०६९॥

यमक पर्वतोंका वर्णन—

जोयण - सहस्त्रमेवकं, विसह - गिरिवस्स उत्तरे गंतुं ।

वेट्ठन्ति जमग - सेसा, सीतोदा - उभय - पुत्तिणेषु ॥२१००॥

अर्थ :—निषध-पर्वतके उत्तरमें एक हजार योजन जाकर सीतोदा-नदीके दोनों किनारों पर यमक शैल स्थित हैं ॥२१००॥

एगमेण जमग - कूडो, पुत्तम्मि तड्ढे गवीए वेट्ठेदि ।

अवरे मेघं कूडो, फुरंत - वर - रयण - किरणोहो ॥२१०१॥

अर्थ :—प्रकाशमान उत्तम रत्नोंके किरण-समूह सहित यमक कूट सीतोदा नदीके पूर्व तट पर है और मेघकूट पश्चिम तटपर है ॥२१०१॥



बोण्हं पि अंतरालं, पंच - सया जोयणाणि सेसालं ।

बोणि सहासा जोयण - तुंगा मूले सहास - विस्थारो ॥२१०२॥

। ५०० । २००० । १००० ।

अर्थ :—इन दोनों पर्वतोंका अन्तराल पाँचसौ ( ५०० ) योजन प्रमाण है । प्रत्येक पर्वतकी ऊँचाई दो हजार ( २००० ) योजन तथा मूल विस्तार एक हजार ( १००० ) योजन प्रमाण है ॥२१०२॥

सप्त - सया पण्णासा, पत्तेवकं ताण मउळ - विस्थारो ।

पंच - सय - जोयणाणि, सिहर - तले उँड - परिमाणं ॥२१०३॥

पार्श्वार्थः - आसन्नं चोत्तरं चोत्तरं चोत्तरं चोत्तरं चोत्तरं

अर्थ :—उनमेंसे प्रत्येक पर्वतका मध्य-विस्तार सातसौ पचास ( ७५० ) योजन है और शिखरतलमें विस्तारका प्रमाण पाँचसौ ( ५०० ) योजन है ॥२१०३॥

एवाणं परिह्णीओ, विस्थारे ति - गुणिदम्मि अविरित्तो ।

प्रवगाढो जमगाणं, णिय - णिय - उच्छेह - चउभागो ॥२१०४॥

अर्थ :—इन (पर्वतों) की परिधिवाँ तिगुने विस्तारसे अधिक है । यमक-पर्वतोंकी गहराई अपनी-अपनी ऊँचाईके चतुर्थांश प्रमाण है ॥२१०४॥

यमक पर्वतोंपर स्थित प्रासाद—

जमगोवरि बहु - मउळ, पत्तेवकं होंति विव्व-पासावा ।

पण - घण - कोसायामा, सहुत्तुणुच्छेह - संपण्णा ॥२१०५॥

। १२५ । २५० ।

अर्थ :—प्रत्येक यमक-पर्वतके ऊपर बहुमध्यभागमें एकसौ पच्चीस ( १२५ ) कोस लम्बा और इससे दूनी ( २५० कोस ) ऊँचाईसे सम्पन्न विव्व प्रासाद है ॥२१०५॥

उच्छेह-अळ - वासा, सल्ले तवणिज्ज-रउव-रयणमया ।

धुव्वंत - धय - कडाया, वर - तोरणवार - रमणिज्जा ॥२१०६॥

। १२५ ।

अर्थ :—स्वर्ण, चाँदी एवं रत्नोंसे निमित्त, फहराती हुई ध्वजा-पताकाओंसे संपुक्त और उत्तम शीतल-द्वारोंसे रमणीय ये सब प्रासाद अपनी-अपनी ऊँचाईके अर्धभाग ( १२५ कोस ) प्रमाण विस्तारवाले हैं ॥२१०६॥

कमल - गिरीशं ऊर्ध्वारं, प्रपदे वि ह्वयन्ति विश्व-पासादा ।

उच्छेह - वास - पहविसु, उच्छिष्टज्जो ताण उवएसो ॥२१०७॥

सचं :—यमक-पर्वतोंके ऊपर घोर भी (अत्य) दिव्य आसाद हैं। उनकी ऊँचाई एवं विस्तारादिका उपदेश नष्ट हो गया है ॥२१०७॥

उपवर्ण - संवेष्टि ज्ञवा, पोषकरणी-कृष-वावि-आरम्भा ।

करिष्ये - वर - रयण - वीक्षा, ते पासादा विरायन्ते ॥२१०८॥

उत्तम रत्नदीपकोंसे संपुक्त वे प्रासाद लोभायमान हैं ॥२१०८॥

पण्डित - सरिच्छ - नामा, वैतरवेदा वसन्ति एवेत् ।

बस - कोदंडवत् गग, पक्षेभ्यः एक - पल्लवः ॥२१०६॥

मन्त्र :- इस प्राप्तादिमें पर्वतोंके सहस्र नामवाले अन्तरदेव निवास करते हैं। इनमेंसे प्रत्येक देव दस अनुष ऊँचा और एक पत्थ्रप्रमाण आमुवाला है ॥२१०६॥

सामान्य-तन्त्ररक्षा, सहायीयाणि धरि - तद्विषयं च ।

किञ्चित्प्रसिद्धाभियोगा ताह, यद्वज्जया ताज्ज ह्योति परोक्षं ॥२११०॥

अर्थ :- उनमेंसे प्रत्येकके सामाजिक, समुदाय, सप्ताहिक, तीनों पारिवर्तिक, व्यावसायिक और प्रकीर्णक देव होते हैं ॥२११०॥

सामान्य - पदार्थ, वासादा कथय-रजद-रयस्यया ।

तद्देवीर्ण भवन्ना, सोऽहन्ति ह विश्वमायारा ॥२११॥

अर्थ :- स्वर्ण, चाँदी एवं रत्नोंसे निर्मित सामानिक आदि देवोंके प्राप्तार्थ और उनकी देवियोंके अनुपम आकारवाले भवन शोभायमान हैं ॥२११॥

जिनभवन एवं ब्रह्मोंका वर्णन—

जमगं मेघसुराणं, 'भवणोहितो विसाए 'धुम्बाए ।  
एकैकं जिणगेहा, पंडुग - जिणगेह - सारिण्णा ॥२११२॥

अर्थ :—यमक और मेघ देवोंके भवनोंसे पूर्वदिशामें पाण्डुक-वनके जिनमन्दिर सहस्र एक-एक जिन भवन है ॥२११२॥

पंडुग-जिण - मेहाणं, मुहम्मद-पुर्व-वन्धुसुराणं ।  
जा पुर्ववत्स भगिदा, सर जिण - भवणाण एवाणं ॥२११३॥

अर्थ :—पाण्डुकवनमें स्थित जिन भवनोंके मुखमण्डप आदिका जो सम्पूर्ण वर्णन पूर्वमें किया है, वही वर्णन इन जिन-भवनोंका भी है ॥२११३॥

जमगं मेघ - गिरीदो, पंच - सय जोजयणाणि शंतूणं ।  
पंच - वहा' परोक्कं, सहस्स - दस - जोजयन्तरिदा ॥२११४॥

। ५०० ।

अर्थ :—यमक और मेघगिरिसे पांचसौ योजन आगे जाकर पांच इह हैं, जिनमें प्रत्येकके बीच अर्धसहस्र ( ५०० ) योजनका अन्तरास है ॥२११४॥

उत्तर - दक्खिण - वोहा, सहस्समेक्कं हवन्ति परोक्कं ।  
पंच - सय - जोजयणाहं, 'दंदा दस - जोजयणवगाठा ॥२११५॥

। १००० । ५०० । १० ।

अर्थ :—प्रत्येक इह एक हजार प्रमाण उत्तर-दक्षिण लम्बा, पांचसौ योजन चौड़ा और दस योजन गहरा है ॥२११५॥

जिसह-कुव-सूर-सुलसा, विज्जू - णामेहि होति ते पंच ।  
पंचाणं बहुमज्जे, सीवोदा सा गदा' सरिया ॥२११६॥

१. व. भवणेहिते । २. द. क. ज. य. उ. ठ. धुम्बाय । ३. व. पंचमहो, क. ज. य. उ. ठ. पंचवहो ।  
४. व. व. क. ज. य. उ. ठ. दर्व । ५. द. व. क. ज. य. उ. ठ. रवा ।

अर्थ :—निषध, कुरु ( देवकुरु ), सूर, सुलस और विरुत्, ये उन पाँच द्रहोंके नाम हैं । इन पाँचों द्रहोंके बहुमध्य-भागमेंसे सीढोदा नदी गई है ॥२११६॥

होति वहानं मञ्जे, मञ्जुज - कुसुमाण दिग्ध - भवनेसु<sup>१</sup> ।

णिय - निय - वह-नामानं<sup>२</sup>, नागकुमाराण वैवीओ<sup>३</sup> ॥२११७॥

अर्थ :—द्रहोंके मध्यमें कमल-पुष्पोंके दिग्ध भवनोंमें अपने-अपने द्रहके नामवाले नागकुमार देव एवं देवियोंके निवास हैं ॥२११७॥

अवसेस-अण्णजाओ, जाओ<sup>४</sup> पडम - इहम्मि भणिदाओ ।

ताओ चिच्चय एवेसु<sup>५</sup>, शादन्नाओ ता<sup>६</sup> दणेसु<sup>७</sup> ॥२११८॥

अर्थ :—अवशेष वर्णनाएँ जो पद्मद्रहके विषयमें कही गई हैं, वे ही इन उत्तम द्रहोंके विषयमें भी जाननी चाहिए ॥२११८॥

कांचन शैलोंका वर्णन—

एक्केक्कस्स वहस्स य, पुण्य-विसाए य भवर - विग्गामे ।

वह-इह कंचण-सेसा, जोयण - सय - मेस - उण्णेहा<sup>८</sup> ॥२११९॥

। १०० ।

अर्थ :—प्रत्येक द्रहके पूर्व एवं पश्चिम दिग्-भागमें सौ-सौ योजन ऊँचे दस-दस काञ्चन-शैल ( कनक पर्वत ) हैं ॥२११९॥

दंघं मूलम्मि तवं, पण्णसरि जोयणाणि मव्वम्मि ।

पण्णासा सिंहुर - तसे, पल्लोक्कं कणय<sup>९</sup> - सेलानं ॥२१२०॥

। १०० । ७५ । ५० ।

अर्थ :—प्रत्येक कनक-पर्वतका विस्तार मूलमें सौ ( १०० ) योजन, मध्यमें पचहत्तर ( ७५ ) योजन और विखरतलमें पचास ( ५० ) योजन प्रमाण है ॥२१२०॥

१. व. व. क. ज. प. एण्णजाओ, उ. ठ. एण्णजाओ । २. व. एण्णजा, द. क. ज. प. उ. ठ. एण्णजा ।  
३. व. व. उ. जाओ पडमइहम्मि । ४. व. व. क. ज. उ. ठ. उण्णेहा । ५. द. क. ज. प. पण्णय, व. उ. ठ. पण्णय ।

पञ्चवीस - ओयणाह<sup>१</sup>, अवगावा से फुरंत-मणि-किरणा ।

ति-गुणित-गुण्य-विस्थारा, अविरिता ताण परिहीमो ॥२१२१॥

। २५ ।

अर्थ :—प्रकाशमान मणि-किरणों सहित ये पर्वत पञ्चवीस योजन गहरे हैं । इनकी परिधियोंका प्रमाण अपने-अपने विस्तारसे कुछ अधिक विवृत है ॥२१२१॥

उड-तोरण-वेदीहि, मूले उवरिम्मि उववण - वणोहि ।

पोक्करणीहि रक्खा, कणयगिरी मणहरा सखे ॥२१२२॥

अर्थ :—ये सब मनोहर कनकगिरि मूलमें एवं ऊपर धार तोरण-वेदियों, वन-उपवनों और पुष्करिणियोंसे रमणीक हैं ॥२१२२॥

कणय-गिरीण<sup>२</sup> उवरि, सासादा कणय-रजद-रयणमया ।

गरुडंत - धय - चक्रापा, कालागद - धूय - मंभइदा ॥२१२३॥

अर्थ :—कनकगिरियों पर स्वर्ण-चांदी एवं रत्नोंसे निर्मित नाचती हुई ध्वजा-पताकाओं सहित और कालागद धूपकी गन्धसे व्याप्त प्रासाद हैं ॥२१२३॥

जमगं मेघगिरी व्व, कंचण - सेखाण वण्णणं सेसं ।

गवरि बिसेसो कंचण - नाम<sup>३</sup> - वेतराव चासेदे ॥२१२४॥

अर्थ :—काञ्चन शैलोंका शेष वक्षंत यमक और मेघगिरिके सदृश है । विशेषता केवल इतनी है कि ये पर्वत काञ्चन नामक व्यन्तर देवोंके निवास हैं ॥२१२४॥

दिव्य-वेदी—

कु-सहस्स-ओयणाणि, बाणउवी वो कलाउ पविहस्ता ।

उज्जवीसेहि गच्छिय, विज्जु - वहावो य उत्तरे भागे ॥२१२५॥

। २०६२ । क ५६ ।

१. व. व. क. लघुवमईणं, घ. क. ठ. कलपमईणं । २. व. व. एवामवेतरं पि, क. घ. प. एवाम  
विहरं पि, ठ. उ. एवाम वेतरं वि । ३. ट. व. क. घ. य. उ. ठ. उज्जुवहावो ।

चेद्वे वि विष्णु-वेदी, ज्योत्स्न-कोसल - उदय - विद्यारा ।

पृष्ठावर - भाषासू, संलग्ना गद्यवंत - सेलाज ॥२१२६॥

। जो ! । को ? ।

अर्थ :—विष्णुतुद्रहसे उत्तरकी ओर दो हजार सानई योजन और दक्षीणसे विष्णु की कला ( २०९२½ योजन ) प्रमाण जाकर एक योजन ऊँची, आधा ( ५ ) कोस चौड़ी और पूर्व-पश्चिम भागमें गजदन्त-पर्वतसे जुड़ी हुई दिग्ग वेदो स्थित है ॥२१२५-३१२६॥

चरियद्वास्तय - विडला<sup>१</sup>, बहु-तोरण-वार-संयुक्ता रम्भा ।

दारोवरिम - तसेसुं, सा जिण - भवणेहि संपुण्या ॥२१२७॥

अर्थ :—बहु वेदों विपुल मार्गों एवं प्रद्वारणों सहित, बहुत तोरण-द्वारोंसे संयुक्त और द्वारोंके उपरि-भागोंमें स्थित जिन-मन्त्रोंसे परिपूर्ण है ॥२१२७॥

**दिग्गजेन्द्र पर्वतोंका वर्णन—**

पुण्यावर - भांगेसु', सीवोद - जदोए भहसाल - बप्पे ।

सतिश्वक - व्रजरा - सेला, वामेण "दिग्गङ्गवित्ति ॥२१२८॥

सूचक :—मद्रासपालकमके भीतर सीतोवा नदीके पूर्व-पश्चिम भागमें स्वस्तिक और ध्वजक  
नामक दिग्गबेन्द्र पर्वत हैं ॥२१२८॥

**जोयण - सयमुस्तंगा, सेलिय-परिमाण-मुल-नित्यार :**

दण्डेह - तुरिम - गाढा, पन्नासा सिंह - विश्वम्भो ॥२१२६॥

। १०० । १०० । २५ । ५० ।

अर्थ :—ये पञ्च एक ही (१००) योजना ऊँचे, मूलमें इतने ( १०० यो० ) ही प्रमाण विस्तारसे युक्त और ऊँचाईके अनुसार साग ( २५ यो० ) प्रमाण नीच तथा पचास ( ५० ) योजना प्रमाण शिखर-विस्तार सहित हैं ॥२१२६॥

पुष्पं पिब वन - संज्ञा, मूलं उवरिस्मि दिग्गजानं<sup>१</sup> पि ।

वर - वेदी - दार - जुवा, समंततो सुंघरा होंति ॥२१३०॥

अर्थ :—इन दिग्गज-पर्वतोंके ऊपर एवं मूलमें पूर्व वर्णन के ही सदृश उत्तम वन-वेदी-  
द्वारोंसे संयुक्त ओर चारों ओर से सुन्दर वन-खण्ड हैं ॥२१३०॥

एवाभं परिहोओ, वासेण ति - गुणिवेण ग्रहियाओ ।

ताभ उवरिस्मि दिग्वा, पासादा कणय - रयणमया ॥२१३१॥

अर्थ :—इनकी परिधिवां तिगुने विस्तारसे कुछ अधिक हैं । उन पर्वतों के ऊपर स्वर्ण और  
रत्नमय दिव्य प्रासाद हैं ॥२१३१॥

पण-घण-कोसायामा, सहल - वासा हवंति पसेकं ।

सन्धे सरिसुण्णैहा, वासेण विषड्ड - गुणिवेण ॥२१३२॥

। १२५ । १२५ । १२५ ।

अर्थ :—इन सबमें प्रत्येक प्रासाद चौबके घन ( १२५ कोस ) प्रमाण लम्बा, इससे आधे  
( ६२½ कोस ) प्रमाण चौड़ा और डेढ़-गुणा ( १३३½ कोस ) ऊँचा है ॥२१३२॥

एवेसुं भवणेसुं, कीडेवि वसो ति वाहणे वेवो ।

सकस्स विजुण्णतो, एरावट - हस्ति - कर्धेण ॥२१३३॥

अर्थ :—इन भवनोंमें सीधमें हन्द्रका यम नामक वाहन देव कीड़ा किया करता है । यह  
देव ऐरावत हाथीके रूपसे विक्रिया करता है ॥२१३३॥

जिनेन्द्र-प्रासाद—

तसो सीतोदाए, पच्छिम - तीरे जिंशिद - वासाओ<sup>२</sup> ।

मंघर - दक्खिण - भागे, तिहुवण - चूडामणी नामो ॥२१३४॥

अर्थ :—इसके प्रागे मन्दर-पर्वतके दक्षिण भागमें सीतोदा नदीके पच्छिम किनारे पर  
त्रिभुवन चूडामणि नामक जिनेन्द्र-प्रासाद है ॥२१३४॥

उच्छेत् - वास - पट्टवि, पंडुग-जिगन्नाह<sup>१</sup> - मंचिराहितो ।  
मुहमंजवाहिता<sup>२</sup> - प्वहुषोओ चउ - गुणो तस्स ॥२१३५॥

अर्थ :—उस जितेन्द्रासादकी ऊंचाई एवं विस्तार आदि तथा मुखमण्डप एवं अधिष्ठान आदिक पाण्डुकवनके जितेन्द्रमन्दिरोंसे औगुण्य विस्तारवासे हैं ॥२१३५॥

मंदर - पश्चिमभागे, सीढोव - णओए उत्तरे तीरे ।  
वेहुवि जिगिद<sup>३</sup> - भवणं, पुब्बं पिव वण्णणेहि जुवं ॥२१३६॥

अर्थ :—मन्दर-पर्वतके पश्चिम-भागमें सीतोदा नदीके उत्तर किनारेपर पूर्व कथित वर्णमणि युक्त जितेन्द्र-भवन स्थित है ॥२१३६॥

शैल्योका वर्णन—

सीढोव-वाहिणीए, दक्खिण - सीरम्मि भहुसात्त - वणे ।  
वेहुवे वि कुमुव - सेलं, उत्तर - तीरे पलासगिरो ॥२१३७॥

अर्थ :—मद्रशालवनमें सीतोदा नदीके दक्षिण किनारे पर कुमुद-नील और उत्तर किनारे-पर पलाश-गिरि स्थित हैं ॥२१३७॥

एवाओ वण्णणाओ, सयलाओ दिग्गज्जं - तरिसाओ ।  
जवरि विसेसो तेसुं, बरुणसुरो उच्चरिदस्स ॥२१३८॥

अर्थ :—ये सम्पूर्ण वर्णनाएँ दिग्गजेन्द्र-पर्वतोंके सदृश हैं । विशेष केवल यह है कि यहाँ उत्तरेन्द्रके बरुण नामक लोकपालका निवास है ॥२१३८॥

मद्रशालकी वेदी एवं उसका प्रमाण—

तसो पक्खिम - भागे, कण्ठमया भहुसात्त-वण-वेदी ।  
णील - एसहावलाणं, उब्बवण वेदीए<sup>४</sup> संलग्गा ॥२१३९॥

अर्थ :—इसके प्रागे पश्चिम भागमें नील एवं निषध पर्वतकी उपवन वेदीसे संलग्न स्थान-मय मद्रशाल-वन-वेदी है ॥२१३९॥

१. द. व. क. ज. म. ठ. ठ. जिगन्नाम । २. क. ज. उ. मुहमंजमदिवाहं पट्टवि । ३. मुहमंजम-मविवाहं पट्टवि । ४. मुहमंजमदिवाहं पट्टवि । ५. द. जिगिद । ६. व. वेदीओ ।



सेषीस - सहस्त्राहं, जोयणया छत्समाह चतुसीवो ।

उपवीस - हिवाभो चत - कलाभो वेवीए बीहसं ॥२१४०॥

। २३६८४ । १५ ।

अर्थ :—वेदीकी लम्बाई सेंसीस हजार छह सो चौरासो योजन और उन्नीससे भाजित चार कला ( ३३६८४/५ योजन ) प्रमाण है ॥२१४०॥

सीता नदीका वर्णन—

उवरिम्मि नील-गिरिणो, दिव्य-बहो केसरि सि विक्खावो ।

तस्स य दक्खिण - वारे, णिग्गच्छइ वरणाई सीवा ॥२१४१॥

अर्थ :—नील-गिरिजामें से निकलने वाली नदीका रंग अत्यंत दिव्य बह है । उसके दक्षिण-द्वारसे सीता नामक उत्तम नदी निकलती है ॥२१४१॥

सीवोवये सरिच्छा, पञ्चिऊणं सीव - कुंडं - उवरिम्मि ।

तद्विक्खण - वारेणं, णिक्कामवि दक्खिण - मुहेणं ॥२१४२॥

अर्थ :—सीतोदाके सहस्र ही सीतानदी सीता कुण्डमें गिरकर दक्षिण-मुख होती हुई उसके दक्षिण द्वारसे निकलती है ॥२१४२॥

णिक्कमिद्वुणं वरुच्चवि, दक्खिण-भावेण जाव मेरुगिरि ।

दो-कोसेहिमणाविय, पुव्वमुहो वलवि तत्ति - अंतरिदा ॥२१४३॥

अर्थ :—वह नदी कुण्डसे निकलकर मेरु पर्वत तक दक्षिणकी ओरसे जाती हुई दो कोसे उस मेरु-पर्वतको न पाकर उतने मात्र ( २ कोस ) अन्तर सहित पूर्वकी ओर मुड़ जाती है ॥२१४३॥

सेलम्मि' मालवन्ते, गुहाए दक्खिण - मुहाए पविसेदि ।

णिस्सरिद्वुणं गच्छदि, 'कुडिंसा मेरुसस मरुक्कसं ॥२१४४॥

अर्थ :—वह सीता नदी माध्यमंत पर्वतकी दक्षिणमुखवासी गुफामें प्रवेश करती है । पश्चात् उस गुफामेंसे निकलकर कुटिलरूपसे मेरु-पर्वतके मध्यभाग तक जाती है ॥२१४४॥

पद्या : २१४५-२१४६ ]

चतुर्थो महाहिमरो

[ ५७६ ]

तगिरि-मज्ज-पदेसं, चिय-मज्ज-पदेस-यचियं कावु' ।

पुव्व - मुहेचं मज्जइ, पुव्व - विवेहस्स बहुमज्जे ॥२१४५॥

अर्थ :- उस पर्वतके मध्यभागको अपना मध्यप्रदेश-प्रणधि करके वह सीतानदी पूर्व विदेहके ठीक मध्यमेंसे पूर्वकी ओर जाती है ॥२१४५॥

जंझुदीवस्स नदी, जगदी - बिल - डारएण संचरियं ।

परिवार - नवीहि जुवा, पविसवि सवणएणं सीवा ॥२१४६॥

अर्थ :- अनन्तर जम्बूद्वीपकी जगतीके बिल-डारमेंसे निकलकर वह सीता नदी परिवार-नदियोंसे युक्त होती हुई सवणसमुद्रमें प्रवेश करती है ॥२१४६॥

रंदावगाद - पट्टवि, तड वेदी - उववणाविकं सव्वं ।

सीदोदा - सारिच्छं, सीद - णवीए वि णावव्वं ॥२१४७॥

अर्थ :- सीता नदीका विस्तार एवं गहराई प्रादि तथा उसके तट एवं वेदी और उपवनादिक सब सीतोदाके सदृश ही जानने चाहिए ॥२१४७॥

यमकगिरि एवं इहोका वर्णन—

णोसाव्वल - इक्खिण्णो, एक्कं गंतुण ओयथ - सहस्सं ।

सीदावो - पासेसुं, वेट्ठंसे बोणि जमकगिरो ॥२१४८॥

। १००० ।

अर्थ :- नील पर्वतके दक्षिणमें एक हजार योजन जाकर सीताके दोनों पार्श्वभागोंमें दो यमकगिरि स्थित हैं ॥२१४८॥

पुव्वस्सि 'चिस्तजरो, पक्खिम-भाए चिचित्त - कूडो' य ।

जमगं मेघगिरिवा सव्वं चिय वण्णजं ताणं ॥२१४९॥

अर्थ :- सीतानदीके पूर्वभागमें चिस्तज और पक्खिम भागमें चिचित्तकूट है । इनका सब वर्णन यमक गिरीन्द्र और मेघगिरीन्द्रके सदृश ही समझना चाहिए ॥२१४९॥

जमगणिरिवाहितो, पंच - सया ओयशाणि मंसूणं ।

पंच बहा पत्तेकं, सहस्स - वस - ओयमंतरिवा ॥२१५०॥

[ ५०० ।

अर्थ :—यमक-पर्वतोके आगे पांचसौ ( ५०० ) योजन जाकर पांच द्रह हैं, जिनमेंसे प्रत्येक द्रह अर्धसहस्र ( ५०० ) योजन प्रमाण दूरी पर है ॥२१५०॥

नील - कुरु<sup>१</sup> - चंव - ऐरावता य एणमेहि मालवन्तो य ।

ते दिव्व<sup>२</sup> - दहरा निसह-दहावि - वर - वणजेहि जुदा ॥२१५१॥

अर्थ :—नील, कुरु ( उत्तर कुरु ), चन्द्र, ऐरावत और माल्यवन्त, ये उन दिव्य द्रहोंके नाम हैं । ये दिव्य द्रह निषध-द्रहादिकके उत्तम वर्णनोंसे युक्त हैं ॥२१५१॥

दु - सहस्सा बाणउवी-ओयण-ओमाण-ऊणवीस-श्रिवा ।

वरिम-बहावो<sup>३</sup> अणिसु-भागे<sup>४</sup> संलग्ग होनि कर-वेदी ॥२१५२॥

[ २०६२४ ।

अर्थ :—अन्तिम द्रहसे दो हजार बानबं योजन और उन्नीससे भाजित दो भाग ( २०६२४ योजन ) प्रमाण जाकर दक्षिण भागमें उत्तम वेदी है ॥२१५२॥

पुब्बावर - भाणसु<sup>५</sup>, सा गयवंताचसान संलग्गा ।

इगि ओयणसुत्ता<sup>६</sup>, ओयण - अट्ठ<sup>७</sup>स<sup>८</sup> - विस्वारा ॥२१५३॥

[ जो १ । वं १०००<sup>९</sup> ।

अर्थ :—पूर्व-पश्चिम-भागोंमें गजवन्त-पर्वतोसे संलग्न वह वेदी एक योजन ऊंची और एक योजनके आठवें भाग ( १००० दण्ड ) प्रमाण विस्तार सहित है ॥२१५३॥

वरियट्ठासय<sup>१०</sup>-पउत्ता, सा वेदी विविह-अय-ववेहि जुदा ।

दारोवरिम - ठिक्केहि, जिरिणव - भवणेहि रम्मणिज्जा ॥२१५४॥

१. द. व. क. अ. य. उ. ठ. कुरुद्रहमवदा । २. व. क. अ. य. उ. ठ. ते दिव्य । ३. द. व. क. अ. य. उ. ठ. भाग । ४. द. व. क. उ. ठ. अट्ठस । ५. क. व. ठ. उ., वं ५००० । ६. व. वरियट्ठासय । ७. द. व. अ. दारोवरिमरिक्केहि, क. दारोवरिमसमेहि, व. उ. दारोवरमतमेहि ।

अर्थ :—प्रचुर मार्गों एवं जट्टगलिकाओं सहित और नाना प्रकारकी ध्वजा-पताकाओंसे संयुक्त वह वेदी द्वारोंके उपरिभागोंमें स्थित जिनेन्द्र-भवनोसे रमणीय है ॥२१५४॥

अर्थ :—उत्तम भद्रशालके मध्यमें सीतानदीके दोनों किनारों पर स्थित—  
 रोचणवतंस<sup>१</sup> - कूबे, सस्मिय - गिरि - वज्जणेहि जुवा ॥२१५५॥

अर्थ :—उत्तम भद्रशालके मध्यमें सीतानदीके दोनों किनारों पर स्थित [एवं प्रज्जन] गिरिके समान वर्णनोंसे युक्त रोचन एवं प्रवतंसकूट नामक दिग्गजेन्द्रगिरि हैं ॥२१५५॥

गबरि विसेसो एकको, ईसाणिवस्स<sup>२</sup> वाहणो वेवो ।

णामेणं वड्समणो, तेसु<sup>३</sup> सीलाए वेट्ठेदि ॥२१५६॥

अर्थ :—विशेषता केवल ( एक ) यही है कि उन भवनोंमें ईशानेन्द्रका वंशवण नामक वाहनदेव सीला पूर्वक निवास करता है ॥२१५६॥

जिन-भवन निर्देश—

सीवा - तरंगिणीए, पुब्बम्मि तथे जिम्मिद - प्रासादो ।

मंदर - उत्तर - पासे, मयवतंभंतरे होवि ॥२१५७॥

अर्थ :—गजदन्तके भ्रम्यन्तरभागमें सीतानदीके पूर्व तटपर और मन्दरपर्वतके उत्तर-पार्श्वभागमें जिनेन्द्र-प्रासाद स्थित है ॥२१५७॥

सीवाए दक्खिणए, जिन-भवनं भद्रशाल - वज - मक्कंभे ।

मंदर - पुब्ब - विसाए, पुब्बोविद - वज्जणा - 'जुव' ॥२१५८॥

अर्थ :—भद्रशालवनके मध्यमें सीतानदीकी दक्षिण दिशामें और मन्दरकी पूर्व दिशामें पूर्वोक्त विवरण युक्त जिनभवन हैं ॥२१५८॥

पश्चोत्तर एवं नीलगिरि—

सीवा - गविण तसो, उत्तर - तीरम्मि दक्खिणे तीरे ।

पुब्बोविद-कम-जुला, पडमोत्तर - नील - विगहंवा य ॥२१५९॥

अर्थ :—इसके आगे सीतानदीके उत्तर ओर दक्षिण किनारोंपर पूर्वोक्त क्रमसे युक्त पश्चोत्तर ओर नील नामक दिग्गजेन्द्र पर्वत स्थित हैं ॥२१५९॥

णवरि विसेसो एकको, सोमो नामेण चेद्वे तेसु ।

सोहम्मिबस्स तथा, वाहनवेओ अमो नाम ॥२१६०॥

अर्थ :—यहाँ एक विशेषता यह है कि उन पर्वतोंपर सौधर्म हन्द्रके सोम और यम नामक वाहनदेव रहते हैं ॥२१६०॥

मतान्तरसे पाँच द्रहोंका निर्देश—

मेरुगिरि-पुष्प - दक्षिण - पच्छिमए उत्तरम्मि पत्तोक्कं ।

सीवा - सीदोवाए, पंच दत्ता केइ इच्छन्ति ॥२१६१॥

[ पाठान्तर ]

अर्थ :—कितने ही (आचार्य) जिनके पूर्व में दक्षिण, पश्चिम और उत्तर, इनमेंसे प्रत्येक दिशामें सीता तथा सीतोदा नदीके पाँच द्रहोंको स्वीकार करते हैं ॥२१६१॥ [ पाठान्तर ]

काञ्चन शैल—

ताणं उववेसेण य, एक्केवक - वहस्स वोसु तीरेसु ।

परा - परा कञ्चनसेला, पत्तोक्कं होति नियमेण ॥२१६२॥

[ पाठान्तर ]

अर्थ :—उनके उपदेशसे एक-एक द्रहके दोनों किनारोंमेंसे प्रत्येक किनारेपर नियमसे पाँच-पाँच काञ्चन शैल हैं ॥२१६२॥ ( पाठान्तर )

देवकुरु क्षेत्रकी स्थिति एवं लम्बाई आदि—

मंदरगिरि-दक्षिण - विभागव - भद्रसाल - वेदीको ।

दक्षिण - भागम्मि पुई, गितहस्स य उत्तरे भागे ॥२१६३॥

विष्णुपुह - पुष्पस्ति, सोमणसावो य पच्छिमे भागे ।

पुष्पावर - तीरेसु, सीदोवे होदि देवकुरु ॥२१६४॥

अर्थ :—मन्दरपर्वतके दक्षिणभागमें स्थित भद्रशालवेदीके दक्षिण निषधके उत्तर, विद्युत्प्रभके पूर्व और सोमनसगजदन्तके पश्चिमभागमें सीतोदाके पूर्व-पश्चिम किनारोंपर देवकुठ ( उत्तम भोगभूमि ) है ॥२१६३-२१६४॥

णिसह - वणवेवि - पासे, सस्स य पुब्बावरेसु दीहत्तां ।

लेवण - सहस्साणि, जोयण - माणं विणिहिट्ठं ॥२१६५॥

। ५३००० ।

अर्थ :—निषधपर्वतकी वनवेदीके पाईवेंमें उस ( देवकुठ ) की पूर्व-पश्चिम सम्बाई तिरैपन हजार ( ५३००० ) योजन प्रमाण बतलाई गई है ॥२१६५॥

पट्ट - सहस्सा वउ-सय-ऊउतीसा मेरु-दक्षिण-विसाए ।

सिरिभह्साण - वेवेय - पासे तव्वेण - दीहत्तां ॥२१६६॥

। ८४३४ ।

अर्थ :—मेरुकी दक्षिणदिशामें श्री भद्रशालवेदीके पास उस क्षेत्रकी लम्बाई आठ हजार चारसौ चौतीस ( ८४३४ ) योजनप्रमाण है ॥२१६६॥

एककरस-सहस्साणि, पंच - सया जोयणाणि बाणउवी ।

उणवीस - हिदा वु - कला, तस्सुत्तर-दक्षिणे रुंदो ॥२१६७॥

११५६२ । १२ ।

अर्थ :—उत्तर-दक्षिणमें उसका विस्तार ग्यारह हजार पांचसौ बानवें योजन और उन्नीससे बाजित दो कलाप्रमाण अर्थात् ११५६२ १/२ योजन प्रमाण है ॥२१६७॥

पणुवीस-सहस्साणि, णव-सय-इणिसीवि-जोयणा रुंदो ।

दो - गयवंत - समीजे, बंक - सक्खेण विहिट्ठं ॥२१६८॥

२५६८१ ।

अर्थ :—दोनों गजदन्तोंके समीप उसका विस्तार वक्ररूपसे पच्चीस हजार नौसी एकपासी ( २५६८१ ) योजन प्रमाण निर्दिष्ट किया गया है ॥२१६८॥

गिसह-वणवेदि-धारण-इंताजल-पास-कुंड - गिस्सरिदा ।

चउसोदि - सहस्साण, जदीउ पविसत्ति<sup>१</sup> सोदाव ॥२१६६॥

८४००० ।

अर्थ :—निषधपर्वतकी वनवेदी और गजदन्त-पर्वतोंके पादबंधमें स्थित कुण्डोंसे निकली हुई चौरासी हजार ( ८४००० ) नदियां सीतोदा नदीमें प्रवेश करती हैं ॥२१६६॥

सुसमसुसम्मि काले, जा भणिदा वण्णणा विविसयरा ।

सा हाणीए विहीणा, एवस्सि गिसह - सेसे य ॥२१७०॥

अर्थ :—सुषमसुषमा-कालके विषयमें जो अद्भुत वर्णन किया गया है, वही वर्णन बिना किसी प्रकारकी कमीके इस निषध पर्वतसे परे देवकुक्षके सम्बन्धमें भी समझना चाहिए ॥२१७०॥

शाल्मली वृक्षके स्थल आदिकोंका निर्देश—

गिसहस्सुसार-पासे, पुब्बाए बिसाए विज्जुपह-गिरिणो ।

सोवोद - वाहिणीए, पच्छिक्खल - बिसाए भागम्मि ॥२१७१॥

मंदर-गिरिव-गहरिदि-भागो खेत्ताम्मि देवकुक्ष - णामे ।

सम्मलि<sup>२</sup> - रुक्खाण यत्तं, रजवमयं चेदुदे रम्मं ॥२१७२॥

अर्थ :—देवकुक्षेत्रके भीतर निषधपर्वतके उत्तर-पार्श्वभागमें, विद्युत्प्रभ पर्वतकी पूर्व दिशामें, सीतोदा नदीकी पश्चिमदिशामें और मन्दरगिरिके नैऋत्यभागमें शाल्मलीवृक्षोंका रजतमय रमणीय स्थल स्थित है ॥२१७१-२१७२॥

पंच - सय - ज्ञेयणाणि, हेतुतले तस्स होचि वित्थारो ।

पक्खरस - सया परिही, एक्कासीवी जुवा अहिम्मा ॥२१७३॥

। ५०० । १५८१ ।

अर्थ :—उस स्थलका विस्तार नीचे पांचसी ( ५०० ) योजन है और उसकी परिधि पन्द्रहसी इक्यासी ( १५८१ ) योजनसे अधिक है ॥२१७३॥

मणिभ्रम-उदय-पमाणं, अट्टं चिय जोयणाणि एहस्स ।

सज्जसेसुं उवणो, हो - हो' कोसं पुढं होवि ॥२१७४॥

८।२।

अर्थ :—इस स्थलको मध्यम ऊँचाईका प्रमाण आठ योजन और उसके अन्तमें पृथक्-पृथक् दो-दो कोस प्रमाण है ॥२१७४॥

सम्मत्ति-सक्खान्ण चत्तं, तिप्पिण बरणा चेडिहूण चेहुंति ।

विविह-वर-सक्ख-सप्पणा, देवापुर - मिह्ण - संकिप्पा ॥२१७५॥

अर्थ :—विविध उत्तम वृक्षोंसे युक्त और सुरासुर-युगलोंसे सङ्कीर्ण तीन वन शाल्मलीवृक्षोंके स्थलको वेष्टित किए हुए हैं ॥२१७५॥

उपरि थलस्स चेहुवि, समंतदो वेविमा सुवण्णमई ।

वारावरिमं तल्लसु, जिण्णं भवणेहि संपुण्णा ॥२१७६॥

अर्थ :—उस स्थलपर चारों ओर द्वारोंके उपरिमभागमें स्थित जिनेन्द्रमण्डलोंसे परिपूर्ण स्वर्णमय वेदिका स्थित है ॥२१७६॥

अड-जोयण-उत्तुंगो, बारस-चउ-मूल-उद्ध-विस्थारो ।

समवट्ठो रजतमणो, पीठो वेवीए मज्झमि ॥२१७७॥

८।१२।४।

अर्थ :—इस वेदीके मध्यभागमें आठ योजन ऊँचा, मूलमें बारह योजन तथा ऊपर चार योजनप्रमाण विस्तारवाला समवृत्त ( वृत्ताकार ) रजतमय पीठ है ॥२१७७॥

शाल्मली वृक्षका वर्णन—

तस्स बहु-मज्झ-वेसे, सपाव - पीठो य सम्मत्ती-सक्खो' ।

सुप्पह - णामो बहुविह - वर - रण्णुज्जोय - सोहिल्लो ॥२१७८॥

अर्थ :—उस पीठके बहुमध्यभागमें पादपीठ-सहित और बहुत प्रकारके उत्कृष्ट रत्नोंके उच्चोत्तसे सुशोभित सुप्रभ नामक शाल्मलीवृक्ष स्थित है ॥२१७८॥



उज्जेह - जोयणेणं, अट्टं चिय जोयणाणि उत्तुंगो ।

तत्सावगाह - भागो, वज्जमओ बोण्णि कोसाणि ॥२१७६॥

८।२।

अर्थ :—वह वृक्ष उत्सेध-योजनसे घाट योजन ऊँचा है । उसका वज्जमय अवगाहभाग दो कोस प्रमाण है ॥२१७६॥

सोहेदि तस्स 'संधो, फुरंत-वर-किरण-पुत्तरागमओ ।

इगि - कोस - बहल - कुत्तो, जोयण-जग-मेत्त-उत्तुंगो ॥२१८०॥

को १।२।

अर्थ :—उस वृक्षका स्कन्ध एक कोस बाह्यसे युक्त, दो योजन ऊँचा, पुत्तरागमय ( पुष्कराजमय ) और प्रकाशमान उत्तम किरणोंसे शोभायमान है ॥२१८०॥

जेट्ठाओ साहाओ, चत्तारि हवन्ति खउदिता - भागो ।

छज्जोयण - दीहाओ, सेलिय - मेत्तंतराउ पत्तोक्कं ॥२१८१॥

६।६।

अर्थ :—इस वृक्षकी चारों दिशाओंमें चार महाशाखाएँ हैं । इनमेंसे प्रत्येक शाखा छह योजन लम्बी और इतने ही अन्तराल सहित है ॥२१८१॥

साहासुं पत्ताणि, मरगय - वेरुलिय - नीलइंदारिण ।

विबिहाइं कक्केयण - जामीयर - विद्धुममयाणि ॥२१८२॥

अर्थ :—शाखाओंमें मरकत, वैडूर्य, इन्द्रनील, कर्कोतन, स्वर्ण और मृगसे निर्मित विविध प्रकारके पत्ते हैं ॥२१८२॥

सम्मसि-तरणो अंकुर-कुसुम-फलाणि विचि-रयणाणि ।

पण - वण्ण - सोहिवाणि, निरुवम - रुवाणि रेहुंति ॥२१८३॥

अर्थ :—शाखमयीवृक्षके अंकुर, फूल एवं फल पाँच वर्णोंसे शोभित हैं, अनुपम रूपवाले हैं तथा अद्भुत रत्नस्वरूपसे शोभायमान हैं ॥२१८३॥

जीउप्यत्ति-सयाणं, कारण - यूवो अणाइण्हणो' सो ।

सम्मत्ति - रुक्खो' चामर-किकिणि-<sup>१</sup>घंटावि-कय-सोहो ॥२१८४॥

अर्थ :—( पृथ्वीकायिक ) जीवोंकी उत्पत्ति एवं नाशका कारण होते हुए भी स्वयं मृदादि-निघन रहकर वह शात्मली वृक्ष चामर, किकिणी और घंटाविसे सुशोभित है ॥२१८४॥

जिनभवन एवं प्रासाद—

तद्विक्खण-साहाए, जिणिद-भवनं विविह - रयणमयं ।

अउ-हिद-ति-कोस-उदयं, कोसायामं तवद्ध - विथारं ॥२१८५॥

३ । को १ । ३ ।

अर्थ :—उस वृक्षकी दक्षिण शाखापर चारसे भाजित तीन ( ३ ) कोस प्रमाण ऊँचा, एक कोस लम्बा और आधे ( ३ ) कोस विस्तारवाला अद्भुत-रत्नमय जिनभवन है ॥२१८५॥

अं पंडुग - जिणभवनो, भणियं विस्सेस-वण्णजं कि पि ।

एवस्सि' पादण्णं, सुर - बु'कुहि - सह - गहिरयरे' ॥२१८६॥

अर्थ :—पाण्डुकवनमें स्थित जिनभवनके विषयमें जो कुछ भी वर्णन किया गया है वही सम्पूर्ण वर्णन देवदुन्दुभियोंके शब्दोंसे प्रतिपाद्य गम्भीर इस त्रिनेन्द्रभवनके विषयमें भी जानना चाहिए ॥२१८६॥

सेसासु' साहासु', कोसायामा तवद्ध - विक्खंभा' ।

पादोण - कोस - तुंगा, ह्वंति एक्केवक - पासादा ॥२१८७॥

को १ । ३ । ३ ।

अर्थ :—अवशिष्ट शाखाओंपर एक कोस लम्बे, आधाकोस चौड़े और तीन कोस ऊँचे एक-एक प्रासाद हैं ॥२१८७॥

अउ-तोरण-वेदि-बुवा, रयणमया विविह-विब्ब-धूव-घडा ।

पजसंत - रयण - दीवा, ते सव्वे पय - ववाइण्णा ॥२१८८॥

१. व. व. सिद्धिदा । २. द. व. रुक्खा । ३. द. व. किकिणिपारादिकय सोहो । ४. द. व. एवेत्ति ।

५. द. व. क. गहिरयरो । ६. द. व. क. अ. द. व. विक्खंभी ।

अर्थ :—वे सब रत्नमय प्रासाद चार तोरण-वेदियों सहित हैं, जिनके विविध प्रकारके दिव्य घूप-घटोंसे संयुक्त हैं, जलते हुए रत्नदीपकोंसे प्रकाशमान हैं और ध्वजा-पताकाओंसे व्यूषित हैं ॥२१८५॥

सयणासन-पमुहाणि, भक्षणेसु' निम्मत्वाणि विरज्जानि ।

परिवि-मउवाणि तणु - मण - गयणाचंण-सरुवाणि ॥२१८६॥

अर्थ :—इन भवनोंमें घूलिसे रहित, शरीर, मन एवं नयनोंको आनन्ददायक और स्वभावसे मृदुल निर्मल शय्यायें एवं भ्रासनादिक स्थित हैं ॥२१८६॥

भवनोंमें निवास करनेवाले देवोंका वर्णन—

वेहुवि सेसु परेसु', वेणू नामेण वेतरो वेओ ।

बहुविह - परिवार - जुओ, बुद्धजओ वेणुघारि पि ॥२१८७॥

अर्थ :—उन पुरोंमें बहुत प्रकारके परिवारसे युक्त वेणु एवं वेणुघारी नामके व्यन्तर देव रहते हैं ॥२१८७॥

सम्महंसण - सुद्धा, सम्माहट्ठीण बच्छसा होणि ।

ते दस - चाउसुंगा, पत्तोक्कं एक्क - पत्ताऊ ॥२१८८॥

अर्थ :—सम्यग्दर्शनसे शुद्ध और सम्यग्दृष्टियोंसे प्रेम करनेवाले उन दोनों देवोंमेंसे प्रत्येक दस धनुष ऊँचा एवं एक पत्थ प्रमाण आयुवाला है ॥२१८८॥

वेदियोंका निरूपण—

सम्मलि-बुमस्स बारस, समंतदो होंति दिव्व - वेदीओ ।

बउ-गोउर - जुत्ताओ, फुरंत - वर - रयण - सोहाओ ॥२१८९॥

अर्थ :—शास्त्रमन्त्रीवृक्षके चारों ओर चार गोपुरोंसे युक्त और प्रकाशमान उत्तम रत्नोंसे सुशोभित बारह दिव्य वेदियाँ हैं ॥२१८९॥

उत्सेध' - गाउवेणं, वे - गाउवमेत्त - उत्तिवा ताओ ।

पंख - सया चावाणि, रुवेणं होंति वेदीओ ॥२१९०॥

अर्थ :—वे वेदियाँ उत्सेधकोससे दो कोस प्रमाण ऊँची और पाँचसौ धनुष प्रमाण विस्तार वाली हैं ॥२१६३॥

कुलगिरि - सरिया मंदर-कुंड-पुहुवीण दिव्य-वेदीओ ।

उज्येह - पुहुवीहि, सम्मलि - तल - वेदि सरिसाओ ॥२१६४॥

अर्थ :—कुलाचल, सरिता, मन्दर, कुण्ड आदि की ( स्थित ) दिव्य-वेदियोंका उत्सेधादि शास्त्रमसीवृक्षकी तल-वेदीके सदृश समझना चाहिए ॥२१६४॥

पठमाए भूमोए, सुप्पह - णामस्स सम्मलि - वुमस्स ।

चेहुवि उववण - संढो अण्णेण' खु सम्मलि - वुमस्स ॥२१६५॥

अर्थ :—सुप्रभ-नामक शास्त्रमसी वृक्षकी प्रथम-भूमिमें अन्य शास्त्रमसी वृक्षोंसे युक्त उपवन-खण्ड हैं ॥२१६५॥

तसो बिदिया भूमो, उववण - संढेहि विविह-कसुमेहि ।

पोवकरणो - वायोहि, सारस - पुहुवीहि रमणिउआ ॥२१६६॥

अर्थ :—इसके आगे द्वितीय भूमि विविध प्रकारके फूलोंवाले उपवन-खण्डों, पुष्करिणियों, वापियों एवं सारस आदिकों ( पक्षियों ) से रमणीय है ॥२१६६॥

बिदियं व तदिय-भूमो, जवरि बिसेसो विचिस-रयणमया ।

अट्ठत्तर - सय - सम्मलि - दक्खा तीए समंतेणं ॥२१६७॥

अर्थ :—दूसरी भूमिके सदृश तीसरी भूमि भी है । किन्तु विशेषता केवल यह है कि तीसरी भूमिमें चारों ओर विविध रत्नोंसे निर्मित एकसौ आठ शास्त्रमसीवृक्ष हैं ॥२१६७॥

अद्धेण पमाणेहि, से सव्वे होति सुप्पहाहितो ।

एवेसु' चेहुते, वेणुहुणणं महामग्गा' ॥२१६८॥

अर्थ :—वे सब वृक्ष सुप्रभवृक्षके ( प्रमाणसे ) आधे प्रमाणवाले हैं । इनके ऊपर वेणु घोर वेणुघारी ( नामके दो ) महामान्य देव निवास करते हैं ॥२१६८॥

तदियं व तुरिम-भूमो, वसारो जवरि सम्मली-दक्खा ।

पुव्व - विसाए तेसु', चड - वेमोओ य वेणु - जुगसस्स ॥२१६९॥

अर्थ :—तीसरी भूमि सदृश ही चौथी भूमि है । विशेषता यह है कि इसकी पूर्व दिशा में चार शास्त्रमयीवृक्ष हैं । जिनपर वेणु एवं वेणुघारी देवोंकी चार देवियाँ रहती हैं ॥२१९९॥

अथ तिलोयपण्यासी :—आचार्य श्री एतद्विदित्यामृतं श्री यमपुराण

तुरिमं व पञ्चम-मही, जवार विसेसो न सम्मली-रुक्ता' ।

तस्य हवन्ति विचित्रा, बाबीभो विविह - रुक्ताभो' ॥२२००॥

अर्थ :—चौथी भूमिके सदृश पाँचवीं भूमि भी है । विशेषता केवल यह है कि इस भूमि में शास्त्रमयीवृक्ष नहीं हैं, परन्तु विविध रूपवाली अद्भुत बापियाँ हैं ॥२२००॥

छट्ठीए वण - संखो, सत्तम - भूमोए चउ - विसाभागे ।

सोलस - सहस्स - रुक्ता, वेणु - जुगत्संग - रुक्ताणं ॥२२०१॥

८००० । ८००० ।

अर्थ :—छठी भूमि में वनछण्ड हैं और सातवीं भूमिके भीतर चारों दिशाओं में वेणु एवं वेणुघारी देवोंके अङ्गरक्षक देवोंके सोलह हजार अर्थात् आठ-आठ हजार ( ८०००-८००० ) वृक्ष हैं ॥२२०१॥

सामानिय - देवाणां, चत्तारो ह्येति सम्मलि - सहस्सा ।

पवणेशाण-विसासुं, उत्तर - भागम्मि वेणु - जुगत्सस्त ॥२२०२॥

२००० । २००० ।

अर्थ :—[ आठवीं भूमि में ] वायव्य, ईशान और उत्तरदिशा भागमें वेणु एवं वेणुघारीके सामानिक देवोंके चार हजार अर्थात् एक-एक देवके दो-दो हजार ( २०००-२००० ) शास्त्रमयी वृक्ष हैं ॥२२०२॥

बत्तीस-सहस्साणि, सम्मलि-रुक्ताणि अणल - विम्भाए ।

भूमोए णवमीए, अकम्भतर - वेव - परित्ताणं ॥२२०३॥

। १६००० । १६००० ।

अर्थ :—नवीं भूमिके भीतर आग्नेय दिशा में अम्भन्तर पारिवद देवोंके बत्तीस हजार ( १६०००, १६००० ) शास्त्रमयीवृक्ष हैं ॥२२०३॥

पुह पुह बीस-सहस्त्रा, सम्मलि-रुक्खाण वक्खिणे भागे ।

बसभ-खिवोए मज्झिम - परित - सुराणं च वेणु - जुगे ॥२२०४॥

२०००० । २०००० ।

अर्थ :-दसवीं पृथिवीके दक्षिणभागमें वेणु एवं वेणुघारो सम्बन्धी मध्यम पारिषद देवोंके पृथक्-पृथक् बीस-बीस हजार ( २००००-२०००० ) शाल्मलीवृक्ष हैं ॥२२०४॥

पुह चउबीस-सहस्त्रा, सम्मलि-रुक्खाण णइरिञ्चि-विभागे ।

एक्कारसम - महोए, बाहिर - परिसामराए वीणं पि ॥२२०५॥

२४००० । २४००० ।

अर्थ :- चारहवीं भूमिके तेश्चर्य-दिग्विभागमें उक्त दोनों देवोंके बाह्य पारिषद देवोंके पृथक्-पृथक् चौबीस-चौबीस हजार ( २४०००-२४००० ) शाल्मलीवृक्ष हैं ॥२२०५॥

सत्तेसु य अणिएसुं, अहिबइ - देवाण सम्मली - एक्खा ।

बारसमाए महोए, सत्त - ञ्चिय पचिद्धम - विसाए ॥२२०६॥

७ । ७ ।

अर्थ :-चारहवीं भूमिकी पश्चिमदिशामें सात अनीकोंके अधिपति देवोंके सात ही शाल्मली वृक्ष हैं ॥२२०६॥

लक्खं जाल - सहस्त्रा, बीसुत्तर-सय-जुवा य ते सव्वे ।

रम्मा अणाइणिहणा, संमिलिदा<sup>१</sup> सम्मली - रुक्खा ॥२२०७॥

१४०१२० ।

अर्थ :-रमणीय और अनादि-निघन के शाल्मली वृक्ष सब मिलकर एक लाख चालीस हजार एकसौ बीस ( १४०१२० ) हैं ॥२२०७॥

तोरण - वेदी - पुत्ता, सपाव - पीछा अकिङ्किमाया<sup>२</sup> ।

वर-रयण-खच्चिद-साहा, सम्मलि - रुक्खा विरायंति ॥२२०८॥

अर्थ :—तोरण-वेदियोंसे युक्त, पादपीठों सहित, उत्तम-रत्न-सज्जित शास्त्रागोसे संयुक्त अकृत्रिम आधारवाले वे सब शास्त्रमयी वृक्ष विशेष सुशोभित हैं ॥२२०८॥

वकिजव - जील - मरगाय - रविकंत-मयंककंत-पट्टवीहि ।  
गिण्णासि - अधयार, सुप्पह - रुक्खस्स भादि 'थलं ॥२२०९॥

अर्थ :—सुप्रभववृक्षका स्थल वज्र, इन्द्रनील, मरकत, सुवर्कान्त और चन्द्रकान्त आदिक सज्जितविशेषोंसे अन्वकारकी नष्ट करता हुआ सुशोभित होता है ॥२२०९॥

सुप्पह<sup>१</sup>-थलस्स विजसा, समंतदो तिणिं होंति वन-संज्ञा ।  
विबिह<sup>२</sup>-फल-कुसुम-पल्लव-सोहिल्ल-विचिस-तव - छप्पा ॥२२१०॥

अर्थ :—सुप्रभववृक्षके स्थलके चारों ओर विविध प्रकारके फल, फूल और पत्तोंसे सुशोभित नाना प्रकारके वृक्षोंसे व्याप्त विस्तृत तीन वन-खण्ड हैं ॥२२१०॥

प्रासाद, पुष्करिणी एवं कूटोंका वर्णन—

तेसुं पढमम्मि धरो, चत्तारो खउ - वितासु पासादा ।  
खउ-हिउ-ति-कोस-उवपा, कोसायामा तवद्ध-वित्थारा ॥२२११॥

१ । १ । २ ।

अर्थ :—उनमेंसे प्रथम वनके भीतर चारों दिशाओंमें पौन ( १ ) कोस ऊँचे, एक कोस लम्बे और आधा ( १/२ ) कोस विस्तारवाले चार प्रासाद हैं ॥२२११॥

अवणाणं विवितासुं, पत्तेवकं होंति दिव्व - रुवाणं ।  
खउ चउ पोक्खरणीधो, वस - जोयण-मेत्त-गाढाओ ॥२२१२॥

अर्थ :—दिव्यरूप वाले इन भवनोंमेंसे प्रत्येककी विदिशाओंमें दस योजन प्रमाण गहरी चार-चार पुष्करिणियाँ हैं ॥२२१२॥

पणवीस - जोयणाहं, वंवं पण्मास ताज बोहत्तं ।  
विबिह-अस-णिवह<sup>३</sup>-मंडिह-कमलुप्पल - कुमुव - संछप्पं ॥२२१३॥

२५ । ५० ।

१. द. व. क. ज. य. उ. तव । २. द. सुप्पहवत्तस्स, व. क. उ. सुप्पहवत्तस्स । ३. द. व. क. ज. य.

अर्थ :—जल समूहसे भण्डित, विविध प्रकारके कमल, उत्पल, और कुमुदोंसे व्याप्त उन पुष्करिणियोंका विस्तार पच्चीस (२५) योजन एवं लम्बाई पचास योजन प्रमाण है ॥२२१३॥

मणिमय-सोबाणाओ<sup>१</sup>, जलवर-चत्ताओ<sup>२</sup> ताओ सोहति ।

अमर - मिहुबाण कुंकुम - पंकेजं पिजर - जलाओ ॥२२१४॥

अर्थ :—जलवर जीवोंसे रहित वे पुष्करिणियाँ मणिमय सोपानोंसे शोभित हैं और देव-युगलोंके कुंकुम-पङ्कसे पोत जलवासी हैं ॥२२१४॥

पुह पुह पोखरणीअं, समंतवो होति अहु कूडाणि ।

एदाण - उदय - पट्टबिसु, उवएसो संपइ पणट्ठो ॥२२१५॥

अर्थ :—पुष्करिणियोंके चारों ओर पृथक्-पृथक् प्राठ कूट हैं । इन कूटोंकी ऊँचाई आधिका उपदेश इस समय नष्ट हो चुका है ॥२२१५॥

अण-प्रासाद-समाणा, प्रासादा होति ताण उवरिअमि ।

एवेसुं वेट्ठते, परिवारा वेणु - अणसस्स ॥२२१६॥

अर्थ :—उन कूटोंके ऊपर वन-प्रासादोंके सदृश प्रासाद हैं । इनमें वेणु एवं वेणुचारी देवोंके परिवार रहते हैं ॥२२१६॥

उत्तरकुसका निर्देश—

अंदर-उत्तर-भागे, दक्षिण - भागमि नील - सेलस्स ।

सीबाए वो - लहेसु, पणिअम - भागमि मालवंतस्स ॥२२१७॥

पुष्पाए गंधमावण - सेलस्स बिसाए होवि रमणिज्जा ।

गामेण उत्तरकुस, बिज्झादो भोगभूमि सि ॥२२१८॥

अर्थ :—मन्दरपर्वतके उत्तर, नीलशैलके दक्षिण, मातृवन्तके पश्चिम और गन्धमादन-शैलके पूर्व पश्चिमभागमें सीतानदीके दोनों किनारोंपर 'भोगभूमि' के रूपमें दिव्यात रमणीय उत्तरकुस नामक क्षेत्र है ॥२२१७-२२१८॥



बेचकुरु - वण्णणाहि, सरिसाओ वण्णणाओ एवस्स ।

णवरि बिसेसो सम्मलि-तह - वण्णफवी तत्थ एा हवन्ति ॥२२१६॥

अर्थ :— इसका सम्पूर्ण वर्णन देवकुरुके वर्णनके ही सदृश है । विशेषता केवल यह है कि यहाँ शात्मलोचकके परिवार ( वनस्पति ) नहीं हैं ॥२२१६॥

जम्बूवृक्ष —

मंवर - ईसानविसाभागे नीलस्स वमिस्सणे पासे ।

सीदाए पृष्ठ - तटे, पच्छिम - भागस्मि मालवन्तस्स ॥२२२०॥

जम्बू - वक्खस्स 'पलं, कणयमयं होदि पीठ - वर-कुत्तं ।

विविध-वर-रयण-खजिवा, जम्बू - वक्खा हवन्ति एवस्सि ॥२२२१॥

अर्थ :— मन्दरपर्वतके ईशानदिशाभागमें, नीलगिरिके दक्षिणपार्श्वभागमें और माल्यवन्तके पश्चिमभागमें सीतानदीके पूर्व तटपर उत्तम पीठ युक्त जम्बूवृक्षका स्वर्णमय स्थल है । इस स्थल पर विविध प्रकारके उत्कृष्ट रत्नोंमें खचित जम्बूवृक्ष हैं ॥२२२०-२२२१॥

सम्मलि-वक्ख-सरिच्छं, जम्बू - वक्खाय वण्णणं सयलं ।

एावरि बिसेसा चैतरदेवा चेद्वन्ति वण्णणा ॥२२२२॥

अर्थ :— जम्बूवृक्षोंका सम्पूर्ण वर्णन शात्मलीवृक्षोंके ही सदृश है । विशेषता केवल इतनी है कि यहाँ अन्य-अन्य व्यन्तरदेव रहते हैं ॥२२२२॥

तेसुं पहाण - वक्खे, जिणिव - पासाव - भूसिदे रम्मे ।

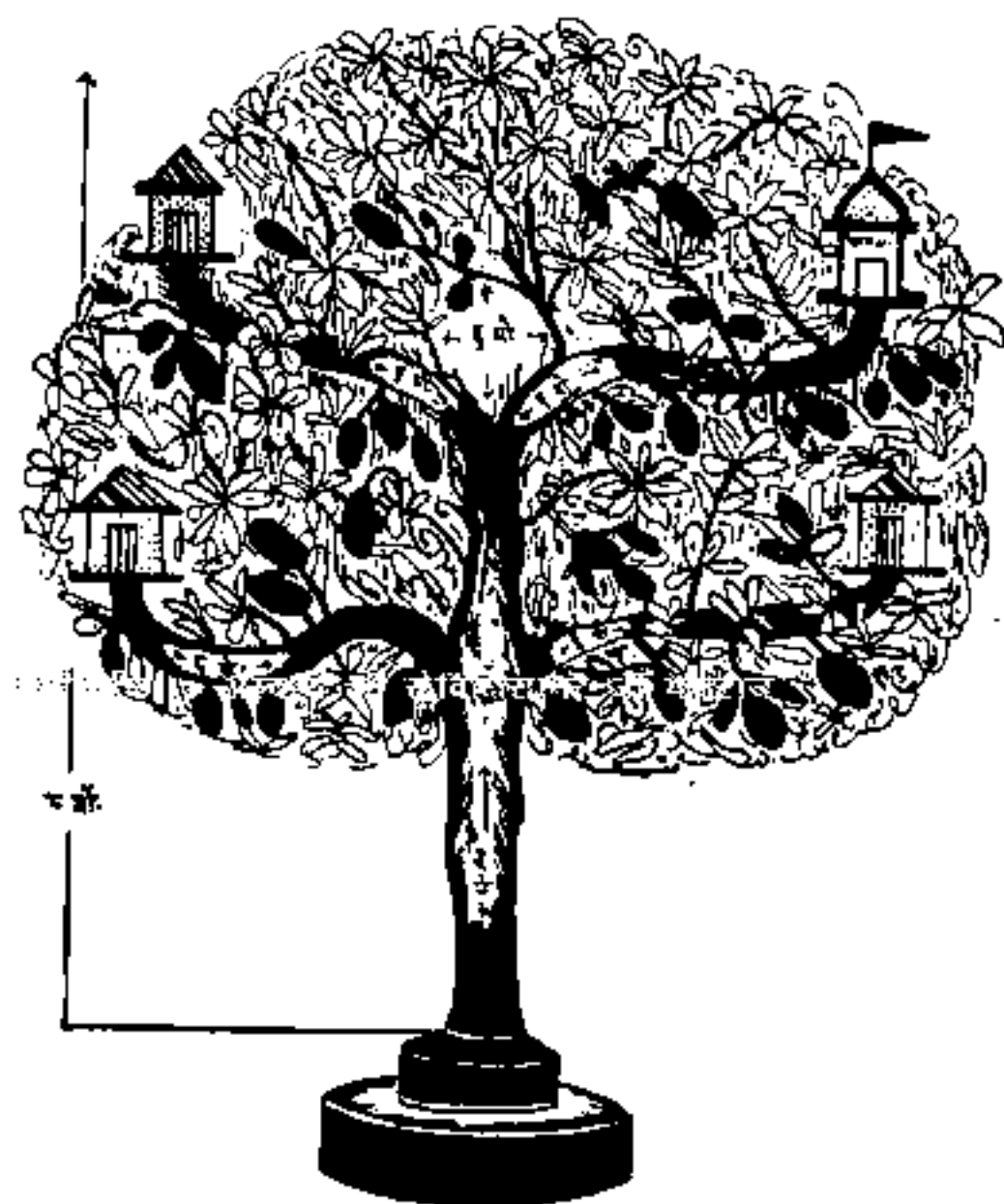
आवर - अनादरक्खा, विवसन्ते चैतरा देवा ॥२२२३॥

अर्थ :— उनमें रमणीय जिनेन्द्रप्रासादसे विभूषित प्रधान जम्बूवृक्षपर आदर एवं अनादर नामक व्यन्तरदेव निवास करते हैं ॥२२२३॥

सम्महंसण - सुद्धा, सम्माहट्ठीण वक्खत्ता दोण्णि ।

सयलं जम्बूवीवं, भुजन्ते एवक - सत्तीजं ॥२२२४॥

अर्थ :— सम्यग्दर्शनसे शुद्ध और सम्यग्दृष्टियोंके प्रेमी वे दोनों देव सम्पूर्ण जम्बूद्वीपको एक छत्र सम्राट्के सदृश भोगते हैं ॥२२२४॥



पूर्वापर विदेहोमें क्षेत्रोंका विभाजन—

पुष्पावर - भागेशु, मंदर - सेलस्त सोल - सज्जेय ।

विजयाणि पुष्पावर - विदेह - नामानि चेदुंति ॥२२२५॥

१६ ।

५९६ ]

तिसोयपष्णसी

[ गाथा । २२२६-२२३१ ]

अर्थ :- मन्दरपर्वतके पूर्व-पश्चिमभागोंमें पूर्व-अपर-विदेह नामक सोलह क्षेत्र स्थित हैं ॥२२२५॥

सीवाए उभएसुं, पासेसुं अहु अहु कय - सीमा ।

चउ-चउ-वक्सारोहि, विजया तिहि-तिहि विभंग-सरियाहि ॥२२२६॥

अर्थ :- सीतानदीके दोनों पार्श्वभागोंमें चार-चार वक्सार पर्वत और तीन-तीन विभंग-नदियोंसे सीमित आठ-आठ क्षेत्र हैं ॥२२२६॥

पुण्व - विदेहस्संते, जंबूदीवस्त जगदि - पासम्मि ।

सीदाए दो - तडेसुं, वेवारण्णं ठिदं रम्मं ॥२२२७॥

अर्थ :- पूर्व विदेहके अन्तमें जम्बूद्वीपकी जगतीके पार्श्वमें सीतानदीके दोनों किनारोंपर रमणीय देवारण्य स्थित है ॥२२२७॥

सीवोवाए दोसुं, पासेसुं अहु - अहु कय - सीमा ।

चउ-चउ-वक्सारोहि, विजया तिहि-तिहि विभंग-सरियाहि ॥२२२८॥

अर्थ :- सीतोदाके दोनों पार्श्वभागोंमें, चार-चार वक्सारपर्वत और तीन-तीन विभंग-नदियोंसे सीमित आठ-आठ क्षेत्र हैं ॥२२२८॥

अवर - विदेहस्संते, जंबूदीवस्त जगदि - पासम्मि ।

सीवोवाए - तडेसुं, वेवारण्णं पि चेद्धेवि ॥२२२९॥

अर्थ :- अपर विदेहके अन्तमें जम्बूद्वीपकी जगतीके पार्श्वमें सीतोदानदीके दोनों किनारों-पर वृत्तारण्य भी स्थित है ॥२२२९॥

दोसुं पि विदेहेसुं, वक्सारगिरि विभंग - सिधूओ ।

चेद्धंते एकैककं, अंतरिदूणं सहाधेयं ॥२२३०॥

अर्थ :- दोनों ही विदेहोंमें स्वभावसे एक-एकको व्यवहित करके वक्सारगिरि और विभंग नदियाँ स्थित हैं ॥२२३०॥

सीवाए उत्तर - तडे, पुण्वस्ति अहसास - केवोवो ।

गोलस्त वक्सारंते, पदाहिण्येण हवन्ति ते विजया ॥२२३१॥

अर्थ :—ये क्षेत्र सीतानदीके उत्तर किनारेसे मद्रशालवेदीके पूर्व और नीलपर्वतके दक्षिणान्तर्गते प्रदक्षिणारूपसे स्थित हैं ॥२२३१॥

विदेहस्थ वत्तीस क्षेत्रोंके नाम—

कच्छा सुकच्छा महाकच्छा तुरिमा कच्छकावती ।  
आवत्ता संगलावत्ता पोक्खला पोक्खलावती ॥२२३२॥

वत्सा सुवत्सा महावत्सा तुरिमा वत्सकावती ।  
रम्मा सुरम्मा वि य, रमणिज्जा मंगलावती ॥२२३३॥

पम्मा सुपम्मा महापम्मा तुरिमा पम्माकावती ।  
संखा एलिणा एणामा, कुमुदा सरिदा तहा ॥२२३४॥

वप्पा सुवप्पा महावप्पा तुरिमा वप्पाकावती ।  
गंधा सुगंध - एणामा, य गंधिला गंधमालिनी ॥२२३५॥

अर्थ :—१ कच्छा, २ सुकच्छा, ३ महाकच्छा, ४ कच्छकावती ५ आवती, ६ सांगलावती, ७ पुष्कला, ८ पुष्कलावती; १ वत्सा, २ सुवत्सा, ३ महावत्सा, ४ वत्सकावती, ५ रम्मा, ६ सुरम्मा, ७ रमणीया, ८ मंगलावती; १ पम्मा, २ सुपम्मा, ३ महापम्मा, ४ पम्माकावती, ५ संखा, ६ नलिना, ७ कुमुदा, ८ सरित्; १ वप्पा, २ सुवप्पा, ३ महावप्पा, ४ वप्पाकावती, ५ गंधा, ६ सुगंधा, ७ गन्धिला और ८ गन्धमालिनी; इस प्रकार क्रमशः ये उन आठ-आठ क्षेत्रोंके नाम हैं ॥२२३२-२२३५॥

पूर्वविदेहस्थ आठ गजदन्तोंके नाम—

गामेण धित्तकूडो, पडमो विविओ हवे जलिनकूडो ।  
तदिमो वि पउमकूडो, चउत्थमो एवक - सेलो य ॥२२३६॥

पंचमओ वि तिकूडो, छट्ठो वेसमण - कूड - जामो य ।  
सत्तमओ तह अजणसेलो आरजण' सि अट्टमओ ॥२२३७॥

एवे गयवंतगिरी पुब्बविबेहम्मि अट्ट चेट्टे ।  
सखे पदाहिजेमं, उववण - पोक्खरणि - रमणिज्जा ॥२२३८॥

अर्थ :—नामसे प्रथम चित्रकूट, द्वितीय नलिनकूट, तृतीय पद्मकूट, चतुर्थ एकशील, पाँचवाँ त्रिकूट, छठा वैष्णवकूट, सातवाँ अञ्जनशील तथा आठवाँ आभाञ्जन, इसप्रकार उपवन एवं वापिकाओंसे रमणीय ये सब आठ गजदन्तपर्वत पूर्वविदेहमें प्रवक्ष्यारूपसे स्थित हैं ॥२२३६-२२३८॥

अपर विदेहस्थ आठ गजदन्त—

सङ्कावदि-विजटावदि-आसीविसया सुहावहो सुरिमो ।

अङ्गिरि - सूर - पञ्चद - नागगिरी देवमालो लि ॥२२३९॥

अङ्गिरि - सूर - पञ्चद - नागगिरी देवमालो लि ॥२२३९॥

सखे पदाहिणेनं, उवचन - वेदी - पङ्कवि - जला ॥२२४०॥

अर्थ :—अङ्गावान्, विजटावान्, आसीविषक, सुहावह, अङ्गिरि सूर्यपर्वत नागगिरी एवं देवमाल, इसप्रकार उपवन-वेदी-आदिसे संयुक्त ये सब आठ गजदन्तपर्वत प्रवक्ष्यारूपसे अपर-विदेहमें स्थित हैं ॥२२३९-२२४०॥

पूर्वापर विदेहस्थ विभंगनदियोंके नाम—

वह - गह - पञ्चवदीयो, तत्तजला पञ्चमी य मत्तजला ।

उन्मत्तजला छद्दी, पुष्पविदेहे विभंगनई ॥२२४१॥

अर्थ :—ब्रह्मवती, ग्राहवती, पङ्कवती, तत्तजला, मत्तजला और उन्मत्तजला, ये छह विभंग-नदियाँ पूर्वविदेहमें हैं ॥२२४१॥

क्षीरोदो सीतोदा, ओसहवाहिणि - गभीरमालिनीया ।

फेणुम्मिमालिनीओ अवर - विवेहे विभंग - सरिमाओ ॥२२४२॥

अर्थ :—क्षीरोदा, सीतोदा, ओषधवाहिनी ( ओतवाहिनी ), गभीरमालिनी, फेनमालिनी और ऊर्मिमालिनी ये छह विभंगनदियाँ अपरविदेहमें स्थित हैं ॥२२४२॥

[ चित्र अगले पृष्ठ पर देखिये ]



**कच्छादि क्षेत्रोंका विस्तार—**

**शोणि सहस्ता बु-सया, बारस-बुता समंस बट्ट - हिवा ।**

**पुष्पावरेण हंडो 'एबकेबके' होवि विजयम्मि ॥२२४३॥**

२२१२ । ३ ।

**अर्थ :—**प्रत्येक क्षेत्रका पूर्वापर ( पूर्वसे पश्चिम तकका ) विस्तार दो हजार दोसौ बारह योजन और आठसे भाजित सात अंश ( २२१२½ योजन ) प्रमाण है ॥२२४३॥

**वक्षार पर्वत और विभंगा नदियोंका विस्तार—**

**पंच-सय-जोयगाणि, पुह पुह वक्षार-सेख-विबल्लंभो ।**

**निय - निय - कुंङ्कप्पत्ती, ठाणे कोसाणि पण्णासा ॥२२४४॥**

५०० । को ५० ।

**वास्तो विभंय - कत्तोसिनीज<sup>१</sup> सव्वाण होवि पत्तेवकं ।**

**सीदा - सीतोद - नई - पवेस - देसम्मि पंच-सय-कोसा ॥२२४५॥**

५०० ।

**अर्थ :—**वक्षारशंलोकका पृथक्-पृथक् विस्तार पाँचसी ( ५०० ) योजन और सब विभंग-नदियोंमेंसे प्रत्येकका विस्तार अपने-अपने कुण्डके पास उत्पत्तिस्थानमें पचास ( ५० ) कोस तथा सीता-सीतोदा नदियोंके पास प्रवेश स्थानमें पाँचसी ( ५०० ) कोस प्रमाण है ॥२२४४-२२४५॥

**वनोंका विस्तार—**

**पुष्पावरेण जोयव, उत्ततीस - सयानि तह य बाणीसं ।**

**हंडो देवारण्णे, भूवारण्णे य पत्तेवकं ॥२२४६॥**

२६२२ ।

**अर्थ :—**देवारण्य और भूतारण्यमेंसे प्रत्येकका पूर्वापर विस्तार दो हजार नौ सौ बाईस ( २६२२ ) योजन प्रमाण है ॥२२४६॥

यथा—  
क्षेत्र आदिके प्रमाण निकालनेका नियम—

विजय-गयवंत-सरिया, देवारण्यणि भद्रशाल - वनं ।

शिय-णिय-फलेहि गुणिदा, कावध्या मेरु - फल-जुता ॥२२४७॥

एवाणं रचिदूणं, पिडफलं जोयणेक्क - लक्खम्मि ।

सोहिय णियंक्क - भजिजे, जं लक्खंइ तस्स सो वासो ॥२२४८॥

अर्थ :—विजय ( क्षेत्र ), गजदन्त, नदी, देवारण्य और भद्रशाल, इनको अपने-अपने फलेसे ( क्रमशः १६, ८, ६, २, २ से ) गुणा करके मेरु फलमें जोड़ें, पश्चात् इनको जोड़नेपर जो लब्ध प्राप्त हो उसको एक लाख योजनमेंसे घटाकर अपने-अपने अंकोंका भाग देनेपर जो प्रमाण आवे उतना उस क्षेत्रका विस्तार होता है ॥२२४७-२२४८॥

विशेषार्थ :—जिस मेरु, क्षेत्र, गजदन्त, विभंगा नदी, देवारण्यवन एवं भद्रशाल आदिका पूर्व-पश्चिम व्यास प्राप्त करना हो उसे छोड़कर अन्य सभीके अपने-अपने व्यासोंको अपने-अपने गुणाकार ( क्षेत्र व्यास २२१२६ यो० × १६, कलार व्यास ५०० यो० × ८, विभंगा व्यास १२५ यो० × ६, देवारण्य २६२२ यो० × २ और भद्रशालका व्यास २२००० यो० × २ ) से गुणाकर मेरुव्यास १०००० योजन में जोड़ें और योगफलको जम्बूद्वीपके व्यासमेंसे घटानेपर जो अवशेष रहे उसे विवक्षित क्षेत्र आदिके प्रमाणसे भाजित करनेपर इष्ट क्षेत्र आदिका व्यास प्राप्त हो जाता है ।

क्षेत्रविस्तार—

चउ-णव-पण-चउ-छवका सोहिय अंकवक्केण वासावो ।

सेसं सोलस - भजिजं, विजयाणं जाण विक्खंभो ॥२२४९॥

६४५६४ । २२१२६ ।

अर्थ :—चार, नौ, पाँच, बार और छह इस अंक क्रमसे उत्पन्न हुई ( ६४५६४ ) संख्याको जम्बूद्वीपके विस्तारमेंसे कम करके जो शेष रहे उसमें सोलहका भाग देनेपर जो प्राप्त हो उसे क्षेत्रोंके विस्तारका ( २२१२६ यो० ) प्रमाण जानना चाहिए ॥२२४९॥

विशेषार्थ :—इस गाथामें विदेहस्थ सोलह क्षेत्रोंमेंसे एक क्षेत्रका विस्तार निकालनेकी प्रक्रिया दर्शाई गयी है । यथा—



[ ( वक्षार व्यास  $५०० \times ८$  स्व संख्या ) =  $४०००$  ] + [ ( विभंगा व्यास  $१२५ \times ६$  ) =  $७५०$  ] + [ ( दे० व्या०  $२६२२ \times २$  ) =  $५२४४$  ] + [ ( थ० व्या०  $२२००० \times २$  ) =  $४४०००$  ] + मेरु व्यास  $१००००$  यो०— $६४५६४$  यो० ) [ ( जम्बूद्वीपका व्यास  $१०००००$  यो०— $६४५६४$  यो० )  $\div १६$  ] =  $२२१२६$  योजन प्रत्येक क्षेत्रका व्यास ।

वक्षारविस्तार—

छण्णउदि - सहस्साणि, वासावो जोयजाणि अरणिज्जं ।

सेसं अट्ठ - विहसं, वक्षारगिरीण विक्खंभो ॥२२५०॥

६६००० । ५०० ।

अर्थ :—जम्बूद्वीपके विस्तारमेंसे छपानबे हजार ( ६६००० ) योजन कम करके शेषको आठसे विभक्त करनेपर ( ५०० योजन ) वक्षार पर्वतोंका विस्तार निकलता है ॥२२५०॥

विशेषार्थ :—[ (  $२२१२६ \times १६$  ) + (  $१२५ \times ६$  ) + (  $२६२२ \times २$  ) + (  $२२००० \times २$  ) +  $१००००$  ] =  $६६०००$  योजन ।

=  $\frac{१००००० - ६६०००}{५} = ५००$  योजन विस्तार प्रत्येक वक्षार पर्वतका प्राप्त हुआ ।

विभंग-विस्तार—

अवणउदि-सहस्साणि, विक्खंभादो' य दु-सय पण्णासा ।

सोहिय विभंग - सरिया - वासो सेसस्स छम्भागे ॥२२५१॥

६६२५० । १२५ ।

अर्थ :—जम्बूद्वीपके विस्तारमेंसे निम्नानबे हजार दोसौ पचास ( ६६२५० यो० ) कम करके शेषके छह भाग करने पर विभंगनदियोंका विस्तार—( १२५ यो० ) प्रमाण जाना जाता है ॥२२५१॥

विशेषार्थ :—[ (  $२२१२६ \times १६$  ) + (  $५०० \times ८$  ) + (  $२६२२ \times २$  ) + (  $२२००० \times २$  ) +  $१००००$  ] =  $६६२५०$  योजन ।

=  $\frac{१००००० - ६६२५०}{६} = १२५$  योजन व्यास ।

देवारण्य विस्तार—

चउजउवि-सहस्साणि, सोहिय वासा छपण-एक-सयं ।

सेसस्स भद्रमेसं, देवारण्णाण विक्खंभो ॥२२५२॥

६४१५६ । २६२२ ।

अर्थ :—जम्बूद्वीपके विस्तारमेंसे चौरानव हजार एकसौ छपन (६४१५६ यो०) घटाकर शेषके अर्धभाग प्रमाण देवारण्योंका विस्तार है ॥२२५२॥

विलेखार्थ :—[ ( २२१२३ × १६ = ३५४०६ ) + ( ५०० × ८ = ४००० ) + ( १२५ × ६ = ७५० ) + २२००० × २ = ४४००० ) + १०००० ] = ६४१५६ योजन ।

$$= \frac{१००००० - ६४१५६}{२} = १६२२ \text{ योजन व्यास ।}$$

वार्तिक :- अत्रार्थ श्री तुलसीदासजी महाराज  
भद्रशासका विस्तार—

छपण्य - सहस्साणि, सोहिय वासाओ जियणाणं च ।

सेसं वोहि विहत्तं, विक्खंभो भद्रशासस्स ॥२२५३॥

५६००० । २२००० ।

अर्थ :—जम्बूद्वीपके विस्तारमेंसे छपन हजार ( ५६००० ) योजन कम करके शेषको दोसे विभक्त करने पर जो प्राप्त हो उसे भद्रशासनके विस्तारका ( २२००० यो० ) प्रमाण जानना चाहिए ॥२२५३॥

अर्थ :—[ ( २२१२३ × १६ = ३५४०६ ) + ( ५०० × ८ = ४००० ) + ( १२५ × ६ = ७५० ) + ( २६२२ × २ = ५२४४ ) + १०००० ] = ५६००० योजन

$$= \frac{१००००० - ५६०००}{२} = २२००० \text{ योजन व्यास ।}$$

सुदर्शनमेका मूल विस्तार—

विक्खंभाओ सोहिय, चउवि - सहस्साणि जियणाणं च ।

अवसेसं जं लद्धं, सो मंदर - मूल - विक्खंभो ॥२२५४॥

३०००० । १०००० ।

अर्थ :—जम्बूद्वीपके विस्तारमेंसे नब्बे हजार ( ६०००० ) योजन कम कर देने पर जो शेष रहे उतना मध्यस्थानका मूलमें विस्तार प्रत्येकका प्रमाण है ॥२२५३॥

विशेषार्थ :—( २२१२३ × १६ ) + ( ५०० × ८ ) + ( १२५ × ६ ) + ( २६२२ × २ ) + ( २२००० × २ ) = ६०००० योजन ।

= १००००० — ६०००० = ४०००० योजन मुमेरुका मूल व्याप्त ।

पूर्वापर विदेहका विस्तार—

चण्डवज्ज - सहस्तराणि, सोहिय बीबस्स' बास-मज्झम्मि ।

सेसद्ध' पुब्बावर - विदेह - माधं खु पसेवकं ॥२२५४॥

५४००० । २३००० ।

अर्थ :—जम्बूद्वीपके विस्तारमेंसे चौवन हजार ( ५४००० ) घटाकर शेषको घाटा करनेपर पूर्वापर विदेहमेंसे प्रत्येकका प्रमाण ( २३००० योजन ) निकलता है ॥२२५४॥

विशेषार्थ :—अक्षशालका विस्तार ( २२००० × २ ) = ४४००० + १०००० मेघका मूल विस्तार = ५४००० योजन ।

=  $\frac{१००००० - ५४०००}{२} = २३०००$  योजन पूर्व अथवा अपर विदेहका विस्तार ।

क्षेत्र, वक्षार और विभंगाकी लम्बाईका प्रमाण—

सीता - रुवं सोहिय, विदेह - रुवंम्मि सेस - इत्तमेत्तो ।

आयामो विजयानं, वक्षार - विभंग - सरियारं ॥२२५५॥

सोणस-सहस्तराणि, बाणउदी समहिया थ पंच - सया ।

जो भागा पसेवकं, विजय - प्यहुदीण बीहस्स' ॥२२५६॥

१६५६२ । क ३ ।

अर्थ :—विदेहके विस्तारमेंसे सीतानदीका विस्तार घटा देनेपर शेषके अर्धभाग प्रमाण क्षेत्र, वक्षार पर्वत और विभंगा नदियोंकी सम्बाईका प्रमाण होता है। इन क्षेत्रादिकमेंसे प्रत्येककी सम्बाई सोलह हजार पांचसौ बानबं योजन और एक योजनके उन्नीस भागोंमेंसे दो भाग अधिक है ॥२२५६-२२५७॥

विशेषार्थ :—पूर्वापर विदेहक्षेत्रोंका पृथक्-पृथक् विस्तार (दक्षिणोत्तर चौड़ाई)  $३३६८४\frac{१}{२}$  योजन है। इन क्षेत्रोंमें सीता-सीतोदा नामकी दो प्रमुख नदियाँ बहती हैं। इन्हें समीप निर्गमस्थान पर इनकी चौड़ाई ५० योजन और समुद्र प्रवेशकी चौड़ाई ५०० योजन है। विदेह विस्तारमेंसे नदी विस्तार घटाकर शेषको आधा करनेपर  $= \frac{३३६८४\frac{१}{२} - ५००}{२} = १६५६२\frac{१}{४}$  योजन प्राप्त होते हैं, जो विदेह स्थित  $३३\frac{१}{२}$  नदियाँ,  $३६$  वक्षारनदियाँ,  $३६$  विभंगनदियाँ और  $३६$  वक्षारनदियाँ आदि नदियोंकी सम्बाई है। अर्थात् इन क्षेत्रादिकमेंसे प्रत्येककी लम्बाईका प्रमाण  $१६५६२\frac{१}{४}$  योजन है।

विभंग नदीकी परिवार नदियाँ—

अट्ठावीस - सहस्ता, एक्केक्काए विभंग - सिधूए ।

परिवार - बाहिणीओ, बिचित्त - रुवाओ रेहंति ॥२२५८॥

२०००० ।

अर्थ :—एक-एक विभंगनदीकी विचित्ररूपवाली अट्ठाईस हजार ( २०००० ) परिवार नदियाँ शोभायमान हैं ॥२२५८॥

कन्धा देशका निरूपण—

सीवाय उत्तर - तडे, पुष्पसे महसाल - बेबीबी ।

गोलाचल - बक्सणबी, पच्छिमदो बित्त - कूडस्त ॥२२५९॥

चेट्टेवि कच्छ-शामो, 'विजयो वण-गाम-रायर-सेवेहि ।

कब्बड - मडब - पट्टण - बोणामुह - पट्टविणहि बुदो ॥२२६०॥

पार्श्वोर्ध्वक :- आचार्य श्री सुविप्रिस्वाम्य श्री यशस्वराज

बुगाडबीहि<sup>१</sup> जुत्तो, अंतरबीवेहि कुबिसवासेहि ।

सेसासमंत - रम्मो, सो रमणायर - भंडिवो विजयो ॥२२६१॥

अर्थ :- मद्रासालवेदीके पूर्व, नीलगिरीके दक्षिण ओर चित्रकूटके पश्चिममें स्थित सीता-नदीके उत्तर तटपर कच्छा नामक देश स्थित है । यह रमणीय कच्छादेश, वन, ग्राम, नगर, खेड, कबंठ, मटंब, पत्तन एवं द्रोणमुखादिसे युक्त, दुर्गाटवियों, अन्तरद्वीपों एवं कुबिसवासों सहित समस्ततः रमणीय और रत्नाकरोंसे अलंकृत है ॥२२५९-२२६१॥

गामाणं छग्नउद्यो - कोडोओ रयज-भवरण-भरिवाणं ।

परिवो 'कुक्कुड - संघण - पमाण - विज्जवाल-भूमिजं ॥२२६२॥

९६००००००० ।

अर्थ :- उसके चारों ओर रत्नमय भवनोंसे परिपूर्ण और कुक्कुटके उड़ने प्रमाण अन्तराल-भूमियोंसे युक्त छग्नानदें करोड़ ( ९६००००००० ) ग्राम हैं ॥२२६२॥

जयरणि पंचहसरि-सहस्स-भेत्ताणि विविह-भवरणणि ।

खेडाणि सहस्साणि, सोलस रमणिज्ज - गिलयाणि ॥२२६३॥

७५००० । १६००० ।

अर्थ :- प्रत्येक क्षेत्रमें विविध भवनोंसे युक्त पंचस्र हजार ( ७५००० ) नगर और रमणीय आलयोंसे विभूषित सोलह हजार ( १६००० ) खेड होते हैं ॥२२६३॥

चउतोस - सहस्साणि, कव्वजया होंति तह मडंवाणं ।

चत्तारि सहस्साणि, अडवाल - सहस्स पडुजया ॥२२६४॥

३४००० । ४००० । ४०००० ।

अर्थ :- इसके अतिरिक्त चौतीस हजार ( ३४००० ) कबंठ, चार हजार ( ४००० ) मटंब और अड़तालीस हजार ( ४०००० ) पत्तन होते हैं ॥२२६४॥

अवणजवि - सहस्साणि, हवन्ति दोणामुहा मुहावासा ।

चोदस - सहस्स - मेत्ता, संवाहणया परम - रम्मा ॥२२६५॥

६६००० । १४००० ।

अर्थ :—सुखके स्थानभूत निन्यानबे हजार ( ६६००० ) द्रोणमुख और चौदह हजार ( १४००० ) प्रमाण परम-रमणीय संवाहन होते हैं ॥२२६५॥

अट्टाबीस - सहस्सा, हवन्ति दुग्गाढवीओ छप्पण्णं ।

अन्तरदीवा सत्त य, सयाणि कुक्खी - णिवासारं ॥२२६६॥

२८००० । ५६ । ७०० ।

अर्थ :—अट्टाईस हजार ( २८००० ) दुर्गाढवियाँ, छप्पन ( ५६ ) अन्तरदीप और सात सौ ( ७०० ) कुक्षि-निवास होते हैं ॥२२६६॥

छब्बीस - सहस्साणि, हवन्ति रयणायरा विवित्तेहि ।

परिपुण्णा रयणोहि, फुरंस - वर - किरण - जालेहि ॥२२६७॥

२६००० ।

अर्थ :—देदीप्यमान उत्तम किरणोंके समूहसे संयुक्त तथा विविन्न रत्नोंसे परिपूर्ण छब्बीस हजार ( २६००० ) रत्नाकर होते हैं ॥२२६७॥

सीदा-तरंगिणी - जल-संभव - सुस्संभुरासि - तीरम्मि ।

विप्पंत - कणध - रयणा, पट्टण - दोणामुहा होंति ॥२२६८॥

अर्थ :—सीतानदीके जलसे उत्पन्न हुए अद्भुत-समुद्रके किनारे पर देदीप्यमान सुवर्ण तथा रत्नोंवाले पत्तन और द्रोणमुख होते हैं ॥२२६८॥

सीदा - तरंगिणीए, उत्तर - तीरम्मि उवसमुहम्मि ।

छप्पण्णंतर - बीवा, समंत - वेदी - पट्टवि - जुत्ता ॥२२६९॥

अर्थ :—सीतानदीके उत्तरतटपर उपसमुद्रमें चारों ओर वेदी आदि सहित छप्पन अन्तरदीप होते हैं ॥२२६९॥

नाना-रयण-विणिम्मिद-जिणिद-पासाव-भूमिवा रम्मा ।

मिच्छस<sup>१</sup> - भवण - हीणा, ग्राम - प्पहुवी विरायसे ॥२२७०॥

अर्थ :- अनायतनोंसे रहित वे रमणीय ग्रामादिक नाना प्रकारके रत्नोंसे निर्मित जितेन्द्र-प्रासादोंसे विभूषित हुए शोभायमान होते हैं ॥२२७०॥

कच्छा देश स्थित ग्रामादिकोंकी विशेषताएँ—

गोधूम-कलम-तिल-अव-घणक-प्पहुदीहि<sup>२</sup> घण-संपुण्णा ।

दुग्धिबल - मारि - मुक्का, निच्छुच्छव-सूर-गोव-र वा ॥२२७१॥

अर्थ :- ये ग्रामादिक गेहूँ, चावल, तिल, जौ और चना इत्यादि धान्योंसे परिपूर्ण हैं; दुग्धिक्ष एवं मारी आदि रोगोंसे रहित हैं तथा नित्य उत्सवमें बजने वाले तूर्य और गाय जाने वाले गीतोंके नाद सुनाई देते हैं ॥२२७१॥

कच्छ-विजयम्मि विविहा, वणसंडा मंडिवा विचिसेहि ।

रुक्खेहि कुसुम - पत्तव - फल - भर - सोहंस-<sup>३</sup>साहेहि ॥२२७२॥

अर्थ :- कच्छा-क्षेत्रमें फूल, पत्र एवं फलोंके भारसे शोभायमान शाखाओं वाले नाना वृक्षोंसे सुशोभित विविध वन-खण्ड हैं ॥२२७२॥

पोक्खरणी - वावीहि, विधित्त - सोवाण-रइव-वारहि ।

सोहेवि कच्छ - विजयो, कमलुप्पल - वण - सुगंधाहि ॥२२७३॥

अर्थ :- यह कच्छा-देश विचित्र लोपानोंसे रचित द्वारोंवाली और कमल एवं उत्पल-वनोंकी सुगन्ध युक्त पुष्करिणियों तथा वापिकाओंसे शोभायमान है ॥२२७३॥

वर्षाका वर्णन—

कच्छम्मि सहामेघा, भमरंजण - सामला महाकाया ।

सद्य वरिसंति वासा - गत्तेसु<sup>४</sup> सस सस दिवसाइ ॥२२७४॥

अर्थ :- कच्छा-देशमें अमर और घञ्जन वृक्ष काले सात प्रकारके महकाय महामेघ वर्षाकाल ( १२० दिनों ) में सात-सात दिनके बाद सात-सात दिन तक बरसते हैं ॥२२७४॥

१. द. व. क. ज. य. उ. मिच्छमवण्णाहीणा । २. द. व. क. ज. य. उ. वण्णा । ३. द. क. व.

वरिसंति दोल - मेधा, बारस कुंवेनु - सुंदरायारा ।

बीसुत्तरमेक - सयं, सरिबलनं तत्थ जायंति ॥२२७५॥

अर्थ :—कुन्दपुष्प और चन्द्रमा सदृश सुन्दर आकारवाले वारह द्रोणमेघभी बरसते हैं ।  
वहाँ एकसौ बीस नदियोंके प्रपात उत्पन्न होते हैं ॥२२७५॥

मार्गदर्शक :- अथर्व की सुविधिसंसार की व्यवस्था  
वक्ष्य व्यवस्था—

बहुविह-विषय-बुधा, क्षत्रिय-भइसाण तह य सुदानं ।

वंसा हवंति कण्ठे, तिणिण विवय तत्थ ण हु अण्णे ॥२२७६॥

अर्थ :—कच्छा-देशमें बहुत प्रकारके भेदोंसे युक्त क्षत्रिय, वैश्य और शुद्र ये तीन ही वंश हैं,  
अन्य वंश वहाँ नहीं हैं ॥२२७६॥

काल व्यवस्था—

परचक्र-भीदि-रहिदो, अण्णाय - पयङ्गणेहि परिहोणो ।

अइवहि - अणावहो - परिचचो सव्व - कालेसु ॥२२७७॥

अर्थ :—यह देखा सब कालोंमें परचक्रकी भीति तथा अन्याय-प्रवृत्तिसे विहोत रहता है  
और अतिवृष्टि-अनावृष्टिसे परित्यक्त है । अर्थात् वहाँ अतिवृष्टि-अनावृष्टिकी बाधा नहीं होती और न  
अकाल ही पड़ता है ॥२२७७॥

धर्माभासका अभाव—

अउकुंवरकल - सरिसा, धम्माभासा ण तत्थ 'सुव्वंति ।

सिव-बन्ध-विण्णु-बंडी-रवि-ससि - बुद्धाच्च ण पुरासि ॥२२७८॥

अर्थ :—उदुम्बर फलोंके सदृश धर्माभास वहाँ सुने नहीं जाते । शिव, ब्रह्मा, विष्णु, बंडी,  
रवि, ससि एवं बुद्धके नगर ( स्थान ) वहाँ नहीं हैं ॥२२७८॥

पासंड - समय - कत्तो, सम्माइहो - जणोघ - संखण्णो ।

णवरि बिसेसो केसि, पयट्टे भाव - मिच्छत्त ॥२२७९॥



अर्थ :—बहु देश पाखण्ड सम्प्रदायोंसे रहित है और सम्यग्दृष्टि जनोंके समूहसे व्याप्त है । विशेष इतना है कि यहाँ किसी-किसी जीवोंके कच्छादिभाग विद्यमान रहता है ॥२२८१॥

उपसमुद्रका वर्णन—

मागध-वरतनुर्बेहि य, पभास - दीर्बेहि कच्छ-विजयस्स ।

सोहेवि उवसमुद्रो, वेवो - चउ - तोरणेहि खुवो ॥२२८०॥

अर्थ :—वेदो और चार तोरणोंसे युक्त कच्छादेशका उपसमुद्र मागध, वरतनु एवं प्रभास द्वीपोंसे शोभायमान है ॥२२८०॥

कच्छादेशगत मनुष्योंकी आयु और उत्सेधादि—

संतोमुहुसमवरं, कोढी पुष्पाण होवि उक्कस्स ।

आउस्स य परिमाणं, थराण एारीण कच्छम्मि ॥२२८१॥

पुष्प १००००००० ।

अर्थ :—कच्छादेशमें नर-नारियोंकी आयुका प्रमाण जघन्यरूपसे अन्तर्मुहूर्त और उत्कृष्ट रूपसे पूर्वकोटि ( १००००००० ) है ॥२२८१॥

उक्खेहो वंडाणि, पंच - सया विविह - वण्णमावणा ।

जउसद्धो पुहुहो, थंगेसु एराण एारीण ॥२२८२॥

५०० । ६४ ।

अर्थ :—वहाँपर विविध वर्णोंसे युक्त नर-नारियोंके शरीरकी ऊँचाई पचिसी ( ५०० ) धनुष और पृष्ठभागकी हड्डियाँ चौसठ ( ६४ ) होती हैं ॥२२८२॥

कच्छादेशगत विजयार्थका वर्णन—

कच्छस्स य बहुमज्जे, सेलो जामेण वोह - विजयवुढो ।

जोयण - सवड्ड - वासो, सम - वोहो वेत - वासेण ॥२२८३॥

५० । २२१२ । १ ।

अर्थ :—कच्छादेशके बहुमध्यभागमें पचास (५०) योजन विस्तारवाला और देश-विस्तार समाने ( २२१२६ योजन ) लम्बा 'दीर्घविजयाघ' नामक पर्वत है ॥२२८३॥

सम्भाओ वण्णाणाओ, भणिवा वर-भरहसेस-विजयइहे ।

एवस्सि जावम्भा, णवरि जिसेसं जिक्खेमि ॥२२८४॥

अर्थ :—उत्तम भरतक्षेत्र सम्बन्धी विजयार्धके विषयमें जैसा विवरण कहा गया है, वैसा ही सम्पूर्ण विवरण इस विजयार्धका भी समझना चाहिए । उक्त पर्वतकी अपेक्षा यहाँ जो कुछ विशेषता है उसका निरूपण करता हूँ ॥२२८४॥

विज्जाहाराण तस्सि, पत्तेक्कं वो - तड्ढेसु णयरणि ।

पंचावम्भा होंति हु, कूडाण य अण्ण - जामाणि ॥२२८५॥

अर्थ :—इस पर्वतके दोनों तटोंमेंसे प्रत्येक तटपर विद्याधरोंके पचपन नगर हैं । यहाँ कूटोंके नाम भरतक्षेत्रके विजयार्धके कूटोंसे भिन्न हैं ॥२२८५॥

सिद्धस्य-कण्ड-स्रंढा, पुष्पा-विजयइह-माणि-तिमिसगुहा ।

कच्छो वेसमणो जव, यामा एवस्स कूडाण ॥२२८६॥

अर्थ :—सिद्ध, कच्छा, खण्डप्रपात, पूर्णभद्र, विजयार्ध, माणिभद्र, तिमिसगुह, कच्छा और वैश्रवण ये क्रमशः इस विजयार्धके ऊपर स्थित नौ कूटोंके नाम हैं ॥२२८६॥

सख्खेसुं कूडेसुं, मणिमय - प्रासाव - सोहमाणेसुं ।

वेहुंति अट्ठकूडे, ईसाणिइस्स वाहुरा वेवा ॥२२८७॥

अर्थ :—मणिमय प्रासादोंसे शोभायमान इन सब कूटोंमेंसे आठ कूटोंपर ईशानेन्द्रके वाहन-देव रहते हैं ॥२२८७॥

कच्छादेशमें छह-खण्डोंका विभाजन—

णीसाचल - वविसणवो, उववण-वेवीए' वविसणे पासे ।

कुंडाणि' वोप्पि वेवी - तोरणा - जुसाणि वेहुंति ॥२२८८॥

वर्णः—नीलपर्वतसे दक्षिणको ओर उपवनवेदीके दक्षिण-पार्श्वभागमें वेदी-तोरणयुक्त दो कुण्ड स्थित हैं ॥२२८८॥

ताजं दक्षिण - तोरण - दारेणं श्लिग्गवा बुधे सरिमा ।

रत्ता - रत्तोवक्ता, पुह पुह गंगाप्र सारिच्छा ॥२२८९॥

वर्णः—उन कुण्डोंके दक्षिण तोरणद्वारसे गगानदीके सदृश पृथक्-पृथक् रक्ता और रक्तोदा नामकी दो नदियाँ निकली हैं ॥२२८९॥

रत्ता - रत्तोवाहि, वेयद्द - गगेण कच्छ - विजयम्मि ।

सम्पत्थ समाणाओ, छक्खंडा णिम्मिवा एवे ॥२२९०॥

वर्णः—रक्ता-रक्तोदा नदियों और विजयार्धपर्वतसे कच्छादेशमें सर्वत्र समान छह खण्ड निमित्त हुए हैं ॥२२९०॥

रक्ता-रक्तोदाकी परिवार नदियाँ—

रत्ता - रत्तोवाओ, जुवाओ सोहस - सहस्समेत्ताहि ।

परिवार - वाहिणीहि, णिक्खं पविसंति सीदोव ॥२२९१॥

१४००० ।

वर्णः—चौरह हजार ( १४००० ) प्रमाण परिवार-नदियोंसे युक्त ये रक्ता-रक्तोदा नदियाँ निम्न सीतानदीमें प्रवेश करती हैं ॥२२९१॥

कच्छादेशगत आर्यखण्ड—

सीवाए उत्तरवो, विजयद्द - गिरिस्स दक्षिणे भागे ।

रत्ता - रत्तोवानं, अक्काखंडं भवेदि विक्खासे ॥२२९२॥

वर्णः—सीतानदीके उत्तर और विजयार्धगिरिके दक्षिणभागमें रक्ता-रक्तोदाके मध्य आर्यखण्ड है ॥२२९२॥

गाणा - अणवव - णिच्चिओ, मट्टारस-वेस-भास-संजुत्तो ।

कुंजर - सुरगावि - जुवो, नर - नारी - मंडिवो रम्भो ॥२२९३॥

अर्थ :—अनेक जनपदों सहित, अठारह देशभाषाओंसे संयुक्त, हाथी एवं अश्वदिकोंसे युक्त और नर-नारियोंसे मण्डित यह आर्यखण्ड रमणीय है ॥२२६३॥

क्षेमा-नगरी—

क्षेमा - नामा लयरो, अज्जासंडस्त होवि मज्झिम्मि ।

एसा अणाइ-विहणा, वर - रयणा सच्चिब - रमणिज्जा ॥२२६४॥

अर्थ :—आर्यखण्डके मध्यमें क्षेमा नामक नगरी है । यह अनादि-निघन है और उत्तम रत्नोंसे श्रवित रमणीय है ॥२२६४॥

कणयमग्नो पायारो, समंतदो तीए होवि रमणिज्जो' ।

चरियकुलस्य - चारु, विविह - पवाया कलप्प - जुवो' ॥२२६५॥

अर्थ :—इसके चारों ओर मार्गों एवं अट्टालकोंसे सुन्दर और विविध पताकाओंके समूहसे संयुक्त रमणीय सुवर्णभय प्राकार है ॥२२६५॥

कमल - वण - मंडिबाए, संजुसो सावियाहि चिउसाए ।

कुसुम - फल - सोहिबेहि, सोहिल्लं बहुविह - वणेहि ॥२२६६॥

अर्थ :—यह प्राकार कमल-वनोंसे मण्डित विस्तृत खाईसे संयुक्त है और फूल तथा फलोंसे शोभित बहुत प्रकारके वनोंसे शोभायमान है ॥२२६६॥

तीए प्रमाण - जोयण, जणसेतो वर - पुरीअ विस्थारो ।

आरस - जोयण - मेत्तं, दोहरां वक्खिणुत्तर - विसासु' ॥२२६७॥

६।१२।

अर्थ :—उत्त उत्तम पुरीका विस्तार प्रमाण-योजनसे नौ योजन प्रमाण और दक्षिण-उत्तर दिशाओंमें सम्पाई बारह योजन प्रमाण है ॥२२६७॥

एकैक-विसा-भागे, बचसंज्ञा विविह-कुसुम-फल-पुष्पा ।

सद्वि-बुध-ति-सय-सिद्धि, पुरीए श्रीरत्न - वर निष्ठुम्भोत्तरेदेहस्य

३६० ।

अर्थ :—उस नगरीके प्रत्येक दिशा-भागमें विविध प्रकारके फल-फूलोंसे परिपूर्ण और क्रीड़ा करते हुए उत्तम ( स्त्री-पुरुषोंके ) युगलों सहित तीन सौ साठ ( ३६० ) संख्या प्रमाण वनसमूह स्थित हैं ॥२२६८॥

एक - सहस्त्र गोडर - वाराण चक्रचट्टि - गयरीए ।

वर - रथज - निष्मिदार्ण, सुस्तय - वाराण पञ्च-सया ॥२२६९॥

१००० । ५०० ।

अर्थ :—चक्रवर्तीको ( उस क्षेमा ) नगरीमें उत्कृष्ट रत्नोंसे निर्मित एक हजार ( १००० ) गोपुरद्वार और पाँचसौ ( ५०० ) लघु द्वार हैं ॥२२६९॥

वारस - सहस्त्र - मेधा, धीहीधो वर - पुरीए रेहंति ।

एक - सहस्त्र - पमाणा, चउ - हृदा सुहृद - संवारा ॥२३००॥

१२००० । १००० ।

अर्थ :—उस उत्कृष्ट पुरीमें सुख पूर्वक गमन करने योग्य बारह हजार ( १२००० ) प्रमाण बोधियाँ और एक हजार ( १००० ) प्रमाण खलुष्य हैं ॥२३००॥

फलह-स्पवाल-मरगय-चामीयर-पडमराय - बहुविमया ।

वर - तोरणेहि रत्ना, पासावा तस्थ चिस्थिष्णा ॥२३०१॥

अर्थ :—वहाँपर स्फटिक, प्रवाल, मरकत, सुवर्ण एवं पञ्चरागादिसे निर्मित और उत्तम तोरणोंसे रमणीय विस्तीर्ण प्रासाद हैं ॥२३०१॥

पोकसरणी - बावीहि, कमलपुष्प-कुमुद-गंध-सुरही सा ।

संपुष्पा जयरी जं, जकवंत - विचिस्त - वय - मासा ॥२३०२॥

गाथा : २३०३-२३०४ ]

चतुर्थो महाहियारो

[ ६१४ ]

अर्थ :- नृत्य करती हुई विचित्र ध्वजाओंके समूहसे युक्त वह नगरी निश्चय ही कमल, उत्पल और कुमुदोंकी गन्धसे सुगन्धित पुष्करिणियों तथा बापिकाओंसे परिपूर्ण है ॥२३०३॥

पङ्कगवण-जिण-मंदिर-रमणिकुशा तीए होंति जिण-भवणा ।

उज्जेह - वास - पट्टविसु, उज्जय्या ताण उवएसो ॥२३०३॥

अर्थ :- ( उस नगरीके ) जिन-भवन पाण्डुकवनके जिन-मन्दिरोंके सदृश रमणीय हैं । उनके उत्सेव-विस्तार आदिका उपदेश विष्णुको हो गया है ॥२३०३॥

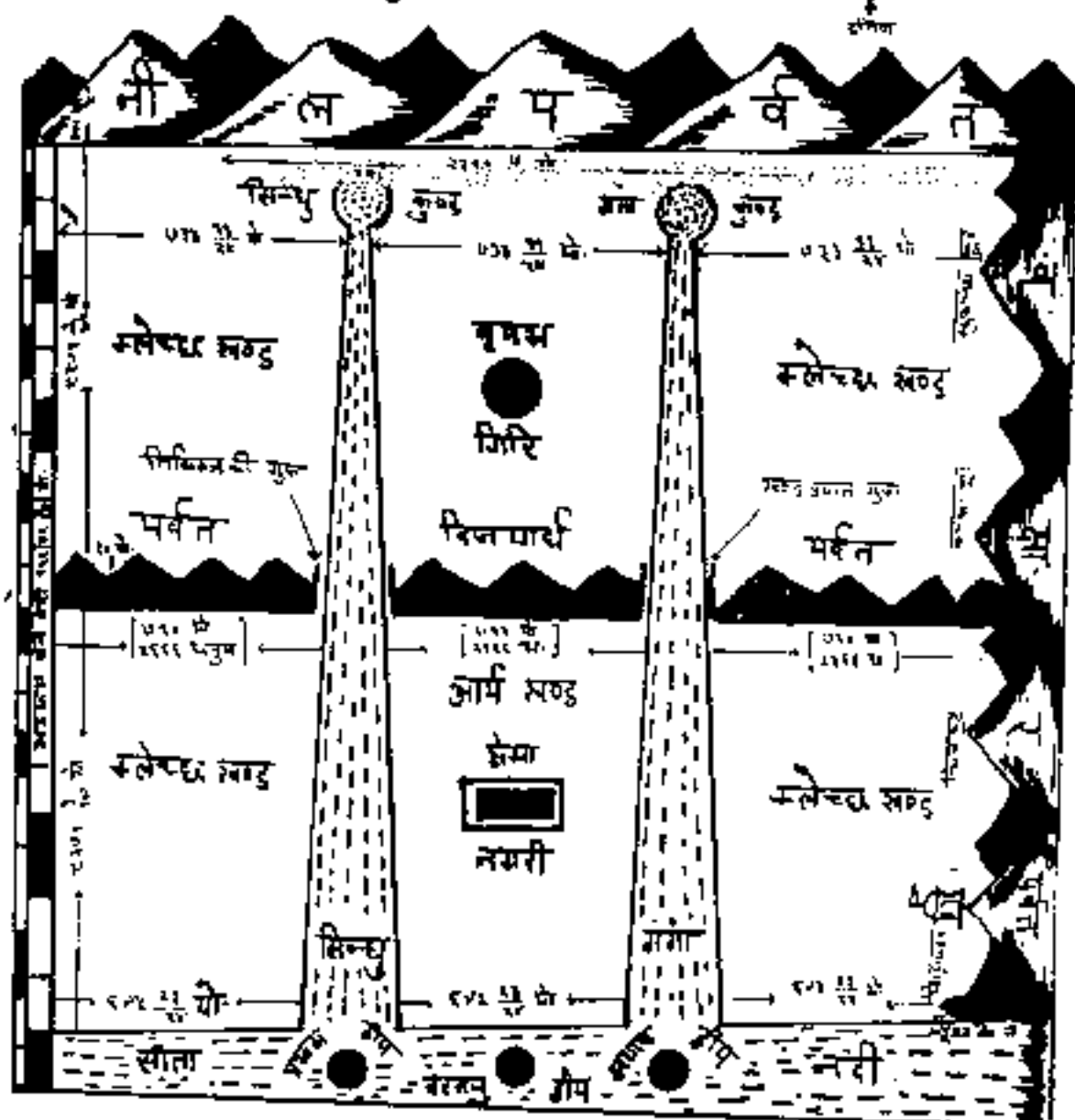
जर - जारी - गिवहेहि, वियक्खणेहि विचित्त - रुयेहि ।

जर - रयण - भूसणेहि, बिबहेहि सोहिवा जयरी ॥२३०४॥

अर्थ :- वह नगरी अद्भुत सौन्दर्य-सम्पन्न है और उत्तम रत्नाभूषणोंसे भूषित अनेक प्रकारके विचित्र नर-नारियोंके समूहोंसे सुशोभित है ॥२३०४॥

[ चित्र अगले पृष्ठ पर देखिए ]

## विदेह का कच्चा क्षेत्र



क्षेमा नगरी स्थित चक्रवर्ती—

राधरीए चक्कवट्टी, तीए केट्टेवि विविह-गुल्ल-खानी ।

आविम - संहवण - जुवो, समचउरस्संग - सठाणो' ॥२३०५॥

कुंजर-कर-बोर-भुवो, रवि-~~रवि~~र-सेय-पर-संपुण्णो' ॥२३०६॥

इवो विव आणाए, सोहम्मोणं थ मयणो' म्व ॥२३०६॥

धणदो' विव बाजेणं, धीरेण मंढरो म्व सोहेवि ।

जलहो विव प्रवलोमो, पुह-पुह-विविकरिय-सत्ति-जुवो' ॥२३०७॥

अर्थ :—उस नगरीमें अनेक गुणोंकी क्षान्तिस्वरूप चक्रवर्ती निवास करता है । वह आदिके वज्रबंधनाराच-संहनन सहित, समचतुरस्त्ररूप शरीर-संस्थानसे संपुक्त, हाथीके मुण्डादण्ड सदृश स्थूल भुजाओंसे घोभित, सूर्य सदृश उत्कृष्ट तेजके विस्तारसे परिपूर्ण, आज्ञामें इन्द्र तुल्य, सुमगतामें मानों कामदेव, दानमें कुबेर सदृश, धर्म गुणमें सुभेदपर्वतके समान, समुद्रके सत्त्व असोम्य और पृथक्-पृथक् विक्रियाशक्तिते युक्त घोभित होता है ॥२३०५-२३०७॥

पंच-सय - खाव - तुंगो, सो चक्की पुध्व-कोटि-संलाऊ ।

दस - विह - भोगेहि जुवो, सम्माइहो विसाल - मई ॥२३०८॥

अर्थ :—वह चक्रवर्ती पचसौ धनुष ऊंचा, पूर्वकोटि प्रमाण आयुवाला, दस प्रकारके भोगोंसे युक्त, सम्पद्विष्ट और विस्तार (उदार) बुद्धि सम्पन्न होता है ॥२३०८॥

तीर्थंकर—

अज्जालंडम्मि ठिदा, तिस्सयरा वाडिहेर - संजुत्ता ।

पंच - महाकल्लाणा, खोसीसादिसय - संपण्णा ॥२३०९॥

सयल-सुरासुर-महिमा, आणाविह - सक्कजेहि संपुण्णा ।

चक्कहर - नमिद - चलणा, तिलोक्क - जाहा पसीबंतु ॥२३१०॥



अर्थ :—आर्यखण्डमें स्थित, प्रातिहार्योसे संयुक्त, पाँच महाकल्याणक सहित, चौतीस अतिशयोक्तीसे सम्पन्न, सम्पूर्ण सुरासुरोंसे पूजित, नाना प्रकारके लक्षणोंसे परिपूर्ण, चक्रवर्तियोंसे नमस्कृत चरणवाले धीर तीनों लोकोंके अधिपति तीर्थंकर परमदेव प्रसन्न होंगे ॥२३०६-२३१०॥

गणधरदेव एवं चातुर्वर्ण्य संघ—

अमर-रार-जमिद-चलना, भव्य-अणामंजना पस्य-मणा ।

अट्ट - किहू - रिद्धि - जुता, गणधरदेवा ठिया तस्ति ॥२३११॥

अर्थ :—जिनके चरणोंमें देव और मनुष्य नमस्कार करते हैं तथा जो मध्यजनोंको आनन्ददायक हैं और पाठ प्रकारकी ऋद्धियोंसे युक्त हैं, ऐसे प्रसन्नचित्त गणधरदेव उस आर्यखण्डमें स्थित रहते हैं ॥२३११॥

सामान्यार्थक :—अमरार्थ और सुविदितप्राप्त जी आनन्द

अमर-केवलि-मुखी-चरिद्धि-सुवकेवली तथा तस्ति ।

वेदुद्धि चाडखण्डो, तस्ति संघो गुण - गणद्धो ॥२३१२॥

अर्थ :—उस आर्यखण्डमें अनगर, केवली, मुनि, परमार्थप्राप्त-वृद्धि और धृतकेवली तथा गुणसमूहसे युक्त चातुर्वर्ण्य संघ स्थित रहता है ॥२३१२॥

बलदेव, धर्मचक्रो एवं राजा आदि—

बलदेव - वासुदेवा, पडितसू तस्य होंति ते सख्ये ।

अणोष्ण - बद्ध - मञ्जर - पयसु - घोरयर - संगामा ॥२३१३॥

अर्थ :—वहीपर बलदेव, वासुदेव और पडितसू ( पडितवासुदेव ) होते हैं । ये सब परस्पर बंधे हुए मत्सरभावसे चोरतर संग्राममें प्रवृत्त रहते हैं ॥२३१३॥

रायाधिराय - बलहा, तस्य बिरायंति ते महाराया ।

सुत - चमरेहि जुता, अट्ट-महा - सयल - मंडलिया ॥२३१४॥

। अणसंब-यखुबना समत्ता ।

**अर्थ** :—यहाँ श्रेष्ठ राजा, अधिराज, सहाराज और छत्र-चमरोसे युक्त अर्धमण्डलीक, महा-मण्डलीक एवं सकलमण्डलीक विराजमान रहते हैं ॥२३१४॥

। मार्येखण्डकी प्ररूपणा समाप्त हुई ।

स्लेच्छखण्ड एवं उनमें रहने वाले जीव —

णामेण स्लेच्छखंडा, प्रबसेसा होंति पंच खंडा ते ।

**अर्थ** :—यहाँ पाँच खण्ड नामसे स्लेच्छखण्ड हैं । उनमें स्थित जीव मित्यागुणोंसे युक्त होते हैं और बहुत प्रकारके भाव-कलकसे ( पाप-परिणामों ) सहित होते हैं ॥२३१५॥

नाहल - पुलिव - बबेर-किराय-पट्टवीज सिधलादोणं ।

मेख्खारण कुलेहि जुदा, भणिदा ते मेख्खखंडा सि ॥२३१६॥

**अर्थ** :—ये स्लेच्छखण्ड नाहल, पुलिव, बबेर, किरात तथा सिहलादिक स्लेच्छोंके कुलोंसे युक्त रहे गए हैं ॥२३१६॥

वृषभगिरि—

णीलावल-वक्खिणवो, 'वक्खगिरिवत्स पुब्ब - दिग्भागे ।

रत्ता - रत्तोवाणं, मज्झमि य मेख्खखंड - बहुमज्झे ॥२३१७॥

वक्कह-माण-मयणो, णाणा-वक्कोण नाम - संखणो ।

अत्थि वत्तह सि सेलो, भरहक्खिणि - वत्तह-सारिक्खो ॥२३१८॥

**अर्थ** :—नीलावलके दक्षिण और वक्षार पर्वतके पूर्व-दिग्भागमें रत्ता-रत्तोदाके मध्य स्लेच्छखण्डके बहुमध्यभागमें वक्कधरोके मानका मर्दन करनेवाला और नाना वक्कवतियोंके नामोंसे व्याप्त भरतक्षेत्र सम्बन्धी वृषभगिरिके सहस्र वृषभ नामक पर्वत है ॥२३१७-२३१८॥

शेष क्षेत्रोंका संक्षिप्त वर्णन—

एवं कच्छा - विजयो, वास-समासेहि 'वज्जि' एत्थ ।

सेसाणं विजयाणं, वज्जराभेयंविहं जाय ॥२३१९॥

अर्थ :—इसप्रकार यहाँ संक्षेपमें कच्छादेशके विस्तारादिका वर्णन किया गया है। शेष क्षेत्रोंका वर्णन भी इसीप्रकार जानना चाहिए ॥२३१६॥

नगरि विसेसो एक्को, ताणं नयरीण अण्ण - नामा य ।

क्षेमपुरी रिट्ठकला, रिट्ठपुरी खग - मञ्जुसा बोण्णि ॥२३२०॥

ओसहणयरी तह पुण्डरीकिणी एवमेत्थ नामाणि ।

तत्ताणं नयरीणं, सुकच्छ - पम्मुहाण विजयाणं ॥२३२१॥

अर्थ :—यहाँ एक विशेषता यह है कि उन क्षेत्रोंकी नगरियोंके नाम भिन्न हैं—क्षेमपुरी, रिट्ठा, अरिष्टपुरी, खड्गा, मञ्जूषा, औषधनगरी और पुण्डरीकिणी, इसप्रकार ये यहाँ सुकच्छा आदि सात देशोंकी सात नगरियोंके नाम हैं ॥२३२०-२३२१॥

अट्ठाणं एक्क - समो, वच्छ - पम्मुहाण होवि विजयाणं ।

नगरि विसेसो सरिया - नयरीणं अण्ण - नामाणि ॥२३२२॥

अर्थ :—वत्सा आदि आठ देशोंमें समानता है। परन्तु विशेष यही है कि यहाँ नदियों और नगरियोंके नाम भिन्न हैं ॥२३२२॥

गंगा-सिन्धु-नामा, पट्टि - विजयं बाहिणीए चिट्ठंति ।

भरहुक्खेस - पवण्णिद - गंगा - सिध्दीहि सरिसाओ ॥२३२३॥

अर्थ :—यहाँ प्रत्येक क्षेत्रमें भारतक्षेत्रमें कहाँ गई गंगा-सिन्धुके सट्टण गंगा और सिन्धु नामक नदियाँ स्थित हैं ॥२३२३॥

नयरीओ सुसीम - कुण्डलाओ अपराजिता - पम्भंकरया ।

अंका पडमवतीया, ताणं सुभा रत्नसंखया कमसो ॥२३२४॥

अर्थ :—सुसीमा, कुण्डला, अपराजिता, प्रभंकरा, अंका, पद्मावती, सुभा और रत्नसंख्या ये क्रमशः उन देशोंकी नगरियोंके नाम हैं ॥२३२४॥

अपर ( पश्चिम ) विदेहका संक्षिप्त वर्णन—

पुव्व - विदेहं व कमो, अवर - विदेहे वि एस 'इट्ठवो ।

नगरि विसेसो एक्को, नयरीणं अण्ण - नामाणि ॥२३२५॥

अर्थ :—पूर्व विदेहके सदृश ही अपर-विदेहमें भी ऐसा ही क्रम जानना चाहिए। एक विशेषता यह है कि यहाँ भी नगरियोंके नाम भिन्न हैं ॥२३२५॥

अस्सपुरी सिंहपुरी, महापुरी सह य होदि विजयपुरी ।

अरजा 'विरजासोकाज, बीवसोक ति पउम - पमुवीण ॥२३२६॥

अर्थ :—अश्वपुरी, सिंहपुरी, महापुरी, विजयपुरी, अरजा, विरजा, अशोका और बीतसोका, इसप्रकार ये पश्चादिक देशोंकी प्रधान नगरियोंके नाम हैं ॥२३२६॥

विजया य वइजयन्ता, पुरी जयन्तावराजिताओ वि ।

वक्कपुरी सागपुरी, अउज्झणामा 'अवज्झ सि ॥२३२७॥

कमसो वप्पावीणं, विजयाणं अउ - पुरीण गामाणि ।

एक्कत्तीस - पुरीणं, सेमा - सरिसा पसंसाओ ॥२३२८॥

अर्थ :—विजया, वज्रयन्ता, जयन्ता, अपराजिता, वक्कपुरी, सागपुरी, अयोध्या और अवध्या, इसप्रकार ये क्रमशः वप्रादिक ( आठ ) देशोंकी आठ नगरियोंके नाम हैं। उक्त इक्कीस नगरियोंकी प्रशंसा सेमापुरीके सदृश ही जाननी चाहिए ॥२३२७-२३२८॥

इगिगि<sup>१</sup>-विजय-मज्झत्य-होहा-विजयवट्ट - गवसु कूडसु<sup>२</sup> ।

वक्खिण - पुब्बं विदिओ, गिय-गिय-विजयवत्समुग्गहइ ॥२३२९॥

उत्तर-पुब्बं वुत्तरिम - कूडो तं सेय छरइ सेसा य ।

सग - कूडा गामोहि, हवन्ति कच्छम्मि भणिवेहि ॥२३३०॥

अर्थ :—प्रत्येक देशके मध्यमें स्थित लम्बे विजयार्ध पर्वतके ऊपर जो नौ-नी कूट हैं, उनमें से दक्षिण-पूर्वका द्वितीय कूट अपने-अपने देशके नामको और उत्तर-पूर्वका द्विचरम कूट भी उसी देशके नामको धारण करता है। शेष सात कूट कच्छादेशमें कहे गये नामोंसे युक्त हैं ॥२३२९-२३३०॥

रत्ता - रत्तोदाओ, सीवा - सीवोवयाण वक्खिणए ।

भागो तह उत्तरए, गंगा - सिंधू च के वि भासंति ॥२३३१॥

पाठान्तरम् ।

१. व. व. क. ज. प. ट. विरजासोकाज । २. व. व. क. ज. य. व. वज्झ । ३. व. व. क. ज. य. व. वदि ।

४. व. व. इगिगिजयमज्झत्य होहा ।

अर्थ :—कितने ही आचार्य सीता-सीतोदाके दक्षिण भागमें रक्ता-रक्तोदा और उसीप्रकार उत्तर-भागमें गंगा-सिन्धु-नदियोंका भी निरूपण करते हैं ॥२३३१॥

पाठान्तर ।

सीता-सीतोदाके किनारोंपर तीर्थस्थान—

पशोक्कं पुम्भावर - विवेह - विष्णुसु अण्णसंडम्मि ।

सीदा - सीवोदाणं, वु - तडेसुं जिणिय - पड्डिमाओ ॥२३३२॥

चेट्ठंति तिण्णि तिण्णि य, पण्णमिय-वल्लणा तियंस-भिवहेहि ।

सन्नाओ सण्णउओ विष्णु - द्वाण्णणि मिलिदाओ ॥२३३३॥

अर्थ :—पूर्वापर विदेहक्षेत्रोंमेंसे प्रत्येक क्षेत्रके आर्यक्षेत्रमें सीता-सीतोदाके दोनों किनारों पर देवीके समूह द्वारा नमस्कारणीय चरणोंवाली तीन-तीन जिनेन्द्र-प्रतिमार्हे स्थित हैं । ये सर्व तीर्थ-स्थान मिलकर स्त्रियामर्ह हैं ॥२३३२-२३३३॥

सोलह बक्षार-पर्वतोंका वर्णन—

बक्षारगिरी सोलस, सीदा - सीवोदयाण तीरेसुं ।

पण-सय-ओयण-उवया, कुलगिरि-पासेसु एक्क-सय-हीणा ॥२३३४॥

५०० । ४०० ।

अर्थ :—सोलह बक्षारपर्वत सीता-सीतोदाके किनारोंपर पंचसौ ( ५०० ) योजन और कुलाबलोंके पार्श्वभागोंमें एकसौ योजन कम अर्थात् चार सौ ( ४०० ) योजन ऊँचे हैं ॥२३३४॥

बक्षाराराणं दोसुं, पासेसुं होंति विष्णु - वणसंडा ।

पुह पुह गिरि-सम-बोहा, ओयण - वल्लमेष - विस्थारा ॥२३३५॥

अर्थ :—बक्षार-पर्वतोंके दोनों पार्श्वभागोंमें पृथक्-पृथक् पर्वत समान सम्ये और अर्ध योजन प्रमाण विस्तार वाले दिव्य वनक्षेत्र हैं ॥२३३५॥

सम्ये बक्षारगिरी, सुरंग - खंवेण होंति सारिण्ण्णा ।

उवरिम्मि ताण कूडा, बक्षारि हवंति पशोक्कं ॥२३३६॥

अर्थ :—सब बक्षार पर्वत घोड़ेके स्कन्ध सदृश आकारके होते हैं । इनमेंसे प्रत्येक पर्वतपर चार कूट हैं ॥२३३६॥

सिद्धो<sup>१</sup> वक्षारकृताधोगद - विजय - जाम - कूडा य ।

ले सखे रयनमया, पन्थय - चउभाग - उच्छेहा<sup>२</sup> ॥२३३७॥

अर्थ :—इनमेंसे प्रथम सिद्धकूट, दूसरा वक्षारके सदृश नामवाला और शेष दो कूट वक्षारोंके उपरिम और अघस्तन क्षेत्रोंके नामोंसे युक्त हैं। वे सब रत्नमय कूट अपने पर्वतकी ऊँचाईके चतुर्धभाग प्रमाण ऊँचे हैं ॥२३३७॥

सीदा-सीदोबाण, पासे एक्को जिणिद - भवण - जुदो ।

सेता य तिण्णि कूडा, चेंतर - गयरेहि रमणिज्जा ॥२३३८॥

अर्थ :—सीता-सीतोदाके पश्चिमभागमें एक कूट जिनेन्द्र-भवनसे युक्त है और शेष तीन कूट अन्तर-नगरोंसे रमणीय हैं ॥२३३८॥

विशेषार्थ :—वक्षार पर्वत १६ हैं और प्रत्येक वक्षार पर चार-चार कूट हैं। इनमेंसे सीता-सीतोदा महाबुद्धियोंकी ओर स्थित प्रथम कूटोंपर जिनमन्दिर हैं और शेष तीन-तीन कूटोंपर अन्तर-देवोंके नगर हैं। इन ६४ कूटोंके नाम इस प्रकार हैं—

[ तालिका : ४३ अगले पृष्ठ पर देखिए ]

| वर्णार       | कूटोंके नाम                                           | वर्णार       | कूटोंके नाम                                              | वर्णार       | कूटोंके नाम                                        | वर्णार       | कूटोंके नाम                                        |
|--------------|-------------------------------------------------------|--------------|----------------------------------------------------------|--------------|----------------------------------------------------|--------------|----------------------------------------------------|
| १. विष्णु    | १. सिद्ध<br>२. विष्णु<br>३. कल्याण<br>४. सुकल्याण     | २. विष्णु    | १. सिद्ध<br>२. विष्णु<br>३. वसिष्ठा<br>४. सुवसिष्ठा      | ३. अष्टावक्र | १. सिद्ध<br>२. अष्टावक्र<br>३. पद्मा<br>४. सुपद्मा | ४. अष्टावक्र | १. सिद्ध<br>२. अष्टावक्र<br>३. पद्मा<br>४. सुपद्मा |
| २. नरसिंह    | १. सिद्ध<br>२. नरसिंह<br>३. महाकल्याण<br>४. कल्याणवती | ३. अष्टावक्र | १. सिद्ध<br>२. अष्टावक्र<br>३. महाकल्याण<br>४. कल्याणवती | ४. अष्टावक्र | १. सिद्ध<br>२. अष्टावक्र<br>३. पद्मा<br>४. सुपद्मा | ५. अष्टावक्र | १. सिद्ध<br>२. अष्टावक्र<br>३. पद्मा<br>४. सुपद्मा |
| ३. पद्मा     | १. सिद्ध<br>२. पद्मा<br>३. अष्टावक्र<br>४. सुपद्मा    | ४. अष्टावक्र | १. सिद्ध<br>२. अष्टावक्र<br>३. पद्मा<br>४. सुपद्मा       | ५. अष्टावक्र | १. सिद्ध<br>२. अष्टावक्र<br>३. पद्मा<br>४. सुपद्मा | ६. अष्टावक्र | १. सिद्ध<br>२. अष्टावक्र<br>३. पद्मा<br>४. सुपद्मा |
| ४. अष्टावक्र | १. सिद्ध<br>२. अष्टावक्र<br>३. पद्मा<br>४. सुपद्मा    | ५. अष्टावक्र | १. सिद्ध<br>२. अष्टावक्र<br>३. पद्मा<br>४. सुपद्मा       | ६. अष्टावक्र | १. सिद्ध<br>२. अष्टावक्र<br>३. पद्मा<br>४. सुपद्मा | ७. अष्टावक्र | १. सिद्ध<br>२. अष्टावक्र<br>३. पद्मा<br>४. सुपद्मा |

बारह विभंग-नदियोंका वर्णन भी सुविस्तरान्वय की शब्दावली

रोहोए सम बारह-विभंग-सरियाओ वास - पट्टबोहि ।

परिवार - णईओ तह, दोसु बिबेहेसु पत्तोकं ॥२३३६॥

२५००० ।

अर्थ :—दोनों विदेहोंमें रोहित्के सहस्र विस्तारादिवासी बारह विभंग-नदियाँ हैं । इनमेंसे प्रत्येक नदीकी परिवार नदियाँ रोहित्के ही सहस्र षट्ठाईस हजार ( २५००० ) प्रमाण हैं ॥२३३६॥

कंचण-सोवाणाओ, सुगंध-बहु-विमल-सलिल भरिदाओ ।

उववण - वेदी - तोरण - अदाओ णरुचंत - उम्मीओ ॥२३४०॥

तोरण-वारा उवरिम-ठाण-ट्टिव-जिण-गिकेव-गिच्छिवाओ ।

सोहंति गिरुवमाणा, सयसाओ विभंग - सरियाओ ॥२३४१॥

अर्थ :—( सम्पूर्ण विभंग-नदियाँ ) सुवर्णमय सोपानों सहित, सुगन्धित निर्मल जलसे परिपूर्ण, उपवन, वेदी एवं तोरणोंसे संयुक्त, नृत्य करती हुई सहस्रों सहित, तोरण द्वारोंके उपरिम प्रदेशमें स्थित जिनभवनोंसे युक्त और उपमासे रहित होती हुई शोभायमान होती हैं ॥२३४०-२३४१॥

देवारण्य-वनका निरूपण—

सीताए उत्तरवो, दीप्पोववणस्स वेदि - पच्छिमवो ।

जीलाचल - दक्षिणवो, पुब्बते पोक्खलावदी - विसए ॥२३४२॥

वेट्टुवि देवारण्णं, पाणा - तए - संघ - मंडिवं रम्भं ।

पोक्खरणी - वाकीहि, कमलुप्पल - परिमल्लिस्साहि ॥२३४३॥

अर्थ :—सीतानदीके उत्तर, द्वीपोपवन-सम्बन्धी वेदीके पश्चिम, नीलपर्वतके दक्षिण और पुष्कलावती देशके पूर्वान्तमें नाना वृक्षोंके समूहोंसे मण्डित तथा कमलों एवं उत्पलोंकी सुगन्धसे संयुक्त ऐसी पुष्करिणी और वापिकाओंसे रमणीक देवारण्य नामक वन स्थित है ॥२३४२-२३४३॥

तस्सि देवारण्णे, पासावा कणय - रयण - रजवसया ।

वेदी - तोरण - घय - वड - पट्टबोहि मंडिवा बिउसा ॥२३४४॥



अर्थ :—उस देवारण्यमें सुवर्ण, रत्न एवं चाँदीसे निर्मित तथा वेदी, तोरण और ध्वज-पटादिकोंसे सज्जित बिसाल प्रासाद हैं ॥२३४४॥

संस्कृत-अर्थ :- अथर्व और सुविहितानाम् और ध्वजानाम्

उत्पत्ति - मंदिराहं<sup>१</sup>, अहिसेयपुरा य मेहुण<sup>२</sup> - गिहाहं<sup>३</sup> ।

कोट्टण - सासाओ सभा - सालाओ जिण - शिकेवेसुं<sup>४</sup> ॥२३४५॥

अर्थ :—इन प्रासादोंमें उत्पत्तिगृह, अभिवेकपुर, मेयुनगृह, कीटन-शासा, सभाशाला और जिन-भवन स्थित हैं ॥२३४५॥

चउ - विदिसासुं<sup>५</sup> मेहा, ईसाणिदस्स अंग - रक्खानं ।

विप्पंत - रयण - वोवा, बहुविह-घुब्बंत - धय - माला ॥२३४६॥

अर्थ :—चारों विदिशाओंमें ईशानेन्द्रके अंगरक्षक देवोंके प्रदीप्त रत्नदीपकोंवाले और बहुत प्रकारकी फहराती हुई ध्वजाओंके समूहोंसे सुशोभित गृह हैं ॥२३४६॥

दक्खिण-दिस्सा-विभागे, तिप्परिसाणं<sup>६</sup> पुराणि विविहाणि ।

सत्ताणमणीयानां<sup>७</sup> पासादा पच्छिम - दिसाए ॥२३४७॥

अर्थ :—दक्षिणदिशा-भागमें तीनों पारिषददेवोंके विविध भवन और पश्चिम दिशामें सात अनीक देवोंके प्रासाद हैं ॥२३४७॥

किक्खिस - अभियोगाणं, सम्मोह-सुराण तत्थ विग्गणे ।

कंदप्पाण सुराणं, होत्ति विविताणि भवणाणि ॥२३४८॥

अर्थ :—उसी दिशामें कित्तिव, अभियोग्य, संमोहसुर और कन्दर्प देवोंके अद्भुत भवन हैं ॥२३४८॥

एवे सज्जे देवा, तेसुं कीडंति बहु - बिणोदेहि ।

रम्मेसु मंदिरेसुं<sup>८</sup>, ईसाणिदस्स परिवारा ॥२३४९॥

अर्थ :—ईशानेन्द्रके परिवार-स्वरूप ये सब देव उन रमणीक भवनोंमें बहुत प्रकारके विनोदोंसे क्रीड़ा करते हैं ॥२३४९॥

१. व. व. क. ज. प. उ. मंदिराहं । २. व. व. क. ज. य. उ. मिहुणगिहाहि । ३. व. व. क. अ. प.

उ. पुराण विविहाणं । ४. व. व. क. ज. य. उ. सत्ताणं मणीयानां ।

सीताग्र दक्षिण-तटे, शोचोववणस्त वेदि - पश्चिमवो ।

निसहाचल - उत्तरवो, पुष्पाय दिसाए वण्डस्त ॥२३५०॥

देवारण्यं अण्णं, चेद्धुवि पुष्पस्त सरिस - वण्णकयं ।

जवरि बिसेसो देवा, सोहम्मिन्दस्त परिवारा ॥२३५१॥

अर्थ :— द्वीपोपवन-सम्बन्धी वेदीके पश्चिम, निषधराचलके उत्तर और वत्सादेशकी पूर्व-दिशामें सीता नदीके दक्षिण तटपर पूर्वोक्त देवारण्यके सदृश वर्णनवाला दूसरा देवारण्य भी स्थित है । विशेष केवल इतना है कि इस वनमें सौधर्म-इन्द्रके परिवार देव कीड़ा करते हैं ॥२३५०-२३५१॥

भूतारण्य-क्षेत्रका वर्णन और सुविधितामय भी यहाँ पर

सीतोदा - दु - तडेसुं, शोचोववणस्त वेदि - पुष्पाए ।

शील - निसहृदि-मऊं, जवर-विदेहस्त जवर-विभाए ॥२३५२॥

बहु - तव - रमणीयाइं, भूदारण्याइं बोझि सोहंति ।

देवारण्य - समाणं, सख्य चिय वण्णणं ताए ॥२३५३॥

। एवं विदेह-विजय-वर्णना समप्ता ।

अर्थ :— द्वीपोपवन-सम्बन्धी वेदीके पूर्व और अपर-विदेहके पश्चिम दिग्भागमें नील-निषध-पर्वतके मध्य सीतोदाके दोनों तटोंपर बहुतसे वृक्षोंसे रमणीय भूतारण्य-नामक दो वन शोभित हैं । इनका समस्त वर्णन देवारण्योंके ही सदृश है ॥२३५२-२३५३॥

। इसप्रकार विदेह क्षेत्रका कथन समाप्त हुआ ।

नीलगिरिका वर्णन—

नीलगिरी निसहो पिब, उत्तर - पासम्मि दो-विदेहाणं ।

जवरि बिसेसो अण्णे, कूडाणं देव - वेधि - दह - जामा ॥२३५४॥

अर्थ :— दोनों विदेहोंके उत्तर पार्श्वभागमें निषधके ही सदृश नीलगिरी भी स्थित है । विशेष इतना है कि इस पर्वतपर स्थित कूटों, देव-देवियों और ब्रह्मोंके नाम जन्म ही हैं ॥२३५४॥

नीलगिरि स्थित कूटोंका वर्णन—

सिद्धबलौ नीलबलौ, पुण्य - विदेहौ सि सोढ-कित्तौओ ।

नारी अपर - विदेहौ, रम्मक - एषामावर्तसणौ कूडौ ॥२३५५॥

अर्थ :—सिद्धाख्य, नीलाख्य, पूर्व-विदेह, सोता, कीर्ति, नारी, अपर-विदेह, रम्मक और भवदर्शन, इसप्रकार इस पर्वतपर ये नौ कूट स्थित हैं ॥२३५५॥

एवेसु पठम - कूडे, जिनिद - भवणं विचिस्त-रयणमयं ।

वच्छेह - पपुवीहि, सोमणसि जिणालय - पमाणं ॥२३५६॥

अर्थ :—इनमेंसे प्रथम कूटपर सोमनसस्थ जिनालयके प्रमाण सहस्र ऊँचाई आदि वाले रत्नमय अद्भुत जिनेन्द्र-भवन स्थित हैं ॥२३५६॥

सेसेसु' कूडेसु', बेतर - देवाण होंति नगरीओ ।

नगरीसु' पासावा, विचिस्त - कूवा जिस्वमाणा ॥२३५७॥

अर्थ :—शेष कूटोंपर अन्तर-देवोंकी नगरियाँ हैं और उन नगरियोंमें विविध रूपवाले अनुपम प्रासाद हैं ॥२३५७॥

बेतर - देवा सध्ये गिय - गिय - कूडाभिधान-संजुसा ।

कहु - परिचारा दस - सणु - तुंगा पल्ल - प्यमाणाऊ ॥२३५८॥

अर्थ :—सब अन्तरदेव अपने-अपने कूटोंके नाम वाले हैं, बहुत परिवारों सहित हैं, दस वस्तु ऊँचे हैं और एक पल्ल-प्रमाण आयुवाले हैं ॥२३५८॥

कीर्तिदेवीका वर्णन—

उवरिम्मि नील-गिरिणो, केसरि-नामे वहम्मि दिठम्मि ।

खेट्टेदि कमल - भवणे, देवी कित्ति ति विवसावा ॥२३५९॥

अर्थ :—नीलगिरिपर स्थित केसरी नामक दिव्य द्रुहे मध्यमें रहनेवाले कमल-भवनपद कीर्ति नामसे विख्यात देवी स्थित है ॥२३५९॥

धिदि - देवीय समाणो, तीए सोहेवि सध्य - परिवारो ।

दस - चावाणि तुंगा, निदवम - सावण - संपुञ्जा ॥२३६०॥

अर्थ :—उस देवीका सब परिवार धृतिदेवीके सहस्र ही शोभित है । यह देवी दस धनुष ऊँची और अनुपम सावण्यसे परिपूर्ण है ॥२३६०॥

आदिम-संठाण-बुवा, वर-रयण-विभूषणेहि विविहेहि ।

सोहिद - सु'वर - मुसो', ईसानेवस्स सा देवी ॥२३६१॥

। नीलगिरि-वर्णना सम्पत्ता ।

अर्थ :—आदिम अर्थात् समचतुरस्र संस्थानवाली, विविध प्रकारके उत्तम रत्नोंके मूषणोंसे सुशोभित सौम्य-भूति वह ( कीर्तिदेवी ) ईशानेन्द्रकी देवी है ॥२३६१॥

। इसप्रकार नीलगिरिका वर्णन समाप्त हुआ ।

रम्यक क्षेत्रका वर्णन—

रम्मक-विजओ' रम्मो, हरि-वरिसो 'व वर-वण्णणा-मुसो ।

एवरि विसेसो एक्को, नाभि - जये अण्ण - नामाणि ॥२३६२॥

अर्थ :—रमणीय रम्यक-विजय ( क्षेत्र ) भी हरिवर्ष क्षेत्रके सहस्र उत्तम वर्णनासे युक्त है । विशेषता केवल यही है कि यहीं नाभिपर्वतका नाम दूसरा है ॥२३६२॥

रम्मक-भोग-सिद्धोए, बहु - मज्जे होवि पडम - नामेज ।

नाभिगिरी रमणिज्जो, गिय - एणम - जुवेहि वेवेहि ॥२३६३॥

अर्थ :—रम्यक-भोगभूमिके बहु-मध्यभागमें अपने नामवाले देवोंसे युक्त रमणीय पद्म नामक नाभिगिरि स्थित है ॥२३६३॥

केसरि - बहुस्स उत्तर - तोरण-दारेण निगगा विष्वा ।

जरकंता नाम जयी, सा गच्छिय उत्तर - मुहेण ॥२३६४॥

एरकंत-कु'ब-मज्जे, निवडिय' निस्सरवि उत्तर-विसाए ।

तत्तो नाभि - गिरिणं, कावूण पहाहिणं पि पुब्बं व ॥२३६५॥

गंतुणं ता मज्झं, रम्मक - विजयस्स पच्छिम - मुहेण ।

पविसेवि लवण - जल्लं, परिवार - वडोहि संजता ॥२३६६॥

महाहिमवन्तः - सरिच्छं, सयत्तं चियं वण्णं तस्स ॥२३६७॥

। रम्मक-विजयस्स परलवणा समता ।

अर्थ :—केसरी द्रह्मके उत्तर तोरणद्वारसे निकली हुई दिव्य नरकान्ता नामक प्रसिद्ध नदी उत्तरकी ओर गमन करती हुई नरकान्त-कुण्डमें गिरकर उत्तरकी ओरसे निकलती है । पश्चात् वह नदी पहलेके ही सदृश नाभिपर्वतकी प्रदक्षिणा करके रम्मक क्षेत्रके मध्यसे जाती हुई पश्चिम मुख होकर परिवार-नदियोंके साथ लवण समुद्रमें प्रवेश करती है ॥२३६४-२३६६॥

। रम्मकक्षेत्रका वर्णन समाप्त हुआ ।

रुक्मिणिरिका वर्णन—

रम्मक - भोगखिद्योए, उत्तर-भागम्मि होवि रुक्मिणीरी ।

महाहिमवन्त - सरिच्छं, सयत्तं चियं वण्णं तस्स ॥२३६७॥

अर्थ :—रम्मक-भोगभूमिके उत्तरभागमें रुक्मि-पर्वत है । उसका सम्पूर्ण-वर्णन महाहिम-वानुके सदृश समझना चाहिए ॥२३६७॥

एवरि य ताणं कूट-द्वह-सुर-देवीण अण्ण - जामाणि ।

सिद्धो रुक्मी - रम्मक - नरकान्ता - बुद्धि - रूप्यो चि ॥२३६८॥

हेरप्पववो मणिकंचला - कूटो रुक्मियाण तहा ।

कूडाण इमा जामा, सेसुं जिणमंदिरं पढम - कूटो ॥२३६९॥

सेसेसुं कूटसुं, वेतर - वेवाण होंति वयरीणो ।

विक्खादा से वेवा, चिय - जिय - कूडाण जामोहि ॥२३७०॥

अर्थ :—विशेष इतना है कि यहाँ उन कूट, द्रह्म, देव और देवियोंके नाम भिन्न हैं । सिद्ध, रुक्मि, रम्मक, नरकान्ता, बुद्धि, रूप्यकूला, हेरप्पवत्त और मणिकाञ्चन, ये रुक्मिपर्वतपर स्थित उन घाट कूटोंके नाम हैं । इनमेंसे प्रथम कूटपर जिन-मन्दिर और शेष कूटोंपर व्यन्तरदेवोंकी नगरियाँ हैं । वे देव अपने-अपने कूटोंके नामोंसे विख्यात हैं ॥२३६८-२३७०॥

रुम्मि - गिरिवस्सोवरि, बहुमज्जे होवि पुं डरीय-वहो ।

फुल्लंत - कमल - पठरो, तिगिछ - इहस्स परिमाणो ॥२३७१॥

अर्थ :—रुक्मि-पर्वतपर बहु-मध्यभागमें फूले हुए प्रचुर कमलोंसे युक्त तिगिञ्छद्रहके सदृश प्रमाणवाला पुण्डरीक द्रह है ॥२३७१॥

तद्दह - कमल - पिकेदे, देवी निवसेदि बुद्धि - नामेणं ।

तीए हवेवि अट्ठो, परिवारो कित्ति - देवीयो ॥२३७२॥

धार्मिक :—अराध्य श्री बुद्धिनिवासिनी को प्रकटकर

अर्थ :—उस द्रह-सम्बन्धी कमल-भवनमें बुद्धि नामक देवी निवास करती है । इसका परिवार कीर्तिदेवीकी अपेक्षा आधा है ॥२३७२॥

निदधम-लावण्य-तणू, वर-रयण-चिमुत्तणेहि रमणिज्जा ।

विविह - विणोदा - कीद्वि, ईताणिवस्स ता देवी ॥२३७३॥

अर्थ :—अनुपम लावण्यमय शरीरसे संयुक्त और उत्तम रत्नोंके भूषणोंसे रमणीक ईशानेन्द्रकी यह देवी विविध विनोद पूर्वक कोढ़ा करती है ॥२३७३॥

तद्दह - दक्षिण - तोरण - वारेणं निग्गदा कई नारी ।

नारी - नामे कुंहे, निवडवि संसूण 'धोव - मही ॥२३७४॥

तद्दक्षिण - वारेणं, निस्सरित्ठणं च दक्षिण-मुही ता ।

तत्तो नाभिगिरिवं, कादूण पवाहिणं हरिणं च ॥२३७५॥

रम्मक-भोगक्षिपीए, बहु - मज्जेणं पयावि पुण्व - मुही ।

पवित्तेवि लवण - जलहि, परिवार - तरंगिणीह जुधा ॥२३७६॥

। रुम्मिगिरि-वष्णुणा समस्ता ।

अर्थ :—उस द्रहके दक्षिण-तोरणद्वारसे निकली हुई नारी नदी अल्प-विस्तार होकर नारी-नामक कुण्डमें गिरती है । पश्चात् वह ( कुण्डके ) दक्षिण-द्वारसे निकलकर दक्षिणमुख होती हुई

हरित् नदीके सदृश ही नाभिगिरि की प्रदर्शना करके रम्यक-भोगभूमिके बहुमध्यभागमेंसे पूर्वकी ओर जाती हुई परिवार-नदियोंसे युक्त होकर लवणसमुद्रमें प्रवेश करती है ॥२३७४-२३७६॥

॥ रुनिमपर्वतका वर्णन समाप्त हुआ ॥

हेरण्यवत क्षेत्रका निरूपण—

विजयो हेरण्यवदो, हेमवदो च प्यवण्णवा - जुत्तो<sup>१</sup> ।

नवरि विसिंसी<sup>२</sup> द्वयो, जगदीज<sup>३</sup> वारिण<sup>४</sup> पण्णवाममणि ॥२३७७॥

अर्थ :—हेरण्यवतक्षेत्र हेमवतक्षेत्रके सदृश वर्णनसे युक्त है । एक विशेषता केवल यही है कि यही नाभिगिरि और नदियोंके नाम भिन्न हैं ॥२३७७॥

तस्स बहु - मज्झ-भागे, विजयवदो होवि मण्वंतो सि ।

तस्सोत्तरिम - रिणकेवे, पभास - वामो ठिवो वेवो ॥२३७८॥

अर्थ :—उस क्षेत्रके बहुमध्य-भागमें मज्झवाम नामक विजयार्ध ( नाभिगिरि ) है । उसपर स्थित भवतमें प्रभास नामक देव रहता है ॥२३७८॥

पुंजरिय - वहार्हितो, उत्तर - वारेण रुप्यकूल - जई ।

जिस्सरिवूणं जिक्कवि, कुंवे सा रुप्यकूलम्मि ॥२३७९॥

तस्सुत्तर - वारेण, जिस्सरिवूणं च उत्तर - भुही सा ।

जाभिगिरि कावूणं, पदाहिणं रोहि - सरिय ज्व ॥२३८०॥

पच्छिम - मुहेण गच्छिय, परिवार-तरंगिणीहि संजुता ।

वीव - जगदी - विसेणं, पवित्तवि कल्लोलिणी - जगहं ॥२३८१॥

॥ हेरण्यवत-विजय-वण्णवा समाप्ता ।

अर्थ :—रूप्यकूलानदी पुण्डरीक द्वीपके उत्तर-द्वारसे निकलकर रूप्यकूल नामक कुण्डमें गिरती है । तत्पश्चात् वह नदी उस कुण्डके उत्तर-द्वारसे निकलकर उत्तरकी ओर गमन करती हुई

१. व. व. क. न. य. उ. जुता । २. द. वेणभीण, न. क. व. देवणाभीण । ३. व. व. क. न. य.

उ. कल्लोलिणि एवम् ।

रोहिण नदीके सहस्र नामगिरिकी प्रवक्षिणा करके पश्चिमकी ओर जाती है । पुनः परिवार-नदियोंसे संयुक्त होकर वह नदी जम्बूद्वीपकी अगतीके बिलमें होकर लवणसमुद्रमें प्रवेश करती है ॥२३७६-२३८१॥

। हैरभ्यवतक्षेत्रका वर्णन समाप्त हुआ ।

शिखरोगिरिका निरूपण—

तद्विज-उत्तर-भागे, सिहरी - नामेन चरम - कुलसेतो ।

हिमवतस्स सरिच्छं, समलं चिय वण्णं तस्स ॥२३८२॥

अर्थ :— इस क्षेत्रके उत्तर-भागमें शिखरी-नामक अन्तिम कुल-पर्वत स्थित है । इस पर्वतका सम्पूर्ण वर्णन हिमवान् पर्वतके सहस्र है ॥२३८२॥

रावरि विसेतो कूडह्हाण' वेवाण वेवि - सरियाणं ।

अण्णाइं पामाहं, तस्सि सिद्धो पढम - कूडो ॥२३८३॥

सिहरी हेरण्यवती, रसवेदी - रत्त - लच्छि-कंचणया ।

रत्तवदी गंधवदी, ऐवव - मणिकंचण' कूडं ॥२३८४॥

एवकारस - कूडाणं, पुह पुह पणुवीस ओयथा उवधो ।

सेसु' पढमे कूडे', जिणिद - भवण' परम - रम्मं ॥२३८५॥

सेसेसु' कूडेसु', गिय - गिय - कूडाण नाम - संकुत्ता ।

बेंतर - देवा मणिमय - पासादेसु' विरार्येति ॥२३८६॥

अर्थ :— विशेष यह है कि यहाँ कूट, ब्रह्म, देव, देवी और नदियोंके नाम भिन्न हैं । उस ( शिखरी ) पर्वतपर प्रथम सिद्ध कूट, शिखरी, हैरभ्यवत, रसदेवी, रक्ता, लक्ष्मी, काञ्चन, रक्तवती, गन्धवती, ऐवव ( ऐरावत ) और मणिकाञ्चनकूट, इसप्रकार ये ग्यारह कूट स्थित हैं । इन ग्यारह कूटोंकी ऊँचाई पृथक्-पृथक् पञ्चोस योजन प्रमास्य है । इनमेंसे प्रथम कूटपर परम-रमणीय जिनेन्द्र-भवन और शेष कूटोंपर स्थित मणिमय प्रासादोंमें अपने-अपने कूटोंके नामोंसे संयुक्त व्यन्तर देव विराजमान हैं ॥२३८३-२३८६॥



महपुङ्गवः । अथर्व ऋषिः । अथर्व ऋषिः । अथर्व ऋषिः ।

महपुङ्गवः-राणा, दिव्य - वही सिंह-संस-सिंह-सिंह ।

पञ्चमह - सारिङ्गो, वेदो - पञ्चमह कय - सोहो ॥२३८७॥

अर्थ :—इस शिखरी-शैलके शिखरपर पञ्चमहके सहस्र वेदो आदिसे शोभायमान महा-पुण्डरीक नामक दिव्य द्रुह है ॥२३८७॥

तस्स 'सयवस-भवनो, लक्ष्म्य - णामेव निवसदे देवी ।

सिरिदेवीए सरिसा, ईसाणिवस्स सा देवी ॥२३८८॥

अर्थ :—उस तासावके कमल-भवनमें श्रीदेवीके सहस्र जो लक्ष्मी नामक देवी निवास करती है, वह ईशानेन्द्रकी देवी है ॥२३८८॥

तद्दक्षिण-तोरण-द्वारेण सुवर्णकूल - नाम - नदी ।

निस्सरिय दक्षिण-मुहो, निवडेवि सुवर्णकूल-कुण्डम्मि ॥२३८९॥

तद्दक्षिण - द्वारेण, निस्सरिव्वणं स दक्षिण-मुहो सा ।

नाभिगिरि कावूणं, पदाहिणं रोहि - सरिय व्व ॥२३९०॥

हेरणवदवभंतर - भागे गच्छिय विसाण पुष्पाए ।

वीव - जगदी - विलेणं, पविसेदि तरंगिणी - साहं ॥२३९१॥

। एवं सिंह-सिंह-सिंह-सिंह-सिंह समथा<sup>१</sup> ।

अर्थ :—उस द्रुहके दक्षिण-तोरण-द्वारसे निकलकर सुवर्णकूला नामक नदी दक्षिणमुखी होकर सुवर्णकूल-कुण्डमें गिरती है । तत्पश्चात् उस कुण्डके दक्षिण-द्वारसे निकलकर वह नदी दक्षिण-मुखी होकर रोहित नदीके सहस्र नाभिगिरिकी प्रदक्षिणा करती हुई हैरण्यवतक्षेत्रके सम्पन्तर भागमेंसे पूर्व दिशाकी ओर जाकर जम्बूद्वीप-सम्बन्धी जगतीके बिलमेंसे समुद्रमें प्रवेश करती है ॥२३८९-२३९१॥

। इसप्रकार शिखरीपर्वतका वर्णन समाप्त हुआ ।

ऐरावतक्षेत्रका निरूपण—

सिंह-सिंह-सिंह - भागे, अंबुदीवस्स जगवि - दक्षिणको ।

ऐरावतो ति सरिसो, वेदुवि भरहस्स सारिङ्गो ॥२३९२॥

अर्थ :—शिखरीपर्वतके उत्तर और जम्बूद्वीपकी जगतोके दक्षिणभागमें भरतक्षेत्रके सहस्र ऐरावतक्षेत्र स्थित है ॥२३६२॥

एवमरि विसेसो तस्मि<sup>१</sup>, सलाग - पुरिसा हवन्ति जे केई ।

ताण<sup>२</sup> नाम - प्पट्टवित्तु, उववेसो संपइ पराट्टो ॥२३६३॥

अर्थ :—विशेष यह कि उस क्षेत्रमें जो कोई शलाका-पुरुष होते हैं, उनका नामादि-विवेक उपदेश इस समय नष्ट हो चुका है ॥२३६३॥

अज्जग्गणा<sup>३</sup> 'एवस्सि, नामा विजयइत्त - कूट-सरियाव<sup>४</sup> ।

सिद्धो<sup>५</sup> रेवड - लंडो, मारणी विजयइत्त - पुण्णा य ॥२३६४॥

तिमिसगुहो रेवड - वेससण<sup>६</sup> नासाणि होन्ति कूटानां ।

सिहरि-गिरिवोवरि महपुंजरिय - दहस्स पुण्व - बारेण<sup>७</sup> ॥२३६५॥

रसा<sup>८</sup> शामेण नदी, निस्सरिय पडेवि रत्त-कुंडस्मि ।

गंगाणइ - सारिण्ण, पविसइ भवणंनु - रासिस्मि ॥२३६६॥

अर्थ :—इस क्षेत्रमें विजयार्धपर्वतपर स्थित कूटों और नदियोंके नाम भिन्न हैं । सिद्ध, ऐरावत, खण्डप्रपात, भाजिभद्र, विजयार्ध, पूर्णभद्र तिमिसगुह, ऐरावत और वैश्रवण ये नौ कूट यहाँ विजयार्ध पर्वतपर हैं । शिखरी पर्वतपर स्थित महापुण्डरीक द्रुहके पूर्व द्वारसे निकलकर रत्ता नामक नदी रत्तकुण्डमें गिरती है । पुनः वह गङ्गानदीके सहस्र सवणसमुद्रमें प्रवेश करती है ॥२३६४-२३६६॥

सहह - पच्छिम - तोरणा - बारेण<sup>९</sup> निस्सरेवि रत्तोदा ।

सिधु - जईए सरिसा, रिणवडवि रत्तोव - कुंडस्मि ॥२३६७॥

पच्छिम-मुहेण तत्तो, निस्सरिइण<sup>१०</sup> अणोय-सरि-सहिवा ।

दीव - जगदी - बिलेण<sup>११</sup>, लवण - समुहस्मि पविसंवि ॥२३६८॥

अर्थ :—उसी द्रुहके पश्चिम तोरणा-द्वारसे रत्तोदानदी निकलती है और सिन्धुनदीके सहस्र रत्तोदकुण्डमें गिरती है । पश्चात् वह उस कुण्डसे निकलकर पश्चिममुख होती हुई अनेक नदियोंके साथ जम्बूद्वीपकी जगतोके बिलसे सवणसमुद्रमें प्रवेश करती है ॥२३६७-२३६८॥

१. द. व. व. उ. तेस्सि । २. द. व. क. उ. एवेसि । ३. द. व. क. ज. व. उ. सरिसाणं ।

४. द. व. क. ज. व. उ. तिद्धा । ५. द. व. क. उ. रत्तो ।

गंगा - रोहो - हरिया, सीता - नारी-सुवर्ण-कूलाओ ।

रक्त सि सप्त सरिया, पुष्पाए बिसाए, वरुणति ॥२३६६॥

अर्थ :—गङ्गा, रोहिता, हरिता, सीता, नारी, सुवर्णकूला और रक्ता ये सात नदियाँ पूर्व-दिशामें जाती हैं ॥२३६६॥

पञ्चिम-बिसाए गच्छति, सिन्धुर्ध्वं रोहितास-हरिकंता ।

सीतोदा नरकंता, रुप्यतटा सप्तमी य रक्तोदा ॥२४००॥

। एवं ऐरावत-क्षेत्रस्य वर्णना समाप्ता ।

अर्थ :—सिन्धुनदी, रोहितास्या, हरिकान्ता, सीतोदा, नरकान्ता, रूप्यकूला और सातवीं रक्तोदा ये सात नदियाँ पश्चिम-दिशामें जाती हैं ॥२४००॥

॥ इसप्रकार ऐरावतक्षेत्रका वर्णन समाप्त हुआ ॥

घनुषाकार क्षेत्रके क्षेत्रफल निकालनेका विधान—

इस-पाद-गुणित-जीवा, गुणित्वा दस - पदेण वं वगं ।

मूलं चावापारे, क्षेत्रेणं होवि सुह्रम - फलं ॥२४०१॥

अर्थ :—बाएँके चतुर्थ भागसे गुणित जीवाका जो वग हो उसको दससे गुणाकर प्राप्त गुणनफलका वर्गमूल निकालनेपर घनुषके आकार क्षेत्रका सूक्ष्म क्षेत्रफल जाना जाता है ॥२४०१॥

भरतक्षेत्रका सूक्ष्म क्षेत्रफल—

पंच-ति-ति-एक-गुण-गभ-क्ष-का अंककमेण जोयजया ।

एक-क्ष-ति-हरि-वज-गभ-गुण-भागा भरहक्षेत्त - फलं ॥२४०२॥

६०२१३३५ । ३३५ ।

अर्थ :—पाँच, तीन, तीन, एक, दो, शून्य और छह, इस अंक क्रमसे जो संख्या निर्मित हो चढ़ने योजन और तीनसौ हकसठसे भाजित दोसो चीरानबे ( ३३५ ) भाग प्रमाण भरतक्षेत्रका सूक्ष्म क्षेत्रफल है ॥२४०२॥

**विशेषार्थ :**—भरतक्षेत्रका बाण ५२६५१ अथवा १०००० योजन और जीवा (गा० १६१) १४४१११ = १०६१११ योजन है । अतएव गाथा २४०१ के नियमानुसार भरतक्षेत्रका सूक्ष्मक्षेत्रफल—

$$\sqrt{\left(\frac{१००००}{१६} \times \frac{१}{४} \times \frac{२७४६५४}{१६}\right) २ \times १०} = \sqrt{\left(\frac{६८७३८५०००}{१६}\right) २ \times १०}$$

$$= \sqrt{\frac{४७२४६८१३८२२५०००००००००}{६६१ \times ३६१}}$$

$$= ६०२१३३५३३६ योजन ।$$

**नोट :**—वर्गमूल निकालते समय जो अवशेष बचे वे वे छोड़ दिए गए हैं ।

**हिमवान् पर्वतका सूक्ष्म-क्षेत्रफल—**

णव-स्रुजव-अम-गयर्ण, एककं पण-दोणिए जोयना भागा ।

पंजावण - एकक- सया, हिमवत - गिरिन्मि क्षेत्रफलं ॥२४०३॥

$$२५१००४६६ \left| \begin{array}{l} १५५ \\ ३६१ \end{array} \right|$$

**अर्थ :**—नौ, छह, चार, शून्य, शून्य, एक, पाँच और दो, इस अंक क्रमसे जो संख्या निमित्त हो उतने योजन और तीनसौ इकसठसे भाजित एकसौ पचपन भाग ( २५१००४६६३३६ योजन ) प्रमाण हिमवान् पर्वतका सूक्ष्मक्षेत्रफल है ॥२४०३॥

**हिमवतक्षेत्रका सूक्ष्मक्षेत्रफल—**

छण्णव-छण्णभ-एककं, छम-अट्ट-सत्तं कमेरा भागा य ।

बु-रहिद-तिणिण-सयाइं, हिमवद - स्त्रिविन्मि क्षेत्रफलं ॥२४०४॥

$$७८६१०६६६ \left| \begin{array}{l} २६८ \\ ३६१ \end{array} \right|$$

**अर्थ :**—छह, नौ, छह, शून्य, एक, छह, आठ और सात, इस अंक क्रमसे जो संख्या निमित्त हो उतने योजन और तीनसौ इकसठसे भाजित दोसौ अट्टानव भाग ( ७८६१०६६६३३६ योजन ) प्रमाण हिमवत-क्षेत्रका सूक्ष्म क्षेत्रफल है ॥२४०४॥

**नोट :**—महाहिमवान् पर्वतके सूक्ष्म-क्षेत्रफलको दक्षिणवासी गाथा कीर्णों द्वारा खाई जा चुकी है ।

हरिवर्षक्षेत्रका सूक्ष्म-क्षेत्रफल—

छक्कं छप्पण-जव-तिय, छण्ड-इगि-छक्कं कमरा भागा य ।

बाहसरि-बोणि-सया, हरि-वरिस - तिविन्मि क्षेत्रफलं ॥२४०५॥

प्रमाणक्षेत्रका :— आकारं जी लुविच्छिद्यते जी क्षेत्रफल

$$६१६६३६५६६ \left| \begin{array}{l} २७२ \\ ३६१ \end{array} \right|$$

अर्थ :—छह, छह, पाँच, नौ, तीन, छह, छह, एक और छह इस अंक क्रमसे जो संख्या निर्मित हो उसने योजन और एक योजनके तीन सौ इकसठ भागोंमेंसे दो सौ बहत्तर भाग ( ६१६६३६५६६३६६ यो० ) प्रमाण हरिवर्षक्षेत्रका सूक्ष्म क्षेत्रफल है ॥२४०५॥

निषधपर्वतका सूक्ष्म-क्षेत्रफल—

तिय-एक्कंवर-णव-गुण-जव-खड-इगि-यंच-एक्क-अंसा य ।

तिणिज - सय - बारसाइ, क्षेत्रफलं जिसह - सेलस्स ॥२४०६॥

$$१५१४६२६०१३ \left| \begin{array}{l} ३१२ \\ ३६१ \end{array} \right|$$

अर्थ :—तीन, एक, शून्य, नौ, दो, नौ, बार, एक, पाँच और एक इस अंक क्रमसे जो संख्या निर्मित हो उसने योजन और एक योजनके तीनसौ इकसठ भागोंमेंसे तीन सौ बारह भाग ( १५१४६२६०१३३६६ यो० ) प्रमाण निषध-पर्वतका सूक्ष्म-क्षेत्रफल है ॥२४०६॥

विदेहक्षेत्रका सूक्ष्म-क्षेत्रफल—

दु-ख-णव-णव-खड-तिय-णव-छण्णव-गुण-जोयणेक्क-पसीए ।

भागा तिणिज सया इगि-छत्तिय-हरिवा विदेह - क्षेत्रफलं ॥२४०७॥

$$२६६६३४६६०२ \left| \begin{array}{l} ३०० \\ ३६१ \end{array} \right|$$

अर्थ :—दो, शून्य, नौ, नौ, चार, तीन, नौ, छह, नौ और दो इस अंक क्रमको एक पंक्तिमें रखनेसे जो संख्या निर्मित हो उसने योजन और तीनसौ इकसठसे भाजित तीनसौ भाग ( २६६६३४६६०२३६६ यो० ) प्रमाण विदेहका क्षेत्रफल है ॥२४०७॥

नीलान्त ऐरावतक्षेत्रादिका क्षेत्रफल—

भरह्मदो गिसहंता, जेसियमेता हवंति क्षेत्रफलं ।  
तं सध्वं वराध्वं, ऐरावत - पद्मवि - नीलंतं ॥२४०८॥

अर्थ :—भरतक्षेत्रसे लेकर निषधपर्वत तक जितना क्षेत्रफल है, वह सब ऐरावतक्षेत्रसे लेकर नीलपर्वत पर्यन्त भी कहना चाहिए ॥२४०८॥

जम्बूद्वीपका क्षेत्रफल—

अंबर-पण-एकक-चक्र-णव-छप्पण-सुण-णवय ससो च ।  
अंक - कमे परिमाणं, जम्बूद्वीपस्स क्षेत्रफलं ॥२४०९॥

७६०४६४१५० ।

अर्थ :—शून्य, पांच, एक, चार, नौ, छह, पांच, शून्य, नौ और सात इस अंक क्रमसे जो संख्या निर्मित हो, उतने योजन प्रमाण जम्बूद्वीपका क्षेत्रफल है ॥२४०९॥

दृष्टव्य :—इसी अधिकारकी गाथा ६ के नियमानुसार जम्बूद्वीपका सूक्ष्मक्षेत्रफल गाथा ५६ से ६५ पर्यन्त दर्शाया गया है ।

जम्बूद्वीपस्थ नदियोंकी संख्या—

अट्ठाधीस - सहस्सा, भरहस्स तरंगिणीओ दुग-सहिवा ।  
ते दुगुणा 'दुग - रहिवा, हेमवद - वसेत्त - सरिया णं ॥२४१०॥

२८००२ । ५६००२ ।

अर्थ :—भरतक्षेत्रकी नदियाँ अट्ठाईस हजार दो ( २८००२ ) और हैमवतक्षेत्रकी नदियाँ दो कम इससे दूनी अर्थात् छप्पन हजार दो ( ५६००२ ) हैं ॥२४१०॥

हेमवद - वाहिणीणं, दुगुणिय - संखा य दुग-विहीणा य ।  
हरिवरिसम्मि वमाणं, तरंगिणीणं च 'णावग्गं ॥२४११॥

११२००२ ।

अर्थ :—हरिवर्षक्षेत्रमें भी नदियोंका प्रमाण हैमवतक्षेत्रकी नदियोंसे दो कम दुगुनी संख्या रूप्य अर्थात् एक लाख बारह हजार दो ( ११२००२ ) जानना चाहिए ॥२४११॥

एवाणं ति - सेसाराणं, सरियाओ मेसिदूणं दुगुण - कथा ।

आर्यंति बारसोत्तर, बाणउवि - सहस्स तिय - लक्खा ॥२४१२॥

३६२०१२ ।

अर्थ :—इन तीन क्षेत्रोंकी नदियोंको मिलाकर दूना करनेसे तीन लाख नानवे हजार बारह ( ३६२०१२ ) होता है ॥२४१२॥

विशेषार्थ :—अरतक्षेत्रकी २५००२ + ५६००२ हैमवतक्षेत्रकी + ११२००२ नदियाँ हरिवर्ष की = १६६००६ नदियाँ हुईं । ~~अरतक्षेत्र, हैमवतक्षेत्र और हरिवर्ष क्षेत्रोंमें तीन नदियोंका प्रमाण यही है~~ अतः १६६००६ × २ = ३३२०१२ नदियाँ छह क्षेत्रोंकी हुईं ।

अट्ठासट्ठि - सहस्सभहियं' एवकं तरंगिणी - लक्खं ।

देवकुलम्मि य खेतो, आवब्बं उत्तरकुलम्मि ॥२४१३॥

१६८००० ।

अर्थ :—देवकुल और उत्तरकुलमें इन नदियोंकी संख्या एक लाख अड़सठ हजार ( १६८००० ) प्रमाण जाननी चाहिए ॥२४१३॥

अट्ठसरि - संजुशा, ओदस - लक्खाणि होंति दिग्वाओ ।

सब्बाओ पुब्बावर - विदेह - विजयाज सरियाओ ॥२४१४॥

१४०००७८ ।

अर्थ :—पूर्व और पश्चिम विदेहक्षेत्रोंकी सब दिग्ध नदियाँ चौदह लाख अठत्तर ( १४०००७८ ) हैं ॥२४१४॥

सशरस-सयसहस्ता, बाणउदि-सहस्समा य गउदि-कुदा ।

सब्बाओ बाहिणीओ, जंजूबीवम्मि मिसिबाओ ॥२४१५॥

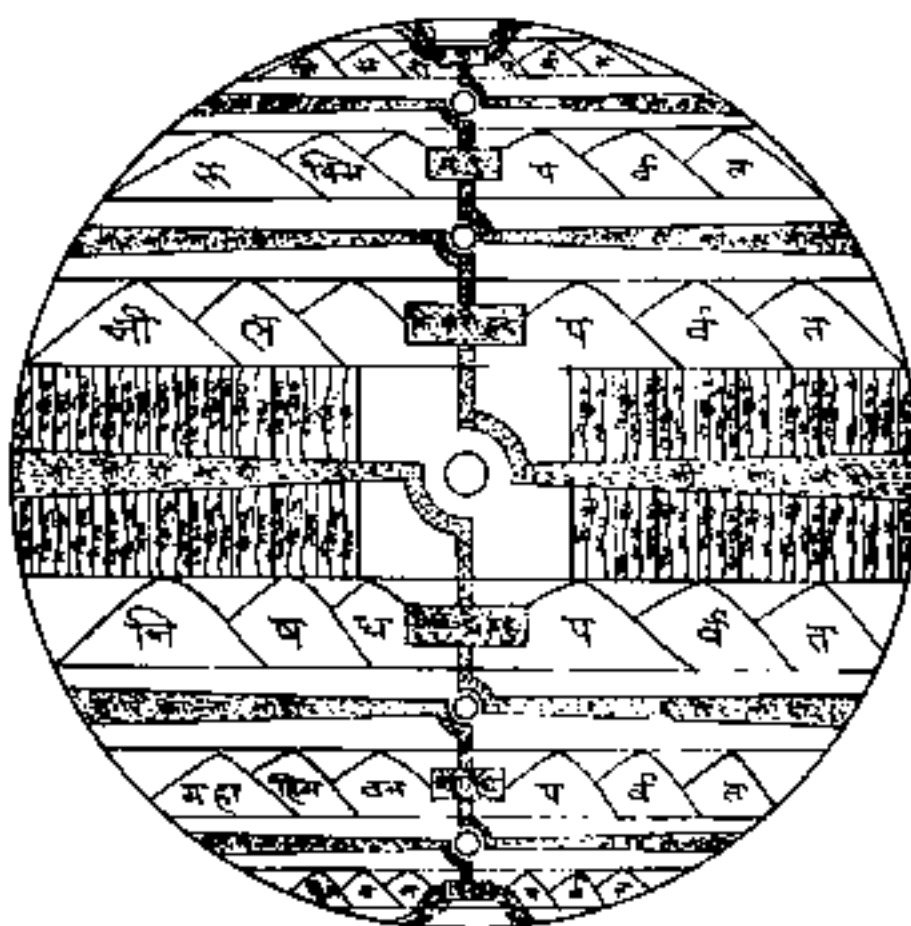
१७६२०६० ।

सदी-संख्या—विशेष० सीतासीतोबा २, शिवलक्ष्मी ६४, जिहंगा १२, सीतासीतोबा-परिवार १६८०००, से. न. प. ८६६०००, बि. परि. ३३६०००, एकत्र १४०००७८ । भरतावि ३६२०१२ । १७६२०६० ।

सर्व :—इसप्रकार सब मिलकर जम्बूद्वीपमें सत्तरह लाख बानबै हजार नब्बे (१७६२०६०) नदियाँ हैं ॥२४१५॥

[ तासिका ४४, अगले पृष्ठ पर देखिये ]

जम्बूद्वीपमें परिवार नदियाँ १७६२००० हैं और प्रमुख नदियाँ ६० हैं । इन ६० प्रमुख नदियोंका चित्रण निम्नप्रकार है—





## तालिका १ ४४

## जम्बूद्वीपस्थ सम्पूर्ण नदियोंकी तालिका

| क्र० | स्थान               | प्रमुख नदियोंके नाम  |        | प्रमाण                     | परिवार नदियाँ           |
|------|---------------------|----------------------|--------|----------------------------|-------------------------|
|      |                     | नाम                  | प्रमाण |                            |                         |
| १.   | भरतक्षेत्रमें       | गंगा-सिन्धु          | २      | $१४००० \times २ = २८०००$   |                         |
| २.   | हैमवतक्षेत्रमें     | रोहित-रोहितास्या     | २      | $२८००० \times २ = ५६०००$   |                         |
| ३.   | हरिक्षेत्रमें       | हरित-हरिकान्ता       | २      | $५६००० \times २ = ११२०००$  |                         |
| ४    | विदेहक्षेत्रमें     |                      |        |                            |                         |
| अ.   | देवकुरु             | सीता                 | १      | ८४०००                      |                         |
| ब.   | उत्तरकुरु           | सीतोदा               | १      | ८४०००                      |                         |
| स.   | पूर्व-विदेह         | विभंगा नदियाँ        | ६      | $२८००० \times ६ = १६८०००$  |                         |
| द.   | पश्चिम-विदेह        | विभंगा नदियाँ        | ६      | $२८००० \times ६ = १६८०००$  |                         |
| क.   | कच्छादि ८ देशोंकी   | रक्ता-रक्तोदा        | १६     | $१४००० \times १६ = २२४०००$ |                         |
| ख.   | वत्सादि ८ देशोंकी   | गंगा-सिन्धु          | १६     | $१४००० \times १६ = २२४०००$ |                         |
| ग    | पञ्चादि ८ देशोंकी   | गंगा-सिन्धु          | १६     | $१४००० \times १६ = २२४०००$ |                         |
| घ    | वज्रादि ८ देशोंकी   | रक्ता-रक्तोदा        | १६     | $१४००० \times १६ = २२४०००$ |                         |
| ५.   | रम्यक्षेत्रमें      | नारो-नरकान्ता        | २      | $५६००० \times २ = ११२०००$  |                         |
| ६    | हैरण्यवत क्षेत्रमें | सुवर्णकूला-रूप्यकूला | २      | $२८००० \times २ = ५६०००$   |                         |
| ७    | ऐरावत क्षेत्रमें    | रक्ता-रक्तोदा        | २      | $१४००० \times २ = २८०००$   |                         |
|      |                     |                      |        | ६०                         | परिवार नदियाँ = १७६२००० |
|      |                     |                      |        |                            | प्रमुख नदियाँ = + ६०    |
|      |                     |                      |        |                            | कुल योग = १७६२०६०       |

मार्गदर्शक :- आचार्य श्री स्वामिजी महाराज जी महाराज  
कुण्डोंका प्रमाण—

सरियाओ जेसियाओ, जेदुंसे तेसियाणि कुंडारि ।

विक्सावाओ ताओ, गिय - गिय - कुंडाण' एगामेहि ॥२४१६॥

अर्थ :- जितनी नदियाँ हैं उतने ही कुण्ड भी स्थित हैं । वे नदियाँ अपने-अपने कुण्डोंके नामोंसे विख्यात हैं ॥२४१६॥

विशेषार्थ :- गंगा-सिन्धु आदि चौदह महानदियाँ कुलाचल पर्वतोंसे जहाँ नीचे गिरती हैं, वहाँ कुण्ड हैं । उनको संख्या १४ है । बारह विभंगा नदियोंके उत्पत्ति-कुण्डोंकी संख्या १२, बत्तीस विदेह देशोंमेंसे प्रत्येक देशमें दो-दो नदियाँ कुण्डोंसे निकलकर बहती हैं अतः वहाँके कुण्डोंका प्रमाण ६४ है, इसप्रकार ( ६० नदियोंके ) से सब ( १४ + १२ + ६४ = ) ९० कुण्ड होते हैं ।

कुण्डोंके भवनोंमें रहनेवाले व्यन्तरदेव—

बैतरदेवा बहुओ, गिय-गिय-कुंडाण नाम-विदिवाओ ।

पल्साउ-पमाणाम्रो, 'जिवसंती ताण विव्य-गिरि-भवणे ॥२४१७॥

अर्थ :- अपने कुण्डोंके नामोंसे विदित एक पत्यप्रमाण मायुवाले चतुर्दश व्यन्तरदेव उन कुण्डोंके दिव्य गिरि-भवनोंमें निवास करते हैं ॥२४१७॥

वेदियोंकी संख्या एवं उत्सेधादि—

जेसिय कुंडा जेसिय, सरियाओ जेसियाओ अणसंडा ।

जेसिय सुर - जयरीओ, जेसिय जिजणाहु - भवजाणि ॥२४१८॥

जेसिय विक्साहर - सेवियाओ' जेसियाओ पुरियाओ ।

अउआलंबे जेसिय, जयरीओ जेसियहि - वहा ॥२४१९॥

वेदीओ तेसियाओ, गिय-गिय-ओगाओ ताण पसेकं ।

जोयण - वलमुण्छेहो, रुंडा चावाणि पंच - सया ॥२४२०॥

जो १ । दंड ५०० ।

अर्थ :—जितने कुण्ड, जितनी नदियाँ, जितने वन-समूह, जितनी देव-नगरियाँ, जितने

जिनेन्द्र-भवन, जितनी विद्याघर श्रेणियाँ, जितने नगर, आर्य खण्डोंकी जितनी नगरियाँ, जितने पर्वत और जितने द्रुह हैं, उनमेंसे प्रत्येकके अपने-अपने योग्य उत्तनी ही वेदियाँ हैं। इन वेदियोंकी ऊँचाई आधा योजन और विस्तार पाँचसौ धनुष प्रमाण है ॥२४१५-२४२०॥

नगरि विसेसो एसो, देवारण्यस्त भूवरण्यस्त ।

ओयणमेकं उवग्रो, दंड - सहस्तं च विस्थारो ॥२४२१॥

अर्थ :—विशेष यह है कि देवारण्य और भूतारण्यकी वेदियोंकी ऊँचाई एक योजन तथा विस्तार एक हजार धनुष प्रमाण है ॥२४२१॥

जिनभवनोंकी संख्या—

कुण्ड - वनसंघ - सरिधा - सुरण्यरी - सेल-तोरणहार ।

विज्जाहर - वर - सेढी - नयरज्जासंघ - नयरीग्रो ॥२४२२॥

वह - पंचय - पुष्पावर - विदेह-गामावि-सम्मली-रुक्खा ।

जेसिममेशा जंबू - रुक्खाइं तैसिया जिज - गिकेडा ॥२४२३॥

अर्थ :—कुण्ड, वनसमूह, नदियाँ, देवनगरियाँ, पर्वत, तोरणहार, विद्याघर श्रेणियोंके उत्तम नगर, आर्यखण्डोंकी नगरियाँ, द्रुह पंचक ( पाँच-पाँच द्रुह ), पूर्वपर-विदेहोंके ग्रामादिक, शाल्मलीवृक्ष और जम्बूवृक्ष जितने हैं उतने ही जिन-भवन भी हैं ॥२४२२-२४२३॥

कुल-शैलादिकोंकी संख्या—

एककुल-शैला सन्धे, विजयड्डा होंति सोत चड - कुशा ।

सोलस वक्षारगिरी, वारणवंता य चत्तारो ॥२४२४॥

६।३४।१६।४।

अर्थ :—जम्बूद्वीपमें सब कुलपर्वत छह, विजयाघं चौतीस, वक्षारगिरि सोलह और मजदन्त पर्वत चार हैं ॥२४२४॥

सह अट्ट बिग्याइवा, नाभिगिरिवा हवन्ति चत्तारि ।

चोतीस वसह - सेला, कंचण - सेला सयाण दुवे' ॥२४२५॥

८ । ४ । ३४ । २०० ।

अर्थ :—दिग्गजेन्द्र पर्वत आठ ( ८ ), नाभिगिरीन्द्र चार ( ४ ), वृषभशील चौतीस ( ३४ ) तथा काञ्चनशील दोसी ( २०० ) हैं ॥२४२५॥

एक्को य मेव कूडा<sup>१</sup>, पंच - सया अट्टसट्ठि - अम्भहिया ।

सरा चिचय महविजया, चोतीस हवन्ति कम्मभूमिओ ॥२४२६॥

१ । ५६८ । ७ । ३४ ।

अर्थ :—एक मेव, पांचसौ अट्टसठ ( ५६८ ) कूट, सात महाक्षेत्र और चौतीस ( ३४ ) कर्म-भूमियाँ हैं ॥२४२६॥

सत्तरि<sup>२</sup> अम्भहिय-सय, मेच्छखण्ड<sup>३</sup> छह भोगभूमिओ ।

वक्षारि जमल - सेला, जंबूदीवे समुद्दिट्ठा<sup>४</sup> ॥२४२७॥

एवं जंबूदीव-वर्णना समाप्ता ॥२॥

अर्थ :—जम्बूद्वीपमें एकसौ सत्तर म्लेच्छखण्ड, छह भोग-भूमियाँ और चार यमक-शील कहे गए हैं ॥२४२७॥

विशेषार्थ :—जम्बूद्वीपमें सुदर्शन मेरु १, कुलाचल ६, विजयार्थ ३४, वक्षारगिरि १६, गजदन्त ४, दिग्गजेन्द्र ८, नाभिगिरि ४, वृषभाचल ३४, काञ्चनशील २०० और यमकगिरि ४ हैं । इन सबका योग करनेपर ( १ + ६ + ३४ + १६ + ४ + ८ + ४ + ३४ + २०० + ४ ) = ३११ पर्वत होते हैं ।

कूट ५६८, महाक्षेत्र ७, कर्मभूमियाँ ३४, म्लेच्छखण्ड १७० और भोगभूमियाँ ६ हैं ।

इसप्रकार जम्बूद्वीपका वर्णन समाप्त हुआ ॥२॥

## —: लवण समुद्र :—

लवणसमुद्रका आकार और विस्तारवि—

अस्थि लवणपुरासी, जम्बूदीपस्त लाइयायारो ।  
समबद्धो सो जोगण - वे - सक्क - पमाण - वित्तारो ॥२४२८॥

२००००० ।

अर्थ :—लवणसमुद्र जम्बूद्वीपकी खाईके आकार गोल है । इसका विस्तार दो लाख ( २००००० ) योजन प्रमाण है ॥२४२८॥

गावाए उवरि गावा, ग्रहो-मुही जह ठिवा सह समुद्रो ।  
गयणे समंतदो सो, वेट्टेदि हु चक्कवालेण ॥२४२९॥

अर्थ :—एक नावके ऊपर अधोमुखी दूसरी नावके रखनेसे जैसा आकार होता है, उसी-प्रकार वह समुद्र चारों ओर आकाशमें मण्डलाकारसे स्थित है ॥२४२९॥

चित्तोवरिम - तल्लदो, कूडायारेण उवरि चारिणिही ।  
सत्त - सय - जोगणाई, उदएण गहम्मि वेट्टेदि ॥२४३०॥

७०० ।

अर्थ :—वह समुद्र चित्रा-पृथिवीके उपरिम-तलसे ऊपर बृटके आकारसे आकाशमें सातसी ( ७०० ) योजन ऊँचा स्थित है ॥२४३०॥

उट्ठे' भवेदि एवं, जलणिहिणो जोगणा वस-सहस्ता ।  
विस्तावणि - पणिहीए, विक्कंभो दोण्णि सक्कणि ॥२४३१॥

१०००० । २००००० ।

अर्थ :—उस समुद्रका विस्तार ऊपर दस हजार ( १०००० ) योजन और चित्रापृथिवीकी प्रणिधिमें दो लाख ( २००००० ) योजन प्रमाण है ॥२४३१॥

पत्तेवकं दु-तडाओ, एविसिय पणसुववि-ओयण-सहस्स<sup>१</sup> ।  
गाढे तग्गि सहस्सा, तलवासो दस - सहस्साणि ॥२४३२॥

६५००० । ६५००० । १०००० ।

अर्थ :—दोनों तटोंमेंसे प्रत्येक तटसे पंचानव हजार ( ६५०००, ६५००० ) योजन प्रवेश करनेपर उसकी एक हजार योजन गहराईपर तल-विस्तार दस हजार ( १०००० ) योजन प्रमाण है ॥२४३२॥

हानि-वृद्धि एवं भूव्यास और मुख-व्यासका प्रमाण—

भूमिअ मुहुं सोहिय, उदय - हिदं भू-मुहाउ-हाणि-वया ।  
मुहमजुवं वे लक्खा, भूमि ओयण - सहस्समुस्सेहो ॥२४३३॥

१०००० । २००००० । १००० ।

अर्थ :—भूमिमेंसे मुखको कम करके ऊँचाईका भाग देनेपर भूमिकी ओरसे हानि और मुखकी ओरसे वृद्धिका प्रमाण आता है । यहाँ मुखका प्रमाण अयुत अर्थात् दस हजार ( १०००० ) योजन, भूमि-का प्रमाण दो लाख योजन और जलकी गहराईका प्रमाण एक हजार ( १००० ) योजन है ॥२४३३॥

विस्तारका प्रमाण ज्ञात करनेकी विधि—

खय-वद्धीण पमाणं, एक-सयं ओयणाणि णउवि-सुवं ।  
इच्छा-हव-हाणि-वया, खिदि - हीणा मूह - जुवा दवं ॥२४३४॥

१६० ।

अर्थ :—उस खय-वृद्धिका प्रमाण एकसौ नव्वे ( १६० ) योजन है । इच्छासे गृहीत हानि-वृद्धिके प्रमाणको भूमिमेंसे कम अथवा मुखमें मिला देनेपर विवक्षित स्थानके विस्तारका प्रमाण ज्ञात जाता है ॥२४३४॥

( २००००० — १०००० ) ÷ १००० = १६० हानि-वृद्धिका प्रमाण ।

उपरिम जलकी क्षय-वृद्धिका प्रमाण—

उपरिम-जलस्त ज्ञेयम्, उग्राजोस-सयाणि सप्त-हुरिकाणि ।

क्षय - वृद्धीण प्रमाण, ज्ञेयम् लक्षण - अलहिम्नि ॥२४३५॥

११०० ।

अर्थ :—लवणसमुद्रमें उपरिम ( तटोंसे मध्यकी ओर और मध्यसे तटोंकी ओर ) जलकी क्षय-वृद्धिका प्रमाण सातसे भाजित उग्राजोसयी योजना है । अर्थात् समतल भूमिसे जलकी क्षय-वृद्धिका प्रमाण २७१३ योजन है ॥२४३५॥

समुद्रतटसे ६५००० यो० भीतर प्रवेश करने पर वहाँ जलकी गहराई और ऊँचाईका प्रमाण—

पसेवर्क वु-तडावो, पविसिय पणणउदि-जोयण-सहस्सा ।

गाडा सस्त सहस्सं, एवं सोहिण्ण अंगुलावीण ॥२४३६॥

६५००० । १००० । १५ । १

अर्थ :—दोनों तटोंमेंसे प्रत्येक किनारेसे पञ्चानव हजार ( ६५००० ) योजन प्रवेश करनेपर उसकी गहराई एक हजार ( १००० ) योजन प्रमाण है । इसीप्रकार अंगुलादिक शोध लेना चाहिए ॥२४३६॥

विशेषार्थ :—लवणसमुद्रके प्रत्येक तटसे ६५००० योजन प्रवेश करने पर वहाँ जलकी गहराई १००० योजन प्राप्त होती है । तब एक योजन प्रवेश करनेपर कितनी गहराई प्राप्त होगी ? इसप्रकार त्रैराशिक करनेपर ८४ धनुष, १ वितस्ति, १ पाद और २५ अंगुल प्राप्त होते हैं । अर्थात् समुद्रमें एक योजन प्रवेश करनेपर वहाँ जलकी गहराई  $\frac{1}{1000} = \frac{1}{1000}$  योजन अर्थात् ८४ धनुष, ० रिक्कू, ० हाण, १ वि०, १ पाद और २५ अंगुल प्राप्त होगी ।

वु-तडावो जल-मज्जे, पविसिय पणणउदि-जोयण-सहस्सा ।

सस्त - सयाह उग्रजो, एवं सोहिण्ण अंगुलावीण ॥२४३७॥

६५००० । ७०० । १५० । १

अर्थ :- दोनों तटोंसे जलके मध्यमें पंचानवे हजार ( ६५००० ) योजन-प्रमाण प्रवेश करनेपर सातसौ योजन ऊँचाई प्राप्त होती है । इसीप्रकार अंगुलादिकोंको शोध लेना चाहिए ॥२४३७॥

विशेषार्थ :- दोनों तटोंसे जलके मध्य ६५००० योजन प्रवेश करनेपर वहाँ जलकी ऊँचाई ७०० योजन प्राप्त होती है । सब एक योजन प्रवेश करनेपर कितनी ऊँचाई प्राप्त होगी ? इस प्रकार त्रैशिक करने पर  $१६३३ = १६३$  योजन अर्थात् ५८ घनुष, १ रिक्कू, १ हाथ, १ वितस्ति, १ पाद, ० अंगुल और ७३६ औ प्रमाण ऊँचाई प्राप्त होगी ।

लवणसमुद्रमें पाताल्लोका निरूपण—

लवणोवहि-बहु-मज्जे, पादाला ते समंततो ह्येति ।

अट्ठत्तरं सहस्त्रं, जेट्ठा मज्झा जहण्णा य' ॥२४३८॥

१००८ ।

अर्थ :-लवणोदधिके बहु-मध्य-भागमें चारों ओर उत्कृष्ट, मध्यम और जवन्य एक हजार ( १००० ) पाताल हैं ॥२४३८॥

चत्तारो पायाला, जेट्ठा मज्झित्तमा वि चत्तारो ।

होवि जहण्ण सहस्त्रं, ते सन्धे रंजसायारा ॥२४३९॥

४।४।१००० ।

अर्थ :-ज्येष्ठ पाताल चार, मध्यम चार और जवन्य एक हजार ( १००० ) हैं । ये सब पाताल राज्जन अर्थात् बड़ेके आकार सदन हैं ॥२४३९॥

ज्येष्ठ पाताल्लोका निरूपण—

उषिकट्ठा पायाला, पुष्पादि - वितासु जलहि-मज्झम्मि ।

पायाल - कदम्बकला<sup>१</sup>, बड्ढामुह - औषकेसरिणो ॥२४४०॥

अर्थ :-पूर्वादिक वितासोंमें समुद्रके मध्यमें (१) पाताल, (२) कदम्बक, (३) बड्ढामुल और (४) यूपकेशरी नामक चार उत्कृष्ट पाताल हैं ॥२४४०॥

पुह पुह दु-सज्जहिंत्तो, पविसिय पणणउदि जोयण-सहस्सा ।

लवणजले चत्तारो, जेट्ठा खेट्ठंति पायाला ॥२४४१॥

६५००० । ६५००० ।



**अर्थ :-** दोनों किनारोंसे लवणसमुद्रके जलमें पंचानन हजार ( १५००० ) योजन प्रमाण प्रवेश करनेपर पृथक्-पृथक् ये चार पाताल स्थित हैं ॥२४४१॥

पुह - पुह मूलम्नि मुहे, विस्वारो जोयणा दस-सहस्रा ।

उदगो वि एका - त्वत्तं, मज्झिम - दंशो वि सम्मेत्तं ॥२४४२॥

विशेषार्थ :- १०००० । १०००० । १ स । १ न ।  
अर्थ :- आचार्य श्री सुविजितराज जी महाराज

**अर्थ :-** ( इन ) पातालोंका पृथक्-पृथक् मूल विस्तार दस-हजार ( १०००० ) योजन, मुख विस्तार दस हजार ( १०००० ) योजन, ऊंचाई एक लाख योजन और मध्यम विस्तार भी एक लाख योजन प्रमाण हो है ॥२४४२॥

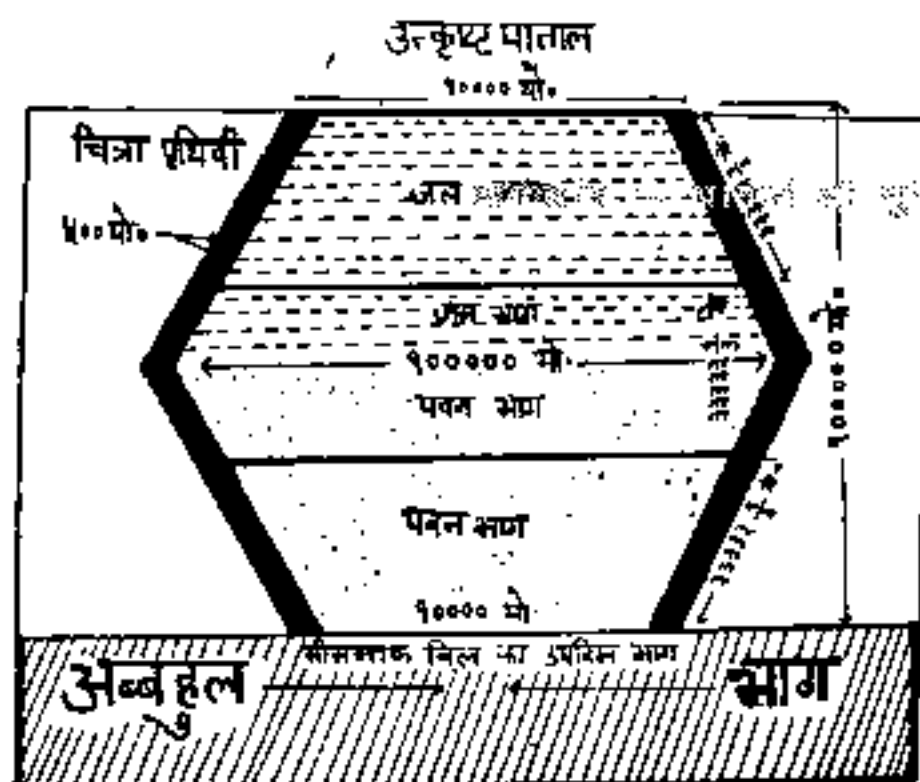
जेट्टा ते संलग्गा, सीमंत - बिलस्स उवरिसे भागे ।

पण - सय - जोयण - बहुला, कुड्डा एवाण बज्जमया ॥२४४३॥

५०० ।

**अर्थ :-** वे ज्येष्ठ पाताल सीमन्त बिलके उपरिम भागसे संलग्न हैं । इनकी वष्यमय भित्तियाँ पाँचसौ ( ५०० ) योजन प्रमाण मोटी हैं ॥२४४३॥

**विशेषार्थ :-** रत्नप्रभा नामकी प्रथम पृथिवी एक लाख अस्सी हजार ( १८०००० ) योजन मोटी है । इसके ऊपर, पक्कू और अम्बहुल नाम वाले तीन भाग हैं जो क्रमशः १६०००, ८४००० और ८०००० योजन बाहुल्यवाले हैं । लवणसमुद्रकी मध्यम-परिधिपर जो चार ज्येष्ठ पाताल हैं वे अम्बहुल भागपर स्थित सीमन्तक बिलके उपरिम भागसे संलग्न हैं और इनसे चित्रा पृथिवी पर्यन्तकी ऊंचाई ( पंकभाग ८४००० यो० + ऊपरभाग १६००० यो० = ) एक लाख योजन है; इसीलिए ज्येष्ठ पातालोंकी ऊंचाई एक-एक लाख योजन कही गई है । इन पातालोंकी वष्यमय भित्तियाँ ५००-५०० योजन मोटी हैं ।



### मध्यम-पाताल्लोका निरूपण—

जेट्ठारुं बिच्छाले, विदितासुं मज्झिम्मा वु पादाला ।

ताणं संह - प्पहुदि, उच्चिकवुणं वसंसेण ॥२४४४॥

१००० । १००० । १०००० । १०००० । ५० ।

अर्थ :—इन ज्येष्ठ पाताल्लोके बीच विदितासुंमें मध्यम पाताल स्थित हैं और उनका विस्तारादिक उत्कृष्ट पाताल्लोकी अपेक्षा दसवें भाग प्रमाण है ॥२४४४॥

विलेखार्थ :—मध्यम पाताल्लोका मूल विस्तार १००० योजन, मुख विस्तार १००० योजन, ऊँचाई १०००० योजन, मध्य विस्तार १०००० योजन और इनकी वज्रमय भित्तियोंकी मोटाई ५० योजन प्रमाण है ।

गवणउदि-सहस्तराणि, पंच-सया ज्ञोयणाणि वु - तडेसुं ।

पुह पुह पच्चिसिय सलिले, पायाला मज्झिम्मा होति ॥२४४५॥

अर्थ :—पृथक्-पृथक् दोनों किनारोंसे निन्यानर्न हजार पचास (६६५००) योजन प्रमाण जलमें प्रवेश करनेपर मध्यम पाताल है ॥२४४५॥

पार्श्वद्वारा — अर्थात् अग्नि सुविहितपाताल की ओर ॥२४४५॥

अधन्य पातालोंका निरूपण—

जेद्दाराण - मक्किम्ममाणं, बिक्खालेसुं जहण्य - पायाला ।

पुह पुह पण-यण-माणा, मक्किम्म-वस-भाग-रुंवावी ॥२४४६॥

१०० । १०० । १००० । १००० । ५ ।

अर्थ :—उत्कृष्ट और मध्यम पातालोंके बीच-बीचमें अधन्य पाताल स्थित हैं । प्रत्येक अन्तरालमें इनका पृथक्-पृथक् प्रमाण १२५-१२५ है । इनका विस्तारदिक मध्यम पातालोंकी अपेक्षा दसवें भाग प्रमाण है ॥२४४६॥

विशेषार्थ :—उत्कृष्ट पाताल ४ हैं और मध्यम पाताल भी ४ हैं । इनके बीच-बीचमें ८ अन्तराल हैं । प्रत्येक अन्तरालमें १२५-१२५ अधन्य ( १२५ × ८ = १००० ) पाताल स्थित हैं । इनका मूल विस्तार १०० योजन, मुख विस्तार १०० योजन, ऊँचाई १००० योजन, मध्य विस्तार १००० योजन और मोटाई ५ योजन प्रमाण है ।

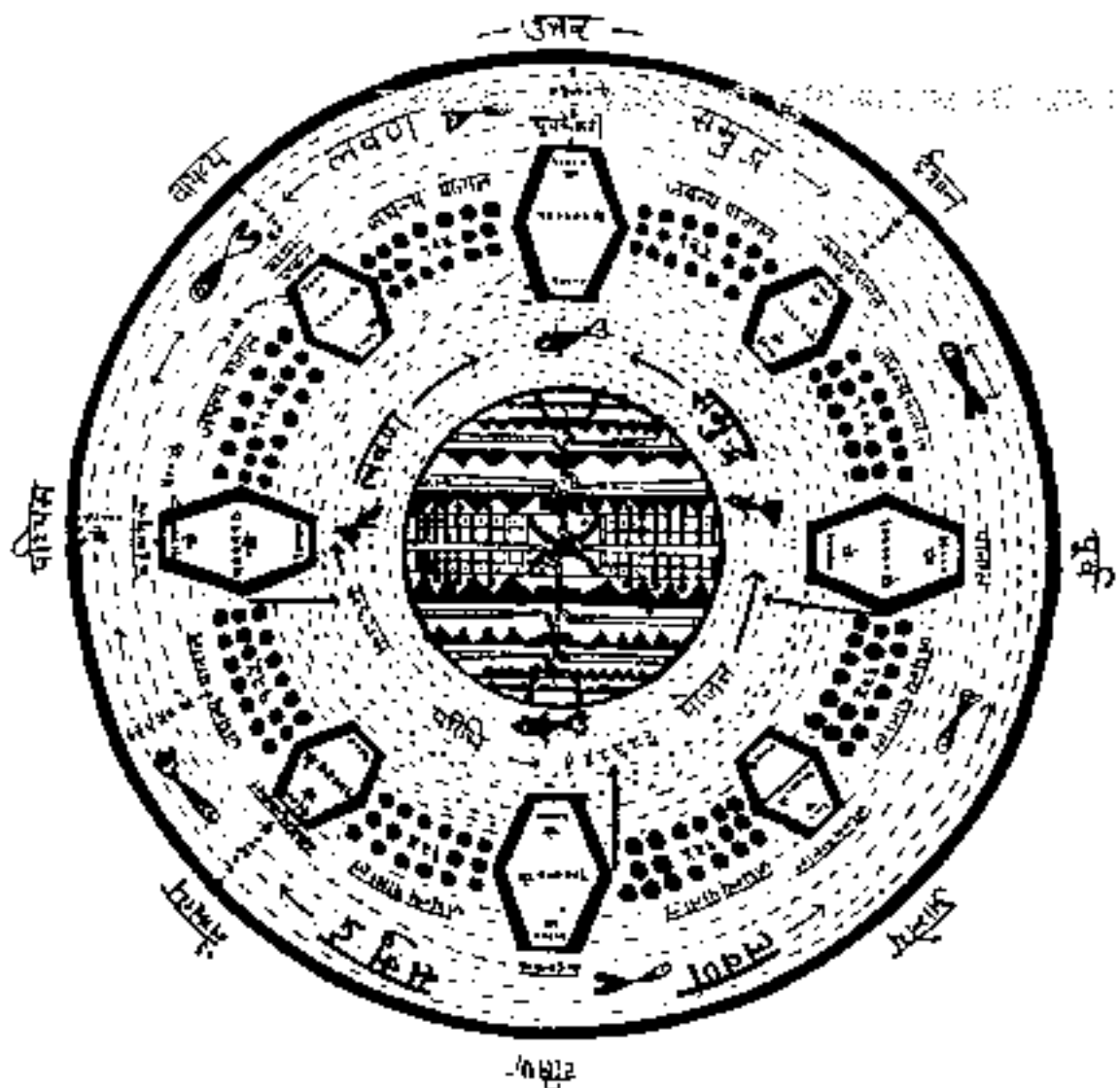
णवणउवि-सहस्साणि, णव-सय-पण्णास-ओयणाणि तहा ।

पुह पुह वु - तडाहितो, पविसिय चेद्वंति अवरे वि ॥२४४७॥

६६६५० ।

अर्थ :—पृथक्-पृथक् दोनों किनारोंसे निन्यानर्न हजार नौ सौ पचास ( ६६६५० ) योजन प्रमाण (जलमें) प्रवेश करनेपर अधन्य पाताल स्थित हैं ॥२४४७॥

नोट :—तीनों प्रकारके पातालोंकी स्पष्ट स्थिति लघुसमुद्रके निम्नाङ्कित चित्रण द्वारा ज्ञातम्ह है—



नोट :—इन पाताललोकों की स्थिति समुद्र में नीचे की ओर इस आकार की है। उनके स्वरूप और उनकी अवस्थितिसे अवगत कराने के लिए चित्र में उन्हें इस प्रकार दिखाया गया है।

ज्येष्ठ और मध्यम पाताललोकों का अन्तराल प्राप्त करने की विधि—

जेट्टाणं मुह-र-दं, जलपिहि-मज्झिह-परिहि-मज्झिह-मि ।

सोहिय - चउ - पविहल, हवेवि एक्केवक - विन्नालं ॥२४४८॥

अर्थ :—लवणसमुद्र की मध्यम परिधि में से ज्येष्ठ पाताललोक मुख-व्यास (  $10000 \times 4 = 40000$  योज ) और मध्यम पाताललोक मुख-व्यास (  $10000 \times 4 = 40000$  योज ) घटाकर शेष में चार का भाग देने पर जो-जो लब्ध प्राप्त हो वही एक-एक पाताल के अन्तराल का प्रमाण है ॥२४४८॥

लवण समुद्रकी मध्यम परिधिका प्रमाण —

णव-सहस्र - जोयणाइ, अठ्ठास-सहस्र-धस्सयाणं पि ।

तेसोसी अजियाइ, सायर-मज्झिम्हस्स-परिहि-परिमाणं ॥२४४६॥

१४८६८३ ।

अर्थ :—लवणसमुद्रकी मध्यम परिधि नौ लाख अठ्ठासहस्र हजार छहसौ तेरासी ( १४८६८३ ) योजन प्रमाण है ॥२४४६॥

विशेषार्थ :—लवणसमुद्रका मध्यम सूची व्यास ३ लाख योजन प्रमाण है । गाथा १ के नियमानुसार परिधिका प्रमाण—

परिधि =  $\sqrt{३ \text{ लाख} \times ३ \text{ लाख} \times १०} = १४८६८३$  यो० परिधि ।  $१४८६८३ \div १० = १४८६८३$  यो० अवशेष नचे जो छोड़ दिए गये ।

ज्येष्ठ पाताल्लोका अन्तराल—

सत्तावीस - सहस्सा, सत्तरि - क्षुत्तं सयं नु वे - लक्खा ।

जोयण - ति - चउवभागा, जेड्डाणं होवि विक्खासं ॥२४५०॥

२२७१७० । ३ ।

अर्थ :—ज्येष्ठ पाताल्लोके बीच-बीचका अन्तराल दो लाख सत्ताईस हजार एकसौ सत्तर और एक योजनके चार भागोंमेंसे तीन भाग ( २२७१७०३ योजन ) प्रमाण है ॥२४५०॥

विशेषार्थ :—लवणसमुद्रकी मध्यम परिधि [ १४८६८३—( १०००० × ४ ) ] ÷ ४ = २२७१७०३ योजन एक ज्येष्ठ पातालसे दूसरे ज्येष्ठ पातालके मुखके अन्तरका प्रमाण है ।

मध्यम पाताल्लोका अन्तराल—

छत्तीस - सहस्साणि, सत्तरि - क्षुत्तं सयं नु वे लक्खा ।

जोयण - ति - चउवभागा, मज्झिम्हयाणं च विक्खासं ॥२४५१॥

२३६१७० । ३ ।

अर्थ :—मध्यम पाताल्लोका अन्तराल दो लाख छत्तीस हजार एकसौ सत्तर और एक योजनके चार भागोंमेंसे तीनभाग ( २३६१७०३ यो० ) प्रमाण है ॥२४५१॥

विशेषार्थः—[ ६४८६८३—( १००० × ४ ) ] ÷ ४ = २३६१७० ३/४ योजन एक मध्यम पातालसे दूसरे मध्यम पातालके मुखके अन्तरका प्रमाण है ।

ज्येष्ठ पातालोंसे मध्यम पातालोंके मुखोंका अन्तर—

जेदुतर - संखादो, एक - सहस्रस्मि समवणीदस्मि ।

अद्व - कवे जेदुण, मज्झिमयाणं च विञ्चालं ॥२४५२॥

जोयण - लखं तेरस - सहस्सया पंचसीवि - संजुषा ।

तं विञ्चाल - पमाणं, दिवद्द - कोसेण अविरितं ॥२४५३॥

११३०८५ । को ३ ।

वर्णः—ज्येष्ठ पातालोंके अन्तराल-प्रमाणमेंसे एक हजार ( १००० ) कम करके आधा करनेपर ज्येष्ठ और मध्यम पातालोंका अन्तराल-प्रमाण निकलता है; जो एक लाख तेरह हजार पचासी योजन और षेड कोस अधिक है ॥२४५२-२४५३॥

विशेषार्थः—पूर्व, दक्षिण, पश्चिम और उत्तर दिशागत ज्येष्ठ पातालोंके मुखसे मुखका अन्तर २२७१७० ३/४ योजन है । इसमेंसे विदिशागत मध्यम पातालका मुख व्यास १००० योजन घटाकर आधा करनेपर दिशागत ज्येष्ठ पाताल और विदिशागत मध्यम पातालोंके मुखसे मुखका अन्तर प्राप्त होता है । यथा—

( २२७१७० ३/४ यो० — १००० यो० ) ÷ २ = ११३०८५ योजन और १३ कोस ।

जघन्य पातालसे जघन्य पातालके मुखका अन्तर—

जेदुण मज्झिमाणं, विञ्चस्मि जहण्णयाणं मुहु-वासं ।

फेडियं सेसं विणुणिय - तेसद्वीए कय - विभागे ॥२४५४॥

अं लद्धं अवराणां, पायालाणं तमंतरं होदि ।

तं माणं सल - सया, मद्दुणउदी च सविसेसा ॥२४५५॥

७६८ । १२१ । ७३१ ।

**अर्थ** :—ज्येष्ठ और मध्यम पातालोंके अन्तराल-प्रमाणमेंसे जघन्य पातालोंके मुख-विस्तार को कम करके शेषमें विगुणित तिरसठ अर्थात् एकसौ छब्बीसका भाग देनेपर जो लब्ध भावे सत्तना जघन्य पातालका अन्तराल होता है। उसका प्रमाण सातसौ अट्ठानव योजनोंसे अधिक है ॥२४५४-२४५५॥

**विशेषार्थ** :—उपर्युक्त गाथामें ज्येष्ठ और मध्यम पातालका अन्तराल ११३०८५ योजन और ३ कोस कहा गया है। ज्येष्ठ और मध्यम पातालोंके प्रत्येक अन्तरालमें १२५-१२५ जघन्य पाताल हैं। इनका मुख व्यास १०० योजन प्रमाण है अतः  $१२५ \times १०० = १२५००$  योजन मुख विस्तारकी ११३०८५ यो०, ३ कोसमेंसे घटाकर (  $११३०८५ \frac{१}{२}$  यो० —  $१२५०० = १००५८५ \frac{१}{२}$  यो० ) सबको १२५ ( ज्येष्ठ पाताल १ + म० पाताल १ + ज० पाताल १२५ = १२७ पातालोंके अन्तराल १२६ ही होते हैं ) से भाजित करनेपर जघन्य पातालोंके अन्तरालका प्रमाण  $७६८३ \frac{१}{२} + ३ \frac{१}{२}$  यो० अर्थात् ७६८ योजन और  $२३७३ \frac{१}{२}$  अनुष प्राप्त होता है।

प्रत्येक पातालके विभाग एवं उनमें स्थित वायु तथा जलादिका प्रमाण—

पक्षेष्कं पायासा, ति - वियप्पा से हवन्ति कमदीणं ।

हेट्ठाहितो वायं, जलवायं सलिलमासेज्जं ॥२४५६॥

**अर्थ** :—प्रत्येक पाताल क्रमशः जल, जल और वायु तथा नीचे वायुका आश्रय लेकर तीन प्रकारसे विद्यमान है ॥२४५६॥

तेत्तीस-सहस्रारिण, ति - सया तेत्तीस जोयण-ति-भागो ।

पक्षेष्कं जेट्ठाणं, पमाणमेवं तिमसस्स ॥२४५७॥

३३३३३ । ३ ।

**अर्थ** :—ज्येष्ठ पातालमेंसे प्रत्येक पातालके तीसरे भागका प्रमाण तेत्तीस हजार तीनसौ तेत्तीस योजन और एक योजनका तीसरा भाग (  $३३३३३ \frac{१}{३}$  योजन ) है ॥२४५७॥

**विशेषार्थ** :—सवणसमुद्रकी चारों दिशामें एक लाख योजन ऊँचाई वाले चार ज्येष्ठ पाताल हैं। ऊँचाईकी अपेक्षा इनके तीन भाग करनेपर (  $३३३३३ \frac{१}{३}$  )  $३३३३३ \frac{१}{३}$  योजनमें वायु,  $३३३३३ \frac{१}{३}$  योजनमें वायु एवं जल और  $३३३३३ \frac{१}{३}$  योजनमें मात्र जल विद्यमान है।

मध्यम और जघन्य पातालमें जलदिकका विभाग—

तिणिण सहस्त्रा ति-सया, तेत्तीस-अवाणि जोयण-ति-भागो ।

पत्तेवकं नावब्बं, 'मज्झिमय - तिर्यस - परिमाण ॥२४५८॥

अर्थ :—मध्यम पातालमेंसे प्रत्येकके तीसरे भागका प्रमाण (  $1000 = 333\frac{1}{3}$  यो० ) तीन हजार तीनसौ तेत्तीस योजन और एक योजनके तीन भागोंमेंसे एक भाग (  $333\frac{1}{3}$  योजन ) जानना चाहिए ॥२४५८॥

तेत्तीस-अवाण्यणि, तिणिण सयाणं च जोयण-ति-भागो ।

पत्तेवकं वहुब्बं, तिर्यस - माणं<sup>१</sup> अहण्णाणं ॥२४५९॥

३३३  $\frac{1}{3}$  ।

अर्थ :—जघन्य पातालमेंसे प्रत्येकके तीसरे भागका प्रमाण तीनसौ तेत्तीस योजन और एक योजनके तृतीयभाग (  $1000 = 333\frac{1}{3}$  यो० ) जानना चाहिए ॥२४५९॥

लवणसमुद्रके जलमें हानि-वृद्धि होनेका कारण—

हेट्ठिल्लम्मि ति-भागो, वसुमह - विहराण केवलो वादो ।

मज्झिस्से जलवादो, उवरिल्ले सलिल - पडभारो ॥२४६०॥

पवणेण पुण्ड्रियं तं, चलाचलं मज्झिमं सलिल - वाधं ।

उवारि चेट्ठि सलिलं, पवणाभावेण केवलं तेसु<sup>२</sup> ॥२४६१॥

अर्थ :—पृथिवीके दिवर ( गड्ढे ) स्वरूप इन पातालोंके ऊपरके विभागमें केवल जल, मध्यम भागमें जल तथा वायु और नीचेके भागमें मात्र वायु विद्यमान है । उन पातालोंके तीन भागोंमेंसे मध्यका जल-वायुवाला विभाग पहले भाग ( नीचे ) के पवनसे ( प्रेरित हुआ ) चलाचल होता है । ऊपरके भागमें पवनका अभाव होनेसे केवल जल रहता है ॥२४६०-२४६१॥

बिसेवार्थ :—शुक्ल तथा कृष्ण पक्षमें लवणसमुद्रके जलकी वृद्धि-हानिमें मध्यम भागमें स्थित जल और वायुका चंचलपना ही कारण है ।



पातालानां 'मरुता, पक्षे सोवन्मि वड्ढंति य ।

हीयंति किण्ण - पक्षे, सहावदो सञ्च - कालेसु' ॥२४६२॥

अर्थ :—पातालोंके पवन-सर्वकाल स्वभावसे ही शुक्लपक्षमें बढ़ते हैं और कृष्णपक्षमें घटते हैं ॥२४६२॥

ज्येष्ठ पातालमें पवनकी वृद्धिका प्रमाण—

वड्ढीं बावीस - सया, बावीसा जोयणाणि अदिरेगा<sup>१</sup> ।

पञ्चमो<sup>२</sup> तिद - पक्षे य - पण्णिकामं पुण्णिमं जाय ॥२४६३॥

२२२२ । ३ ।

अर्थ :—शुक्लपक्षमें पूर्णिमा तक प्रतिदिन दो हजार दो सौ बाईस योजनोंसे भी अधिक पवनकी वृद्धि हुआ करती है ॥२४६३॥

विशेषार्थ :—ज्येष्ठ पातालके मध्यम भागमें पूर्णिमा पर्यन्त वायु-वृद्धिका प्रमाण ३३३३३३ योजन है । यथा—जबकि १५ दिनोंमें ( वायु ) वृद्धिचयका प्रमाण ३३३३३३ यो० है तब एक दिनमें वृद्धिचयका क्या प्रमाण होगा ? इसप्रकार प्रशस्तिक करनेपर (  $\frac{333333}{15} =$  ) २२२२२ यो० मध्यम भागमें पवनकी वृद्धिका प्रमाण प्राप्त होता है । इसीप्रकार कृष्णपक्षमें अमावस्या पर्यन्त वायुका हानिचय और जलका वृद्धि चय समझना चाहिए ।

पूर्णिमा और अमावस्याको पातालोंकी स्थिति—

पुण्णिमए हेह्वादो, णिय - णिय - वु-ति-भागमेत्त-पावाले ।

चेह्वादि भाऊ उवरिम्भ - तिय - भागे केवलं सलिलं ॥२४६४॥

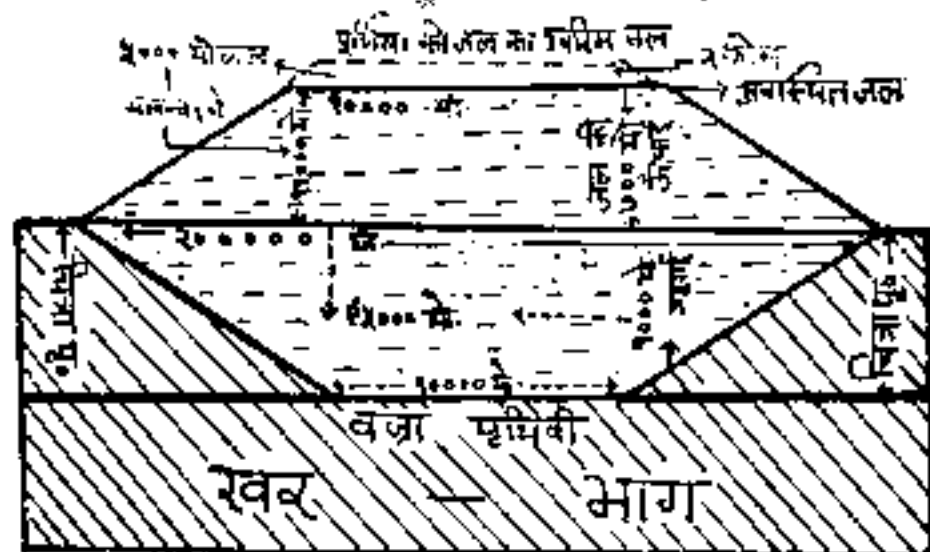
अर्थ :—पूर्णिमाको पातालोंके अपने-अपने तीन भागोंमेंसे नीचेके दो भागोंमें वायु और ऊपरके तृतीयभागमें केवल जल विद्यमान रहता है ॥२४६४॥

अमवस्से उवरीवो, णिय-णिय-वु-ति-भागमेत्त-परिमाणे ।

कमसो सलिलं हेह्विम्भ - तिय - भागे केवलं भावं ॥२४६५॥

**अर्थ :-**अमावस्याको अपने-अपने तीन भागोंमेंसे क्रमशः ऊपरके दो भागोंमें जल रहता है और नीचेके तीसरे भागमें केवल वायु रहती है ॥२४६५॥

सांख्यिकी :- अमावसी की सुविधितरामर की पृथगत



### स्वर्ण समुद्र

समुद्रजलकी हानि-वृद्धिका प्रमाण—

पेलिज्जंतो उवहो, पवणोहि तहेव सीमंतो ।

बद्धवि हायवि गयजे, बंड - सहस्साणि चत्वारि ॥२४६६॥

दिवसं पट्टि अट्ट-सयं, ति-हिवा वंडाणि सुक्कि-किण्हाए ।

सय - बद्धी पुष्पुत्तयवट्टिव - वेलाए उवरि जलहिजसं ॥२४६७॥

५० ।

**अर्थ :-**सोमस्त बिलपर ( स्थित उत्कृष्ट पाताललोकी ) वायु द्वारा समुद्रका जल आकाशमें फेंका जाता है जो चार हजार ( ४००० ) घनुष बढ़ता है और इतना ही घटता है । इसीलिए पूर्वोक्त ( ७०० योजन ऊपर अवस्थित ) जलमें शुक्लपक्षमें प्रतिदिन तीनसे चाजित बाठसी ( ५० ) घनुष अर्थात् २६६ घनुष, २ हाथ और १६ अंगुल वृद्धि और कृष्णपक्षमें उतनी ही हानि हुमा करती है ॥२४६६-२४६७॥

**विशेषार्थ :**—शुक्लपक्षमें पूर्णिमा पर्यन्त समुद्रका जल अपनी सीमासे ( ७०० यो० से ) ४००० धनुष पर्यन्त बढ़ जाता है और कृष्णपक्षमें अमावस्या पर्यन्त इतना ही घट जाता है । जबकि १५ दिनमें बढ़ ४००० धनुष बढ़ता हुआ जाता है तब एक दिनमें कितना घटेगा या बढ़ेगा ? इसप्रकार त्रैराशिक करनेपर हानि-वृद्धि चयका प्रमाण  $^{\circ}२९^{\circ}$  धनुष या  $^{\circ}६^{\circ}$  अर्थात् २६६३ धनुष प्राप्त होता है ।

लोगादणी ग्रन्थका भी यही मत है—

पुह-पुह दु-तडाहितो, पविसिय पणणउदि-जोयण-सहस्सा ।

सवणजले वे कोसा, उवयो सेसेसु हाणि - चयं ॥२४६८॥

**अर्थ :**—पूषक्-पूषक् दोनों किनारोंसे पंचानन द्वार योजन प्रमाण प्रवेश करने पर लवणसमुद्रके जलमें दो कोस ऊँचाई एवं शेषमें हानि-वृद्धि है ॥२४६८॥

अमवस्साए उवही, 'सरितो भूमीए होवि सिव - पक्खे ।

कमेण' वड्ढेदि एहे, कोसाणि वोणिए 'मुण्णिमए ॥२४६९॥

**अर्थ :**—लवणसमुद्र अमावस्याके दिन भूमि सदृश ( समतल ) होता है । पुनः शुक्लपक्षमें आकाशकी ओर क्रमशः बढ़ता हुआ पूर्णिमाकी दो कोस प्रमाण बढ़ जाता है ॥२४६९॥

हाएवि किण्ह - पक्खे, तेज कमेणं ख जाथ वड्ढिगबं ।

एवं लोगादणिए, मंथप्पवरम्मि 'गिहिट्टु' ॥२४७०॥

**अर्थ :**—वह समुद्र ( शुक्लपक्षमें ) जितना वृद्धिगत हुआ था कृष्ण पक्षमें उसी क्रमसे उतना-उतना ही घटता जाता है । इसप्रकार श्रद्धा ग्रन्थ लोगादणीमें बतलाया गया है ॥२४७०॥

अन्य आचार्योंके मतानुसार समुद्रके जलकी हानि-वृद्धि—

एककरस-सहस्साणि, जलपिहिणो जोयणाणि मयणम्मि ।

भूमीवो उच्छेहो, होवि अवट्ठिव - सक्खेयं ॥२४७१॥

अर्थ :—भूमिसे आकाशमें समुद्रको ऊँचाई भवस्थितरूपसे ग्यारह हजार ( ११००० ) योजन प्रमाण है ॥२४७१॥

[ पाठान्तर

तस्तोवरि सिद्ध - पक्षे, पंच-सहस्राणि ज्ञेयणा कमसो ।

बद्धेदि जलणिहि - जलं, 'बहुले हाएदि तम्मेत्तं ॥२४७२॥

५००० ।

[ पाठान्तरं

अर्थ :—शुक्लपक्षमें इसके ऊपर समुद्रका जल क्रमशः पाँच हजार योजन प्रमाण बढ़ता है और कृष्णपक्षमें इतना ही हानिको प्राप्त होता है ॥२४७२॥

[ पाठान्तर

पातालमुखोंके पार्श्वभागोंमें जलकरणोंके विस्तारका प्रमाण—

पायालंते गिय - गिय - मरु - विष्णुंते कर्मिल पंसेहि ।

गिय-गिय-परिधीसु गहे, सलिल - कणा अंति तम्मेत्ता ॥२४७३॥

५०००० । ५००० । ५०० ।

अर्थ :—पातालोंके अन्तमें अपने-अपने मुख-विस्तारको पाँचसे गुणा करनेपर जो प्राप्त हो, तत्प्रमाण आकाशमें अपने-अपने पार्श्वभागोंमें जलकरण जाते हैं ॥२४७३॥

विशेषार्थ :—ज्येष्ठादि पातालोंका मुख-विस्तार क्रमशः १०००० यो०, १००० यो० और १०० योजन है । शुक्लपक्षमें जब जल-वृद्धिगत होता हुआ बढ़ता है तब ज्येष्ठ पातालोंके पार्श्वभागोंमें ५०००० योजन पर्यन्त, मध्यम पातालोंमें ५००० योजन और जघन्य पातालोंके पार्श्वभागोंमें ५०० योजन पर्यन्त जलकरण उद्बलते हैं ।

'लोगाहणो' और लोकविभागके मतानुसार जलशिखरका विस्तार—

जल-सिहरे विक्खंभो, जलणिहिणो ज्ञेयणा वस-सहस्रा ।

एवं संगाइणिए, लोयविभाए दि णिहिट्ठं ॥२४७४॥

१०००० ।

पाठान्तरम् ।

अर्थ :—जलसिखरपर समुद्रका विस्तार दस हजार ( १०००० ) योजन है । इसप्रकार संभाइलीमें और लोकविभागमें कहा गया है ॥२४७४॥

पाठान्तर ।

लवणसमुद्रके दोनों तटोंपर और सिखरपर स्थित नगरियोंका वर्णन—

हु - तडाए सिहरम्मि य, वलयायारेण दिव्व-जयरीओ ।  
जलनिहिणो वेहुंते, बावाल - सहस्स-एवक-सक्खारिण ॥२४७५॥

१४२००० ।

अर्थ :—समुद्रके दोनों किनारोंपर तथा सिखरपर वलयके आकारसे एक लाख नयालीस हजार ( १४२००० ) दिव्य नगरियां स्थित हैं ॥२४७५॥

अन्तर्गत - वेदीवे, सत्त - सया जोयणानि उबहिम्मि ।  
पविसिय 'आयासेसुं', बावाल - सहस्स - जयरीओ ॥२४७६॥

७०० से १४२००० ।

अर्थ :—अन्तर्गत वेदीसे सातसौ योजन ऊपर जाकर आकाशमें समुद्रपर बयालीस हजार ( ४२००० ) नगरियां हैं ॥२४७६॥

बाहिर - वेदीहिसो, सत्त - सया जोयणानि उबहिम्मि ।  
पविसिय आयासेसुं, जयरीओ बिहत्तरि सहस्सा ॥२४७७॥

७०० । ७२००० ।

अर्थ :—बाह्य-वेदीसे सातसौ योजन ऊपर जाकर आकाशमें समुद्रपर बहत्तर हजार ( ७२००० ) नगरियां हैं ॥२४७७॥

सवणोवहि-बहु-मज्जे, सत्त-सया जोयणानि दो कोत्ता ।  
गंतूण होंति गयणे, 'अडवीस - सहस्स - जयरीओ ॥२४७८॥

जो ७०० । को २ । २८००० ।

अर्थ :—जयरासमुद्रके बहु-मध्य-भागमें सातसी योजन और दो कोस ( ७००३ योजन ) प्रमाण ऊपर जाकर आकाशमें मट्टाईस हजार ( २८००० ) नगरियाँ हैं ॥२४७८॥

जयरीण तटा' बहु-विह-वर-रयणमया हवन्ति समवष्टा ।

एवाणं पत्तेककं, विस्वाम्भो जोयण - दस - सहस्ता ॥२४७९॥

१०००० ।

अर्थ :—नगरियोंके तट बहुत प्रकारके उत्तम रत्नोंसे निर्मित समान-गोल हैं । इनमेंसे जयरीण-तट ( ७००३ योजन ) विस्वाम्भो ( १०००० ) जोयण ( १०००० ) पत्तेकक ( १०००० ) सहस्ता ( १०००० ) हैं ॥२४७९॥

पत्तेककं जयरीणं, 'तट - वेदीओ हवन्ति 'विस्वाओ ।

बुध्वन्त - धय - दशाओ, वर - तोरण - पट्टवि-जुताओ ॥२४८०॥

अर्थ :—प्रत्येक नगरी की फहराती हुई ध्वजा-पताकाओं और उत्तम तोरणादिकसे संयुक्त दिव्य तट-वेदियाँ हैं ॥२४८०॥

ताणं वर-पासावा', पुरीण वर-रयण-गियर-रमणिज्जा ।

खेटुन्ति ह वैवाणं, वेलन्धर - भुजग - गाम्भारणं ॥२४८१॥

अर्थ :—उन नगरियोंमें उत्कृष्ट रत्नोंके समूहोंसे रमणीय वेलन्धर और भुजग नामक ( नागकुमार ) देवोंके प्रासाद स्थित हैं ॥२४८१॥

जिण-मन्दिर-रम्भाओ, पोक्खरणी उववणेहि जुताओ ।

को बणिन्दु' समस्थो, अणाइजिहवाओ जयरीओ ॥२४८२॥

अर्थ :—जिनमन्दिरोंसे रमणीय और वादिकाओं तथा उपवनोसे संयुक्त इन अनादि-निघ्न नगरियोंका वर्णन करनेमें कौन समर्थ हो सकता है ? ॥२४८२॥

बणिन्दु-सुराज जयरी-पणिधीए जलहि-दु-तड-सिहरेसु' ।

वज्ज - पुडधीए उवरि, तेत्तिय-वयराजि के वि भासंति ॥२४८३॥

पाठान्तरम् ।

अर्थ :—समुद्रके दोनों किनारोंपर और शिखरपर बतलाई गईं देवोंकी नगरियोंके पार्श्व-भागमें वषमय पृथिवीके ऊपर भी इतनी ही नगरियाँ हैं, ऐसा कितने ही आचार्य वर्णन करते हैं ॥२४८३॥

पाठान्तर :

पातालके पार्श्वभागोंमें स्थित आठ पर्वतोंका निरूपण—

बाबाल-सहस्रार्णि, जोयणया जलहि - दो - तदाहितो ।

पथिसिय खिदि - विवरानं<sup>१</sup>, पासेसु<sup>२</sup> होति अट्टगिरी ॥२४८४॥

४२००० ।

अर्थ :—समुद्रके दोनों किनारोंसे ब्यालास हजार (४२०००) योजन प्रमाण प्रवेश करके पातालके पार्श्वभागोंमें आठ पर्वत हैं ॥२४८४॥

सोलस-सहस्र-अहियं, जोयण-लवणं च सिरिय-विक्खंमं<sup>३</sup> ।

परोक्काणं जगदी - गिरीणि<sup>४</sup> मिसिवूण दो - लक्खा ॥२४८५॥

११६००० । ८४००० । २००००० ।

अर्थ :—प्रत्येक पर्वतका तिरछा विस्तार एक लाख सोलह हजार (११६०००) योजन प्रमाण है । इसप्रकार जगतीसे पर्वतों तकका अन्तराल (४२००० + ४२००० = ८४०००) तथा पर्वतोंका विस्तार मिलाकर कुल (११६००० + ८४००० = २०००००) दो लाख योजन होता है ॥२४८५॥

ते कुंभद्व - सरिक्खा, सेला जोयण - सहस्रमुत्तुंगा ।

एवाणं<sup>५</sup> एणमाइं, ठाण - विभागं च भासेमि ॥२४८६॥

१००० ।

अर्थ :—अर्धघटके सदृश वे पर्वत एक हजार (१०००) योजन ऊँचे हैं । इनके नाम और स्थान-विभाग कहते हैं ॥२४८६॥

१. द. अ. य. खिदिबराण । २. द. क. अ. य. मिसिवोण दो लक्खा, व. उ. मिमिदोसवळा ।

३. द. व. क. अ. य. उ. एणमाए ।

पातालस्त दिसाए, पच्छिमए कोत्तुभो 'वसवि सेलो ।

पुष्पाए 'कोत्थुभासो, होणिण वि ते वज्जमय - मूला ॥२४८७॥

अर्थ :—पातालको पश्चिमदिशामें कोत्तुभ और पूर्व दिशामें कोत्तुभास पर्वत स्थित हैं ।  
ये दोनों पर्वत वज्जमय मूलभागसे संयुक्त हैं ॥२४८७॥

मउक्कम्मि-रज्ज-रज्जिवा, अग्गेसुं विविह-दिब्ब-रयणमया ।

वरि - अट्टालय - चारु, तट - बेदी - तोरणेहि जुवा ॥२४८८॥

अर्थ :—ये पर्वत मध्यभागमें रजत ( चांदी ) से और अग्रभागमें विविध प्रकारके दिव्य  
रत्नोंसे निर्मित हैं, तथा सुन्दर मार्गों अट्टालयों, तट-बेदियों एवं तोरणोंसे युक्त हैं ॥२४८८॥

साणं हेट्ठिम-मज्झिम-उवरिम-वासावि सपइ पणट्ठा ।

सेसुं वर - पासावा, विविस्त - रुवा विरायंति ॥२४८९॥

अर्थ :—इन पर्वतोंके लोभे का, मध्यका और ऊपरका जो कुछ विस्तार है, उसका प्रमाण  
इससमय नष्ट हो गया है । इन पर्वतोंपर विचित्र रूपवाले उत्तम प्रासाद विराजमान हैं ॥२४८९॥

वेलंघर - वेतरया, पच्चव - णामेहि संजुवा सेसुं ।

कीडंति मंदिरेसुं, विजयो भव विघाउ - पट्टवि - जुवा ॥२४९०॥

अर्थ :—इन प्रासादोंमें विजयदेवके सदृश अपनी आयु-आदिसे युक्त और पर्वतोंके नामोंसे  
संयुक्त वेलंघर व्यन्तरदेव श्रीड़ा करते हैं ॥२४९०॥

उवको णामेण गिरी, होवि कववस्त उत्तर - दिसाए ।

उवकाभासो ववित्तरण - दिसाए ते नीलमणि - वण्णा ॥२४९१॥

अर्थ :—कदम्ब-पातालको उत्तर-दिशामें उदक नामक पर्वत और दक्षिण-दिशामें उदकाभास  
नामक पर्वत स्थित हैं । ये दोनों पर्वत नीलमणि जैसे वर्णवाले हैं ॥२४९१॥

सिव-णामा सिवदेओ, कमेण उवरिम्मि ताण सेलाणं ।

कोत्थुभदेव - सरिण्णा, घाउ - पट्टविहि सेट्ठंति ॥२४९२॥

१. द. व. क. ख. घ. ङ. वसवि । २. द. क. ख. घ. कुंभभासो, व. कुत्तुभासो, ङ. कुंभभासो,

३. द. व. क. ख. घ. उ. पणट्ठा ।



अर्थ :—उन पर्वतोंके ऊपर क्रमशः शिव और शिवदेव नामक देव निवास करते हैं । इनकी आयु-आदि कौस्तुभदेवके सदृश है ॥२४६२॥

वड्ढामुह - पुब्बाए, दिसाए संख त्ति पक्खो होवि ।

पच्छिमए 'महसंखो, 'दिसाए ते संख - सम - वण्णा ॥२४६३॥

अर्थ :—वड्ढामुख पातालकी पूर्व-दिसामें शङ्ख और पश्चिम-दिशामें महाशङ्ख नामक पर्वत हैं । ये दोनों ही पर्वत शङ्ख सदृश वर्णवाले हैं ॥२४६३॥

उदगो उदगाभासो, कमसो उवरिम्मि ताण चेदु'ति ।

देवा आज - प्पहुविसु, उदगावस - देव - सारिच्छा ॥२४६४॥

अर्थ :—इन पर्वतोंपर क्रमशः उदक और उदकाभास नामक देव स्थित हैं । ये दोनों देव आयु-आदिमें उदक-पर्वतपर स्थित देव सदृश हैं ॥२४६४॥

दक-णामो होवि-गिरी, वीणस्सण-भार्गम्मि जूवकेसरिणो ।

दकवासो उत्तरए, भाए वेरुत्तिय - मणिमया वोष्णि ॥२४६५॥

अर्थ :—यूपकेशरीके दक्षिण-भागमें दक नामक पर्वत और उत्तर भागमें दकवास नामक पर्वत स्थित हैं । ये दोनों ही पर्वत वैदूर्यमणिमय हैं ॥२४६५॥

उवरिम्मि ताण कमसो, लोहित-णामो य लोहिदंकवसो ।

उदय - गिरिस्स सरिच्छा, आज - प्पहुविसु होति सुरा ॥२४६६॥

अर्थ :—उन पर्वतोंपर क्रमशः लोहित और लोहिताङ्ग नामक देव निवास करते हैं । ये देव आयु-आदिमें उदक पर्वत पर रहनेवाले देव सदृश हैं ॥२४६६॥

एवाणं देवाणं, णयरोप्पो अवर - जंबुदीवम्मि ।

होति' जिय-जिय-दिसाए, अवराजिव-णयर-सारिच्छा ॥२४६७॥

अर्थ :—इन देवोंकी मगरियाँ अपर जम्बूद्वीपमें अपनी-अपनी दिशामें अपराजित नगरके सदृश हैं ॥२४६७॥

तवणसमुद्रस्य सूर्यद्वीपादिकोंका निर्देश—

बाबाल - सहस्साहं, जोयणया जंबुवीच - जगदीशो ।  
गंतूण अट्ट वीवा, नामेण 'सूरवीओ' सि ॥२४६८॥

४२००० ।

अर्थ :- जम्बूद्वीपकी जगतीसे बयालीस हजार ( ४२००० ) योजन जाकर 'सूर्यद्वीप' नामसे प्रसिद्ध आठ द्वीप हैं ॥२४६८॥

पुण्य-पदविणय-कोत्पुह-पट्टवीचं ह्वंति दोसु पासेसु ।  
एहे वीवा भणिमय, जिणिव - पासाव - रमणिज्जा ॥२४६९॥

अर्थ :- भणिमय जिनेन्द्र-प्रासादोंसे रमणीय ये द्वीप पूर्वमें बतलाए हुए कौस्तुभादिक पर्वतोंके दोनों पार्श्वभागोंमें स्थित हैं ॥२४६९॥

सण्डे ते समबट्टा, बाबाल - सहस्स - जोयण - पमाणा ।  
अरियडालय - चाक, तड - वेदी तोरणेहि जुवा ॥२४७०॥

४२००० ।

अर्थ :- ये सब द्वीप गोल हैं । बयालीस हजार ( ४२००० ) योजन प्रमाण विस्तार युक्त हैं तथा सुन्दर मार्गों, भट्टालयों, तट-वेदियों एवं तोरणोंसे युक्त हैं ॥२४७०॥

वेलंवर - वेवानं, अहिवड्ड - वेवा वसंति एवेसु ।  
बहु - परिवारा वस - धनु - तुंगा पत्तं पमाणाऊ ॥२४७१॥

अर्थ :- दस धनुष ऊँचे और एक पत्थ प्रमाण आयुवाले वेलन्वर नामक अधिपति देव बहुत परिवारसे संयुक्त होकर इन द्वीपोंमें रहते हैं ॥२४७१॥

सवणंबुहि - जगदीशो, पबिसिथ बाबाल-जोयण-सहस्सा ।  
अड - गिरिवो पासेसु, सूर - द्वीवो अब चंडवीवा य ॥२४७२॥

**अर्थ :**—लवणसमुद्रकी जगतीसे ब्यासीस हजार ( ४२००० ) योजन प्रमाण प्रवेश करके चारों पर्वतोंके पार्श्वभागोंमें सूर्य द्वीपोंकी भाँति चन्द्र-द्वीप है ॥२५०२॥

वारस - सहस्समेत्ता, जोयणया जंबुदीव - जगदीवो ।

गंतूणणिल - विस्तार, होदि समुद्धम्म रवि - दीप्तो ॥२५०३॥

**अर्थ :**—लवणसमुद्रमें जम्बूद्वीपकी जगतीसे बारह हजार ( १२००० ) योजन प्रमाण जाकर वायव्य दिशामें 'रवि' नामक द्वीप है ॥२५०३॥

~~गंगा विजयेवरिस्संभवाद्यो, उत्तरो वारस-सहस्समेत्तायया ।~~

उत्तुंगो समवद्धो, तेल्लिय - रुंदा य गोदमो नाम ॥२५०४॥

**अर्थ :**—वित्रापृथिवीके उपरिम तलसे ऊपर बारह हजार ( १२००० ) योजन प्रमाण ऊँचा, गोस और बारह हजार योजन विस्तारवाला गौतम नामक द्वीप है ॥२५०४॥

विजयो ऽव वण्ण - ऊदो, चेंतरवेणा वि गोदमो नाम ।

तस्सि बीवाहिर्हई, सेट्ठुंति पल्लं पमाणाऊ ॥२५०५॥

**अर्थ :**—उस द्वीपका अधिपति गौतम नामक व्यन्तरदेव एक पल्ल प्रमाण आयुवाला है और विजयदेवके समान वर्णनसे युक्त है ॥२५०५॥

भरहभंतर - वण्णिव, गंगा - पणिधीए लवणतोयम्मि ।

संसेज्ज - जोयणाणि, गंतूणं होदि मागधी दीप्तो ॥२५०६॥

**अर्थ :**—पूर्व कथित भरतक्षेत्रकी गंगानदीके पार्श्वसे लवणसमुद्रमें संख्यात योजन जानेपर मागधद्वीप है ॥२५०६॥

उक्खेह्-दास-पहुदिसु, उबएसो तस्स संपह - पण्णो ।

चित्त सव - वण्ण - चारु, जिणिव-भक्कोहि रमणिज्जो ॥२५०७॥

**अर्थ :**—( वह मागधद्वीप ) चित्तको प्रिय रंगोंसे सुन्दर एवं जिनेन्द्र भवनोंसे रमणीय है । इस समय उस द्वीपके उत्सेह और विस्तारविके विषयमें उपदेश नष्ट हो गया है ॥२५०७॥

तस्सि बीवाहिर्हई, मागध - नामेण चेंतरो वेवो ।

बहु - परिवारा कीडवि, विविह - विगोदेव तम्मि पल्लाऊ ॥२५०८॥

**अर्थ** :—उस द्वीपका अधिपति मागध नामक व्यन्तर देव एक पत्न्यकी आयुवाला है और उस द्वीपमें बहुत परिवार युक्त अनेक प्रकारके विनोद पूर्वक क्रीड़ा करता है ॥२५०८॥

पणिधीए जंबुबीबं, खिवि - वणिध वइजयंत वारेस ।

संखेऊ - जोयणाणि, गंतुणं लवणसलिलम्भि ॥२५०९॥

वरतणु - नामो बीओ, जिणिब-पासाव-भूसिओ रम्भो ।

रंदाविसु उववेसो, कास - वसा तस्स उगछणो ॥२५१०॥

**अर्थ** :—जम्बूद्वीपके पार्श्वभागके क्षेत्रमें (पूर्व) वर्णित वैजयन्त द्वारसे लवणसमुद्रके जलमें संख्यात योजन जाकर जिनेन्द्र-भवनोंसे विभूषित अत्यन्त रमणीय वरतनु नामक द्वीप है । जिसके विस्तार-आदिका उपदेश काल-वका नष्ट हो गया है ॥२५०९-२५१०॥

पार्श्वभाग :—आधुनिक द्वीप विनिर्माण के अनुसार

तस्स बोवाहिबई, वरतणु - नामेण वतरो देवो ।

बहु - बिह - परिवार - भुओ, कीडवि लीलाए पल्लाऊ ॥२५११॥

**अर्थ** :—उस द्वीपका अधिपति वरतनु-नामक व्यन्तरदेव एक पत्न्यकी आयुवाला है और बहुत प्रकारके परिवारसे युक्त होकर लीला-पूर्वक क्रीड़ा करता है ॥२५११॥

भरहुक्खेस - पवणिध, सिधु-पणिधीए लवणजलहिम्भि ।

संखेऊ - जोयणाणि, गच्छिय बीओ पभासेति ॥२५१२॥

**अर्थ** :—पूर्व वर्णित भरतक्षेत्रकी सिन्धुनदीके पार्श्वभागसे लवणसमुद्रके जलमें संख्यात योजन जाकर प्रभास नामक द्वीप है ॥२५१२॥

मागधबीव - समाणं, सखं विध वण्णणं पभासस्स ।

केट्टवि परिवार - भुओ, पभास - नामो सुरो तस्सि ॥२५१३॥

**अर्थ** :—प्रभासद्वीपका सम्पूर्ण वर्णन मागधद्वीपके सदृश है । इस द्वीपमें परिवारसे युक्त होकर प्रभास नामक देव रहता है ॥२५१३॥

एरावत - विजयोविह - रतोडा - वाहिणीए पणिधीए ।

मागधबीव - सरिच्छो, होवि समुद्धम्भि मागधो बीओ ॥२५१४॥

अर्थ :—ऐरावत-क्षेत्रमें कहीं हुई रक्तोदा नदीके पार्श्वभागमें मागधद्वीपके सहस्र (सवण) समुद्रमें मागधद्वीप है ॥२५१४॥

अपराजित-द्वारस्य - यणिधीए होति लवणजलहिम्नि ।

वरतनु - नामो बीओ, वरतनु - बीबीसो भण्णो ॥२५१५॥

अर्थ :—अपराजितद्वारके पार्श्वभागमें वरतनुद्वीपके सहस्र अन्य वरतनु नामक द्वीप लवण-समुद्रमें स्थित है ॥२५१५॥

एरावत-सिन्धु-विण्णव-रत्ता-यणिधीए लवणजलहिम्नि ।

प्रणो पभास - बीओ, पभास - बीओ अब चेट्ठेवि ॥२५१६॥

अर्थ :—लवणसमुद्रमें ऐरावतक्षेत्रमेंसे निकली हुई रक्तानदीके पार्श्वभागमें प्रभासद्वीपके सहस्र अन्य प्रभासद्वीप स्थित है ॥२५१६॥

जे अन्तरभागे, लवणसमुद्रस्य पम्पवा बीवा ।

ते सन्धे चेट्ठेते, विण्णमेण बाहिरे भागे ॥२५१७॥

अर्थ :—लवणसमुद्रके अन्त्यन्तरभागमें जो पर्वत शीर द्वीप हैं, वे सब नियमसे उसके बाह्य-भागमें भी स्थित हैं ॥२५१७॥

४= कुमानुष-द्वीपोंका निरूपण—

बीवा लवणसमुद्रे, अन्नदास कुमानुसाण चउबीसं ।

अन्तरम्नि भागे, तेसियमेत्ताए बाहिरए ॥२५१८॥

४= १२४ । २४

अर्थ :—लवणसमुद्रमें अन्नदालीस ( ४= ) कुमानुष-द्वीप हैं । इनमेंसे बीबीस ( २४ ) द्वीप तो अन्त्यन्तर भागमें और इतने ( २४ ) ही बाह्य-भागमें हैं ॥२५१८॥

चत्तारि चउ-विसासुं, चउ - विविसासुं हवन्ति चत्तारि ।

अन्तर - विसासु अट्ट य, अट्ट य गिरि-यणिधि-ठाणेसुं ॥२५१९॥

**अर्थ** :—चौबीस द्वीपोंमेंसे चारों दिशाओंमें चार, चारों विदिशाओंमें चार, अन्तर-दिशाओंमें आठ और पर्वतोंके पार्श्वभागोंमें आठ ( ४+४+८+८=२४ ) द्वीप हैं ॥२५१६॥

पंच - सय - जोयणाणि, गंतुणं जंबुवीष - जगदीदो ।

चत्तारि होंति दीवा, विसास विविसास तम्मेत्तं ॥२५२०॥

५०० । ५०० ।

**अर्थ** :—जम्बूद्वीपकी जगतीसे पचासी ( ५०० ) योजन जाकर चार द्वीप चारों दिशाओंमें और इतने ( ५०० ) ही योजन जाकर चार द्वीप चारों विदिशाओंमें भी हैं ॥२५२०॥

पण्णाहिय - पंच - सया, गंतुणं होंति अंतरा दीवा ।

सुस्तय - जोयणमेसा, गच्छिय गिरि-पणिधि-गव-दीवा ॥२५२१॥

५५० । ६०० ।

**अर्थ** :—अन्तर दिशाओंमें स्थित द्वीप जम्बूद्वीपकी जगतीसे पचासी पचास (५५०) योजन और पर्वतोंके पार्श्वभागोंमें स्थित द्वीप छहसौ योजन प्रमाण जाकर हैं ॥२५२१॥

एक-सयं पण्णवणा, पण्णा पणुवीस जोयणा कमसो ।

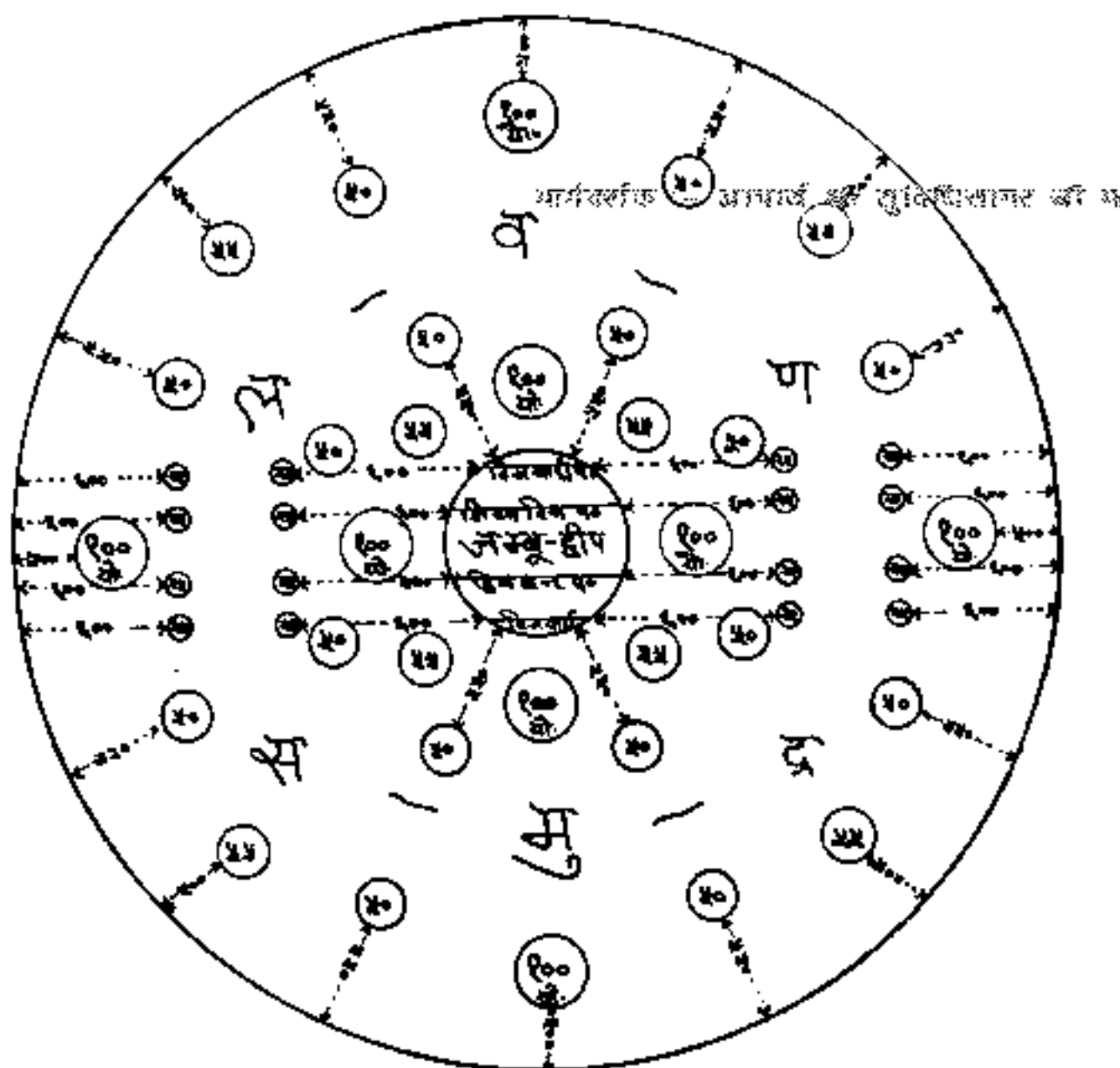
वित्तार - जुवा ताणं, एक्केक्कं होवि तत्र - वेदी ॥२५२२॥

१०० । ५५ । ५० । २५ ।

**अर्थ** :—ये द्वीप क्रमशः एकसौ, पचपन, पचास और पच्चीस योजन-प्रमाण विस्तारसे सहित हैं । उनमेंसे प्रत्येक द्वीप एक-एक तट-वेदी युक्त हैं ॥२५२२॥

**विवेकाध्य** :—( गा० २५१८ से २५२२ तक का ) लवण समुद्रके मध्यन्तर तटसे बाहरकी

ओर और बाह्यतटसे भीतरकी ओर दिशा सम्बन्धी १००-१०० योजन विस्तार वाले चार द्वीप ५०० योजन दूर ( उसकी ओर ) जाकर हैं । विदिशा सम्बन्धी ५५-५५ योजन विस्तार वाले चार द्वीप ५०० योजन दूर हैं । अन्तर दिशा सम्बन्धी ५०-५० योजन विस्तारवाले आठ द्वीप ५५० योजन दूर हैं और पर्वतोंके निकटवर्ती २५-२५ योजन विस्तारवाले आठ द्वीप ६०० योजन दूर जाकर स्थित हैं । लवणसमुद्रगत ४८ कुमानुष द्वीप अर्थात् कुभोग-भूमियोंका चित्रण निम्न प्रकार है—



ते सज्जे वर - बोवा, बग - संभोह रहेहि रमणिज्जा ।

फल-कुसुम-भार-भरिबा, रसेहि मधुरेहि सलिलेहि ॥२५२३॥

अर्थ :—वे सब उत्तम द्वीप मधुर रस वाले फल-फूलोंके भारसे युक्त वन-खण्डों और जलसे परिपूर्ण तालाबोंसे रमणीय हैं ॥२५२३॥

कुभोगभूमिमें उत्पन्न मनुष्योंकी प्राकृतिका निरूपण—

एककोरक - लंगुलिका<sup>१</sup>, वैसनकाभासका य नामेहि ।

पुष्पाविसु<sup>२</sup> विसासु<sup>३</sup>, अउ - दीवानं कुमानुसा होति ॥२५२४॥

अर्थ :—पूर्वादिक दिशाओंमें स्थित चार द्वीपोंके कुमानुष क्रमशः एक जंघावाले, पूँछवाले, सींगवाले और अभाषक अर्थात् गूँगे होते हुए इन्हें नामोंसे युक्त है ॥२५२४॥

सक्कुलिकण्वा कम्पाप्पावरणा लम्बकण्ण - ससकण्णा ।

अग्नि - विसाविसु कमसो, अउ - दीव-कुमानुसा एवे ॥२५२५॥

अर्थ :—प्राग्नेय-आदिक विदिशाओंमें स्थित चार द्वीपोंके ये कुमानुष क्रमशः शष्कुलीकर्ण, कर्णप्रावरण, लम्बकण्ठ और शशकण्ठ होते हैं ॥२५२५॥

सिहस्त - साज-महिस<sup>४</sup>-स्वरहा-सवृत्तल-यूक-कपि-ववणा ।

सक्कुलि - कण्जेकोरग - पट्टदीनं अंतरेसु ते कमसो ॥२५२६॥

अर्थ :—शष्कुलीकर्ण और एकोरक आदिकोंके बीचमें अर्थात् अन्तर-दिशाओंमें स्थित पाठ द्वीपोंके ये कुमानुष क्रमशः सिंह, अश्व, श्वान, महिष, वराह, पादूल, यूक और बन्दरके मुक्त सदृश मुखवाले होते हैं ॥२५२६॥

मच्छ-मुहा काल-मुहा, हिमगिरि-पणिधीए पुच्छ-पच्छिमहो ।

मेस - मुह - गो - भुहक्खा, दक्खिण-वेयड्ड-पणिधीए ॥२५२७॥

अर्थ :—हिमवान् पर्वतके प्रणिधिभागमें पूर्व-पश्चिम दिशाओंमें क्रमशः मत्स्यमुख एवं कालमुख तथा दक्षिण-विजयाधकं प्रणिधिभागमें मेघमुख एवं गोमुख कुमानुष रहते हैं ॥२५२७॥

पुष्पावरेण सिंहिरि - प्पणिधीए मेघ-विज्जु-मुह-णामा ।

आवसण - हस्ति - भुहा, उत्तर - वेयड्ड - पणिधीए ॥२५२८॥



**अर्थ :**—शिखरीपर्वतके पूर्व-पश्चिम प्रणधिभागमें क्रमशः मेघमुख एवं विष्णुमुख तथा उत्तर-विजयार्धके प्रणधिभागमें आदर्श ( दर्पण ) मुख एवं हस्तिमुख कुमानुष होते हैं ॥२५२८॥

एककोरुगा गुहासुं, वसन्ति भुजन्ति मट्टियं मिट्ठं ।

सेसा तरु - तल - वासा, पुष्केहि फलेहि जीवन्ति ॥२५२९॥

**अर्थ :**—इन सबमेंसे एकोरुक कुमानुष गुफाओंमें रहते हैं और मीठी मिट्टी खाते हैं । येष सब कुमानुष वृक्षोंके नीचे रहकर फल-फूलोंसे जीवन व्यतीत करते हैं ॥२५२९॥

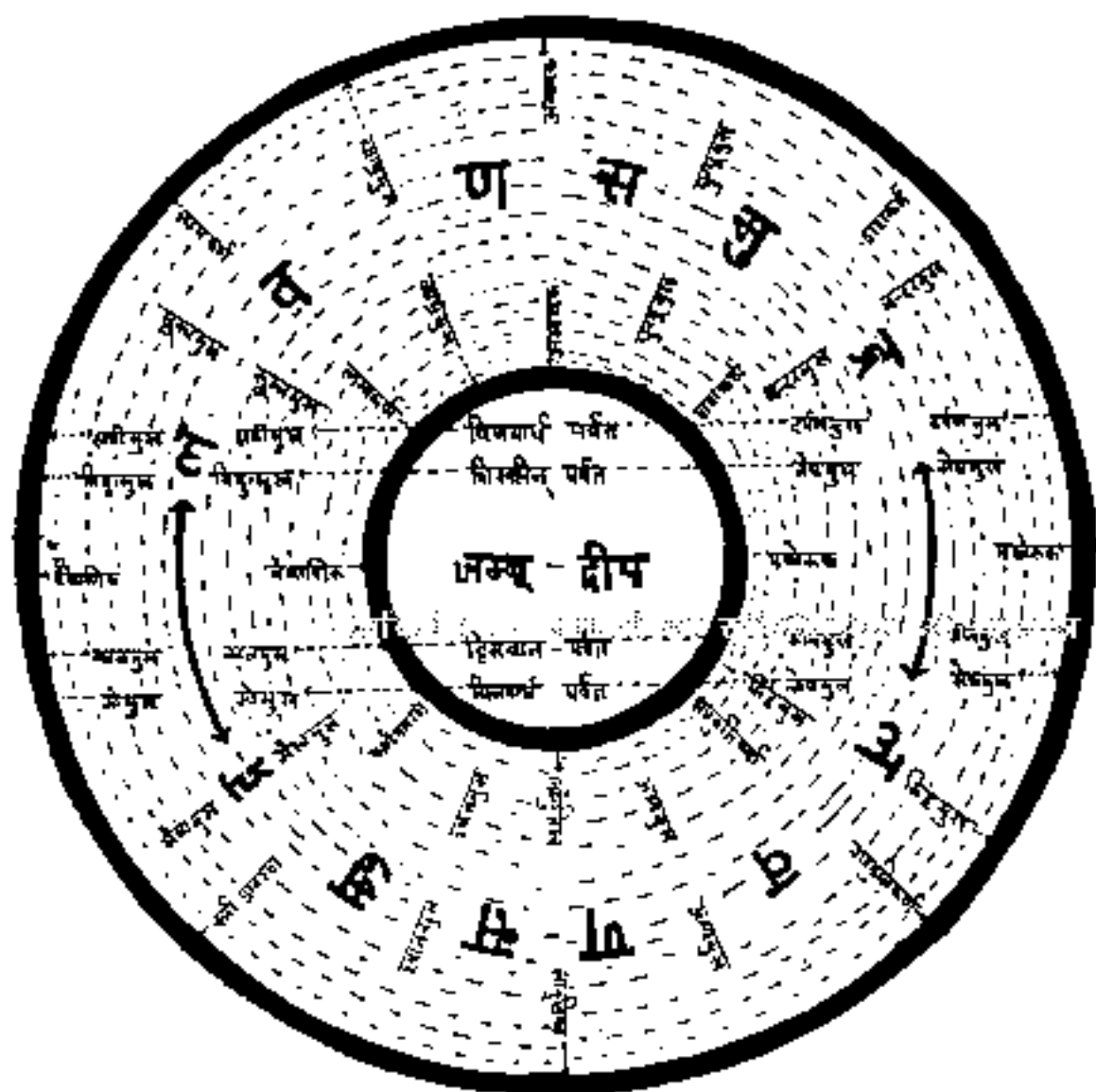
आवहसंढ - विसासुं, तेस्तिमसेसा वि अंतरा बोवा ।

तेसुं तेस्तिमसेसा, कुमाणुसा होति तण्णामा ॥२५३०॥

**अर्थ :**—आतकीखण्डद्वीपकी दिशाओंमें भी इतने ( ४८ ) ही अन्तरद्वीप और उनमें रहने वाले पूर्वोक्त नामोंसे युक्त उतने ही कुमानुष हैं ॥२५३०॥

**विशेषार्थ :**—लवणसमुद्रकी पूर्व दिशागत द्वीपोंमें एकोरुक-एक जंघावाले, दक्षिणमें लांगुलिका-पूँछवाले, पश्चिममें वैषाणिक-सींगवाले और उत्तर दिशामें अभावक-गूँगे कुमानुष रहते हैं । आग्नेयमें शङ्कुलिकर्ण, नैऋत्यमें कर्णप्रावरण-अतके कर्ण वस्त्रोंके सदृश शरीरका आच्छादन करते हैं, वायव्यमें लम्बकर्ण और ईशानमें नासकर्ण कुमानुष रहते हैं । दिशा एवं विदिशाओंके आठ अन्तरालोंमें क्रमशः सिंहमुख, अश्वमुख, श्वानमुख, महिष ( भैंसा ) मुख, वराह ( भूकर ) मुख, शार्ङ्ग ( व्याघ्र ) मुख, घूक ( घुग्घू ) मुख और बन्दरमुख कुमानुष रहते हैं । हिमवान् कुलाचलके समीप पूर्वदिशामें मीनमुख और पश्चिममें कालमुख, दक्षिण-विजयार्धके समीप पूर्वमें मेघमुख और पश्चिममें गोमुख, शिखरीकुलाचलके पूर्वमें मेघमुख और पश्चिममें विष्णुमुख तथा उत्तर-विजयार्धके पूर्वमें दर्पणमुख और पश्चिममें हाथीमुख कुमानुष रहते हैं ।

इतका चित्रण निम्न प्रकारसे है—



मतान्तरसे उन द्वीपोंकी स्थिति एवं कुमानुषोंके नाम भिन्नरूपसे दक्षति हैं—

लोयविभागादिरिया, वीषाण कुमानुसेहि सुत्ताणं ।

अण्ण - सकुवेण ठिदि, भासंते तं परुवेमो ॥२५३१॥

अर्थ :—भूकविभागाचार्य कुमानुषोंसे युक्त उन द्वीपोंकी स्थिति भिन्नरूपसे बतलाते हैं ।

( अथ उसके अनुसार ) उसका निरूपण करते हैं ॥२५३१॥

पण्याधिय - पंच - सया, गंतूणं ज्ञोयणाणि विदिसासु ।

बीवा दिसासु अंतर - दिसासु पण्यास - परिहीणा ॥२५३२॥

५५० । ५०० । ५०० ।

अर्थ :—ये द्वीप जम्बूद्वीपकी जगतीसे पचासो पचास (५५०) योजन जाकर विदिशाओंमें और इससे पचास योजन कम अर्थात् केवल (५००) योजन प्रमाण जाकर दिशाओंमें एवं (५०० यो० ही) अन्तर-दिशाओंमें स्थित हैं ॥२५३२॥

ज्ञोयण-सय-विषयंभा, अंतर - बीवा तथा दिसा-बीवा ।

पण्या रुंदा विदिसा-बीवा पञ्चबीस सेल-पणिधि-गया ॥२५३३॥

१०० । १०० । ५० । २५ ।

अर्थ :—अन्तर-दिशा तथा दिशागत द्वीपोंका विस्तार एकसौ (१००) योजन, विदिशाओंमें स्थित द्वीपोंका विस्तार पचास (५०) योजन और पर्वतोंके प्रणिधिभागोंमें स्थित द्वीपोंका विस्तार पच्चीस (२५) योजन प्रमाण है ॥२५३३॥

पुण्वं च गिरि-पणिधि-गया छस्तय-ज्ञोयणाणि चेदुंति—

अर्थ :—पर्वत-प्रणिधिगत द्वीप पूर्वके सदृश ही जम्बूद्वीपकी जगतीसे छहसौ (६००) योजन जाकर स्थित हैं ।

एवकोटक-वेसजिका, लंगुलिका तह् अभासगा तुरिमा ।

पुर्वाविसु वि दिसासु, चउ-बीवाणं कुमानुसा कमसो ॥२५३४॥

अर्थ :—पूर्वादि दिशाओंमें स्थित चार द्वीपोंके कुमानुष क्रमशः एक-जंघावाले, सींगवाले, पूँछवाले और गूँगे होते हैं ॥२५३४॥

अणलाविसु विदिसासु, ससकण्णा ताण उभय-वासोसु ।

अट्ट य अंतर - बीवा, पुण्वन्मि - दिसावि - गणणिज्जा ॥२५३५॥

अर्थ :—आग्नेय आदिक दिशाओंके चार द्वीपोंमें छह-कर्ष कुमानुष होते हैं । उनके दोनों पादवर्भागोंमें घाट अन्तरद्वीप हैं, जो पूर्व-आग्नेय-दिशादिके क्रमसे जानना चाहिए ॥२५३५॥



कुमानुष द्वीपोंमें कौन उत्पन्न होते हैं ? उसका निरूपण—

मिच्छत्त-तिमिर<sup>१</sup>-छण्णा, मन्द-कसाया पियंबवा कुडिसा ।

धम्मफलं मग्गंता, मिच्छा - देवेसु भस्तिपरा ॥२५४०॥

सुद्धोदण-सत्तिलोदण-कंजिय-असरणादि-कट्ठ-सुकिलिट्ठा ।

पंचगि - तव विसमं, काय - किलेसं च कुब्बंता ॥२५४१॥

सम्मत्त-रयण-हीणा, कुमानुसा लवणजलहि - वोवेसु<sup>२</sup> ।

उत्पज्जंति अघण्णा<sup>३</sup>, अण्णाण - जलस्मि मज्जंता ॥२५४२॥

अर्थ :—मिथ्यास्वरूपी अन्धकारसे आच्छन्न, मन्द-कसायी, प्रिय बोलनेवाले, कुटिल (परिणामी), धर्म-फलको खोजनेवाले, मिथ्यादेवोंकी भक्तिमें तत्पर; सुद्ध ओदन, जल और ओदन एवं कांजी खानेके कट्टेसे संकलेशको प्राप्त, विषम पञ्चाग्निताप तथा कायबलेश करनेवाले और सम्यक्स्वरूपी रत्नसे रहित अज्ञानरूपी जलमें डूबते हुए अधन्य (पुण्यहीन या भङ्गुतार्थ या अज्ञानी) जीव लवणसमुद्रके द्वीपोंमें कुमानुष उत्पन्न होते हैं ॥२५४०-२५४२॥

अदि-माण-गच्छिवा जे, साहूण कुब्बंति किञ्चि<sup>४</sup> अघमाणां ।

संजम<sup>५</sup> - तव - कुत्ताणां, जे जिग्मंभाण ब्रूसणा वेति ॥२५४३॥

जे मायाचार - रदा, संजम-तव-ओग-वज्जिदा पावा ।

इड्ढि - रस - साव - गारव - गदवा जे सोहमावण्णा ॥२५४४॥

पूस - सुहमादिचारं, जे पालोचंति गुह-अण-समीये ।

सज्झाय - वंदणाओ, जे पुह - सहिवा ए कुब्बंति ॥२५४५॥

जे छंडिय भुजि - संघं, वसंति एकाकिणो कुराचारा ।

जे कोहेण य कलहं, सव्वेहितो पकुब्बंति ॥२५४६॥

१. द. ब. क. ज. य. उ. तिमिरता । २. द. उ. अवण्णाम्मा । ३. द. ब. क. ज. य. उ. अघमाणा ।

४. द. ब. क. ज. य. उ. सम्पत्त । ५. द. ब. क. ज. य. उ. सव्वेहिते ।



इसी विषयका प्रतिपादन त्रिलोकसार गाथा ६२२-६२४ में निम्नप्रकारसे किया गया है—

जित्त-सिगे आघावी, ओइस-अंतोवजीवि धरा-कंसा ।  
 मइ-गडरव-सणण-पुवा, करंति जे पर - विवाहंपि ॥१॥  
 बंसण - विराहणा जे, दोसं एणालोचयंति बूससणा ।  
 पंचरित - तथा निज्झा, मोरं परिहरिय भुंभंति ॥२॥  
 बुभ्भाव - भसुवि - सुवग - पुष्कवई - जाइ-संकराबोहि ।  
 कय - बारा वि कुबलं, जीवा कुणारेसु जायंते ॥३॥

अर्थ :—जो जीव जित्तसिग धारणकर मायाकारी करते हैं, ज्योतिष एवं मन्त्रादि विद्याओं द्वारा आजीविका करते हैं, उनके इच्छुक हैं, तीन गारव एवं चार संशयोंसे युक्त हैं, पृथुस्थोके विवाह आदि कराते हैं, सम्यग्दर्शनके विराधक हैं, अपने दोषोंकी आलोचना नहीं करते, दूसरोंको दोष लगाते हैं, जो सिद्धाद्वि पञ्चाग्नि तप तपते हैं, मोन छोड़कर आहार करते हैं तथा जो दुर्भावना, अपवित्रता, सूतक आदिसं एवं पुष्पवती स्त्रीके स्पर्शसे युक्त तथा ( 'विपरीत कुलोंका मिलना है लक्षण जिसका ऐसे ) जातिसङ्कर आदि दोषों सहित होते हुए भी दान देते हैं और जो कुपार्थोंको दान देते हैं, वे सब जीव मरकर कुमनुष्योंमें उत्पन्न होते हैं ।

नोट :—जम्बूद्वीप पण्णत्ती सर्ग १० गाथा ५६-७६ में भी यही विषय दृश्य है ।

कुमानुषोंका वर्णन—

गम्भावी ते मणुवा, कुगलं कुगला सुहेण रिस्तारिया ।  
 तिरिया समुच्चिदेहि, विणेहि धारंति तारण्णा ॥२५५२॥

अर्थ :—वे मनुष्य और तिर्यक्ष युगल-युगलरूपमें गर्भसे सुखपूर्वक निकलकर अर्थात् जन्म लेकर समुचित दिनोंमें यौवन धारण करते हैं ॥२५५२॥

जे-धणु-सहस्स-तुंगा, मंव-कसाया पिपंगु - सामलया ।  
 सव्वे ते पल्लाळ, कुभोग - भूमीए वेदंति ॥२५५३॥

वर्ष १.—वे सब कुमानुष दो हजार ( २००० ) धनुष ऊँचे होते हैं, मन्दकषायी, प्रियंगु सट्टा श्यामल और एक पस्यप्रमाण आयुसे युक्त होकर कुम्भोग्रभूमिमें स्थित रहते हैं ॥२५५३॥

तन्मूत्रं - जोग - भोगं, भोक्तृणां आहारास्त ग्रहसाणे ।

काल - वसं संपत्ता, जायंते भवन् - तिर्यग्मि ॥२५५४॥

**अर्थ** :—उस भूमिके योग्य भोगोंको भोगकर वे आयुके अन्तमें मरणको प्राप्त हो भवन्-  
त्रिकदेवोंमें उत्पन्न होते हैं ॥२५५४॥

सम्पदं सप्त - रयणं, योहिषं, रोहिण्यं, ज्येष्ठं, श्रवणं, धनिष्ठां, शतभिषं  
 रोहिषं चतु - विंशतं, सोहम्भ - दुर्गम्भ जायन्ते ॥२५५५॥

अर्थ :—इन चार ( प्रकारके ) द्वीपोंमें जिन मनुष्यों एवं तिर्यन्चोने सम्यग्दर्शनरूप रत्न ग्रहण कर लिया है वे सौघमंयुगलमें उत्पन्न होते हैं ॥२५५॥

लवणसमुद्रस्थ मत्स्यादिकोंकी अवगाहना—

णव - ओयण - बौहसा, तवद्ध-वासा तवद्ध - बहुलसा ।

तेषु णर्हि - गृह - मण्ड्या, पलेष्कं ह्येति पश्यरा' ॥२५३६॥

2 1 2 1 2 1

**अर्थ :—**सवणसमुद्रमें नदी-मुखके समीप रहनेवाले मत्स्योंमें प्रत्येककी लम्बाई नौ ( ९ ) योजन, विस्तार साढ़े चार ( ४½ ) योजन और मोटाई सवा दो ( २½ ) योजन प्रमाण है ॥२५५६॥

सबजोवहि-बहु-मज्जे, मज्झिमां वीह - वास-बहलाजि ।

सरि - सुह - मच्छार्हितो, हर्षति वृगुण - प्यमानार्णि ॥२५५७॥

**वर्णन :-** लवणसमुद्रके बहु-मध्य-भागमें मत्स्योंकी लम्बाई, विस्तार और बाह्य नदी-मुख-मत्स्योंकी प्रवेष्टा दृग्ने प्रमाणसे संयुक्त है। अर्थात् लम्बाई १८ योजन, विस्तार ६ योजन और मोटाई ४३ योजन प्रमाण है। (२५५७)।

सेसेसु' ठाणेंसु' बहु - विह-दगाह'-जणिना मळ्या ।

मयूर<sup>१</sup> - तिस्रसार - कच्छल्लव-मंडक - प्यहविराणो श्रज्जो<sup>२</sup> ॥२५५८॥



**अर्थ :**—शेष स्थानोंमें बहुत प्रकारकी अवगाहनासे अन्वित मत्स्य, मकर, शिशुमार, कछुवा और मेंढक आदि अन्य जल-जन्तु होते हैं ॥२५५८॥

लवणसमुद्रकी जगती एवं उसकी बाह्य-परिधि के प्रमाणका निरूपण—

**अर्थः—लवणसमुद्रकी जगती, जम्बूद्वीपकी जगतीके सदृश है ।**

अर्धन्तर सिलवद्वं, बाहिर - भागस्मि होवि वर्ण ॥२५५९॥

भू १२ । म ८ । मु ४ । उ ८ ।

**अर्थ :**—लवणसमुद्रकी जगती जम्बूद्वीपकी जगतीके सदृश है । अर्थात् जम्बूद्वीपकी जगतीके सदृश इस जगतीका भूमि विस्तार १२ योजन, मध्य विस्तार ८ योजन, शिखर ( मुख ) विस्तार ४ योजन और ऊँचाई आठ योजन प्रमाण है । इस जगतीके अर्धन्तरभागमें शिलापट्ट और बाह्यभागमें वन है ॥२५५९॥

पण्णारस - लव्खाई, इगिसीवि-सहस्स-जोयणाणि सहा ।

उण्णवाल-जुवेक्क-सयं, बाहिर-परिथी समुद् - जगवीए ॥२५६०॥

१५८११३६ ।

**अर्थ :**—इस समुद्र-जगतीकी बाह्य परिधिका प्रमाण पन्द्रहलाख इक्यासो हजार एक सौ उनतालीस ( १५८११३६ ) योजन है ॥२५६०॥

**वित्तेकार्थ :**—लवणसमुद्रका बाह्य सूची व्यास ५००००० योजन प्रमाण है । गाथा ६ के नियमानुसार इसकी परिधिका प्रमाण परिधि =  $\sqrt{५ला० \times ५ला० \times १०} = १५८११३६$  योजन प्राप्त होते हैं और  $\frac{१५८११३६}{१०००००}$  योजन अवशेष बचते हैं जो भावसे अधिक हैं अतः उसका एक अंक ग्रहण कर ३८ के स्थान पर ३६ कहे गए हैं ।

बलयाकार क्षेत्रका सूक्ष्म क्षेत्रफल निकालनेकी विधि—

बुगुणि-क्विय सूचीए, इच्छिय-बलयाण' बुगुण-वासणि ।

सोघिय अवसेस - कवि, वासद - कवीहि बुगिदूतां ॥२५६१॥

गुणितूज इसेहि तबो, इच्छित-बलयाव होदि करणि-फलं ।

अं ताण बग - मूलं, सुहुमफलं तं पि जावव्वं ॥२५६२॥

अर्थ :—दुगुनी सूचीमेंसे इच्छित गोलक्षेत्रोंके दुगुने विस्तारको घटाकर जो शेष रहे उसके वर्गको अर्थ-विस्तारके वर्गसे गुणा करके उसे पुनः वससे गुणा करनेपर जो राशि प्राप्त हो वह इच्छित गोलक्षेत्रका वर्गफल प्राप्त होता है और उस वर्ग-राशिका वर्गमूल निकालनेपर जो लब्ध प्राप्त हो तत्प्रमाण इच्छित बलयाकार क्षेत्रका सूक्ष्म-क्षेत्रफल जानना चाहिए ॥२५६१-२५६२॥

अर्थवर्णिक :- अथवा जे श्री लवणसमुद्रके सूक्ष्मक्षेत्रफलका प्रमाण—

गयणोवक-छ-णव-पंच-छ-छ-तिय<sup>१</sup>-सस-जवय - अट्टेक्का ।

जोयजया अंक - कमे, क्षेत्रफलं लवणजलहिस्स ॥२५६३॥

१८६७३६६५६६१०<sup>२</sup> ।

अर्थ :—मूल्य, एक, छह, नौ, पाँच, छह, छह, तीन, सात, नौ, आठ और एक इस अंक-क्रमसे जो ( १८६७३६६५६६१० ) संख्या निर्मित हो उतने योजन प्रमाण लवणसमुद्रका सूक्ष्म-क्षेत्रफल है ॥२५६३॥

विशेषार्थ :—लवणसमुद्रकी माध्य सूची ५ लाख योजन और व्यास २ लाख योजन है, अतः उपर्युक्त नियमानुसार उसका सूक्ष्म-क्षेत्रफल इसप्रकार होगा—

$\sqrt{[ ( ५००००० \times २ ) - ( २००००० \times २ ) ]^२ \times ( १००००० )^४ \times १०} = १८६७३६६५६६१०$   
योजन सूक्ष्मक्षेत्रफल प्राप्त हुआ तथा  $१८६७३६६५६६१०$  योजन अवशेष रहे जो छोड़ दिए गए हैं ।

अम्बूद्वीप एवं लवणसमुद्रके सम्मिलित क्षेत्रफलका प्रमाण—

अंबवर-छस्सस-सिय-पण-ति-बु-सउ-छस्सस-जवय-एक्काइं ।

क्षेत्रफलं मिलिवाणं, अंबूद्वीपस्स लवणजलहिस्स ॥२५६४॥

१६७६४२३५३७६० ।

**अर्थ :**—शून्य, छह, सात, तीन, पाँच, तीन, दो, चार, छह, सात, नौ और एक इस अंक-क्रमसे जो संख्या निर्मित हो उससे ( १६७६४२३५३७६० ) योजन प्रमाण जम्बूद्वीप एवं लवण-समुद्रका सम्मिलित क्षेत्रफल है ॥२५६४॥

**विशेषार्थ :**—इसी अधिकारमें गाथा ५६ से ६६ पर्यन्त जम्बूद्वीपका जो क्षेत्रफल कहा गया है उसमेंसे मात्र ७६०५६६४१५० योजन निकाल कर उसमें लवणसमुद्रका क्षेत्रफल घटा देनेपर दोबोके सम्मिलित क्षेत्रफलका प्रमाण ( ७६०५६६४१५० + १८६७३६६५६६१० ) = १६७६४२३५३७६० योजन प्राप्त होता है ।

जम्बूद्वीप प्रमाण खण्डोंके निकालनेका विधान—

बाहिर - सूर्य - वर्गो, अर्धन्तर - सूर्य-वर्ग-परिहोणी ।

लवणसमुद्र 'कबीहि' हिवो, जंबूद्वीप - पमाणया खंडा ॥२५६५॥

**अर्थ :**—बाह्य सूचीके वर्गमेंसे अर्धन्तर सूचीके वर्गको कम करनेपर जो शेष रहे, उसमें एक लाखके वर्गका भाग देनेपर लब्ध संख्याप्रमाण जम्बूद्वीपके समान खण्ड होते हैं ॥२५६५॥

लवणसमुद्रके जम्बूद्वीप प्रमाण खण्डोंका निरूपण—

चउवीस जलहि - खंडा, जंबूद्वीप - पमाणयो होंति ।

एवं लवणसमुद्रो, वास - समासेन निर्दिष्टो ॥२५६६॥

एवं लवणसमुद्रं च ॥३॥

**अर्थ :**—जम्बूद्वीपके प्रमाण लवणसमुद्रके चौबीस खण्ड होते हैं । इसप्रकार संक्षेपमें लवणसमुद्रका विस्तार यहाँ बतलाया गया है ॥२५६६॥

**विशेषार्थ :**—लवणसमुद्रकी बाह्यसूची ५ लाख योजन और अर्धन्तर सूची १ लाख योजन है । गाथा २५६५ के नियमानुसार उसके जम्बूद्वीपप्रमाण खण्ड इस प्रकार होंगे—  
 $( ५०००००^२ - १०००००^२ ) \div १०००००^२ = २४$  खण्ड । अर्थात् लवणसमुद्रके जम्बूद्वीप सदृश २४ टुकड़े हो सकते हैं ।

इसप्रकार लवणसमुद्रका वर्णन समाप्त हुआ ॥३॥

### ❀ घातकीखण्ड ❀

धावइसंडो बीबो, परिवेढदि<sup>१</sup> सवणजलनिहि सयलं ।

चउलख - जोयणाइं, विस्थिणो सवकवासेणं ॥२५६७॥

४००००० ।

वर्णन :- घातकीखण्ड द्वीप का सम्पूर्ण अवलोकन मुझको वेदित करता है । मण्डलाकार स्थित यह द्वीप चार लाख ( ४००००० ) योजन प्रमाण विस्तार युक्त है ॥२५६७॥

सोलह अन्तराधिकारोंके नाम—

जगदी - विष्णासाइं, भरहखिवो तम्मि कालभेदं च ।

हिमगिरि - हेमवदा महहिमवं हरिवरिस - निसहृदो ॥२५६८॥

विजओ विवेहणामो, नीलगिरो रम्मवरिस-रुम्मिगिरी ।

हेरणववो विजओ, सिहरो एरावदो सि वरिसो य ॥२५६९॥

एवं सोलस - भेदा, धावइसंडस्स अंतरहियारा ।

एण्हि<sup>२</sup> ताण सरुवं, वोछामो आणुपुव्वीए ॥२५७०॥

वर्णन :- जगती, विन्वास, भरतक्षेत्र, उसमें कालभेद, हिमवान् पर्वत, हेमवतक्षेत्र, महा-हिमवान् पर्वत, हरिवर्षक्षेत्र, निषधपर्वत, विदेहक्षेत्र, नीलपर्वत, रम्भकक्षेत्र, रुक्मिपर्वत, हेरण्यवतक्षेत्र, सिखरीपर्वत और ऐरावतक्षेत्र, इसप्रकार घातकीखण्डद्वीपके वर्णनमें ये सोलह भेदरूप अन्तराधिकार हैं । अब अनुक्रमसे इनके स्वरूपका कथन करते हैं ॥२५६८-२५७०॥

घातकीखण्ड द्वीपकी जगती—

तहीवं परिवेढदि, समंतदो<sup>३</sup> विन्व - रयणमय - जगदी ।

जंक्खीव - पवणिव - जगदीए सरिस - वण्णमया ॥२५७१॥

१ जगती समत्ता ।

अर्थ :—उस घातकीखण्डद्वीपको चारों ओरसे दिव्य रत्नमय जगती घेरित करती है। इस जगतीका वर्णन अम्बूद्वीपमें वर्णित जगतीके ही समान है ॥२५७१॥

ह्रस्वाकार पर्वतोंका निरूपण—

दक्षिण - उत्तरभागे, इसुगारा दक्षिणुत्तरायासा ।

एकैकको होवि गिरी, धावइसंहं पश्चिमजंतो ॥२५७२॥

अर्थ :—घातकीखण्डद्वीपके दक्षिण और उत्तरभागमें इस द्वीपको विभाजित करता हुआ दक्षिण-उत्तर लम्बा एक-एक ह्रस्वाकार पर्वत है ॥२५७२॥

नितह - समाणुच्छेहा<sup>१</sup>, संलग्ना लवण-काल-जलहीनं ।

अकभंतरम्मि बाह्, अकमुहा<sup>२</sup> ते सुरण - सठाणा ॥२५७३॥

अर्थ :—लवण और कालोद समुद्रोंसे संलग्न वे दोनों पर्वत निवध पर्वतके समान ऊँचे तथा अन्त्यन्तरभागमें अंकमुख एवं बाह्यभागमें सुरपा ( सुरप्र ) के आकारवाले हैं ॥२५७३॥

जोयण - तहस्तमेकं, दंवा सज्जत्य ताण पत्तेकं ।

जोयण - सयमवगाढा, कणममया ते विराजति ॥२५७४॥

अर्थ :—उन पर्वतोंमेंसे प्रत्येकका विस्तार सर्वत्र एक हजार योजनप्रमाण है। एकही योजन प्रमाण अवगाह मुक्त वे स्वर्णमय पर्वत अत्यन्त शोभावाले हैं ॥२५७४॥

एकैकका तह - वेदी, तेसुं चेह्वेवि दोसु पासेसुं ।

पंच-सय-बंद-बासा, अकभंत-धया दु - कोस<sup>३</sup> उच्छेहा ॥२५७५॥

अर्थ :—उन पर्वतोंके दोनों पार्श्वभागोंमें पाँचसी धनुष प्रमाण विस्तार सहित, दो कोस ऊँची और फहराती हुई ध्वजाओंसे संयुक्त एक-एक तटवेदी है ॥२५७५॥

१. द. व. क. ड. पश्चिमजंतं। ज. घ. पश्चिमजति। २. द. व. उ. माणुच्छेदी, क. माणुच्छेदी।

३. ज. घ. बंतमुहा, व. ड. अकमुहा। ४. व. दुवकोस।

ताणं दो - पासेसुं, वणसंज्ञा वेवि - तोरणेहि जुवा ।

वेवि - तोरणेहि - ताणं दो - पासेसुं - वणसंज्ञा ॥२५७६॥

अर्थ :—उन वेदियोंके दोनों पार्श्वभागोंमें वेदी, तोरण, पुष्करिणी एवं बाणिकाओंसे युक्त और जिनेंद्र-प्रासादोंसे रमणीय वनखण्ड हैं ॥२५७६॥

वणसंज्ञेसुं दिग्वा, पासावा विविह - रयण - णियरसया ।

सुर-पर-मिहण-सजाहा, तड - वेदी - तोरणेहि जुवा ॥२५७७॥

अर्थ :—इन वनखण्डोंमें वेव एवं मनुष्योंके युगलों सहित, तटवेदी एवं तोरणोंसे युक्त और विविध प्रकारके रत्न-समूहोंसे निमित्त दिव्य प्रासाद हैं ॥२५७७॥

उवारि इसुगाराणं, समंसदो हववि विम्ब-तड-वेदी ।

वण - वणवेदी पुब्बं, पयार - वित्थार - परिपुण्णा ॥२५७८॥

अर्थ :—इष्वाकार पर्वतोंके ऊपर चारों ओर पूर्वोक्त प्रकार विस्तारसे परिपूर्ण दिव्य तट-वेदी, वन और वन-वेदी स्थित हैं ॥२५७८॥

चसारा चचारी, पस्सेवकं होति ताण वर - कूडा ।

जिण - भवणमावि - कूडे, सेसेसुं वेंतर - पुराणि ॥२५७९॥

अर्थ :—उनमेंसे प्रत्येक पर्वतपर चार-चार उत्तम कूट हैं । प्रथम कूटपर जिनभवन हैं और शेष कूटोंपर व्यन्तरोके पुर हैं ॥२५७९॥

घातकीखण्डस्थ जिनभवन एवं व्यन्तरप्रासादोंका सादृश्य—

तहीजे जिण - भवणं, वेंतर - वेवाण दिग्वा - पासावा ।

शिसह-पबणिणव-जिण-भवण - वेंतरावास - सारिछा ॥२५८०॥

अर्थ :—उस द्वीपमें जिनभवन और अन्तरदेवोंके दिव्य प्रासाद निषधपर्वतके वर्णनमें निर्दिष्ट जिन-भवनों और व्यन्तरावासोंके सदृश हैं ॥२५८०॥

धातकीखण्डमें मेरु-पर्वतोंका विन्यास—

वोण्हं इसुगाराणं, विज्जाले होंति ते बुभे विजया ।

चक्रकट्ट - सिंभापारा, एक्केक्का तेसु मेरुगिरी ॥२५८१॥

अर्थ :—दोनों इष्वाकार पर्वतोंके मध्यमें वे दो क्षेत्र हैं । पर्वचक्रके आकार सदृश उन दोनों क्षेत्रोंमें एक-एक मेरु पर्वत है ॥२५८१॥

पर्वत-तालाब आदिका प्रमाण—

सेल-सरोवर-सरिया, विजया कुंदा य जेतिया होंति ।

जंबूदीबे तेज्जिय, दुगुण - कवा घादईसंडे ॥२५८२॥

अर्थ :—जम्बूद्वीपमें जितने पर्वत, तालाब, नदियाँ, क्षेत्र और कुण्ड हैं उनसे पूरे धातकी-खण्डमें हैं ॥२५८२॥

इसुगार - गिरिदाणं, विज्जालेसुं हवन्ति ते सम्भे ।

भाणा - विचिस - वण्णा, ससात्तिणो वादईसंडे ॥२५८३॥

अर्थ :—इष्वाकार पर्वतोंके अन्तरालमें नानाप्रकारके विचित्र वर्णवाले एवं शोभासे युक्त वे सब पर्वतादि धातकीखण्डमें हैं ॥२५८३॥

दोनों द्वीपोंमें विजयादिकोंका सादृश—

विजया विजयाण तहा, विजयवूढाणं हवन्ति विजयवूढा ।

मेरुगिरीणं मेरु, कुल - गिरिणो कुल - गिरीणं च ॥२५८४॥

णाम्भिरिणीं' नाभी, सरिया सरियाण वोसु दीबेसुं ।

पजिधिगदा अबगाहुण्ण्येह - सरिण्णा' जिणा मेरु' ॥२५८५॥

अर्थ :—दोनों द्वीपोंमें प्रणिधिगत क्षेत्र क्षेत्रोंके सदृश, विजयाधं विजयाधोंके सदृश, मेरु-पर्वत मेरुपर्वतोंके सदृश, कुलपर्वत कुलपर्वतोंके सदृश, नाभिगिरि नाभिगिरियोंके सदृश और नदियाँ नदियोंके सदृश हैं । इनमेंसे मेरु-पर्वतके अतिरिक्त शेष सबका अवगाह एवं ऊँचाई सदृश है ॥२५८४-२५८५॥

विजयार्ध पर्वतादिकोंका विस्तार—

अंबूदीप - पद्मणिप - रुंदाहितो य दुगुण - रुंदा ते ।

पत्तोकं देयद्वं, पट्टवि - नगानं विष्ठा मेरुं ॥२५८६॥

अर्थ :—विजयार्ध आदिक पर्वतोंमेंसे मेरुपर्वतके अतिरिक्त शेष प्रत्येक जम्बूद्वीपमें बतलाये हुए विस्तारकी अपेक्षा दुगुने विस्तारवाले हैं ॥२५८६॥

मत्तान्तरे द्वे द्वीपौके पूर्वोऽदिकोऽपि सुदृग्वाहो द्वितीः स इत्येतत्तन्त्रम् ॥

मोत्तुणं मेरुगिरि, सख्य - नगा कुंड - पट्टवि दीप-वृषे ।

अवगाह - वास - पट्टदी, केई इच्छंति सारिच्छा ॥२५८७॥

पाठान्तरम् ।

अर्थ :—मेरुपर्वतके अतिरिक्त शेष सब पर्वत और कुण्ड आदि तथा उनके अवगाह एवं विस्तारादि दोनों द्वीपोंमें समान हैं, ऐसा कितने ही आचार्योंका अभिप्राय है ॥२५८७॥

पाठान्तर

बारह कुलपर्वत और बार विजयाधोंकी स्थिति एवं आकार—

मूलमि उवरिभागे, बारस-कुल-पद्मया सरित - रुंदा ।

उभयंतर्हि लगा, सवणोवहि - कालजलहीणं ॥२५८८॥

अर्थ :—मूल एवं उपरिमभागमें समान विस्तारवाले बारह कुलपर्वत अपने दोनों अन्तिम भागोंसे सवणोदधि और कालोदधिसे संलग्न हैं ॥२५८८॥

दो दो भरहेरावद-वसुमद-बहु-मच्छ-दीह'-विजयद्वीपा ।

दो पासेसु' लगा, सवणोवहि - कालजलहीणं ॥२५८९॥

अर्थ :—भरत एवं ऐरावत क्षेत्रोंके बहुमध्यभागमें स्थित दो-दो दीर्घ विजयार्धपर्वत दोनों पार्श्वभागोंमें सवणोदधि और कालोदधिसे संलग्न हैं ॥२५८९॥



अक्षरार्थः — अक्षरार्थ की सुविधितरंगिता की यक्षराज्य

ते बारह कुलसेला, वसतारो ते य वीह-विजयइहा ।

अक्षन्तरम्मि बाहि, अंकमुहा सुरप्प - संठाणा ॥२५६०॥

अर्थ :— वे बारह कुलपर्वत और चारों ही दीर्घ विजयार्थ अभ्यन्तर एवं बाह्यभागमें क्रमशः अंकमुख और सुरपा ( सुरप्र ) जैसे आकारवाले हैं ॥२५६०॥

विजयादिकोंके नाम—

विजयादीणं णामा, जम्बूवीरम्मि वण्णिदा विविहा ।

वज्जिय' जम्बू - सम्मलि - एणमाइं एत्थ वत्तब्बा ॥२५६१॥

अर्थ :—जम्बू और शास्मलीवृक्षके नामोंकी छोड़कर शेष जो क्षेत्रादिकोंके विविध प्रकारके नाम जम्बूद्वीपमें बतलाये गये हैं, उन्हें ही यहाँ भी कहना चाहिए ॥२५६१॥

दोनों भरत और दोनों ऐरावत क्षेत्रोंकी स्थिति—

दो - पासेसुं दक्षिण-इसुगार-गिरिस्स दो भरहस्सेत्ता ।

उत्तर - इसुगारस्स य, हवन्ति एरावदा' दोण्णि ॥२५६२॥

अर्थ :—दक्षिण इष्वाकार पर्वतके दोनों पार्श्वभागोंमें दो भरतक्षेत्र और उत्तर इष्वाकार-पर्वतके दोनों पार्श्वभागोंमें दो ऐरावतक्षेत्र हैं ॥२५६२॥

विजयोंका आकार—

दोण्णं इसुगाराणं, बारह - कुल - पयवयाण विज्वाले ।

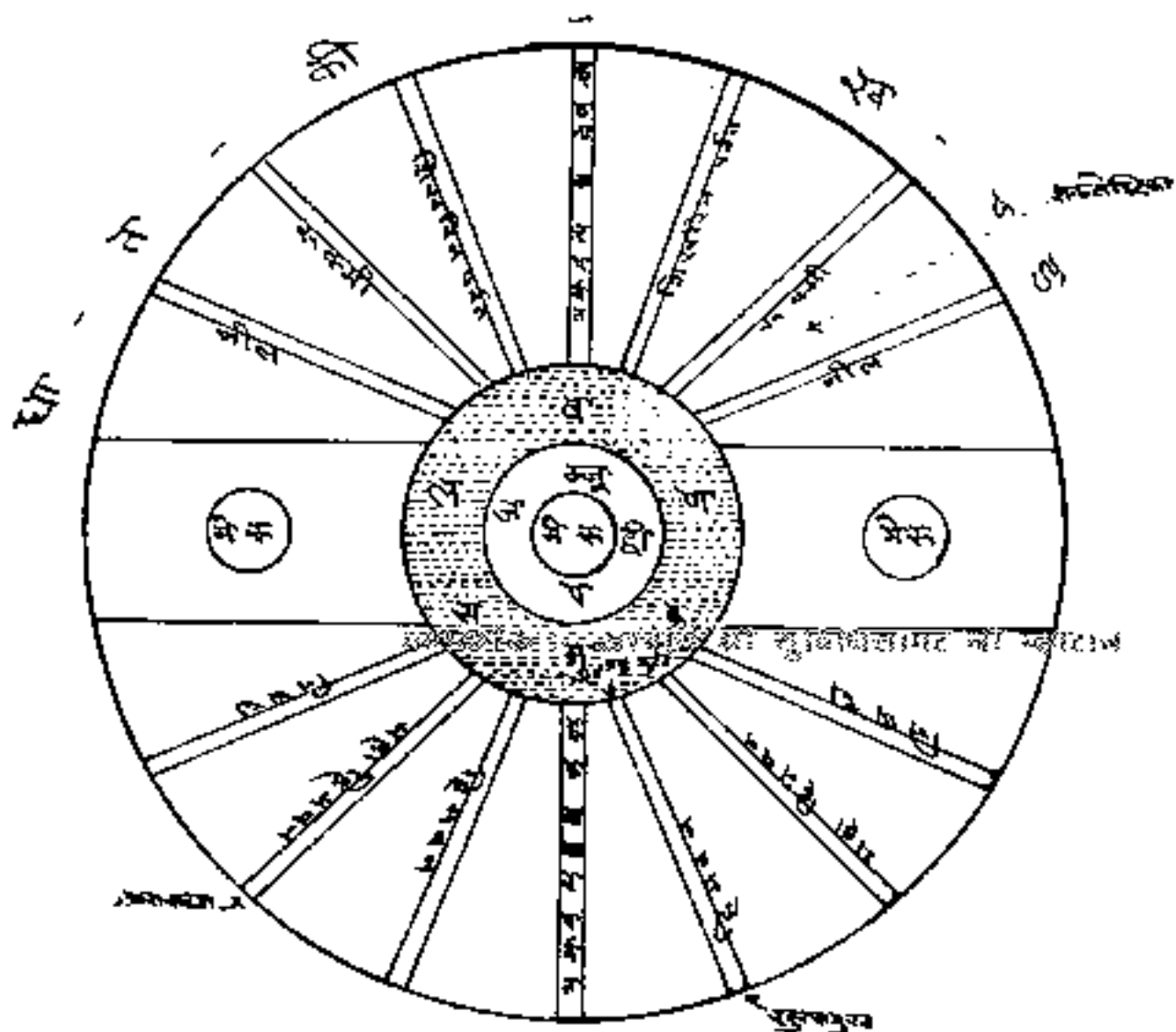
अर - विवरोह सरिञ्छा, विजया सव्वे वि आवईसंढे ॥२५६३॥

अर्थ :—घातकीखण्डद्वीपमें दोनों इष्वाकार और बारह कुलपर्वतोंके अन्तरालमें स्थित सब क्षेत्र अर-विवर अर्थात् पहिएके भरोंके मध्यमें रहनेवाले छेदोंके सदृश हैं ॥२५६३॥

अंकायारा विजया, भागे अक्षन्तरम्मि ते सव्वे ।

सत्ति - मुहं पिव बाहि, सपड्ढि - समा य पस्समुत्ता ॥२५६४॥

अर्थ :—वे सब क्षेत्र अभ्यन्तरभागमें अंकाकार और बाह्यमें शक्तिमुख हैं । इनकी पार्श्व-धुजाएँ गाड़ीकी उद्वि ( गाड़ीके पहिये ) के समान हैं ॥२५६४॥



अन्तरम्भि भागे, मज्झिम - भागम्भि बाहिरे भागे ।

विजयाणां विस्संभं, वावइसंहे निरुवेमो ॥२५६५॥

अर्थ :- घातकीसशब्दोपस्थित क्षेत्रोंके अन्तर मध्यम एवं बाह्यभागोंमें विद्यमान (पर्वतोंके) विष्कम्भका निरूपण करता है ॥२५६५॥

कुल-पर्वतोंका विस्तार—

वु - सहस्स - जोयणाणि, पंचुत्तर-सय-अवाणि पंचंसा ।

उयवीस - हिवा वंदा, हिमवन्त - गिरिस्स नावण्ण ॥२५६६॥

अर्थ :—दो हजार एकसौ पाँच योजन और उन्नीससे भाजित पाँच भाग (२१०५ $\frac{१}{२}$  योजन) प्रमाण हिमवान् पर्वतका विस्तार समझना चाहिए ॥२५६६॥

महहिमवन्तं रुदं, चउ' - हव - हिमवन्त-रुद-परिमाणं ।

गिसहस्स होवि वासो, महहिमवन्तस्स चउगुणो वासो ॥२५६७॥

८४२१ । १, १ । ३३६८४ । १, १ ।

अर्थ :—महाहिमवान् पर्वतका विस्तार-प्रमाण हिमवान् पर्वतके विस्तारसे षोडशगुणा अर्थात् ८४२१ $\frac{१}{२}$  योजन है और निषधपर्वतका विस्तार महाहिमवान् पर्वतके विस्तारसे षोडशगुणा अर्थात् ३३६८४ $\frac{१}{२}$  योजन है ॥२५६७॥

एवाणं सेसाणं, विक्खंभो भेलिऊण चउ - गुणिदो ।

सम्भाण कुलगिरीणं, सस्सतो पुणो तु होवि ॥२५६८॥

अर्थ :—इन तीनों पर्वतोंके विस्तारको मिलाकर षोडशगुणा करनेपर  $[ ( २१०५\frac{१}{२} + ८४२१\frac{१}{२} + ३३६८४\frac{१}{२} ) \times ४ = १७६८४२\frac{१}{२}$  योजन] सब कुलपर्वतोंके विस्तारका संकलन होता है ॥२५६८॥

इष्वाकार पर्वतोंका विस्तार एवं पर्वतरुद्ध क्षेत्रका प्रमाण—

दोणं इसुगाराणं, विक्खंभो होवि दो सहस्साणि ।

तास्स मल्लिगे धावइसंढे गिरि - रुद्ध - सिद्धिमाणं ॥२५६९॥

२००० ।

अर्थ :—दोनों इष्वाकार पर्वतोंका विस्तार दो हजार ( २००० ) योजन प्रमाण है । कुलपर्वतोंके पूर्वकथित विस्तारप्रमाणमें इसको मिला देनेपर धातकीखण्डद्वीपमें सम्पूर्ण पर्वतरुद्ध क्षेत्रका प्रमाण प्राप्त होता है ॥२५६९॥

घातकीखण्डमें पर्वतरुद्ध क्षेत्रका क्षेत्रफल—

यार्जितफलं द्वा अष्टांशं अष्टांशं, तस्यैव जौघादीनां प्रक - कमे ।

उणवीस - हिवा द्वा - कला, माणं गिरिवद्ध - वसुहाए ॥२६००॥

१७८८४२ । ११ ।

अर्थ :—दो, चार, आठ, ग्राठ, सात और एक, इस अंक क्रमसे जो संख्या निर्मित हो उतने योजन और उन्नीससे भाजित दो भाग अधिक (  $१७८८४२\frac{१}{२} + २००० = १७८८४२\frac{१}{२}$  योजन ) घातकीखण्डमें पर्वतरुद्ध क्षेत्रका प्रमाण है ॥२६००॥

आदिम, मध्यम और बाह्य सूची निकालनेका विधान—

लवणादीनां द्वां, वृग-तिग-जउ-संगुणं ति - लवसूणं ।

कमसो आदिम - मज्झिम - बाहिर - सूई हवे ताणं ॥२६०१॥

अर्थ :—लवणसमुद्रादिकके विस्तारको दो, तीन और चारसे गुणाकर प्राप्त गुणनफलमेंसे तीन लाख कम करनेपर क्रमशः उनकी आदि, मध्य और अन्तिम सूचीका प्रमाण प्राप्त होता है ॥२६०१॥

विशेषार्थ :—लवणसमुद्रादिकमेंसे जिस द्वीप या समुद्रका सूचीव्यास ज्ञात करना हो उसके विस्तार ( वलय व्यास या रुन्द्रव्यास ) को दो से गुणितकर लवणराशिमेंसे तीन लाख घटा देनेपर आद्यन्तर सूचीव्यासका प्रमाण प्राप्त होता है । विस्तार प्रमाणको तीनसे गुणितकर, तीन लाख घटा देनेपर मध्यम सूची व्यासका प्रमाण प्राप्त होता है और विस्तारको चारसे गुणितकर तीन लाख घटा देनेपर बाह्य सूचीव्यासका प्रमाण प्राप्त होता है । यथा—

चार लाख विस्तारवाले घातकीखण्डके तीनों सूची व्यासोंका प्रमाण—

( ४ लाख  $\times २ = ८$  लाख )—३ लाख = ५ लाख घातकीखण्डका अद्यः सूची व्यास ।

( ४ लाख  $\times ३ = १२$  लाख )—३ लाख = ९ लाख घातकी खण्डका मध्यम सूची व्यास ।

( ४ लाख  $\times ४ = १६$  लाख )—३ लाख = १३ लाख घातकी खण्डका बाह्य सूची व्यास ।

विवक्षित सूचीकी परिधि प्राप्त करनेका विधान—

मार्गदर्शक :- अष्टाध्यायी की सुविधितानुसार की गणना

आदिम-मज्झिम-बाहिर-सूई-वग्गा वसेहि संयुग्गिवा ।

तस्स य भूला इच्छिय - सूईए होदि सा परिही ॥२६०२॥

अर्थ :-आदि, मध्य और बाह्य-सूचीके वर्गको दससे गुणा करके उसका वर्गमूल निकालनेपर इच्छित सूचीकी परिधिका प्रमाण आता है ॥२६०२॥

घातकीखण्डकी अभ्यन्तर परिधिका प्रमाण—

पण्णारस - लक्खाई, इगिसीदि-सहस्स-ओयणेवक-सयं ।

उणवात्त - कुदा घावइसंडे अन्नंतरे परिही ॥२६०३॥

१५८११३६ ।

अर्थ :-घातकीखण्डद्वीपकी अभ्यन्तर परिधिका प्रमाण पन्द्रह लाख इक्यासी हजार एक सौ उनतालीस ( १५८११३६ ) योजन है ॥२६०३॥

विशेषार्थ :-अभ्यन्तर परिधिका वास्तविक प्रमाण  $= \sqrt{(५ लाख)^२ \times १०} = १५८११३६$  योजन, ३ कोस, ६४० धनुष, १ रिक्कू, १ वितस्त और कुछ कम ५ अंगुल प्राप्त होता है । किन्तु गाथामें यह प्रमाण मात्र १५८११३६ योजन कहा है ।

मध्यम परिधिका प्रमाण—

अट्ठाधीसं लक्खा, छावात्त - सहस्स - ओयणा - पण्णा<sup>१</sup> ।

किच्चूना गावक्खा, मज्झिम - परिही य घावईसंडे ॥२६०४॥

२८४६०५० ।

अर्थ :-घातकी खण्ड द्वीपकी मध्यम परिधिका प्रमाण अट्ठाईस लाख छपत्तीस हजार पचास ( २८४६०५० ) योजनसे कुछ कम जानना चाहिए ॥२६०४॥

**विशेषार्थ :**—मध्यम परिधिका वास्तविक प्रमाण =  $\sqrt{(६ \text{ लाख})^2 \times १०} = २८४६०४६$  योजन, ३ कोस, ११५३ धनुष एवं साधिक २० अंगुल है। इसलिए गाथामें किञ्चित् कम कहा गया है।

बाह्य परिधिका प्रमाण—

एक-छ-गव-गम-एकका, एक-चउत्थका कमेय अंकाणि ।

जोयणया किञ्चूया, तद्दीवे बाहिरो परिही ॥२६०५॥

४११०६६१ ।

**अर्थ :**—घातकी खण्डद्वीपकी बाह्य-परिधिका प्रमाण एक, छह, नौ, शून्य, एक, एक और चार इस अंक क्रमसे जो संख्या बनती है उतने ( ४११०६६१ ) योजनसे कुछ कम है ॥२६०५॥

**विशेषार्थ :**—बाह्य परिधिका वास्तविक प्रमाण =  $\sqrt{(१३०००००)^2 \times १०} = ४११०६६०$  योजन, ३ कोस, १६६५ धनुष और अर्धधनुष है। इसलिए गाथामें कुछ कम कहा गया है।

भरतादि सब क्षेत्रोंका सम्मिलित विस्तार—

आदिम-मजिष्म-बाहिर-परिहि-पमाणेसु सेल-रुद्ध-खिदि ।

सोहिय सेसं वास - समासो सव्वाण विजयाण ॥२६०६॥

१४०२२६६ । ११ । २६६७२०७ । ११ । ३६३२११८११ ।

**अर्थ :**—आदि, मध्य और बाह्य परिधिके प्रमाणमेंसे पर्वतरुद्ध ( भूमि ) क्षेत्र कम कर देनेपर शेष प्रमाण सब क्षेत्रोंके सम्मिलित विस्तारका है ॥२६०६॥

**विशेषार्थ :**—गाथा २६०० में घातकी खण्डद्वीपके पर्वतरुद्ध क्षेत्रका प्रमाण १७८८४२११ योजन कहा गया है। इसे घातकी खण्डकी अभ्यन्तर, मध्य और बाह्य परिधियोंमेंसे घटा देनेपर दोनों मेरु सम्बन्धी भरत आदि चौदह क्षेत्रोंसे भवरुद्ध क्षेत्र प्राप्त होता है। यथा—

अभ्य० परिधि—१५८११३६ यो० — १७८८४२११ = १४०२२६६१ यो० ।

मध्य परिधि — २८४६०४० यो० — १७८८४२११ = २६६७२०७१ यो० ।

बाह्य परिधि — ४११०६६१ यो० — १७८८४२११ = ३६३२२४५० यो० ।

घातकीखण्डस्थ भरतक्षेत्रका आदि, मध्य और बाह्य विस्तार—

एक-चउ-सोल-संज्ञा, चउ-गुणिदा अट्ठवीस-जुस-सया ।

मेलिय तिबिह - समासं, हरिदे तिट्ठाण-भरह-विबल्लभा ॥२६०७॥

२१२ ।

अर्थ :—एक, चार और सोलह, इनकी चोगुनी संख्याके जोड़में एक सौ अट्ठाईस मिला देने-पर जो संख्या उत्पन्न हो उसका पर्वत-रुद्ध क्षेत्रसे रहित उपर्युक्त तीन प्रकारके परिधि प्रमाणमें भाग देनेपर क्रमशः तीनों स्थानोंमें भरतक्षेत्रका विस्तार प्रमाण निकलता है ॥२६०७॥

विवेचनार्थ :—भरतक्षेत्रसे और ऐरावतक्षेत्रसे विदेह पर्यन्त क्षेत्रोंका विस्तार चोगुना है अतः भरतकी शलाका १, हैमवतकी ४ और हरिर्क्षेत्रकी १६ शलाकाएँ हैं । जिनका योग (१+४+१६=) २१ है । ( इसीप्रकार विदेहकी ६४, रम्यवतकी १६, हैरण्यवतकी ४ और ऐरावतक्षेत्रकी १ शलाका है । )

मार्गदर्शक :- आचार्य श्री तुलसीदासजी की महारत्न

घातकीखण्डमें दो भेद हैं अतः प्रत्येक भेदके दोनों भागोंका ग्रहण करनेके लिए इन्हें ( २१ को ) ४ से गुणित करनेको कहा गया है । यथा— $२१ \times ४ = ८४$  हुए । इनमें दो भेद सम्बन्धी दो विदेह क्षेत्रोंकी (  $६४ \times २ =$  ) १२८ शलाकाएँ जोड़ देनेसे (  $८४ + १२८ =$  ) २१२ शलाकाएँ पर्वत रहित परिधिका भागहार है ।

भरतक्षेत्रका अभ्यन्तर विस्तार—

$१४०२२९६३\frac{१}{२} \div २१२ = ६६१४३३\frac{१}{२}$  योजन ।

मध्यविस्तार— $२६६७२०७३\frac{१}{२} \div २१२ = १२५८१३६\frac{१}{२}$  योजन ।

बाह्य विस्तार— $३९३२११८३\frac{१}{२} \div २१२ = १८५४७७३\frac{१}{२}$  योजन ।

भरतादिकोंके विस्तारमें हानि-वृद्धिका प्रमाण—

भरहावी - विजयाणां, बाहिर'-रुं वम्मि आदिमं रुं वं ।

सोहिय चउ-लवख'-हिदे, सय - बड्ढी इच्छिद - पवेसे ॥२६०८॥

अर्थ :—भरतादिक क्षेत्रोंके बाह्य-विस्तारमेंसे आदिके विस्तारको कम कर शेषमें चार लाखका भाग देनेपर इच्छित स्थानमें हानि-वृद्धिका प्रमाण आता है ॥२६०८॥

**विशेषार्थ :**—घातकीखण्डद्वीपका विस्तार ४००००० योजन है । इसमें स्थित भरतक्षेत्रके ब्राह्म-विस्तारमेंसे अभ्यन्तर विस्तार घटाकर अवशेषमें विस्तारका भाग देनेपर हानि-वृद्धिका प्रमाण प्राप्त होता है । यथा—

$$( १८५४७३३३ - ६६१४३३ ) \div ४००००० = ४३६३५६३३३३३३ यो० ।$$

भरतक्षेत्रका अभ्यन्तर विस्तार—

छावद्वि च सयार्णि, ओदस - जुसाणि जोयणाणि कला ।

उणतीस उत्तर - सयं, भरहस्तभन्तरे वासो ॥२६०६॥

६६१४ । ३३३ ।

**अर्थ :**—भरतक्षेत्रका अभ्यन्तर विस्तार छयासठसो ओदह योजन और एक योजनके दोसो बारह आधेमेंसे एकसो उत्तरेण ( ३३३ ) के बराबर है ॥२६०६॥

हेमवतादिक क्षेत्रोंका विस्तार—

हेमवदं पद्मवीर्णं, पक्षेकं चउगुणो ह्ये वासो ।

जाव य विदेहवस्ती, तम्परदो चउगुणा हाणी ॥२६१०॥

२६४५८ । २१३ । १०५८३३ । २५३ । ४२३३३४ । ३३३ । १०५८३३ । २५३ ।

२६४५८ । २१३ । ६६१४ । ३३३ ।

**अर्थ :**—विदेहक्षेत्र तक क्रमशः हेमवतादिक क्षेत्रोंमेंसे प्रत्येकका विस्तार उत्तरोत्तर इससे चौगुना है । इससे आगे क्रमशः चौगुनी हानि होती गई है ॥२६१०॥

भरतादि क्षेत्रका मध्यम विस्तार—

बारस-सहस्स-पणसय-इगिसीदो जोयणा य छवीसा ।

भागा भरह - स्त्रिदस्स य, मज्झिम-विस्वार-परिमाणं ॥२६११॥

१२४८१ । ३३३ । ५०३२४ । ३५३ । २०१२६८ । ३३३ । ५०४१६४ । ३३३ ।

२०१२६८ । ३३३ । ५०३२४ । ३५३ । १२४८१ । ३३३ ।



अर्थ :—भरतक्षेत्रके मध्यम विस्तारका प्रमाण बारह हजार पाँचसौ इक्यासो योजन और छत्तीस भाग अधिक है ॥२६११॥

भरतादि क्षेत्रका बाह्य विस्तार—

अष्टारसा सहस्त्रा, पंच - सप्त ओयसा य सगवाला ।

भागा षणवण्ण सयं, वासो भरहस्स बाहिरए ॥२६१२॥

मार्गदर्शक :- अष्टारसां श्री सुविदितास्यत श्री षणवण्ण

१८५४७ । ३३३ । ७४१६० । ३३३ । २६६७६३ । ३३३ । ११८७०५४ । ३३३ ।

२६६७६३ । ३३३ । ७४१६० । ३३३ । १८५४७ । ३३३ ।

अर्थ :—भरतक्षेत्रका बाह्य-विस्तार अठारह हजार पाँचसौ सैंतालीस योजन और एकसौ षणपत्त भागप्रमाण है ॥२६१२॥

[ तालिका ४५ अगले पृष्ठ पर देखिए ]

तालिका : ४६

धातकीखण्डको परिधि एवं उसमें स्थित कुलावसों और सेनोंका विस्तार—

| क्र० | धातकी खण्डरथ कुलावसोंका विस्तार |         | धातकी खण्डको परिधि   |                      |                      | धातकीखण्डरथ सेनोंका विस्तार ( योजनोंमें ) |        |            |              |            |
|------|---------------------------------|---------|----------------------|----------------------|----------------------|-------------------------------------------|--------|------------|--------------|------------|
|      | नाम                             | योजन    | अध्वतर               | मध्य                 | बाह्य                | क्र०                                      | नाम    | अध्वतर वि० | मध्य विस्तार | बाह्य वि०  |
| १    | हिमवान्                         | २१०५३२  | कुल<br>कम<br>२५०११३६ | कुल<br>कम<br>२५०११३६ | कुल<br>कम<br>२५०११३६ | १                                         | धरत    | ६११५३३३    | १२५८१३३२     | १८५४०३३३   |
| २    | महाहिम०                         | ८४२१३१  |                      |                      |                      | २                                         | होमवत  | १११३३३३३   | २०१२३३३३     | ३०१२३३३३   |
| ३    | निगध                            | ३३६८४३५ |                      |                      |                      | ३                                         | हरि    | १०५८३३३३३  | २०१२३३३३३    | २९६७६३३३३  |
| ४    | मील                             | ३३६८४३५ |                      |                      |                      | ४                                         | विनेह  | ४२३३३३३३३  | ८०५१६५३३३    | ११५७०५५३३३ |
| ५    | शक्ति                           | ८४२१३१  |                      |                      |                      | ५                                         | रम्यक  | १०४८३३३३३  | २०१२३३३३३३   | २९६७६३३३३  |
| ६    | सिद्धिदि                        | २१०५३२  |                      |                      |                      | ६                                         | हैरमवत | २६५५८३३३   | ५०१२३३३३३    | ७५१६०३३३   |
|      |                                 |         |                      |                      |                      | ७                                         | देरावत | ६६१५३३३    | १८५८३३३३     | १८५४०३३३   |

अर्थात् श्री सुविदिनागर जी महाराज

पद्मद्रह और पुण्डरीकद्रहसे निर्गत नदियोंका पर्वतके ऊपर गमनका प्रमाण—

घावइसंखे खीवे, सुस्तय-हिमवंत-सिहरि-मज्झ-गया ।

पडमवह-पुंडरोए, पुब्बवर - विसाए एकक एकक जाई ॥२६१३॥

अर्थ :—घातकोखण्ड द्वीपमें क्षुद्रहिमवान् और शिखरीपर्वतके मध्यगत पद्मद्रह और पुण्डरीकद्रहकी पूर्वं एवं पश्चिम दिशासे एक-एक नदी निकली है ॥२६१३॥

उणवीस-सहस्साणि तिणिण सया णवय-सहिय-ओयणया ।

गंतूण गिरिदुवरि, वक्खिण - उसर - विसे बसइ ॥२६१४॥

१६३०६ ।

अर्थ :—प्रत्येक नदी उन्नीस हजार तीनसौ नौ ( १६३०६ ) योजन पर्वतके ऊपर जाकर यथायोग्य दक्षिण एवं उत्तर दिशाकी ओर मुह जाती है ॥२६१४॥

मन्दर पर्वतकी विशेषता जो यद्यत्तः

मंदर - खामो सेलो, हवेवि तस्स विवेह - वरिसम्मि ।

किंचि विसेसो खेदुवि, तस्स सकुवं पखवेमो ॥२६१५॥

अर्थ :—उस द्वीपके विवेहक्षेत्रमें किञ्चित् विशेषता लिए हुए जो मन्दर नामक पर्वत स्थित है उसका स्वरूप कहता हूँ ॥२६१५॥

तद्दीवे पुब्बावर - विवेह - वस्साण होवि बहुमज्झे ।

पुब्बे - पवण्णिव - रुबो, एक्केक्को मंदरो<sup>१</sup> सेलो ॥२६१६॥

अर्थ :—उस द्वीपमें पूर्वं और अपर विवेहक्षेत्रोंके बहुमध्यभागमें पूर्वोक्त स्वरूपसे संयुक्त एक-एक मन्दर पर्वत स्थित है ॥२६१६॥

मेदपर्वतोंका अङ्गाह एवं ऊँचाई—

ओयण - सहस्स - गाढा, पुलसीदि-सहस्स-ओयणुज्जेहा ।

ते सेला पसेक्कं, वर - रयण - वियप्प - परिजामा ॥२६१७॥

१००० । ८४००० ।

**अर्थ** :—नानाप्रकारके उत्तम रत्नोंके परिणामस्वरूप वह प्रत्येक पर्वत एक हजार ( १००० ) योजन प्रमाण अवगाढ ( नीच ) सहित चौरासी हजार ( ८४००० ) योजन ऊँचा है ॥२६१७॥

मेरुका विस्तार—

मेरु-वृत्तस्य य एवं दस ए सहस्राणि ज्योतिषा ह्येति ।

चउ - णउहि - तयाई पि य, चरणीपट्टम्मि ए रुंदा ॥२६१८॥

१०००० । ६४०० ।

**अर्थ** :—मेरुका विस्तार तलभागमें दस हजार ( १०००० ) योजन और पृथिवीपृष्ठपर ती हजार चार सौ ( ६४०० ) योजन प्रमाण है ॥२६१८॥

ज्योतिष-सहस्रमेवकं, विष्वक्भो होदि तस्त सिहरम्मि ।

भूमौद्य भुहं सोहिद्य, उदय - हिदे भू-भुहावु हाजि-चयं ॥२६१९॥

**अर्थ** :—उस मेरुका विस्तार शिखरपर एक हजार योजन प्रमाण है । भूमिमेंसे मुख घटा कर क्षेत्रमें ऊँचाईका भाग देनेपर भूमिकी अपेक्षा हानि और मुखकी अपेक्षा वृद्धिका प्रमाण प्राप्त होता है ॥२६१९॥

**विशेषार्थ** :—नीचमें — ( भूमि १००००—६४०० मुख ) ÷ १००० यो० अवगाह =  $\frac{१}{१०}$  योजन हानि-क्षय ।

भूमिसे ऊपर—( भूमि—६४०० — १००० मुख ) ÷ ८४००० ऊँ० =  $\frac{१}{८४}$  योजन हानि-क्षय ।

तत्क्षय-वृद्धि-प्रमाणं, छहस-भागं सहस्र - गाढम्मि ।

भूमौवो उवार् पि य, एकं वस - रुक्मवहरिवं ॥२६२०॥

१० । १० ।

**अर्थ** :—वह क्षय-वृद्धिका प्रमाण एक हजार योजन प्रमाण अवगाहमें योजनके दस भागोंमेंसे छह भाग अर्थात् छह बटे दस (  $\frac{६}{१०}$  ) भाग और पृथिवीके ऊपर दस रूपोंसे भाजित एक भाग (  $\frac{१}{१०}$  यो० ) प्रमाण है ॥२६२०॥

मेरु - तलस्स य एवं, पंच-सया णव-सहस्स जोयणया ।

सव्वत्थं जय - वड्ढी, वसमंसं केइ इच्छंसि ॥२६२१॥

६५०० । १<sup>१</sup> ।

पाठान्तरम् ।

अर्थ :—कितने ही आचार्य मेरुके तल-विस्तारको नौ हजार पाँचसौ ( ६५०० ) योजन प्रमाण मानकर सर्वत्र जय-वृद्धिका प्रमाण दसवाँ भाग (  $\frac{१}{१०}$  ) मानते हैं ॥२६२१॥

(  $\frac{६५०० - १०००}{१०} = ५५०० = १<sup>१</sup>$  योजन ।

पाठान्तर ।

जस्थिच्छसि विक्खंभं, खुल्लसय - मेरुण 'समवविष्णाणं ।

वस - भजिबे जं सद्धं, एक्क-सहस्सेण संमिलिद्धं ॥२६२२॥

अर्थ :—जितने योजन नीचे जाकर क्षुद्रमेरुओंके विस्तारको जानना हो, उतने योजनोंमें दसका भाग देनेपर जो लब्ध प्राये उसमें एक हजार जोड़देनेपर अभीष्ट स्थानमें मेरुओंके विस्तारका प्रमाण जाना जाता है ॥२६२२॥

विशेषार्थ :—विस्तारसे २१००० योजन नीचे मेरुका विस्तार  $(२१००० \div १०) + १००० = ३१००$  योजन प्राप्त होता है ।

चूलिकाएँ—

जम्बूद्वीप-पवण्णिव - मंदरगिरि - चूलियाएँ सरिसाओ ।

दोण्णं<sup>१</sup> पि चूलियाओ, मंदर - सेलाण एवस्सि<sup>२</sup> ॥२६२३॥

अर्थ :—इस द्वीपमें दोनों मन्दर-पर्वतोंकी चूलिकाएँ जम्बूद्वीपके वर्णनमें कही हुई मन्दर-पर्वतकी चूलिका सदृश हैं ॥२६२३॥

चार वनोंका विवेचन—

पंडुग - सोमरासारणि, वणारिण रांवणय - भट्टसासारणि ।

जम्बूद्वीप - पवण्णिव - मेरु - समाणाणि मेरुजं ॥२६२४॥

१. द. ब. ज. य. उ. समवविष्णाणं । २. व. ब. क. ज. य. उ. चूलिय । ३. व. क. उ. दोण्णि ।

४. द. ब. क. ज. य. उ. एवंपि ।

अर्थ :—जम्बूद्वीपमें कहे हुए मेरुपर्वतके सहस्र इन मेरुओंके भी पाण्डुक, सोमनस, नन्दन और भद्रशाल नामक चार वन हैं ॥२६२४॥

सप्तविंशति - अथर्वशिखरेणोऽपि पञ्चानामपि नक्षत्राणां जोयणो हेतुः ।

अठबीस - सहस्तरात्रि, सोमनसं नाम वनमेतत् ॥२६२५॥

२८००० ।

अर्थ :—यहाँ विशेषता यह है कि पाण्डुकवनसे सट्टाईस हजार ( २८००० ) योजन प्रमाण नीचे जाकर सोमनस नामक वन स्थित है ॥२६२५॥

सोमनसावो हेतुः, पञ्चवण-सहस्र - पण - सप्तारिणि पि ।

गंतूण जोयणाइं, होवि वणं गंतूण एतत् ॥२६२६॥

५५५०० ।

अर्थ :—इसीप्रकार सोमनसवनके नीचे पचपन हजार पाँचसौ ( ५५५०० ) योजन प्रमाण जानेपर नन्दन-वन है ॥२६२६॥

पंच - सय - जोयणाणि, गंतूणं गंतूणावो हेतुस्मि ।

घाहइसंडे बीवे, होवि वणं सहस्रां ति ॥२६२७॥

५०० ।

अर्थ :—घातकीखण्डद्वीपमें नन्दनवनसे पाँचसौ ( ५०० ) योजन प्रमाण नीचे जानेपर भद्रशालवन है ॥२६२७॥

एकानं जोयण - लवसं, सप्त-सहस्तराणि अत्रसप्तारिणि पि ।

उणसीवी परोषकं, पुम्बावर - बोहमेवाणं ॥२६२८॥

१०७८७६ ।

अर्थ :—इनमेंसे प्रत्येक भद्रशालवनकी पूर्वापर लम्बाई एक लाख सात हजार आठसौ सत्प्यासी ( १०७८७६ ) योजन प्रमाण है ॥२६२८॥



अर्थ :- घातकीखण्डद्वीपमें दोनों ( उत्तर एवं देव ) कुरुओंका धनुःपुष्ट नौ लाख पन्चीस हजार चारसौ छयासी ( ६२५४८६ ) योजन प्रमाण है ॥२६३३॥

कुरुक्षेत्रोंकी जीवा—

दो जोयण-सहस्राणि, तेवीस - सहस्त्रयाणि एक-सयं ।  
अष्टावप्पणा जीवा, कुरवे तह पावईसंडे ॥२६३४॥

२२३१५८ ।

अर्थ :- घातकीखण्डद्वीपमें दोनों ( उत्तर एवं देव ) कुरुओंकी जीवा दो लाख तेईस हजार एकसौ अष्टावन ( २२३१५८ ) योजन प्रमाण है ॥२६३४॥

वृत्तविस्तार निकालनेका विधान—

इसु-वर्गं चउ-गुणितं, जीवा-वर्गम्मि पविसवेज्ज तवो ।  
चउ-गुणित-इसु - विहत्तं<sup>१</sup>, जं तव<sup>२</sup> वट्ट - वासो सो ॥२६३५॥

अर्थ :- बाणके वर्गको चौगुना करके उसमें जीवाका वर्ग मिला दें । पश्चात् उसमें चौगुने बाणका भाग देनेपर जो लब्ध आवे उतना वृत्त ( गोल ) क्षेत्रका विस्तार होता है ॥२६३५॥

यथा :-  $\{ ( ३६६६८० )^२ \times ४ + ( २२३१५८ )^२ \} \div \{ ३६६६८० \times ४ \} = ४००६३२३३$  अर्थात् कुल कम ४००६३३ योजन ।

कुरुक्षेत्रोंका वृत्त विस्तार—

चउ-जोयण-सहस्राणि, छस्सय - जुत्ताणि होंति तेसीसं ।  
दो - उत्तर - कुरवाणं, पत्तेवकं वट्ट - विक्कंमो ॥२६३६॥

४००६३३ ।

अर्थ :- दो उत्तर ( एवं दो देव ) कुरुओंमेंसे प्रत्येकका वृत्त-विस्तार चार लाख छहसौ तीस ( ४००६३३ ) योजन प्रमाण है ॥२६३६॥



ऋजुबाण किकामनेका विद्यातः ॥ २६३७ ॥

जीवा - विषसंभारं, वग - विसेसस्तु होवि चं मूलं ।

विषसंभ - अर्धं अद्विष', रिजु - बाणो वादईसंडे ॥२६३७॥

अर्थ :—जीवाके वर्गको वृत्त-विस्तारके वर्गमेंसे घटाकर जो शेष रहे उसका वर्गमूल निकालें, पश्चात् उसमें वृत्त-विस्तारका प्रमाण मिलाकर आधा करनेपर घातकीखण्डद्वीपमें ऋजु-बाणका प्रमाण प्राप्त होता है ॥२६३७॥

$$\text{यथा :—} \sqrt{\frac{४००६३३^२ - २२३१५८^२}{२} + ४००६३३} = ३६६६८० \text{ योज० ।}$$

कुरुक्षेत्रोंका ऋजुबाण—

तिय - सक्ता छासट्टी, सहस्तया छस्तयाणि सोदी य ।

ओयणया रिजु - बाणो, वादइओ तम्मि दीवम्मि ॥२६३८॥

३६६६८० ।

अर्थ :—उस द्वीपमें तीन लाख छषासठ हजार छहसौ अस्सी ( ३६६६८० ) योजन प्रमाण कुरुक्षेत्रोंका ऋजुबाण जानना चाहिए ॥२६३८॥

नोट :—यहाँ प्रसंगानुसार गाथा २६३५ गाथा २६३८ के स्थानपर और गाथा २६३८ गाथा २६३५ के स्थानपर लिखी गई है ।

कुरुक्षेत्रोंके वक्रबाणका प्रमाण—

सक्त-णव-अट्ट-सग-णव-तियाणि घंसाणि होंसि बाणउदी ।

वकेसुओ' पमाणं, वादइसंडम्मि दीवम्मि ॥२६३९॥

३६७८६७ । ३६३ ।

अर्थ :—घातकीखण्डद्वीपमें कुरुक्षेत्रके वक्रबाणका प्रमाण सात, नौ, आठ, सात, नौ और तीन इस अंक क्रमसे जो संख्या उत्पन्न हो, उतने योजन और बानवे भाग अधिक ( ३६७८६७.३६३ योजन ) है ॥२६३९॥

१. व. अ. व. पश्चिम । २. व. वकेसुओपमाणं, व. उ. वकेसुओपमाणं, क. ख. ग. एककेसुओ-

घातकी-वृक्ष एवं उनके परिवार वृक्षोंका निरूपण—

उत्तर - बेव - कुरुमुं, सेत्तेमुं तत्थ भावई - वक्खा ।

चिट्ठे ते गुणणामो, तेण पुढं भावईसंठो ॥२६४०॥

अर्थ :—घातकीखण्डवीपके उत्तरकुरु और देवकुरु क्षेत्रोंमें घातकी ( शीशलेके ) वृक्ष स्थित हैं, इसी कारण इस द्वीपका 'घातकीखण्ड' यह सार्थक नाम है ॥२६४०॥

भावइ - तरुण तार्ण, परिवार - कुमा हवन्ति एकास्ति ।

दीर्घम्मि पंच-सक्खा, सट्ठि - सहस्साणि चउ-सयासीदो ॥२६४१॥

५६०४०० ।

अर्थ :—इस द्वीपमें उन घातकी-वृक्षोंके पांच लाख साठ हजार चारसो प्रत्सी ( ५६०४०० ) परिवारवृक्ष हैं ॥२६४१॥

पियवंसणो 'पहासो, अहिबइदेवा वसन्ति तेम इमे ।

सम्मत्त - रयण - जुत्ता, वर - मूसव - मूसिदायारा ॥२६४२॥

अर्थ :—उन वृक्षोंपर सम्यक्स्वरूपी रत्नसे संयुक्त और उत्तम भूषणोंसे भूषित रूपको धारण करनेवाले प्रियदर्शन और प्रभास नामक दो अधिपति देव निवास करते हैं ॥२६४२॥

आवर - अणावरणं, परिवारादो हवन्ति एवाणं ।

दुगुणा परिवार - सुरा, पुब्बोदिद - वण्णणेहि जुदा ॥२६४३॥

अर्थ :—इन दोनों देवोंके परिवार-देव, आदर और अनादर देवोंके परिवार देवोंकी अपेक्षा दुगुने हैं, जो पूर्वोक्त वर्णनसे संयुक्त हैं ॥२६४३॥

मेरु आदिकोंके विस्तारका निरूपण—

गिरि-भद्रशाल-विजया, वक्खार-विभंगसरि-सुरारण्णा<sup>१</sup> ।

पुब्बावर - विरयारा, वत्तव्वा भावईसंठे ॥२६४४॥

अर्थ :—( अब ) घातकीखण्डमें गिरि ( मेरुपर्वत ), भद्रशालवन, विजय (क्षेत्र), वक्खार-पर्वत, विभंगानदी और देवारण्य इनका पूर्वापर विस्तार कहना चाहिए ॥२६४४॥

एषेसु<sup>१</sup> पत्तेकं, मंदरसेलाण चरणि - पट्टम्मि ।

चउ-अउवि - सय - पमाणं, जोयणया होवि विस्संभो ॥२६४५॥

६४०० ।

अर्थ :—इनमेंसे प्रत्येक मेरुका विस्तार पृथिवीके पृष्ठ-भागपर चौरानव सौ ( ६४०० )

योजन प्रमाण है ॥२६४५॥

पारस्योऽयं :— अथर्वणं श्री सुविदितस्यत श्री अथर्वणं

एकं जोयण - लवणं, सल-सहस्सा य अट्ट-सय-अुवा ।

एवहसरिया भणिवा, विस्संभो भइसालस्स ॥२६४६॥

१०७८७६ ।

अर्थ :—भद्रशालका विस्तार एक लाख सात हजार आठसौ उन्यासी ( १०७८७६ )

योजन प्रमाण कहा गया है ॥२६४६॥

छण्णवावि-जोयण-सया, ति<sup>१</sup>-उत्तरा-अड-हिवा य ति-कलाओ ।

सव्वाणं<sup>२</sup> विजयाणं, पत्तेकं होवि विस्संभो ॥२६४७॥

६६०३ । ३ ।

अर्थ :—सब विजयों ( क्षेत्रों ) में से प्रत्येक क्षेत्रका विस्तार छपानबंसौ तीन योजन और

आठसे भाजित तीन भाग ( ६६०३३ ) प्रमाण है ॥२६४७॥

जोयण-सहस्समेकं, वक्खार - गिरीण होवि वित्तारो ।

अट्ठाइज्ज - सयाणि, विभंग - सरियाण<sup>३</sup> विस्संभो ॥२६४८॥

१००० । २५० ।

अर्थ :—वक्खारपर्वतोंका विस्तार एक हजार योजन प्रमाण है और विभंगनदियोंका विस्तार

अढ़ाईसौ ( २५० ) योजन प्रमाण है ॥२६४८॥

अट्ठावण्ण - सयाणि, चउवाल - अुवाणि जोयणा रुवं ।

कहिवं देवारण्णे, मूवारण्णे वि पत्तेकं ॥२६४९॥

५८४४ ।

१. द. अ. य. तिलसरायाहिवा । २. द. व. अ. य. उ. समवाओ । ३. व. सरिया, ध. क. अ. य.

अर्थ :—देवारण्य और भूतारण्यमेंसे प्रत्येकका विस्तार अष्टावनसौ चवालीस ( ५८४४ )  
योजन प्रमाण कहा गया है ॥२६५०॥

विजयादिकोंका विस्तार निकालनेका विधान—

विजया - वक्लाराणं, विभंगणई-देवरण्य-भद्रशालवनं ।

णिय-णिय-फलैण गुणिषा, कादव्या मेस-फस-जुत्ता ॥२६५०॥

तच्चेय दोब' - वासे, सोहिय एदम्म होदि अं सेसं ।

णिय-णिय-संखा-हरिदं, णिय - णिय - वासाणि जायंते ॥२६५१॥

अर्थ :—विजय, वक्लार, विभंगनदी, देवारण्य और भद्रशालवनको [ इगुसे होन ] अपने-  
अपने फलसे गुणा करके मेसके फलसे युक्त करनेपर जो संख्या उत्पन्न हो उसे इस द्वीपके विस्तारमेंसे  
कम करके शेषमें अपनी-अपनी संख्याका भाग देनेपर अपना-अपना विस्तार प्रमाण प्रकट होता  
है ॥२६५०-२६५१॥

विजय विस्तार—

सोहसु विथारावो, छव्वउ-तिय-छक्क-उ-दु-अंक-कमे ।

सेसं सोलस - भजिदं, विजयं पडि होइ विथारं ॥२६५२॥

२४६३४६ ।

अर्थ :—छह, चार, तीन, छह, चार और दो इस अंक क्रमसे उत्पन्न हुई संख्याको धातकी  
संख्याके विस्तारमेंसे कम करके शेषमें सोलहका भाग देनेपर प्रत्येक विजय ( क्षेत्र ) का विस्तार ज्ञात  
होता है ॥२६५२॥

यथा :—वक्लार यो० ८००० + विभंग १५०० + देवारण्य ११६८८ + भद्रशाल २१५७५८  
+ मेस ६४०० यो० = २४६३४६ यो० । ( ४००००० — २४६३४६ ) ÷ १६ = ६६०३३ यो० ।

वक्लार विस्तार—

विथारावो सोहसु, अंबर-जम-गयण-वोण्णि-जवय-तियं ।

अवसेसं अद्दु - हिये, वक्लार - जगाण विथारो ॥२६५३॥

३६२००० ।

अर्थ :- शून्य, शून्य, शून्य, दो, नौ और तीन, इस अंक क्रमसे उत्पन्न हुई संख्याको घातकी-खण्डके विस्तारमेंसे कम करके शेषमें घाटका भाग देनेपर बकार-पर्वतोंका विस्तार ज्ञात होता है ॥२६५४॥

यथा :- { ४००००० — ( १५३६५४ + १५०० + ११६८८ + २१५७५८ + ६४०० ) } ÷ ८ = १००० योजन ।

विभंग विस्तार—

चउ - लक्खादो सोहसु, अंघर-अभ-पंच-अट्ट-णवय-तियं ।

सेसं छक्क - विहत्तं, विभंग - सरियाण वित्थारं ॥२६५४॥

३६८५०० ।

अर्थ :- शून्य, शून्य, पांच, आठ, नौ और तीन, इस अंक क्रमसे उत्पन्न हुई संख्याको घातकीखण्डके विस्तारमेंसे कम करके शेषमें छहका भाग देनेपर विभंगनदियोंका ( ६६४१६३ यो० ) विस्तार प्राप्त होता है ॥२६५४॥

यथा :- { ४००००० — ( ८००० + १५३६५४ + २१५७५८ + ११६८८ + ६४०० ) } ÷ ६ = ६६४१६३ यो० प्रत्येक विभंगका विस्तार है ।

देवारण्यका विस्तार—

सोहसु चउ-लक्खादो, दु-एक्क-तिय-अट्ट-अट्ट-तियमाणं ।

सेसं दु - हिंहे होवि दु, देवारण्य वित्थारं ॥२६५५॥

३८८३१२ ।

अर्थ :- दो, एक, तीन, आठ, आठ और तीन, इस अंक क्रमसे उत्पन्न हुई ( ३८८३१२ ) संख्याको घातकीखण्डके विस्तार चार साधमेंसे घटाकर शेषमें दो का भाग देनेपर देवारण्य वनोंका विस्तार प्राप्त होता है ॥२६५५॥

यथा :- { ४००००० — ( १५३६५४ + १५०० + २१५७५८ + ६४०० + ८००० ) } ÷ २ = १६४१५६ योजन प्रत्येक देवारण्यका विस्तार ।

भद्रशालवनका विस्तार—

अवणय चउ-लक्खादो, दो-चउ-दु-चवु-अट्ट-एक्क-अंककमे ।

जोयणया अवसेसं, दो भजिहे भद्रशाल - वनं ॥२६५६॥

१८४२४२ ।

अर्थ :—दो, चार, दो, चार, आठ और एक, इस अंक क्रमसे उत्पन्न हुई ( १८४२४२ ) संख्याको धातकीखण्डके (चार लाख) विस्तारमेंसे घटाकर शेषमें दो का भाग देनेपर भद्रशालवनोंका विस्तार ( ६२१२१ योजन ) प्राप्त होता है ॥२६५६॥

यथा :—{ ४००००० — ( १५३६५४ — ११६८८ + १५०० + ६४०० + ८००० ) } ÷ २  
 — ६२१२१ योजन प्रत्येक भद्रशालवनका विस्तार ।

मेरु विस्तार—

खड-लकखादो सोहसु, 'अंबर-राभ-धक्क-गयण-णवय-तियं ।

अंककमे अवसेसं, मेरुगिरिवस्स परिमाणं ॥२६५७॥

३६०६००<sup>२</sup> ।

अर्थ :—शून्य, शून्य, छह, शून्य, नौ और तीन इस अंक क्रमसे उत्पन्न हुई ( ३६०६०० ) संख्याको चार लाखमेंसे कम करनेपर जो शेष रहे उतने ( ९४०० ) योजन प्रमाण मेरुका विस्तार है ॥२६५७॥

यथा :—४००००० — ( १५३६५४ + ८००० + १५०० + ११६८८ + २१५७५८ ) =  
 ६४०० योजन मेरु विस्तार ।

कच्छा और गन्धमालिनी देशका सूची व्यास—

दुगुणम्मि भद्रसाले, अंबरसेलस्स खिवसु विक्खंभं ।

मक्खिम-सूई - सहिवं, सा सूई कच्छ - गन्धमालिणि ॥२६५८॥

अर्थ :—दुगुने भद्रशालवनके विस्तारमें मन्दरपर्वतका विस्तार मिलाकर उसमें मध्यम सूची व्यास मिला देनेपर कच्छा और गन्धमालिनी देशकी सूचीका प्रमाण आता है ॥२६५८॥

एककारस-लक्खाणि, पणवीस - सहस्सं इगि-सयाणि पि ।

अड्ढवण्ण जोयणाणि, कच्छाए<sup>३</sup> सा हवे सूई ॥२६५९॥

११२५१५८ ।

अर्थ :—कच्छादेशकी सूची ग्यारह लाख पच्चीस हजार एकसी मट्टावन ( ११२५१५८ ) योजन प्रमाण है ॥२६५९॥

घषा :—मद्यमासका वि० ( १०७८७६ × २ ) + ६४०० मेरु वि० + ८००००० यो०

मध्यम सूची—११२५१५८ यो० कच्छादेशकी सूची ।

कच्छा देशकी परिधि—

विकसंभस्त य वरगो, वस-गुणिवो करणि वट्टए परिही ।

हु-छ-जम-ग्रह-यज-पण-तिम अंक - कमे तीए परिमाणं ॥२६६०॥

३५५८०६२ ।

अर्थ—विस्तारके वर्गको उसमें गुणित कर उसका वर्गमूल निकालने पर परिधिका

प्रमाण होता है । यहाँ कच्छादेश सम्बन्धी सूचीकी परिधिका प्रमाण अंक-क्रमसे दो, छह, शून्य, आठ, पाँच, पाँच और तीन ( ३५५८०६२ ) योजन है ॥२६६०॥

घषा :— $\sqrt{११२५१५८^२ \times १०}$  = कुछ अधिक ३५५८०६२ यो० परिधि ।

पर्वतरुद्ध क्षेत्रका प्रमाण—

अट्टपरि सहस्ता, वावाल - जुवा म जोयणट्ट - सया ।

एककं लक्खं वोहस - गिरि - रुद्धवसेस - परिमाणं ॥२६६१॥

१७८८४२ ।

अर्थ :—घातकीछप्प स्थित दोनों मेरु सम्बन्धी ( कुलावस एवं इण्वाकर इन ) चौदह पर्वतोंसे रोके हुए क्षेत्रका प्रमाण एक लाख अठत्तर हजार आठसौ ब्यालीस ( १७८८४२ ) योजन ( से कुछ अधिक ) है ॥२६६१॥

विदेह क्षेत्रका आयाम—

सेस - विसुद्धा परिही, चउसदुडीए गुणिज्ज' अवसेसं ।

वो - सय - भारस - भजिदे, अं लद्धं तं विदेह-वोहस' ॥२६६२॥

वस-जोयण-लक्खामि, विस-सहस्सं सयं पि इगिवालं ।

अउसीवि - जुव - सयंसा, विदेह - वोहस - परिमाणं ॥२६६३॥

१०२०१४१ । ३६६ ।

अर्थ :—( कच्छादेशकी ) परिधिप्रमाणमेंसे पर्वतरुद्ध क्षेत्र कम कर देनेपर जो शेष रहे उसको चौंसठसे गुणा करके प्राप्त गुणानफलमें दोसौ बारहका भाग देनेपर जो लब्ध प्राप्त हो उसनी विदेहक्षेत्रकी सम्बाई है । विदेहकी इस सम्बाईका प्रमाण इस सात बीसहजार एकसौ इकतासीस योजन और एक योजनके दोसौ बारह भागोंमेंसे एकसौ पठासी भाग ( १०२०१४१३६६ योजन ) प्रमाण है ॥२६६२-२६६३॥

यथा :—( ३५५०६२ — १७८५४२ )  $\times$  ६४  $\div$  २१२ = १०२०१४१३६६ योजन ।

कच्छादेशकी आदिम सम्बाई—

सीता-गईए 'वासं, सहस्समेवकं च तम्मि 'अवणिज्जं ।

अवसेसद्ध - पमाणं, बीहत्तं कच्छ - विजयस्स ॥२६६४॥

१००० ।

अर्थ :—विदेहकी उस सम्बाईमेंसे एक हजार ( १००० ) योजन प्रमाण सीतानदीका विस्तार कम कर देनेपर जो शेष रहे उसके अर्धभाग प्रमाण कच्छादेशकी ( आदिम ) सम्बाई है ॥२६६४॥

यथा :—( १०२०१४१३६६ — १००० )  $\div$  २ = ५०९५७०६९३ योजन ।

पण-जोधण-सक्खाणि, पण-गउवि-सयाणि 'सत्तरि-बुवाणि ।

बु - सय - कलाओ हंवा, वंक - सक्खेय कच्छस्स ॥२६६५॥

५०९५७० । ३९३ ।

अर्थ :—पाँच लाख नौ हजार पाँचसौ सत्तर योजन और दोसौ भाग अधिक ( ५०९५७०६९३ योजन ) कच्छादेशके त्रियंग्विस्तार ( आदिम सम्बाई ) का प्रमाण है ॥२६६५॥

अपने-अपने स्थानमें अर्धविदेहका विस्तार—

विजयावि-वास-वग्गो, वक्खार - विभंग - वेवरण्णावं ।

वस-गुणिवो जं मूलं, पुह पुह वत्तीस - गुणिवं तं ॥२६६६॥

बारस-बुव-बु-सएहिं, भजिबुणं कच्छ - हंइ - मेलिविदं ।

तत्थे शिय-णिय - ट्ठाणे, विदेह - अट्ठस्स विक्खंभो ॥२६६७॥



अर्थ :—कच्छादि विजय, वक्षार, विभंगनदी और देवारण्य, इनके विस्तारके वर्गको दससे गुणित कर वर्गमूल निकालना, अपने-अपने उस वर्गमूलको पृथक्-पृथक् बत्तीससे गुणा करके प्राप्त लब्धमें दोसी बारहुका भाग देनेपर जो प्राप्त हो उसे कच्छादेयके विस्तारमें मिला देनेपर उत्पन्न राशि प्रमाण अपने-अपने स्थानमें अर्धविदेहका विस्तार होता है ॥२६६६-२६६७॥

परिचरितोक्त - क्षेत्रकी वृद्धिका प्रमाण—

चत्वारि सहस्राणि, पण-सय-धत्तसीदि ज्ञेयणां पि ।  
परिचरितो<sup>१</sup> विजयाणं, नादक्या भादईसंडे ॥२६६८॥

४५८४ ।

अर्थ :—घातकीलण्डमें क्षेत्रोंकी वृद्धि चार हजार पाँचसौ बीरसी ( ४५८४ ) योजन प्रमाण जाननी चाहिए ॥२६६८॥

यथा :—[ {  $\sqrt{(६६०३६)^२ \times १०}$  }  $\times ३२$  ]  $\div २१२ = ४५८४$  यो० क्षेत्रोंमें वृद्धिका प्रमाण ।

वक्षारपर्वतोंका वृद्धिका प्रमाण—

चत्वारि ज्ञेयणां, सयाणि सप्तसरीय जुताणि ।  
सत्तिठ कलाओ तस्सि, वक्षार - गिरीण परिचरितो ॥२६६९॥

४७७१.१९ ।

अर्थ :—इस द्वीपमें वक्षार-पर्वतोंकी वृद्धिका प्रमाण चारसौ सत्तर योजन और साठ कला अधिक ( ४७७१.१९ ) है ॥२६६९॥

यथा :—[ {  $\sqrt{(१०००)^२ \times १०}$  }  $\times ३२$  ]  $\div २१२ = ४७७१.१९$  यो० व० वृद्धि प्रमाण ।

विभंग नदियोंमें वृद्धिका प्रमाण—

एककोण - बीस-सहिर्ष, एक-सय ज्ञेयणाणि भागा य ।  
बावण्णा ठाणेसु, विभङ्ग - सरियाण परिचरितो ॥२६७०॥

११६ । २१२ ।

अर्थ :—विमंगनदियोंके स्थानोंमें वृद्धिका प्रमाण एकसौ तन्नीस योजन और बावन भाग ( ११६६ $\frac{१}{२}$  योजन ) प्रमाण है ॥२६७०॥

यथा :—[ {  $\sqrt{(२५०)^२ \times १०}$  } ३२ ]  $\div$  २१२ = ११६६ $\frac{१}{२}$  योजन वृद्धिका प्रमाण—

देवारण्यके स्थानोंमें वृद्धिका प्रमाण—

सत्तावीस - सयाणं, उज्जवी जीयन्ताणि भागा य ।

बाणउवी नायव्या, देवारण्यस्त परिवद्धी ॥२६७१॥  
अर्थः—सत्तावीस भागोंमें उज्जवी जीयन्ताणि भागोंमें बाणउवी नायव्या, देवारण्यस्त परिवद्धी ॥२६७१॥  
२७८६ १  $\frac{१}{२}$  ।

अर्थ :—देवारण्यको वृद्धिका प्रमाण दो हजार सातसौ तन्नीस योजन और बावन भाग ( २७८६ $\frac{१}{२}$  योजन ) है ॥२६७१॥

[ {  $\sqrt{(२५०)^२ \times १०}$  }  $\times$  ३२ ]  $\div$  २१२ = २७८६ $\frac{१}{२}$  योजन ।

विजयादिकोंकी आदि, मध्यम और अन्तिम लम्बाई जाननेका उपाय—

विजयादीनां आदिम, वोहे वद्धो सिवेज्ज सो होवि ।

मज्झिम-वीहो मज्झिम, वोहे तं सिवसु अंत-वीहो सो ॥२६७२॥

अर्थ :—क्षेत्रादिकोंकी आदिम लम्बाईमें वृद्धिका प्रमाण मिला देनेपर मध्यम लम्बाई होती है और मध्यम लम्बाईमें वृद्धि-प्रमाण मिला देनेपर उनकी अन्तिम लम्बाई प्राप्त होती है ॥२६७२॥

खेसादीनां अन्तिम - वोह - पमाणं च होवि जं जत्थं ।

तं जि पमाणं अग्गिम - वक्खारावीसु आदिस्सं ॥२६७३॥

अर्थ :—क्षेत्रादिकोंकी अन्तिम लम्बाईका प्रमाण जहाँ जो हो, वही उससे आगेके वक्खारादिकोंकी आदिम लम्बाईका प्रमाण होता है ॥२६७३॥

कच्छा और गन्धमालिनीकी आदिम और मध्यम लम्बाई—

अभ-सग-पण-णव-अभ-पण अंक-कमे दु-सय भाग-वीहत्ता ।

कच्छाए गंधमालिनि, आवीए परिहि रुवेण ॥२६७४॥

**अर्थ :**—शून्य, सात, पाँच, नौ, पाँच, सात और शून्य, इस अंक क्रमसे उत्पन्न हुई संख्या और दोसौ भाग अधिक अर्थात् ५०६५७०३९९ योजन कच्छा एवं गन्धमालिनी देशकी परिकल्पसे आदिम लम्बाई है ॥२६७४॥

चउ-पंच-एक-चउ-इगि पंचय अंसा तहेय परोक्कं ।

पुग्वावर - मेरुणं, पुग्वावर - विजय - मरुभ - दीहत् ॥२६७५॥

५१४१५४ । ३९९ ।

**अर्थ :**—पूर्वदिशागत ( विजय ) मेरुसे सम्बन्धित पूर्व दिशागत कच्छा और पश्चिम दिशागत (अबल) मेरुसे सम्बन्धित पश्चिम दिशागत गन्धमालिनी देशोंमेंसे प्रत्येक देशकी मध्यम लम्बाई ५१४१५४३९९ योजन-प्रमाण है ॥२६७५॥

$५०६५७०३९९ + ४५८४ = ५१४१५४३९९$  योजन है ।

कच्छादि देशोंकी अन्तिम और दो बक्षारोंकी आदिम लम्बाई—

अठ-तिय-सग-अठ-इगि-पण बु-सय-कला कच्छ-गंधमालिमिए ।

अंतहो बक्षारय, गिरीण आविल्ल दीहत् ॥२६७६॥

५१८७३८ । ३९९ ।

**अर्थ :**—आठ, तीन, सात, आठ, एक और पाँच, इस अंक क्रमसे उत्पन्न हुई संख्या प्रमाण योजन और दोसौ भाग अधिक कच्छा एवं गन्धमालिनीकी अन्तिम तथा (चित्रकूट और सुरमाल इन) दो बक्षार पर्वतोंकी आदिम लम्बाई ( ५१८७३८३९९ यो० ) है ॥२६७६॥

$५१४१५४३९९ + ४५८४ = ५१८७३८३९९$  योजन ।

दोनों बक्षारोंकी मध्यम लम्बाई—

छक्केवक होणिण नव इगि-पण भाग-अठवाल-चिल्ल-कूडम्मि ।

तह देव - पळयम्मि य, परोक्कं मरुभ - दीहत् ॥२६७७॥

५१६२१६ । २५६ ।

**अर्थ :**—चित्रकूट और देव ( सुर ) माल पर्वतोंमेंसे प्रत्येक पर्वतकी मध्यम लम्बाई छह, एक, दो, नौ, एक और पाँच, इस अंक क्रमसे उत्पन्न संख्या प्रमाण और अड़तालीस भाग अधिक ( ५१६२१६२५६ योजन है ॥२६७७॥

$५१८७३८३९९ + ४७७१६ = ५१६२१६२५६$  योजन ।

दोनों बंदारोंकी अन्तिम और सुकच्छादि दो देशोंकी आदिम लम्बाई—

तिय-पव-छप्पण-इगि-पण अंसा लववण-बु-हुव दोहसा ।

दो - बरखार - गिरीज, अन्तिमबादो सुकच्छ - गंविलए ॥२६७८॥

५१६६६३ । १९६ ।

अर्थ :- ( उपर्युक्त ) दोनों बंदार पर्वतोंकी अन्तिम और सुकच्छा एवं गन्धिसा देशकी आदिम लम्बाई तीन, नौ, छह, नौ, एक और पाँच, इस अंक क्रमसे जो संख्या उत्पन्न हो उससे एकसौ आठ भाग अधिक ( ५१६६६३१९६ योजन ) है ॥२६७८॥

$५१६२१६३१९ + ४७७५१२ = ५१६६६३३९६$  योजन ।

दोनों क्षेत्रोंकी मध्यम लम्बाई—

सत्त-सग-बोणि-खल-दुग-पण भागा अट्ठ-ग्रहिय-सयमेसा ।

मणिभल्लय - दोहसा, विजयाए सुकच्छ - गंविलए ॥२६७९॥

५२४२७७ । १९६ ।

अर्थ :- सुकच्छा और गन्धिसा नामक दोनों क्षेत्रोंकी मध्यम लम्बाई सात, सात, दो, चार, दो और पाँच, इस अंक क्रमसे जो संख्या उत्पन्न हो उससे एकसौ आठ भाग अधिक ( ५२४२७७१९६ योजन प्रमाण ) है ॥२६७९॥

$५१६६६३१९६ + ४५८४ = ५२४२७७१९६$  योजन ।

दोनों क्षेत्रोंकी अन्तिम और दो विभंग नदियोंकी आदिम लम्बाई—

एक-छ-अट्ठ-बु-पण अंसा तं खेय सुकच्छ - गंविलए ।

बहुवदो उम्मिमालिनि, अंतं आबिल्ल - दोहसा ॥२६८०॥

५२८८६१ । १९६ ।

अर्थ :- उन सुकच्छा और गन्धिसा देशोंकी अन्तिम तथा बहुवती और उम्मिमालिनी विभंग नदियोंकी आदिम लम्बाई एक, छह, आठ, आठ, दो और पाँच इस अंक क्रमसे जो संख्या उत्पन्न हो उससे एकसौ आठ भाग अधिक ( ५२८८६११९६ योजन प्रमाण ) है ॥२६८०॥

$५२४२७७१९६ + ४५८४ = ५२८८६११९६$  योजन ।

मन्तिमं नदियोकी मध्यम लम्बाई—

अंकर-अट्ट-णवट्ट-वु-पंच य अंक - एकमेव अंसा य ।

विगुणिय सीदी बोण्णं, जवीण मज्झिहल्ल - बीहलं ॥२६८१॥

५२८६८० । ३३३ ।

अर्थ :—द्रवती और ऊर्मिमासिनी विभंग नदियोंकी मध्यम लम्बाई शून्य, आठ, नौ, आठ, दो और पाँच इस अंक क्रमसे जो संख्या उत्पन्न हो उससे एकसौ साठ भाग अधिक ( ५२८६८०३३३ यो० ) है ॥२६८१॥

$५२८६६३३३ + ११९५५ = ५२८६८०३३३$  योजन ।

दोनों नदियोंकी अन्तिम और दो देशोंकी आदिम लम्बाई—

लं-णम-इगि-णव-वुण-एण बोण्णि जईणं ह्वेइ पत्तेकं ।

महकच्छ - सुवण्णए, अंतं आदिहल्ल - बीहलं ॥२६८२॥

५२६१०० ।

अर्थ :—दोनों विभंगा नदियोंकी अन्तिम तथा महाकच्छा और सुवल्गु ( सुगन्धा ) नामक दोनों देशोंमेंसे प्रत्येक देशकी आदिम लम्बाई शून्य, शून्य, एक, नौ, दो और पाँच इस क्रमसे जो संख्या उत्पन्न हो उतने ( ५२६१०० ) योजन प्रमाण है ॥२६८२॥

$५२८६८०३३३ + ११९५५ = ५२६१००$  योजन ।

दोनों देशोंकी मध्यम लम्बाई—

अउ-अट्ट-छक्क-तिय-तिय-एण अंक-कमेव ओयणाणि पुठं ।

महकच्छ - सुवण्णए, बीहलं मज्झिम - एएसे ॥२६८३॥

५३३६८४ ।

अर्थ :—महाकच्छा और सुवल्गु (सुगन्धा) देशोंकी मध्यम लम्बाई चार, आठ, छह, तीन, तीन और पाँच इस अंक क्रमसे जो संख्या निमित्त हो उतने ( ५३३६८४ ) योजन प्रमाण है ॥२६८३॥

$५२६१०० + ४५८४ = ५३३६८४$  योजन ।

दोनों देशोंकी अन्तिम और दोनों पर्वतोंकी आदिम लम्बाई—

अट्ट-छ-कु-अट्ट-तिय-पण दोहूं विजयाण पढम - कूडस्स ।

तह सूर - पणववाए, अंतं आबिल्ल - दोहूत्ता ॥२६८४॥

५३८२६८ ।

अर्थ :—उपस्थित दोनों देशोंकी अन्तिम और दोनों पर्वतोंकी आदिम लम्बाई आठ, छह, दो, आठ, तीन और पाँच इस अंक क्रमसे जो संख्या निमित्त हो उसने ( ५३८२६८ ) योजन प्रमाण है ॥२६८४॥

$५३८६८४ + ४५८४ = ५३८२६८$  योजन ।

दोनों वक्षार-पर्वतोंकी मध्यम लम्बाई—

पण-वउ-सगहु-तिय - पण - भागा सट्टी हवेदि पत्तेकं ।

वर - पत्तम - कूड सह सूर - पणवए मउभ - दोहूत्ता ॥२६८५॥

५३८७४५ । ३१२ ।

अर्थ :—उत्तम पश्चिम और सूर्यपर्वतकी मध्यम लम्बाई पाँच, चार, सात, आठ, तीन और पाँच इस अंक क्रमसे जो संख्या निमित्त हो उससे साठ भाग अधिक ( ५३८७४५.३१२ यो० ) है ॥२६८५॥

$५३८२६८ + ४७७११२ = ५३८७४५३१२$  योजन ।

दोनों पर्वतोंकी अन्तिम और दोनों देशों की आदिम लम्बाई—

दो-दो-दो-पण-तिय - पण अंसा बीसुत्तरं सयं दोहू ।

अंतंआसु गिरीसुं, आदी वग्गुए कळ्ळकावविए ॥२६८६॥

५३८२२२ । ३३६ ।

अर्थ :—उपस्थित दोनों पर्वतोंकी अन्तिम और वस्तु ( गाथा ) एवं कळ्ळकावती देशोंकी आदिम लम्बाई दो, दो, दो, दो, तीन और पाँच इस अंक क्रमसे जो संख्या उत्पन्न हो उससे एकसी बीस भाग अधिक ( ५३८२२२.३३६ योजन प्रमाण ) है ॥२६८६॥

$५३८७४५ + ४७७११२ = ५३८२२२३३६$  योजन ।

दोनों देशोंकी मध्यम लम्बाई—

छण्णम-अट्ट-तिय-वउ-पण अंक-कमे ओयएणिए पुम्बुत्ता ।

अंसा मज्झिम दोहूं, वग्गुए कळ्ळकावविए ॥२६८७॥

५४३८०६ । ३२६ ।

अर्थ :—वस्तु ( गन्धा ) और कच्छकावती देशकी मध्यम लम्बाई सह, शून्य, आठ, तीन, चार और पाँच इस अंक क्रमसे जो संख्या उत्पन्न हो उतने योजन और पूर्वोक्त एकसौ बीस भाग अधिक ( ५४३८०६३११ योजन प्रमाण ) है ॥२६८७॥

$$५३६२२२३३३ + ४५८४ = ५४३८०६३११ योजन ।$$

दोनों देशोंकी अन्तिम और दोनों नदियोंकी आदिम लम्बाई—

गभ-राव-सिय-अड-चउ-पण पुव्वत्तंसाणि बोसु बिअएसु ।

गह्वरिए फेणमालिणि, अ तिम - आदिस्स - बाहुरी ॥२६८८॥

$$५४८३६० । ३३३ ।$$

अर्थ :—वस्तु ( गन्धा ) और कच्छकावती देशोंकी अन्तिम तथा गह्वरी एवं फेणमालिनी नामक विभंगदियोंकी आदिम लम्बाई शून्य, नौ, तीन, आठ, चार और पाँच, इस अंक क्रमसे जो संख्या उत्पन्न हो उतने योजन और पूर्वोक्त एकसौ बीस भाग अधिक ( ५४८३६०३३३ योजन प्रमाण ) है ॥२६८८॥

$$५४३८०६३११ + ४५८४ = ५४८३६०३३३ योजन ।$$

दोनों नदियोंकी मध्यम लम्बाई—

गव-जभ-पण-अड-चउ - पण भागा बाहुरीसिबं रोहं ।

मकिभरुल - गह्वरीए, तह सेव म फेणमालिणिए ॥२६८९॥

$$५४८५०६ । ३३३ ।$$

अर्थ :—गह्वरी और फेणमालिनी नदियोंकी मध्यम लम्बाई नौ, शून्य, पाँच, आठ, चार और पाँच इस अंक क्रमसे जो संख्या निर्मित हो उतने योजन और एकसौ बहत्तर भाग अधिक ( ५४८५०६३३३ योजन प्रमाण ) है ॥२६८९॥

$$५४८३६०३३३ + ११६२९३ = ५४८५०६३३३ योजन ।$$

दोनों नदियोंकी अन्तिम तथा दोनों देशोंकी आदिम लम्बाई—

गव-बो-छ-अड-चउ-पण अंसा बारस विभंग-सरियाणं ।

अंतिस्सय - बाहुरी, आदी आदस्स - कप्पकावविए ॥२६९०॥

$$५४८६२६ । ३३३ ।$$

अर्थ :—उपर्युक्त दोनों विभंगनदियोंकी अन्तिम और आवर्त तथा वप्रकावती देशोंकी आदिम लम्बाई नौ, दो, छह, आठ, चार और पाँच, इस अंक क्रमसे जो संख्या निर्मित हो उतने योजन और बारह भाग अधिक (  $५४८६२६३३$  योजन प्रमाण ) है ॥२६६०॥

$$५४८६०३३३ + ११६३३३ = ५४८६२६३३ योजन ।$$

दोनों देशोंकी मध्यम लम्बाई—

सिय-इगि-हु-सि-पण-पणय, अंक-क्रमे जोयणाणि अंसा य ।

बारसमेरा मजिभ्रम - बीहू आवत्त - वप्पकावविण् ॥२६६१॥

$$५५३२१३ । ३३३ ।$$

अर्थ :—आवर्त और वप्रकावती देशोंकी मध्यम लम्बाई तीन, एक, दो, तीन, पाँच, और पाँच इस अंक क्रमसे जो संख्या निर्मित हो उतने योजन और बारह भाग अधिक (  $५५३२१३३३$  योजन प्रमाण ) है ॥२६६१॥

$$५४८६२६३३ + ४५८४ = ५५३२१३३३ योजन ।$$

दोनों देशोंकी अन्तिम और दो वक्षार-पर्वतोंकी आदिम लम्बाई—

सग-गव-सग-सग-पण-पण, अंसा ता' एव बीसु विजयाणं ।

अंतिलसय - बीहूरा, आबिरुल एल्लिण - एण - बरे ॥२६६२॥

$$५५७७६७ । ३३३ ।$$

अर्थ :—सात, नौ, सात, सात, पाँच और पाँच इस अंक क्रमसे जो संख्या निर्मित हो उतने योजन और बारह भाग अधिक अर्थात्  $५५७७६७३३$  योजन उपर्युक्त दोनों देशोंकी अन्तिम लम्बाई तथा इतनी (  $५५७७६७३३$  योजन ) ही नलिन एवं नागपर्वतकी आदिम लम्बाई है ॥२६६२॥

$$५५३२१३३३ + ४५८४ = ५५७७६७३३ योजन ।$$

दोनों वक्षार-पर्वतोंकी मध्यम लम्बाई—

चउ-सत्त-बीणि-अहुय-पण-पण-अंक - कक्रमेण अंसाइ ।

बावसरि बीहूरा, मजिभ्रस' नसिण-कूड-सागवरे ॥२६६३॥

$$५५८२७४ । ३३३ ।$$



अर्थ :—नलिम और नाग पर्वतकी मध्यम लम्बाई चार, सात, दश, आठ, पाँच और पाँच, इस अंक क्रमसे जो संख्या उत्पन्न हो उतने योजन और बहुतर भाग अधिक ( ५५८२७४९३ योजन प्रमाण ) है ॥२६६३॥

$$५२७७९७३३ + ४७७२१३ = ५५८२७४९३ योजन ।$$

दोनों वक्षारोंकी अन्तिम और दो देशोंकी आदिम लम्बाई—

इगि-पण-सग-अड-पण-पण भागा वत्तीस-अहिय-सय दोहं ।

दोसु गिरीसु अंतिस्लावित्सं दोसु विजयानं ॥२६६४॥

$$५५८७५१ । ३३३ ।$$

अर्थ :—उपर्युक्त दोनों वक्षार पर्वतोंकी अन्तिम तथा लांगलावर्त और महावप्रा देशोंकी आदिम लम्बाई एक, पाँच, सात, आठ, पाँच और पाँच इस अंक क्रमसे निर्मित संख्या प्रमाण तथा एकसौ वत्तीस भाग अधिक ( ५५८७५१३३३ योजन प्रमाण ) है ॥२६६४॥

$$५५८२७४९३ + ४७७२१३ = ५५८७५१३३३ योजन ।$$

दोनों देशोंकी मध्यम लम्बाई—

पण-ति-ति - तिय - छप्पणयं अंसा ता एव संगलावत्ते ।

तह महबप्पे विजए, परोक्क<sup>१</sup> मज्झ - दोहसं ॥२६६५॥

$$५६३३३५ । ३३३ ।$$

अर्थ :—पाँच, तीन, तीन, तीन, छह और पाँच इस अंक क्रमसे जो संख्या निर्मित हो उतने योजन और पूर्वोक्त एकसौ वत्तीस भाग अधिक ( ५६३३३५३३३ योजन प्रमाण ) लांगलावर्त एवं महावप्रा देशोंमेंसे प्रत्येककी मध्यम लम्बाई है ॥२६६५॥

$$५५८७५१३३३ + ४५८४ = ५६३३३५३३३ योजन ।$$

दोनों देशोंकी अन्तिम और दो विभंगनदियोंकी आदिम लम्बाई—

जव-इगि-जव-सग-छप्पण भागा ता एव दोसु विजयानं ।

अंतिस्लय - दोहसं, आदिस्सं दो - विभंग - सरियाणं ॥२६६६॥

$$५६७६१६ । ३३३ ।$$

१. व. ज. य. तहबप्पे । २. द. व. क. ज. य. उ. संवत्तंक्कं मज्झिमबोवुत्तं । ३. द. ज. सरियाणं ।

अर्थ :—दोनों देशोंकी अन्तिम और गम्भीरमालिनी एवं पंकवती नामक दो विभंग नदियोंकी प्रादिम लम्बाई नौ, एक, नौ, सात, छह और पाँच इस अंक क्रमसे जो संख्या उत्पन्न हो उतने योजन और पूर्वोक्त एकसौ बत्तीस भाग अधिक ( ५६७६१६३३३ योजन प्रमाण ) है ॥२६६६॥

$$५६३३३५३३३ + ४५ = ५६७६१६३३३ योजन ।$$

दोनों विभंग नदियोंकी मध्यम लम्बाई—

अह-तिव-जभ-अह-छप्पण अंसा चउसीदि-अहिय-सयमेसं ।

गंभीरमालिणीए, मणिभूतल पंकवदिगाए ॥२६६७॥

$$५६००३० । ३६३ ।$$

अर्थ :—गम्भीरमालिनी और पंकवती नदियोंकी मध्यम लम्बाई आठ, तीन, शून्य, आठ, छह और पाँच इस अंक क्रमसे उत्पन्न हुई संख्यासे एकसौ बीसवीं भाग अधिक ( ५६००३०३६३ योजन प्रमाण ) है ॥२६६७॥

$$५६७६१६३३३ \div ११६३३३ = ५६००३०३६३ योजन ।$$

दोनों नदियोंकी अन्तिम और दो देशोंकी प्रादिम लम्बाई—

अह-पण-इगि-अह-छप्पण अंसा चउसीसमेस - बीहत्त ।

दोण्णं पदीण अंतं, प्रादिस्तं बीसु विजयाणं ॥२६६८॥

$$५६८१५० । ३६३ ।$$

अर्थ :—उपर्युक्त दोनों नदियोंकी अन्तिम तथा पुष्कला एवं सुवशा देशोंमेंसे प्रत्येककी प्रादिम लम्बाई आठ, पाँच, एक, आठ, छह और पाँच इस अंक क्रमसे जो संख्या उत्पन्न हो उतने योजन और बीसवीं भाग अधिक ( ५६८१५०३६३ योजन प्रमाण ) है ॥२६६८॥

$$५६००३०३६३ + ११६३३३ = ५६८१५०३६३ योजन ।$$

दोनों देशोंकी मध्यम लम्बाई—

हु-जउ-सग-दोण्णि-सग-पण अंक-कमे अंसमेव पुब्बुल ।

मणिभूतलय - बीहत्त, पोकलल - विजए सुक्क्याए ॥२६६९॥

$$५७२७४२ । ३६३ ।$$

अर्थ :—पुष्कला उखा खुवपा हो जेको मध्यम लम्बाई ती, सात और पाँच इस अंक क्रमसे जो संख्या उत्पन्न हो उतने योजन और पूर्वोक्त चौबीस भाग अधिक ( ५७२७४२३ $\frac{१}{२}$  योजन प्रमाण ) है ॥२६६६॥

$$५६=१५८३ $\frac{१}{२}$ +४५८४=५७२७४२३ $\frac{१}{२}$  योजन ।$$

दोनों क्षेत्रोंकी अन्तिम और दो बक्षार पर्वतोंकी आदिम लम्बाई—

छ-हो-सिय-सग-सग-पण, अंसा ता एक अंत - दोहस ।

कमसो दो - विजयाण, आबिन्ल एकसेल-बंदणो ॥२७००॥

$$५७७३२६ । ३३ $\frac{१}{२}$  ।$$

अर्थ :—क्रमशः दोनों क्षेत्रोंकी अन्तिम तथा एकसेल चन्द्रनग नामक बक्षार पर्वतकी आदिम लम्बाई छह, दो तीन, सात, सात और पाँच इस अंक क्रमसे जो संख्या उत्पन्न हो उतने और चौबीस भाग हो अधिक ( ५७७३२६३ $\frac{१}{२}$  योजन प्रमाण ) है ॥२७००॥

$$५७२७४२३ $\frac{१}{२}$ +४५८४=५७७३२६३ $\frac{१}{२}$  योजन ।$$

दोनों बक्षार पर्वतोंकी मध्यम लम्बाई—

तिय-णभ-अड-सग-सग-पण, भाणा बलसोदिमेस पल्लेक ।

मजिभरुलय - दोहस, होवि पुई एकसेल - बंदणो ॥२७०१॥

$$५७७८०३ । ६६ $\frac{१}{२}$  ।$$

अर्थ :—एक सेल और चन्द्रनग नामक बक्षार-पर्वतमेंसे प्रत्येककी मध्यम लम्बाई तीन, शून्य, आठ, सात, सात और पाँच इस अंक क्रमसे निर्मित जो संख्या है उतने योजन और चौरासी भाग अधिक ( ५७७८०३६६ $\frac{१}{२}$  योजन प्रमाण ) है ॥२७०१॥

$$५७७३२६३ $\frac{१}{२}$ +४७७ $\frac{१}{२}$ =५७७८०३६६ $\frac{१}{२}$  योजन ।$$

दोनों पर्वतोंकी अन्तिम तथा दो देशोंकी आदिम लम्बाई—

णभ-अड-हु-अहु-सग-पण, अंसा बारस-कवी हु बलसाणे ।

दोह' दोसु गिरीज, आवी बप्पाए पोक्कलाबिए ॥२७०२॥

$$५७८२८० । ३४ $\frac{१}{२}$  ।$$

अर्थ :—दोनों बक्षार-पर्वतोंकी अन्तिम और वप्रा एवं पुष्कलावती क्षेत्रकी आदिम सम्बाई शून्य, आठ, दो, आठ, सात और पाँच इस अंक क्रमसे जो संख्या उत्पन्न हो उतने योजन और बारहके वर्ग अर्थात् एकसौ चवालीस भाग अधिक ( ५७८२८०३११३ योजन प्रमाण ) है ॥२७०२॥

$$५७७८०३११३ + ४७७१११ = ५७८२८०३११३ योजन ।$$

दोनों देशोंकी मध्यम सम्बाई—

चउ-छकहु-बु - अठ, पाँच य अंसा तहेव परोवकं ।

मजिभस्तं बीहसं, बप्पाए पोवसलावविण् ॥२७०३॥

$$५८९८६४ । ३१३ ।$$

अर्थ :—वप्रा और पुष्कलावती क्षेत्रमेंसे प्रत्येककी मध्यम सम्बाई चार, छह, आठ, दो, आठ और पाँच इस अंक क्रमसे जो संख्या उत्पन्न हो उतने योजन एवं एकसौ चवालीस भाग अधिक ( ५८२८६४३१३ योजन प्रमाण ) है ॥२७०३॥

$$५७८२८०३११३ + ४४८४ = ५८२८६४३१३ योजन ।$$

दोनों देशोंकी अन्तिम और भूतारण्य-देवारण्यकी आदिम सम्बाई—

अठ-चउ-चउ-सय-अठ-पण, अंसा ते वेव पोवसलावविण् ।

बप्पाए अंस - बीहं, आविस्तं भूव - देवरण्णाणं ॥२७०४॥

$$५८७४४८ । ३१३ ।$$

अर्थ :—पुष्कलावती और वप्रा क्षेत्रकी अन्तिम तथा भूतारण्य एवं देवारण्यकी आदिम सम्बाई आठ, चार, चार, सात, आठ और पाँच इस अंक क्रमसे निर्मित संख्यासे एकसौ चवालीस भाग अधिक ( ५८७४४८३१३ योजन प्रमाण ) है ॥२७०४॥

$$५८२८६४३१३ + ४४८४ = ५८७४४८३१३ योजन ।$$

दोनों बनोंकी मध्यम सम्बाई—

अहु-तिथ-बीणि-अंबर-एव-पण-अंक-ककमेण चउवीसा ।

भागा मजिभम - बीहं, पत्तेवकं वेव - भूवरण्णाणं ॥२७०५॥

$$५६०२३८ । ३१३ ।$$

अर्थ :—देवारण्य और भूतारण्यमेंसे प्रत्येक वनकी मध्यम लम्बाई आठ, तीन, दो, शून्य, नौ और पाँच इस अंक क्रमसे जो संख्या उत्पन्न हो उतने योजन और चौबीस भाग अधिक ( ५६०२३८३ $\frac{१}{२}$  योजन प्रमाण ) है ॥२७०५॥

$$५८७४४८३ $\frac{१}{२}$  + २७८६३ $\frac{१}{२}$  = ५६०२३८३ $\frac{१}{२}$  योजन ।$$

दोनों वनोंकी अन्तिम लम्बाई—

सप्त-द्व-अंबर-तिय-गव-यंघ य अंसाय - सोल-सहिय-सयं ।

पत्तेकं अंतिल्लं, दीहत् वेध - नूवरण्णान् ॥२७०६॥

$$५६३०२७ । ३३३ ।$$

अर्थ :—देवारण्य और भूतारण्यकी अन्तिम लम्बाई सात, दो, शून्य, तीन, नौ और पाँच, इस अंक क्रमसे जो संख्या उत्पन्न हो उतने योजन और एकसौ सोलह भाग अधिक ( ५६३०२७३ $\frac{३}{४}$  योजन प्रमाण ) है ॥२७०६॥

$$५६०२३८३ $\frac{१}{२}$  + २७८६३ $\frac{१}{२}$  = ५६३०२७३ $\frac{३}{४}$  योजन ।$$

मंगलावती आदि देशोंके प्रमाणकी सूचना—

कच्छादिप्यमुहाणं, तिविह - विजय्यं विक्रियं तथ्यं ।

विजयाय मंगलावति - पमुहाए कमेण वत्तण्णं ॥२७०७॥

अर्थ :—( इसप्रकार ) सब कच्छादिक देशोंकी लम्बाई तीन प्रकारसे कही गई है । अत्र क्रमशः मंगलावती आदि देशोंकी लम्बाई कही जाती है ॥२७०७॥

इच्छित क्षेत्रोंकी लम्बाईका प्रमाण—

कच्छादिसु विजयाणं, आदिम-मज्झिहस-वरिम-दीहत् ।

विजयद्द - दंढमवज्जिम, अद्द - कवे तत्स दीहत् ॥२७०८॥

अर्थ :—कच्छादिक क्षेत्रोंकी आदिम, मध्यम और अन्तिम लम्बाईमेंसे विजयाणंके विस्तारको घटाकर शेषको आधा करने पर ( इच्छित क्षेत्रों ) उनकी लम्बाईका प्रमाण प्राप्त होता है ॥२७०८॥

पयासे मंगलावती देश तककी सूचीका प्रमाण प्राप्त करनेकी विधि—

सोहसु सज्जिहम - सूई, मेरुगिरि दुगुण-भद्रसाल-वर्ण ।

सा' सूई पम्मादो - परियंत मंगलावति ॥२७०६॥

वर्ण :—घातकी छण्डकी मध्यसूचीमेंसे मेरुपर्वत और दुगुने भद्रसाल-वनके विस्तारको घटा देनेपर जो शेष बचे वह पयासे मंगलावती देश तककी सूची होती है ॥२७०६॥

$६००००० - \{ ६४०० + ( १०७८७६ \times २ ) \} = ६७४८४२$  योजन सूची ।

सूची एवं परिधिका प्रमाण—

बो-चउ-अड-चउ-सग - छज्जोयणपाणि कमेण तं वगं ।

वस-गुण-मूलं परिही, अड-तिप-गुण-चउ-ति-एक-वुणं ॥२७०७॥

सूई ६७४८४२ । परि २१३४०३८ ।

वर्ण :—दो, चार, आठ, बार, सात और छह, इस अंक क्रमसे जो संख्या उत्पन्न हो उतने ( ६७४८४२ ) योजन सूची है । इस सूची-प्रमाणका वर्ग करके उसको दससे गुणा करनेपर जो प्राप्त हो उसका वर्गमूल निकालने पर घातकीछण्डकी उपर्युक्त मध्यम सूचीकी परिधिका प्रमाण होता है, जो क्रमशः आठ, तीन, शून्य, चार, तीन एक और दो अंक रूप ( २१३४०३८ यो० ) है ॥२७०७॥

$\sqrt{६७४८४२^२ \times १०} = ( \text{कुछ कम} ) २१३४०३८$  योजन परिधि ।

विदेह क्षेत्रकी लम्बाई—

सेल - विसुद्धो परिही, चउसहोहि गुणेज्ज अवसेसं ।

बारस - बो - सय - भजिदे, जं लद्धं तं विदेह-बोहसं ॥२७११॥

वर्ण :—इस परिधिप्रमाणमेंसे पर्वतराष्ट्र क्षेत्र कम करनेपर जो शेष रहे उसे चौंसठसे गुणित कर दोसौ बारहका भाग देनेपर जो लब्ध आवे उतनी विदेहक्षेत्रकी लम्बाई है ॥२७११॥

सग-चउ-बो-जभ-जव-पण, भागा बो-गुणिव-जउदि बीहरां ।

पुण्यवर - विदेहाणं, सामीये भद्रसाल - वर्ण ॥२७१२॥

४६०२४७ । ३९९ ।

अर्थ :—मंगलावती देशकी पञ्चाली विदेहकी उत्कृष्ट लम्बाई सात, चार, दो, शून्य, नौ और पाँच इस अंक क्रमसे जो संख्या उत्पन्न हो उतने योजन और एकसौ अस्सी भाग अधिक ( ५६०२४७३६३ योजन प्रमाण ) है ॥२७१२॥

$$( २१३४०३८ - १७८८४२९ ) \times ६४ \div २१२ = ५६०२४७३६३ \text{ यो० } ।$$

पश्चा और मंगलावती देशोंकी उत्कृष्ट लम्बाई—

तस्मि सहस्रं सोह्रिय, अष्ट - कदेरां बिहीन - बीहसं ।

उचकस्सं पम्माए, तह्वेय मंगलावदिए ॥२७१३॥

अर्थ :—विदेह क्षेत्रकी ( उस ) लम्बाईमेंसे एक हजार योजन ( सौतोदाका विस्तार ) कम करके शेषको आधा करनेपर पश्चा तथा मंगलावती देशकी उत्कृष्ट लम्बाईका प्रमाण ज्ञात होता है ॥२७१३॥

तिय-वो-अण्णव-गव-बुग अंक<sup>१</sup>-कमे ओवएरणि भागणि ।

चउ-हीन-बु-सय - बीहं, आवित्तं पउम - मंगलावदिए ॥२७१४॥

$$२९४६२३ । ३३३ ।$$

अर्थ :—पश्चा और मंगलावती देशोंकी ( उपर्युक्त उत्कृष्ट अर्थात् ) आदिम लम्बाई तीन, दो, छह, चार, नौ और दो इस अंक क्रमसे जो संख्या उत्पन्न हो उतने योजन और चार कम दोसी अर्थात् एकसौ छपानव भाग अधिक ( २९४६२३३३३ योजन प्रमाण ) है ॥२७१४॥

$$( ५६०२४७३६३ - १००० ) \div २ = २९४६२३३३३ \text{ योजन } ।$$

दोनों देशोंकी मध्यम लम्बाई—

गव-तिय-गभ-सं-गव-बुग-अंक-कमे भाग बु-सय चउ-रहिं ।

मउभक्तसय - बीहसं, पम्माए मंगलावदिए ॥२७१५॥

$$२९००३६ । ३३३ ।$$

अर्थ :—पश्चा और मंगलावती देशकी मध्यम लम्बाई नौ, तीन, शून्य, शून्य, नौ और दो इस अंक क्रमसे जो संख्या उत्पन्न हो उतने योजन और एकसौ छपानव भाग अधिक ( २९००३६३३३ योजन प्रमाण ) है ॥२७१५॥

$$२९४६२३३३३ - ४५८४ = २९००३६३३३ \text{ योजन } ।$$

दोनों देशोंकी अन्तिम और दो वक्षार पर्वतोंकी आदिम लम्बाई—

पण-पण-चउ-पण-अड-बुग, अंसा ता एव दोसु विजयासु' ।

अंतिल्लय - दोहच', बबसार - बुगम्मि आवित्तं ॥२७१६॥

२८५४५५ । ३३३ ।

अर्थ :—उपयुक्त दोनों देशोंकी अन्तिम और अद्दावान् एवं आत्माञ्जन नामक दो वक्षार पर्वतोंकी आदिम लम्बाई पाँच, पाँच, चार, पाँच, आठ और दो इस अंक क्रमसे जो संख्या उत्पन्न हो उससे एकसौ छत्तीसवें भाग अधिक ( २८५४५५१११ यो० ) है ॥२७१६॥

२८००३६३११ — ४५८४ = २८५४५५१११ योजन ।

दोनों वक्षारोंकी मध्यम लम्बाई—

अड-सग-बव-चउ-अड-बुग भागा छत्तीस-अहिय-सयमेवकं ।

सद्दावणमायंजण - गिरिम्मि मज्झिस्त - दोहच' ॥२७१७॥

२८४९७८ । ३३३ ।

अर्थ :—अद्दावान् और आत्माञ्जन पर्वतोंकी मध्यम लम्बाई आठ, सात, नौ, चार, आठ और दो, इस अंक-क्रमसे जो संख्या निर्मित हो उससे एकसौ छत्तीस भाग अधिक ( २८४९७८३३३ योजन प्रमाण ) है ॥२७१७॥

२८५४५५१११ — ४७७१११ = २८४९७८३३३ योजन ।

दोनों वक्षारोंकी अन्तिम और दो देशोंकी आदिम लम्बाई—

इमि-गम-पण-चउ-अड-बुग, भागा छाहत्तरी य अंतिल्लं ।

दोहं दोसु गिरीसु', आदीशो दोण्णि - विजयाणं ॥२७१८॥

२८४५०१ । ११३ ।

अर्थ :—उपयुक्त दोनों वक्षार पर्वतोंकी अन्तिम और सुपचा तथा रमणीया नामक क्षेत्रोंमेंसे प्रत्येककी मध्यम लम्बाई एक, शून्य, पाँच, चार, आठ और दो, इस अंक क्रमसे जो संख्या निर्मित हो उससे छपत्तर भाग अधिक अर्थात् २८४५०१११३ योजन प्रमाण है ॥२७१८॥

२८४९७८३३३ — ४७७१११ = २८४५०१११३ योजन ।



दोनों देशोंकी मध्यम लम्बाई—

सग-इगि-एव-णव-सग-वुग, भागा ता एव मउळ-वीहत्तं ।

पत्तेवक सुपम्माए, रमणिज्जा - नाम - विजयाए ॥२७१६॥

२७६६१७ । ३३३ ।

अर्थ :— सुपथा और रमणीया नामक क्षेत्रोंमेंसे प्रत्येककी मध्यम लम्बाई सात, एक, नौ, नौ, सात और दो, इस अंक क्रमसे जो संख्या उत्पन्न हो उससे छषत्तर भाग अधिक अर्थात् २७६६१७३३३ योजन प्रमाण है ॥२७१६॥

दोनों क्षेत्रोंकी अन्तिम तथा दो विभंग नदियोंकी आदिम लम्बाई—

तिय-तिणिण-तिणिण-पण-सग-वोष्णि य अंसा तहेव वीहत्तं ।

वो विजयाणं अंतं, आवित्तं वो - विभंग - सरिमाणं ॥२७२०॥

२७५३३३ । ६३३ ।

अर्थ :— उपर्युक्त दोनों क्षेत्रोंकी अन्तिम तथा क्षीरोदा एवं उन्मसजला नामक दो विभंग-नदियोंमेंसे प्रत्येककी आदिम लम्बाई तीन, तीन, पाँच, सात और दो, इस अंक-क्रमसे जो संख्या उत्पन्न हो उससे पूर्वोक्त छषत्तर भाग अधिक अर्थात् २७५३३३३३३ योजन प्रमाण है ॥२७२०॥

दोनों विभंग नदियोंकी मध्यम लम्बाई—

अउ-इगि-वुग-पण-सग दुग भागा अउवोसमेस वीहत्तं ।

मविभत्तं क्षीरोवे, उम्मस - णविम्म पत्तेवकं ॥२७२१॥

२७५२१४ । ३३६ ।

अर्थ :— क्षीरोदा और उन्मसजलामेंसे प्रत्येककी मध्यम लम्बाई चार, एक, दो, पाँच, सात और दो, इस अंक-क्रमसे निमित्त संख्यासे चौबीस भाग अधिक अर्थात् २७५२१४३३६ योजन प्रमाण है ॥२७२१॥

दोनों नदियोंकी अन्तिम और दो देशोंकी आदिम लम्बाई—

अउ-एव-अंवर-पण-सग-वो भागा अउरसीवि-अहिय-सयं ।

वोष्णं एवीण अन्तिम-वीहं आवित्तं वोसु विजयासु<sup>३</sup> ॥२७२२॥

२७५०६४ । ३३३ ।

१. व. क. व. उ. क्षीरोदे । २. व. व. क. व. उ. वीहि आदीयो । ३. उ. विजयासुं, व. व. व.

**अर्थ :**—उपयुक्त दोनों नदियोंकी अन्तिम लम्बाई तथा महापद्म और सुरम्मा नामक दो देशोंमेंसे प्रत्येककी आदिम लम्बाई चार, नौ, शून्य, पाँच, सात और दो, इस अंक-क्रमसे उत्पन्न संख्यासे एकसौ बीरासी भाग अधिक अर्थात् २७५०६४३६३ योजन प्रमाण है ॥२७२२॥

२७५२१४३६३ — ११६३३३ = २७५०६४३६३ योजन ।

दोनों देशोंकी मध्यम लम्बाई—

णभ-हृदि-पण-णभ-सग-वृग-अंक-क्रमे भागमेव पुच्छित्तं ।

मज्झिमल्लय - विजयारं, मज्झिम - सुरम्मा - विजयारणं ॥२७२३॥

मज्झिमल्लय :- आकाश की तुल्यस्थलानाम की संख्या

२७०५१०३६३ । ३६३ ।

**अर्थ :**—महापद्मा और सुरम्मा नामक देशोंकी मध्यम लम्बाई शून्य, एक, पाँच, शून्य, सात और दो, इस अंक क्रमसे जो संख्या निर्मित हो उससे एकसौ बीरासी भाग अधिक अर्थात् २७०५१०३६३ योजन प्रमाण है ॥२७२३॥

२७५०६४३६३ — ४५०४ = २७०५१०३६३ योजन ।

दोनों देशोंकी अन्तिम और दो वक्षार पर्वतों की आदिम लम्बाई—

छ-हो-णव-पण-छहृग, भागा ता एव अंत - वीहत्तं ।

वो - विजयारणं अज्जण - विजयवद्वियाए आदित्तं ॥२७२४॥

२६५६२६ । ३६३ ।

**अर्थ :**—उपयुक्त दोनों देशोंकी अन्तिम तथा अज्जण और विजयवद्वान् पर्वतकी आदिम लम्बाई छह, दो, नौ, पाँच, छह और दो इस अंक क्रमसे जो संख्या उत्पन्न हो उससे एकसौ बीरासी भाग अधिक अर्थात् २६५६२६३६३ योजन प्रमाण है ॥२७२४॥

२७०५१०३६३ — ४५०४ = २६५६२६३६३ योजन ।

दोनों वक्षारोंकी मध्यम लम्बाई—

राव-वउ-वउ-पण-छ-हो, अंक-क्रमे ओयणाणि भागा य ।

वासट्ठि वु - हव वीहत्तं, मज्झिमल्लं वीसु वक्षारे ॥२७२५॥

२६५४४९ । ३६३ ।

अर्थ :—पञ्चन और विजटावान् इन दोनों वजार-पर्वतोंकी मध्यम लम्बाई नौ, चार, चार, पाँच, छह और दो, इस अंक क्रमसे जो संख्या उत्पन्न हो उससे एकसौ चौबीस भाग अधिक अर्थात् २६५४४६३३३ योजना प्रमाण है ॥२७२५॥

$$२६५४२६३३३ - ४७७३३३ = २६५४४६३३३ योजना ।$$

दोनों वक्षारोंकी अन्तिम और दो देशोंकी आदिम लम्बाई—

दो-सग-गब-खड-छ-दो भागा चउसहि अंत - बीहस ।

दो - वक्षार - गिरीणं, आदीयं दोसु विजएसु ॥२७२६॥

$$२६४६७२ । ३३३ ।$$

अर्थ :—दोनों वक्षार-पर्वतोंकी अन्तिम तथा रम्या एवं पद्मकावती देशकी आदिम लम्बाई दो, सात, नौ, चार, छह और दो, इस अंक-क्रमसे जो संख्या उत्पन्न हो उससे चौंसठ भाग अधिक अर्थात् २६४६७२३३३ योजना प्रमाण है ॥२७२६॥

$$२६४६७२३३३ - ७७३३३ = २६४६७२३३३ योजना ।$$

दोनों देशोंकी मध्यम लम्बाई—

अहुड-तिय-गभ-छ-दो भागा चउसहि मवक्त - बीहस ।

रम्माए पद्मकावति - विजयाए होवि पसेकं ॥२७२७॥

$$२६०३८८ । ३३३ ।$$

अर्थ :—रम्या और पद्मकावती देशमेंसे प्रत्येककी मध्यम लम्बाई आठ, आठ, तीन, शून्य, छह और दो, इस अंक क्रमसे जो संख्या उत्पन्न हो उससे चौंसठ भाग अधिक अर्थात् २६०३८८३३३ योजना प्रमाण है ॥२७२७॥

$$२६४६७२३३३ - ४५८४ = २६०३८८३३३ योजना ।$$

दोनों क्षेत्रोंकी अन्तिम तथा दो विभंग नदियोंकी आदिम लम्बाई—

चउ-गभ-अड-पण-पण-बुग भागा ता एव बीहस विजयाजं ।

अंतिलय - बीहस, आदित्तं दो - विभंग - सरियाजं ॥२७२८॥

$$२५५८०४ । ३३३ ।$$

अर्थ :—उपर्युक्त दोनों क्षेत्रोंकी अन्तिम तथा मतजला और सीतोवा नामक दोनों नदियों की आदिम लम्बाई चार, शून्य, आठ, पाँच, पाँच और दो, इस अंक-क्रमसे जो संख्या उत्पन्न हो उससे चौंसठ भाग अधिक अर्थात् २५५८०४३३३ योजना प्रमाण है ॥२७२८॥

$$२६०३८८३३३ - ४५८४ = २५५८०४३३३ योजना ।$$

दोनों विभाग नदियोंकी मध्यम लम्बाई—

पण-पञ्च-छप्पण-पण-वुग, अंक-कमे बारसाणि अंसा य ।

मत्तजले सीवोवे, पत्तेकं मज्झ - दोहत्तं ॥२७२६॥

२५५६८५ । ३३२ ।

अर्थ :—आठवीं स्त्री लुक्लिङ्गसंज्ञा परी मज्झाज्जा

अर्थ :—मत्तजला और सीतोदामेंसे प्रत्येककी मध्यम लम्बाई पाँच, आठ, छह, पाँच, पाँच और दो, इस अंक-क्रमसे जो संख्या उत्पन्न हो उससे बारह भाग अधिक अर्थात् २५५६८५३३२ योजन प्रमाण है ॥२७२६॥

२५५८०४३३२ — ११६२३३ = २५५६८५३३२ योजन ।

दोनों नदियोंकी अन्तिम और दो देशोंकी आदिम लम्बाई—

पण-छप्पण-पण-पंचप-वो ज्जिय माहत्तरोहि अहिय-सधं ।

भागा वु - एहवु - विजए, अत्तिस्सावित्ति - दोहत्तं ॥२७३०॥

२५५५६५ । ३३३ ।

अर्थ :—उपर्युक्त दोनों नदियोंकी अन्तिम और शङ्खा तथा वत्सकावती नामक दो विजयों ( क्षेत्रों ) की आदिम लम्बाई पाँच, छह, पाँच, पाँच, पाँच और दो, इस अंक-क्रमसे जो संख्या उत्पन्न हो उससे एकसौ बहत्तर भाग अधिक अर्थात् २५५५६५३३३ योजन प्रमाण है ॥२७३०॥

२५५६८५३३३ — ११६२३३ = २५५५६५३३३ योजन ।

दोनों देशोंकी मध्यम लम्बाई—

इणि-अह-णव-अभ-पण-वुग भागा ता एव मज्झ-दोहत्तं ।

संसाए 'वप्पकावदि - विजए पत्तेक परिमाण ॥२७३१॥

२५०६८१ । ३३३ ।

अर्थ :—शङ्खा एवं वत्सकावती क्षेत्रमेंसे प्रत्येककी मध्यम लम्बाई एक, आठ, नौ, शून्य, पाँच और दो, इस अंक-क्रमसे जो संख्या निर्मित हो उससे एकसौ बहत्तर भागसे अधिक अर्थात् २५०६८१३३३ योजन है ॥२७३१॥

२५५५६५३३३ — ४५८४ = २५०६८१३३३ योजन ।



दोनों देशोंकी मध्यम लम्बाई—

गव-पण-अड-णभ-खउ-दुग-घंक-कमे अंतमेव बावण्यं ।

मणिभूमए दीहत्तं, 'महवण्य' - एण्णिण - विजयम्मि ॥२७३५॥

२४०८५६ । ३१३ ।

अर्थ :—महावत्सा और नसिना देशोंमेंसे प्रत्येककी मध्यम लम्बाई नौ, पाँच, आठ, दस, चार और दो, इस अंक-क्रमसे जो संख्या उत्पन्न हो उससे बावन भाग अधिक अर्थात् २४०८५६३१३ योजन प्रमाण है ॥२७३५॥

२४५४४३३३ — ४५८४ = २४०८५६३३३ योजन ।

दोनों देशोंकी अन्तिम और दो विभंग नदियोंकी आदिम लम्बाई—

पण-सग-दो-छलिय-दुग, भागा बावण्य दीहत्तं-विजयार्ण ।

वे - वेभंग<sup>१</sup> - एण्णिणं, अंतिम - आदित्त - दीहत्तं ॥२७३६॥

२३६२७५ । ३१३ ।

अर्थ :—दोनों देशोंकी अन्तिम और तप्तजला एवं ओषधवाहिनी नामक दो विभंग नदियोंमेंसे प्रत्येककी आदिम लम्बाई पाँच, सात, दो, छह, तीन और दो, इस अंक-क्रमसे जो संख्या उत्पन्न हो उससे बावन भाग अधिक ( २३६२७५३१३ योजन ) है ॥२७३६॥

२४०८५६३३३ — ४५८४ = २३६२७५३३३ योजन ।

दोनों विभंग नदियोंकी मध्यम लम्बाई—

छप्पण-इणि-छलिय-दुग-घंक-कमे ओयणाणि मणिभूमए ।

दीहत्तं तच्चजले, 'ओसहवाहीए' पत्तेक्कं ॥२७३७॥

२३६१५६ ।

अर्थ :—तप्तजला और ओषधवाहिनीमेंसे प्रत्येककी मध्यम लम्बाई छह, पाँच, एक, छह, तीन और दो, इस अंक-क्रमसे जो संख्या उत्पन्न हो उससे ( २३६१५६ ) योजन प्रमाण है ॥२७३७॥

२३६२७५३३३ — ११६१६३ = २३६१५६ योजन ।

दोनों नदियोंकी अन्तिम और दो देशोंकी आदिम लम्बाई—

छत्तिय-मभ-छत्तिय-बुग, भागा सट्टीहि अहिय-सय बोहं ।

हो - वेभंग - णवीणं, अंतं आवी हु बोसु विजएसु ॥२७३८॥

२३६०३६ । ३१३ ।

अर्थ :—उपर्युक्त दोनों विभंग नदियोंकी अन्तिम तथा कुमुदा एवं सुवत्सा नामक दो देशों मेंसे प्रत्येककी आदिम लम्बाई, छह, तीन, शून्य, छह, तीन और दो, इस अंक-क्रमसे जो संख्या उत्पन्न हो उससे एकसौ साठ भाग अधिक अर्थात् २३६०३६३१३ योजन प्रमाण है ॥२७३८॥

२३६१५६ — ११६३३३ = २३६०३६३१३ योजन ।

दोनों देशोंकी मध्यम लम्बाई—

बो-वण-बड-इणि-तिय-बुग, भागा सट्टीहि अहिय-सयमेत्तं ।

मज्झिम - पएस - बोहं, कुमुदाए सुवत्स - विजयम्मि ॥२७३९॥

सामयिकः : - अथवा श्री सुविशालकृष्णस्य विद्वत्पुत्र

अर्थ :—कुमुदा तथा सुवत्सा देशमेंसे प्रत्येककी मध्यम लम्बाई दो, पाँच, चार, एक, तीन और दो, इस अंक-क्रमसे जो संख्या उत्पन्न हो उससे एकसौ साठ भाग अधिक अर्थात् २३१४५२३१३ योजन प्रमाण है ॥२७३९॥

२३६०३६३१३ — ४५८४ = २३१४५२३१३ योजन ।

दोनों देशोंकी अन्तिम तथा दो वक्षार-पर्वतोंकी आदिम लम्बाई—

अट्ट-अ-अट्टय-अ-हो-हो ज्विय सट्टीहि अहिय-सय-भागं ।

विजयाणं वक्सारं, अंतिल्लावित्त - बीहत्तं ॥२७४०॥

२२६८६८ । ३३३ ।

अर्थ :—दोनों देशोंकी अन्तिम और सुखावह और त्रिकूट नामक दो वक्षार-पर्वतोंकी आदिम लम्बाई आठ, छह, आठ, छह, दो और दो, इस अंक-क्रमसे जो संख्या उत्पन्न हो उससे एकसौ साठ भाग अधिक अर्थात् २२६८६८३३३ योजन प्रमाण है ॥२७४०॥

२३१४५२३१३ — ४५८४ = २२६८६८३३३ योजन ।

दोनों वक्षार-पर्वतोंकी मध्यम लम्बाई—

इगि-णव-तिय-छहो-दो, अंक-कमे जोयभाजि सय-भागं ।

मणिभल्लसय कीहत्तं, सुहावहे तह तिकूहे य ॥२७४१॥

२२६३६१ । १९९ ।

अर्थ :—सुहावह और त्रिकूट पर्वतकी मध्यम लम्बाई एक, नी, तीन, छह, दो और दो इस अंक-क्रमसे जो संख्या उत्पन्न हो उससे एकसौ भाग अधिक अर्थात् २२६३६१।१९९ योजन प्रमाण है ॥२७४१॥

२२६३६१।१९९ — ४७७१।९ = २२६३६१।१९९ योजन ।

दोनों वक्षारोंकी अन्तिम और दो देशोंकी आदिम लम्बाई—

चउ'-इगि-णव-पण-दो-दो अंता चालीसमेत्त पसेक्कं ।

दो - वक्षार - हु - विजए, अंतिलसाविल्ल - कीहत्तं ॥२७४२॥

२२५६१४ । ५५२ ।

अर्थ :—दो वक्षार-पर्वतोंकी अन्तिम लम्बाई और सरिता एवं वरसा देशोंमेंसे प्रत्येककी अन्तिम लम्बाई चार, एक, नी, पाँच दो और दो इस अंक-क्रमसे जो संख्या उत्पन्न हो उससे चालीस भाग अधिक अर्थात् २२५६१४।५५२ योजन प्रमाण है ॥२७४२॥

२२५६१४।५५२ — ४७७२।९ = २२५६१४।५५२ योजन ।

दोनों देशोंकी मध्यम लम्बाई—

णभ-तिय-तिय-इगि-दो-दो अंक-कमे हु-हव-दोस भागा य ।

सरिवाए<sup>१</sup> वच्छ - विजए, पत्तोवर्क मज्झ - कीहत्तं ॥२७४३॥

२२१३३० । ५५२ ।

अर्थ :—सरिता और वरसा देशोंमेंसे प्रत्येककी मध्यम लम्बाई धून्य, तीन, तीन, एक, दो और दो, इस अंक-क्रमसे जो संख्या उत्पन्न हो उससे चालीस भाग अधिक अर्थात् २२१३३०।५५२ योजन प्रमाण है ॥२७४३॥

२२१३३०।५५२ — ४५८४ = २२१३३०।५५२ योजन ।



दोनों देशोंकी अन्तिम और दोनों वनोंकी आदिम लम्बाई—

छत्तखट - सग - छक्केवक - दु अंसा चालीसमेस बीहत्स ।

दो - विजए आविमए, देवारण्यमि भूतारण्यए ॥२७४४॥

२१६७४६ । ३५० ।

अर्थ :—उपयुक्त दोनों देशोंकी [अन्तिम] और देवारण्य तथा भूतारण्यकी आदिम लम्बाई

छह, चार, सात, छह एक और दो, इस अंक-क्रमसे जो संख्या उत्पन्न हो उससे चालीस भाग अधिक अर्थात् २१६७४६ $\frac{३५०}{२}$  योजन प्रमाण है ॥२७४४॥

अर्थात् २१६७४६ $\frac{३५०}{२}$  योजन प्रमाण है ॥२७४४॥

दोनों वनोंकी मध्यम लम्बाई—

छप्पण-खव-तिय-इगि-बुग, भागा सट्टीहि ग्रहिय-सयमेस ।

भूवावेवारण्यो, हुवेवि मणिभरुल - बीहत्स ॥२७४५॥

२१३९५६ । ३१० ।

अर्थ :—भूतारण्य और देवारण्य वनमेंसे प्रत्येककी मध्यम लम्बाई छह, पाँच, नौ, तीन,

एक और दो, इस अंक-क्रमसे जो संख्या उत्पन्न हो उससे एकसी साठ भाग अधिक अर्थात् २१३९५६ $\frac{३१०}{२}$  योजन प्रमाण है ॥२७४५॥

दोनों वनोंकी अन्तिम लम्बाई—

सग-छक्केवकगि-इगि-बुग, भागा अट्टसट्टि देवारण्यमि ।

तह खेव भूवरण्यो, पल्लेकं अंत - बीहत्स ॥२७४६॥

२१११६७ । ३५० ।

अर्थ :—देवारण्य और भूतारण्यमेंसे प्रत्येककी अन्तिम लम्बाई सात, छह, एक एक, एक

और दो, इस अंक-क्रमसे जो संख्या उत्पन्न हो उससे अट्टसठ भाग अधिक अर्थात् २१११६७ $\frac{३५०}{२}$  योजन प्रमाण है ॥२७४६॥

२१३९५६ $\frac{३१०}{२}$  — २७५६५ $\frac{३२०}{२}$  = २१११६७ $\frac{३५०}{२}$  योजन ।

इच्छित क्षेत्रोंकी लम्बाई का प्रमाण—

कच्छादी - विजयापं, आविम-मणिभरुल-खरम-बीहत्सि ।

विजयवट - दंडमवणिय, अट्ट - कदे तत्स बीहत्स ॥२७४७॥

अर्थ :—कच्छादिक देशोंकी आदिम, मध्यम और अन्तिम लम्बाईमेंसे विजयार्धके विस्तार

को घटाकर शेषकी आधा करनेपर उसकी लम्बाई का प्रमाण प्राप्त होता है ॥२७४७॥

महाहिमवान् पर्वतका क्षेत्रफल—

हिमवन्तस्स य दंवे, धावइ संवस्स दंवमाणम्मि ।

संगुणिवे जं सद्धं, तं तस्स हवेवि खेसफलं ॥२७४८॥

चउत्थो - कोठीघो, लक्षणाणि जोयणाणि इगिवासं ।

बावण्ण - सय तिसहुी, ति - कलाओ तस्स परिमाणं ॥२७४९॥

हिमवन्तस्स क्षेत्रफलम्—८४२१०५२६३ । ११ ।

अर्थ :—धातकीखण्डके विस्तारको हिमवान् पर्वतके विस्तारसे गुणा करनेपर जो संख्या प्राप्त हो उतना हिमवान् पर्वतका क्षेत्रफल होता है । जिसका प्रमाण चोरासो करोड़ इक्कीस लाख बावनसौ तिरेसठ योजन और तीन कला है ॥२७४८-२७४९॥

हिमवान् पर्वतका क्षेत्रफल—४००००० — २१०५५१ — ८४२१०५२६३११ यो० ।

महाहिमवान् आदि पर्वतोंका क्षेत्रफल—

एवं चिय चउ - गुणिवं, महाहिमवन्तस्स होवि खेसफलं ।

सिंहसहस्स तच्चउगुण, चउ - गुण - हारणी परं तसो ॥२७५०॥

महाहिमवन्त ३३६८४२१०५२ । ११ । सिंह १३४७३६८४२१० । ११ ।

लील १३४७३६८४२१० । ११ । रुम्मि ३३६८४२१०५२ । ११ ।

सिखरी ८४२१०५२६३ । ११ ।

एदाणि मेसिधूणं\* दुगुणं कादव्वं तच्चेदं—७०७३६८४२१०५ । ११ ।

अर्थ :—हिमवान्के क्षेत्रफलको चारसे गुणा करनेपर महाहिमवान्का क्षेत्रफल और महाहिमवान्के क्षेत्रफलको भी चारसे गुणा करनेपर निधव पर्वतका क्षेत्रफल होता है । इसके आगे फिर चौमुनी हामि है ॥२७५०॥

क्षेत्रफल—महाहिमवान् ३३६८४२१०५२११ योजन । निधव १३४७३६८४२१०११ योजन । मील १३४७३६८४२१०११ यो० । रुम्मि ३३६८४२१०५२११ योजन और सिखरी ८४२१०५२६३११ योजन । धातकी खण्डमें दो भेद पर्वत सम्बन्धी बारह कुलाचल पर्वत हैं अतः इन छह पर्वतोंके क्षेत्रफलको मिलाकर दुगुना करनेपर ( ३३६८४२१०५२११ × २ ) = ७०७३६८४२१०५२११ योजन प्राप्त होते हैं ।

समर्थनार्थ :- अग्राह्य जी सुविनिर्वाहार्थ जी धरणात्

दोनों इष्वाकार पर्वतोंका क्षेत्रफल—

होष्णं उमुगाराणं, असीवि - कोडीओ ह्येति क्षेत्रफलं ।

एवं पुष्प - विमिस्सं, चोहस - सेलाण पिङ्गफलं ॥२७५१॥

८०००००००० ।

अर्थ :- दोनों इष्वाकार पर्वतोंका क्षेत्रफल प्रस्ती करोड ( ८०००००००० ) योजन है ।

इसको उपर्युक्त कुसाचलोके क्षेत्रफलमें मिला देनेपर चौदह-पर्वतोंका क्षेत्रफल होता है ॥२७५१॥

चौदह-पर्वतोंका सम्मिलित क्षेत्रफल—

पंच-गयनेक-बुग-चउ-अहु-छ-तिय-पंच-एक - सत्ताहं ।

अंक-कमे पंचंसा, चोहस - गिरि - गभिद - फलमाणं ॥२७५२॥

७१५३६८४२१०५ : १५ ।

अर्थ :- चौदह पर्वतोंके क्षेत्रफलका प्रमाण पाँच, शून्य, एक, दो, चार, आठ, छह, तीन;

पाँच, एक और सात, इस अंक क्रमसे जो संख्या उत्पन्न हो उतने योजन और पाँच भाग मात्र अर्थात्

७१५३६८४२१०५ $\frac{१}{५}$  योजन है ॥२७५२॥

७०७३६८४२१०५ $\frac{१}{५}$  + ८०००००००० = ७१५३६८४२१०५ $\frac{१}{५}$  यो० ।

घातकी खण्डका क्षेत्रफल—

एक-छ-छ'-सस-वरा-नव'-नवेक-चउ-अहु-तिदय-एकैकका ।

अंक - कमे ओयणया, थावइ - संडस्स पिङ्गफलं ॥२७५३॥

११३८४१२६५७६६१ ।

अर्थ :- सम्पूर्ण घातकीखण्डका क्षेत्रफल एक, छह, छह, सात, पाँच, नौ, नौ, एक, चार,

आठ, तीन, एक और एक, इस अंक क्रमसे जो संख्या उत्पन्न हो उतने ( ११३८४१२६५७६६१ ) योजन प्रमाण है ॥२७५३॥

घातकीखण्ड स्थित भरतक्षेत्रका क्षेत्रफल—

चोहस' - गिरीण हवं, क्षेत्रफलं सोह सव्व - क्षेत्रफसे ।

बारस - बुव - दु - सएहि, भजिवे तं भरह - क्षेत्रफलं ॥२७५४॥

१. व. व. क. ज. उ. अक्षहस्तपण्ण । २. व. क. अ. उ. एणवेक । ३. व. व. क. ज. उ. चोहस-

**अर्थ** :— ( घातकी खण्डके ) सम्पूर्ण क्षेत्रफलमेंसे चौदह-पयसोंसे दस क्षेत्रफलको घटाओ । जो शेष रहे उसमें दोसी बारहका भाग देनेपर जो लब्ध प्राये उसना भरतक्षेत्रका क्षेत्रफल होता है ॥२७५५॥

छक्क-दुग-पंच-सत्ता, 'स्रक्क-दुग-तिगिए-सुण-पंचाणं ।

अंक-कमे जोयवया, चडदाल कलाओ भरह - क्षेत्रफलं ॥२७५५॥

भरह ५०३२४६७५२६ । ५५५ ।

**अर्थ** :— भरतक्षेत्रका क्षेत्रफल छह, दो, पाँच, सात, छह, चार, दो, तीन, शून्य और पाँच, इस अंक क्रमसे जो संख्या निमित्त हो उससे चवालीस कला अधिक ( ५०३२४६७५२६५५५ योजन प्रमाण ) है ॥२७५५॥

( ११३८४१६६५७६६१ — ७१५३६८४२१०५५५ ) ÷ २१२ = ५०३२४६७५२६५५५ योजन भरत क्षेत्रका क्षेत्रफल ।

हैमवत और हरिवर्षक्षेत्रोंका क्षेत्रफल—

एवं चिय चड - गुणिवे, क्षेत्रफलं होदि हैमवत - क्षेत्रे ।

तं क्षेत्रं चड - गुणिवं, हरिवरिस - खिदोए क्षेत्रफलं ॥२७५६॥

**अर्थ** :— भरतक्षेत्रके क्षेत्रफलको चौगुना करनेपर हैमवत क्षेत्रका क्षेत्रफल और इसको भी चौगुना करनेपर हरिवर्षक्षेत्रका क्षेत्रफल प्राप्त होता है ॥२७५६॥

शेष क्षेत्रोंका क्षेत्रफल—

हरिवरिसक्षेत्रफलं, अडक्क - गुणिवं विवेह - क्षेत्रफलं ।

सेस - धरिसेसु कमसो, अडगुण - हाजीअ गणिवफलं ॥२७५७॥

हे २०१२६८७०१०४ । ३९३ । हरि ८०५१६४८०४१६ । ३९३ ।

वि ३२२०७७६२१६७७ । ३९३ । रं ८०५१६४८०४१६ । ३९३ ।

हह २०१२६८७०१०४ । ३९३ । अइरावद ५०३२४६७५२६ । ५५५ ।

**अर्थ** :— हरिवर्षके क्षेत्रफलको चारसे गुणा करनेपर विवेहका क्षेत्रफल प्राप्त होता है । इसके प्राये फिर क्रमशः शेष क्षेत्रोंके क्षेत्रफलमें चौगुनी हानि होती गई है ॥२७५७॥

**क्षेत्रफल :—**वर्गयोजनोंमें हैसवतक्षेत्रका २०१२६८७०१०४ । ३१३ । हरिवर्षका ८०५१६४८०४१६३६३ । विवेहक्षेत्रका ३२२०७७६२१६७७२१३ । रम्पक्षेत्रका ८०५१६४८०४१६३६३ । हैरण्यवतक्षेत्रका २०१२६८७०१०४३१३ और ऐरावत क्षेत्रका ५०३२४६७५२६३६३ वर्ग योजन क्षेत्रफल है ।

**घातकीखण्डके जम्बूद्वीप प्रमाण शब्द—**

जम्बूद्वीप - सिवीए, फलप्यमाणेन भादईसंडे ।

सेसफलं किञ्जंतं, बारस - कवि - सम - सलागाओ ॥२७५८॥

१४४ ।

**वर्ण :**—जम्बूद्वीपके फलप्रमाणसे घातकीखण्डका क्षेत्रफल करनेपर यह बारहके वर्गरूप अर्थात् एकसौ चवालीस-शलाका प्रमाण होता है ॥२७५८॥

**विशेषार्थ :**—घातकीखण्डके बाह्यसूची व्यास ( १३ लाख ) के वर्गमेंसे उसीके अन्त्यस्तर सूची व्यास ( ५ लाख ) के वर्गको घटाकर जम्बूद्वीपके व्यासके वर्गका भाग देनेपर एकसौ चवालीस शलाका प्राप्त होती है । अर्थात् घातकी खण्डके जम्बूद्वीप बराबर एकसौ चवालीस खण्ड होते हैं ।

यथा—(  $130000^2 - 50000^2$  )  $\div$   $10000^2 = 144$  ।

**विजयादिकोंका शेष वर्णन—**

अबसेस - वण्यजाधो, सख्याणं विजय - सेल-सरियाणं ।

कुंड - बहादीणं पि ष, जम्बूद्वीपस्स सारिण्णो ॥२७५९॥

**एवं विष्णासो समप्तो ।**

**वर्ण :**—सम्पूर्ण क्षेत्र, पर्वत, नदी, कुण्ड और द्रहादिकोंका शेष वर्णन जम्बूद्वीपके सट्टा ही समझना चाहिए ॥२७५९॥

इसप्रकार विन्यास समाप्त हुआ ।

**भरतादि अधिकारोंका निरूपण—**

भरह-बसुंधर-पहुवि, जाव य ऐरावतो ति अहियारा ।

जम्बूद्वीपे उरां, तं सख्यं एत्थ वसाव्यं ॥२७६०॥

**वर्ण :**—भरतक्षेत्रसे ऐरावतक्षेत्र पर्यन्त जितने अधिकार जम्बूद्वीपके वर्णनमें कहे गये हैं, वे सब यहाँ भी कहने चाहिए ॥२७६०॥

एवं संसेवेणं, धावइसंडो पवण्णिदो विम्बो ।

वित्थार - वण्णवासुं, का सत्ती म्हारि - सुमईणं ॥२७६१॥

एवं धावइसंडस्स वण्णणा समत्ता ॥४॥

अर्थ :—इसप्रकार संसेपमें यहाँ दिव्य घातकीखण्डका वर्णन किया गया है । हमारी जैसी बुद्धिवाले मनुष्योंकी भला विस्तारसे वर्णन करनेकी शक्ति ही क्या है ? ॥२७६१॥

इसप्रकार घातकीखण्डद्वीपका वर्णन समाप्त हुआ ॥४॥

कालोद समुद्रका विस्तार—

परिवेहेवि<sup>१</sup> समुद्धो, कालोदो नाम धावईसंडं ।

अउ - सब्बल - जोयणासि, वित्थिण्णो जक्कवासेणं ॥२७६२॥

अर्थ :—इस घातकीखण्डको आठ लाख योजनप्रमाण विस्तारवाला कालोद नामक समुद्र मण्डलाकार वेष्टित किये हुए है ॥२७६२॥ आठवाँ और बुद्धिमान्ताम्र जी कहता है—

समुद्रकी गहराई आदि—

टंकुक्किण्णायारो<sup>२</sup>, सम्मथ सहस्स - जोयववगाद्धो ।

विस्तोवरि - तल - सरित्तो, पायाल - विवविज्जो एसो ॥२७६३॥

( ००० )

अर्थ :—टांकीसे उकेरे हुएके सदृश आकारवाला यह समुद्र सर्वत्र एक हजार योजन गहरा, चित्रापृथिवीके उपरिम तलभागके सदृश अर्थात् समतल और पातालसे रहित है ॥२७६३॥

समुद्रगत द्वीपोंकी अवस्थिति और संख्या—

अट्टताला दीवा, विसासु विविसासु अंतरेसुं च ।

अउवीसअंतरेण, आहिरण तेत्तिथा तस्स ॥२७६४॥

अर्थ :—इस समुद्रके भीतर दिशाओं, विदिशाओं और अन्तर दिशाओंमें अट्टतालीस द्वीप हैं । इनमेंसे चौबीस द्वीप समुद्रके अभ्यन्तरभागमें और चौबीस ही बाह्यभागमें हैं ॥२७६४॥

अन्तर्दिशस्मि बीजा, विसारि 'विस्तासु तह य विविस्तासु' ।  
अन्तरविस्तासु अद्दु य, अद्दु य गिरि - पण्णिधि - भागेसु ॥२७६५॥

४।४।८।८।

अर्थ :—उसके अन्तर्भागमें दिशाओंमें चार, विदिशाओंमें चार, अन्तरदिशाओंमें आठ और पर्वतोंके पार्श्वभागोंमें भी आठ ही द्वीप हैं ॥२७६५॥

तटोंसे द्वीपोंकी दूरी एवं उनका विस्तार—  
जोयण-पंच-सयाणि, पण्णभहिपारिण वो - तडाहितो ।  
पविसिय विस्तासु बीजा, पत्तेवर्कं तु - सय - विक्कंभो ॥२७६६॥

५५०।२००।

अर्थ :—इनमेंसे दिशाओंके द्वीप दोनों तटोंसे पचासी पचास ( ५५० ) योजन प्रमाण समुद्रमें प्रवेश करके स्थित हैं । इनमेंसे प्रत्येक द्वीपका विस्तार दोसौ ( २०० ) योजन प्रमाण है ॥२७६६॥

जोयणय - छस्सयाणि, कालोदधिस्मि - वो-तडाहितो ।  
पविसिय विविस्ता - बीजा, पत्तेवर्कं एक - सय - वं ॥२७६७॥

६००।१००।

अर्थ :—दोनों तटोंसे छहसौ ( ६०० ) योजन प्रमाण कालोदधि समुद्रमें प्रवेश करनेपर विदिशाओंमें द्वीप स्थित हैं । इनमेंसे प्रत्येक द्वीपका विस्तार एकसौ ( १०० ) योजन प्रमाण है ॥२७६७॥

जोयण - पंच - सयाणं, पण्णभहिपारिण वो - तडाहितो ।  
पविसिय अन्तर - बीजा, पण्णा - वंहा<sup>१</sup> य पत्तेवर्कं ॥२७६८॥

५५०।५०।

अर्थ :—दोनों तटोंसे पचासी पचास ( ५५० ) योजन प्रवेश करके अन्तरद्वीप स्थित हैं । इनमेंसे प्रत्येकका विस्तार पचास ( ५० ) योजन प्रमाण है ॥२७६८॥

स्रस्त्रिय सयारिण पण्णा-बुधारिणि ओयणाणि दृ-तडावो ।

पक्षितिय गिरि - धणिषीसुं, वीवा पण्णास-विषसंभा' ॥२७६६॥

६५० । ५० ।

अर्थ :—दोनों तटोंसे छहसी पचास ( ६५० ) योजन प्रवेश करके पर्वतोंके प्रसिद्धि-भागोंमें अन्तरद्वीप स्थित हैं । उनमेंसे प्रत्येकका विस्तार पचास ( ५० ) योजन प्रमाण है ॥२७६६॥

पत्तेवर्कं ते वीवा, तड - वेदी - तोरणेहि रमणिञ्जा ।

पोक्करणी - वावीहि<sup>१</sup>, कप्प - बुमोहि<sup>२</sup> पि संपुण्णा ॥२७७०॥

अर्थ :—पुष्पक-द्वीप तट-वेदी-तोरणोंके रमणीय और पुष्करिणी, वापिकाओं एवं कल्पवृक्षोंसे परिपूर्ण है ॥२७७०॥

इन द्वीपोंमें स्थित कुमानुषोंका निरूपण—

मञ्जमुह<sup>३</sup> अस्सकण्णा, पक्षिमुहा तेसु हृत्थिकण्णा य ।

पुब्बावीसु दिसेसुं, पि चिट्ठंति<sup>४</sup> कुमाणुसा कमसो ॥२७७१॥

अर्थ :—उनमेंसे पूर्वादिदिक् दिशाओंमें स्थित द्वीपोंमें कमलः धवस्यमुख, अस्वकर्ण, पक्षिमुख और हस्तकर्ण कुमानुष स्थित हैं ॥२७७१॥

अणिलविआसु<sup>५</sup> सुधर-कण्णा वीवेषु ताण विदिसासु<sup>६</sup> ।

अट्ठंतर - वीवेषुं, पुब्बाणि - विसावि - गणणिञ्जा ॥२७७२॥

वेट्ठंति<sup>७</sup> उट्ठकण्णा, मञ्जारमुहा पुणो वि तज्जीवा ।

कण्णप्पावरणा गणवयणा<sup>८</sup> य मञ्जार - वयणा य ॥२७७३॥

मञ्जार - मुहा य तहा, गो - कण्णा एवमट्ठ पत्तेवर्क ।

पुब्ब-पवण्णिव-बट्ठविह-पाव-फसेहि<sup>९</sup> कुमाणुसानि जायंति ॥२७७४॥

१. व. व. क. ज. उ. विषसंभा । २. व. व. क. ज. उ. वावीयो । ३. व. उ. पण्णमुहा ।  
४. व. क. ज. उ. वेट्ठंति । ५. व. व. क. ज. उ. अणिलविआसुं । ६. व. व. क. ज. उ. बुदिसासु ।  
७. व. क. ज. उ. उट्ठकण्णा । ८. व. व. ज. वयणा छावणा, व. क. उ. छावणा । ९. व. व. ज. उ. कुमाणुस-  
वीवाणि, क. कुमाणुसवीवाणि ।



**अर्थ** :—उनकी वायव्यादिक विदिशाओंमें स्थित द्वीपोंमें रहनेवाले कुमानुष शूकरकर्ण होते हैं । इसके प्रतिरिक्त पूर्वाग्निदिश।दिमें क्रमशः गणनीय साठ अन्तरद्वीपोंमें कुमानुष इसप्रकार स्थित हैं । उष्ट्रकर्ण, मार्जारमुख, पुनः मार्जारमुख, कर्णशवरण, गजमुख, मार्जारमुख, पुनः मार्जारमुख और गोकर्ण, इन आठोंमेंसे प्रत्येक पूर्वमें बतलाये हुए बहुत प्रकारके पापोंके फलसे कुमानुष जीव उत्पन्न होते हैं ॥२७७२-२७७४॥

पुष्पावर-पणिधीए, सिसुमार-मुहा तथा य मयरमुहा ।

वेदु'ति रप्य - गिरिणो, कुमानुसा कास - जलहिम्नि ॥२७७५॥

**अर्थ** :—काससमुद्रके भीतर विजयार्धके पूर्वापर पार्श्वभागोंमें जो कुमानुष रहते हैं वे क्रमशः सिसुमारमुख और मकरमुख होते हैं ॥२७७५॥

वयमुह<sup>१</sup>-वरयमुहक्सा, हिमवन्त-णगस्त पुष्य-पण्डिमदो ।

पणिधीए वेदु'ते, कुमानुसा पाव - पाकेहि ॥२७७६॥

**अर्थ** :—हिमवान्-पर्वतके पूर्व-पश्चिम पार्श्वभागोंमें रहनेवाले कुमानुष पावकर्मोंके उदयसे उत्पन्न वृकमुख और व्याघ्रमुख होते हैं ॥२७७६॥

सिहरिस्स<sup>२</sup>तरच्छमुहा, सिगाल-वयजा कुमानुसा होंति ।

पुष्पावर - पणिधीए, जम्भन्तर - कुरिय - कम्मेहि ॥२७७७॥

**अर्थ** :—सिखरी-पर्वतके पूर्व-पश्चिम पार्श्वभागोंमें रहनेवाले कुमानुष पूर्व जन्ममें किये हुए पापोंसे तरक्षमुख ( वल्लमुख ) और शृगालमुख होते हैं ॥२७७७॥

दीपिक - सिगारमुहा, कुमानुसा होंति रप्य - सेलस्स ।

पुष्पावर - पणिधीए, कालोदय - जलहि - दीयम्मि ॥२७७८॥

**अर्थ** :—विजयार्धपर्वतके पूर्वापर प्रणिधिभागमें कालोदक-समुद्रस्थ द्वीपोंमें क्रमशः दीपिक-मुख और भुङ्गारमुख कुमानुष होते हैं ॥२७७८॥

कालोदकके बाह्यभागमें स्थित कुमानुष द्वीपोंका निरूपण—

तस्सि बाहिर - भागे, तेलियमेत्ता कुमानुसा दीवा ।

पोक्सरणी - वाभीहि, कप्प - कुमेहि पि संपुज्जा ॥२७७९॥

१. द. व. उ. वंहुमुहवग्गमुहक्को, ज. क. वयमुहवंहुमुको । २. द. व. क. ज. उ. वरयमुहा ।

अर्थ :—पृष्करिणियों, वापियों और कल्पवृक्षोंसे परिपूर्ण उतने ही कुमानुषद्वीप उस कालोद-समुद्रके बाह्य-भागमें भी स्थित हैं ॥२७७६॥

एवामो वज्जनाग्रो, लवणसमुद्रं च एत्थ वत्तन्वा ।

कालोदय - लवणाग्रं, छण्णउदि - कुभोग - भूमिग्रो ॥२७८०॥

अर्थ :—यह सब वर्णन लवणसमुद्रके सदृश यही भी कहना चाहिए । इसप्रकार कालोदक और लवणसमुद्र सम्बन्धी कुभोग-भूमियाँ छपाने हैं ॥२७८०॥

कालोदक-समुद्रका क्षेत्रफल—

गणना :-  $\sqrt{२५०००००^२ \times १० \times १९०००००} = \sqrt{१३००००००^२ \times १० \times १३०००००} =$

कुग-अट्ट-गयण-गवयं, छण्णउ-छ-वु-छक्क-कुमिगि-तिय-पंच ।

अंक - कमे ओयणया, कालोदे होदि गणिद - फलं ॥२७८१॥

५३१२६२६४६६०८२ ।

अर्थ :—कालोदक-समुद्रका क्षेत्रफल दो, आठ, सूर्य, नी, छह, चार, छह, दो, छह, दो, एक, तीन और पाँच, इस अंक क्रमसे जो संख्या निमित्त हो उतने ( ५३१२६२६४६६०८२ ) योजन प्रमाण है ॥२७८१॥

यथा— $\sqrt{२५०००००^२ \times १० \times १९०००००} = \sqrt{१३००००००^२ \times १० \times १३०००००} =$   
५३१२६२६४६६०८२ योजन ।

कालोदक समुद्रके जम्बूद्वीप प्रमाण अण्ड—

जंबूद्वीप - महीए, फलप्पमाणेच काल - उवहिम्मि<sup>१</sup> ।

क्षेत्रफलं किञ्जंतं, छस्सय - बाहसरी<sup>२</sup> होदि ॥२७८२॥

६७२ ।

अर्थ :—जम्बूद्वीप सम्बन्धी क्षेत्रफलके प्रमाणसे कालोदक समुद्रका सम्पूर्ण क्षेत्रफल करने-पर वह उससे छहसौ बहत्तर गुणा होता है ॥२७८२॥

(  $२५०००००^२ - १३०००००^२$  )  $\div १०००००^२ = ६७२$  अण्ड । कालोदकसमुद्रके जम्बूद्वीप बराबरके ये ६७२ अण्ड होते हैं ।

कालोदककी बाह्य परिधि—

इगिण्यवि लवङ्गाणि, सहरि-सहस्त्राणि छस्स्याणि पि ।

पंचुत्तरो य परिही, बाहिरया तस्स किञ्चूणा ॥२७८३॥

अर्थ :—कालोदक की बाह्य-परिधि इगिण्यवि लवङ्गाणि ५१७०६०५ ।

अर्थ :—उस ( कालोदक समुद्र ) की बाह्य-परिधि इगिण्यवि लवङ्गाणि ५१७०६०५ योजन से कुछ अधिक है ॥२७८३॥

यथा— $\sqrt{२६०००००० \times १०} = ५१७०६०५$  योजन से कुछ अधिक है ।

नोट :—गाथा में बाह्य परिधिका प्रमाण ५१७०६०५ योजन से कुछ कम कहा गया है जबकि गणित की विधि से कुछ अधिक आ रहा है ।

कालोदकसमुद्रस्थ मत्स्योंकी दीर्घतादि—

भट्टरस - ओयणाणि, बीहा बीह्य - वास - संकुला ।

वास्य - बहुल - सहिदा, गई - मुहे जलचरा ह्येति ॥२७८४॥

१८ । १ । ३ ।

अर्थ :—इस समुद्रके भीतर नदीप्रवेश स्थानमें रहनेवाले जलचर जीवों की लम्बाई बटारह (१८) योजन (१४४ मील), चौड़ाई नौ (९) योजन (७२ मील) और ऊँचाई साढ़े चार (४३) योजन (३२ मील) प्रमाण है ॥२७८४॥

कालोवहि - बहुमज्जे, मच्छाणं बीह - वास-बहुलाणि ।

छत्तीसद्वारस - जव - ओयणमेसाणि कमसो व ॥२७८५॥

३६ । १८ । १ ।

अर्थ :—कालोदकसमुद्रके बहुमज्जेमें स्थित मत्स्योंकी लम्बाई ३६ योजन (२८८ मील), चौड़ाई १८ योजन (१४४ मील) और ऊँचाई १ योजन प्रमाण है ॥२७८५॥

शेष जलचरोंकी अवगाहना—

अवसेस - ठाण - मज्जे, बहुविह-ओगाहणेण संकुला ।

मयर - सिसुमार - कल्लव - मंडूकप्यह्विया ह्येति ॥२७८६॥

अर्थ :—शेष स्थानोंमें मगर, शिशुमार, कडुआ और मैकक आदि जलकर जीव बहुत प्रकारकी अवगाहनासे संयुक्त होते हैं ॥२७८६॥

एवं कालसमुद्रो, संखेबेणं पवणिवो एव ।  
तस्स<sup>१</sup> हरि - संख - जीहो विस्थारं<sup>२</sup> 'वणिवु' तरइ ॥२७८७॥

। एवं कालोदक-समुद्रस्स वर्णणा समाप्ता ॥५॥

अर्थ :—इसप्रकार यहाँ संक्षेपमें कालसमुद्रका वर्णन किया गया है । उसके विस्तारका वर्णन करनेमें संख्यात-जिह्वा-वाला हरि ही समाप्त है ॥२७८७॥

इसप्रकार कालोदक-समुद्रका वर्णन समाप्त हुआ ।

पुष्करवर द्वीपका व्यास—

पोक्करवरो ति बीवो, परिवेदवि<sup>३</sup> कालजलजिहि सयसं ।  
जोयण - सक्का सोलस, हं<sup>४</sup> - जुवो चक्कवालेणं ॥२७८८॥

१६००००० ।

अर्थ :—इस सम्पूर्ण कालसमुद्रको सोलह लाख ( १६०००००० ) योजन प्रमाण विस्तारसे संयुक्त पुष्करवरद्वीप मण्डलाकार वेष्टित किये हुए है ॥२७८८॥

पुष्करवरद्वीपके वर्णनमें सोलह अन्तराधिकारोंका निवेदन—

मणुसोसर - घरणिधरं, बिण्णासं भरह-वसुमई तम्मि ।  
काल - बिभागं हिमगिरि, हेमववो तह महाहिमवं ॥२७८९॥  
हरि-वरिसो विसहहो, बिबेह-एोलगिरि-रम्म-वरिसाई ।  
वम्म<sup>५</sup>-गिरी हेरण्णव-सिहरी एराववो ति वरिसो<sup>६</sup> य ॥२७९०॥  
एवं सोलस - संक्का, पोक्कर - बीवम्म अंतरहियारा ।  
एहं ताण सकवं, 'बोण्णामो भाणुपुण्णीए ॥२७९१॥

अर्थ :- इस पुष्करद्वीपके कथनमें १ मानुषोत्तरपर्वत, २ विम्बास, ३ भरतक्षेत्र, उसमें ४ कासविभाग, ५ हिमवान्-पर्वत, ६ हैमवतक्षेत्र, ७ महाहिमवान्पर्वत, ८ हरिवर्ष, ९ लिषस्रपर्वत, १० विदेह, ११ नीलगिरि, १२ रम्यकवर्ष, १३ रुक्मिणपर्वत १४ हैरम्यवतक्षेत्र, १५ शिखरीपर्वत और १६ ऐरावतक्षेत्र इसप्रकार ये सोलह अन्तराधिकार हैं। अब अनुक्रमसे यहाँ उनका स्वरूप कहूंगा ॥२७६६-२७६१॥

मानुषोत्तर पर्वत तथा उसका उत्सेधादि—

कासोदय - जगदीशो<sup>१</sup>, समंततो अट्ट-लक्ष-जोयजया ।

गंतूर्णं तप्परिबो, परिवेद्वि<sup>२</sup> माणुसुत्तरो<sup>३</sup> सेतो ॥२७६२॥

८००००० ।

अर्थ :- कासोदकसमुद्रकी जगतीसे चारों ओर आठ लाख ( ८००००० ) योजन प्रमाण जाकर मानुषोत्तर नामक पर्वत उस द्वीपको सब ओर वेष्टित किये हुए है । २७६२॥

मूलवर्णिक :- आचार्य श्री सुबोधितभारती जी महाराज

तप्परिबो उच्छेत्तो, सत्तरस - सयाणि एकवीसं<sup>४</sup> च ।

तोसवर्गह्रियं जोयज - अट्टस्सया गाढमिणि - कोसं ॥२७६३॥

१७२१<sup>५</sup> । ४३० को १ ।

अर्थ :- इस पर्वतकी ऊँचाई सत्तरहत्ती हक्कीस ( १७२१ ) योजन और अवगाह ( नौव ) चारसी तीस ( ४३० ) योजन तथा एक कोस प्रमाण है ॥२७६३॥

जोयज - सहस्त्रमेकह्रं, आचीसं सग - सयाणि सेवीसं ।

अट्ट-सय-अट्टवीसाहं, कम-हंवा मूल-मज्झ-सिहरेसुं<sup>६</sup> ॥२७६४॥

१०२२ । ७२३ । ४२४ ।

अर्थ :- इस पर्वतका विस्तार मूल, मध्य और शिखरपर क्रमशः एक हजार नार्ईस ( १०२२ ) योजन सातसी तेईस ( ७२३ ) और चारसी चौबीस ( ४२४ ) योजन प्रमाण है ॥२७६४॥

१. द. व. क. ज. उ. पमरीशो । २. व. क. ज. उ. परिवेद्वि । ३. व. माणुसुत्तरा, ग. क. उ.

माणुसुत्तर । ४. द. एकतीसं । ५. व. १७३१ । ६. व. द. क. उ. मूलमज्झ, ग. मज्झमूल ।

अभ्यन्तरम्भि मागे, टंकुबिकम्भो बहिम्भि कम - हीनो ।

सुर-खेपर-मण-हरणो, अणाइजिहणो सुवण - णिहो ॥२७६५॥

अर्थ :- देवों तथा विद्याधरोंके मनको हरनेवाला, अनादिनिघन और सुवर्णके सदृश यह मानुषोत्तर पर्वत अभ्यन्तरभागमें टंकुत्कीर्ण और बाह्यभागमें क्रमणः हीन है ॥२७६५॥

गुफाओंका वर्णन—

चोदस गुहाओ तस्सि, समंतदो होति दिव्व-रमणमई<sup>१</sup> ।

विजयार्ण बहुमज्जे, पणिहीसु कुरंत - किरणाओ ॥२७६६॥

अर्थ :- उस ( मानुषोत्तर ) पर्वतमें चारों ओर क्षेत्रोंके बहुमध्यभागमें उनके पार्श्वभागोंमें प्रकाशमान किरणोंसे संयुक्त दिव्यरत्नमय चौदह गुफाएँ हैं ॥२७६६॥

साण गुहाओ एवे, उदय बहुसम्मि अणु उवणसो ।

काल - वसेण पणट्ठो, सरिकूले जाव - विवधो म्व ॥२७६७॥

अर्थ :- उन गुफाओंके विस्तार, ऊँचाई और बाह्यका उपदेश कालवश हमारे लिए नदी-तटपर उत्पन्न हुए वृक्षके सदृश नष्ट हो गया है ॥२७६७॥

तट-वेदी तथा वनखण्ड—

अभ्यन्तर - बाहिरए, समंतदो होदि दिव्व - तट - वेदी ।

जोयण - वलमुज्जेहो, पण - सय - चावाणि विवधारी ॥२७६८॥

३ । दं ५०० ।

अर्थ :- इस पर्वतके अभ्यन्तर तथा बाह्यभागमें चारों ओर दिव्य तट-वेदी है; जिसका उत्तरेष आघा ( ३ ) योजन और विस्तार पाँचसौ ( ५०० ) अनुष प्रमाण है ॥२७६८॥

जोयण-वस-वास-जुओ, अभ्यन्तर - बाहिरम्भि वससंडो ।

पुण्विल्ल - वेदिएहि, समाण - वेदीहि परियरिओ ॥२७६९॥

३ ।

अर्थ :—उसके अभ्यन्तर तथा बाह्यभागमें पूर्वोक्त वेदियोंके सदृश वेदियोंसे व्याप्त और अर्धयोजन प्रमाण विस्तारवाला वनखण्ड है ॥२८०१॥

उभरो वि 'मानुषोत्तर, समंततो दोष्णिह होंति तद्वेदी ।

अर्धभंतरम्मि भागे, वनसंडो वेदि - तोरणेहि जुदो ॥२८००॥

अर्थ :—मानुषोत्तरपर्वतके ऊपर भी चारों ओर दो तटवेदियाँ हैं । इनके अभ्यन्तर भागमें वेदी तथा तोरणोंसे संयुक्त वनखण्ड स्थित है ॥२८००॥

मानुषोत्तरका बाह्य सूची व्यास तथा परिधि—

विडणम्मि सेल-वासे, जोयण-लक्खारिण सिवसु पणवालं ।

तप्परिमाणं सूई, बाहिर - भागे गिरिहस्स ॥२८०१॥

४५०२०४४ ।

अर्थ :—इस पर्वतके दुगुने विस्तारमें पैंतासीस लाख योजन मिला देनेपर उसकी बाह्य-सूचीका प्रमाण प्राप्त होता है ॥२८०१॥

$१०२२ \times २ + ४५००००० = ४५०२०४४$  यो० बाह्य व्यास ।

एक्को जोयण - कोडी, लक्खा बावाल तीस-छ-सहस्सा ।

तेरस-जुव-सस-सया, परिहीए बाहिरम्मि 'अविरेओ ॥२८०२॥

१४२३६७१३ ।

अर्थ :—इस पर्वतकी बाह्य-परिधि एक करोड़ बयासीस लाख छत्तीस हजार सातसी तेरह ( १४२३६७१३ ) योजनसे अधिक है ॥२८०२॥

अविरेयस्स<sup>१</sup> पमाणं, सहस्समेवकं च तीस अर्धहियं<sup>२</sup> ।

ति - समं षण्णु इमि - हत्थो, बहंगुत्ताइं जवा पंच ॥२८०३॥

४ १३३० । ह १ । अं १० । ज ५ ।

अर्थ :—यह बाह्य-परिधि १४२३६७१३ योजन प्रमाणसे जितनी अधिक है, उस अधिकताका प्रमाण एक हजार तीससी तीस ( १३३० ) षण्णु, एक हाथ, दस बंगुल और पाँच ओ है ॥२८०३॥

१. व. व. क. ज. उ. मणोसुत्तर । २. व. व. क. ज. उ. अविरेओ । ३. व. व. क. ज. उ. अवि-

रेयस्स । ४. व. ज. अर्धहिय ।

विशेषार्थ :—मानुषोत्तर पर्वतका मासुसूची व्यास ४५०२०४४ योजन है । इसकी परिधि

$\sqrt{4502044^2 \times 10} = 14236713$  योजन, १३३० धनुष, १ हाथ, १० अंगुल, ५ औं, ० जू, २ लीक, ७ कर्मभूमिके बाल ४ जघन्य भो० के बाल, ५ मध्यम भो० के बाल और ३१३३३३३३३ उत्तम भो० के बाल प्रमाण है ।

मानुषोत्तर पर्वतके अर्धन्तर सूची व्यास और परिधिका प्रमाण—

परावाल-सकल-संज्ञा, सूई अर्धन्तरम्भि भागम्भि ।

एष-चउ-बु-ल-सिय-बो-चउ-इगि-अंक-कमेणेन परिहि-जोयणया ॥२८०४॥

४५००००० । १४२३०२४६ ।

अर्थ :—अर्धन्तरभागमें इस पर्वतकी सूची पैंतालीस लाख ( ४५००००० ) योजन है और परिधि भी चार, दो, शून्य, तीन, दो, चार और एक, इस अंक-क्रमसे जो संख्या उत्पन्न हो उतने योजन प्रमाण है ॥२८०४॥

$\sqrt{4500000^2 \times 10} = 14230246$  योजन परिधि है और १३३६७६६६ वर्ग योजन अवशेष रहे जो छोड़ दिए गये हैं ।

समवृत्त क्षेत्रका क्षेत्रफल निकालनेका विधान—

सूचीए कविए कवि, वस-गुण-मूलं च लब्ध चउ-भजिर्ब ।

सम - चट्ट - वसुमईए, हवेदि तं सुदृम - लोतफलं ॥२८०५॥

अर्थ :—सूचीके वर्गके वर्गको उससे गुणा करके उसके वर्गमूलमें चारका भाग देनेपर जो लब्ध प्राप्त हो उतना समान गोल क्षेत्रका सूक्ष्म क्षेत्रफल होता है ॥२८०५॥

मानुषोत्तर पर्वतके क्षेत्रफल सहित मनुष्य लोकका सूक्ष्म क्षेत्रफल—

अभ-एकक-पंच-बुग-सग-बुग-सग-सग-पंच-ति-बु-ल-सकल-का ।

अंक - कमे लोतफलं, मजुस - जगे सेल - फल - चुरा ॥२८०६॥

१६०२३५७७२७२५१० ।

अर्थ :—मानुषोत्तर पर्वतके क्षेत्रफल सहित मनुष्यलोकका क्षेत्रफल शून्य, एक, पाँच, दो, सात, दो, सात, सात, पाँच, तीन, दो, शून्य, छह और एक, इस अंक-क्रमसे जो संख्या उत्पन्न हो उतने ( १६०२३५७७२७२५१० ) योजन प्रमाण है ॥२८०६॥





मानुषोत्तर पर्वतस्थ बाईस कूटोंका निरूपण—

उत्तरिन्मि मानुसुत्तर-गिरिजो<sup>१</sup> बाबीस दिव्य-कूडाणि ।

पुष्पविन्दो<sup>२</sup> विसासुं, सज्जगंधी तिष्ठि<sup>३</sup> तिष्ठि<sup>४</sup> भेदु<sup>५</sup> ति ॥२८०६॥

अर्थ :—इस मानुषोत्तर पर्वत पर बाईस दिव्य कूट हैं । इनमें पूर्वादिक चारों दिशाओंमेंसे प्रत्येकमें तीन-तीन कूट हैं ॥२८०६॥

वेतालिय<sup>६</sup>-असुमगन्धा, सज्जगंधी तिष्ठि पुष्प - विभाण ।

रजगो सोहिय - अंजन - नामा दक्षिण - विभागम् ॥२८१०॥

अर्थ :—इनमेंसे वेदूयं, असुमगंधं और सोगन्धी, ये तीन कूट पूर्व-दिशामें तथा रजक, सोहित और अंजन नामक तीन कूट दक्षिण-दिशा-भागमें स्थित हैं ॥२८१०॥

अंजन<sup>७</sup> - मूलं कणयं, रजहं नामेहि पच्छिम - विसाण ।

फडिहं<sup>८</sup> - पथासाइं, कूडाहं<sup>९</sup> उत्तर - विसाण ॥२८११॥

अर्थ :—अंजनमूल, कनक और रजत नामक तीन कूट पश्चिम-दिशामें तथा स्फटिक, अंकु और प्रवाल नामक तीन कूट उत्तरदिशामें स्थित हैं ॥२८११॥

तवणिकज-रयण-नामा, कूडाहं<sup>१०</sup> दोष्णि वि द्रुवास्तव-विसाण ।

ईसाण - विसाभागे, पार्हजणो वज्ज - एगामो ति ॥२८१२॥

अर्थ :—तपनीय और रत्न नामक दो कूट अग्नि-दिशामें तथा प्रभञ्जन और वज्र नामक दो कूट ईशान-दिशाभागमें स्थित हैं ॥२८१२॥

एकतो विषय वेसंबो, कूडो वेदुवि मासव-विसाण ।

अहरिवि - विसा - विभागो, नामेणं सज्ज - रयणो ति ॥२८१३॥

अर्थ :—वायव्य-दिशामें केवल एक वेतस्वकूट और नैऋत्य दिशा भागमें सर्वरत्न नामक कूट स्थित है ॥२८१३॥

१. द. अ. तिरिया । २. अ. अ. वेसुरिय । ३. अ. अ. अंजनमूलं कहो रजमणामेहि, अ. अंजन-

मूलं कणयं रजमणामेहि, क. अजसुमूले कणयं रजमणामेय, द. अ. अंजनमूलं कणयं । ४. द. अ. क. अ. उ. पडिहं । ५. द. अ. क. अ. उ. कूडाहं ।

पुष्पावि-चउ-विसासुं, वणिगद - कूडाण अण - सुसीसुं ।

एक्केक्क सिद्ध - कूडा, होंति वि मणसुत्तरे सेले ॥२८१४॥

अर्थ :—मानुषोत्तर पर्वतपर पूर्वदिक् चारों दिशाओंमें बनेलगे हुए कूटोंकी अण-भूमियोंमें एक-एक सिद्ध-कूट भी है ॥२८१४॥

कूटोंकी ऊँचाई तथा विस्तारादिक—

गिरि-उवय-अउअभागो, उवयो कूडाण होवि पत्तेक्कं ।

तेत्तियमेत्तो' इंदो, मूले सिंहरे तवद्धं च ॥२८१५॥

४३० । को १ । ४३० को १ । २१५ । ३ ।

अर्थ :—इन कूटोंमेंसे प्रत्येक कूटकी ऊँचाई, पर्वतकी ऊँचाईके चतुर्थ भाग { ( १७२१ यो० ÷ ४ ) = ४३० यो० १ कोस } प्रमाण तथा मूलमें इतना ( ४३० ३/४ यो० ) ही उनका विस्तार है । शिखर पर इससे आधा ( ४३० ३/४ यो० ÷ २ = २१५ यो० ३/४ कोस ) विस्तार है ॥२८१५॥

मूल-सिहुराण इंदं, मेत्तिथ वत्तिवम्मि होवि अं लद्धं ।

पत्तेक्कं कूडाणं, मणिकम - विक्कंभ - परिमाणं ॥२८१६॥

३२२ । को २ । ३ ।

अर्थ :—मूल और शिखर-विस्तारको मिलाकर आधा करनेपर जो प्राप्त हो उतना ( ४३० ३/४ + २१५ ३/४ यो० ÷ २ = ३२२ ३/४ यो० अर्थात् ३२२ योजन, २ ३/४ कोस ) प्रत्येक कूटके मध्यम विस्तारका प्रमाण है ॥२८१६॥

कूटोंपर वनखण्ड, जिनमन्दिर तथा प्रासादोंकी अवस्थिति—

मूलम्मि य सिंहरम्मि म, कूडाणं होंति दिव्व-वनसंडा ।

मणिमय - मंदिर - रम्मा, वेदी - पट्टवीहिं सोहिल्ला ॥२८१७॥

अर्थ :—कूटोंके मूल तथा शिखरपर मणिमय मन्दिरोंसे रमणीय और वेदिकाओंसे सुशोभित दिव्य वनखण्ड हैं ॥२८१७॥

चेदुंति मानुसुत्तर - सेसस्स य चउसु सिद्ध - कूडेसुं ।

अत्तारि जिण - निकेदा, रिणसह-जिणमयण-सारिज्झा ॥२८१८॥

अर्थ :—मानुषोत्तर-पर्वतके चारों सिद्ध-कूटोंपर निषधपर्वत स्थित किमभवमोंके सदृश चार जिनमन्दिर स्थित हैं ॥२८१८॥

सेसेसुं कूडेसुं, बेंसर - वेद्यान दिव्य - पासावा ।

वर - रयण - कंबलमया, पुष्पोदिव - वज्रगोहि जुदा ॥२८१९॥

अर्थ :—येष कूटोंपर पूर्वोक्त वर्णनाश्रोंसे संयुक्त व्यन्तरदेवोंके उत्तम रत्नमय एवं स्वर्णमय दिव्य प्रासाद हैं ॥२८१९॥

कूटोंके अधिपति देव—

पुम्ब - विसाए अस्तस्सवि-जसोधरा तिमोषरा ति कूडेसुं ।

कमसो अहिवइ - वेवा, बहुपरिवारेहि चेहुंति ॥२८२०॥

अर्थ :—मानुषोत्तर-शैलके पूर्व-दिशा-सम्बन्धी तीन कूटोंपर क्रमशः यशस्वान्, यशस्कान्त और यशोधर नामक तीन अधिपति देव बहुत परिवारके साथ निवास करते हैं ॥२८२०॥

अशिल्लण - विसाए अंदो, सांनुत्तर-अससिघोस-गामा य ।

कूड - तिवयम्मि बेंसर - वेवा जिवसंति लीलाहि ॥२८२१॥

अर्थ :—इसीप्रकार दक्षिण-दिशाके तीन कूटोंपर नन्द ( नन्दन ), नन्दोत्तर और अशनि-घोष नामक तीन व्यन्तरदेव लीला-पूरुषक निवास करते हैं ॥२८२१॥

सिद्धत्थो वेसवणो, माणुसवेओ ति पच्छिम - विसाए ।

जिवसंति ति - कूडेसुं, तगिरिओ बेंतराहिवई ॥२८२२॥

अर्थ :—उस पर्वतके पश्चिम-दिशा-सम्बन्धी तीन कूटोंपर सिद्धार्थ वैश्वरूप और मानुसदेव, ये तीन व्यन्तराधिपति निवास करते हैं ॥२८२२॥

उत्तर - विसाए वेओ, सुवसणो मेध - सुप्पबुद्धवत्ता ।

कूड - तिवयम्मि कमसो, हुंति हु मणुसुत्तर - गिरिस्स ॥२८२३॥

अर्थ :—मानुषोत्तरपर्वतके उत्तरदिशा-सम्बन्धी तीन कूटोंपर क्रमशः सुवर्चन, मेध ( अमोघ ) और सुप्रबुद्ध नामक तीन देव स्थित हैं ॥२८२३॥

अग्नि - विसाए सावीवेओ तवशिण्ण - नाम - कूडम्मि ।

चेहुंति रयण - कूडे, अर्धनिदो वेणु - गामेसो ॥२८२४॥

**अर्थ** :—दक्षिणदिशाके तपनीय नामक कूटपर स्वातिषेख और रत्नकूटपर वेणु नामक भवनेन्द्र स्थित है ॥२८२४॥

**विशाल - विज्ञान - कूट - हनुमान - वज्रनाभि - कूटम् ।**

**वसति 'प्रभञ्जन - कूट, भवनिबो वेणुधारि सि ॥२८२५॥**

**अर्थ** :—ईशान-दिशाके वज्रनाभि-कूटपर हनुमान नामक देव और प्रभञ्जनकूटपर वेणुधारी ( प्रभञ्जन ) भवनेन्द्र रहता है ॥२८२५॥

**खेलंज - नाम - कूट, खेलंजो नाम माख - विसाए ।**

**सख्ययज्जम् गङ्गरिबि - विसाए सो वेणुधारि सि ॥२८२६॥**

**अर्थ** :—वायव्यदिशाके खेलम्ब नामक कूटपर वेजम्ब नामक और नैऋत्य-दिशाके सखरत्न-कूटपर वेणुधारी ( वेणुनीत ) भवनेन्द्र रहता है ॥२८२६॥

**गङ्गरिबि-पवरा-विज्ञाओ, वज्जिय अङ्गुसु विसासु पसेक्क ।**

**तिय तिय कूडा सेसं, पुब्बं वा केइ इच्छंति ॥२८२७॥**

**माणुसुत्तरगिरि-वज्जय समस' ।**

**अर्थ** :—आठ दिशाओंमेंसे नैऋत्य और वायव्य दिशाओंके प्रतिरिक्त शेष दिशाओंमेंसे प्रत्येकमें तीन-तीन कूट हैं । शेष वर्णन पूर्वके ही सदृश है, ऐसा कितने ही आचार्य स्वीकार करते हैं ॥२८२७॥

इसप्रकार मानुषोत्तर पर्वतका वर्णन समाप्त हुआ ।

पुष्करार्चमें इष्वाकार पर्वतोंकी स्थिति—

**अबिदूक - माणुसुत्तर - सेलं कालोदयं च इसुगारा ।**

**उत्तर - वज्जिय - भागे, तद्दीगे बोणि विदु'ति ॥२८२८॥**

**अर्थ** :—उत्त पुष्करार्चद्वीपके उत्तर और वज्जियभागमें मानुषोत्तर तथा कालोदक समुद्रको स्पर्श करते हुए दो इष्वाकार पर्वत स्थित हैं ॥२८२८॥

धावइसंड-पवणिगड-इसुगार-गिरिड - सरिस - वण्णगया ।

आयामेणं दुगुणं, बीवस्मि य पोक्करद्वस्मि ॥२८२६॥

अर्थ :- पुष्करार्धद्वीपमें स्थित वे दोनों पर्वत धातकीखण्डमें वर्णित इध्वाकार पर्वतोंके सदृश वर्णितवाले हैं, किन्तु आयाममें दुगुने हैं ॥२८२६॥

दोनों इध्वाकारोंके अन्तरालमें स्थित विजयादिकोंका आकार तथा संख्या—

दोण्हं इसुगाराणं, विजयासे भूति विजया विजया

चक्रद्व - समायारा, एक्केवका तासु मेरुगिरी ॥२८३०॥

अर्थ :- इन दोनों इध्वाकार पर्वतोंके बीचमें चक्रद्वके सदृश आकारवाले दो उत्तम ( विदेह ) क्षेत्र हैं और उनमें एक-एक मेरु पर्वत है ॥२८३०॥

धावइसंडे बीबे, जेतिय - कुंडाणि जेतिया विजया ।

जेटिय - सरवर' जेतिय - सेलवरा जेतिय - नईओ ॥२८३१॥

पोक्करद्वीवद्वेसुं, जेतियमेसाणि ताणि चेट्टुति ।

दोण्हं इसुगाराणं, गिरीण विज्जाल - भाएसुं ॥२८३२॥

अर्थ :- धातकीखण्डद्वीपमें जितने कुण्ड, जितने क्षेत्र, जितने सरोवर, जितने श्रेष्ठ पर्वत और जितनी नदियाँ हैं, उतने ही सब पुष्करार्धद्वीपमें भी दोनों इध्वाकार-पर्वतोंके अन्तराल-भागोंमें स्थित हैं ॥२८३१-२८३२॥

तीन द्वीपोंमें विजयादिकोंकी समानता—

विजया विजयाण तहा, वेयड्ढाणं हवसि वेयड्ढा ।

मेरुगिरीणं वेरु, कुल - सेसा कुलगिरीणं च ॥२८३३॥

सरियाणं सरियाओ, नाभिगिरिवाण नाभि - सेसाणि ।

पण्णधिगदा' तिय - बीबे, उस्सेह - समं विराण' मेरु' ॥२८३४॥

अर्थ :- तीनों द्वीपोंमें पण्णधिगत विजयोंके सदृश विजय, विजयाधोंके सदृश विजयाध, मेरुपर्वतोंके सदृश मेरु पर्वत, कुलगिरियोंके सदृश कुलगिरि, नदियोंके सदृश नदियाँ तथा नाभिगिरियोंके सदृश नाभि-पर्वत हैं । इनमेंसे मेरु-पर्वतके प्रतिरिक्त शेष सबकी ऊँचाई कदाहू है ॥२८३३-२८३४॥

कुल-पर्वतादिकोंका विस्तार—

एवामं चंवारिण, जंबूद्वीपम्भि भविष - हंवायो ।

एत्थ कउगुणिवाहं, जेयाहं जेण 'पठम - विणा ॥२८३५॥

अर्थ :—सब प्रथम कहे हुए विजयों ( क्षेत्रों ) को छोड़ इनका विस्तार यही जम्बूद्वीपमें बतलाये हुए विस्तारसे चौगुना जानना चाहिए ॥२८३५॥

मुष्का मेरुगिरिहं, कुसगिरि - पट्टदीणि बीज-तिदयम्भि ।

विस्थारुच्छेह - समो, केई एवं पक्खेति ॥२८३६॥

पाठान्तरं ।

अर्थ :—मेरुपर्वतके प्रतिरिक्त शेष कुलाचल आदिकोंका विस्तार तथा ऊँचाई तीनों द्वीपोंमें समान है, ऐसा कितने ही आचार्य निरूपण करते हैं ॥२८३६॥

पुष्करार्धस्थित विजयार्ध तथा कुलाचलोंका निरूपण— पाठान्तरम् ।

पुष्करार्ध-स्थित विजयार्ध तथा कुलाचलोंका निरूपण—

अविदूष माणुसुत्तर - सेसं कालोदकं च वेहुंति ।

चत्वारो विजयइहा, वोवइहे चारस कुलही ॥२८३७॥

अर्थ :—पुष्करार्धद्वीपमें चार विजयार्ध तथा चारह कुल-पर्वत मानुसुत्तर पर्वत और कालोदक समुद्रको छूकर स्थित हैं ॥२८३७॥

बीजम्भि पोषसरइहे, कुल-सेसादी तहय वोह-विजयइहा ।

अभ्यन्तरम्भि बाहि, अंकमुहा ते 'सुरूप्य - संठाणा ॥२८३८॥

अर्थ :—पुष्करार्धद्वीपमें स्थित वे कुलपर्वतादिक तथा दीर्घ-विजयार्ध अभ्यन्तर तथा बाह्य-भागमें क्रमशः अंकमुख और सुरूपके सदृश आकारवाले हैं ॥२८३८॥

विजयादिकोंके नाम—

बज्जिमय जंबू-सामलि-नामाहं विजय-सर-गिरि-प्यहुंति ।

जंबूद्वीप - समाभं, नामाणि एत्थ वलब्धा ॥२८३९॥

अर्थ :—यहाँ अम्बू और शास्मली कृतके नाम छोड़कर क्षेत्र क्षेत्र, तालाब और पर्वतादिकके नाम अम्बूदीपके समान ही कहने चाहिये ॥२८३९॥

दोनों भरत तथा ऐरावत क्षेत्रोंकी स्थिति—

दो-पासेसु य वविक्रज-इसुगार-गिरिस्स दो भरह - सेता ।

उत्तर - इसुगारस्स य, ह्वंति ऐरावदा शोष्णि ॥२८४०॥

अर्थ :—दक्षिण इष्वाकार पर्वतके दोनों पार्श्वभागोंमें दो भरतक्षेत्र और उत्तर इष्वाकार पर्वतके ( दोनों पार्श्वभागोंमें ) दो ऐरावत क्षेत्र हैं ॥२८४०॥

सब विजयोंकी स्थिति तथा आकार—

शोष्णं इसुगाराणं, बारस - कुल - पम्बयाण विक्खाले ।

वेद्वंति सयल - विजया, भर-विवर-सरिक्ख-संठाणा ॥२८४१॥

अर्थ :—दोनों इष्वाकार और बारह कुल-पर्वतोंके अन्तरालमें चक्र ( पहिए ) के शरीरके छेदोंके सदृश आकारवाले सब विजय स्थित हैं ॥२८४१॥

अंकायारा विजया, ह्वंति अकभंतरम्मि भागम्मि ।

सत्तिमुहं पिब वाहि, सयबुद्धि-समा वि पस्स - भुजा ॥२८४२॥

अर्थ :—सब क्षेत्र अभ्यन्तरभागमें अंकाकार और बाह्यभागमें शक्तिमुख हैं । इनकी पार्श्व-भुजायें गाढ़ीकी उद्विगे सदृश हैं ॥२८४२॥

कुलाचल तथा इष्वाकार-पर्वतोंका विष्कम्भ—

अचारि सहस्साणि, सु-सया दस-सोवणाणि दस-भागा ।

विक्खंभो हिमवन्ते, विसंभुत खडगुजो कमसो ॥२८४३॥

४२१० । ३३ । १६८४२ । ३३ । ६७३६८ । १६ ।

अर्थ :—हिमवान्-पर्वतका विस्तार चार हजार दोसो दस योजन और एक योजनके उन्नीस भागोंमेंसे दस-भाग अधिक ( ४२१०  $\frac{१६}{३३}$  यो० प्रमाण ) है । इसके भागे त्रिषष्ठ-पर्वत पर्यन्त क्रमशः उत्तरोत्तर बीगुना (अर्थात् १६८४२  $\frac{१६}{३३}$  योजन और ६७३६८  $\frac{१६}{३३}$  योजन) विस्तार है ॥२८४३॥

एवाणं ति - एगाणं, विक्खंभं मेत्तिबूरा खड - गुणिवं ।

सव्वाणं नादणं, रुंण - समाणं कुल - गिरीणं ॥२८४४॥



अर्थ :—इन तीनों पर्वतोंके विस्तारको मिलाकर चौगुना करनेपर जो प्राप्त हो उतने  
 [ ( ४२१०२१ + १६८४२३ + ६७३६८६ ) × ४ = ३५३६८४६ ] योजन-प्रमाण सब कुल-पर्वतों  
 का समस्त विस्तार जानना चाहिए ॥२८४४॥

दोण्हं इसुगाराणं, विवसंभं वे - सहस्स - जोयणया ।

तं पुब्बस्मि विमिस्सं, वीवद्धे सेस - वद्ध - सिदी ॥२८४५॥

२०००

अर्थ :—दोनों इच्छाकार पर्वतोंका विस्तार दो हजार योजन प्रमाण है । इसको पूर्वोक्त  
 कुल-पर्वतोंके समस्त विस्तारमें मिला देनेपर पुष्कराध्वीपमें पर्वतवृद्ध-क्षेत्रका प्रमाण ( २००० +  
 ३५३६८४६ = ३५५६८४६ योजन ) प्राप्त होता है ॥२८४५॥

जोयण-सवस-सिवयं, पणवण्ण - सहस्स ध्वस्सयाणि पि ।

सवसीवि सववभागा, गिरि-वद्ध-सिदीए परिमाणं ॥२८४६॥

३५५६८४ । १६ ।

अर्थ :—पर्वत-वृद्ध-क्षेत्रका प्रमाण तीन लाख पचपन हजार छहसी चौरासी योजन और  
 चार-भाग अधिक ( ३५५६८४६ योजन ) है ॥२८४६॥

भरतादि क्षेत्रोंके आदिम, मध्यम और अन्तिम विष्कम्भ लानेका विधान—

आविम-परिहि-म्वहुधी - अरिमंतं इच्छिवाण परिहीसुं ।

गिरि-वद्ध-सिदि सोहिय, बारस-सुव-वे-सएहि भजिवूणं ॥२८४७॥

सग-सग-सलाय-गुणिवं, होवि पुढं भरह-महुदि-विजयाणं ।

इच्छिव - पवेस - वंवा, तहि तहि तिण्णि नियमेण ॥२८४८॥

अर्थ :—पुष्कराध्वीपकी आदिम परिधिसे लेकर अन्तिमान्त इच्छित परिधियोंमेंसे  
 पर्वतवृद्ध क्षेत्र कम करके शेषमें दोसी बारहका भाग देनेपर जो सव्य भागे उसको अपनी-अपनी  
 कलाकासे गुणा करनेपर नियमसे भरतादिक क्षेत्रोंका वहाँ-वहाँ इच्छित स्थान ( आदि, मध्य और  
 अन्त ) में तीनों प्रकारका विस्तारप्रमाण प्राप्त होता है ॥२८४७-२८४८॥

६१७०६०५ — ३५५६८४ ÷ २१२ × १ = ४१५७६३३३ य० क्ष० का आदि वि० ।

ग्रहवा—

भरहाविसु विजयाणं, बाहिर - वंवस्मि आविमं वंवं ।

सोहिय अत्र - सवस - हिवे, सप-महुदी इच्छिव - पवेसे ॥२८४९॥

अर्थ :—भरतादिक क्षेत्रोंके बाह्य-विस्तारमेंसे आदिम विस्तार घटाकर जो शेष रहे उसमें आठ लाखका भाग देनेपर इच्छित स्थानमें क्षय-वृद्धिका प्रमाण प्राप्त होता है ॥२८४६॥

(  $६५४४६३\frac{१}{३} - ४१५७६३\frac{१}{३}$  )  $\div ८००००० = ३१८४००००$  यो० हानि-वृद्धिका प्रमाण ।

भरतादि सातों क्षेत्रोंका अभ्यन्तर विस्तार

एकलक्षात् - सहस्रा, पंच-सया जोमणाणि उगसीवी ।

तेहसरि - उत्तर - तव - कलाओ अबभंतरे भरह-रवं ॥२८५०॥

४१५७६ । ३१३ ।

अर्थ :—भरतक्षेत्रका अभ्यन्तर विस्तार एकतालीस हजार पाँचसौ उग्यासी योजन और एकसौ तेहसर भाग अधिक (  $४१५७६३\frac{१}{३}$  योजन प्रमाण ) है ॥२८५०॥

भरहस्त मूल - रवं, चउ - गुणिबे होवि हेमवबभूए ।

अबभंतरम्मि रवं, तं हरिवरिसस्त चउ - गुणिबं ॥२८५१॥

१६६३१६ । ६१३ । ६६४२७७ । २१३ ।

अर्थ :—भरतक्षेत्रके मूल-विस्तारको चारसे गुणा करनेपर हैमवतक्षेत्रका अभ्यन्तर विस्तार और इसको भी चारसे गुणा करनेपर हरिवर्षका अभ्यन्तर विस्तार प्राप्त होता है ॥२८५१॥

१६६३१६३१३ यो० हैमवतका और ६६४२७७३१३ यो० हरिक्षेत्रका विस्तार है ।

हरि - वरिसो चउ-गुणिबो, रंयो अबभंतरे विदेहस्त ।

सेस - वरिसाण रवं, पत्तेवकं चउगुणा हाणी ॥२८५२॥

२६६११०८ । ६१३ । ६६४२७७ । ३१३ । १६६३१६ । ६१३ । ४१५७६ । ३१३ ।

अर्थ :—हरिवर्ष-क्षेत्रके विस्तारको चारसे गुणा करनेपर विदेहका अभ्यन्तर विस्तार (  $२६६११०८६१३$  यो० ) प्राप्त होता है । फिर इसके आगे शेष क्षेत्रोंके विस्तारमें क्रमशः चौगुनी हानि होती गई है ॥२८५२॥

६६४२७७३१३ यो० रम्यक का, १६६३१६३१३ यो० हैरम्यवतका तथा ४१५७६३१३ यो० ऐरावत क्षेत्रका विस्तार है ।

एवं सग - सग - विजयार्णं आदिम - हं व - पशुदीओ ।

बाहिर<sup>१</sup> - जरिम - पदेसे, हं वंतिमं स्ति वसत्त्वं ॥२८५३॥

अर्थ :—इस प्रकार अपने-अपने क्षेत्रका आदिम विस्तारादि है । अब बाह्य चरम-प्रदेशपर इनका अन्तिम विस्तार कहा जाता है ॥२८५३॥

भरतक्षेत्रका बाह्य विस्तार—

पञ्चसङ्घि<sup>२</sup> - सहस्त्राणि, चतुस्सया जोगणानि द्वावर्त्तं ।

तेरह कलाओ भणिवं, भरहस्त्रिभि - बाहिरे हं वं ॥२८५४॥

६५४४६ १ ५१ १/२ ।

अर्थ :—भरतक्षेत्रके बाह्य-भागका विस्तार पैंसठ हजार चारसी छपासीस योजन और तेरह कला अधिक ( ६५४४६ १/२ योजन प्रमाण ) कहा गया है ॥२८५४॥

( १४२३०२४९ — ३५५६८४५२ ) ÷ २१२ × १ = ६५४४६ १/२ योजन ।

अन्य क्षेत्रोंका बाह्य विस्तार—

एत्थ वि पुच्छं<sup>३</sup> व नेद्वर्त्तं ।

अर्थ :—यहिलेके सहस्र वहाँपर भी हैमवतादिक-क्षेत्रोंका विस्तार चौगुनी वृद्धि एवं हानि-रूप जानना चाहिए ।

विशेषार्थ :—हैमवत क्षेत्रका बाह्य विस्तार २६१७८४ २/३ योजन, हरि क्षेत्रका १०४७१३ ६३३३ योजन, विदेहका ४१८८५४७ ३/३ योजन, रम्यकका १०४७१३ ६३३३ योजन, हैरम्यवतका २६१७८४ २/३ योजन और ऐरावतक्षेत्रका ६५४४६ १/२ योजन प्रमाण है ।

पञ्चद्रह तथा पुण्डरीक द्रहसे निकली हुई नदियोंके पर्वतपर बहनेका प्रमाण—

पुच्छारवरद्ध - बीबे, सुस्तय-हिमवत-सिहरि-मणिभल्ले ।

पञ्चमह<sup>४</sup> - पुं बरीए, पुच्छवर-विसम्मि जिग्मह-रादीओ ॥२८५५॥

अद्भुतक-छ-अद्भु-तिपं, अंककमे जोगणानि गिरि-उधरि ।

गंतुणं परोक्षं, वक्खिण - उत्तर - विसम्मि अंति कमे ॥२८५६॥

२८६१८ ।

१. ह. व. क. ज. उ. बाहिरहुजरिमपदेसे हं वंतिवति । २. ह. ज. पण्डु । ३. ह. व. क. ज. उ. पुच्छं नेद्वर्त्तं । ४. ह. व. क. ज. उ. पञ्चमहसह ।

अर्थ :—पुष्करार्धद्वीपमें क्षुद्रहिमवान् और शिखरी पर्वतपर स्थित पद्मग्रह तथा पुण्डरीक-  
ग्रहके पूर्व और पश्चिम दिशासे निकली हुई नदियाँ घाट, एक, छह, घाट और तीन इस अंक क्रमसे जो  
संख्या उत्पन्न उतने प्रमाण अर्थात् अड़तीस हजार छहसौ अठारह ( ३८६१८ ) योजन पर्वतपर जाकर  
क्रमशः प्रत्येक दक्षिण तथा उत्तर दिशाकी ओर जाती हैं ॥२८५५-२८५६॥

पुष्करार्धद्वीपमें स्थित मेरुओंका निरूपण—

चावइसंड - पञ्चभिद - दोणं मेरुण सठव - वण्णजयं ।

एत्थेव य वचब्बं, गयवंतं भइत्ताल - कुट - रहिवं ॥२८५७॥

अर्थ :—घातकीछण्डमें वर्णित दोनों मेरुओंका समस्त विवरण गजदन्त, भद्रशाल और  
कुरुक्षेत्रोंको छोड़कर यहाँ भी कहना चाहिए ॥२८५७॥

चारों गजदन्तोंकी बाह्याभ्यन्तर सम्बाई—

छक्केक्क-एक्क-छवुदुग - छक्केक्कं जोयणाणि मेरुणं ।

अडभंतर - भागट्टिय गयवंताणं चउत्थाणं ॥२८५८॥

१६२६११६ ।

अर्थ :—छह, एक, एक, छह, दो, छह और एक इस अंक क्रमसे जो संख्या उत्पन्न हो उतने  
( १६२६११६ ) योजन प्रमाण मेरुओंके अन्त्यन्तरभागमें स्थित चारों गजदन्तोंकी सम्बाई है ॥२८५८॥

जव-इणि-दो-दो-चउ-णभ-दो अंक-कमेज जोयणा दोहं ।

दो - मेरुणं बाहिर - गयवंताणं चउत्थाणं ॥२८५९॥

२०४२२१६ ।

अर्थ :—नी, एक, दो, दो, चार, शून्य और दो इस अंक-क्रमसे जो संख्या प्राप्त हो उतने  
( २०४२२१६ ) योजन प्रमाण दोनों मेरुओंके बाह्यभागमें स्थित चारों गजदन्तोंकी सम्बाई  
है ॥२८५९॥

कुरुक्षेत्रके घनुष, ऋजुबाण और जीवाका प्रमाण—

छत्तीसं लक्खणि, अडसट्ठि-सहस्स-ति-सय-पणत्तीता ।

जोयणाणि पोक्खर - दीवद्धे होदि कुट - चावं ॥२८६०॥

१६६८३३३ ।

अर्थ :—पुष्करार्धद्वीपमें कुरुक्षेत्रका घनत्व छत्तीस लाख अड़सठ हजार बीससौ बीस ( २६६८३३४ ) योजन प्रमाण है ॥२८६०॥

चोहस-जोयण-सक्खा, छासीवि-सहस्स-णव-सयाइ इगितीसा ।

उत्तर - देव - कुरुए, पत्तोकं होइ रिक्खु - बाणो ॥२८६१॥

१४८६६३१ ।

अर्थ :—उत्तर और देवकुरुमेंसे प्रत्येकका ऋजुबाण चौदह लाख छयासी हजार बीसो हकतीस ( १४८६६३१ ) योजन प्रमाण है ॥२८६१॥

खउ-जोयण-सक्खाणि, छत्तीस-सहस्स णव - सयाइ पि ।

सोलस - जुवाणि 'कुरसे, जीवाए होवि परिमाण ॥२८६२॥

४३६६१६ ।

अर्थ :—कुरुक्षेत्रकी जीवाका प्रमाण चार लाख छत्तीस हजार बीसो सोलह ( ४३६६१६ ) योजन प्रमाण है ॥२८६२॥

वृत्त-विष्कम्भ निकालनेका विधान—

इंसु-वर्ग खउ-गुणितं, जीवा-वर्गम्भ लिखसु तस्मि तवो ।

खउ - गुण - बाण - विहसो, लखं वट्टस्स विवसंभो ॥२८६३॥

अर्थ :—बाणके वर्गको चौगुनाकर उसे जीवाके वर्गमें मिला दे । फिर उसमें चौगुने बाणका भाग देनेपर जो सब्ब आवे उतना गोलक्षेत्रका विस्तार होता है ॥२८६३॥

( १४८६६३१<sup>२</sup> × ४ ÷ ४३६६१६<sup>२</sup> ) ÷ ( १४८६६३१ × ४ ) = १५१६०२६ योजन और कुछ अधिक ३३३ कला ।

कुरुक्षेत्रका वृत्तविष्कम्भ तथा वक्रबाणका प्रमाण—

पण्णारस - सक्खाणि, 'उणवीस-सहस्सयाणि छ्खीसा ।

इगितीस - खुव - सयंसा, पोक्खर - कुव-मंडले' सेतं ॥२८६४॥

१५१६०२६ । ३९३ ।



अर्थ :—पुष्करवर्द्धीपमें विदेहोंके विदि, भद्रशाल, विजय, वक्षार, विभंग-नदियाँ और देवारण्य पूर्व-पश्चिम तक विस्तृत है ॥२८६८॥

पञ्चोपपञ्चुली : २. वेदविद्योके पुष्करवर्द्धीपविस्तारका प्रमाण—

एदानीं परोक्षं, मंदर - सेलाण धरणि - पटुम्भि ।

जोयण - चउणवधि - सया, विक्खंभी पोक्खरद्धम्भि ॥२८६९॥

६४०० ।

अर्थ :—पुष्करवर्द्धीपमें इन मन्दर-पर्वतोंमेंसे प्रत्येकका विस्तार पृथिवी-पृष्ठपर नौ हजार चारसौ ( ६४०० ) योजन प्रमाण है ॥२८६९॥

दो लक्ष्मा पण्णरसा, सहस्स-सत्तय-सवहु-वण्णाओ ।

जोयणया पुग्गावर - दंवी एक्केक्क - भहसासाणं ॥२८७०॥

२१५७५८ ।

अर्थ :—प्रत्येक भद्रशालका पूर्वापर विस्तार दो लाख पन्द्रह हजार सातसौ अट्ठावन ( २१५७५८ ) योजन प्रमाण है ॥२८७०॥

उणवोस-सहस्साणि, सया-सया जोयणाणि चउणउवी ।

चउ - भागो परोक्कं, दंवा चउसट्ठि - विजयाणो ॥२८७१॥

१६७६४ । ३ ।

अर्थ :—चौंसठ विजयोंमेंसे प्रत्येकका विस्तार उन्नीस हजार सातसौ औरानवे और चतुर्थ-भागसे अधिक अर्थात् १६७६४३ यो० है ॥२८७१॥

दु - सहस्स - जोयणाणि, वासा वक्खारयाण परोक्कं ।

पंच - सय - जोयणाणि, विभंग - सरियाण विक्खंभी ॥२८७२॥

२००० । ५०० ।

अर्थ :—प्रत्येक वक्षारका विस्तार दो हजार ( २००० ) योजन और प्रत्येक विभंगनदीका विस्तार पाँचसौ ( ५०० ) योजन प्रमाण है ॥२८७२॥

एक्करस - सहस्साणि, जोयणया छस्सयाणि अइसीवी ।

परोक्कं वित्थारो, वेवारण्णाण दोण्हं पि ॥२८७३॥

११६८८ ।





तस्सुधीए परिही, एकं कोडी य तीस-सक्काणि ।

चउ-अउवि-सहस्साणि, सस - सया जोयभाणि छम्बीसं ॥२८७८॥

१३०६४७२६ ।

अर्थ :—इस सूचीकी परिधि एक करोड़ तीस लाख चौरानबे हजार सातसौ छब्बीस योजन प्रमाण है ॥२८७८॥

विशेषार्थ :—परिधि =  $\sqrt{४१४०६१६२ \times १०} = १३०६४७२६$  योजन ।  $\frac{१३०६४७२६}{१०} = १३०६४७२६$  योजन अवशेष बचे जो छोड़ दिए गये हैं ।

सम्यग्दर्शिका :- आचनयें की सुविधितिरागल की रखे

विदेहकी सम्बाई निकालनेका विधान और उस लम्बाईका प्रमाण—

पक्खइ-विमुद्ध-परिही - सेसं चउसट्ठि - रुय - संगुणिधं ।

बारस - खुव - बु - सएहि, भजिबम्हि विवेह - दोहसं ॥२८७९॥

अर्थ :—इस परिधिमेंसे पर्वत-रुद्ध क्षेत्र घटाकर शेषको चौंसठसे गुणा कर दोसौ बारहका भाग देनेपर विदेहकी लम्बाईका प्रमाण आता है ॥२८७९॥

अट्ट-चउ-सस-यण-चउ-अट्ट-ति-अंक-अकमेष जोयणया ।

बारस - अहिय - सयंसा, लहान विवेह - दोहसं ॥२८८०॥

३८४५७४८ । ३१३ ।

अर्थ :—आठ, चार, सात, पाँच चार, आठ और तीन इस अंक कमसे जो संख्या उत्पन्न हो उतने योजन और एकसौ बारह भाग अधिक ( कच्छा और गन्धमालिनीके पास ) विदेहकी सम्बाई है ॥२८८०॥

विशेषार्थ :—गाथा २८४६ में पर्वत-रुद्ध क्षेत्रका प्रमाण  $३५५६८४४\frac{४}{५}$  योजन कहा गया है अतः— $[ ( १३०६४७२६ - ३५५६८४४\frac{४}{५} ) \times ६४ ] \div २१२ = ३८४५७४८\frac{३१३}{५}$  योजन विदेह की सम्बाई है ।

कच्छा और गन्धमालिनीकी आदिस लम्बाईका निरूपण—

सीवा - सीबोवाणं, वासं बु - सहस्स तन्मि अचजिज्जं ।

अवसेसज्जं दोहं, कणिट्ठयं कच्छ - गंधमालिणिए ॥२८८१॥

**अर्थ** :— इस ( विदेहकी लम्बाई ) मेंसे सीता-सीतादा नदियोंका दो हजार योजन प्रमाण विस्तार घटा देनेपर जो शेष रहे उसके अर्धभाग-प्रमाण कच्छा और गन्धमालिनी देशकी कनिष्ठ ( आदिम ) लम्बाई है ॥२८८१॥

चतु-सत्तेदृषक-गुणं, षड-एककं - वक्रमेण जोययथा ।

छाप्यन - कला बीहं, ~~अधिक~~ कच्छा - ~~गन्धमालिनी~~ ~~देशकी~~ ~~कनिष्ठ~~ ~~लम्बाई~~ ~~है~~ ॥२८८२॥

१६२१८७४ । ३१२ ।

**अर्थ** :— चार, सात, आठ, एक, दो, नौ और एक इस प्रक-क्रमसे जो संस्था निर्मित हो उतने योजन भीर छापन कला अधिक कच्छा और गन्धमालिनीकी आदिम लम्बाई है ॥२८८२॥

**विशेषार्थ** :—  $( १८४५७४८१११ - २००० ) \div २ = १६२१८७४६६६$  योजन प्रमाण आदिम लम्बाई है ।

विजयादिकोंकी विस्तार-वृद्धिके प्रमाणका निरूपण—

विजयादीनां वासं, तद्वर्गं वस - पुनिञ्ज तम्भूलं ।

गिन्हह<sup>१</sup> तसो पुह पुह, वसीस - गुणं च कादूणं ॥२८८३॥

बारस-कुव-कु-सर्पहि, भजिबूणं कच्छ<sup>२</sup> - रुं<sup>३</sup> - मेलविधं ।

गिय - रिय - ठाणे वासो, अट्ट - तद्वं विदेहस्त ॥२८८४॥

**अर्थ** :— विजयादिकोंका जो विस्तार हो, उसके वर्गको दससे गुणा करके उसका वर्गमूल ग्रहण करे । पश्चात् उसे पृथक्-पृथक् वसीससे गुणा करके प्राप्त गुणनफलमें दोसो बारहका भाग देनेपर जो लब्ध आवे उसे कच्छा-देशके विस्तारमें मिलानेसे उत्पन्न राशि प्रमाण अपने-अपने स्थानपर अर्ध विदेहका विस्तार होता है ॥२८८४॥

क्षेत्रोंकी वृद्धिका प्रमाण—

षड - जोयरास्सहस्ता, चत्तारि सयाणि अट्टतासं पि ।

छाप्यन - कलाओ तह विजयाणं होवि परिचङ्गी ॥२८८५॥

६४४८ । ३१२

**अर्थ** :— विजयों ( क्षेत्रों ) की वृद्धिका प्रमाण नौ हजार चारसो अठतासीस योजन और छापन-कला अधिक है ॥२८८५॥

**विशेषार्थ** :—गाथा २८७१ में प्रत्येक क्षेत्रका विस्तार १६७६४३ यो० कहा गया है।  
गाथा २८८३ — २८८४ के नियमानुसार— $\sqrt{[(167643)^2 \times 10 \times 32]} \div 212 =$   
 $64453\frac{1}{2}$  योजन क्षेत्रोंकी वृद्धिका प्रमाण है।

वक्षार पर्वतों की वृद्धिका प्रमाण—

चउबण्णअहियाणि<sup>१</sup>, सयाणि एअ ओयणाणि सह भागा।

चोसुत्तर - सयमेत्ता, वक्षार - गिरीण परिवद्धी ॥२८८६॥

६४४।३३३।

**अर्थ** :—सोती चौवन योजन और एकसी बीस भाग प्रमाण वक्षार-पर्वतोंकी वृद्धिका प्रमाण है ॥२८८६॥

**विशेषार्थ** :—गाथा २८७२ में प्रत्येक वक्षारका विस्तार २००० योजन कहा गया है, अतः  
 $\sqrt{[(2000)^2 \times 10 \times 32]} \div 212 = 64453\frac{1}{2}$  यो० वक्षार-वृद्धिका प्रमाण है।

विभंग नदियोंकी वृद्धिका प्रमाण—

ओयण - सयाणि ओण्णि, अट्टसीसाहियाणि सह भागा।

अत्तोस - उत्तर - सयं, विभंग - सरियाण परिवद्धी ॥२८८७॥

२३८।३३३।

**अर्थ** :—सोती अट्टसीस योजन और एकसी अत्तोस भाग अधिक विभंग-नदियोंकी वृद्धिका प्रमाण है ॥२८८७॥

**विशेषार्थ** :—गाथा २८७२ में प्रत्येक विभंग नदीका विस्तार ५०० योजन कहा गया है,  
अतः  $\sqrt{[(500)^2 \times 10 \times 32]} \div 212 = 2383\frac{1}{2}$  यो०।

देवारण्यके स्थानोंमें वृद्धिका प्रमाण—

पंच - सहस्सा ओयण, पंच - सया अट्टहत्तरी - कुचा।

अट्टसीदि - कुव - सर्वसा, देवारण्णाण परिवद्धी ॥२८८८॥

५५७८।३५४।

अर्थ :— पाँच हजार पाँचसौ अठत्तर योजन और एकसौ बीससी भाग प्रमाण देवारण्यकी वृद्धिका प्रमाण है ॥२८८८॥

विशेषार्थ :— गाथा २८८६ में प्रत्येक क्षेत्र का क्षेत्रफल ११६८८ योजन बताया गया है, अतः—  $\sqrt{[(11688)^2 \times 10 \times 32]} \div 212 = 5572.55$  योजन देवारण्यकी वृद्धिका प्रमाण है ।

विजयादिकों की आदि, मध्य और अन्तिम लम्बाई निकालनेका विधान—

विजयादीनां आदिम - बोहे बद्धि खिजेज तं होदि ।

मज्झिम-बोहं मज्झिम - बोहे<sup>१</sup> तं खिजसु भंत - बोहत्तं ॥२८८९॥

अर्थ :— विजयादिकोंकी आदिम लम्बाईमें उपयुक्त वृद्धि-प्रमाण मिला देनेपर उनकी मध्यम लम्बाईका प्रमाण और मध्यम लम्बाईमें वह वृद्धि-प्रमाण मिला देनेसे उनकी अन्तिम लम्बाई का प्रमाण प्राप्त होता है ॥२८८९॥

कच्छा और गन्धमालिनी देशोंकी मध्यम लम्बाई—

बो-हो-तिय-इणि-तिय-जव-एकं अंक - कमेण अंसा य ।

बारुत्तर-एक-सयं, मज्झिम्सुलं कच्छ - गंधमालिणिण ॥२८९०॥

१६३१३२२ । ११३ ।

अर्थ :— दो, दो, तीन, एक, तीन, नौ और एक; इस अंक क्रमसे जो संख्या उत्पन्न हो उतने योजन और एकसौ बारह भाग अधिक कच्छा और गन्धमालिनी देशोंकी मध्यम लम्बाई है ॥२८९०॥

गाथा २८८२ में आदिम लम्बाई १६२१८७४ $\frac{१}{३}$  योजन प्रमाण कही गई है अतः—  $१६२१८७४\frac{१}{३} + ६४८८\frac{१}{३} = १६२१९३९\frac{२}{३}$  योजन मध्यम लम्बाई ।

दीनों क्षेत्रोंकी अन्तिम और विजकूट एवं देवमाल वक्षारोंकी आदिम लम्बाईका प्रमाण—

जभ-सत्त-सत्त-जभ-जव-जवेक-अंक-कमेण अंसा य ।

अट्ट<sup>२</sup> - सट्ठि - सयं विजय-सु-वक्षार-जगावमंतमाविस्सं ॥२८९१॥

१६४०७७० । ३१६ ।

अर्थ :—शून्य, सात, सात, शून्य, चार, नौ और एक, इस अंक क्रमसे जो संख्या निर्मित हो उतने योजन और एकसौ अड़सठ भाग अधिक उपर्युक्त दोनों क्षेत्रों तथा ( चित्रकूट और देवमाल नामक ) दो वक्षार-पर्वतोंकी क्रमशः अन्तिम और आदिम लम्बाई है ॥२५६॥

$$1937322333 + 244 = 1937322577 = 1937322577 \text{ योजन ।}$$

दोनों वक्रारोंकी मध्यम लम्बाई—

पण-वो-सग-इगि-बडरो, नबेकक जोयण छहसरो ग्रंसा ।

मज्झिमसुल्ल सच्चकडे, होदि तहा वेवथव्वाए बीहुं ॥२८६२॥

१६४७२५ । २१३ ।

अर्थ :—पाँच, दो, सात, एक, चार, नौ और एक, इस श्रृंखला क्रमसे जो संख्या उत्पन्न हो उतने योजन और छषत्तर भाग प्रमाण अधिक चित्रकूट एवं देवनागरी पर्वतकी मध्यम सम्बाई ( १६४१७२५३१३ योजन ) है ॥२८६२॥

$$14033\frac{1}{2} + 8433\frac{1}{2} = 14877\frac{1}{2} \text{ यो० ।}$$

दोनों वक्षारोंकी अन्तिम और दो देशोंकी आदिम लम्बाई—

राव-सग-छ-हो-चउ-नव-इगि कल छन्नउदि-अहिय-सयमेकत्त ।

दो - ब्रह्मसार - गिरीशं, प्रतिम आदी सुकण्ठ - गंधितए ॥२८६३॥

१६४२ ई० । १११ ।

अर्थ :—नौ, सात, छह, दो, चार, नौ और एक, इस अंक क्रमसे ओ संख्या निर्मित हो उतने योजन और एकसाँ स्तूपानवे भाग अधिक दोनों वक्षार-पर्वतोंकी अन्तिम तथा सुकच्छा और पन्चिला देशकी आदिम सम्बाई ( ११४२६७१११ योजन ) है ॥२८१६॥

$$25 \times 10^2 \times 10^3 + 25 \times 10^3 = 25 \times 10^5 + 25 \times 10^3 \text{ यो० है।}$$

**दोनों देशों की मध्यम सम्बन्ध—**

अह - इरोक्कां दो - पण - अयेक्कः अंसा य तालमेस्तार्णि ।

सजिभल्लय - दोहरां, बिजयाए सुकस्य - गंधिलए ॥२६६४॥

१६५२१२८ । ५७०

अर्थ :—आठ, दो, एक, दो, पाँच, नौ और एक, इस अंक क्रमसे जो संख्या निमित्त हो उतने योजन और चासीस भाग प्रमाण अधिक सुकच्छा और गन्धिसा देशकी मध्यम सम्बाई ( १९५२१२८३९२ यो० ) है ॥२८६४॥

$$१९४२६७६३३३ + ६४४८३३३ = १९४२१२८३९२ यो० है ।$$

दोनों देशोंकी अन्तिम और दो विभगा नदियोंकी आदिम सम्बाई—

छत्सग-पन-इगि-छण्णव-एककं अंसा य होंति छण्णउदी ।

बो - विजयाणं अंतं, आदित्तं दोण्णि - सरियाणं ॥२८६५॥

$$१९६१५७६ । ३३६ ।$$

अर्थ :—छह, सात, पाँच, एक, छह, नौ और एक, इस अंक क्रमसे जो संख्या उत्पन्न हो उतने योजन और छपानव भाग अधिक ( १९६१५७६३३६ यो० ) दोनों देशोंकी अन्तिम तथा द्रहवती और ऊर्मिमालिनी नामक दो नदियोंकी आदिम सम्बाई है ॥२८६५॥

$$१९४२१२८३९२ + ६४४८३३३ = १९६१५७६३३६ योजन ।$$

दोनों विभगा नदियोंकी मध्यम सम्बाई—

पन-इगि-अट्टिगि-छण्णव-एककं अंसा य बीसमेत्ताणि ।

बहवदी - उम्मिमालिणि - मज्झिमयं होवि बीहत्तं ॥२८६६॥

$$१९६१८१५ । ३३६ ।$$

अर्थ :—पाँच, एक, आठ, एक, छह, नौ और एक, इस अंक क्रमसे जो संख्या उत्पन्न हो उतने योजन और बीस भाग प्रमाण अधिक ( १९६१८१५३३६ यो० ) द्रहवती और ऊर्मिमालिनी नदियोंकी मध्यम सम्बाई है ॥२८६६॥

$$१९६१५७६३३६ + २३८३३३ = १९६१८१५३३६ योजन ।$$

दोनों नदियोंकी अन्तिम और दो ओत्रोंकी आदिम सम्बाई—

तिय-पन-त्तं-बुग-छण्णव-एककं छप्पण-सहिय-सय-अंसा ।

दोण्णि नईणं अंतं, महकच्छ - सुवगुण आसी ॥२८६७॥

$$१९६२०५३ । ३३६ ।$$

अर्थ :—तीन, पाँच, शून्य, दो, छह, नौ और एक, इस अंक क्रमसे जो संख्या उत्पन्न हो उतने योजन और एकसौ छप्पन भाग अधिक दोनों नदियोंकी अन्तिम तथा महाकच्छा और सुवल्गु ( सुगन्धा ) नामक दो क्षेत्रोंकी आदिम सम्बाई ( १९६२०५३३३३ यो० ) है ॥२८६७॥

$$१९६१८१५३३३ + २३८३३३ = १९६२०५३३३३ योजन ।$$

दोनों क्षेत्रोंकी मध्यम सम्बाई—

दु-ख-पंच-एक-सग-जब-एक-अंक - नकमेरा जोजनया ।

महाकच्छा - सुवल्गुए, दोहस्त मज्जिम - पएसे ॥२८६८॥

$$१९७१५०२ ।$$

अर्थ :—दो, शून्य, पाँच, एक, सात, नौ और एक, इस अंक क्रमसे जो संख्या उत्पन्न हो उतने ( १९७१५०२ ) योजन प्रमाण महाकच्छा और सुवल्गु ( सुगन्धा ) क्षेत्रोंके मध्यम प्रदेशमें सम्बाई है ॥२८६८॥

$$१९६२०५३३३३ + ६४४८३३३ = १९७१५०२ यो० ।$$

दोनों क्षेत्रोंकी अन्तिम और दो वक्षार-पर्वतोंकी आदिम सम्बाई—

राभ-पच-जब-जब-अठ-गह-एक-अंसा य होंति छप्पनः ।

दोहं विजयास्तं, दोहं पि गिरीणमावित्तं ॥२८६९॥

$$१९८०६५० । २३३ ।$$

अर्थ :—शून्य, पाँच, नौ, शून्य, आठ, नौ और एक, इस अंक क्रमसे जो संख्या उत्पन्न हो उतने योजन और छप्पन भाग अधिक दोनों क्षेत्रोंकी अन्तिम तथा पक्षकूट और सूर्य नामक दो पर्वतोंकी आदिम सम्बाई ( १९८०६५०३३३ यो० ) है ॥२८६९॥

$$१९७१५०२ + ६४४८३३३ = १९७१५०३३३३ यो० है ।$$

दोनों वक्षार-पर्वतोंकी मध्यम सम्बाई—

घट-जब-गह-इगि-अठ-जब-एक-अंसा सयं छहस्रियं ।

वर - पठम - कूट तह सूर - पञ्चए मज्ज - दोहस्त ॥२९००॥

$$१९८१९०४ । २३३ ।$$

अर्थ :—चार, शून्य, नौ एक, आठ, नौ और एक, इस अंक क्रमसे जो संख्या उत्पन्न हो उतने योजन और एकसौ छपत्तर भाग अधिक उत्तम पणकूट तथा सूर्य पर्वतकी मध्यम लम्बाईका प्रमाण ( १६८१६०४३१३ यो० ) है ॥२६००॥

$$१६८०६५०३१३ + ६५४३१३ = १६८१६०४३१३ यो० ।$$

दोनों पर्वतोंकी अन्तिम और दो देशोंकी आदिम लम्बाई—

णव-पञ्च-अष्ट-तुग-अष्ट-णव-एकसौ अंसा य होंति खुससीबी ।

अंतं दोसु गिरीषं आसी बडेली कच्छकावति ॥२६०१॥

$$१६८२८५६१३३ । ३३३ ।$$

अर्थ :—नौ, पाँच, आठ, दो, आठ, नौ और एक, इस अंक क्रमसे जो संख्या उत्पन्न हो उतने योजन और बीसवीं भाग अधिक दोनों पर्वतोंकी अन्तिम तथा बरगु ( गन्धा ) और कच्छकावती देशकी आदिम लम्बाई ( १६८२८५६१३३ यो० ) है ॥२६०१॥

$$१६८१६०४३१३ + ६५४३१३ = १६८२८५६१३३ यो० ।$$

दोनों देशोंकी मध्यम लम्बाई—

सग-जभ-तिय-तुग-जभ-जभ-एकसौ अंसा य आस ग्रहिय-सयं ।

मजिमहसय बीहच, जगुए कच्छकावति ॥२६०२॥

$$१६६२३०७३३३ । ३३३ ।$$

अर्थ :—सात, शून्य, तीन, दो, नौ, नौ और एक, इस अंक क्रमसे जो संख्या उत्पन्न हो उतने योजन और एकसौ चालीस भाग अधिक बरगु ( गन्धा ) एवं कच्छकावतीकी मध्यम लम्बाईका प्रमाण ( १६६२३०७३३३ यो० ) है ॥२६०२॥

$$१६६२८५६१३३ + ६५४३१३ = १६६२३०७३३३ यो० ।$$

दोनों देशोंकी अन्तिम और दो विभंगा नदियोंकी आदिम लम्बाई—

पण-पञ्च-सग-इगि-सं-सुभ-दो निजय अंसा छजउदि-ग्रहिय-सयं ।

दोण्हं विजयानंतं, आदिहलं दोसु सरिषाणं ॥२६०३॥

$$२००१७५५३३३ । ३३३ ।$$

अर्थ :—पाँच, पाँच, सात, एक, शून्य, शून्य और दो इस अंक क्रमसे जो संख्या उत्पन्न हो उतने योजन और एकसौ छपत्तरवाँ भाग अधिक दोनों देशोंकी अन्तिम तथा ग्रहवती और फेलमालिनी नामक दो विभंग-नदियोंकी आदिमलम्बाईका प्रमाण ( २००१७५५३३३ योजन है ॥२६०३॥

$$१६६२३०७३३३ + ६५४३१३ = २००१७५५३३३ योजन है ।$$



दोनों नदियोंकी मध्यम सम्बाई—

बड़-राव-जब-इति-सं-गम-हो-चिन्मय-संसा-य-बीस-अहिय-सयं ।

मन्त्रिभूतल - गह्वरीए, बीहस फेजमालिनिए ॥२१०४॥

२००१११४।३३३।

अर्थ :—चार, नौ, नौ, एक, शून्य, शून्य और दो, इस अंक क्रमसे जो संख्या उत्पन्न हो उतने योजन और एकसौ बीस भाग अधिक गह्वरी और फेजमालिनी नदीकी मध्यम सम्बाईका प्रमाण ( २००१११४३३३ योजन ) है ॥२१०४॥

२००१७४४३३३ + २३५३३३ = २००१११४३३३ योजन है ।

दोनों नदियोंकी अन्तिम तथा दो क्षेत्रोंकी आदिम सम्बाई—

तिय-तिय-हो-हो-खण्णम-हो-चिन्मय-संसा-तह्व-बड़वाल ।

संत हो - सरियाब, आबो आवस - वप्पकावविए ॥२१०५॥

भाषा-वर्णन :— आबो की सुविधितककर २३५३३३ ( २३५३३३ )

अर्थ :—तीन, तीन, दो, दो शून्य, शून्य और दो इस अंक क्रमसे जो संख्या उत्पन्न हो उतने योजन और अगलीस भाग अधिक दोनों नदियोंकी अन्तिम तथा आबो एवं वप्पकावती क्षेत्रकी आदिम सम्बाई ( २००२२३३५५५ यो० ) है ॥२१०५॥

२००१११४३३३ + २३५३३३ = २००२२३३५५५ यो० ।

दोनों क्षेत्रोंकी मध्यम सम्बाई—

एकह-छ-एकैक, सं - बुग संसा तह्व एक - सयं ।

मन्त्रिभूतलय - बीहस, आवसा - वप्पकावविए ॥२१०६॥

२०११६८१।३३३।

अर्थ :—एक, आठ, छह, एक, एक, शून्य और दो इस अंक क्रमसे जो संख्या उत्पन्न हो उतने योजन और एकसौ भाग अधिक आबो तथा वप्पकावती क्षेत्रोंकी मध्यम सम्बाई ( २०११६८१३३३ यो० ) है ॥२१०६॥

२००२२३३५५५ + १४४८३३३ = २०११६८१३३३ यो० ।

दोनों क्षेत्रोंकी अन्तिम तथा दो वक्षार पर्वतोंकी आदिम लम्बाई—

नव-दुर्गिनि-दोषिह-सं-दुग, अंसा छप्पन्न-अहिय-एकसयं ।

दो - विजयार्ण अंतं, आविस्त्वं नलिन - नाग - नगे ॥२६०७॥

२०२११२६ । ३५३ ।

अर्थ :—नौ, दो, एक, एक, दो, शून्य और दो, इस अंक क्रमसे जो संख्या उत्पन्न हो उतने योजन और एकसौ छप्पन्न भाग अधिक दोनों क्षेत्रोंकी अन्तिम तथा नलिन एवं नाग पर्वतकी आदिम लम्बाई ( २०२११२६३५३ योजन ) है ॥२६०७॥

$२०११६८१३९९ + ६४४८३५३ = २०२११२६३५३$  यो० ।

दोनों वक्षार पर्वतोंकी मध्यम लम्बाई—

नव-अह-सं-दुग-दु-स-दो, 'अंक-कमे ओपण्यनि अंसा य ।

नवसहो मज्झिन्ने, शाग - नगे नलिन - कूटमि ॥२६०८॥

२०२२०८४ । ३५३ ।

अर्थ :—चार, आठ, शून्य, दो, दो, शून्य और दो, इस अंक क्रमसे जो संख्या उत्पन्न हो उतने योजन और चौसठ भाग अधिक नाग-नगकी और नलिन कूटकी मध्यम लम्बाईका प्रमाण ( २०२२०८४३५३ यो० ) है ॥२६०८॥

$२०२११२६३५३ + ६४४३३३ = २०२२०८४३५३$  यो० ।

दोनों पर्वतोंकी अन्तिम और दो क्षेत्रोंकी आदिम लम्बाई—

अह-तिय-गम-तिय-दुग-अम-दो विजय अंसा सयं च चुलसीवी ।

दोसु गिरीण अंतं, आविस्त्वं दोसु विजयार्ण ॥२६०९॥

२०२३०३८ । ३५३ ।

अर्थ :—आठ, तीन, शून्य, तीन, दो, शून्य और दो, इस अंक क्रमसे जो संख्या उत्पन्न हो उतने योजन और एकसौ चौरासी भाग अधिक दोनों पर्वतोंकी अन्तिम तथा तांगलावर्ता एवं महावप्रा देशकी आदिम लम्बाई ( २०२३०३८३५३ यो० ) है ॥२६०९॥

$२०२२०८४३५३ + ६४४३३३ = २०२३०३८३५३$  यो० ।

दोनों क्षेत्रोंकी मध्यम सम्बाई—

सग-मड-मड-हुग-तिय-गभ-दो विजय-धंसा तहेव खुलसीवी ।

महिम्नस्तय - वीहस, महवपे संगलावसी ॥२६१०॥

२०३२४८७ । ३६२ ।

अर्थ :—सात, आठ, चार, दो, तीन, शून्य और दो, इस अंक क्रमसे जो संख्या उत्पन्न हो उतने योजन और भट्टाईसभाग अधिक महावप्रा एवं सांगलावर्तकी मध्यम सम्बाईका प्रमाण ( २०३२४८७३६२ यो० ) है ॥२६१०॥

$२०२३०३८३६३ + २४४८३१२ = २०३२४८७३६२$  यो० ।

दोनों क्षेत्रोंकी अन्तिम और दो विभंगा नदियोंकी आदिम सम्बाई—

पण-तिय-मव-हुगि-मड-गभ-दोणि य धंसा तहेव खुलसीवी ।

दो - विजयाएँ अंतं मविम्नस्तय - वीहस, महवपे संगलावसी ॥२६११॥

२०४१९३५ । ६६२ ।

अर्थ :—पाँच, तीन, नौ, एक, चार, शून्य और दो, इस अंक क्रमसे जो संख्या उत्पन्न हो उतने योजन और चौरासी भाग अधिक दोनों विजयोंकी अन्तिम तथा गम्भीरमालिनी एवं पंकवती नामक दो नदियोंकी आदिम सम्बाई ( २०४१९३५६६२ योजन ) है ॥२६११॥

$२०३२४८७३६३ + १४४८३१२ = २०४१९३५६६२$  यो० ।

दोनों नदियोंकी मध्यम सम्बाई—

मड-सल-एक-हुग-मड-गभ-दो धंसा कमेण अहु' व ।

गंभीरमालिणीए, महिम्नस्तय पंकवदिगाए ॥२६१२॥

२०४२१७४ । ३६२ ।

अर्थ :—चार, सात, एक, दो, चार, शून्य और दो, इस अंक क्रमसे जो संख्या उत्पन्न हो उतने योजन और आठ भाग अधिक गम्भीरमालिनी एवं पंकवती नदियोंकी मध्यम सम्बाई ( २०४२१७४३६२ योजन ) है ॥२६१२॥

$२०४१९३५६६३ + २३८३३१ = २०४२१७४३६२$  यो० ।

दोनों नदियोंकी अन्तिम और दो देशोंकी आदिम सम्बाई—

दुग-एक-चउ-दु-चउ-गभ-दो छिय अंसा सयं च चउहालं ।

दोणि नवीणं अंतं, आबिल्लं दोसु विजयानं ॥२६१३॥

२०४२४१२ । ११५ ।

अर्थ :—दो, एक, चार, दो, चार, शून्य और दो इस अंक क्रमसे जो संख्या उत्पन्न हो उतने योजन और एक सौ चबालीस भाग अधिक दोनों नदियोंकी अन्तिम और पुष्कला तथा सुवप्रा नामक दो क्षेत्रोंकी आदिम लम्बाई ( २०४२४१२११५ यो० ) है ॥२६१३॥

$२०४२१७४,६२ + २२८१११ = २०४२४१२११५ यो० ।$

दोनों क्षेत्रोंकी मध्यम लम्बाई—

गभ-छवकड-इगि-पण-गभ-दो छिय अंसाणि दोणि-सयभेलं ।

मजिभत्सय - दोहस, पोक्कल - विजए सुवप्पाए ॥२६१४॥

२०४१८६० । ३९९ ।

अर्थ :—शून्य, छह, आठ, एक, पाँच, शून्य और दो, इस अंक क्रमसे जो संख्या निर्मित हो उतने योजन और दो सौ भाग प्रमाण अधिक पुष्कला एवं सुवप्रा विजयकी मध्यम लम्बाई ( २०४१८६०३९९ यो० ) है ॥२६१४॥

$२०४२४१२११५ + ६४४८३९९ = २०४१८६०३९९ यो० ।$

दोनों क्षेत्रोंकी अन्तिम और दो वक्षार पर्वतोंकी आदिम लम्बाई—

नय-गभ-तिय-इगि-छणभ-दो छिय अंसा य होति चउहालं ।

दो - विजयानं अंतं, आबिल्लं एकसेल - चंव - गगे ॥२६१५॥

२०६१३०६ । ३५५ ।

अर्थ :—नौ, शून्य, तीन, एक, छह, शून्य और दो, इस अंक क्रमसे जो संख्या उत्पन्न हो उतने योजन और चबालीस भाग अधिक दोनों विजयोंकी अन्तिम तथा एकसेल और चन्द्रनगकी आदिम लम्बाई ( २०६१३०६३५५ योजन ) है ॥२६१५॥

$२०४१८६०३९९ + ६४४८३९९ = २०६१३०६३५५ यो० ।$

दोनों वक्षार-पर्वतोंकी मध्यम लम्बाई—

तिय-छ-दो-दो-छणभ-दो छिय अंसा सयं च चउसहो ।

मजिभत्सय - दोहस, होदि पुठं एकसेल - चंडगगे ॥२६१६॥

२०६२२६३ । ३१५ ।

अर्थ :—तीन, छह, दो, दो, छह, शून्य और दो, इस अंक क्रमसे जो संख्या उत्पन्न हो उतने योजन और एकसौ बीसठ भाग अधिक एकशंस एवं चन्द्रनगकी मध्यम लम्बाई (२०६२२६३३१६ यो०) है ॥२६१६॥

$$२०६१३०६०५३ + ६५४३३३ = २०६२२६३३१६ यो० ।$$

दोनों पर्वतोंकी अन्तिम और दो देशोंकी आदिम लम्बाई—

अट्टिंग-बुग-तिग-स्रणभ-वो चिखय अंसा' बृहत्तरी अंतं ।

वीहं दोसु गिरीणं, अप्पाए पोक्कलावदिए ॥२६१७॥

$$२०६३२१८ । ३३३ ।$$

अर्थ :—आठ एक, दो, तीन, छह, शून्य और दो, इस अंक क्रमसे जो संख्या उत्पन्न हो उतने योजन और बृहत्तर भाग अधिक दोनों पर्वतोंकी अन्तिम तथा वप्रा एवं पुष्कलावती देशकी आदिम लम्बाई ( २०६३२१८३३३ यो० ) है ॥२६१७॥

$$२०६२२६३३१६ + ६५४३३३ = २०६३२१८३३३ यो० ।$$

दोनों देशोंकी मध्यम लम्बाई—

स्रज्जक्क-स्रक्क-बुग-सग-राभ-बुग अंसा सयं च अडबीसं ।

मविभत्तलय - वीहसा, अप्पाए पोक्कलावदिए ॥२६१८॥

$$२०७२६६६ । ३३३ ।$$

अर्थ :—छह, छह, छह, दो, सात, शून्य और दो इस अंक क्रमसे जो संख्या निर्मित हो उतने योजन और एकसौ अट्ठाईस भाग अधिक वप्रा एवं पुष्कलावती देशकी मध्यम लम्बाईका प्रमाण ( २०७२६६६३३३ यो० ) है ॥२६१८॥

$$२०६३२१८३३३ + ६५४८३३३ = २०७२६६६३३३ यो० ।$$

दोनों देशोंकी अन्तिम और देवारण्य एवं भूतारण्यकी आदिम लम्बाई—

चउ-एक्क-एक्क-बुग-अड-णभ-वो अंसा सयं च भुलसीदो ।

अप्पाए अंत - वीहं, आदित्सं देव - सुवरण्णाभं ॥२६१९॥

$$२०८२११४ । ३३३ ।$$

अर्थ :—चार, एक, एक, दो, आठ, शून्य और दो, इस अंक क्रमसे जो संख्या उत्पन्न हो उतने योजन और एकसौ बीसठी भाग अधिक वप्रा (और पुष्कलावती) देशकी अन्तिम तथा देवारण्य एवं भूतारण्यकी आदिम लम्बाई ( २०८२११४३३३ योजन ) है ॥२६१९॥

$$२०७२६६६३३३ + ६५४८३३३ = २०८२११४३३३ यो० ।$$

देवारण्य-भूतारण्यकी मध्यम लम्बाई—

तिय-जव-स्यसग-सह-जव-बो कियय अंसा सयं च स्यस्यस्यं ।

मन्त्रिभूतलय - बीहृता, परोक्कं देव - भूतारण्यार्णं ॥२६२०॥

२०८७६६३ । ३३३ ।

अर्थ :—तीन, नौ, छह, सात, आठ, दून्त्य और दो, इस अंक कमसे जो संख्या उत्पन्न हो उतने योजन और एकसौ छपन भाग अधिक देवारण्य एवं भूतारण्यमेंसे प्रत्येककी मध्यम लम्बाई ( २०८७६६३३३३ यो० ) है ॥२६२०॥

२०८२११४३३३ + ४४७८३३३ = २०८७६६३३३३ यो० ।

देवारण्य-भूतारण्यकी अन्तिम लम्बाई—

बो-सग-बुग-सिम-जव-जव-बो कियय अंसा सयं च अहवोसं ।

परोक्कं अंतिलसं, बीहृता देव - भूतारण्यार्णं ॥२६२१॥

२०८३२७२ । ३३३ ।

अर्थ :—दो, सात, दो, तीन, नौ, दून्त्य और दो इस अंक कमसे जो संख्या उत्पन्न हो उतने योजन और एकसौ अठ्ठाईस भाग अधिक देवारण्य एवं भूतारण्यमेंसे प्रत्येक अन्तिम लम्बाईका प्रमाण ( २०८३२७२३३३ योजन ) है ॥२६२१॥

२०८७६६३३३३ + ४४७८३३३ = २०८३२७२३३३३ यो० ।

अन्य क्षेत्रादिकोंकी लम्बाईका प्रमाण ज्ञात करनेकी विधि—

कच्छादि - प्यमुहाजं तिविह - वियप्यं विकविवं सम्भ ।

विजयाए मंगलावति - प्यमुहाए तं च वस्यं ॥२६२२॥

अर्थ :—कच्छादिकोंकी तीन प्रकारकी लम्बाईका सम्पूर्ण कथन किया जा चुका है । अब मंगलावती-प्रमुख क्षेत्रादिकोंकी लम्बाईका प्रमाण बतलाया जाता है ॥२६२२॥

कच्छाविसु विजयाए, आविम-मन्त्रिभूत-वरिम-बीहृतां ।

विजयद्व - दं वमवसिय, अह-कदे इच्छिदस्स बीहृता ॥२६२३॥

अर्थ :—कच्छादिक क्षेत्रोंकी आदिम, मध्यम और अन्तिम सम्बाईमेंसे विजयार्धके विस्तार को घटाकर शेषको घाटा करनेपर इच्छित क्षेत्रोंकी सम्बाईका प्रमाण प्राप्त होता है ॥२६२३॥

पद्या देशसे मंगलावती देश पर्यन्तकी सूचीका प्रमाण प्राप्त करनेकी विधि—

सोहसु मज्जिम - सुहा, मेरुगिरि, दुगुण-भद्रशाल-वर्ष ।  
सा सूई पम्मावी, परियंत मंगलावधि ॥२६२४॥

अर्थ :—पुष्करार्धकी मध्यम सूचीमेंसे मेरु-पर्वत और दुगुणे भद्रशालवनके विस्तारकी घटा देनेपर जो शेष रहे उतना मंगलावतीसे पद्यादि देश पर्यन्त सूचीका प्रमाण है ॥२६२४॥

विवेचनार्थ :—उपर्युक्त गाथानुसार सूची व्यास इसप्रकार है—पुष्करार्ध द्वीपका मध्यम सूची व्यास ३७ लाख योजन, मेरु विस्तार ६४०० योजन तथा भद्रशालका दुगुणा विस्तार  $( २१५७५८ \times २ ) = ४३१५१६$  योजन है अतः  $३७००००० - ( ६४०० + ४३१५१६ ) = ३२५६०८४$  योजन है ।

किन्तु सूची व्यासके इस प्रमाण को, इसकी परिधि के प्रमाणकी, विवेह क्षेत्रकी सम्बाई प्राप्त करनेकी विधि एवं विवेह क्षेत्रकी सम्बाईके प्रमाणको प्रदर्शित करनेवाली ४ गाथाएँ छूटी हुई पात होयी हैं । जिनका गणित निम्न प्रकार है—

अन्तसे मंगलावती पर्यन्तकी सूचीका प्रमाण—३२५६०८४ यो० है ।

इसकी परिधिका प्रमाण— $\sqrt{३२५६०८४^२ \times १०} = १०३०६१२६$  योजन है ।

विवेह क्षेत्रकी सम्बाई  $= \frac{( \text{परिधि} - \text{पर्वतरुद्ध क्षेत्र} ) \times ६४}{२१२}$   
 $= \frac{( १०३०६१२६ - ३५५६८४ ) \times ६४}{२१२}$   
 $= \frac{( ९९५०४४४३२ ) \times ६४}{२१२} = ३००३६०७३१३$  यो० ।

पद्या एवं मंगलावती क्षेत्रकी आदिम सम्बाई—

तिवय-यरा-जव'-स-जभ-पम-एकं अंसा चउसरं बु-सयं ।

अंक - कसे दोहस', आविस्स - प्यजम - मंगलावधि ॥२६२५॥

१५००६५३ । ३५३ ।

अर्थ :- तीन, पाँच, नौ, शून्य, शून्य, पाँच और एक, इस अंक क्रमसे जो संख्या उत्पन्न हो उसने योजन और दोसौ चार भाग अधिक पचा तथा मंगलावतीक्षेत्रकी आदिम सम्बाईका ( १५००६५३३९६ योजन ) प्रमाण है ॥२६२५॥

विशेषार्थ :- पचा और मंगलावती देशोंकी सम्बाई

विदेहकी सम्बाई — सीतोदाका विस्तार

२

३००३६०७३३३ — २००० यो० — ३००१६०७३३३

अर्थवर्णन :- आठ, पाँच, नौ, शून्य, शून्य, पाँच और एक, इस अंक क्रमसे जो संख्या उत्पन्न हो उसने योजन और एकसौ अड़तालीस भाग अधिक पचा एवं मंगलावती क्षेत्रकी मध्यम सम्बाई ( १५००६५३३९६ योजन ) है ।

दोनों क्षेत्रोंकी मध्यम सम्बाई—

पञ्च-शत-पञ्च-द्वि-ज-च-उ-एक अंसा सयं च अड़ताल ।

मन्त्रिभूतलय - दोहृषं, पम्माए मंगलावति ॥२६२६॥  
१४६१५०५ । ३३६ ।

अर्थ :- पाँच, शून्य, पाँच, एक, नौ, चार और एक, इस अंक क्रमसे जो संख्या उत्पन्न हो उसने योजन और एकसौ अड़तालीस भाग अधिक पचा एवं मंगलावती क्षेत्रकी मध्यम सम्बाई ( १४६१५०५३३६ यो० ) है ॥२६२६॥

१५००६५३३९६ — ६४४८३३३ = १४६१५०५३३६ योजन ।

दोनों क्षेत्रोंकी अन्तिम और दो बक्षार-पर्वतोंकी आदिम सम्बाई—

सग-पञ्च-शत-दुग-अड़-च-उ-एक अंसा कमेज बाणउबी ।

दो - विजयाणं अंतं, बक्षार - गणान आविस्सं ॥२६२७॥

१४८२०५७ । ३३३ ।

अर्थ :- साठ, पाँच, शून्य, दो, आठ, चार और एक, इस अंक क्रमसे जो संख्या उत्पन्न हो उसने योजन और बालवे भाग अधिक दोनों क्षेत्रोंकी अन्तिम एवं अड़वान् और आठमाञ्चनबक्षार-पर्वतोंकी आदिम सम्बाई ( १४८२०५७३३३ यो० ) है ॥२६२७॥

१४६१५०५३३६ — ६४४८३३३ = १४८२०५७३३३ यो० ।



दोनों वक्षार-पर्वतोंकी मध्यम लम्बाई—

हुग-जभ-एविकगि-अड-खड-एवकां अंसा सयं च बुलसीवी ।

सब्दावधिमायंजण<sup>१</sup> - गिरिम्मि मज्झत्तल - बीहत्त<sup>२</sup> ॥२६२८॥

१४८११०२ । ३६३ ।

अर्थ :—दो शून्य, एक, एक, आठ, चार और एक, इस अंक क्रमसे जो संख्या उत्पन्न हो उतने योजन और एकसौ बीरासी भाग अधिक अद्धावान् और आत्मांजन पर्वतकी मध्यम लम्बाई ( १४८११०२३६३ यो० ) है ॥२६२८॥

१४८२०४७६३३ — ६४४३३३ = १४८११०२३६३ यो० ।

दोनों पर्वतोंकी अन्तिम तथा दो क्षेत्रोंकी आदिम लम्बाई—

अहु-खड-एवक-जभ-अड-खड-एवकांसा कमेण चउसव्वी ।

वीसु गिरीणं अंसं, आवीओ वीणिण - विजयाणं ॥२६२९॥

१४८०१४८ । ११३ ।

अर्थ :—आठ, चार, एक, शून्य, आठ, चार और एक, इस अंक क्रमसे जो संख्या उत्पन्न हो उतने योजन और बीसठ भाग अधिक दोनों पर्वतोंकी अन्तिम और सुपचा एवं रमणीया नामक दो देशोंकी आदिम लम्बाईका प्रमाण ( १४८०१४८११३ योजन ) है ॥२६२९॥

१४८११०२३६३ — ६४४३३३ = १४८०१४८११३ योजन ।

दोनों क्षेत्रोंकी मध्यम लम्बाई—

खं-जभ-सग-एभ-सग-खड-इगि-अंसा अहु<sup>३</sup> मज्झ-वीहत्त<sup>४</sup> ।

पत्तेक सुपम्माए, <sup>२</sup>रमणिक्का - जाम - विजयाए ॥२६३०॥

१४७०७०० । १६३ ।

अर्थ :—शून्य, शून्य, सात, शून्य, साठ, चार और एक, इस अंक क्रमसे जो संख्या उत्पन्न हो उतने योजन और आठ भाग प्रमाण अधिक सुपचा तथा रमणीया नामक दो देशोंमेंसे प्रत्येककी मध्यम लम्बाई ( १४७०७००१६३ यो० ) है ॥२६३०॥

१४८०१४८११३ — ६४४३३३ = १४७०७००१६३ यो० ।

दोनों क्षेत्रोंकी अन्तिम और दो विभाग नदियोंकी आदिम सम्बाई—

इगि-पण-दो-इगि-छ-कवड-एकं अंसा सयं च चउसट्टी ।

दो-विजयानं अंतं, आदित्तं दो - विभाग - सरियाणं ॥२६३१॥

१४६१२५१ । ३३४ ।

अर्थ :—एक, पाँच, दो, एक, छह, चार और एक, इस अंक क्रमसे जो संख्या निर्मित हो उसने योजन और एकसौ चौसठभाग अधिक दोनों क्षेत्रोंकी अन्तिम तथा क्षीरोदा एवं उन्मत्तजला नामक दो विभाग-नदियोंकी आदिम सम्बाई ( १४६१२५१३३३ यो० ) है ॥२६३१॥

१४७०७०००५६३ - २४४८३३३ = १४६१२५१३३३ यो० ।

दोनों विभाग नदियोंकी मध्यम सम्बाई—

तिय-इगि-जभ-इगि-छ-कवड-एकं अंसा तहेव अडबीसं ।

अडिभत्तं क्षीरोदे', उन्मत्त - अडम्मि पसेकं ॥२६३२॥

१४६१०१३ । ५३६ ।

अर्थ :—तीन, एक, शून्य, एक, छह, चार और एक, इस अंक क्रमसे जो संख्या उत्पन्न हो उसने योजन और अट्ठाईस भाग अधिक क्षीरोदा एवं उन्मत्तजला नदियोंमेंसे प्रत्येककी मध्यम सम्बाई ( १४६१०१३५३६ यो० ) है ॥२६३२॥

१४६१२५१३३३ - २३८३३३ = १४६१०१३५३६ यो० ।

दोनों नदियोंकी अन्तिम और दो देशोंकी आदिम सम्बाई—

चउ-सग-सग-जभ-छकं, चउ-एकंसा सयं च चउरहियं ।

दोणं एहिणमंतिम - दोहुं आदित्त - दोसु विजयानं ॥२६३३॥

१४६०७७४ । ३३३ ।

अर्थ :—चार, सात, सात, शून्य, छह, चार और एक, इस अंक क्रमसे जो संख्या उत्पन्न हो उसने योजन और एकसौ चार भाग अधिक दोनों नदियोंकी अन्तिम तथा महापथा एवं सुरम्या नामक दो देशोंकी आदिम सम्बाई ( १४६०७७४३३३ यो० ) है ॥२६३३॥

१४६१०१३५३६ + २३८३३३ = १४६०७७४३३३ यो० ।

दोनों देशोंकी मध्यम लम्बाई—

छ-द्वे-तिय-इगि-यज-चउ-एकं अंसा तहेच अउवात्तं ।

महिभक्तलय - विस्तारं, 'महपम्म - सुरम्म - विजयात् ॥२६३४॥

१४५१३२६ । ३६६ ।

अर्थ :— छह, दो, तीन, एक, पाँच, चार और एक, इस अंक क्रमसे जो संख्या निमित्त हो उतने योजन और अड़तालीस भाग अधिक महापम्मा और सुरम्मा नामक देशका मध्यम विस्तार ( लम्बाई १४५१३२६३६ यो० ) है ॥२६३४॥

$१४६०७७३९३ + ६४४८६६६ = १४५१३२६३९९$  यो० ।

दोनों देशोंकी अन्तिम और दो वक्षार-पर्वतोंकी आदिम लम्बाई—

सग-सग-अउ-इगि-चउ-चउ-एकं अंसा य तु-सय-चउरहियं ।

दो - विजयानं अंतं, आबिल्लं दोसु वक्षारे ॥२६३५॥

१४४१८७७३ । ३९३ ।

अर्थ :— सात, सात, आठ, एक, चार, चार और एक, इस अंक क्रमसे जो संख्या उत्पन्न हो उतने योजन और दोसी चार भाग अधिक दोनों देशोंकी अन्तिम तथा अञ्जन एवं विजटावान् इन दो वक्षार-पर्वतोंकी आदिम लम्बाई ( १४४१८७७३९३ योजन ) है ॥२६३५॥

$१४५१३२६३६६ - ६४४८६६६ = १४४१८७७३९९$  यो० ।

दोनों वक्षार-पर्वतोंकी मध्यम लम्बाई—

तिय-दो-णव-णव-चउ-चउ-एकं अंसा य होंति तुलसीवी ।

अंजना - विजटावदिए, होवि तु - महिभक्त - बीहत्त ॥२६३६॥

१४४०६२३ । ६६६ ।

अर्थ :— तीन, दो, नौ, शून्य, चार, चार और एक, इस अंक क्रमसे जो संख्या उत्पन्न हो उतने योजन और बीरदासी भाग अधिक अञ्जन और विजटावान्-पर्वतकी मध्यम लम्बाई ( १४४०६२३६६ यो० ) है ॥२६३६॥

$१४४१८७७३९३ - ६४४६६६६ = १४४०६२३६६६$  यो० ।

दोनों वक्षार-पर्वतोंकी अन्तिम और दो देशोंकी आदिम लम्बाई—

महु-ख-भङ्ग-सुख-तिय-चउ-एककं अंसा सयं च वीसहियं ।  
दो - वक्षार - गिरीजं, अंत आवी हु दोब्धि-विजयाजं ॥२६३७॥

१४३६६६८ । ३३३ ।

अर्थ :—आठ, छह, नौ, नौ, तीन, चार और एक, इस अंक क्रमसे जो संख्या उत्पन्न हो उतने योजन और एकसौ छपत्तर भाग अधिक दो वक्षार-पर्वतोंकी अन्तिम तथा रम्मा एवं पक्षकावती नामक दो देशोंकी आदिम लम्बाईका प्रमाण ( १४३६६६८३३३ यो० ) है ॥२६३७॥

१४४०६२३६६ — ६४४३३३ = १४३६६६८३३३ यो० ।

दोनों देशोंकी मध्यम लम्बाई—

मभ-दो-पण-मभ-तिय-चउ-एककं अंसा सयं च वीसहियं ।  
मजिभल्लय - दोहरी, रम्माए पम्भकावदिए ॥२६३८॥

१४३०४२० । ३३३ ।

अर्थ :—शून्य, दो, पाँच, शून्य, तीन, चार और एक, इस अंक क्रमसे जो संख्या उत्पन्न हो उतने योजन और एकसौ बीस भाग अधिक रम्मा एवं पक्षकावती देशकी मध्यम लम्बाई ( १४३०४२०३३३ यो० ) है ॥२६३८॥

१४३६६६८३३३ — ६४४८३३३ = १४३०४२०३३३ यो० ।

दोनों देशोंकी अन्तिम और दो विभंग-नदियोंकी आदिम लम्बाई—

दो-सग-मभ-एकक-दुर्ग, खउ - एककंसा तहैव चउसहूी ।  
दो-विजयाजं अंतं, आदित्तं दो - विभंग - सरियाजं ॥२६३९॥

१४२१०७२ । ३३३ ।

अर्थ :—दो, सात, शून्य, एक, दो, चार और एक, इस अंक क्रमसे जो संख्या उत्पन्न हो उतने योजन और चौंसठ भाग अधिक दोनों देशोंकी अन्तिम तथा मत्तजसा एवं सीतोदा नामक दो विभंग नदियोंकी आदिम लम्बाई ( १४२१०७२३३३ यो० ) है ॥२६३९॥

१४३०४२०३३३ — ६४४८३३३ = १४२१०७२३३३ यो० ।

दोनों नदियोंकी मध्यम लम्बाई—

तिय-तिय-अन्न-गर्भ-बो-वउ-एकं अंसा सयं च आसहियं ।

मत्तजले सीबोदे, पतकेकं मज्झ - बोहसं ॥२६४०॥

१४२०८३३ । ३५३ ।

अर्थ :—तीन, तीन, आठ, शून्य, दो, चार और एक, इस अंक क्रमसे जो संख्या निर्मित हो उतने योजन और एकसौ चालीस भाग अधिक मत्तजला और सीतोदामेसे प्रत्येककी मध्यम लम्बाई ( १४२०८३३३५३ यो० ) है ॥२६४०॥

१४२१०७२१५२ — २३८१३३ = १४२०८३३९८२ यो० ।

दोनों नदियोंकी अन्तिम और दो देशोंकी आदिम लम्बाई—

पण-पण-पण-गम-बो-वउ-एकं अंसा य होंति चत्तारि ।

दो - सरियाणं अंतं, आदित्सं बोसु विजयाणं ॥२६४१॥

१४२०५६५ । ६६६ ।

अर्थ :—पाँच, नौ, पाँच, शून्य, दो, चार और एक, इस अंक क्रमसे जो संख्या उत्पन्न हो उतने योजन और चार भाग अधिक दोनों नदियोंकी अन्तिम तथा बाँझा एवं वप्रकावती नामक दो देशोंकी आदिम लम्बाईका प्रमाण ( १४२०५६५६६६ यो० ) है ॥२६४१॥

१४२०८३३३५३ — २३८१३३ = १४२०५६५६६६ यो० ।

दोनों देशोंकी मध्यम लम्बाई—

छ-अउ-इगि-एककेकं, अउरेकंसा सयं च सट्ठि-बुदं ।

मज्झिल्लय - बोहसं, संसाए वप्पकावविए ॥२६४२॥

१४१११४६ । ३३३ ।

अर्थ :—छह, चार, एक, एक, एक, चार और एक, इस अंक क्रमसे जो संख्या उत्पन्न हो उतने योजन और एकसौ साठ भाग अधिक बाँझा एवं वप्रकावती देशकी मध्यम लम्बाई ( १४१११४६३३३ यो० ) है ॥२६४२॥

१४२०५६५६६६ — ६४४८१३ = १४१११४६३३३ यो० ।

दोनों देशोंकी अन्तिम और दो वकार-पर्वतोंकी आदिम लम्बाई—

अउ-अउ-अककेक-गर्भ, अउ-एकंसा सयं च अउरहियं ।

दो - विजयाणं अंतं, आदित्सं बोसु ववसारे ॥२६४३॥

१४०१६६८ । ३३३ ।

सर्व :—आठ, नौ, छह, एक, शून्य, चार और एक, इस बंक कमसे जो संख्या उत्पन्न हो उतने योजन और एकसौ चार भाग अधिक दोनों देशोंकी अन्तिम एवं आसोविष तथा वैभवसुकूट नामक दो वक्षःर-पर्वतोंकी आदिम लम्बाई (१४०१६६=१९१ यो०) है ॥२६४॥

१४१११४३३३ — १४४५३३ = १४०११४५३३३३ यो० ।

**दोनों बखार-पर्वतोंकी मध्यम लम्बाई—**

तिय-बुद्ध-संग-राक्ष-वयणं, वडरेणकंसं सयं च सुवणजदी ।

मणिभूमए वीहसं, आसीवित - वेसभण - कहे ॥२६४४॥

20040923 1 2:21

अर्थ :—तीन, चार, सत, शून्य, शून्य, चार और एक, इस अंक क्रमसे जो संख्या उत्पन्न हो उतने योजन तथा एक ही छद्मानवै भाग अधिक भाषीविष और वैश्वराकूटकी मध्यम लम्बाई ( १४००७४३३३३ यो० ) है ॥२६४४॥

१४०१६६८३५४ — १४४१३० = १४००७४३१५१ यो० ।

**दोनों पक्षोंकी अन्तिम और दो देशोंकी आदिम लम्बाई—**

णव-अङ्क-सग-णव-एव-तिय-एकं अंसा छहसरो होंति ।

बो - बबसारो भोलं, भादिल्लं बोसु विजयानं ॥२६४५॥

१३६६७४६ । ३१३ ।

अर्थ :—नौ, द्वाठ, सात, नौ, नौ, तीन और एक, इस अंक क्रमसे जो संख्या निमित्त हो उतने योजन और छिहत्तर भाग अधिक दोनों वक्षार-पर्वतोंकी अन्तिम तथा महाप्रपा एवं नसिन देवकी आदिम लम्बाई ( १३६७८६३३ यो० ) है ॥२६४५॥

१४०=७४३१११ — २४४१३३=१३६६७८८११, यो० ।

**दोनों देशोंकी मध्यम सम्बन्ध—**

इति-चतु-तिय-पञ्च-सप्त-तिय-एककं अंसाः क्रमेण दोसं स ।

मज्झिमए बीहत्तं, मज्झयप्पा - साविरा - बिजयम्मि ॥२६४६॥

१३६० ३४१ । ५४२ ।

अर्थ :—एक, चार, तीन, शून्य, नौ, तीन और एक, इस अंक क्रमसे जो संख्या उत्पन्न हो उसने योजन और बीस भाग अधिक महावप्रा एवं नलिन क्षेत्रकी मध्यम लम्बाई (१३६०३४१३१३ यो०) है ॥२६४६॥

पर्यायार्थक :— आठवर्ग श्री सुविदितामर श्री

$$१३६६७८९३१३ - ६४४८३१३ = १३६०३४१३१३ यो० ।$$

दोनों देशोंकी अन्तिम और दो विभंगा-नदियोंकी आदिम लम्बाई—

दो-जल-अठ-जल-अठ-ति-एकक अंसा छहत्तरहिय - सयं ।

दो - विजयाण अंत, आदित्त दो - विभंग - सरियाण ॥२६४७॥

$$१३८०८६२ । ३१३ ।$$

अर्थ :—दो, नौ, आठ, शून्य, आठ, तीन और एक, इस अंक क्रमसे जो संख्या उत्पन्न हो उसने योजन और एकसौ छपत्तर भाग अधिक दोनों क्षेत्रोंकी अन्तिम तथा तप्तजला एवं श्रीषव वाहिनी नामक दो विभंगा नदियोंकी आदिम लम्बाई ( १३८०८६२३१३ यो० ) है ॥२६४७॥

$$१३६०३४१३१३ - ६४४८३१३ = १३८०८६२३१३ यो० ।$$

दोनों विभंगा-नदियोंकी मध्यम लम्बाई—

छठ-पण-छपत्तर-अठ-ति-एकक अंसा व जाल-मन्त्रिमए ।

दोहलं तप्तजले, ओसहवाहीए पत्तेक ॥२६४८॥

$$१३८०६४४ । ३१३ ।$$

अर्थ :—चार, पाँच, छह, शून्य, आठ, तीन और एक, इस अंक क्रमसे जो संख्या उत्पन्न हो उसने योजन और चासीस भाग अधिक तप्तजला एवं श्रीषववाहिनी में से प्रत्येककी मध्यम लम्बाईका प्रमाण ( १३८०६४४३१३ यो० ) है ॥२६४८॥

$$१३८०८६२३१३ - २३८३१३ = १३८०६४४३१३ योजन ।$$

दोनों नदियोंकी अन्तिम और दो देशोंकी आदिम लम्बाई—

पण-इगि-जल-जल-अठ-ति-एकका अंसा व सोलसहिय-सयं ।

दो - वेमंग - जईणं, अंत आदित्त दोसु विजयाण ॥२६४९॥

$$१३८०४१४ । ३१३ ।$$

अर्थ :—पाँच, एक, चार, शून्य, आठ, तीन और एक, इस अंक क्रमसे जो संख्या निर्मित हो उतने योजन और एकसौ सोलहें भाग अधिक दोनों विभंग-नदियोंकी अन्तिम और कुमुदा एवं सुवप्रा नामक दो देशोंकी आदिम सम्बाई ( १३८०४१५३३३ यो० ) है ॥२६४६॥

$$१३८०६५४३३३ - २३८३३३ = १३८०४१५३३३ यो० ।$$

दोनों देशोंकी मध्यम सम्बाई—

सग-छुण्वा<sup>१</sup>-जभ-सग-सिय-एक<sup>२</sup> अंसा य सहि परिसां ।

मजिभम - पवेस - बीहं, कुमुदाए सुवप्प<sup>३</sup> - विजयम्मि ॥२६५०॥

$$१३७०६६७ । ३३२ ।$$

अर्थ :—सात, छह, नौ, शून्य, साठ, तीन और एक, इस अंक क्रमसे जो संख्या उत्पन्न हो उतने योजन और साठ भाग प्रमाण कुमुदा एवं सुवप्रा क्षेत्रके मध्य-प्रदेशकी सम्बाई ( १३७०६६७३३२ यो० ) है ॥२६५०॥

$$१३८०४१५३३३ - ६४४८३३३ = १३७३९६९००० यो० ।$$

दोनों क्षेत्रोंकी अन्तिम और दो बक्षार-पर्वतोंकी आदिम सम्बाई—

णव-एक<sup>१</sup>-पंच-एक<sup>२</sup>, ससिय - एका तहेव चउ-अंसा ।

दो - विजय - हु - बक्षारे, अंतिम्लाविल्ल - बीहरां ॥२६५१॥

$$१३६१५१६ । ३३२ ।$$

अर्थ :—नौ, एक, पाँच, एक, छह, तीन और एक, इस अंक क्रमसे जो संख्या निर्मित हो उतने योजन और चार भाग अधिक दोनों क्षेत्रों तथा सुखावह एवं त्रिकूट नामक दो बक्षार-पर्वतोंकी क्रमशः अन्तिम और आदिम सम्बाईका प्रमाण ( १३६१५१६३३२ यो० ) है ॥२६५१॥

$$१३७०६६७३३२ - ६४४८३३३ = १३६१५१६३३२ यो० ।$$

दोनों बक्षार-पर्वतोंकी मध्यम सम्बाई—

चउ-एक<sup>१</sup>-पंच-जभ-ससिय-एक<sup>२</sup>सा तहेव अणतवणी ।

मजिभस्सय - बीहरां, सुहावहे तह तिकूडे य ॥२६५२॥

$$१३६०३६४ । ३३३ ।$$



अर्थ :—चार, छह, पाँच, शून्य, छह, तीन और एक, इस अंक क्रमसे जो संख्या उत्पन्न हो उतने योजन और अष्टातम-भाग अधिक मन्त्रावह एवं त्रिकटनम् नामक वक्षार-पर्वतकी मध्यम सम्बाई ( १३६०५६४३१५ यो० ) है ॥२६५२॥

$$( १३६१५१६३१६ - ६५४३३३ = १३६०५६४३१५ यो० ।$$

दोनों पर्वतोंकी अन्तिम और दो देशोंकी आदिम सम्बाई—

राव-जभ-छप्पज-पण-तिय-एकका अंसाइसीबि-सहिय-सयं ।

बो - वक्खार - कु - बिजए, अंतिल्लादिल्ल - बीहत्त ॥२६५३॥

$$१३५६६०६ । ३६६ ।$$

अर्थ :—नौ, शून्य, छह, नौ, पाँच, तीन और एक, इस अंक क्रमसे जो संख्या उत्पन्न हो उतने योजन और एकसौ अठासी भाग अधिक दोनों वक्षारों तथा सरिता एवं वप्रा नामक दो देशोंकी क्रमशः अन्तिम और आदिम सम्बाईका प्रमाण ( १३५६६०६३६६ यो० ) है ॥२६५३॥

$$१३६०५६४३१५ - ६५४३३३ = १३५६६०६३६६ यो० ।$$

दोनों देशोंकी मध्यम सम्बाई—

इगि-एकक-एकका-राव-पण-तिय-एककांसा सयं च बत्तीसं ।

सरिवाए' वप्प - बिजए परोक्कं मज्झ - बीहत्त ॥२६५४॥

$$१३५०१६१ । ३३३ ।$$

अर्थ :—एक, छह, एक, शून्य, पाँच, तीन, और एक इस अंक क्रमसे जो संख्या उत्पन्न हो उतने योजन और एकसौ असीस भाग अधिक सरिता एवं वप्रा देशोंमेंसे प्रत्येक की मध्यम सम्बाई ( १३५०१६१३३३ यो० ) है ॥२६५४॥

$$१३५६६०६३६६ - ६५४३३३ = १३५०१६१३३३ यो० ।$$

दोनों देशोंकी अन्तिम और वेवारण्य-भूतारण्यकी आदिम सम्बाई—

तिय-इगि-सम-जभ-वज-तिय-एककां अंसा छहसरी होति ।

बो - बिजए अंतिल्लं, आदिल्लं वेव - भूवरण्णाणं ॥२६५५॥

$$१३५०७१३ । ३३३ ।$$

अर्थ :—तीन, एक, सात, शून्य, चार, तीन और एक, इस अंक क्रमसे जो संख्या उत्पन्न हो उतने योजन और छिहत्तर भाग अधिक दोनों क्षेत्रोंकी अन्तिम तथा देवारण्य एवं भूतारण्यकी आदिम लम्बाई ( १३४०७१३३ $\frac{१}{२}$  यो० ) है ॥२६५५॥

$$१३४०७१३३\frac{१}{२} - ६४८८३\frac{१}{२} = १३४०७१३३\frac{१}{२} \text{ यो० ।}$$

देवारण्य-भूतारण्यकी मध्यम लम्बाई—

चउ-तिथ-इगि-पण-ति-तिथं, एक्कं अंसा सयं च चउ-ग्रहिंयं ।

मूला - देवारण्ये, हवेदि मणिभरुल - बीहलं ॥२६५६॥

मार्गदर्शक :- अत्र चउत्थो की संख्या १३४०७१३३ $\frac{१}{२}$  यो० का प्रयोग

अर्थ :—चार, तीन, एक, पाँच, तीन, तीन और एक, इस अंक क्रमसे जो संख्या उत्पन्न हो उतने योजन और एकसौ चार भाग अधिक देवारण्य एवं भूतारण्यकी मध्यम लम्बाई ( १३३५१३४३३ $\frac{१}{२}$  यो० ) है ॥२६५६॥

$$१३४०७१३३\frac{१}{२} - ५५७८३३\frac{१}{२} = १३३५१३४३३\frac{१}{२} \text{ यो० ।}$$

दोनों वनोंकी अन्तिम लम्बाई—

पण-पंच-पंच-पण-वुग-तिम-एक्कंसा सयं च वलीसं ।

मूला - देवारण्ये, पकोवकं अंत - बीहलं ॥२६५७॥

$$१३२६५५५३३\frac{१}{२} ।$$

अर्थ :—पाँच, पाँच, पाँच, नौ, दस, तीन और एक, इस अंक क्रमसे जो संख्या उत्पन्न हो उतने योजन और एकसौ बत्तीस भाग अधिक भूतारण्य एवं देवारण्यकी अन्तिम लम्बाई ( १३२६५५५३३ $\frac{१}{२}$  यो० ) है ॥२६५७॥

$$१३३५१३४३३\frac{१}{२} - ५५७८३३\frac{१}{२} = १३२६५५५३३\frac{१}{२} \text{ यो० ।}$$

हच्छित क्षेत्रोंकी लम्बाईका प्रमाण—

कण्ठाविसु विजयाणं, आविम-मणिभरुल-चरिम-बीहले<sup>१</sup> ।

विजयवृद्ध - चंडमवणिय, अद्द - कवे तस्त बीहलं ॥२६५८॥

अर्थ :—कण्ठादिक देशोंकी आदिम, मध्यम और अन्तिम लम्बाईसे विजयाणके विस्तार-को बटाकर शेषको घाटा करनेपर उसकी लम्बाई होती है ॥२६५८॥

हिमवान् पर्वतका क्षेत्रफल—

दो-पंचांबर-इगि-बुग-चउ-अठ-छरिणि-तिहय अंसा य ।

बारस उजवीस - हिवा, हिमवंत - गिरिस्स क्षेत्रफल ॥२६५६॥

३३६८४२१०५२ । ३३ ।

अर्थ :—दो, पाँच, सून्य, एक, दो, चार, आठ, छह, तीन और तीन, इस अंक क्रमसे जो संख्या निर्मित हो उसने योजन और उन्नीससे भाजित बारह भाग प्रमाण हिमवान् पर्वतका क्षेत्रफल ( ३३६८४२१०५२ $\frac{३३}{१०००००००}$  यो० ) है ॥२६५६॥

विलेखार्थ :—पुष्करद्वीपमें स्थित हिमवान् पर्वतकी लम्बाई, द्वीप सदृश अर्थात् ८ लाख योजन है और विस्तार ४२१० $\frac{३३}{१००००००००}$  यो० ( गा० २८४३ में ) कहा गया है । अतः— $८०००००० \times ४२१०\frac{३३}{१०००००००००} = ३३६८४२१०५२\frac{३३}{१०००००००००}$  यो० क्षेत्रफल है ।

विलेखार्थ :—अर्थात् जो पुष्करद्वीपका क्षेत्रफल है

चौदह पर्वतोंसे रठ क्षेत्रफलका निरूपण—

एवं चउसीवि - हवे, बारस - कुल - पञ्चयाप्य पिठफलं ।

होवि नु इसुमार-जुवे, ओहस - गिरि - रठ - क्षेत्रफल ॥२६६०॥

अर्थ :—हिमवान् पर्वतके क्षेत्रफलको चौरासी ( ८४ ) से गुणा करनेपर बारह कुल-पर्वतोंका एकजित क्षेत्रफल होता है । इसमें इश्वाकार पर्वतोंका क्षेत्रफल भी मिला देनेपर चौदह पर्वतोंसे रठ क्षेत्रफलका प्रमाण होता है ॥२६६०॥

विलेखार्थ :—जम्बूद्वीप सम्वन्धी पर्वतोंकी कलाकार्णै क्रमशः दो, आठ, बत्तीस, बत्तीस, आठ और दो है । जिनका योग ( २+८+३२+३२+८+२ )=८४ होता है, इसीलिए गायामें ८४ से गुणा करनेको कहा गया है । यथा— $३३६८४२१०५२\frac{३३}{१०००००००००} \times ८४ = २८२६४७३६८४२१०५२$  योजन ।

इगि-बुग-चउ-अठ-छरिणि-सग-चउ-पण-चउम-अठ-दो कमसो ।

जोयणया एकसो, ओहस - गिरि - रठ - परिमाण ॥२६६१॥

२८४५४७३६८४२१ । ३३ ।





विशेषार्थ :—पुष्करवरद्वीप स्थित प्रत्येक क्षेत्रोंका क्षेत्रफल—

१. भरतक्षेत्र—४२८१०३५१४४१३६३ वर्ग योजन क्षेत्रफल ।
२. हैमवतक्षेत्र—१७१२४१४०५७७३३५ " " " ।
३. हरिद्वारक्षेत्र—६८४६६५६२३०६६३३३ " " " ।
४. विदेहक्षेत्र—२७३६८६२४६२२७६३३३ " " " ।
५. रम्यक्षेत्र—६८४६६५६२३०६६३३३ " " " ।
६. हैरणवत—१७१२४१४०५७७३३५ " " " ।
७. ऐरावतक्षेत्र—४२८१०३५१४४१३६३ " " " ।

पुष्करार्धके जम्बूद्वीप प्रमाण खण्ड—

अर्धक्षेत्र—सिद्धि, कलपद्राक्षेत्र, पुष्करवरद्वीप ।

क्षेत्रफलं किञ्चन, एककरस - सयाणि चससीही ॥२६६७॥

११८४ ।

अर्थ :—जम्बूद्वीप सम्मन्वी क्षेत्रफलके प्रमाणसे पुष्करार्धद्वीपका क्षेत्रफल करनेपर ग्यारहसी बीरासी ( ११८४ ) खण्ड प्रमाण होते हैं ॥२६६७॥

विशेषार्थ :—पुष्करवरद्वीपके बाह्य सूची व्यास ( ४५ लाख ) के वर्गमेंसे उसीके अन्त्यन्तर सूची व्यास ( २६ लाख ) के वर्गको घटाकर जम्बूद्वीपके व्यासके वर्गका भाग देनेपर ११८४ मालाकार्य प्राप्त होती है । अर्थात् पुष्करवर द्वीपके जम्बूद्वीप बराबर ११८४ खण्ड होते हैं । यथा—  
 $( ४५०००००^२ - २६०००००^२ ) \div १०००००^२ = ११८४$  खण्ड ।

मनुष्योंकी स्थितिका निरूपण—

वेदुंति मानुसुत्तर - परियंतं तस्त संघण - विहोणा ।

मनुष्या मानुसुत्ते, वे - अद्वाइज - उर्वाहि - वीवेसु ॥२६६८॥

एवं विष्णासो समस्तो ।

अर्थ :—दो समुद्रों और अड़ाईद्वीपोंके भीतर मानुसुत्तर पर्वत पर्यन्त मनुष्यक्षेत्रमें ही मनुष्य रहते हैं । इसके भागे वे ( उस ) मानुसुत्तर पर्वतका उत्कर्षन नहीं करते ॥२६६८॥

इसप्रकार विव्यास समाप्त हुआ ।

भरतादिक भेद अन्तराधिकार—

भरह-बसुंवर-पहुवि, जाव य ऐरावतो ति अहियारा ।  
जंझुवीवे उत्तं, सव्वं तं एत्थ वत्तव्वं ॥२६६६॥

एवं पौष्करवरोध-सव्व-अन्तर-अहियारा समाप्ता ॥६॥

अर्थ :—जम्बूद्वीपमें भरतक्षेत्रसे लेकर ऐरावतक्षेत्र पर्यन्त जितने अधिकार कहे गये हैं, वे सब यहाँ पर भी कहे जाने चाहिए ॥२६६६॥

इसप्रकार पुष्करवर द्वीपके सब अन्तराधिकार समाप्त हुए ॥६॥

मनुष्योंके भेद—

एर-रासी सामव्वं, पज्जसा मज्झिमी अपज्जसा ।  
इय चउविह - भेद - कुदो, उप्पज्जवि मानुसे सेसे ॥२६७०॥

॥ एवं भेदो समाप्तो ॥७॥

अर्थ :—सामान्य मनुष्य, पर्याप्त मनुष्य, मनुष्यिणी और अपर्याप्त-मनुष्य, इन चार भेदोंसे युक्त मनुष्य राशि मानुषलोकमें उत्पन्न होती है ॥२६७०॥

इसप्रकार भेदका कथन समाप्त हुआ ॥७॥

मनुष्योंकी संख्याका प्रमाण—

रुवेणूणा सेडी, सुईमंगुल - पहिल्ल - तविण्हि ।  
मूलेहि पविहत्तो, हवेवि सामव्वण - एर - रासी ॥२६७१॥

१ । ३ । १ ।

अर्थ :—जगज्जृणीमें सूच्यंगुलके प्रथम और तृतीय वर्गमूलका भाग देनेपर जो सव्व प्राप्त हो उसमेंसे एक कम कर देनेपर सामान्य मनुष्य-राशिका प्रमाण ज्ञात होता है ॥२६७१॥

चउ-महु-पंच-सत्तह-वजय-पंचहु - तिचय - अहु - जवा ।  
ति-वज्जकहु-महाइं, छ-छक्क-पंचहु-नुग-अ-व-वज्जका ॥२६७२॥

नभ-सप्त-गणन-अष्ट-नव-एकं पञ्चस-रासि-परिमाणं ।

दो-पञ्च-सप्त-द्वि-छन्द-सप्त-पञ्च-द्वि-पञ्च - नव - एकं ॥२६७३॥

१६८०७०४०६२८५६६०८४३६८३८५९८७५८४ ।

सिय-पञ्च-द्वि-अष्ट-नवयं, छ-पञ्च-अष्ट-एक-द्वि-मेकं ।

द्वि-द्वि-पञ्च-नव-पञ्चय, मणुसिणि - रासिस्स परिमाणं ॥२६७४॥

५६४२११२१८८५६६८२५३१६५१५७६६२७५२ ।

वर्ण :- चार, आठ, पाँच, सात, आठ, नौ, पाँच, आठ तीन आठ, नौ, तीन, चार, आठ, शून्य, छह, छह, पाँच, आठ, दो, छह, शून्य, चार, शून्य, सात, शून्य, आठ नौ और एक, इतने ( १६८०७०४०६२८५६६०८४३६८३८५९८७५८४ ) अंक प्रमाण पर्याप्त मनुष्य राशि तथा दो, पाँच, सात, दो, छह, नौ, सात, पाँच, एक, पाँच, नौ, एक, तीन, पाँच, दो, आठ, नौ, छह, पाँच, आठ, आठ, एक, दो, एक, एक, दो, चार, नौ और पाँच, इतने ( ५६४२११२१८८५६६८२५३१६५१५७६६२७५२ ) अंक प्रमाण मनुष्यराशि प्रमाण है ॥२६७३-२६७४॥

सामान्य-रासि-मन्त्रे, पञ्चसं 'मणुसिणी वि सोहेज्ज ।

अवसेसं परिमाणं, होवि अपञ्चस - रासिस्स ॥२६७५॥

१ । ३ ।

एवं संख्या समत्ता ॥८॥

वर्ण :- सामान्यराशिमेंसे पर्याप्त मनुष्यका और मनुष्यनीका प्रमाण घटा देनेपर जो शेष रहे, उतना अवर्षाप्त मनुष्य राशिका प्रमाण होता है ॥२६७५॥

विशेषार्थ :- अवर्षाप्त राशि = सामान्य राशि — ( पर्याप्त राशि + मनुष्यनी )

अवर्षाप्ति राशि = ( १०<sup>३</sup> - १ ) — ( १६८०७०४०६२८५६६०८४३६८३८५९८७५८४ + ५६४२११२१८८५६६८२५३१६५१५७६६२७५२ )

नोट :- गाथा २६७५ की संदृष्टि स्पष्ट नहीं हो सकी है ।

इसप्रकार संख्याका कथन समाप्त हुआ ॥८॥

मनुष्योंमें अल्पबहुत्वका निरूपण—

अंतरबीध - मणुस्सा, पोवा ते कुवसु वससु संसेज्जा ।

ततो संसेज्ज - पुणा, हवन्ति हरि - रम्मगेसु वरिसेसु ॥२६७६॥



अर्थ :—अन्तर्द्वीपज मनुष्य बोधे हैं । इनसे संख्यातगुणे मनुष्य दस कुद-क्षेत्रोंमें और इनसे भी संख्यातगुणे हरिवर्ष एवं रम्यक क्षेत्रोंमें हैं ॥२६७६॥

वरिसे संखेजगुणा, हेरन्मववम्मि हेमवद - वरिसे ।

भरहेरावद - वरिसे, संखेजगुणा विवेहे य ॥२६७७॥

अर्थ :—हरिवर्ष एवं रम्यकक्षेत्रस्थ मनुष्योंसे संख्यातगुणे मनुष्य हेरन्मवत और हेमवत-क्षेत्रमें हैं तथा इनसे, संख्यातगुणे भरत एवं ऐरावत क्षेत्रमें और इनसे भी संख्यातगुणे विवेह क्षेत्रमें हैं ॥२६७७॥

होति असंखेजगुणा, लद्धिमणुस्सारि ते च सम्पुञ्छा ।

ततो विसेस - ग्रहिणं, माधुस - सामन्म - रासी य ॥२६७८॥

अर्थ :—विदेह क्षेत्रस्थ मनुष्योंसे लब्ध्यपर्याप्त मनुष्य असंख्यात गुणे हैं । वे ( लब्ध्यपर्याप्त ) सम्पुञ्छन होते हैं । लब्ध्यपर्याप्त मनुष्योंसे विशेष अधिक सामान्य मनुष्यराशि है ॥२६७८॥

पञ्जसा निव्वसियपञ्जसा लद्धिमा अपञ्जसा ।

सत्तरि - सुत्त - सबज्जा - खंडेसु जेबरेसु लद्धिजरा ॥२६७९॥

अप्पबहुगं समत्तं ॥६॥

अर्थ :—पर्याप्त, निवृत्त्यपर्याप्त और लब्ध्यपर्याप्तके भेदसे मनुष्य तीन प्रकारके होते हैं : एकसौ सत्तर आर्यखण्डोंमें ये तीनों प्रकारके मनुष्य होते हैं । अग्य (म्लेच्छादि) खण्डोंमें लब्ध्यपर्याप्तक मनुष्य नहीं होते ॥२६७९॥

अत्पवहुत्तका कथन समाप्त हुआ ॥६॥

मनुष्योंमें गुणस्थानादिकोंका निरूपण—

पण-परा-अज्जाखंडे, भरहेराववम्मि मिण्ण - गुणठाणं ।

अवरे वरम्मि चोइस - परियंत कथाइ बीसंति ॥२६८०॥

अर्थ :—भरत एवं ऐरावत क्षेत्रके भीतर पाँच-पाँच आर्यखण्डोंमें जघन्यरूपसे मिथ्यात्व-गुणस्थान और उत्कृष्ट रूपसे कदाचित् चौदह गुणस्थान तक पाये जाते हैं ॥२६८०॥

पंच-विदेहे सद्धि - समण्णिव - सब - अज्जाखंडए अवरे ।

छगुणठाणे तत्तो, चोइस - परियंत बीसंति ॥२६८१॥

अर्थ :—पाँच विदेह क्षेत्रोंके भीतर एकसौ साठ आर्यखण्डोंमें जघन्य-रूपसे छह गुणस्थान और उत्कृष्ट रूपसे चौदह गुणस्थान तक पाये जाते हैं ॥२६८१॥

**विशेषार्थ :-** विदेहमें छह गुणस्थान—पहला, चौथा, पाँचवाँ, छठा, सातवाँ और तेरहवाँ निरन्तर पाए जाते हैं। शेष गुणस्थान सान्तर हैं। अतः अवश्यतः ये छह गुणस्थान ही हमेशा पाए जाएंगे।

**सम्बेसुं भोगभुक्ते, दो गुणठाणाणि सव्व - कालम्मि ।**

**दीसंति चउ - विपप्पं, सव्व - मिज्झस्सिप्प मिज्झस्सं ॥२६८२॥**

**अर्थ :-** सब भोगभूमिजोमें सदा दो गुणस्थान ( मिथ्यात्व और असंयतसम्यग्दृष्टि ) तथा ( उत्कृष्टरूपसे ) चार गुणस्थान रहते हैं। सब म्लेच्छस्त्रणोंमें एक मिथ्यात्व गुणस्थान ही रहता है ॥२६८२॥

**विज्जाहर - सेढीए, ति गुणठाणाणि सव्व - कालम्मि ।**

**पण - गुणठाणा दोसह, छंडिव - विज्जाण चोदसं ठाणं ॥२६८३॥**

**अर्थ :-** विद्याधर श्रेणियोंमें सर्वदा तीन गुणस्थान ( मिथ्यात्व असंयत और देशसंयत ) तथा ( उत्कृष्ट रूपसे ) पाँच गुणस्थान होते हैं। विद्याएँ छोड़ देनेपर वहाँ चोदह गुणस्थान भी होते हैं ॥२६८३॥

**पज्जसायज्जसा, जीवसमासा हवन्ति ते बोण्णि ।**

**पज्जसि - अपज्जसी, छुमेया सव्व - मनुवाणं ॥२६८४॥**

**अर्थ :-** सब मनुष्योंके पर्याप्त एवं अपर्याप्त दोनों जीवसमास, छहों पर्याप्तियाँ और छहों अपर्याप्तियाँ भी होती हैं ॥२६८४॥

**दस-पाण-सत्त-पाणा, चउ-सज्जा मणुस-गति हु पंचिदी ।**

**गदि-इंविद्य तस-काया, तेरस-ओगा विकुम्भ-बुन-रहिया ॥२६८५॥**

**अर्थ :-** सब मनुष्योंके पर्याप्त अवस्थामें दस प्राण और अपर्याप्त अवस्थामें सात प्राण होते हैं। संज्ञाएँ चारों ही होती हैं। चोदह सांगंणार्थोंमेंसे क्रमशः गतिकी अपेक्षा मनुष्यगति, इन्द्रियकी अपेक्षा पञ्चेन्द्रिय, तस-काय और पन्द्रह योगोंमेंसे वैक्रियिक एवं वैक्रियिक मिश्रको छोड़कर शेष तेरह योग होते हैं ॥२६८५॥

**ते वेदसय - सुत्ता, अचगाव - वेवा वि केइ दीसंति ।**

**सयस - कसाएहि जुहा, अकसाया होंति केइ शरा ॥२६८६॥**

**अर्थ :-** वे मनुष्य तीनों वेदोंसे युक्त होते हैं। परन्तु कोई मनुष्य ( अनिवृत्तिकरणके प्रवेद-भागसे लेकर ) वेदसे रहित भी होते हैं। कषायकी अपेक्षा वे सम्पूर्ण कषायोंसे युक्त होते हैं। परन्तु कोई ( ग्यारहवें गुणस्थानसे ) कषाय रहित भी होते हैं ॥२६८६॥

सयत्नेहि शार्णेहि, संजम - वंसर्णेहि सेस्तसेस्तेहि ।

भक्ष्याभक्ष्यत्तेहि, य क्षत्रिह - सम्मत्त - संकुत्ता ॥२६८७॥

अर्थ : वे मनुष्य, सम्पूर्ण ज्ञानों, संयमों, दशनों, लेख्याओं, अजेयत्व, अभ्यत्व, अभव्यत्व और छह प्रकारके सम्पत्त्व सहित होते हैं ॥२६८७॥

सज्जो हवन्ति सज्जे, ते आहारा तथा भजाहारा ।

पाणोवजोग - वंसज - उवजोग - कुवा वि ते सज्जे ॥२६८८॥

गुणद्विजावी समचा ।

अर्थ :—सब मनुष्य संज्ञामार्गशाकी अपेक्षा संज्ञी और आहारमार्गशाकी अपेक्षा आहारक एवं भजाहारक भी होते हैं । वे सब पाणोवजोग और उवजोग सहित होते हैं ॥२६८८॥

गुणस्थानाविकोंका वर्णन समाप्त हुआ ।

मनुष्योंकी गत्यन्तर-प्राप्ति—

संक्षेज्जाउवमाणा, मनुवा नर-तिरिय - देव - चिरयसुं ।

सज्जेसुं जायंते, 'सिद्ध - गवोओ वि पावन्ति ॥२६८९॥

अर्थ :—संक्षेज्जाउवमाणा मनुष्य, देव, मनुष्य, तिर्यञ्च और नारकियोंमेंसे सबमें उत्पन्न होते हैं तथा सिद्ध-गति भी प्राप्त करते हैं ॥२६८९॥

ते संसादीबाऊ, जायंते 'केइ जाव ईसाणं ।

य हु होंति ससाण - नरा, जम्मम्मि अणंतरे केई ॥२६९०॥

संक्रमणं गदं ॥१०॥

अर्थ :—असंख्यासायुष्कवाले कितने ही मनुष्य ईशान स्वर्ग तक उत्पन्न होते हैं । किन्तु अनन्तर जन्ममें इनमेंसे कोई भी शलाका-पुरुष नहीं होते हैं ॥२६९०॥

संक्रमणका कथन समाप्त हुआ ॥१०॥

मनुष्यायुका बन्ध—

कोहादि - अउक्काणं, धूली - राईए तहू य कहुँए ।

गोमुत्त<sup>१</sup> - तनुमसेहि, 'छस्सेस्सा मखिभमंसेहि ॥२६६१॥

अे जुत्ता गर-तिरिया, सग-सग-जोगेहि सेस्स-संजुत्ता ।

गारय-बेया केई, <sup>२</sup>

॥२६६२॥

आउसं बंधनं गदं ॥११॥

अर्थ :—जो मनुष्य एवं तिर्यञ्च कोषादिक चार कवियोंके क्रमशः धूलिरेखा, काष्ठ, गोमूत्र तथा शरीरमसरूप भेदों सहित छह लेश्याओंके मध्यम अंशोंसे युक्त हैं वे, तथा अपने-अपने योग्य छह लेश्याओंसे संयुक्त कितने ही नारकी और देव भी अपने-अपने योग्य मनुष्य वर्युको बाँधते हैं ॥२६६१-२६६२॥

आर्यवर्षिक :- अथर्वर्षी सुदिक्षितोऽथ जी मरुताय

आयुबन्धका कथन समाप्त हुआ ॥११॥

मनुष्योंमें योनियोंका निरूपण—

उप्पसी मक्खजाणं, गग्गज - सम्मुच्छिन्नं लु हो - मेवा<sup>३</sup> ।

गग्गुग्गभव - जीवाणं, 'मिस्सं सच्चित्त - जोणीओ ॥२६६३॥

अर्थ :—मनुष्योंका जन्म गर्भ एवं सम्मूर्च्छनके भेदसे दो प्रकारका है । इनमेंसे गर्भजन्मसे उत्पन्न जीवोंके सचित्तादि तीन योनियोंमेंसे मित्र ( सचित्तावित ) योनि होती है ॥२६६३॥

सीदं उण्हं मिस्सं, जीवेसु<sup>४</sup> होंति गग्ग - पभवेसु<sup>५</sup> ।ताणं हवन्ति 'संवड - जोणीए मिस्स - जोणी<sup>६</sup> य ॥२६६४॥

अर्थ :—गर्भसे उत्पन्न जीवोंके शीत, उष्ण और मित्र ( ये ) तीनों ही योनियाँ होती हैं तथा इन्हीं गर्भज जीवोंके संवृतादिक तीन योनियोंमेंसे मित्र ( संवृतविकृत ) योनि होती है ॥२६६४॥

१. द. व. क. ख. उ. गोमुत्ता । २. द. व. क. ख. उ. छस्सेस्सा । ३. द. व. क. ख. उ. शिष्ट-जोनाखुत्ताउत्तं । ४. द. व. उ. भेदो । ५. द. व. क. ख. उ. मिस्स सचित्तो । ६. द. सक्कव, व. क. ख. उ. सम्भव । ७. द. व. क. ख. उ. जोणीए ।

सौदुह-मिस्स-जोनी, सच्चिदाचित्त-मिस्स-विउडा' य ।

सम्मुच्छिम - मणुजाणं, 'ससच्चिद' होति जोणीओ ॥२६६५॥

अर्थ :- सम्मुच्छिम मनुष्योंके उपर्युक्त सचित्तादिक नौ गुण-योनियोंमेंसे शीत, उष्ण, मिश्र ( शीतोष्ण ), सचित्त, अचित्त, मिश्र-सचित्ताचित्त) और विवृत ये सात योनियाँ होती हैं ॥२६६५॥

जोणी संखावसा, कुम्मुण्णव - वंसपत्त - जामाओ ।

तेसुं संखावसा, गम्मेण विवज्जिदा' होवि ॥२६६६॥

अर्थ :- संखावतं, कूर्मोन्नत और वंशपत्र नामक तीन आकार-योनियाँ होती हैं । इनमेंसे संखावतं योनि गर्भसे रहित होती है ॥२६६६॥

कुम्मुण्णव - जोणीए, तिथ्यरा षडकवट्टिओ बुविहा ।

बलदेवा जायंते, सेस - जरा वंसपत्ताए ॥२६६७॥

अर्थ :- कूर्मोन्नत-योनिसे तीर्थकर, दो प्रकारके षडकवर्ती ( सकलचक्री और अर्धचक्री ) और बलदेव तथा वंशपत्र-योनिसे शेष साधारण मनुष्य उत्पन्न होते हैं ॥२६६७॥

एवं सामण्ण्येसुं, होति मनुस्साण अट्ठ जोणीओ ।

एवाण' विसेसाणि, चोहस - सक्खाणि भज्जिद्वानि ॥२६६८॥

जोणि यमाणं गवं ॥१२॥

अर्थ :- इसीप्रकार मनुष्योंकी ( सामान्य योनियोंमेंसे ) आठ योनियाँ, और ( इनके विशेष भेदोंमेंसे ) चौदह लाख योनियाँ होती हैं ॥२६६८॥

योनिप्रमाणका निरूपण समाप्त हुआ ॥१२॥

मनुष्योंके सुख-दुःखका निरूपण —

सुखोस-अवेक्क-सयं, यमाण - भोगक्खिणीण सुहमेक्कं ।

कम्म - सिदीसु जराणं, हवेवि सोक्खं' च दुक्खं च ॥२६६९॥

सुख-दुक्खं' गवं ॥१३-१४॥

अर्थ :— मनुष्योक्तः— मनुष्यस्य जीवितकालस्य अन्तर्गतम्

अर्थ :— मनुष्योंकी एकसी छद्मसी भोगभूमियों ( ३० भोगभूमियोंमें और ६६ कुभोग-भूमियों ) में केवल सुख और कर्मभूमियोंमें सुख एवं दुःख दोनों ही होते हैं ॥३६६६॥

सुख-दुःखका वर्णन समाप्त हुआ ॥१३-१४॥

सम्यक्त्व प्राप्तिके कारण—

केद पद्विबोहणेनं, केद सहावेण तासु सुमीसुं ।

बद्धं सुह - दुःखं, केद मणुस्सा बहु - 'पयारं ॥३०००॥

जावि - भरणेन केदं, केद जिणिवस्स महिम - वंसणेनो ।

जिणिविद - वंसणेनं, उवसम - पणुवीणि केद 'गेहंति ॥३००१॥

सम्पत्तं गवं ॥१५॥

अर्थ :—उन भूमियोंमें कितने ही मनुष्य प्रतिबोधनसे, कितने ही स्वभावसे, कितने ही बहुतप्रकारके सुख-दुःखको देखकर उत्पन्न हुए जातिस्मरणसे, कितने ही जिनेन्द्रभगवान की कल्याणकारिरूप महिमाके दर्शनसे और कितने ही जिनविम्बके दर्शनसे औपशमादिक सम्यग्दर्शनको ग्रहण करते हैं ॥३००१॥

सम्यक्त्वका कथन समाप्त हुआ ॥१५॥

मुक्ति-गमनका अन्तर—

एक-समयं जहण्णं, दु-ति<sup>१</sup>-समय-प्यह्वि जाव छम्मासं ।

वर-बिरहं भरण-जगे<sup>२</sup>, उबारिं सिद्धं भव - समए ॥३००२॥

अर्थ :— मनुष्यलोकमें मुक्ति-गमनका अल्प अन्तरकाल एक समय और उत्कृष्ट अन्तर दो-तीन समयोंसे लेकर छह मास पर्यन्त है । इसके पश्चात् आठ समयोंमें जीव सिद्धिको प्राप्त करते ही हैं ॥३००२॥

मुक्त जीवोंका प्रमाण—

पत्तेकं अड - समए, बत्तीसडवाल - सद्धि - दुयसवरि ।

बुलसीवी छप्पउदी, बुचरिमम्मि पट्ट - अहिथ - सयं ॥३००३॥

सिद्धं भवति एकक - समए, उक्कस्से अवययम्मि एक्केवकं ।

मज्झिम - पडिबड्डीए, चउहत्तरि सव्व - समएसुं ॥३००४॥

अर्थ :— इन आठ समयोंमेंसे प्रत्येकमें क्रमशः उत्कृष्टरूपसे बत्तीस, षड़तालीस, साठ, बहत्तर, बीस, छपानबे और अन्तिम दो समयोंमें एकसौआठ - एकसौआठ - जीव तथा जघन्य-रूपसे एक-एक सिद्ध होते हैं । मध्यम प्रतिपत्तिसे सब समयोंमें  $( ५९२ \div ८ = ७४ )$  चौहत्तर-बीहत्तर जीव सिद्ध होते हैं ॥३००४-३००४॥

तीद - समयाण सव्वं, पक्क-सय-वाणउच्चि-रुव-संगुणिवं ।

अव्व<sup>१</sup> - समयारहिय - छम्मासय - भजिदं निम्बदा सव्वे ॥३००५॥

अ ॥ ५६२ । मा ६ । स ८ ।

एवं निज्जवि-गमन-परिमाणं समसं<sup>२</sup> ॥१६॥

अर्थ :— अतीतकालके सर्व समयोंको ( ५६२ ) पाँचसी बानवे रूपोंसे गुणित करके उसमें आठ समय अधिक छह मासोंका भाग देनेपर लब्ध राशि प्रमाण सब निवृत्त अर्थात् मुक्त जीवोंका प्रमाण प्राप्त होता है ॥३००५॥

( अतीतकालके समय  $\times ५६२$  )  $\div$  ६ मास ८ समय = मुक्त जीव ।

इसप्रकार सिद्धगतिको प्राप्त होने वालोंके प्रमाणका कथन समाप्त हुआ ॥१६॥

अधिकारान्त मङ्गल—

संसारणव<sup>३</sup>-महुरां, तिहुवण-भव्वाण पेम्म-पुह-चलनं ।

संवरित्तिव सयलहुं, सुवासणाहं णमंतामि ॥३००६॥

एवंमाइरिय-परंपरागय<sup>४</sup>-तिलोयपञ्चलीए भणुव - जग<sup>५</sup>-सरुव-गिरुवण-पण्णली नाम चउत्थो महाहियारो समसो ॥४॥

अर्थ :— तीनों लोकोंके सध्यजनोंके स्नेह युक्त चरणोंवाले, समस्त पदार्थोंके दर्शक और संसार-समुद्रके मधन-कर्ता सुमार्श्वनाथ स्वामीको मैं नमन करता हूँ ॥३००६॥

इसप्रकार आचार्य-परम्परागत त्रिसोकप्रशस्तिमें मनुष्यसोक स्वरूप निरूपण

करने वाला चतुर्थ-महाधिकार समाप्त हुआ ॥

१. द. व. क. ज. उ. पक्कसमयाणिय छम्मासयम्मि भजिदं निम्बदा । २. व. व. क. समसा ।

३. द. व. क. ज. उ. संसारणवमहुरां । ४. द. व. क. ज. उ. पेम्मपुहवमण । ५. व. क. ज. उ. परंपरागय ।

६. द. व. क. ज. उ. वधपवावणिसुली वल्लसंपण्णली ।

# गाथानुक्रमणिका

| गाथा               | गाथा सं० | गाथा             | गाथा सं० | गाथा                | गाथा सं० |
|--------------------|----------|------------------|----------|---------------------|----------|
| अ                  |          | अट्टतरि संजुता   | २४१४     | अट्टाबोससहस्सा      | २२६६     |
| अइमुत्तयाण मवणा    | १३१      | अट्टतरि सहस्सा   | २६६१     | " "                 | २४१०     |
| अइमेच्छा ते पुरिसा | ५६६      | अट्टताम सहस्सा   | ९३       | अट्टाबोसं तवणा      | १४६९     |
| अहविट्ठि अयाविट्ठि | १४३८     | अट्टतामो बोवा    | २७६४     | " "                 | २६०४     |
| अहवुट्ठिअणवुट्ठी   | १६४५     | अट्टतोस सहस्सा   | १७२३     | अट्टावीमुत्तरसय     | ४८१      |
| अहवुंवरकम सरिसा    | २२७०     | अट्टदुगेकं ओपला  | २८९४     | अट्टाविमुत्तरसय     | १११३     |
| अउपत्तिकी मवंतर    | १०२९     | अट्टमहियसहस्स    | १८९८     | अट्टासीदि समाणि     | १२२८     |
| अक्खरं अणुक्खरमए   | ६६५      | अट्टमए अट्टविहा  | ८७०      | अट्टिबिपुवतिगच्छणम  | २६१७     |
| अक्खरं अणुक्खरमए   | १००४     | अट्टमए इमितिसमा  | १४४४     | अट्टुत्तरसयमेत्तं   | १७०६     |
| अक्खरं अणुक्खेसुं  | ३८९      | अट्टमए एाकमे     | ४७२      | अट्टुत्तरसयसहिवा    | ८२७      |
| अक्का मणवक्काया    | ४२०      | अट्टरसजोयणाणि    | २७८४     | अट्टुत्तरसयसंका     | १७१०     |
| अक्कोणमहाणसिमा     | ८६६      | अट्टरस महाभासा   | ६१०      | " "                 | १८६४     |
| अग्निविसाए साक्षी  | २८२४     | अट्टरससहस्साणि   | १४१७     | अट्टे ककुषपट्टितियं | २८५१     |
| अभ्वदि एव-इसमासे   | ६३२      | अट्टमववावतुंगो   | ४४७      | अट्टे व वपा मोक्क   | १४२२     |
| अभ्वरसरिभ्वरुवा    | १४०      | अट्टसया पुण्ववरा | ११५२     | अट्टे व य दीवुलं    | ११५९     |
| अभियजिण पुण्वंता   | ६१५      | अट्टसहस्समहिगं   | ११८३     | अउचउचउच अउपला       | २७०४     |
| अक्काअंअम्मि ठिदा  | २३०९     | अट्टसहस्सा अउसय  | २१६६     | अउओयण उचुंगो        | २१७७     |
| अकुलुण अउलीकइसास   | १२१      | अट्टसहस्सा एवसय  | २०१७     | अउहं अउसीदिगुण      | ३०५      |
| अट्टचउएककणअउअ      | २६२६     | अट्टाण एकसमी     | २३२२     | अउउउवि अहियणअउअ     | ७८४      |
| अट्टचउसतएअउअ       | २८८०     | अट्टाणं भूमीणं   | ७३६      | अउउउविसमा ओही       | ११२०     |
| अट्टिअवओएणया       | १६६५     | अट्टारस कोओओ     | १४०२     | अउअअअअअअअअ          | २९४३     |
| अट्टअअट्टअअओ       | २७४०     | अट्टारस वासाहिय  | ६५५      | अउतिअअअ अउअअअ       | २६९७     |
| अट्टअअअअअतिअअउ     | २६३७     | अट्टारस सहुस्सा  | २६१२     | अउतिअअअतिअ अउअअ     | २९०९     |
| अट्टअअअअतिअअण      | २६५४     | अट्टाअअअअअणि     | २६४९     | अउतिअ सअअअअअअ       | २६७६     |
| अट्टअअअअअणि        | १६१२     | अट्टाअअअअअहस्सा  | १८००     | अउदासअअं ओही        | ११४६     |
| अट्टाओ सुअं        | १०       | अट्टाबोस कुवीसं  | १३०४     | अउवाअअअअअअं         | १७०१     |
| अट्टातिअअअओ        | २७२७     | अट्टाबोससमाणि    | ११५८     | अउअअअअ अउअअअ        | २१९८     |
| अट्टाअअअअअअअ       | २६६२     | अट्टाबोससहस्सा   | १२१८     | अउअअअअअअअअ          | २६६      |
| अट्टातिअओणि अंअ    | २७०५     | " "              | १७३९     | अउअअअअअअअअ          | ५६८      |
| अट्टतरि सहिमाए     | १८४      | " "              | २१८      | अउओसअअअअअअ          | १२६६     |
|                    |          | " "              | २२५८     |                     |          |



| गाथा                         | गाथा सं० | गाथा                         | गाथा सं० | गाथा                | गाथा सं० |
|------------------------------|----------|------------------------------|----------|---------------------|----------|
| महत्तमएकवचनमुद्रा            | २७१७     | महत्तरमि दीवा                | २७६५     | महिराहिद्वय जीवे    | १०५०     |
| महत्तमएकवचनमुद्रा            | १२८३     | महत्तरमि नागे                | २५६५     | महिराहिम तल्लीने    | १०५१     |
| महत्तोविशेषहि                | ७५७      | " "                          | २७९५     | महिराहियपुकार       | १०५५     |
| महत्तोदी मगसोदी              | १७१      | महत्तरवेदीदी                 | २४७६     | मनुषी मदेककलीय      | ६६०      |
| महावार केवसिमुली             | २३१२     | महिहणे म मसोका               | ७९४      | मस्तजकमुककपादिवध    | ७०७      |
| महावादिमु विदिसासु           | २५२५     | महिशोगपुरेहितो               | १४७      | मस्तम्वीवो तारम     | १४२५     |
| महावावुत्ता कुलहीण गाथा १५१६ |          | ममम चउसीदिमुली               | ३०६      | " तारम              | ५२६      |
| महावावुत्ता सन्ने            | १४४८     | ममरराणमिद्वज्जला             | २३११     | मस्तमुदकिन्हेतोरति  | ५१८      |
| महावामहिमामविमा              | १०१३     | ममवत्ताए चवही                | २४६९     | मस्तपुष मुककपट्टमि  | १२०४     |
| महावदिमासु सुवर              | २७७२     | ममवत्ते उवरीदी               | २४६५     | मस्तपुरो मिहपुरी    | २३२६     |
| महावपुकाराणं महावाम          | १०३५     | ममिदमवी तहेवी                | ४९८      | मह उवद तिरिय वसरं   | १०५१     |
| महावाहाए पुस्ते              | ६५८      | मरकु चमतिगाभा                | ६१३      | मह उवद तिरिय वसदे   | १०५५     |
| " "                          | ६५६      | मरजिणमरिदतिस्ते              | ११८५     | मह को वि मसुरदेवी   | १५२५     |
| महावमकमस एव                  | ६०६      | मरमन्तिजंतरागे               | १४२७     | मह गियणियणमरेसुं    | १६८१     |
| महावपुणा एदस्ति              | २३६४     | मरसमकविमसजिणा                | ६१६      | मह गोसकोदिसवसे      | ५६२      |
| महावाए चमकोली                | १३७७     | मवाणय चउलनकावी               | २६५६     | मह वरिक्कणभाएणं     | १३६२     |
| महाणं बहु उववेसं             | ५०८      | मवरविदेहसमुभव                | २०९७     | " "                 | १३६७     |
| महाणे विविहा भवा             | १०५७     | मवरविदेहसंते                 | २२२९     | मह पउमचवकवट्टी      | १२२६     |
| महाणे चारण मुखिलो            | १५३७     | मवराए तिमिसमुहा              | १७६      | मह चममवेदीयो        | ८७३      |
| महाणं लवणमुरासी              | १४३८     | मवाजिदवारसम                  | २५१५     | मह चरहपमुहाणं       | १३१४     |
| महाणं सदा अंधारं             | ४४३      | मवराहिमुहे मविद्वय           | १३४०     | महमिदा के देवा      | ७१७      |
| महाणेवाणं दमाणं              | ४८६      | मवसत्पिणि उस्सप्पिणि         | १६३६     | महवा इच्छागुणिदा    | २०६०     |
| महामाणगटिबदा वे              | २५४३     | " "                          | १६३७     | महवा गिरि वरिस्ताणं | १७७४     |
| महिरैगस्स पमाणं              | १२७०     | मवसप्पिणीए एवं               | ७२६      | महवा पुक्कप्पमुहं   | १०६८     |
| " "                          | १२७२     | मवसप्पिणीए दुस्सम            | १६३४     | महवा पुक्कप्पमुदी   | १०६२     |
| महिरैगस्स पमाणं              | २८०३     | मवसेस काम समए                | ६१३      | " "                 | १०६४     |
| महं सु विदेहादी              | १०५      | मवसेसठाणमग्गे                | २७८६     | " दुक्कवादीणि       | १०९६     |
| महापरम सायर                  | ३१९      | मवसेसवण्णणाघो                | १७२६     | महवा हो हो कोमा     | १६६२     |
| महाविदेहदेव                  | २०४६     | " "                          | १७६७     | महवा बहुवाहीहि      | १०८६     |
| महाणं पमाणेहि                | २१९८     | " "                          | २११८     | महवा दोरे सिद्धं    | १५०९     |
| महापरमियाविहाणा              | ५३०      | " "                          | २७५६     | मह विपणविदि मतो     | १५४४     |
| महा च दमो जीवाण              | ६४२      | मवसेसेसुं चउसुं              | २०९९     | मह वंतिकुं म मरजिण  | १२६५     |
| महाविसिक्कण मंगा             | १३१७     | महिराहिद्वय जीवे मपुकार १०५२ |          | मह साहिक्कण कक्की   | १५२३     |
| महत्तरपरिवाए                 | १६९९     | महिराहिद्वय जीवे             | १०४७     | मह तिरिमवपुसी       | ८६१      |
| महत्तरवाहिरए                 | २७६८     | " "                          | १०४८     | महिचवे तिविजनवे     | ४८२      |
| महत्तरमि ठाणं                | ७७०      | " "                          | १०४६     | मकायारा विजया       | २५६४     |

| वाचा             | वाचा सं० | वाचा             | वाचा सं० | वाचा             | वाचा सं० |
|------------------|----------|------------------|----------|------------------|----------|
| अंकाचारा दिजवा   | २८४२     | आविममजिममवाहिर   | २६०२     | इगिबीसलकममममर    | १२७३     |
| अंनममुरिया अरगा  | ३६८      | " "              | २६०६     | इमिबीसलकमममर     | ६६२      |
| अंजणमूलं कण्ठ    | २८११     | आदिमरयणकक        | १३९२     | इमिबीसलकमममर     | ६०६      |
| अंतरदीधमममम      | २६७६     | आविममंठाणजुवा    | २६६१     | " "              | ११२१     |
| अंतिममंठाण       | ९८१      | आविममंठाणजुवा    | १३८२     | " "              | १४२०     |
| अंतीममंठाणमम     | २६८१     | आमरिसलेल अस्ता   | १०७८     | इगिबीसलकमममर     | ३२२      |
| अंघो शिवद्व द्वे | ६२२      | आमासवस्त हेडु    | ६६१      | इगिसमममं सहस्र   | ११६८     |
| अंघर महुणवदु     | २६८१     | आमासो वण्णम      | १६५७     | इगिसमममं सहस्र   | १२४४     |
| अंघरमस्ततिय      | २५६४     | आमारंग मरुतो     | १५७२     | इमिबीसलकमममर     | ११७२     |
| अंघरमस्ततिय      | २४०६     | आमासलममममम       | ११७५     | इमिहलरिजुलाहं    | १७२४     |
| अंघरमस्ततिय      | ५६       | आमद्वि कण्ठ गंगा | १३२१     | इममम गुणिदाओ     | २०७४     |
| आ                |          | आमद्विपुलं मेमु  | ८८२      | इममम हेस पिडे    | २८७५     |
| आमद्विपुलं मेमु  | १८६४     | आ सलममेककतयं     | १२२५     | इम अण्णोपणासता   | ३६०      |
| आमद्विपुलं मेमु  | १८७०     | आसादवहुमदसमी     | ६७१      | इम अंतरमिम भरहे  | १३७१     |
| आमद्विपुलं मेमु  | ११०५     | आहारवाणारिरवा    | ७७२      | इम अमिममिम भरहे  | १३४७     |
| आमद्विपुलं मेमु  | १४८९     | आहारममममम        | २४४७     | इम महुदि एंमममम  | २०२४     |
| आमद्विपुलं मेमु  | ४        | आहारममममम        | ३७५      | इममममिरिदाणं     | २५८३     |
| आमद्विपुलं मेमु  | ४३१      | इ                |          | इममममममममम       | २४०१     |
| आमद्विपुलं मेमु  | १७९४     | इगि अममममममममम   | २७३१     | इममममममममम       | २६३५     |
| आमद्विपुलं मेमु  | २४७      | इमिकोमिममममम     | ५७०      | " "              | २८६३     |
| आमद्विपुलं मेमु  | २०९२     | इमिकोमिममममम     | २११      | इह केई आहारिवा   | ७२७      |
| आमद्विपुलं मेमु  | १५४३     | " "              | २४९      | इह मोगे जि महुलं | ६४३      |
| आमद्विपुलं मेमु  | १३५९     | इमिमिमिममममम     | २३२९     | ई                |          |
| आमद्विपुलं मेमु  | १३६८     | इमिमममममममम      | २६४६     | ईसाणदिसाय सुरो   | २८२५     |
| आमद्विपुलं मेमु  | ९४२      | इमिमममममममम      | २६५४     | ईसाणदिसाभावे     | १७५३     |
| आमद्विपुलं मेमु  | २६४३     | इमिमममममममम      | २७८३     | " "              | १७८८     |
| आमद्विपुलं मेमु  | ६६०      | इमिमममममममम      | २७१८     | ईसाणममममम        | १६६७     |
| आमद्विपुलं मेमु  | ९६१      | इमिमममममममम      | २७४१     | उ                |          |
| आमद्विपुलं मेमु  | २३३      | इमिमममममममम      | २६६१     | उमकमसयारमाए      | ९८७      |
| आमद्विपुलं मेमु  | १५४      | इमिमममममममम      | २९३१     | उमकमस ममममम      | ३१५      |
| आमद्विपुलं मेमु  | २०६६     | इमिमममममममम      | २६९४     | उमकमस ममममम      | १०७०     |
| आमद्विपुलं मेमु  | ७६४      | इमिमममममममम      | १७८६     | " "              | १०७३     |
| आमद्विपुलं मेमु  | १६०३     | इमिमममममममम      | ५६९      | " "              | १०७६     |
| आमद्विपुलं मेमु  | २८४७     | इमिमममममममम      | १९३८     | उमकमसममममम       | ३१४      |
| आमद्विपुलं मेमु  | ७७७      | इमिमममममममम      | ६०१      |                  |          |

| गाथा                   | गाथा सं० | गाथा                    | गाथा सं० | गाथा                    | गाथा सं० |
|------------------------|----------|-------------------------|----------|-------------------------|----------|
| उत्तिकट्ठा पायाला      | २४४०     | उत्तरदक्खिणदीहा         | २११५     | उत्तरो वि माणुसोत्तर    | २८००     |
| उत्ताववा विस्ततवा      | १०५८     | उत्तरदक्खिणभरहे         | २७०      | उत्तवणपहुवि सव्व        | ८५२      |
| उत्ताव्विक्कवाडुगल     | १३४२     | उत्तरदक्खिणभावे         | २०३९     | उत्तवणभाविजसेहि         | ८१६      |
| उत्ताव्विक्क वेस्सोक्क | १०७७     | " "                     | २८१७     | उत्तवणवेदीजुता          | १६८५     |
| उत्ताव्वो वीरो वीरो    | ६३८      | उत्तरदक्खिणभावे         | १८८२     | उत्तवणसंवेहि जुवा       | २१०८     |
| उत्ताव्वणो सो वम्मो    | १२८९     | उत्तरदक्खिण देवो        | २८२३     | उत्तहि उत्तमा उत्तुतो   | १५५३     |
| उत्ताव्वे धडवासा       | २१०६     | उत्तरदक्खिण विभावे      | १६८६     | उत्तहि उत्तमान एउदी     | १२५३     |
| उत्ताव्वे धाउविदिवा    | १५६४     | " "                     | १७९०     | उत्तहि उत्तमानगवके      | ५७६      |
| उत्ताव्वे ओयणेणं       | २१७६     | उत्तरदेवकुम्भु          | २६४०     | उत्तहि उत्तमाणुतिवए     | ५७६      |
| उत्ताव्वेहपहुविक्खिणे  | ३६९      | उत्तरपुम्भं बुधरिम      | २३३०     | उत्तहीतु तीस वस एव      | १२५२     |
| " "                    | ४०७      | उत्तरिय भाहिणीयो        | ४९५      | उत्तह्विणे गिम्माणे     | १२८७     |
| उत्ताव्वेहपहुदीधुं     | १७१३     | उत्ताव्वो वंशउदीए       | ६००      | उत्तह्विणो सिस्सा       | १२२६     |
| उत्ताव्वेहमाळ बल       | १५३५     | उत्ताव्वे एककोळं        | १६३०     | उत्ताव्वेहपहुदीधुं      | ५६३      |
| उत्ताव्वेहवासपहुदिमु   | ४९       | उत्ताव्वो एण्णेण गिरी   | २४६१     | उत्ताव्वि वंशवदं        | ८३०      |
| उत्ताव्वेहवासपहुवि     | २१३५     | उत्ताव्वो सदाभासो       | २४९४     | उत्ताव्वि वसतु माळ      | ५८६      |
| उत्ताव्वेहवासपहुदी     | १८५५     | उत्ताव्वं धूमहवासं      | १६५५     | उत्ताव्वि विसोत्तसाणं   | १२४१     |
| उत्ताव्वेहवासपहुदिमु   | २५०७     | " "                     | १६८८     | उत्ताव्वी वउदीसं        | ७२६      |
| उत्ताव्वेहवासपहुदिमु   | १६०४     | उत्ताव्वे संडा सव्वे    | १७८०     | उत्ताव्वीधुं वाता       | ६८२      |
| उत्ताव्वेही वंहाणि     | २२८२     | उत्ताव्वि सव्वममावं     | १८३      | उत्ताव्वी वोहसविक्के    | १२२०     |
| उत्ताव्वेही वे कोठा    | १८३७     | उत्ताव्वे कारणंतर       | १०६२     | उत्ताव्वी व वासुपुक्को  | १२२१     |
| उत्ताव्वेहवासपहुदिमु   | १३०      | उत्ताव्वि मंदिराहं      | २३४५     | उत्ताव्विणीए वज्जवाक्के | १६३०     |
| उत्ताव्वेहवासपहुदिमु   | १६८      | उत्ताव्वी मण्वाणं       | २६९३     | उत्ताव्वेवाउदेणं        | २१६३     |
| उत्ताव्वेहवासपहुदिमु   | ७४८      | उत्ताव्वे गुम्मा एण्णिण | १९७०     | उत्ताव्वे वाउतिरवयर     | १४८३     |
| " "                    | १६९८     | उत्ताव्वे मइवीरा        | ४४०      |                         |          |
| उत्ताव्वे कमहाणीए      | १८१४     | उत्ताव्वे ववेक्खिणिहा   | २६३      |                         |          |
| उत्ताव्वे मवेदि वं     | २४३१     | उत्ताव्वे सुराणं        | १३५०     |                         |          |
| उत्ताव्वे सहुत्ताहिम   | ५७९      | उत्ताव्वे ताणं          | ७१६      |                         |          |
| उत्ताव्वे ववेक्खिणिहा  | १५६५     | उत्ताव्वे वज्जस कोवण    | २४३५     |                         |          |
| उत्ताव्वे ववेक्खिणिहा  | १२१६     | उत्ताव्वे वज्जस उत्तस   | ७८८      |                         |          |
| उत्ताव्वे वज्जसो वज्जस | १६०२     | उत्ताव्वे वज्जस वज्जस   | १८३१     |                         |          |
| उत्ताव्वे वज्जसो वज्जस | १४१८     | उत्ताव्वे वज्जस वज्जस   | २१४१     |                         |          |
| उत्ताव्वे वज्जसो वज्जस | २६१४     | " "                     | २३५६     |                         |          |
| " "                    | २८७१     | उत्ताव्वे वज्जस वज्जस   | २४६६     |                         |          |
| उत्ताव्वे वज्जसो वज्जस | ७४       | उत्ताव्वे वज्जस वज्जस   | २८०९     |                         |          |
| " "                    | १२३३     | उत्ताव्वे वज्जस वज्जस   | २४७८     |                         |          |
| उत्ताव्वे वज्जसो वज्जस | ६३       | उत्ताव्वे वज्जस वज्जस   | २४७८     |                         |          |

| गाथा              | गाथा सं० | गाथा            | गाथा सं० | गाथा                        | गाथा सं० |
|-------------------|----------|-----------------|----------|-----------------------------|----------|
| एककपलि वीरमाऊ     | ७८       | एककावण्यासहस्ता | १२३५     | एदस्तंतस्त पुढं             | ६६       |
| " "               | २७६      | एककाहोविबिहत्वी | ६१       | एदस्ति क्षेत्रकले           | २९६४     |
| एककरसंतोसाहं      | ११२३     | एककोककममसंके    | ७६६      | एदस्ति गणरवरे               | ८७       |
| एककरस सहस्ताणि    | २१६७     | एककोकगोउराणं    | ७४५      | एवं चरसीदिहृवे              | २६६०     |
| " "               | २४७१     | एककोकजुवहरणं    | १३८५     | एवं चिपचउगुणिवं             | २७५०     |
| " "               | २८७३     | एककोकजोयणंत     | १३५१     | एवं चिम चउगुणिवे            | २७५६     |
| एककरस सहस्रगुणिव  | ५७८      | एककोकविशामाये   | २२६८     | एवं जिणाणं बलाणंतवाळं       | ३८५      |
| एककरस होंति वहा   | १६४२     | एककोकसकसपुष्पा  | १४१९     | एदाए ओवाण                   | १८६      |
| एककरसो य सुखमो    | १४९८     | एककोकस वहास य   | २११९     | एदाओ लायरीओ                 | १२०      |
| एककरसिहं उवहा     | ६७६      | एककोक विपलक     | ११६३     | एदाओ वण्णणओ                 | २१३८     |
| एकक सएणवहियं      | ११४५     | एककोक जिणमवणं   | ७६०      | " "                         | २७८०     |
| एककसमव जहणं       | ३००२     | एककोकए उववण     | ८१३      | एदाण कासमाणं                | १५७८     |
| एककसयं पणवणा      | २५२२     | एककोकए राट्टम   | ७६६      | एदाण तिखेत्ताणं             | २४१२     |
| एककसहस्तदुसया     | १६७      | " "             | ७६८      | एदाणं तिणवाणं               | २८४४     |
| एककसहस्तं सवसय    | ४२९      | एककोक संवतओ     | ८६६      | एदाणं वाराणं                | ४४       |
| एककसहस्तं गोउर    | २२६६     | एककोकएणं वी हो  | ७३३      | एदाणं वेवाणं                | २४९७     |
| एककसहस्तं चउसय    | ११३६     | एककोक सववेओ     | २५७५     | एदाणं पत्तेकं               | २८६६     |
| एककसहस्तं तितय    | ४३८      | एककोकसि पुहे    | ८५५      | एदाणं परिहोओ                | २१०४     |
| एककसहस्तं पणसय    | १७२९     | एकको कोओ वहा    | ६०       | " "                         | २१३१     |
| एककसहस्ता सगसय    | ११६२     | एककोकिय वेसंओ   | २८१३     | एदाणं रचिपुणं               | २२४८     |
| एकक कोळं वाओ      | १९७४     | एकको जोयणकोओ    | २८०२     | एदाणं वंवाणि                | २८३५     |
| एककं चिम होवि सयं | २०७३     | एककोणतोसपविधान  | ६००      | एदाणं सेलाणं                | २५६८     |
| एककं वेम सहस्ता   | ११३९     | एकको लावरिजिसेओ | १६१५     | एदाणि भासाणं                | ९११      |
| एककं वेम सहस्ता   | ११४२     | " "             | २०८७     | एदे चकरविदेहे               | २२४०     |
| " "               | ११४८     | एककोणवीससहिं    | २६७०     | एदे वणधरदेवा                | ६७६      |
| एककं जोयणलमसं     | १७९२     | एकको सहु रहरेणु | ५५       | एदे वणदंतगिरी               | २२३८     |
| " "               | १७७६     | एकको य मेव कूडा | २४२६     | एदे वोउरदारा                | ७४४      |
| " "               | २६२८     | एककोकसंगुलिका   | २५२४     | एदे चउसय वणुओ               | ५११      |
| " "               | २६४६     | एककोकवेसणिका    | २५३४     | एदे जिणिदे भरहम्मि क्षेत्रे | ५५८      |
| एककं वाससहस्तं    | १३११     | एककोवगा गुहामुं | २५२६     | एदे णव पविसणु               | १४३५     |
| एककाणउविमयाहं     | ११३०     | एतिवमेसविसेहं   | ४०५      | एदे सेसट्टिगरा              | १६१४     |
| एककारसकुडाणं      | २३८५     | " "             | ४१३      | एदे वारसचक्की               | १२६३     |
| एककारस पुष्पाओ    | १६५६     | एणुण वेसणहं     | १००८     | एदे समचउरस्ता               | ७९६      |
| एककारससवखाणि      | २६५९     | एणो जाव वणंतं   | ५९३      | एदे सव्वे कूडा              | १७५६     |
| एककारसिपुवणहे     | ६६१      | एणो सलायपुरिखा  | ५१७      | एदे सव्वे देवा              | २३४९     |
| एककारसे वदेवे     | १८२४     | एदस्तंतस्त पुढं | ५८       | एदेसि वाराणं                | ७७       |

| गाथा                     | गाथा सं० | गाथा                     | गाथा सं० | गाथा                | गाथा सं० |
|--------------------------|----------|--------------------------|----------|---------------------|----------|
| एवेमु पडमकुडे            | २३५६     | एस मणु श्रीवाणं          | ४७०      | कहमपबहणदीयो         | ४९२      |
| एवेमु मंभिरैमु           | २०७      | एसा जिनिदप्पडिमा मन्वाणं | १६६      | कप्पतकष्टवलद्धता    | ९४       |
| " "                      | २५४      | एसो मुम्भाहिमुहो         | १८८१     | कप्पतकभूमिपणधिसु    | ८४७      |
| एवेमु पत्तवकं            | २६४५     | ओ                        |          | कप्पतरुण विजाये     | ५०५      |
| एवेमु भवणोमु             | २१३३     |                          |          | कप्पतरुण विरामो     | १६३९     |
| एवे हेमम्भुणतवणिज्ज      | ६७       | सोसग्गमंतमुसम            | ८३       | कप्पतरु सिद्धत्था   | ८४६      |
| एरावदकिविणिगम            | २५१६     | सोसहणवरी तह              | २३२१     | कप्पदुमदिणवत्थु     | ३६२      |
| एरावदविज्जमोविद          | २५१४     | सोहिमजपउज्जवाणं          | ९७८      | कप्पदुग्गमा पणट्ठा  | ५०४      |
| एसावमानमयली              | १६६९     | क                        |          | कप्पमहि परिदेडिय    | १९५८     |
| एव निगिवीस कक्की         | १५५५     |                          |          | कप्पूर क्कपउत्तरा   | १८३९     |
| एवं मणंतसुलो             | ६२६      | कक्किसुवो मज्झिमय        | १५२६     | कमलकुमुमेसु तेसु    | १७१५     |
| एवं मक्कसेसाणं           | ८८       | कक्क पडि एक्केक्के       | १५२९     | कमजवणमंतिदाए        | २२९६     |
| एवं एसो कामो             | ३१३      | कक्कम्मि महासेवा         | २२७४     | कमसं मउसीदिगुणं     | ३०३      |
| एवं कप्परा विजयो         | २३११     | कक्कविजयम्मि विविह्व     | २२७२     | कमसा धकिट्टिमा ते   | १७१२     |
| एवं कमेण मरहे            | १५७२     | कक्कस्स य बहुमक्को       | २२८३     | कमसोवर मणविहा       | १६७८     |
| एवं कामसमुहो             | २७८७     | कक्कमहिममुहाणं           | २९२२     | कमसो अयसीसं         | १४२१     |
| एवं जोयमकक्क             | १८१५     | कक्कादिप्पमुहाणं         | २९२२     | कमसो बह्वंति तु     | १६३५     |
| एवं दुस्समकामे           | १५४१     | कक्खादिमु विजयाणं        | २७०८     | कमसो वप्पायोणं      | २३२८     |
| एवं पडमवहावो             | २१३      | " "                      | २९२३     | कमहाणीए उववि        | १८०६     |
| एवं पहावा भरहस्स सेत     | ६५१      | " "                      | २९५८     | कम्मं कोणोम दुके    | ६२       |
| एवं महापुराणं            | १७१३     | कक्खादोविजयाणं           | २७४७     | कम्माण उवसमेण य     | १०३१     |
| एवं मिक्खादिट्ठी         | ३७४      | कक्खा मुक्कम्मा महाकक्खा | २२३२     | करवरणतलप्यट्ठिसु    | १०१९     |
| एवं यस्सतहम्भे           | १५२८     | कडयकडिसुत्तणेज्ज         | ६६७      | करपलमिक्खित्त नि    | १०९१     |
| एवं वीसीयेसु             | १५८७     | कसयो कणमप्यह             | १५९१     | करिकेसरिपहुवीणं     | १०२५     |
| एवं सगसगविजयाणं          | २८५३     | कसयगिरीणं उववि           | २१२६     | करिहरिसुकमोराणं     | ३७       |
| एवं संखेयेण              | १९६०     | कणममयो पायारी            | २२९५     | करुणाए पाट्टिरायो   | ५०६      |
| " "                      | २०१२     | कणयम्भ जिखलेखा           | ३९       | कलुसीकटम्मि मक्खवि  | ६२८      |
| " "                      | २०२५     | कसियकिण्ठे कोह्धि        | १२१९     | कस्सहारकममकंदस      | १६७०     |
| " "                      | २७६१     | कसिय बहुमसंसे            | १५५२     | कस्सहारकमलकुवमय     | १३५      |
| एवं सामभेसु              | २९९८     | कसियसुक्के तविए          | ९९४      | " "                 | ३२८      |
| एवं सोवसमेदा             | १४       | कसियसुक्के पंथमि         | ६८८      | कंभणकुडे णिवसइ      | २०६८     |
| " "                      | २५७०     | " "                      | १२०५     | कंभणणिट्ठस्स तस्स य | ४९१      |
| एवं सोलससंजा             | २७९१     | कसियसुक्के वारसि         | ७०३      | कंभणपायारलम         | १५६      |
| एवं सोलस संजे            | ५        | कस्य वि वर भावीयो        | ८३९      | कंभणवेदी सहिदा      | १४५      |
| एवं हि क्वं पडिमं जिणस्स | १६५      | कस्य वि हम्मा रम्मा      | ८१९      | कंभणसमाजवणो         | ४७८      |
| एस वसमदकुटो              | २००५     | " "                      | ८४०      | कंभणसोवाणायो        | २३४०     |

| गाथा              | गाथा सं० | गाथा               | गाथा सं० | गाथा | गाथा सं०              |
|-------------------|----------|--------------------|----------|------|-----------------------|
| कंठसमकरपद्मि      | ११७      | कुंजरसुरयमहारह     | १७०५     | ल    |                       |
| कंदो भरिदुरयणं    | १६९०     | कुंजरपद्मदितपुष्टि | १७०७     |      |                       |
| कंपिलपुटे विमलो   | ५४५      | कुंडलगिरिमि भरिमो  | १४९१     |      | खणमेले विसयसुहे ६२१   |
| कामूच बलह तुम्हे  | ४९४      | कुंडलमंमदहारा      | ३६५      |      | सतिय नाविनसंका १६०६   |
| कादूण वार रवळ     | १३४६     | कुंडवणसंडसरिया     | २४२२     |      | अयवद्वीणपमारां २०५६   |
| कादूणमंतराव       | १५४९     | कुंडस दक्षिणेणं    | २३५      |      | अयवद्वीणपमारां २४३४   |
| कामपुणो पुरिसो    | ६३७      | कुंड दीवो वेलो     | २६४      |      | अंगमडिगणवदुगवण २६८२   |
| कामापुरस गवळदि    | ६३४      | कुंडे लोको लोको    | २६४      |      | अंगमडिगणवदुगवण २६३०   |
| कामुमलो पुरिसो    | ६३६      | कुंघु चउके कमलो    | १२४२     |      | अधुच्छेहो कोसा १६२६   |
| कामसयसंभूव        | १०२१     | कुंदेंदुसंभवना     | ८२       |      | आइयरवेलाणि तदो ८०३    |
| कामपुमुहा नाणा    | १३९७     | कुदमि य वेसमण      | १७३      | ग    | लोरोवा लोरोवा २२४२    |
| कामपुमुहासंधू     | ७४७      | कुहायारमहारिह      | १६९३     |      | कुल्लहिमवंतकुडो १६८३  |
| " "               | १३९६     | कुहाण उवरिभागे     | १६९८     |      | कुल्लहिमवंतसिहरे १६५३ |
| कालमि सुसमणावे    | ४०६      | कुहाणं उच्छेहो     | १५२      |      | कुल्लहिमवंतसेले १६४८  |
| कालमि सुसमसुसमे   | ३६८      | कुहाणं भूलोवरि     | १६६७     |      | केलादीणं सतिम २६७३    |
| कालसहावकलेणं      | १६२५     | कुहाणि गंवमादण     | २०८२     |      | मेमंकरचंदाभा ११८      |
| कालस हो विय्या    | २८२      | कुवो सिद्धो गिसहो  | १७८१     |      | मेमंकरणम मणु ४४६      |
| कालस विकारादो     | ४८७      | केद पडिबोहणेणं     | ३०००     |      | मेमाणाभा नयरी २२६४    |
| " "               | ४६३      | केवलणाणवणफदवडे     | ५५६      |      | मेयरसुरावेहि १६०२     |
| कालसाणु मिण्णा    | २८६      | केसरिवज्जस उत्तर   | २३६४     |      |                       |
| कालेसु विणवराणं   | १४८४     | केसरिमुहा मणुसा    | २५३६     |      |                       |
| कालोदवज्जसदीवो    | २७९२     | केसरिवसह खरोह      | ८८६      |      |                       |
| कालोवहिमहुमजे     | २७८५     | कोदलकलमसरिदा       | १८४१     |      |                       |
| किंमिमतमभियोगाणं  | २३४८     | कोदलमहुरासादा      | ३६१      |      |                       |
| किंतीए मणिउम      | १६४      | कोदटाणं सेलादो     | ६६६      |      |                       |
| किवणणेण वज्जणा    | ६२९      | कोडितिय गोवंका     | १४०१     |      |                       |
| कुक्कुडकोइलकीरा   | ३९४      | कोडिसहसा नवसय      | १२८०     |      |                       |
| कुम्मावामणलणुणो   | १५६१     | कोदंडळसयाई         | ७३८      |      |                       |
| कुमुदकुमुदंगणउवा  | ५१०      | कोमारमंडसिले       | १४३८     |      |                       |
| कुमुदं वडसीविहव   | ३००      | " "                | १४४२     |      |                       |
| कुम्पुणदजोनीए     | २९९७     | कोमाररज्जसदुमरव    | ७११      |      |                       |
| कुलमिरिसरिया मंवर | २१९४     | कोमारो तिणिमया     | १४४१     |      |                       |
| कुलजाईविज्जादो    | १४१      | कोमारो दोणिमया     | १४४३     |      |                       |
| कुलधारणादु सव्हे  | ५१६      | कोमदो मवणावो       | १६१६     |      |                       |
| कुसलादाणाकोसुं    | ५१२      | कोहादिवउवकारं      | २६६१     |      |                       |
| कुंजरकरधोरभुवो    | २३०६     |                    |          |      |                       |

| गाथा                 | गाथा सं० | गाथा             | गाथा सं० | गाथा                 | गाथा सं० |
|----------------------|----------|------------------|----------|----------------------|----------|
| संगतिस्सुणाया        | २३२३     | घ                |          | अउण्णवण्णवणिग्गम     | २६०४     |
| गण्डमहिस्सवराहा      | ६१२      |                  |          | अउण्णवण्णवण्णवणिग्गम | २२४६     |
| संतुं पुग्गवहिस्सुहं | १३६८     | अउण्णवण्णवणिग्गम | १०२३     | अउण्णवण्णवणिग्गम     | २६४६     |
| संतुण वोवधुमि        | २५६      | अउण्णवण्णवणिग्गम | १०२३     | अउण्णवण्णवणिग्गम     | २२६४     |
| संतुण वणिग्गवणिग्गम  | १३४३     | अउण्णवण्णवणिग्गम | ७१६      | अउण्णवण्णवणिग्गम     | ६३७      |
| संतुण सोसाए          | १३१६     | अउण्णवण्णवणिग्गम | १०००     | अउण्णवण्णवणिग्गम     | २१८८     |
| संतुण सा मग्गं       | ६१८      | अउण्णवण्णवणिग्गम | १००१     | अउण्णवण्णवणिग्गम     | २२३      |
| संतुणवण्णवणिग्गम     | ६१८      | अउण्णवण्णवणिग्गम | ६१५      | अउण्णवण्णवणिग्गम     | २१२२     |
| सामण्यरादिसम्भं      | ३४५      | अउण्णवण्णवणिग्गम | १२२२     | अउण्णवण्णवणिग्गम     | २७५      |
| सामाणं छण्णउवी       | २२६२     | अउण्णवण्णवणिग्गम |          | अउण्णवण्णवणिग्गम     | २२७      |
| सामंति विणिदाणं      | ७६७      | अउण्णवण्णवणिग्गम |          | अउण्णवण्णवणिग्गम     | ५६८      |
| मिरिउदयचउवमागो       | २८१५     | अउण्णवण्णवणिग्गम |          | अउण्णवण्णवणिग्गम     | १२४०     |
| मिरिउदयचउवमागो       | २७८      | अउण्णवण्णवणिग्गम |          | अउण्णवण्णवणिग्गम     | २६४८     |
| मिरिउदयचउवमागो       | १३७३     | अउण्णवण्णवणिग्गम |          | अउण्णवण्णवणिग्गम     | २६७५     |
| मिरिउदयचउवमागो       | १३४८     | अउण्णवण्णवणिग्गम |          | अउण्णवण्णवणिग्गम     | १२६३     |
| मिरिउदयचउवमागो       | १३३८     | अउण्णवण्णवणिग्गम |          | अउण्णवण्णवणिग्गम     | १२६४     |
| मिरिउदयचउवमागो       | २६४४     | अउण्णवण्णवणिग्गम |          | अउण्णवण्णवणिग्गम     | १२६७     |
| " "                  | २८६८     | अउण्णवण्णवणिग्गम |          | अउण्णवण्णवणिग्गम     | १२६८     |
| गीदरवेसुं सोता       | ३४६      | अउण्णवण्णवणिग्गम |          | अउण्णवण्णवणिग्गम     | १२६९     |
| गुण्णवणिग्गम         | ६४५      | अउण्णवण्णवणिग्गम |          | अउण्णवण्णवणिग्गम     | ११२६     |
| गुण्णवणिग्गम         | ४१५      | अउण्णवण्णवणिग्गम |          | अउण्णवण्णवणिग्गम     | १३०६     |
| गुण्णवणिग्गम         | ३७१      | अउण्णवण्णवणिग्गम |          | अउण्णवण्णवणिग्गम     | ६०४      |
| गुण्णवणिग्गम         | २५६२     | अउण्णवण्णवणिग्गम |          | अउण्णवण्णवणिग्गम     | १०४६     |
| गुण्णवणिग्गम         | ३५६      | अउण्णवण्णवणिग्गम |          | अउण्णवण्णवणिग्गम     | १२८४     |
| गुण्णवणिग्गम         | १००      | अउण्णवण्णवणिग्गम |          | अउण्णवण्णवणिग्गम     | २६५४     |
| गुण्णवणिग्गम         | ७५१      | अउण्णवण्णवणिग्गम |          | अउण्णवण्णवणिग्गम     | २६५७     |
| गुण्णवणिग्गम         | ८०१      | अउण्णवण्णवणिग्गम |          | अउण्णवण्णवणिग्गम     | ६६०      |
| गुण्णवणिग्गम         | ३६३      | अउण्णवण्णवणिग्गम |          | अउण्णवण्णवणिग्गम     | १२५६     |
| गुण्णवणिग्गम         | २२७१     | अउण्णवण्णवणिग्गम |          | अउण्णवण्णवणिग्गम     | १२५६     |
| गुण्णवणिग्गम         | २५३८     | अउण्णवण्णवणिग्गम |          | अउण्णवण्णवणिग्गम     | २८८६     |
| गुण्णवणिग्गम         | १६५३     | अउण्णवण्णवणिग्गम |          | अउण्णवण्णवणिग्गम     | १२७४     |
| गुण्णवणिग्गम         | ६४३      | अउण्णवण्णवणिग्गम |          | अउण्णवण्णवणिग्गम     | २२५५     |
| गुण्णवणिग्गम         | ७४६      | अउण्णवण्णवणिग्गम |          | अउण्णवण्णवणिग्गम     | १६८७     |
| " "                  | ८६७      | अउण्णवण्णवणिग्गम |          | अउण्णवण्णवणिग्गम     | २३४६     |
| " "                  |          | अउण्णवण्णवणिग्गम |          | अउण्णवण्णवणिग्गम     | २५६६     |

| गाथा                 | गाथा सं० | गाथा                | गाथा सं० | गाथा                  | गाथा सं० |
|----------------------|----------|---------------------|----------|-----------------------|----------|
| चउवीससहस्राणि        | १४०६     | चत्वारि सहस्रा सप्त | १११०     | कुलसीदि सहस्राणि      | १७६४     |
| " "                  | १४१५     | " सहस्राद्          | ११३१     | कुलसीविहर्ष सप्त      | २९६      |
| " "                  | १६०८     | " "                 | २०६५     | कुलसीदी बाह्वारि      | १४३३     |
| " "                  | १६१४     | चत्वारि सहस्राणि    | १९६३     | कुलसीदिमन्तकं         | २१४      |
| चउवीसं चय कोला       | ७५६      | " "                 | २६६८     | कुलसीविमन्तकं         | १६५६     |
| चउवीसं चावराणि       | ३४       | " "                 | २८४३     | कुलसीदि तेषु पुरेषु   | २१९०     |
| चउवीसविषय संज्ञा     | १४५७     | चत्वारो चत्वारो     | ८४२      | कुलसीदि देवाराणि      | २३४३     |
| चउसगतगणमन्त्रकं      | २६३३     | " "                 | २५७९     | कुलसीदि उद्भक्तकणा    | २७७३     |
| चउसद्विषयमरेहि       | ९३६      | चत्वारो पावासा      | २४३९     | कुलसीदि तिग्म तिग्म म | २३३३     |
| चउसद्वी पुरीष        | ४०९      | चउसद्वीपुत्रमुहपरक  | ११६      | कुलसीदि वारसमणा       | ८६५      |
| चउसण्णा पारतिरिया    | ४२१      | चउसद्वीपुत्रमुहपरक  | १७६      | कुलसीदि मागुमुत्तर    | २८१८     |
| चउससप्तकदुपचउ        | २६१२     | चउसद्वीपुत्रमुहपरक  | २१५४     | " "                   | २९६८     |
| चउससप्तकदुपुत्रं     | २८८२     | चउसद्वीपुत्रमुहपरक  | ७४२      | कुलसीदि कण्ठसाधो      | २२६०     |
| चउससप्तकोष्ठाष्टदु प | २६९३     | चउसद्वीपुत्रमुहपरक  | २१२७     | कुलसीदि विमन्तकं      | २१२६     |
| चउससप्तकोष्ठाष्टदु   | १२४८     | चउसद्वीपुत्रमुहपरक  | १५३९     | कुलसीदि पुरीषो        | १६३४     |
| चउससप्तकोष्ठाष्टदु   | १२४५     | चउसद्वीपुत्रमुहपरक  | १५३९     | कुलसीदि विमन्तकं      | ८०६      |
| चउससप्तकोष्ठाष्टदु   | १२४६     | चउसद्वीपुत्रमुहपरक  | ५९५      | कुलसीदि विमन्तकं      | १२०६     |
| चउसासाविधीमो         | ७३१      | चउसद्वीपुत्रमुहपरक  | ५४०      | कुलसीदि विमन्तकं      | १२१३     |
| चउसीवि एववि          | ६७०      | चउसद्वीपुत्रमुहपरक  | ६१७      | कुलसीदि विमन्तकं      | ६९६      |
| चउसीविसप्तगुणिदा     | ३१०      | चउसद्वीपुत्रमुहपरक  | ४८६      | कुलसीदि विमन्तकं      | ११६८     |
| चउसीविसप्तगुणिदा     | ११३४     | चउसद्वीपुत्रमुहपरक  | १६१०     | कुलसीदि विमन्तकं      | ७०२      |
| चउसीविसप्तगुणिदा     | ११०६     | चउसद्वीपुत्रमुहपरक  | ५४४      | कुलसीदि विमन्तकं      | ७०६      |
| चउसीविसप्तगुणिदा     | ११०३     | चउसद्वीपुत्रमुहपरक  | २०२      | कुलसीदि विमन्तकं      | १२००     |
| चउसीविसप्तगुणिदा     | ३०६      | चउसद्वीपुत्रमुहपरक  | १९५६     | कुलसीदि विमन्तकं      | ११९७     |
| चउसीदी कोटीदी        | २७४६     | चउसद्वीपुत्रमुहपरक  | ८१४      | कुलसीदि विमन्तकं      | ६५१      |
| चउसीदी कोटीदी        | २३१८     | चउसद्वीपुत्रमुहपरक  | १६५०     | कुलसीदि विमन्तकं      | ६५६      |
| चउसीदी कोटीदी        | १६४०     | चउसद्वीपुत्रमुहपरक  | ४६७      | कुलसीदि विमन्तकं      | ६७२      |
| चउसीदी कोटीदी        | १३६५     | चउसद्वीपुत्रमुहपरक  | ११९०     | कुलसीदि विमन्तकं      | १२९८     |
| चउसीदी कोटीदी        | २७२      | चउसद्वीपुत्रमुहपरक  | १८१८     | कुलसीदि विमन्तकं      | ९६५      |
| चउसीदी कोटीदी        | १३०२     | चउसद्वीपुत्रमुहपरक  | १७०२     | कुलसीदि विमन्तकं      | २७५४     |
| चउसीदी कोटीदी        | १३१५     | चउसद्वीपुत्रमुहपरक  | ८८०      | कुलसीदि विमन्तकं      | २७९६     |
| चउसीदी कोटीदी        | २५१९     | चउसद्वीपुत्रमुहपरक  | ८८६      | कुलसीदि विमन्तकं      | २८६१     |
| चउसीदी कोटीदी        | २६६६     | चउसद्वीपुत्रमुहपरक  | ७०८      | कुलसीदि विमन्तकं      | ६५४      |
| चउसीदी कोटीदी        | १९१      | चउसद्वीपुत्रमुहपरक  | २४३०     | कुलसीदि विमन्तकं      | ६०२      |
| चउसीदी कोटीदी        | १६३      | चउसद्वीपुत्रमुहपरक  | २५०४     | कुलसीदि विमन्तकं      | १९४      |
| चउसीदी कोटीदी        | ११६५     | चउसद्वीपुत्रमुहपरक  | ६८२      | कुलसीदि विमन्तकं      | १५१०     |



| नावा                 | नामा सं० | नावा               | नामा सं० | नावा                | नामा सं० |
|----------------------|----------|--------------------|----------|---------------------|----------|
| मोसदुकमममालो         | १८९२     | छद्मोतिपदगिपणवत    | २९३४     | जगदीशभक्त२ए         | ७०       |
| छ                    |          | छद्मोतिपदगमगपण     | २७००     | " "                 | ७१       |
| छक्कदुगवंचसरां       | २७४५     | छप्पणदगिछत्तिमदुग  | २७३७     | जगदीशवरिमभावे       | १६       |
| छक्कदुल्लेसा सन्ने   | २४२४     | छप्पणवडहिसासुं     | ६२३      | जगदीशवरिमरुंवे      | २०       |
| छक्केकएककछंददुग      | २८५८     | छप्पणणवति०६विदुग   | २७४५     | जगदीए भक्तमंतर      | ८६       |
| छक्केककवोणिजम६गिपण   | २६७७     | छप्पणणसहस्ताणि     | २२४३     | जगदीशहिरभावे        | ६८       |
| छक्कं छप्पण रावतिम   | २४०५     | छप्पणणसहस्तेहि     | १७७२     | जगदीशविष्वासाहं     | १२       |
| छक्कंछपुडविमंडल      | ५२३      | " "                | १७६५     | " "                 | २५६८     |
| छक्कचडदगिएक्केकं     | २६४२     | छप्पणणंतरदोवा      | १४०८     | जगमवभाषो चवरि       | ७        |
| छक्कचडमममकेकदु       | २७४४     | छम्मेया रसगिडो     | १०८८     | जगणंतरेतुं पुह पुह  | ७१०      |
| छक्किय सयाणि पण्णा   | २७६९     | छम्मुदुधो पायालो   | ६४४      | जत्तिपण्णसि विवसंभं | १८२०     |
| छक्के० सहस्ताणि      | ११४४     | छल्लकवा छाबटो      | १८७३     | " "                 | १८२२     |
| छक्ककककककुमसम        | २६१८     | " "                | १८७७     | " "                 | २६२२     |
| छक्कमोयणेककोसः       | २००      | छल्लकवा छासटो      | १८६५     | जमगगिंरिवाहितो      | २१५०     |
| " "                  | २१७      | " "                | १८६६     | जमगगिरोणं उवरि      | २१०७     |
| छद्मठमि क्रियामरप्पण | ८६९      | छल्लकवा पासाणं     | १४७६     | जममंमेषविरोधो       | २११४     |
| छद्मठीए वणसंडो       | २२०१     | छम्मेयुल पाणुदुल्ल | २८७६     | जममं मेवमुराणं      | २१२४     |
| छप्पणउदिकोहिवाया     | १४०५     | " "                | २८३७     | जममं मेवमुराणं      | २११२     |
| छप्पणउदिसवा घोही     | १११७     | छम्मीउजुवेकसयं     | २६६९     | जममोवरि बहुमण्णे    | २१०५     |
| छप्पणउदिसहस्ताणि     | २२४०     | छम्मीससहस्ताणि     | २२९७     | जमणाभलोपयालो        | १८६८     |
| छप्पणभ भवतिव चउपण    | २६८७     | छम्मीससहस्ताहिम    | १२५५     | जमलकवाका दिव्वा     | १८०      |
| छप्पणव छप्पणम एककं   | २४०४     | छसहस्ताडं घोही     | ११४०     | जमलाजममपसूवा        | ३३८      |
| छप्पणवडिजोदणसया      | २६४७     | छस्तगपणविमिप्पणव   | २८९४     | जम्माभिसेयसुराहण    | १८०८     |
| छत्तावमाविजुला       | १६०१     | छस्तमवंधुवसेहो     | ४८३      | जयकिलो मुनिमुक्कम   | १६०१     |
| छत्तावमादिसहिदा      | २०५      | छायालसहस्ताणि      | १२३७     | जयसेणचककट्टी        | १२६७     |
| " "                  | २५२      | छावदुसहस्ताहं      | १४६५     | जरसूखपमुहाण         | १०६६     |
| छत्ताछत्तादि सद्धिमो | १६२४     | " "                | १४६६     | जमजंवाकलपुणं        | १०४४     |
| छत्तादिभिभवकुला      | ८५४      | छावटिठ च सयाणि     | २६०६     | जमयरनराजलोहा        | १९७२     |
| छत्तासिदं०चमका       | १३६१     | छावत्तरिजुदछासम    | ६७६      | जमतिहुरे दिवसंभो    | २६७४     |
| छत्तिपणमछत्तिपदुग    | २७३८     | छिदकेण मरवि पुरिसो | ३८१      | जसिं ६छत्ति वासं    | १८२३     |
| छत्तीसपुण्णलकवा      | ५९६      | छेदणभेवणवहुणं      | ६२५      | जहुजहु जोगादुकाणं   | १३६४     |
| छत्तीस सहस्ताणि      | २४५१     | ज                  |          | जं कुणवि विसयवुडो   | ६२०      |
| छत्तीसं मककाणि       | २८६०     | जककात्रे बीरजिजो   | १५१७     | जं नामा ते कृता     | १७४६     |
| छद्मणवपपत्ते         | ६१४      | जमिखमरयणसुं        | ६२२      | " "                 | १७८३     |
| छद्मणवपणसुदुग        | २७२४     | जमळीमो चककेसरि     | ६४६      | जं पंडुगजिणमरणो     | २१८६     |
|                      |          |                    |          | जंदूदोवविटोए        | २७५८     |

| गाथा              | गाथा सं० | गाथा             | गाथा सं० | गाथा                | गाथा सं० |
|-------------------|----------|------------------|----------|---------------------|----------|
| जंकुसीबखिवीए      | २६६७     | जीबाए जं बमं     | २०५०     | जे संसारसरोरभोगबिसए | ७१२      |
| जंकुसीबपदभिनद     | २५८६     | जीबकवोतुरिमंसा   | १८५      | जैसि तऊल भूमे       | ९२४      |
| " "               | २६२३     | जीबाए पुगलाणं    | २८३      | जोली मंजावता        | २९६६     |
| जंकुसीवमहीए       | २७८२     | जीबाबिस्वमंसाणं  | २६३७     | जोयए अटठसहस्सा      | १७४५     |
| जंकुसीवस्स लदो    | २०६८     | जोहासहस्सजुगजुव  | १८६९     | जोयए अटठुण्णो       | १८४४     |
| " "               | २१४६     | जीहोठ्ठंमंतसा    | १०८२     | जोयए अहिंमं उधं     | ७८९      |
| जंकुसीवे मेठ      | ४३५      | जुगलाणि अणंतनुणं | ४६१      | जोयए उणहोससया       | १८०१     |
| " "               | ४४४      | जुगमं समंतवो सो  | १८१३     | जोयए उणलउदिसया      | १७६५     |
| जंकुसवस्स वलं     | २२२१     | जे अममंतरमाणे    | २५१७     | जोयए ठीससहस्सा      | २०४६     |
| जं भासइ दुवममुहं  | १०२४     | जे कुमंति ण भति  | २५४८     | जोयए बलबासपुवो      | २७९९     |
| जं लउं चचराणं     | २४५५     | जे वेधंति सुवण्ण | २५४६     | जोयए बलविमंमो       | १६५२     |
| जं हवदि अदिसणं    | १०४१     | जे उडिय मुलिसंभं | २५४६     | जोयए वंमवाइ         | २७६८     |
| जादाण मोयसूवे     | ३८३      | जे जुता एरतिरिया | ८०५      | जोयए वचसयाणि        | २७६६     |
| जादिमरमेज केई     | ३८५      | जे जेठवार वुरवो  | १६४६     | जोयए वससयाणि        | २७६७     |
| " "               | ५१५      | जे जेठवार वुरवो  | १६४६     | जोयए वससयाणि        | १८६      |
| " "               | ७१३      | जे जेठवार वुरवो  | १६४६     | जोयए वससयाणि        | २८४६     |
| जादे केवसणामे     | ७१३      | जे जेठवार वुरवो  | १६४६     | जोयए वससयाणि        | २४५३     |
| जावो सिहो बीरो    | १४८८     | जे जेठवार वुरवो  | १६४६     | जोयए वससयाणि        | १७७८     |
| जावो वु अचमभाए    | ५३३      | जे जेठवार वुरवो  | १६४६     | जोयए वससयाणि        | २०४८     |
| जिणपासावस्स दुरो  | १६१०     | जे जेठवार वुरवो  | १६४६     | जोयए वससयाणि        | २२१      |
| जिणपुरदुवाअपुरवो  | १६६४     | जे जेठवार वुरवो  | १६४६     | जोयए वससयाणि        | २०६१     |
| जिणपुरपासादाणं    | ७६१      | जे जेठवार वुरवो  | १६४६     | जोयए वससयाणि        | ६०८      |
| जिणमवणप्पहोदीणं   | २०७८     | जे जेठवार वुरवो  | १६४६     | जोयए वससयाणि        | २१२६     |
| जिणमंदिअकूदाणं    | २०२३     | जे जेठवार वुरवो  | १६४६     | जोयए वससयाणि        | २७३      |
| जिणमंदिअजुताइ     | ४१       | जे जेठवार वुरवो  | १६४६     | जोयए वससयाणि        | २५३३     |
| जिणमंदिअरम्माओ    | २४८२     | जे जेठवार वुरवो  | १६४६     | जोयए वससयाणि        | २८८७     |
| जिणमंदिअपवट्टा    | ६३८      | जे जेठवार वुरवो  | १६४६     | जोयए वससयाणि        | २६१७     |
| जिणिमविलोइ दिव    | १०७४     | जे जेठवार वुरवो  | १६४६     | जोयए वससयाणि        | १८०४     |
| जिणिमदियसुवणाणा   | ६९६      | जे जेठवार वुरवो  | १६४६     | जोयए वससयाणि        | १६६      |
| जिणुवठस्सकिदोवो   | ६१७      | जे जेठवार वुरवो  | १६४६     | जोयए वससयाणि        | १८३३     |
| जोउप्पलिसमाणं     | २१८४     | जे जेठवार वुरवो  | १६४६     | जोयए वससयाणि        | २१००     |
| जोए अटठणुमाणे     | ११०२     | जे जेठवार वुरवो  | १६४६     | जोयए वससयाणि        | २५७४     |
| जोए बीवो दिट्ठो   | १०६०     | जे जेठवार वुरवो  | १६४६     | जोयए वससयाणि        | २६१९     |
| जोए ए होति भुरिणो | १०६६     | जे जेठवार वुरवो  | १६४६     | जोयए वससयाणि        | २६४८     |
| जोए पस्सववाशिस    | १०८४     | जे जेठवार वुरवो  | १६४६     | जोयए वससयाणि        | २७९४     |
| जोए मासावेमण्णे   | १०८०     | जे जेठवार वुरवो  | १६४६     | जोयए वससयाणि        | २७९४     |
| जोवसमासा वोणिण य  | ४१६      | जे जेठवार वुरवो  | १६४६     | जोयए वससयाणि        | २७९४     |

| गाथा              | गाथा सं० | गाथा            | गाथा सं० | गाथा                | गाथा सं० |
|-------------------|----------|-----------------|----------|---------------------|----------|
| ॐ                 |          | गमपणपुसुपंचर    | ११८८     | रावरा मतिरहविष्णुम  | २९१५     |
| मरा मण भरांरु छपय | ९३४      | गमसगपणपणमपण     | २६७४     | रावरा मपणमकचउपरा    | २६८९     |
| ट                 |          | गमसतगपणमकण      | २९७३     | रावरा मपणमकणमकी     | २७१५     |
| टंकुमिकण्मायारी   | २७६३     | गमसतसतणमकण      | २८९१     | रावरा मपणमकणमकी     | २९०७     |
| ण                 |          | गमराणि पंचदशति  | २२६३     | रावरा मपणमकणमकी     | २९०७     |
| महानितिका य रिखी  | १०११     | गमरीए मकणमकी    | २३०५     | गमपणमकणमकणमकी       | २७३५     |
| महरिदिसाविमारे    | १७८९     | गमरीए मकणमकी    | २४७६     | गमपणमकणमकणमकी       | २९०१     |
| " "               | १८५६     | गमरीए मकणमकी    | २३३४     | गमपणमकी मकणमकी      | २६३२     |
| " "               | १९८२     | रावरेणु रमणिमकी | २७       | रावरा मपणमकी        | ११५०     |
| महरिदिसाविमारे    | २८२७     | रावरेणु रमणिमकी | २३६५     | गमपणमकी मकणमकी      | ६५५      |
| महरिदिसाविमारे    | १७५४     | रावरा मपणमकी    | २३०४     | रावरा मपणमकी        | ४७६      |
| रावरेणु रमणिमकी   | १७०४     | रावरा मपणमकी    | १०१७     | गम म सहस्तरा मकी    | ११२९     |
| महरिदिसाविमारे    | १३७६     | रावरा मपणमकी    | ३१८      | गम म सहस्तरा मकी    | १२३९     |
| महरिदिसाविमारे    | २८९      | रावरा मपणमकी    | १०१६     | गम म सहस्तरा मकी    | २०१५     |
| महरिदिसाविमारे    | १४१४     | रावरा मपणमकी    | २८७०     | रावरा म सहस्तरा मकी | १७४४     |
| महरिदिसाविमारे    | १०३      | रावरा मपणमकी    | ३०२      | रावरा म सहस्तरा मकी | २३६८     |
| गमपणमकी मकणमकी    | १५००     | रावरा मपणमकी    | १६६०     | रावरा म सहस्तरा मकी | २१५६     |
| गमपणमकी मकणमकी    | ६२३      | रावरा मपणमकी    | २९४५     | " "                 | २१६०     |
| महरिदिसाविमारे    | ७६५      | रावरा मपणमकी    | २६६६     | " "                 | २३२०     |
| रावरेणु रमणिमकी   | ७२१      | रावरा मपणमकी    | २६५१     | रावरा मपणमकी        | २६५      |
| रावरेणु रमणिमकी   | ६३६      | रावरा मपणमकी    | २०८५     | " "                 | १७५२     |
| गमपणमकी मकणमकी    | २७०२     | रावरा मपणमकी    | २७२५     | " "                 | २०८४     |
| गमपणमकी मकणमकी    | २७२३     | रावरा मपणमकी    | २४०३     | " "                 | २४२१     |
| गमपणमकी मकणमकी    | २८०६     | रावरा मपणमकी    | २५५६     | रावरा मपणमकी        | २३८३     |
| गमपणमकी मकणमकी    | ४३०      | रावरा मपणमकी    | २८८५     | गमपणमकी मकणमकी      | ८०२      |
| गमपणमकी मकणमकी    | ११७३     | रावरा मपणमकी    | २६३३     | रावरा मपणमकी        | २३९३     |
| गमपणमकी मकणमकी    | २६१४     | रावरा मपणमकी    | ९६९      | रावरा मपणमकी        | २६२५     |
| गमपणमकी मकणमकी    | ११७६     | रावरा मपणमकी    | ९६७      | गमपणमकी मकणमकी      | २४४९     |
| गमपणमकी मकणमकी    | २६८८     | रावरा मपणमकी    | १४०७     | गमपणमकी मकणमकी      | ११११     |
| गमपणमकी मकणमकी    | २७४३     | रावरा मपणमकी    | १८१७     | गमपणमकी मकणमकी      | २८९३     |
| गमपणमकी मकणमकी    | २७३३     | " "             | २२५१     | गमपणमकी मकणमकी      | १२५४     |
| गमपणमकी मकणमकी    | २९६८     | " "             | २२६५     | रावरा मपणमकी        | ९५८      |
| गमपणमकी मकणमकी    | २८९९     | " "             | २४४५     | रावरा मपणमकी        | ५९४      |
| गमपणमकी मकणमकी    | १२७९     | " "             | २४४७     | रावरा मपणमकी        | ६१०      |
|                   |          | रावरा मपणमकी    | २९५३     | रावरा मपणमकी        | १६६५     |
|                   |          |                 |          | रावरा मपणमकी        | १८२६     |

| गाथा                 | गाथा सं० | गाथा              | गाथा सं० | गाथा                | गाथा सं० |
|----------------------|----------|-------------------|----------|---------------------|----------|
| सुन्दरगजाउहेट्टे     | २०२६     | नियणामसिद्धनठान   | १३६४     | येथी मल्लो बोरो     | ६७७      |
| सुंदावी म विमेलन     | १६७१     | शिवशानंकिटइमुणा   | १३६१     | सोहविमसुदणारा       | ६८४      |
| सुंदी म सुविमिती     | १४९४     | शिवशिवजिणवणहि     | ९२८      | त                   |          |
| सुंदुतरसुंदापो       | ७९२      | शिवशिवजिणेसराने   | ७४०      | तककपेणं इंटा        | ७१५      |
| नामो कुंभु धम्मो     | ६७४      | शिवशिवपदमजिहोए    | ७६६      | तककालपदमभागे        | १५८५     |
| नाणाअणमदनिविदो       | २२९३     | शिवशिवपदमजिहोए    | ८०५      | तककाकादिमि नरा      | ४०८      |
| नाणारयनविमिणिमिद     | २२७०     | " "               | ८२२      | तककासे कण्ठदुमा     | ४६२      |
| नाणाविहगदिमाव        | १०५६     | शिवशिववहिलिजिहोण  | ८३४      | तककासे तिरपवरा      | १५६९     |
| साराविह जिणेहेहा     | १३१      | शिवमेण धणियमेव वा | ६९२      | तककाने ते मणुमा     | ४१०      |
| शाभिनिरोणं एताभी     | २५८५     | शिरएणु सरिय सोकं  | ६१६      | तककासे तेपंगता      | ४३९      |
| सामेणु कंतमाभा       | ४७४      | शिवममलावणजुदा     | ४८४      | तककासे मोवणारा      | ४६६      |
| सामेणु कामपुष्पं     | ११७      | शिवममलावणजुणु     | २३७३     | तककामयविहपमाणं      | २६२०     |
| सामेणु चित्तकूडो     | २२३६     | शिवममवडुंरतवा     | १०६७     | तककेसे बहुमज्जे     | १७२७     |
| नामेणु जमगकुडो       | २१०१     | शिववाणमवे बोदे    | १५१५     | तविमदिबहुमज्जेणं    | १७६०     |
| नामेणु महसासं        | १८२८     | शिववाणे बोदविशे   | १४८६     | तककेसे बहुमज्जे     | १७६८     |
| सामेणु मेण्णसंका     | २३१५     | " "               | १५११     | तगिरिद्वयदिमभागे    | १७७२     |
| सामेणु सिरिणिकेदं    | १२६      | शिसहुकुदसूरसुमसा  | २११६     | तगिरिणो उज्जेडो     | २७६३     |
| सामेणु हंसपन्नं      | १२२      | शिसहुपर।हरउवरिम   | २०९०     | तगिरिदिविजयभाए      | १३६५     |
| सामेणु सिद्धकूडो     | १५०      | शिसहुवणवेदिपासे   | २१६५     | तगिरिद्वारं पविस्सि | १३७४     |
| सारायतिरियगधीदो      | १५६३     | शिसहुवणवेदिवारण   | २१६९     | तगिरिदोपासेसुं      | १७७९     |
| सावाए उवरि पावा      | २४२६     | शिसहुसमानुच्छेहा  | २४७३     | तगिरिमज्जपवैसं      | २१४५     |
| सासंति एवकसमए        | १६३२     | शिसहुसुत्तरपासे   | २१७१     | तगिरिवणवेदीए        | १३७८     |
| साहलपुसिपवन्नर       | २३१६     | शिसहुसुत्तर भागे  | १७९७     | तच्चरिममि साराणं    | १६२६     |
| शिवकमिणूणं चण्णवि    | २१४३     | शिसस्तिरुणं एसा   | २४६      | तच्चेवधीववासे       | २६५१     |
| शिवमन्त्रसे वनको     | १३५७     | शिससेवत्तं शिम्मल | ६०५      | तज्जीवाए चावं       | १८७      |
| शिग्गच्छिय सा गच्छवि | २०९३     | शिससेयसमट्ट मया   | १४४६     | तणुवेज्ज महाशसिया   | १३८७     |
| शिग्गं विव एदाण      | ४३४      | शिससेमवाहिणसरा    | ३३०      | तथ्यामा किरामिद     | ११४      |
| शिह्वेयस सुरुवं      | २        | शिससेसाण पकुत्तं  | १०९६     | ततो ओहककाहे         | १०६४     |
| शिवमरमसिपसता         | ६३२      | सोतकुदचंदएराबदा   | २१५१     | ततो अमिदवयोदा       | १५८१     |
| शिवमलदण्णसुरिसा      | ३२५      | सोतविरी शिसहो विव | २३५४     | ततो आगंतूणं         | १३२८     |
| शिवममपनिहविणिमिय     | ८९२      | सोमशि सहुदिपासे   | २०४३     | ततो उववसमज्जे       | १३२६     |
| शिवयादिमरोडणं        | ८६४      | " "               | २०५२     | ततो ककको वादो       | १५२१     |
| शिवजसपवाहवडिवं       | २४१      | सोमदिशिमहपवव      | २०३८     | ततो कमलो बहवा       | १६३१     |
| शिवजसमरउवरिमं        | २४२      | सोमाचमदविजयवो     | २१४८     | ततो कुमारकामो       | ५९१      |
| शिवजोमुच्छेहजुवो     | १९१८     | " "               | २२८८     |                     |          |
| शिवजोमसुव पडिवा      | ५१४      | " "               | २३१७     |                     |          |

| भाषा                 | भाषा सं० | भाषा                | भाषा सं० | भाषा                | भाषा सं० |
|----------------------|----------|---------------------|----------|---------------------|----------|
| तत्तो चउरवडवण        | ८११      | तविमायो वेवीयो      | ८२५      | तम्मि वदे काहारे    | ६८६      |
| तत्तो चउरवडवेवी      | ८४९      | तविमा सात्ता जवजुण  | ८३५      | तम्मिबणे पुम्मादिमु | १६६७     |
| तत्तो चउरवडसाभा      | ८५७      | तहम्मिणदाऐणं        | २३७५     | तम्मिबणे बरतोरण     | २०३०     |
| तत्तो छट्ठी भूमी     | ८३६      | " "                 | २३९०     | तम्मि सहस्सं सोहिय  | २७१३     |
| तत्तो जग्गा सध्वे    | १५५६     | तहम्मिणसाहाए        | २१८५     | तम्मि समभूमिभागे    | २०६      |
| तत्तो जव्वणवेदि      | १३३२     | तहम्मिणमणिफेदे      | २३७२     | तरमो विभूतणंभा      | ३४९      |
| " "                  | १३३६     | तहम्मिणमणितोरण      | २३७४     | तरुणिरिभंणेहि क्षरा | १३६७     |
| तत्तो योवे वासे      | १५२७     | " "                 | २३८६     | तवणित्तवणणामा       | २८१२     |
| तत्तो यहाउ पुरवो     | १९४१     | तहम्मिणमणितारे      | १७५१     | तवणमज्जे भूमि       | १८७३     |
| तत्तो दुस्समसुत्तमो  | १४९७     | " "                 | १७८५     | " "                 | १८७६     |
| तत्तो वय भूमिण       | ८२९      | तहम्मिणमणितोरण      | २३९७     | तम्मिजउत्तरभागे     | २३८२     |
| तत्तो पच्छिमभागे     | २१७९     | तहम्मिण पविसिय      | १३३३     | तम्मेदीए चारे       | १३७२     |
| तत्तो पढमे पीडा      | ८७४      | तहम्मिण मणुराहे     | ६९३      | तसंयासी बहुमज्जे    | ६        |
| तत्तो पुरवो वेवी     | १९४७     | तहम्मिण मज्जसं      | ११०१     | तस्सगिदिताभागे      | १६७६     |
| तत्तो पविसिदि तुरिमं | १६१७     | तहम्मिण मज्जमहे     | ११५४     | तस्स दत्ता बहुरत्ता | २५७      |
| तत्तो पविसिदि रम्मो  | १५७६     | तहम्मिण परिवेदवि    | २५७१     | तस्सद्धं विरवारो    | १५३      |
| तत्तो पंच जिणेषुं    | १२२७     | तहम्मिण त्रिणमवणं   | २५८०     | तस्स पढमज्जेसे      | १५५७     |
| तत्तो पुम्मादिमुहा   | १३३०     | तहम्मिण पुम्मावर    | २६१६     | " "                 | १६२१     |
| तत्तो विदिमा भूमी    | २१९६     | तहम्मिणपवेसम्मि य   | १४८७     | तस्स बहुमज्जमहेसे   | १९१६     |
| तत्तो विदिमा सात्ता  | ८१०      | तहम्मिणपवेसिदिदारे  | १३३१     | " "                 | २१७८     |
| तत्तो वेकोसुणो       | ७२५      | तहम्मिणवस्स तविरि   | २२६      | तस्स बहुमज्जभागे    | २३७८     |
| तत्तो भवणविधीयो      | ८५०      | तहम्मिणपवेसिदि      | २१२      | तस्स अत्तरवदी       | २२६      |
| तत्तो य वरिसमज्जं    | ५८७      | तहम्मिण हुमीहिमज्जे | १९५५     | तस्स य उत्तरणीया    | १६४७     |
| तत्तो वरिससहस्सा     | ५८८      | तहम्मिणजीगाभीमं     | २५५४     | तस्स य भूमियमाणं    | १६४९     |
| तत्तो विविक्तत्वा    | १९४५     | तहम्मिणभूमिजटा      | ३४२      | तस्स य पढमपवेसे     | १२८८     |
| तत्तो वित्तोकयं वीव- | १२४      | तहम्मिण रम्महा      | ७७७      | तस्स य पढमपवेसे     | १५८९     |
| तत्तो सीवीकाए        | २१३४     | तहम्मिणउवसादी       | ४७१      | तस्स य पुरवो पुरवो  | १६२५     |
| तत्तो मेणाहिवर्ष     | १३४१     | तहम्मिणउवसादी       | ४७१      | तस्स य पुरवो पुरवो  | १६२५     |
| तरपणिय कुंभुजिणो     | ५४९      | तहम्मिणउवसादी       | ४७१      | तस्स य पुरवो पुरवो  | १६२५     |
| तस्स य तोरणवारे      | १७२०     | तहम्मिणउवसादी       | ४७१      | तस्स य पुरवो पुरवो  | १६२५     |
| तस्स य दिशाविभागे    | १९८२     | तहम्मिणउवसादी       | ४७१      | तस्स य पुरवो पुरवो  | १६२५     |
| तस्स य पसत्तसोहे     | १३५५     | तहम्मिणउवसादी       | ४७१      | तस्स य पुरवो पुरवो  | १६२५     |
| तस्स य समभूमिभागे    | १४९      | तहम्मिणउवसादी       | ४७१      | तस्स य पुरवो पुरवो  | १६२५     |
| तस्सुत्तविधरणं       | १५७५     | तहम्मिणउवसादी       | ४७१      | तस्स य पुरवो पुरवो  | १६२५     |
| तविवक्कपुंजमेसुं     | १६४३     | तहम्मिणउवसादी       | ४७१      | तस्स य पुरवो पुरवो  | १६२५     |
| तविं व तुरिमभूमी     | २१९६     | तहम्मिणउवसादी       | ४७१      | तस्स य पुरवो पुरवो  | १६२५     |

| गाथा                 | गाथा सं० | गाथा               | गाथा सं० | गाथा               | गाथा सं० |
|----------------------|----------|--------------------|----------|--------------------|----------|
| तस्मिं विनिदपडिया    | १६२      | ताणभन्तरभागे       | ७७३      | ताहे बहुविह धोसहि  | १५९४     |
| तस्मिं निसए गिबसइ    | २९१      | " "                | ७७४      | ताहे रसजलवाहा      | १५८२     |
| तस्मिं दीवाहिबई      | २५०८     | ताण भवणपण पुरवो    | १६४४     | ताहे सबकाणाए       | ७१८      |
| " "                  | २५११     | ताण सरियाण बहिरं   | १३५२     | तिगिगिवाधो दमिबण   | १७६३     |
| तस्मिं दीवे परिहो    | ५१       | ताण उदयपणहुदी      | १७८२     | तिगुणिम पंचसयाइ    | ११३३     |
| तस्मिं देवारणे       | २२४४     | ताण उबदेसेण य      | २१६२     | तिणि सयाणि पण्णा   | ११६६     |
| तस्मिं पासावबरे      | १९८६     | ताण कयावमयाण       | ८८८      | तिणिगइस्सा तिसया   | २०७७     |
| " "                  | १६६१     | ताण गुहाण वडे      | २७९७     | " "                | २४५८     |
| तस्मिं पि सुसमदुस्सम | १६३८     | ताण च भेवपासे      | २०५३     | " दुसया            | २०१०     |
| तस्मिं बाहिरभागे     | २७७६     | ताण दमिबणतोरण      | २२८६     | तिणि सुपासे चंदणहु | ११०४     |
| तस्मिं संजादाए       | ४०३      | ताण विणयरमंजण      | ८६५      | तिरादिविदिभुमण     | १०८५     |
| " "                  | ४११      | ताण दो पासेसु      | २५७६     | तिरवयवट्टणकासपमाण  | १२८६     |
| तस्सुभेहो ईका        | ४५२      | ताण पि भंतरेसु     | १६११     | तिस्वपरचवकवसहरि    | ५१८      |
| " "                  | ४५६      | ताण पि मज्झभागे    | ७७१      | तिस्वपरणामकव       | १६०५     |
| " "                  | ४६१      | ताण मज्जे निवसिण   | ७७४      | तिस्वपराण कासे     | १६०८     |
| " "                  | ४६८      | ताण भूमे उवरि      | ७८६      | तिस्वपरा तगुरयो    | १४८५     |
| तस्सुशीरवारेण        | २३८०     | ताण भूमे उवरि      | १६५७     | तिवसिद चाकसरिसं    | १४८      |
| तस्सुवदेसवसेण        | १६३८     | ताण छप्पसवणिण      | २०४१     | तिस्वपणवणवणम       | २६२५     |
| तस्सुचीए परिहो       | २८७८     | ताण वरपासादा       | १६७५     | तिमिसगुह्मि य कूडे | १७२      |
| तस्सोवरि सिदपक्खे    | २४७२     | " "                | २४८१     | तिमिसमुहो रेवद     | २३६५     |
| तह मट्ट दिग्गइदा     | २४२५     | ताण हुमावीण        | ८२१      | तिमइविभमइगिगिगणठ   | २६३३     |
| तह पुण्णमहसीदा       | २०८६     | ताण हेट्ठिमवज्झिम  | २४८६     | तिमइविभुतिपणवणम    | २६९१     |
| तह य तिमिदुवुविट्ठ   | ५२५      | ताणोवरि तवियाइ     | ८९३      | तिमइविसगणवणवणतिव   | २९५५     |
| तह य सुमंविणिदेरइ    | १२७      | ताण्ण तज्जितरसं    | ६४६      | तिमइमकंवरणवणवण     | २४०६     |
| त उज्जाणं सीयस       | ९०       | तासुं यज्जासंजे    | १३८४     | तिमवउज्जउण वउणुण   | २७३४     |
| तं तस्स भगविहं       | १५४८     | ताहे यज्जासंजे     | १५७४     | तिमवउज्जउणवणवण     | २६४४     |
| तं मणुदे तिविवाधे    | ४५१      | ताहे एसा कोणो      | १६२२     | तिवउहोहोउणवण       | २९१६     |
| तं भूले सगलीसं       | १८२१     | ताहे एसा वसुहा     | १६१९     | तिमवण भवसंरासगण    | २७०१     |
| तं चंदायामेहि        | १९२६     | ताहे गभीरगज्जो     | १५७०     | तिमवणवउज्जउण वउणुण | २६७८     |
| ताइ चिय केवलिणो      | ११६६     | ताहे गहवमभीरो      | १५६६     | तिमवणवउज्जउण वउणुण | २६२०     |
| ताइ चिय परोवकं       | ११८१     | ताहे चत्तारि जणा   | १५५१     | तिवतिणिगिगिगिगणवण  | २७२०     |
| ता एण्हं विस्तारं    | ४५०      | ताहे तगिरिमज्झिम   | १३३४     | तिवतिम वउणवणवउण    | २६४०     |
| ताउणतासणवण           | ९२४      | ताहे तगिरिवासी     | १३३७     | तिवतिवउहोउणवण      | २९०५     |
| ताण भपच्चमवाणा       | ४१७      | ताहे ताण उवमा      | १६१८     | तिवउहोउणवण वउणुण   | २७१५     |
| ताण जुमसाणदेहा       | ३८८      | ताहे दुस्समकामो    | १५८८     | तिवउहोउणवण वउणुण   | २९३६     |
| ताण बुवाउणदेहो       | ३२       | ताहे पविसिदि निवमा | १९२८     | तिमवणवउण वउणुण     | २८९७     |

| गाथा                | गाथा सं० | गाथा               | गाथा सं० | गाथा                | गाथा सं० |
|---------------------|----------|--------------------|----------|---------------------|----------|
| तियपणदुग्गमज्जययं   | २६७४     | ते कासवसं पत्ता    | २५५१     | तेसोवी इगिहत्तरि    | १४५८     |
| तियमवक्का खासद्वी   | २६३८     | ते कुंमवसरिक्खा    | २४८६     | तेसु बदीवेसु तदा    | १५०४     |
| तियमवक्काणि वासा    | १४७८     | तेक्खेय नोयपासा    | १९६६     | तेसु तियमजुभाणं     | ३        |
| तियवासा भटमासा      | १२५०     | तेजंभा यज्जमिणि    | ३५७      | तेसु पदमम्मि वणे    | २२११     |
| तियसयेचदुस्सहस्सा   | १२४७     | तेण तमं वित्थरिदं  | ४४२      | तेसु पहाणक्खे       | २२२३     |
| तियसागरोपमेसुं      | १२५७     | ते वस्स भवमवययं    | १३२५     | तेसुत्तरीसहस्सा     | १७६३     |
| तिरिया भोवज्जिदीए   | ३९२      | ते सुत्थ हसिपवद्ध  | १३८८     | तोयंघरा विजित्ता    | २००२     |
| तिविहापो वावीपो     | २४       | तेत्तियमेत्ते कामे | १५०६     | तोरणजक्खेद्वावी     | २६८      |
| तिसपाइ पुम्भघरा     | ११७१     | तेत्तोसम्भद्वियाहं | २४५९     | तोरणउदयो महिपो      | ७५५      |
| ति सहस्सा तिण्णिमया | ११५६     | तेत्तोससहस्साइ     | १७९८     | तोरणकंकणजुता        | १०१      |
| ति सहस्सा सरासया    | १११३     | तेत्तोससहस्साणि    | १४६७     | तोरणवेवीजुता        | २२०८     |
| तिहुवणविम्भमज्जणणा  | १०६३     | " "                | १४६८     |                     |          |
| तोए गुम्मा भुम्मा   | २२७      | " "                | २४५७     |                     |          |
| तोए तोरणद्वारं      | १३२९     | तेवासं खलीसा       | १७२      | यंभाण मज्जमूमो      | १८८७     |
| तोए तोरणवारे        | १८३५     | ते पाणतूर मूसण     | ८३८      | यंभाण मूलभागा       | ७८७      |
| तोए दोपासेसुं       | २०८१     | ते पासावा मग्गे    | ८४       | यंभाण उक्खेद्वा     | २५१      |
| " "                 | २०८६     | ते बारस कुलसेवा    | २५९०     | धूलसुत्तमादिचारं    | २५४५     |
| तोए यमाणजोयण        | २२६७     | तेरसमक्का वासा     | १४७३     | धोपूण धुदिसएहि      | ८८३      |
| तोए परवी वज्जिह     | १९५२     | तेरससहस्सजुता      | १६६४     |                     |          |
| तोए पुरवी वरिया     | १६४८     | तेरससहस्सयाणि      | १७६६     |                     |          |
| तोए बहुमज्जदेसे     | १८४६     | तेवणसहस्साणि       | १७४२     |                     |          |
| तोए मज्जिमभावे      | १८३८     | तेवीसपुम्भलक्का    | १४६३     |                     |          |
| तोए मूलपएमे         | १८       | " "                | १४६४     |                     |          |
| तोए वंदायामा        | ८९८      | तेवीससहस्साहं      | ६०८      | दक्कणमो होदि गिरी   | २५६५     |
| तोदसमयाणसंभं        | ५००५     | तेवीससहस्साणि      | ३७       | दक्खिणजत्तरभावे     | २५७२     |
| तोससहस्सभद्विया     | ११७८     | ते वेत्तयजुता      | २९८६     | दक्खिणदिससेदीए      | ११३      |
| " "                 | ११७९     | तेसद्विपुम्भलक्का  | ५९७      | दक्खिणदिसाए गंदो    | २८२१     |
| तोससहस्सा तिण्णि य  | ११८०     | ते मग्गे उवयरणा    | १९०३     | दक्खिणदिसाए भरदो    | ९३       |
| तोसोवहीण चिरये      | ५७३      | ते मग्गे कप्पदुमा  | ३५८      | दक्खिणदिसा विधाये   | १६८०     |
| तुडिं वडसीदिहदं     | ३०४      | ते मग्गे वरजुमका   | ५६०      | " "                 | २३४७     |
| सुरगडमडिथरमणा       | १३९०     | ते मग्गे वग्गीया   | २५२३     | दक्खिणपोडे सक्को    | १८५३     |
| सुरमस्स सत्त तेरस   | १४४०     | ते संक्कावीदाऊ     | २९९०     | दक्खिणभरहस्सजं      | २६७      |
| सुरिमं व पञ्चमयही   | २२००     | ते सामाणियवेवा     | १६६६     | दक्खिणमुहुमायसा     | १३९६     |
| सुरिये ओइसिमाणं     | ८६८      | तेमीदिसहस्सेसुं    | १२६०     | दक्खिणमुद्देण तशी   | १२४४     |
| सुरिमो य खंदिपूदि   | १६१२     | तेमीदि सक्काणि     | १४३७     | दत्तिविसोद्धिविसेसो | ६८०      |
| सूरंवा वरवीणा       | ३४८      |                    |          | दप्पणगवमरिसमुहा     | २५३६     |
|                     |          |                    |          | दप्पणतज्जसारिक्खा   | ९१८      |
|                     |          |                    |          | दसमद्विय सस्सयाइ    | ११५७     |

| गाथा              | गाथा सं० | गाथा                 | गाथा सं० | गाथा                | गाथा सं० |
|-------------------|----------|----------------------|----------|---------------------|----------|
| दसवज्रकेवलाणी     | ११७०     | दिव्यंतरथरादीना      | ४७       | दुसहस्तजोवणाणि      | २१२५     |
| दसवोदसपुष्पिणी    | ९८०      | दिवसं पवि मृदुसयं    | २४६७     | " "                 | २५९६     |
| दसजोयणठण्डेहो     | २२४      | दिव्यविषयं च भूमी-   | १२५      | " "                 | २८७२     |
| दसजोवणाभयवर्णि    | २६६३     | दिग्भपुरं रयवणिहि    | १४०६     | दुसहस्ता बाणद्वी    | २१५२     |
| दसजोवणाणि उच्चरि  | १११      | दिसिन्धुदिसप्रतरेषुं | १०१४     | दुस्तमसुसमं दुस्तम  | ३२१      |
| दसजोवणाणि गहिरो   | १६८१     | दीणणावा कूरा         | १५४०     | दुस्तमसुसमे कासे    | १६४१     |
| दसजोवणाणि सरा     | १४३      | दोषिकभित्तारमुहा     | २७७८     | दुस्तमसुसमो तन्निधो | १५७७     |
| दसजोवणावनाहो      | १९६      | दीवजगदीश पासे        | २५०      | देवकुमारसरिषणा      | १३९      |
| दसपाणसरपाणा       | २६८५     | दीवमि पोषकद्वे       | २८३८     | देवकुलधेताजावा      | २०९९     |
| दसपुष्पसमस्तमहिम  | ५६५      | दीवंगमुमा साहा       | ३५४      | देवकुलधेताहि        | २२१६     |
| " "               | ५६९      | दीवायनयागवका         | १९०७     | देवध्वंसपुरो        | १९०६     |
| दसपुष्पसमस्तमहिम  | ५६३      | दीवा भवणसमुद्रे      | २५१८     | देवारणां प्रमणं     | २३५१     |
| " "               | ५६४      | दीहाराभेककोसो        | १५५      | देवा विज्याहुरया    | १५६९     |
| " "               | ५६७      | दीहारादमाणा          | ८५६      | देवी तस्त पसिद्धा   | ४५७      |
| दसमते चउसीदि      | १२२३     | दीहरो वित्तारे       | २०७२     | देवीदेवसमूहा        | ११९५     |
| दस व सहस्ता नउदी  | १८०५     | दुस्तं दुजसमदुलं     | ६३९      | देवीदेवसरिषणा       | ३८६      |
| दस व सहस्ता तिसवा | २०११     | दुलणकनकचलप्रियमम     | २४०७     | देवी कारिणिणीया     | ४६९      |
| दसवाससहस्ताणि     | २९५      | दुलपंचएकसगमम         | २८६८     | देव विरदादि उच्चरि  | ४१८      |
| दसविहं भूवासो     | १००७     | दुगधद्वगमलुजवधं      | २७८१     | दोकोट्टेसुं चकी     | १३०१     |
| दस मुष्ण पंच केसव | १४२६     | दुमएवकचउदुलजवध       | २९१३     | दोकोसंउच्छेहो       | १७५      |
| दहगह पंचवदीमो     | २२४१     | दुमचउमदुलद्वं        | २६००     | दोकोसा भवगावा       | १७       |
| दहपंचयपुष्पावर    | २४२३     | दुमणमएकिगिमकचउ       | २६२८     | दोकोसा उच्छेहो      | १६२३     |
| दहमजके धरविषय     | १६८९     | दुमुणमि भदुसासे      | २०४५     | दोचउमकचउसमम         | २७१०     |
| दहा विणि सहास्ता  | ७८१      | " "                  | २६५८     | दोचउमकचउसमम         | २६६४     |
| धाकूण कुलिशीण     | ३७८      | " "                  | २८७६     | दोचउमकचउसमम         | २६४७     |
| धाकूण केहदाणं     | ३७६      | दुगुणाए सुचोए        | २८०७     | दोचउमकचउसमम         | १४१२     |
| धाकूण विहमं       | १५२४     | दुगुणिषिय सुजीए      | २५६१     | दोणं दमुगाराणं      | २५८१     |
| धारमि भदुजयेते    | १३२७     | दुग्गाकवीहिजुतो      | २२६१     | " "                 | २५६३     |
| धारवदीए गोयी      | ६५०      | दुचउमगदीणि सगमण      | २६९९     | " "                 | २५६९     |
| धारसरिचुस्तेहा    | १८८४     | दुतडाए सिहरमि य      | २४७५     | " "                 | २८३०     |
| धारस्त उच्चरिसे   | ७६       | दुतवादी जममज्जे      | २४३७     | " "                 | २८४१     |
| धारोवरिमपसे       | ४६       | दुविहा किरिमारिदी    | १०४२     | " "                 | २८४५     |
| धारोवरिमपराणं     | ७६       | दुसमम्यो पोसहिमो     | १५३०     | दोणं दमुगाराणं      | २७५१     |
| दिव्यजोवनासमादि   | १०६०     | दुसपचउसहिजोवण        | ७६२      | दोणं वि अंतरामं     | २१०२     |
| " "               | १०६१     | दुसपचउसगहस्ता        | ११३७     | दोणि वि मितिसे कथं  | ३२०      |
| दिव्यंतरथणदीवा    | २८       | दुसवा प्रदुतोसं      | १८२      | दोणि सदा पशवणा      | १५१६     |



| गाथा                    | गाथा सं० | गाथा                 | गाथा सं० | गाथा               | गाथा सं० |
|-------------------------|----------|----------------------|----------|--------------------|----------|
| शोष्णि सदा यदहस्तारि    | १२८५     | आददसंते शोषे         | २६१३     | पदमाणं विदियाणं    | ७८०      |
| शोष्णि सदा यदहस्ता      | २०३६     | " "                  | २८३१     | पदमाणीयवमाणं       | १७८६     |
| शोष्णि सदा बीसजुषा      | १५०१     | आददसंते शोषो         | २५६७     | पदमे कुमारकालो     | ५६०      |
| शोष्णि सहस्त्रा वदस्य   | ११२२     | आदुमयं वि तहा        | ६८७      | पदमोवरिम्नि विदिया | ८८४      |
| शोष्णि सहस्त्रा विसदा   | ११२५     | विदिदेवीय समाशो      | २१६०     | पदमो विसाह्वामो    | १४९७     |
| शोष्णि सहस्त्रा दुसदा   | २२४३     | पुर्वंतधयवकाया       | १६७७     | पदमो मृगद्विगामो   | १५०२     |
| शोशोरवोहिदं             | १३४९     | पुर्वंतधयवकाया       | १८३६     | पदमो वृ वदहमेणो    | ६७३      |
| शो शो भद्रहोरावद        | २४८९     | पुर्वंतधयवकाया       | ६२१      | पदिसुदणामो कुलकर   | ४३२      |
| शोशोतिगदगितियणव         | २८९०     | पुर्वो पुर्वो वज्जं  | १५७१     | पदिसुद मरणापु तदा  | ४३७      |
| शोशोशोवतियपण            | २९८६     | पुर्वीसासागोउर       | ७५०      | परायवद्वपण पणदुग   | १७२९     |
| शोशोमुं पासेमुं         | ८२३      | " "                  | ७५२      | पणहमि अट्टिगिखणव   | २८६६     |
| शोपवर्धोहि मासो         | २९२      | पुर्वीसासागोउर       | ७५४      | पणहमिअट्टणममवतिय   | २६४६     |
| शोपणवदगितिय दुग         | २७३९     | पुर्वयवा एवमिहिलो    | ८९०      | पणवणकोसावासा       | २१३३     |
| शोपंचंवरगियुग           | २९५९     |                      |          | पणवतियवदवसाहं      | ११६४     |
| शोपासेसु य वविमण        | २८४०     |                      |          | पणवतियवदवसाहं      | २६८३     |
| शोपासेमुं दमिसण         | २५९२     | पठमवहादु विसाए       | २०६      | पणवपणपणवपण         | २७३०     |
| शोरुदसुण्णकका           | १४५५     | पठमवहादो पण्णिय      | २५५      | पणवोयणसंक्काणि     | २९६३     |
| शोवदा सत्तपए            | १४८०     | पठमवहादो पण्णिय      | २६२      | पणवपणपणहमिअववद     | २९२६     |
| शो सवका पण्णरसा         | २८७०     | पठपदहे पुवमुहा       | १७१४     | पणवपणपणवदोवद       | २९४१     |
| शोसगणमएवकदुगं           | २६३६     | पठमवहा पठमोवरि       | १७००     | पणवतितितियवपणव     | २९६५     |
| शोसगणवचउद्धो            | २७२९     | पठमवहाउ वदगुण        | १७८४     | पणवतिपणववगिअट्टणम  | २६११     |
| शोसगदुवतियणवणम          | २९२१     | पठमवहाउ वदगुणो       | १७५०     | पणवामवववसंखा       | २८०४     |
| शो सुण्णा एवकणिणो       | १३००     | पठमवहाप्रो उत्तर     | १७३६     | पणवोसगदगिअट्टो     | २८६२     |
| शोमुं पि विदेहेमुं      | २२३०     | पठमवहादु उत्तर       | १७१८     | पणवपणवदवाखे        | २१८०     |
|                         |          | पठमवहापठमवहा         | १५९२     | पणवपणवदपणवदुग      | २७१६     |
|                         |          | पठममि अदणामो         | १७०१     | पणवपणमवद्विखणम     | २६०३     |
| मणवो विदयाणेणं          | २३०७     | पठमं पठमोविहं        | ३०१      | पणपरिमाणाकोसा      | ८७७      |
| मण्णमि संतिकुं          | ११०७     | पणवोए मृदणाणा        | १०२६     | पणवपणवदवदुग        | २९५७     |
| मण्णारकुं कुर्वंसज्जादा | ५५७      | पणवोए मृदवलिणो       | ६१२      | पणममि मुनिवाओ      | ८४८      |
| मयवद्वहणं अंतर          | ८३२      | पण्विदिसाए मण्विद    | २४००     | पणममि अट्टोवविणे   | ५२१      |
| मरणिणरा वत्तुंगा        | ३३२      | पण्विदमपुहेया मण्विद | २३८१     | पणमेवद्वपणवद्विदु  | १६२९     |
| मरणो वि पंचवण्णा        | ३३३      | पण्विदमपुहेया ततो    | २३९८     | पणवमकेसु गदेमुं    | ५८२      |
| मवकाववत्तजुसा           | १८४६     | पणवता सिअवतिय        | २९७९     | पणवममिअट्टियाणि    | ११५६     |
| मादवत्तकणवाण            | २६४१     | पणवता पणवता          | २६८४     | पणवपण मवववसा       | १२८१     |
| मादवत्तवदिसामुं         | २५३०     | पणवहरी सत्तपए        | १४५०     | पणवपणकोसा          | ७६३      |
| मादवत्तवदवविणद          | २८२६     | पणमाए भूमोए मुववह    | २१६५     | पणवोसजोयणाहं       | २१२१     |
| " "                     | २८५७     |                      |          |                    |          |

| वाचा          | वाचा सं० | वाचा              | वाचा सं० | वाचा                    | वाचा सं० |
|---------------|----------|-------------------|----------|-------------------------|----------|
| पणवीसजोपणाई   | २२१३     | पण्णारसंवासककसा   | ६६३      | पसेककं कुतवापो          | २४३२     |
| पणवीसजोपणाई   | ११७१     | पण्णारससमा वंदा   | १६९६     | " "                     | २४३६     |
| पणवीसजोपणाई   | ८९६      | पण्णारससहससाणि    | २१       | पसेककं पायाळा           | २४५६     |
| " "           | १९९६     | पण्णारसेसु विणिवा | १२९६     | पसेककं पुण्यावर         | २३६२     |
| " "           | २०७५     | पण्णारसमेसु वरिणी | १४६२     | पसेककं सध्याणं          | १९००     |
| पणवीसजोपणाई   | १६१६     | पण्णारससहससाणि    | १७५१     | पण्णारसपण्णार महापण्णार | २२३४     |
| पणवीसजोपणाई   | २०७७     | पण्णारससहससाणि    | २४६२     | परपरपुकारणसु            | १४४६     |
| पणवीस जोणिसमा | ३१       | पण्णारससहससाणि    | २४६०     | परचकणीधिरहिरो           | २२७७     |
| पणवीसजोपणाई   | ८९०      | " "               | २६०३     | परमाणुस गियहिरो         | २८८      |
| " "           | ८८१      | पण्णारससहससाणि    | २८६४     | परमाणु प पण्णार         | ३६       |
| " "           | ८८७      | पण्णारसेहि धिहिमं | ७३९      | परिचिदेहि समुदो         | २७६२     |
| पणवीसजोपणाई   | ७८२      | पण्णारसकोविलकसा   | ५६१      | पसिचोवममममं             | ४२८      |
| पणवीसजोपणाई   | १७३६     | पण्णारसकोविलकसा   | १८६१     | पसिचोवममममं             | ५०६      |
| पणवीसजोपणाई   | २८५४     | पण्णारसकोविलकसा   | १९४२     | पसिचोवममममं             | १२७१     |
| पणवीसजोपणाई   | १६६२     | पण्णारसकोविलकसा   | १९३९     | पसिचोवममममं             | १२३८     |
| " "           | २०१४     | पण्णारसजोपणाई     | २४३      | पसिचोवममममं             | ५७७      |
| पणवीसजोपणाई   | १४११     | पण्णारसजोपणाई     | १८१      | पसिचोवममममं             | १२९०     |
| पणवीसजोपणाई   | २९       | " जोपणाई          | २७४      | पसिचोवममममं             | १८५८     |
| पणवीसजोपणाई   | २४०९     | " "               | २००४     | पसिचोवममममं             | १३८९     |
| पणवीसजोपणाई   | ८३३      | पण्णारसजोपणाई     | ११६०     | पसिचोवममममं             | १६७८     |
| पणवीसजोपणाई   | २२०      | पण्णारसजोपणाई     | १०२७     | पसिचोवममममं             | २४६१     |
| पणवीसजोपणाई   | २१६      | पण्णारसजोपणाई     | ११७७     | पसिचोवममममं             | ३३४      |
| पणवीसजोपणाई   | ११०      | " "               | ११८६     | पसिचोवममममं             | १६३३     |
| पणवीसजोपणाई   | ११५५     | पण्णारसजोपणाई     | ६०३      | पसिचोवममममं             | १७५      |
| पणवीसजोपणाई   | १३०९     | " "               | १२७६     | पसिचोवममममं             | २८७६     |
| " "           | १४३६     | " "               | १२७७     | पसिचोवममममं             | २१०६     |
| पणवीसजोपणाई   | १३१२     | पण्णारसजोपणाई     | ४७३      | पसिचोवममममं             | ६८१      |
| " "           | २१६८     | " "               | ५८३      | पसिचोवममममं             | १७२५     |
| पणवीसजोपणाई   | ५८०      | पण्णारसजोपणाई     | २४२१     | पसिचोवममममं             | १४६५     |
| पणवीसजोपणाई   | ४७७      | पण्णारसजोपणाई     | ६४८      | पसिचोवममममं             | २७२२     |
| पणवीसजोपणाई   | १३१०     | पण्णारसजोपणाई     | ३००३     | पसिचोवममममं             | १४२६     |
| " "           | १३१३     | पण्णारसजोपणाई     | ८७५      | पसिचोवममममं             | ११४९     |
| पणवीसजोपणाई   | ५०२      | पण्णारसजोपणाई     | ७३२      | पसिचोवममममं             | २४८२     |
| पणवीसजोपणाई   | ९०१      | पण्णारसजोपणाई     | १६९४     | पसिचोवममममं             | ६२६      |
| पणवीसजोपणाई   | १२३४     | पण्णारसजोपणाई     | २४८०     | पसिचोवममममं             | २२७७     |
| पणवीसजोपणाई   | १३८०     | पण्णारसजोपणाई     | २७७०     | पसिचोवममममं             | १२१४     |

| गाथा             | गाथा सं० | गाथा                   | गाथा सं० | गाथा                 | गाथा सं० |
|------------------|----------|------------------------|----------|----------------------|----------|
| पंचविदेहे सद्धि  | २९८१     | पहुसिलाय समाणा         | १८५९     | पीढो सम्बद्धपुतो     | १४५२     |
| पंचसएहि जुता     | २०१३     | पहुसिमासारिण्हा        | १८५७     | पुनसरमेवातसिसं       | १५७६     |
| पंचसयथावपुंगो    | २३०८     | पहुकंसलाया             | १८५४     | पुनसरवरदरीवे         | २८३५     |
| पंचसयश्रीपणाणि   | २०४२     | पाकमज्जु पिप्पल        | ९२६      | पुट्टो चउवीसं        | १५९८     |
| " "              | २१७३     | पाशांसुरियंवा          | ५४६      | पुट्टो होंति मट्टी   | ३४०      |
| " "              | २२४४     | " "                    | ८३७      | पुण्णम्मि य रावमासे  | ५८०      |
| " "              | २५२०     | पाशां महुरमुत्तावं     | ३४७      | पुण्णाराणायकुज्जय    | ८०८      |
| " "              | २६२७     | पाट्टाणे सुण्ण         | ३४७      | पुण्णायपुत्तिसिंहा   | १०५३     |
| पंचसयसुपमाणो     | ५६२      | पाटालस्त दिमाए         | २४८७     | पुण्णिमए हेट्ठावो    | २४६४     |
| पंचसयसमहिमाई     | १११६     | पाटालाणं मरदा          | २४६२     | पुत्तिकदपंकजपीडा     | २३४      |
| पंचसयाणं कयो     | ६६४      | पाट्टाणं जोपणयं        | १२       | पुत्तिकोत्तराणिहाया  | ५५१      |
| पंचसया तेवीसं    | २१५      | पापारपरि उताई          | २५       | पुत्तो महासयाणं      | १६९८     |
| पंचसया पण्णत्तरि | ४९०      | पापारवत्तहिणोउर        | १६७६     | पुत्तिरा वरवउदवरा    | ३६३      |
| पंचसया पण्णहिय   | १३०३     | पायासते एियणिय         | २४७३     | पुत्तिरितरवीवेउदा    | ४२२      |
| " "              | १४५६     | पासकरज्जं सद्धि        | १५१८     | पुत्तिकवपावपुत्तो    | ६२७      |
| पंचसया पुम्बधरा  | ११६३     | पासजिणे चउमासा         | ६८५      | पुम्बदिसाए जूणिय     | १८६०     |
| पंचसया सावणा     | ७३४      | पासजिणे पण्णदहा        | ८८५      | पुम्बदिसाए असस्सवि   | २८२०     |
| पंचसया कउला      | ७८५      | पासजिणे पण्णवीसा       | ८६४      | पुम्बदिसाए विजयं     | ४३       |
| पंचसहस्तपुडाणि   | १२८२     | पासजिणे पण्णवीस        | ८९२      | पुम्बधर सिक्खमोहो    | ११०६     |
| पंचसहस्ता चउसय   | ११४३     | पासम्मि पंचकंवा        | ८३६      | पुम्बधरा सीसाविय     | ११२८     |
| पंचसहस्ता जोपण   | २८८८     | पासम्मि पंचकोसा        | ७३०      | पुम्बधरा पण्णहिय     | १११६     |
| पंचसहस्ताणि पुढ  | ११४७     | पासम्मि मेवगिरिणो      | २०४४     | पुम्बपवणिगकोत्तुह    | २४६६     |
| पंचसहस्ता तिसया  | १६३०     | पासम्मि सवण्णकरम्मणि   | ८६       | पुम्बमवे पण्णिदाणा   | १९११     |
| पंचाणंमितिवाणं   | १४९६     | पासंहसमवचत्तो          | २२७६     | पुम्बपुहुदारउदयो     | १५५८     |
| पंचासीदिनहस्ता   | १२३२     | पासावदुवादेसुं         | ३०       | पुम्बविदेहसंते       | २२२७     |
| पहुगजिणवेहाणं    | २११३     | पासे पंचकज्जिदा        | ७७८      | पुम्बविदेहं व कयो    | २३२५     |
| पहुगजणहं तो      | १६६३     | पियदंसणो पमासो         | २६४२     | पुम्बस्मिं चित्तणयो  | २१४६     |
| पहुगजण जिणवेविर  | २३०३     | पीधुमजिण्णकरम्मिहं विण | ९४९      | पुम्बगतमज्जुवाइ      | १२६२     |
| पहुगजणहस मयत्ते  | १८६७     | पीठतयस कयो             | ७७६      | पुत्तंमम्महिवाणि     | १२६१     |
| " "              | १८७१     | पीठस चउदिसासुं         | १६२२     | पुत्तं चउसीदिहदं     | २६७      |
| पहुगजणहस हेट्टे  | १६६१     | " "                    | १६२७     | " "                  | २९८      |
| पहुगसोमणसाणि     | २६२४     | " "                    | १६३५     | पुम्ब पिक्ख वणहंदा   | २१५०     |
| पहुगपुराहिती     | १९६८     | पीठस्सुवरिममासे        | १६२८     | पुम्बं चउणाराऊ       | ३७३      |
| " "              | २०२६     | पीठान उवरि माणत्थंमा   | ७८३      | पुम्बं व पुत्तामज्जे | १३७५     |
| पहुगणम्मतरए      | १८४२     | पीठेणं परिहीयो         | ८७८      | पुम्बाए मंथमाइण      | २२१८     |
| पहुगणे चउरम्मा   | १८३४     | पीठेवरि बहुमज्जे       | १६२३     | पुम्बाए मेवकनकसं     | ६५२      |



| गाथा                  | गाथा सं० | गाथा                 | गाथा सं० | गाथा                  | गाथा सं० |
|-----------------------|----------|----------------------|----------|-----------------------|----------|
| विदियं च त्रिविधमुभी  | २१९७     | भरहुस्त मुनदवं       | २८५१     | भीमावलिजियस्तु        | ५२७      |
| विदियायो वेदीयो       | ५०७      | भरहादिमु कवेयं       | ११४४     | भीमावलिजियस्तु        | १४५१     |
| विदियायो मन्त्रार्    | १४१६     | भरहादिमु विजयाणं     | २८४६     | भुवराजवत्स तं हे      | ७१४      |
| वीससहस्र जुवाइ        | ११०४     | भरहादी शिलहंता       | २४०८     | भुवराज सुपसिद्धा      | १००९     |
| वीससहस्रसम्भ्रिया     | ५८१      | भरहादी विजयाणं       | २६०८     | भूमिध भुहं विसोचिय    | २०५८     |
| वीसहृदवास सकस         | ५७५      | भरहादिएव वादो        | १७४०     | भूमीए नेदुं तो        | १०३७     |
| बुद्धीविकिरयविकिरया   | ९७७      | भरहाकणीय कागे        | १७६१     | भूमीज मुहं सोहिय      | २४३५     |
| बुद्धी विवम्बवाणं     | ६८६      | भरहे कूवे भरहो       | १७०      | भूमीयो पंचसया         | १८११     |
| वे मद्रस सहस्ता       | ११३२     | भरहे कृतकसपुष्पा     | १४१३     | भेरी पकहा रम्मा       | १४००     |
| वे कोसा उज्ज्वला      | ६१       | भरहो सगरो मययो       | ५२२      | भोगस्त्रियो ए हूँतिह  | ४१४      |
| वे कोसाणि दुंगा       | १०५१     | भरहो सगरो मययो       | १२६२     | भोगजगरतिरियाणं        | ३७६      |
| वे कोसा विविधणो       | २५८      | भवणविविधणिवीसुं      | ८५३      | भोगमुवाणं मयरे        | ४१६      |
| वे कोसे हि मपाविम     | १७३७     | भवणासं विदिसासुं     | २२१२     | भोगमहीए सम्मे         | ३६९      |
| वे कोसे हिमपाविम      | १७७१     | बबणोवरि कूडमि य      | २१२      | भोसापुष्पा मिच्छे     | ४२४      |
| वे काऊट विविधणा       | १७४      | भवसगदसणहेदुं         | ९३५      | भोलुण स्त्रिमिसमेतं   | ६२३      |
| वेणिलजुगा दस वरिता    | २९४      | बम्माबम्मा सुस्तम्मा | ४२५      |                       |          |
| वेवणुसहस्रसुंगा       | २५५३     | बंभापुदंगमदण         | १६६३     |                       |          |
| वेवणुताडिवाइ          | ११४१     | भातजविमिह मज्जं      | १०७      | मउदमदेसुं चरिनो       | १४६३     |
| वे वक्का पण्णारस      | २८६६     | भापणजंवा कंवरण       | ३५५      | मउदंहुं दलहारा        | ३६४      |
| वेमंजरवैवाणं          | २६       | भावरणवैतरजोवस        | ३८२      | मककपतसुपंती           | १०५४     |
| वेमदमपण्णाराइ         | १९२७     | " "                  | ७६८      | मयवतिर बोहसीए         | ५५०      |
|                       |          | भावनसुरकणाओ          | ८२४      | मयवतिर पुण्णिमाए      | ६५३      |
| अ                     |          | भासद वसणहिदयो        | १५५०     | मयवतिर बल्लवसमी       | ९७४      |
| भलीए भासतमना विणिह    | ६५०      | भावंति तस्सबुद्धो    | १०२८     | मयवतिर सुअएकारसिए     | ६६६      |
| भरहपुण्णाल कालो       | १५२०     | भिगा भिगविहववा       | १९८६     | मयवतिर सुअदसमी        | ६६८      |
| भरहजुताण मराणं        | ४९९      | भितारकलसदपण          | १५६      | मयवतिर सुअदसमी सुमोया | ११६१     |
| भरहसुवेत्त पञ्चिण्ण   | २५१२     | " "                  | १६३      | मयवतिर सुअदसमी        | २७७१     |
| भरहसुवेत्तमि इमे      | ३१७      | " "                  | ७४६      | मयवतिर सुअदसमी        | २५२७     |
| भरहसुवेत्ते जादं      | १८५१     | भितारकलसदपण          | १७१६     | मयवतिर सुअदसमी        | २७७४     |
| भरहसुवेत्ते गणिवं     | २९६६     | " "                  | १८९३     | मयवतिर सुअदसमी        | २४८८     |
| भरहसुवेत्ते मयमज्जे   | १०६      | " "                  | १९०४     | मयवतिर सुअदसमी        | २१७४     |
| भरहसुवेत्ते वणिज      | २५०६     | भितार रयवदपण         | १९०९     | मयवतिर सुअदसमी        | ७५८      |
| भरहसुवेत्ते होवि एकका | १०४      | भितारवलीककेसा        | ३४१      | मयवतिर सुअदसमी        | १४७      |
| भरहसुवेत्ते धरवहुदि   | २६६६     | भितारवलीककेसा        | ३४१      | मयवतिर सुअदसमी        | १३३      |
| भरहसुवेत्ते धरवहुदि   | २७६०     | भितारवलीककेसा        | ३४१      | मयवतिर सुअदसमी        | २३०      |
| भरहसुवेत्ते इयुपमाणे  | १७६६     | भितारवलीककेसा        | ३४१      |                       |          |
| भरहसुवेत्ते वाकपुटुं  | १९५      | भितारवलीककेसा        | ३४१      |                       |          |

| गाथा                 | गाथा सं० | गाथा              | गाथा सं० | गाथा               | गाथा सं० |
|----------------------|----------|-------------------|----------|--------------------|----------|
| मणिमयजिह्वापट्टिमाधो | ८१५      | माधस्त किण्वहारसि | ६९०      | मूमसिहराण वंश      | २८१६     |
| मणिमय लोवाजाधो       | २२१४     | माधस्त पुष्णिमाए  | ६९७      | मूमोवरिसाएमु'      | १७३०     |
| मणिसोबाजमणोहर        | ८०९      | माधस्त बारसोए     | ५३६      | मूलोवरि लो कूडो    | २००८     |
| मणुसोत्तरवरनिघरं     | २७८९     | " "               | ५४२      | मूले बारस मज्जं    | १६       |
| मदिसुदमण्णाणाहं      | ४२३      | माधस्त य मयवासे   | ६९६      | मूले मज्जे उव्वरि  | २२५      |
| महबलउव्वजुता         | ३४३      | माधस्त सिद्ध चरणी | ६६३      | मूले मज्जे उव्वरि  | २२८      |
| मच्चिबुण कुणह मग्गि  | १५९५     | माधस्त सुककणवमी   | ६५२      | मेयण्णहेण सुमहं    | ५३७      |
| मर हवि मणिदे ओघो     | १०८६     | माधस्त सुककणवसे   | ६३४      | मेयण्णमहि पडिसेहि  | १३५८     |
| मरुवेत्ते तिथिबगवे   | ४९६      | माधस्तिमदएककारसि  | ६७३      | मेरुगिरिपुण्डवविजण | २१६१     |
| मस्तिजिणे छट्ठिबसा   | ६८४      | मायादी होति उट्टु | २६३      | मेरुतलस्त य वंश    | २६१८     |
| मन्जीणाधो सोमा       | ९७५      | मायावध चारमवसा    | २०१६     | मेरुतलस्त य वंश    | २६२१     |
| महपउमवहाउ जधो        | १७६१     | मागसिमहमागणिमा    | १४८      | मेरुगिरिपुण्डव     | १८५२     |
| महपउमो सुरवेधो       | १६००     | मागुल्लासममिच्छा  | ७९०      | मेरुगिरिपुण्डव     | २०९५     |
| महपु'वरीयणामा        | २३८७     | मागुल्लासममिच्छा  | ११       | मेरुगिरिपुण्डव     | २०९८     |
| महहिमवत्तं वंश       | २५६७     | मागुल्लासममिच्छा  | ११       | मेरुगिरिपुण्डव     | २०९८     |
| महहिमवत्ते वंश       | १७४६     | मागुल्लासममिच्छा  | ११       | मेरुगिरिपुण्डव     | २०९८     |
| मंतीणं ममराण         | १७९५     | मागुल्लासममिच्छा  | ११       | मेरुगिरिपुण्डव     | २०९८     |
| मंतीणं उव्वरोहे      | १३२०     | मागुल्लासममिच्छा  | ११       | मेरुगिरिपुण्डव     | २०९८     |
| मंदकसायेण जुवा       | ४२७      | मागुल्लासममिच्छा  | ११       | मेरुगिरिपुण्डव     | २०९८     |
| मंदरभणमदिसादो        | २०४०     | मागुल्लासममिच्छा  | ११       | मेरुगिरिपुण्डव     | २०९८     |
| मंदरईसाणदिसा         | २२२०     | मागुल्लासममिच्छा  | ११       | मेरुगिरिपुण्डव     | २०९८     |
| मंदरसत्तरभागे        | २२१७     | मागुल्लासममिच्छा  | ११       | मेरुगिरिपुण्डव     | २०९८     |
| मंदरमिरियो मणिमय     | २०८०     | मागुल्लासममिच्छा  | ११       | मेरुगिरिपुण्डव     | २०९८     |
| " "                  | २०८८     | मागुल्लासममिच्छा  | ११       | मेरुगिरिपुण्डव     | २०९८     |
| मंदरभिरिपुण्डोणं     | २८७४     | मागुल्लासममिच्छा  | ११       | मेरुगिरिपुण्डव     | २०९८     |
| मंदरगिरिध उत्तर      | २४२९     | मागुल्लासममिच्छा  | ११       | मेरुगिरिपुण्डव     | २०९८     |
| मंदरगिरिध उत्तर      | २१७२     | मागुल्लासममिच्छा  | ११       | मेरुगिरिपुण्डव     | २०९८     |
| मंदरगिरिध उत्तर      | २१६३     | मागुल्लासममिच्छा  | ११       | मेरुगिरिपुण्डव     | २०९८     |
| मंदरगिरिध उत्तर      | २६१५     | मागुल्लासममिच्छा  | ११       | मेरुगिरिपुण्डव     | २०९८     |
| मंदरगिरिध उत्तर      | २१३६     | मागुल्लासममिच्छा  | ११       | मेरुगिरिपुण्डव     | २०९८     |
| मंदरगिरिध उत्तर      | १०६५     | मागुल्लासममिच्छा  | ११       | मेरुगिरिपुण्डव     | २०९८     |
| मंदिरमेवाहिबई        | २००९     | मागुल्लासममिच्छा  | ११       | मेरुगिरिपुण्डव     | २०९८     |
| मागवधीवसमाणं         | २५१३     | मागुल्लासममिच्छा  | ११       | मेरुगिरिपुण्डव     | २०९८     |
| मागवधेवस तयो         | १७२२     | मागुल्लासममिच्छा  | ११       | मेरुगिरिपुण्डव     | २०९८     |
| मागवधवरतणुवेहि य     | २२८०     | मागुल्लासममिच्छा  | ११       | मेरुगिरिपुण्डव     | २०९८     |
| माधस्त किण्वहारसि    | ११६९     | मागुल्लासममिच्छा  | ११       | मेरुगिरिपुण्डव     | २०९८     |

| गाथा                | गाथा सं० | गाथा                      | गाथा सं० | गाथा                   | गाथा सं० |
|---------------------|----------|---------------------------|----------|------------------------|----------|
| रमणममपठकिपाए        | ११२४     | मकख पंचतइहसा              | १२४९     | बण्णा सुबण्णा महाबण्णा | २२१६     |
| रमणान अणवेहि        | ११५      | मकखारिणि तिणिण छावव       | ११६२     | मज्जममवंतपत्ती         | १८६७     |
| रमणायररमणपुरा       | १२८      | मकखारिणि तिणिण सोलस       | १२३१     | मज्जममहृतिमवेणं        | १५७३     |
| रविमंडलं अ वट्टा    | ७२४      | सङ्ख्खण उववेस             | ४७५      | मज्जिममसाहारा          | १७०      |
| रविससिगहपहुवीणं     | १०१२     | मवण मलविस्स अगदी          | २५५६     | मज्जिममज्जसामणि        | २८३६     |
| रागेण हंघेण मयोववेण | १५२३     | मवणं बुद्धि अगदीदो मविसिप | २५०२     | मज्जिममलीममरमय         | १६७९     |
| रामासुणीवेहि        | ५५१      | मवणादीणं हंघं             | २६०१     | मज्जिममलीममरमय         | २२०८     |
| रामणिरे सुजिसुम्भय  | ५५२      | मवणो बुद्धि अगदीदो मविसिप | २५२८     | मज्जिममलीममरमय         | २५६३     |
| रामाधिरायवसहा       | २३१४     | मवणो बुद्धि अगदीदो मविसिप | २५७८     | मज्जिममलीममरमय         | २५६३     |
| रिद्धो हू कामकवा    | १०२४     | मवणो बुद्धि अगदीदो मविसिप | २५५७     | मज्जिममलीममरमय         | २२१६     |
| रिसहादीणं चिण्ह     | ५११      | मवणो बुद्धि अगदीदो मविसिप | १६६२     | मज्जिममलीममरमय         | २५४      |
| रिसहे सरस्स भग्गो   | १२६४     | मवणो बुद्धि अगदीदो मविसिप | १८६१     | मज्जिममलीममरमय         | १६२      |
| रिसिकरवरणावीणं      | १०७६     | मवणो बुद्धि अगदीदो मविसिप | १५७      | मज्जिममलीममरमय         | २५७७     |
| रिसिपाणितामणिचिण्ह  | १०६७     | मवणो बुद्धि अगदीदो मविसिप | ४८       | मज्जिममलीममरमय         | २५८३     |
| रमणाण अठविसासुं     | १६३३     | मवणो बुद्धि अगदीदो मविसिप | ११००     | मज्जिममलीममरमय         | ५५०      |
| रदादव मद्रवहा       | १४८२     | मवणो बुद्धि अगदीदो मविसिप | १३६६     | मज्जिममलीममरमय         | २२३५     |
| रप्यभिरिस्स गुहाए   | २३६      | मवणो बुद्धि अगदीदो मविसिप | २५३१     | मज्जिममलीममरमय         | २७७६     |
| रप्पिमिरिस्सोवरि    | २३७१     | मवणो बुद्धि अगदीदो मविसिप | १        | मज्जिममलीममरमय         | १४४      |
| रंघं इसुहीणं        | १८३      | मवणो बुद्धि अगदीदो मविसिप | ४८१      | मज्जिममलीममरमय         | १७१७     |
| रंघं मूलमि सव       | २१२०     | मवणो बुद्धि अगदीदो मविसिप |          | मज्जिममलीममरमय         | २५१०     |
| रंघावगाडसोरण        | १७१६     | मवणो बुद्धि अगदीदो मविसिप |          | मज्जिममलीममरमय         | २५६      |
| रंघावगाडपहुवि       | २१४७     | मवणो बुद्धि अगदीदो मविसिप |          | मज्जिममलीममरमय         | ६८       |
| रंघावगाडपहुदी       | २०६६     | मवणो बुद्धि अगदीदो मविसिप |          | मज्जिममलीममरमय         | २१५५     |
| रंघेण पडमवीडा       | ८७९      | मवणो बुद्धि अगदीदो मविसिप |          | मज्जिममलीममरमय         | २६०      |
| रुठककससिद्धीदी      | १००६     | मवणो बुद्धि अगदीदो मविसिप |          | मज्जिममलीममरमय         | २७७      |
| रुविदिउमुदणाणा      | १००५     | मवणो बुद्धि अगदीदो मविसिप |          | मज्जिममलीममरमय         | ८००      |
| रुवेणुणा सैदी       | २९७१     | मवणो बुद्धि अगदीदो मविसिप |          | मज्जिममलीममरमय         | ८५८      |
| रोमजरपविहीणा        | ४०       | मवणो बुद्धि अगदीदो मविसिप |          | मज्जिममलीममरमय         | ३८       |
| रोमविसेहि पव्वा     | १०८७     | मवणो बुद्धि अगदीदो मविसिप |          | मज्जिममलीममरमय         | ४५       |
| रोहिणपहुदीण महा     | १००७     | मवणो बुद्धि अगदीदो मविसिप |          | मज्जिममलीममरमय         | १५८      |
| रोहीए रंघादी        | १७५९     | मवणो बुद्धि अगदीदो मविसिप |          | मज्जिममलीममरमय         | २३८      |
| रोहीए वम बारस       | २३३६     | मवणो बुद्धि अगदीदो मविसिप |          | मज्जिममलीममरमय         | १७९१     |
|                     |          | मवणो बुद्धि अगदीदो मविसिप |          | मज्जिममलीममरमय         | १६४३     |
|                     |          | मवणो बुद्धि अगदीदो मविसिप |          | मज्जिममलीममरमय         | ९५       |
|                     |          | मवणो बुद्धि अगदीदो मविसिप |          | मज्जिममलीममरमय         | ९९       |
|                     |          | मवणो बुद्धि अगदीदो मविसिप |          | मज्जिममलीममरमय         | २११      |
| रु                  |          | मवणो बुद्धि अगदीदो मविसिप |          | मज्जिममलीममरमय         |          |
| मकखस पादमाणं        | ६०७      | मवणो बुद्धि अगदीदो मविसिप |          | मज्जिममलीममरमय         |          |
| मनसं वाससहसा        | २२०७     | मवणो बुद्धि अगदीदो मविसिप |          | मज्जिममलीममरमय         |          |

| गाथा                    | गाथा सं० | गाथा             | गाथा सं० | गाथा              | गाथा सं० |
|-------------------------|----------|------------------|----------|-------------------|----------|
| वरिसंति लीरमेवा         | १५८०     | वाहनवत्पविभूषण   | १८७४     | विजयो व वषणण कुवो | २५०५     |
| वरिसंति दीरणमेवा        | १५७५     | वाहनवत्पविभूषण   | १८७५     | विजयाह्वरणपरवरा   | १२९      |
| वरिसाणि तिणि लक्का      | १५७७     | वाहिणिह्वणं देहो | ६४५      | विजयाह्वरसेडीए    | १९८३     |
| वरिसादीण ससाया          | १०६      | विजसमदीमो वारस   | १११५     | विजयाह्वरण तस्सि  | २२८५     |
| वरिसाधु कुत्रुण वक्की   | १०८      | विजसमदीमो वारस   | १११२     | विजयपहणमगिरिणो    | २०७६     |
| वरिसे महाविसे           | १५०१     | विजसमदी य सहस्सा | ११२४     | विजयुपह्वण उवरि   | २०७०     |
| वरिसे संसेजजगुणा        | २६७७     | विजसमदी य सहस्सा | ७२       | विजयुपह्वण उवरि   | २१९४     |
| वक्को ति भोपपामो        | २०३७     | विजसमदी य सहस्सा | २२५४     | विजयुपह्वण गिरिणो | २०९४     |
| वक्कोपवपरीदेम           | ८७९      | विजसमदी सोहिय    | २०२०     | विजयाराधो सोहिय   | २९५३     |
| वक्कोपवपरीदेम           | ६५६      | विजसमदी सोहिय    | ११२७     | विजयुपह्वण गिरिणो | ५६९      |
| वक्कोपवपरीदेम           | १८८९     | विजसमदी सोहिय    | ११२७     | विजयुपह्वण गिरिणो | ३२६      |
| वक्कोपवपरीदेम           | १६१६     | विजसमदी सोहिय    | ११२७     | विजयुपह्वण गिरिणो | १२२४     |
| वातादिबोसवतो            | १०२२     | विजसमदी सोहिय    | ११२७     | विजयुपह्वण गिरिणो | १८८३     |
| वातादिबोसवतो            | १०११     | विजसमदी सोहिय    | ११२७     | विजयुपह्वण गिरिणो | ६०९      |
| वायवि विविकिरिषाए       | ९२०      | विजसमदी सोहिय    | ११२७     | विजयुपह्वण गिरिणो | २०९      |
| वारणवंतसरिण्ण           | २०३७     | विजसमदी सोहिय    | ११२७     | विजयुपह्वण गिरिणो | ११८२     |
| वारणवीए पुह्वी          | ५३९      | विजसमदी सोहिय    | ११२७     | विजयुपह्वण गिरिणो | १५८३     |
| वावीए वहुपज्जे          | १९४०     | विजसमदी सोहिय    | ११२७     | विजयुपह्वण गिरिणो | ८१२      |
| वावीए सहस्साणि          | २०२७     | विजसमदी सोहिय    | ११२७     | विजयुपह्वण गिरिणो | १६३१     |
| " "                     | २०३५     | विजसमदी सोहिय    | ११२७     | विजयुपह्वण गिरिणो | ६६३      |
| वासकदी वसवुणिदा         | ९        | विजसमदी सोहिय    | ११२७     | विजयुपह्वण गिरिणो | ६४०      |
| वासकदी वीववाह           | २२३      | विजसमदी सोहिय    | ११२७     | विजयुपह्वण गिरिणो | १५०८     |
| वासकए वक्का             | १५५६     | विजसमदी सोहिय    | ११२७     | विजयुपह्वण गिरिणो | १५४२     |
| वासकए वक्का             | ५८९      | विजसमदी सोहिय    | ११२७     | विजयुपह्वण गिरिणो | १११७     |
| वाससहस्से देहे          | १५६०     | विजसमदी सोहिय    | ११२७     | विजयुपह्वण गिरिणो | १५५९     |
| वासामो वीसवक्का         | १५७०     | विजसमदी सोहिय    | ११२७     | विजयुपह्वण गिरिणो | ६६६      |
| वासणि दो सहस्सा         | ९५८      | विजसमदी सोहिय    | ११२७     | विजयुपह्वण गिरिणो | १५०५     |
| वासणं वक्का वहु         | १५७३     | विजसमदी सोहिय    | ११२७     | विजयुपह्वण गिरिणो | १५१६     |
| वासणि वक्का सुपासे      | ६८६      | विजसमदी सोहिय    | ११२७     | विजयुपह्वण गिरिणो | ८६३      |
| वास वीरस लक्का          | १५७४     | विजसमदी सोहिय    | ११२७     | विजयुपह्वण गिरिणो | ८६३      |
| वास सोमसलक्का           | १५७१     | विजसमदी सोहिय    | ११२७     | विजयुपह्वण गिरिणो | १५१९     |
| " "                     | १५७२     | विजसमदी सोहिय    | ११२७     | विजयुपह्वण गिरिणो | १५८८     |
| वासो वक्काकोसा          | २०००     | विजसमदी सोहिय    | ११२७     | विजयुपह्वण गिरिणो | ७६६      |
| वासो विमंग कस्सोत्तिमीण | २२४५     | विजसमदी सोहिय    | ११२७     | विजयुपह्वण गिरिणो | ११५५     |
| वाहनवत्पविभूषणी         | १८७८     | विजसमदी सोहिय    | ११२७     | विजयुपह्वण गिरिणो | ११५१     |



| गाथा              | गाथा सं० | गाथा                | गाथा सं० | गाथा            | गाथा सं० |
|-------------------|----------|---------------------|----------|-----------------|----------|
| वेदेदि विलबहेवु   | ६३४      | समसवसनायगुणिवं      | २८४८     | सत्ताजीमान वरा  | १७०८     |
| वेदीए नन्वेहो     | २०३१     | सगसद्धी सयतीसं      | १४३२     | सत्तारसमक्याणि  | २८६३     |
| वेदीओ सैतिमाओ     | २४२०     | समसंअसहस्ताणि       | ११३५     | सत्तापणसहस्ता   | १७४३     |
| वेदीज इंद वंहा    | ७३७      | समसीओ सत्तरारि      | १४३१     | सत्तावीसअमहिं   | १७७७     |
| वेदीओशसेसुं       | २२       | सन्धिका अवंति सामिय | १५४५     | सत्तावीस सवाहं  | २९७१     |
| वेदी पठमं विविमं  | ७२३      | सन्धवसुवी य एवे     | ४२८      | सत्तावीस सहस्ता | २४५०     |
| वेद्युत्तरदिशा    | १३७०     | सन्धजल पूरिदेहि     | १९१      | सत्तावीस मकला   | १४६१     |
| वेद्युत्तरपारसुरी | १७१      | सट्टिसहस्ता नवसय    | १२२६     | " "             | १४६२     |
| वेद्युत्तरपणमनका  | २८१०     | सट्टिसहस्ता तिसय    | ११८४     | सत्तावीसा सवका  | १४६०     |
| वेद्युत्तरपणमनका  | ७७३      | सट्टिसहस्ता तिसय    | ११७७     | सत्तावीसा सवका  | १४६५     |
| वेद्युत्तरपणमनका  | २४०१     | सट्टी तीस वड तिय    | १३०७     | सत्तावीसा सवका  | २९०      |
| वेद्युत्तरपणमनका  | २४९०     | सट्टी तीस वड तिय    | २२३६     | सत्तावीसा सवका  | २२०६     |
| वेद्युत्तरपणमनका  | २८२६     | सट्टी तीस वड तिय    | ४२९      | सत्तावीसा सवका  | ३२३      |
| वेद्युत्तरपणमनका  | १६८२     | सट्टी तीस वड तिय    | २६८८     | सत्तावीसा सवका  | १९४६     |
| वेद्युत्तरपणमनका  | २४१७     | सत्तावीसा सवका      | २८०८     | सत्तावीसा सवका  | २९१      |
| वेद्युत्तरपणमनका  | २४३८     | सत्तावीसा सवका      | ८५       | सत्तावीसा सवका  | २८७      |
| वेद्युत्तरपणमनका  | १७१      | सत्तावीसा सवका      | १७३४     | सत्तावीसा सवका  | १८१२     |
| स                 |          | सत्तावीसा सवका      | २६३६     | सत्तावीसा सवका  | २४४२     |
| सत्तरीपूरमि जाओ   | ५५४      | सत्तावीसा सवका      | १३०८     | सत्तावीसा सवका  | ४४१      |
| सत्तरीपूरमि जाओ   | १६१३     | सत्तावीसा सवका      | २७०६     | सत्तावीसा सवका  | ४४६      |
| सत्तरीपूरमि जाओ   | २०२१     | सत्तावीसा सवका      | २६३१     | सत्तावीसा सवका  | २४५३     |
| सत्तरीपूरमि जाओ   | १०३२     | सत्तावीसा सवका      | १४०७     | सत्तावीसा सवका  | २१९१     |
| सत्तरीपूरमि जाओ   | २४२५     | सत्तावीसा सवका      | ४१७      | सत्तावीसा सवका  | २२२४     |
| सत्तरीपूरमि जाओ   | २९१०     | सत्तावीसा सवका      | १८२७     | सत्तावीसा सवका  | २१९२     |
| सत्तरीपूरमि जाओ   | २७१६     | सत्तावीसा सवका      | ६४       | सत्तावीसा सवका  | २२२२     |
| सत्तरीपूरमि जाओ   | २७१२     | सत्तावीसा सवका      | २४१५     | सत्तावीसा सवका  | २१७५     |
| सत्तरीपूरमि जाओ   | २७७६     | सत्तावीसा सवका      | २४२७     | सत्तावीसा सवका  | २०७१     |
| सत्तरीपूरमि जाओ   | २९५०     | सत्तावीसा सवका      | १२३०     | सत्तावीसा सवका  | १८६२     |
| सत्तरीपूरमि जाओ   | २६०२     | सत्तावीसा सवका      | ७३       | सत्तावीसा सवका  | २१८६     |
| सत्तरीपूरमि जाओ   | २७३२     | सत्तावीसा सवका      | २६७६     | सत्तावीसा सवका  | २३१०     |
| सत्तरीपूरमि जाओ   | २६९२     | सत्तावीसा सवका      | ४६५      | सत्तावीसा सवका  | १०७५     |
| सत्तरीपूरमि जाओ   | २९२७     | सत्तावीसा सवका      | ११५४     | सत्तावीसा सवका  | १०१०     |
| सत्तरीपूरमि जाओ   | १४७६     | सत्तावीसा सवका      | २१०३     | सत्तावीसा सवका  | २६८७     |
| सत्तरीपूरमि जाओ   | २९३५     | सत्तावीसा सवका      | ६९       | सत्तावीसा सवका  | १८४०     |
| सत्तरीपूरमि जाओ   | २६६३     | सत्तावीसा सवका      | ११३८     | सत्तावीसा सवका  | १८०७     |



| गाथा               | गाथा सं० | गाथा               | गाथा सं० | गाथा                | गाथा सं० |
|--------------------|----------|--------------------|----------|---------------------|----------|
| सिंहासनमि तस्मि    | १९८५     | सींहासनमहासरण      | १९२०     | सेसाणं वस्तेहे      | १५९३     |
| सिंहासनस्य चउमु वि | १९८६     | सींहासनमहरम्प      | १९७५     | सेसा वि रं वचंका    | २७१      |
| सिंहासनस्य दोसु    | १९८७     | सुककोकिम महरलं     | १९६६     | सेसासुं साहासुं     | २१८७     |
| सिंहासनस्य पञ्चिम  | १९८८     | सुखदुखदोषोदोषो     | १९७६     | सेसेसुं कुदेसुं     | १९७२     |
| सिंहासनास्य पुरदो  | १९७७     | सुखमममदुगहसव       | ८२८      | " "                 | २०६७     |
| सिंहासणं विसालं    | १९९१     | सुखमममममममदुग      | ८        | " "                 | २३५७     |
| सिंहासणाण उवरि     | १९९५     | सुखं बह्णमोम       | ५४       | " "                 | २३७०     |
| सिंहासणाणि मज्जे   | १९९२     | सुखोवण सल्लोदण     | २५४१     | " "                 | २३८६     |
| सिंहासणादि सव्विमा | १९९०     | सुखहममस्य विहसा    | २२१०     | " "                 | २८१९     |
| सोई उण्हं तण्हं    | १९९१     | सुरउवएसवमेणं       | १९५३     | सेसेसुं ठाणेसुं     | १५५८     |
| सोई उण्हं मिसं     | २९९४     | सुरणरतिरियारोहण    | ७२८      | सोऊमतस्स वयणं       | ४३६      |
| सीवाएउत्तरद्वे     | २२९१     | सुरतस्सुद्धा सुगला | ४५८      | " "                 | ४४५      |
| सीवाए उत्तरवो      | २२९२     | सुरवाणवरसससगर      | १०२०     | सोऊणं उवएसं         | ४८०      |
| " "                | २३४२     | सुरमिहुणयेमणमण     | ८३१      | सो कं वणसमवण्णो     | ४५३      |
| सीवाए उवएसुं       | २२२६     | सुरसिहुए तीरं      | १३१६     | सोणिमसुक्कुप्पाइय   | १४४      |
| सीवाए वणिक्काण     | २१५५     | सुविहिममुहेसु कदा  | १४५३     | सोत्तिककूडे वेट्टवि | २०७६     |
| सीवाणहंए वासं      | २१६४     | सुम्भकणमिणेमीसुं   | ११०८     | सोदिदियसुवभाणा      | १६३      |
| सीवाणविणं सलो      | २१५९     | सुम्भमणमिसामीणं    | १४२८     | " "                 | १००२     |
| सीवाणित्ताकासावो   | ४८५      | सुसमदुसममि व्वाये  | ५६०      | सोदुवकस्सविहीवो     | ६९४      |
| सीवातरेमिणीए       | २१५७     | सुसममि तिणिण वलही  | ३२२      | " "                 | १००३     |
| " "                | २२६६     | सुसम सुसममि कासे   | २२४      | सोदुम वस्स वयणं     | ४८८      |
| सीवातरेमिणीवस      | २२६८     | " "                | २१७०     | सोदुण मंतिववणं      | १५५७     |
| सीवाण उत्तरतवे     | २२५९     | सुसमसुसमाभिवाणो    | १६२४     | सोदुण सरणिणवणं      | १३९५     |
| सीवाण वणिक्कतवे    | २३५०     | सुसमस्सादिमि एरा   | ४००      | सोमणसणामगिरिणो      | २०६४     |
| सीवाणं सोपिय       | २२५६     | सुधीए कदिए कदि     | २८०५     | सोमणसमंतरेण         | १९६२     |
| सीवासीवोदाणं       | २३३८     | सुरप्पहंसुदमुहो    | १३९३     | सोमणससेनठवण         | २०३७     |
| " "                | २८८१     | सेयजलं अंगरयं      | १०८१     | सोमणसस्स व वासं     | २००६     |
| सीवी सत्तरि सट्टी  | १४३०     | सेयंतजिणेसस्स य    | ६०५      | सोमणसं करिकेठरि     | १६६५     |
| सीदुम्भमिस्समोचो   | २९९५     | सेयंतवासुपुण्णे    | ५२०      | सोमणसं नामवणं       | १८३२     |
| सीदोववाहिणीए       | २१३७     | सेलमुहाए उत्तर     | १३५४     | सोमणसावो हेट्टुं    | २६२६     |
| सीदोवाए वोसुं      | २२२८     | सेलमुहाकुंवाणं     | २४९      | सी मूसे वज्जमयो     | १८३०     |
| सीदोवाउत्तरेसुं    | २३५२     | सेजमि मातवत्ते     | २१४४     | सीलसकोसुप्पेहं      | १८६०     |
| सीदोवो सरिप्प      | २१४२     | सेलमिसुद्धा परिही  | २६६२     | सीलससुप्पण कसे      | १४४५     |
| सीलेण उज्जेव वनेण  | १५३१     | सेलमिसुद्धो परिही  | २७११     | सीलसजोपराहीणे       | ६७       |
| सीदुप्पहविमणं      | ४५४      | सेमसरोवरसरिया      | २५८२     | सीलसविमवाहारं       | ४५१      |
| सीहासणस्यसव        | ५०       | सेमसितातयमुद्धा    | १०४०     |                     |          |

गाथानुक्रमिका

[ ८३७ ]

| गाथा              | गाथा सं० | गाथा               | गाथा सं० | गाथा                 | गाथा सं० |
|-------------------|----------|--------------------|----------|----------------------|----------|
| सोलससहस्रप्रथम    | १७७३     | हरिकरिबसहस्रवाहिव  | ११४६     | हृह चतुर्सीदिगुणं    | १०८      |
| सोलससहस्रमहियं    | २४८५     | हरिकंतासारिष्वा    | १७९६     | हेष्टिम मज्जिम उबरिम | ५३२      |
| सोलससहस्रमाधि     | १८०२     | हरिणादितनवर        | ३१७      | हेष्टिन्ममि तिमामे   | २४६०     |
| " "               | १८२६     | हृदिवालमई परिद्धी  | १८२३     | हेमवदं पद्मदीणं      | २६१०     |
| " "               | २२५७     | हरिबरिसक्खेतफसं    | २७५७     | हेमवदमरहृदिमवत       | १६७३     |
| सोहम्मसुरिवस्व य  | १४६      | हरिबरिसो चतुर्गुणो | २८५२     | हेमवदवाहिणीणं        | २४११     |
| सोहम्मदियजवरिम    | १२४३     | हरिबरिसो णिसहृदो   | २७९०     | हेमवदस्व य कंदा      | १७२१     |
| सोहम्मादी अचुप    | ८७१      | हाएदि किण्णपक्के   | २४७०     | हेरण्णवदमतर          | २३९१     |
| सोहृमिंवासमवो     | १९७६     | हाहा चतुर्सीदिगुणं | ३०७      | हेरण्णवदो मणिक्कण    | २४६८     |
| सोहसु चतसकलायो    | २६५५     | हिमवमहाणंवायो      | ७९५      | होवि सभापुरपुरवो     | १९२१     |
| सोहसु मज्जिमसुहृण | २९२४     | हिमवतपम्बदस्व य    | १७४८     | होति मसंजेज्जबुभा    | २९७८     |
| सोहसु मज्जिमसूर्ध | २७०९     | हिमवतमहाहिमव       | ६६       | होति तिविद्धुविद्धु  | १४२४     |
| सोहसु विरया रावो  | २६५२     | हिमवतमस्समज्जे     | १६८०     | होति दहाणं मज्जे     | २११७     |
| सोहृति मसोपत्तक   | १२७      | हिमवतमंतमणिमम      | २१६      | होति मज्जिमपद्मवो    | १७११     |
| सोहृदि तस्स लोभो  | २१८०     | हिमवतसरिसवीहा      | १६५१     | होति पद्मायाणीया     | १४०४     |
| हृ                |          | हिमवतस्व य कवे     | २७४८     | होति सहस्सा मारस     | १११८     |
| हरवपहेलिरणामं     | ३११      | हिमवताचलमज्जे      | १९८      | होति हृ मसंजसममा     | २८६      |
| हृमकण्णाहं कमसो   | २५३७     | हुवावसप्पिणस्स य   | १२६१     | होति हृ वरपासावा     | २७६      |
| हृयसेणमिमसाहि     | ५५५      |                    |          |                      |          |



# शुद्धि पत्र

| पृ० सं० | पंक्ति संख्या         | प्रस्तुत                                              | शुद्ध                                                 |
|---------|-----------------------|-------------------------------------------------------|-------------------------------------------------------|
| ११      | तालिका-२              | यागों के बंधनों के आधारों की तुलना के आधारों की तुलना | यागों के बंधनों के आधारों की तुलना के आधारों की तुलना |
| १४      | ६                     | अपसरार्यों से                                         | अपसरार्यों से                                         |
| १४      | १३                    | भामहल                                                 | भामहल                                                 |
| १६      | १                     | $\frac{४०५२२ \times (२०० \text{ घ.})}{६३२४५४}$        | $\frac{४०५२२ \times (२००० \text{ घ.})}{६३२४५४}$       |
| २२      | ८                     | जीव का कर्म                                           | जीव का कर्म                                           |
| २४      | तालिका ३/१३           | ज० के बालाग्र                                         | ज० भोगभूमि के बालाग्र                                 |
| २४      | ३/१४                  | म० के बालाग्र                                         | म० भोगभूमि के बालाग्र                                 |
| २४      | ३/१५                  | उ० के बालाग्र                                         | उ० भोगभूमि के बालाग्र                                 |
| ४२      | १                     | गन्तव्य                                               | गन्तव्य                                               |
| ५९      | तालिका २              | विजयार्थव्यास                                         | विजयार्थ के व्यास                                     |
| ६३      | ४                     | संजुता                                                | संजुता                                                |
| ८९      | ८                     | त                                                     | त                                                     |
| ९४      | ३                     | तिनिह                                                 | तिनिह                                                 |
| १००     | २१                    | ११२                                                   | ३१६                                                   |
| १०१     | १९                    | यह भाजन है                                            | यह — यह भाजन है                                       |
| १०६     | २०                    | ( चौथे दिन )                                          | ( चौथे दिन )                                          |
| ११२     | संयुष्टि, पंक्ति ९    | ५४०००                                                 | ५४००००                                                |
| १४६     | तालिका ११ कॉलम ५/१३   | पूर्व                                                 | पूर्व                                                 |
| १५१     | १७                    | तीर्थकरों के                                          | तीर्थकरों के                                          |
| २५७     | ९                     | केदीक                                                 | केदी के                                               |
| २७१     | १४                    | समवष्टा                                               | समवष्टा                                               |
| २७८     | १६                    | अतिशय के                                              | अतिशय के                                              |
| २८५     | १४                    | जीव समवसरण में जीव प्रवेश                             | जीव समवसरण में प्रवेश                                 |
| २८६     | १४                    | तुम्बुल                                               | तुम्बुल                                               |
| ३३२     | २०                    | एक लाख बीसवीं हजार                                    | मठारह हजार बार सो                                     |
| ३४५     | तालिका २८/विपुलमति-१८ | २०५०                                                  | २०५५                                                  |

| पृ० सं० | पंक्ति संख्या  | पंक्ति संख्या              | पंक्ति संख्या                 | पंक्ति संख्या |
|---------|----------------|----------------------------|-------------------------------|---------------|
| ३८१     | १५             | खनखन                       | खनखन                          |               |
| ३८४     | १२             | ५००००                      | ५०००                          |               |
| ४१६     | अंतिम पंक्ति   | बनालीस                     | बनालीस                        |               |
| ४७९     | ११             | २३                         | १२३                           |               |
| ५२८     | पंक्ति ( विन ) | मंगल                       | मंगल                          |               |
| ५३७     | १०             | पतनक                       | पतनक                          |               |
| ५८८     | ८              | परेसु                      | परेसु                         |               |
| ६१५     | ६              | मद्युत                     | मद्युत                        |               |
| ६१७     | ११             | मय                         | मय                            |               |
| ६२७     | १९             | नीलमिरी                    | नीलमिरी                       |               |
| ६७६     | १३             | दीपो के                    | दीपो के                       |               |
| ६८४     | १२             | २५५६                       | २५५६                          |               |
| ७०१     | अंतिम पंक्ति   | ( १० यो० )                 | ( १० यो० )                    |               |
| ७२८     | ५              | मंगलवती                    | मंगलवती                       |               |
| ७६५     | ३              | संख्या उत्पन्न होने प्रमाण | संख्या उत्पन्न हो उतने प्रमाण |               |
| ७७६     | २०             | १९७१५०२ २६६                | १९८०६५० २६६                   |               |
| ७८४     | ७              | मंगलवती                    | मंगलवती                       |               |
| ७८७     | ८              | १५७०७००० २६६               | १५७०७०० २६६                   |               |
| ८०५     | ५              | नारय देवाकेई               | नारयदेवा केई शिवओम्ह          |               |
| ८०७     | १३             | ३००१                       | ३०००३००१                      |               |

